एकीकरण

जर्मनी में जर्मन समाचार



साधना

पास बुक्स

सीनियर हायर सैकण्डरी परीक्षा

विशेष हिन्दी

(10 + 2 शिक्षा प्रणाली के अनुसार लिखित)

पुस्तक के लेखन का कार्य सिर्फ अनुभवी एवं प्रश्न पत्र चयनकर्त्ताओं द्वारा करवाया गया है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के नवीन पाठ्यक्रम एवं शिक्षा पद्धति पर आधारित

1989-90

प्रकाशक

साधना पब्लिकेशन्स

सिघोजी का रास्ता, माहेश्वरी स्कूल के सामने
चौड़ा रास्ता जयपुर-3 मूल्य : 42

प्रश्न सूची

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रसारित नमूने का प्रश्न–पत्र 1–5

(भाग अ)

वस्तुनिष्ठ (बहुविकल्पात्मक) प्रश्न उत्तर 1–57

उत्तरमाला 58–59

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-उत्तर 60–102

(भाग ब)

सप्रसंग व्याख्याएँ 103–221

लघूत्तरात्मक प्रश्न-उत्तर 222–272

निबन्धात्मक प्रश्न-उत्तर 1–152

पाठ्यक्रम

सीनियर हायर सैकण्डरी (12th)

विशेष हिन्दी

परीक्षा-योजना — न्यूनतम उत्तीर्णांक 33

एक प्रश्न पत्र — पूर्णांक 100

समयावधि : तीन घण्टे

पाठ्यक्रम व अंक विभाजन :

1. एक प्रश्न 3 व्याख्याएं (गद्य-पद्य दोनों से) — 24 अंक

पुस्तकों से सम्बन्धित तीन प्रश्न (प्रत्येक पुस्तक पर एक-एक) — 48 अंक

एक प्रश्न जिसके दो भाग होंगे—

(क) छन्द—संकलन में प्रयुक्त छन्द तथा अलंकारों का सामान्य परिचय, भेदोपभेदों में जाने की आवश्यकता नहीं। — 8 अंक

(ख) आदिकालीन एवं भक्तिकालीन साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय— — 20 अंक

(i) युग-प्रवृत्तियों का सामान्य ज्ञान।

(ii) युग के विशिष्ट कवियों एवं रचनाओं का परिचयात्मक ज्ञान।

(iii) पाठ्य-रचनाओं का सामान्य परिचय।

पाठ्य पुस्तकें :

(2) प्राचीन काव्य कलाधार—सं. हजारीलाल, प्रकाशक—माडर्न बुक डिपो, जयपुर।

(2) कथा विसर्जन—ले. लक्ष्मीनारायण लाल, प्रकाशक—अजमेरा बुक कम्पनी, जयपुर।

(3) एकांकी रत्नाकार— ले. डॉ. श्रीधरसिंह, प्रकाशक—वाणि प्रकाशन, दिल्ली।

अन्य पाठ्यक्रम :

1. छन्द—(क) छन्द की परिभाषा।

(ख) छन्द के प्रकार।

(ग) दोहा, चौपाई, हरिगीतिका, गीतिका रोला उल्लाला मालिनी, छप्पय, द्रुतिविलम्बित, बसन्ततिलका शिखरजी, सवैया (मनका) कुण्डलियां।

2. अलंकार :

(i) शब्दालंकार-अनुप्रास, श्लेष, यमक।

(ii) अर्थालंकार, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दीपक, विभावना, विरोधाभास, व्यतिरेक, सन्देह, भ्रान्ति, अपन्हुति, प्रदीप, दृष्टान्त, निदर्शना, मानवीकरण, विशेषण विपर्यय।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रसारित
सीनियर हायर सैकण्डरी का
नमूने का प्रश्न--पत्र
विशेष हिन्दी

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 10

भाग 'अ'

समय : ½ घण्टा पूर्णांक : 3

1. "खिनहिं पीत, खिन होइ मुख सेता ।
खिनहिं चेत, खिन होइ अंचेता ॥"
जायसी की उपर्युक्त पंक्तियों में कौनसा मनोभाव व्यक्त हो रहा है ?
(क) व्याकुलता (ख) अधीरता
(ग) व्यग्रता (घ) जड़ता ( ) 1

2. "राम लखन सिय पद सिरु नाई ।
फिरेउ बनिक जिमिक मूर गँवाई ॥"
'केवट प्रसंग' में से उद्धृत उपर्युक्त पंक्तियों में सुमन्त के मन का कौनसा भाव व्यक्त हुआ है ?
(क) निराशा (ख) दीनता (ग) हताशा (घ) विवशता ( ) 1

3. "हरिया जाने रूखड़ा, जो पानी का नेह ।"
उपर्युक्त पंक्ति में 'हरिया रूखड़ा' किस मानवीय गुण का द्योतक है ?
(क) परदुःख कातरता (ख) संवेदनशीलता
(ग) गुणग्राहकता (घ) सज्जनता (

4. "पिव मेरा मैं पीव की रे,
तू पिव कहै सकूण !"
उपर्युक्त पंक्ति में विरहणी का कौन-सा मनोभाव व्यक्त हुआ है ?
(क) क्षोभ (ख) आक्रोश
(ग) व्यथा (घ) खीज ( ) 1

5. "अब मैं निरपेक्ष नहीं हूँ ।" प्रकाश का यह कथन उसके किस मनोभाव का सूचक है ?
(क) पश्चाताप (ख) प्रायश्चित
(ग) ग्लानि (घ) दुःख ( )

6. "मेरे महाराणा का नमक मेरे रक्त से भी महान है।" पन्ना के इस कथन में कौनसी भावना निहित है ?
(क) स्वाभिमान (ख) स्वामिभक्ति
(ग) गर्व (घ) शौर्य ( )1

7. "दूलह श्री रघुनाथ बने, दुलही सिय सुन्दर मन्दिर माहीं—गावति गीत सबै मिलि सुन्दर, वेद, जुवा जुरि विप्र पढ़ाहीं।" उपर्युक्त पंक्तियों में छन्द है—
(क) हरिगीतिका (ख) कुण्डलियां
(ग) सवैया (घ) चौपाई ( )1

8. जहां समानता के कारण उपमेय का उपमान समझ लिया जाय, वहां कौन-सा अलंकार होगा ?
(क) सन्देह (ख) भ्रान्तिमान्
(ग) उपमा (घ) रूपक ( )1

निम्नलिखित प्रश्नों में से प्रत्येक का उत्तर लगभग 20 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं।

9. "बाँबी कूटे बावरे, साँप न मारा जाय।
मूरख ! बाँबी ना डसै, सर्प सबन को खाय॥"
उपर्युक्त दोहे में 'बाँबी' और 'सर्प' शब्दों के प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।
....
....

10. "आप न काहू काम के, डार पात फल मूल।
औरन को न रोकत फिरैं, रहिमन पेड़ बबूल॥"
उपर्युक्त दोहे में रहीम ने बबूल की उपमा देकर मानव की किस वृत्ति की ओर इंगित किया है ?
....
....

11. "पढ़ाई के नाम पर कमर टेढ़ी किए दे रहे हैं। यह पढ़ाई का बस्ता है या कुली का बोझ ?" माँ के इस कथन द्वारा वर्तमान शिक्षा पद्धति के किस दोष की ओर संकेत किया गया है ?
....
....

12. प्रकाश की दृष्टि से 'फास्ट' और व्रत में क्या अन्तर है ?
....
....

13. "तुम सबमें कोई भीतरी लगाव नहीं है। सब बाहर-बाहर हरदम बा
माँ का यह कथन किस जीवन-पद्धति की ओर इंगित कर रहा है ?

....

....

14. पन्ना एवं बनवीर द्वारा किए दीपदान का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

15. "कविता का सम्बन्ध ब्रह्म से नहीं, मनुष्य के जीवन से है।" इस पं
निहित भाव को स्पष्ट कोजिए।

....

....

16. "तुम जीत कर भी हार गए हो, अशोक" कलिंग के राजकुमार
प्रस्तुत इस कथन के मर्म को स्पष्ट कीजिए।

....

....

17. आदिकाल के दो प्रमुख कवियों और उनकी एक-एक कृति का नाम
कीजिए।

....

....

18. सूरदास के काव्य की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइये।

... .

....

19. 'तुलसीदास के काव्य की प्रमुख विशेषता है उनकी समन्वय भावना
इस कथन की पुष्टि में किन्हीं दो समन्वय-क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए।

....

....

भाग 'ब'

समय : $2\frac{1}{2}$ घण्टे पूर्णांक

प्रश्न 1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

झीनी-झीनी बीनी चदरिया।
काहे के ताना काहे के भरनी कौन तार से बीनी चदरिया।
इंगला पिंगला ताना भरनी सुषमन तार से बीनी चदरिया।
आठ कमल दल चरखा डोलै पांच तत्त गुन तीन चदरिया।

साँई को सियत मास दस लागे, ठीक-ठीक कै बीनी चदरिया।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ि कै मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया।

अथवा

जब भा चेत उठा बैरागा। बाउर जानौं सोई उठि जागा॥
आवत जग बालक जस रोंआ। उठा रोइ 'हा ज्ञान सो खोआ'॥
हौं तो अहा अमरपुर जहाँ। इहाँ मरनपुर आएउँ कहाँ॥
केइ उपकार मरन कर कीन्हा। संकति हँकारि जीउ हरि लीन्हा॥
सोवत रहा जहाँ सुख साखा। कस न तहाँ सोवत विधि राखा॥
अब जिउ उहाँ, इहाँ तन सूना। कब लगि रहै परान बिहूना॥
जो जिउ घटहि काल के हाथा। घट न नीक पै जीउ निसाथा॥ 8

प्रश्न 2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

बाहर केवल चीजें....सामान...पदार्थ हैं.....। बाहर कोई सुख नहीं है। सुख का स्रोत अगर बाहर है—दूसरों का दिया हुआ—बताया हुआ—वह सुख हो ही नहीं सकता। सुख तो अपना ही है। अपना कमाया हुआ। अपने से आप पाया हुआ—अपने से, अपने घर-परिवार से, अपनी जड़ से-अपने स्रोत से।

अथवा

मनुष्य अपने अहंकार में जमकर पत्थर न हो जाए, इससे बचने के लिए अपनी कठोरता को पिघलाता रहता है—भाव से, आंसुओं से, संगीत से, और सेवा से। परमपूज्य के चरणों में नतसिर होकर अपने अहंकार का शमन करना, यही ठाकुरजी की पूजा है। हम भाव बने रहें, पदार्थ न हो जायें, यही मेरी माँ का भजन है।

प्रश्न 3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

मेरा जिन्दगी का एटीट्यूड बिलकुल मुख्तलिफ है। तुम अपने सोशलिज्म-ओशलिज्म के जोश में शायद यह समझ बैठे हो कि जिन्दगी का गहरे-से-गहरा मतलब तुम्हारे लिए साफ हो गया, जैसे कोई बड़ा सरकस घोड़ा तुम्हारे काबू में आ गया, पर जिन्दगी अगर इस तरह लटकों और फारमूलों में बांधी जा सकती तो आज तक कब की खत्म हो जाती।

अथवा

एक तरह का पागलपन, मन की रंगीनी, झूठा प्रेम, झूठी पीड़ा। मन को पंख लग जाते हैं। ऐसे लोग आकाश में उड़ते हैं: धरती की धूल से उनकी भेंट नहीं होती। इसी धूल से उनका शरीर बना है, यह सत्य भी वे भूल जाते हैं। वे अपनी पत्नियों से आँख चुराते हैं, उनके निकट बैठने का साहस उन्हें नहीं होता और कविता में अनन्त प्रेम का राग अलापते हैं।

प्रश्न 4. "ढोला मारू रा दूहा' काव्य में नारी-हृदय की अत्यन्त म
व्यंजना मिलती है।" स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा लगभग 60 श

प्रश्न 5. पठित काव्यांशों के आधार पर तुलसीदास के काव्य-सौन्द
उद्घाटित कीजिए। (उत्तर सीमा लगभग 100 श

प्रश्न 6. माँ एवं नीलम के चरित्र की तुलना निम्नलिखित बिन्दुओं
आधार पर कीजिए—

(क) स्वभाव (ख) जीवन के प्रति दृष्टिकोण।

(उत्तर सीमा लगभग 80 श

प्रश्न 7. यदि माँ अन्त तक जीवित रहती तो कथा में क्या मोड़ आता
स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा लगभग 80 श

प्रश्न 8. जोंक की विशेषताएं बताते हुए उन्हें बनवारी के चरित्र
घटित कीजिए। (उत्तर सीमा लगभग 80 श

प्रश्न 9. मिस होम्स ने अंग्रेज कौम की जिन विशेषताओं का उल्लेख कि
है, यदि अंग्रेज शासक उनका पालन करते तो हमारे देश की स्थिति में क्या अ
आता ? (उत्तर सीमा लगभग 100 श

प्रश्न 10. 'कुण्डलियां' और 'छप्पय' छन्दों का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 11. दृष्टान्त अलंकार का लक्षण सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 12. सन्त काव्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(उत्तर सीमा 150 शब्द

प्रश्न 13. किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए—

(i) आदिकाल का नामकरण

(ii) सूफी काव्य की विशेषताएं

(iii) सगुण भक्ति-काव्य की प्रवृत्तियाँ।

(उत्तर सीमा 150 शब्द

साधना पास बुक्स

सीनियर हायर सैकण्डरी परीक्षा

विशेष हिन्दी

भाग (अ)

वस्तुनिष्ठ (बहुविकल्पात्मक) प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर में पांच-पांच विकल्प दिये जा रहे हैं, उनमें से सर्वाधिक सही उत्तर का क्रमांक सामने के कोष्ठक में लिखिये ।

प्राचीन काव्य कलाधर

1. कबीर

1. कबीर प्रतिनिधि कवि थे—
(क) सन्त काव्य धारा के (ख) सूफी काव्य धारा के
(ग) कृष्ण भक्ति काव्य धारा के (घ) राम भक्ति काव्य धारा के
(च) सगुण काव्य धारा के ।

2. कबीर की भाषा को कहा जाता है—
(क) शुद्ध हिन्दी (ख) खड़ी बोली
(ग) ब्रज भाषा (घ) सधूक्कड़ी
(च) मिश्रित भाषा ।

3. कबीर के ईश्वर थे—
(क) दशरथ पुत्र राम (ख) सगुण साकार
(ग) निर्गुण निराकार (घ) लीला बिहारी अवतारी ब्रह्म
(च) योगीराज शिव । ( )

4. कबीर की आस्था थी—
(क) बहुदेव वाद में (ख) समूहवाद में
(ग) द्वैताद्वैतवाद में (घ) अद्वैतवाद में
(च) एकेश्वरवाद में । ( )

5. 'राई ते पर्वत करे, पर्वत राई माहिं' कर्म की यह सामर्थ्य है—
(क) सतगुरु में (ख) निराकार ब्रह्म में

(ग) हरिजन में (घ) ईश्वर भक्त में
(च) सच्चे साधु में। (

6. कबीर के अनुसार घट-घट मधुप के समान महकने वाले परमात्मा पहचाना जा सकता है ?
(क) सतगुरु की कृपा से (ख) भक्ति भावना से
(ख) हरि भक्तों की सेवा से (घ) गुण-ग्राहकता से
(च) माया के त्याग से। (

7. "उठा बगूला प्रेम का, तिनका उड़ा अकास।"
उक्त पंक्ति में 'तिनका' शब्द का अर्थ है—
(क) तृण (घास) (ख) उनका
(ग) परमात्मा (घ) जीवात्मा
(च) भक्त। (

8. सौ योजन दूर रहने वाला साजन (परमात्मा) भक्त को अनुभूत हो
(क) अपने हृदय में (ख) सात समुन्दर पार
(ग) सृष्टि के कण-कण में (घ) सभी जीवात्माओं में
(च) सतगुरु के पास में। (

9. कबीर के अनुसार सच्चे प्रेम को प्राप्त किया जा सकता है—
(क) हरि भक्तों से प्रेम करके (ख) ईश्वर में पूर्ण निष्ठा रखक
(ग) मृत्यु भय का त्याग करके (घ) दीनों की सेवा करके
(च) सतगुरु में आस्था रखकर। (

10. 'हरिजन से तू हेत कर, कर हरिजन से हेत।'
कबीर ने भगवान से प्रेम करने की बजाय भगवत भक्तों से प्रेम क परामर्श क्यों दिया ?
(क) भगवत भक्तों से प्रेम करने के कारण दूसरे भक्तों से सम्पर्क हो
(ख) निरन्तर हरि स्मरण का अवसर मिलता है।
(ग) भक्तों के साथ रहने से सांसारिक सुख मिलता है।
(घ) भगवत् भक्तों की कृपा से परमात्मा को प्राप्त किया जा सकत
(च) भक्तों की कृपा से धन-माल मिलता है। (

11. 'उदर समाता लेय' का आशय है—
(क) जितनी आवश्यकता हो, उतना ग्रहण करना
(ख) भविष्य के लिए संचय करके रखना
(ग) खूब खाकर पेट भरना
(घ) सब धन को अपने लिए जमा करना
(च) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
(

12. 'ऐसा कोई ना मिला आये ही विष खाय।'
आये ही विष खाय का आशय है—
(क) विष खाकर आत्मघात करना
(ख) माया रूपी जहर को खाकर माया मोह से मुक्त होना
(ग) प्रेम के लिए अपना उत्सर्ग कर देना
(घ) अपने प्रिय जनों को अपने हाथों विष देना
(च) भक्ति के लिए प्राणोत्सर्ग करना। ( )

13. 'जा मरने से जग डरे, मेरे मन आनन्द।'
कबीर को मरने से मन में आनन्द होता है, क्योंकि—
(क) मरने के बाद भक्ति से पीछा छूट जायेगा
(ख) स्वार्थी जग के व्यवहार से मुक्ति मिलेगी
(ग) परमात्मा को मर कर ही प्राप्त किया जा सकता है।
(घ) मरने पर स्वर्ग मिलता है
(च) मरने पर फिर से नया जन्म मिलता है। ( )

14. कबीर के अनुसार साधु कैसा होना चाहिए?
(क) जो अपनी आवश्यकता जितना ही ग्रहण करने वाला हो
(ख) जो रास्ते की धूल जैसा हो
(ग) जो जल के समान निर्मल और स्वच्छ हो
(घ) जो प्रभु के समान सहज स्वभाव वाला हो
(च) जिसमें उपर्युक्त सभी गुण हों। ( )

15. 'सूखा काठ न जान ही, केतहु बूठा मेह।''
उक्त पंक्ति में सूखे काठ से क्या आशय है?
(क) सांसारिक माया-मोह में अभिन्न व्यक्ति
(ख) सूखा हुआ ठूंठ पेड़
(ग) पेड़ की सूखी हुई लकड़ी (घ) ईश्वर भक्ति में लीन भक्त
(छ) निर्जन में बढ़ने वाला हरा पेड़। ( )

16. कबीर के अनुसार सच्चे फकीर की क्या पहचान है?
(क) वह निरन्तर राम नाम का स्मरण करता है
(ख) वह सतगुरु की सेवा में विश्वास रखता है
(ग) वह आवश्यकता से अधिक सग्रह नहीं रखता है
(घ) वह दीन-दुखियों की सेवा करता है
(च) वह अन्य फकीरों की संगति में रहता है।

17. मान-सम्मान, नैतिकता और स्नेह इन सबका लोप कब हो जाता है?
(क) जब मन में कुछ चाह होती है

(ख) जब मन में लोभ की भावना होती है
(ग) जब व्यक्ति माया में भूला रहता है
(घ) जब वह दूसरे के सामने हाथ फैलाकर कुछ मांगता है
(च) जब वह भक्ति के मार्ग से विचलित हो जाता है। (

18. 'प्रभुता चेरी होय।' कबीर के अनुसार प्रभुता दासी हो जाती है—
(क) प्रभुता की सेवा करने पर (ख) प्रभुता के लिए प्रयास कर
(ग) प्रभु की भक्ति करने से (घ) हरि भक्तों से प्रेम करने पर
(च) सतगुरु की कृपा से। (

19. 'माया महा ठगिनी हम जानी।' पद में कबीर ने माया का क्या स
बतलाया है ?
(क) भक्ति मार्ग की बाधा (ख) नारी रूप
(ग) सांसारिक सुख और ऐश्वर्य (घ) मन की वासनायें
(च) ईश्वर प्राप्ति का साधन। (

20. कबीर ने आत्मा और परमात्मा की अभेदता का उदाहरण दिया है—
(क) सागर और सागर की लहर से
(ख) चांद और चांदनी से (ग) बर्फ और शीतलता से
(घ) बर्फ और शीतलता से (च) उपर्युक्त सभी से। (

21. 'सांई बिन दरद करेजे होय।'
भक्त के हृदय में दर्द का कारण है—
(क) परमात्मा से वियोग (ख) माया मोह का बन्धन
(ग) वैराग्य जनित दुःख (घ) सतगुरु का प्रभाव
(च) भक्ति मार्ग की बाधायें। (

22. 'कहहि कबीर सुनो भाई साधु,
जम दरजवा बांधव जैबे पकड़ा॥"
कबीर के अनुसार 'यम दरजवा' पर पहुंचने वाले व्यक्ति हैं ?
(क) जो मन को प्रभु भक्ति के रंग में रंगने के बजाय कपड़ों को रगते
(ख) जो ब्रह्म को छोड़कर पत्थर की पूजा करते हैं
(ग) जो कान कड़ाकर और दाढ़ी-जटा बढ़ाकर योग का आडम्बर र
हैं
(घ) जो वैरागी बनने के बाद भी कामनाओं को मार नहीं पाते हैं
(च) जो सच्ची भक्ति को छोड़कर आडम्बरों में पडे रहते हैं। (

23. 'बिनु देखे बेनु अरस-परस बिनु नाम लिए का होई।'
उक्त कथन से कबीर का अभिप्राय है—

(क) प्रभु के नाम स्मरण से ही मुक्ति नहीं मिलती
(ख) भक्ति के लिए प्रभु की वास्तविकता को जानना जरूरी है
(ग) प्रभु को जाने बिना भी उसकी भक्ति की जा सकती है
(घ) प्रभु के नाम स्मरण से ही मुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है
(च) प्रभु सभी को समभाव से मुक्त करते हैं । ( )

24. "झीनी-झीनी बीनी चदरिया" में चादर शब्द प्रतीक है—
(क) धागे से बुने गये वस्त्र का (ख) भगवान द्वारा बनाये गये वस्त्र का
(ग) ओढ़ने-बिछाने की चादर का
(घ) परमात्मा द्वारा निर्मित भौतिक शरीर का
(च) उपर्युक्त में से कोई नहीं । ( )

25. कबीर की भक्ति में किस तत्त्व की प्रधानता है?
(क) सच्चे प्रेम की (ख) मानव सेवा की।
(ग) ज्ञान और प्रेम की (घ) आडम्बर विरोध की ।
(च) सरलता और सादगी । ( )

2. मलिक मुहम्मद जायसी

26. मलिक मुहम्मद जायसी किस काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि थे ?
(क) राम भक्ति काव्य धारा (ख) कृष्ण भक्ति काव्य धारा
(ग) ज्ञानाश्रयी काव्य धारा । (घ) प्रेमाश्रयी काव्य धारा
(च) रहस्यवादी काव्य धारा । ( )

27. 'पद्मावत' किस प्रकार की साहित्यिक कृति हैं ?
(क) श्रृंगार रस प्रधान (ख) वीर रस प्रधान
(ग) शान्त रस प्रधान (घ) करुण रस प्रधान
(च) हास्य रस प्रधान । ( )

28. जायसी की काव्य भाषा हैं—
(क) ब्रज (ख) अवधी
(ग) बुन्देलखन्डी (घ) खड़ी बोली
(च) राजस्थानी । ( )

29. 'पद्मावत' प्रबन्ध काव्य की रचना किन छन्दों में हुई है ?
(क) रोला-उल्लाला (ख) गीतिका-हरिगीतिका
(ग) दोहा-चौपाई (घ) चौपाई-सोरठा
(च) चौपाई-हरिगीतिका । ( )

30. 'सुनतहि राजा गा मुरछाई' । राजा रत्नसेन के मूर्च्छित होने का कारण था—

(क) रानी नागमति का वियोग (ख) पद्मावती का सौन्दर्य-श्रवण
(ग) शत्रुओं द्वारा आक्रमण (घ) राज्य में अशान्ति और विद्रो
(च) पद्मावती का वियोग। (

31. राजा रत्नसेन के मूर्च्छित होने की तुलना की गई है—
(क) कुम्भकर्ण की निन्द्रा से (ख) ध्यान मग्न योगी से
(ग) शक्तिबाण से मूर्च्छित लक्ष्मण से (घ) युद्ध में वीरगति प्राप्त योद्धा
(च) विवश लाचार प्रेमासक्त से। (

32. उठा रोइ 'हा ज्ञान सो खोया।' यहाँ पर वह ज्ञान खो दिया से आश है—
(क) गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान का नष्ट होना
(ख) सांसारिक ज्ञान का लुप्त होना।
(ग) पुस्तकों से पढ़े ज्ञान का विस्मृत होना
(घ) रानी नागमती की स्मृति खोना
(च) परमात्मा स्वरूप रानी पद्मावती की स्मृति खोना। (

33. 'ध्रुव ते ऊंच पेय ध्रुव ऊया। सिर देइ पांव देय घो छुआ।।'
ध्रुव ऊंचे से प्रेम का स्पर्श कौन कर सकता है?
(क) जो प्रेम के लिए अपने को न्यौछावर कर दे।
(ख) जो ध्रुव के समान उच्चयता प्राप्त करले
(ग) जो प्रेम के लिए धन का त्याग करदे
(घ) जो प्रेम पाने के लिए बैरागी बन जाये
(च) जो निरन्तर प्रेम-प्रेम की रट लगाये रखे। (

34. 'एहि रे पंथ सो पहुंचै' प्रेम मार्ग में अन्त में किसको सफलता मिलत है?
(क) जो प्रेम के लिए अपने प्राणों को त्याग दे
(ख) जो प्रेम के लिए अपना सर्वस्व त्याग दे
(ग) जो पहले सिर दे फिर प्रेम मार्ग पर पैर रखे
(घ) जो वियोग की अग्नि के ताप-दु:ख को सहन करले
(च) जो बैरागी बनकर उसकी खोज करे। (

35. प्रेम की सूली पर चढ़ने वाला प्रमुख सूफी सन्त था—
(क) मोइनुद्दीन चिश्ती (ख) शेख सलीम
(ग) अब्दुर रहमान (घ) मलिक मुहम्मद जायसी
(च) मंसूर। (

36. 'अमृत बात कहत बिष जाना।'
उपर्युक्त स्थिति का कारण है—

(क) संसार से निशक्ति (ख) मन का पागल पन
(ग) विवेक-बुद्धि का ह्रास (घ) हृदय में प्रेम भाव की जागृति
(च) उपर्युक्त सभी। ( )

37. गोरा बादल कौन थे ?
(क) सिंघल द्वीप के दो वीर (ख) चित्तौड़ के बहादुर सामन्त
(ग) रानी के आज्ञाकारी सेवक (घ) चित्तौड़ के सेनानायक
(च) सिंहल द्वीप के नागरिक। ( )

38. "नैनन्ह रकत दीख जग राता।" पद्मावती के रक्त आंसुओं का विश्व पर क्या प्रभाव पड़ा ?
(क) वह भी रक्त आंसुओं से भीग कर लाल हो गया
(ख) भूमि पर सर्वत्र रक्त ही रक्त दिखाई देना लगा
(ग) रानी के वस्त्र उसके आंसुओं से भीगकर केसरिया बन गये।
(घ) गोरा और बादल द्रवित हो गये
(च) रानी के मन का सारा कलुष आंसुओं में बह गया। ( )

39. गोरा-बादल ने पान का बीड़ा लिया था—
(क) मुख शुद्धि के लिए (ख) रानी का मन रखने के लिए
(ग) राजा को बन्दीगृह से मुक्त कराने के लिए
(घ) अपनी रुचि का प्रदर्शन करने के लिए
(च) रानी की भेंट समझकर। ( )

40. 'देखि छुइन सिंहासन, संकर धरा लिलाट' शिवजी ने द्वितीया के चन्द्रमा को अपने ललाट पर धारण किया—
(क) उसकी निर्मल कान्ति से प्रभावित होकर
(ख) उसके आकार को छोटा देखकर
(ग) पार्वती जी के आग्रह करने पर
(घ) रानी पद्मावती के समान निर्मल और निष्कलंक के कारण
(च) शीश की शोभा बढ़ाने के विचार से। ( )

3. गोस्वामी तुलसीदास

41. 'वे हिन्दी साहित्य के जगमगाते हुए ध्रुव नक्षत्र हैं' – कहा गया है—
(क) कबीरदास के लिए (ख) मलिक मुहम्मद जायसी के लिए
(ग) गोस्वामी तुलसीदास के लिए (घ) रहीम के लिए
(च) मीरा बाई के लिए। ( )

42. सम्पादक श्री हजारीलाल शर्मा ने हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ कलाकार किसे बताया है ?

(क) ढोला मारू के रचनाकार को (ख) प्रेम दीवानी मीरा क
(ग) प्रेम-पीर के गायक जायसी को (घ) सन्त कवि कबीर को
(च) गोस्वामी तुलसीदास को। (

43. तुलसीदास के हृदय में वैराग्य उत्पन्न हुआ था—
(क) पत्नी रत्नावली की फटकार से।
(ख) अन्तः प्रेरणा से
(ग) गुरु की प्रेरणा से (घ) वृद्धावस्था के कष्टों से
(च) सन्त समागम से। (

44. तुलसी की सबसे महत्त्वपूर्ण सर्जना है—
(क) विनय पत्रिका (ख) कवितावली
(ग) दोहावली (घ) बैरवै रामायण
(च) रामचरित-मानस। (

45. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार लोक नायक कौन हो सकता है
(क) जो जनता का उचित नेतृत्व करें
(ख) जो लोक में प्रचलित पाखण्डों पर प्रहार करें
(ग) जो समन्वय कर सके
(घ) जो किसी एक मत या धर्म का प्रचार करे
(च) जो सुन्दर काव्य रचनाएं लिखे। (

46. कविता करके तुलसी न लसे
कविता लसी या तुलसी की कला ?
उक्त उक्ति किस कवि ने कही थी—
(क) श्री रामधारी सिंह दिनकर ने (ख) श्री मैथिलीशरण गुप्त
(ग) श्री सोहनलाल द्विवेदी ने
(घ) श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ने
(च) श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने। (

46. 'आरज सुत पद कमल बिनु बादि जहां लगि नात।'
उक्त पंक्ति से आये "आरजसुत" शब्द का क्या अर्थ है ?
(क) दत्तक पुत्र (ख) औरस पुत्र
(ग) आर्य पुत्र (पति) (घ) निज पुत्र
(च) सहोदर भाई। (

48. नयन सूझ नहिं सुनइ न काना। कहि न सकइ कछु अति अकुलाना
मन्त्री सुमन्त्र की इस स्थिति का कारण था—
(क) श्री राम और लक्ष्मण ने अयोध्या लौटने से मना कर दिया था
(ख) सीताजी ने सविनय अयोध्या लौटने में असमर्थता प्रकट की थी
(ग) वापस लौटते समय रथ के घोड़े विकल हो रहे थे

(घ) वे उस वणिक की तरह जा रहे थे जो अपना मूल भी खोकर जा रहा हो

(च) निषाद और भीलों का श्रीराम के प्रति अनुराग देखकर। ( )

49. श्रीराम के नाव मांगने पर भी केवट नाव क्यों नहीं लाया ?

(क) वह श्रीराम को गंगा पार नहीं कराना चाहता था

(ख) वह राजकुल के व्यक्तियों को गंगा पार नहीं कराता था

(ग) वह श्रीराम के चरण कमलों को धोना चाहता था।

(घ) उसे श्रीराम के चरण कमलों का माहात्मा ज्ञात हो गया था

(च) वह श्रीराम का चरणामृत पान करके सपरिवार मुक्ति चाहता था ( )

50. 'विहसे करुणाऐन चितइ जानकी लखन तन।' केवट की बात सुनकर श्रीराम के मुस्कराने का क्या कारण था ?

(क) केवट बड़ी चतुराई से अधिक पैसे मांग रहा था

(ख) वह उतराई लेने से मना कर रहा था

(ग) वह श्रीराम को बिना नाव के ही गंगा पार कराना चाहता था

(घ) वह श्रीराम को भगवान समझकर सपरिवार मुक्ति की याचना कर रहा था

(च) श्रीराम स्वभावतः ही मुस्कराने लगे थे। ( )

51. 'सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहि जगु किय तिहुं पगहुं ते थोरा॥' उक्त पंक्ति में श्रीराम के किस अवतार की ओर संकेत है ?

(क) नरसिंह अवतार (ख) वामनावतार।

(ग) शूकरावतार (घ) कृष्णावतार

(च) मत्स्यावतार। ( )

52. "एहि सम पुन्य पुञ्ज कोउ नाहिं।"
उक्त कथन कहा गया है—

(क) देवताओं के लिए (ख) निषादराज के लिये

(ग) मन्त्री सुमन्त्र के लिए (घ) केवट के लिए

(च) वनवासियों के लिए। ( )

53 "फिरती बार मोहि जो देवा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेवा॥"
केवट का उक्त कथन के पीछे क्या उद्देश्य था ?

(क) वह श्रीराम को पुनः गंगा पार कराना चाहता था

(ख) वह श्रीराम को गंगा पर कराके उतराई नहीं लेना चाहता था

(ग) वह प्रभु श्रीराम के दर्शन पुनः करना चाहता था

(घ) वह केवट ही राज परिवार के लोगों को गंगा पार करवाता था।

(च) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं। ( )

54. गंगा पार जाने पर सीता जी ने हाथ जोड़ कर गंगा माता से क्या म
पूरा करने की प्रार्थना की ?
(क) उनके वनवास की अवधि सकुशल पूर्ण हो
(ख) उनके सास-ससुर सानन्द रहें
(ग) उन्हें ऋषि-मुनियों के दर्शन सुलभ हो सकें।
(घ) वह पति और देवर सहित सकुशल लौटकर गंगा की पूजा करे
(च) उनसे सभी वनवासी प्रसन्न रहें। (

55. "लोकप होहिं बिलोकत तोरें। तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें।"
उक्त कथन किसने किससे कहा ?
(क) श्रीराम ने सीता से (ख) केवट ने श्रीराम से
(ग) गंगाजी ने सीताजी से (घ) सीताजी ने गंगाजी से
(च) लक्ष्मण ने सीताजी से। (

56. वाल्मीकि जी श्रीराम को वन में निवास हेतु उपयुक्त स्थान बताते हुए
सकुचाते हैं ?
(क) अयोध्या के राजकुमारों के रहने योग्य वन में कोई स्थान नहीं
(ख) वन में हर स्थान राक्षसों के कारण असुरक्षित था
(ग) श्रीराम सर्वव्यापक और सर्वान्तरयामी हैं।
(घ) वनवास में अनेक अभाव और असुविधाएं थीं
(च) वाल्मीकि की कुटिया के अलावा वन में और कोई स्थान नहीं थ
(

57. श्रीराम को चित्रकूट में रहने का परामर्श किसने दिया था ?
(क) मुनि वाल्मीकि जी ने (ख) अत्रि ऋषि ने
(ग) सती अनुसुया ने (घ) मित्रराज निषाद ने
(च) लक्ष्मण ने। (

58. देवता लोग विश्वकर्मा को साथ लेकर कोल-किरात का वेष धारण
चित्रकूट पर क्यों आये थे ?
(क) श्रीराम के दर्शन के लिए
(ख) श्रीराम के आवास के लिए सुन्दर घर बनाने के लिए
(ग) श्रीराम की घर बनाने में सहायता करने के लिए
(घ) श्रीराम को वन जीवन की कठिनाई बतलाने के लिये।
(च) अपनी भक्ति प्रदर्शन के लिए। (

59. 'सुन मन मूढ़। सिखावन मेरो।' इस पद में तुलसी के हृदय की कौन
भावना व्यक्त हुई है ?
(क) दीनता को (ख) प्रभुता को

(ग) विनय की (घ) अहंकार की
(च) श्रद्धा की । ( )

60. तुलसी के अनुसार आत्म स्वरूप (परमात्मा) को कौन पहचान सकता है ?
(क) जो भक्त है (ख) जो योगी है
(ग) जो सन्त है (घ) जिसे किसी प्रकार की भ्रान्ति न हो
(च) जो मोह माया से परे हो । ( )

61. 'ऐसो को उदार जग माहीं' पद में राम की किस उदारता का वर्णन किया गया है ?
(क) वे बिना सेवा के ही अपने भक्त से प्रसन्न रहते हैं
(ख) वे अपने भक्तों को मुक्ति देते हैं
(ग) वे अपने भक्तों को धन-सम्पदा, ऐश्वर्य और सुख देते हैं
(घ) वे भक्त की सब मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं
(च) उपर्युक्त सभी । ( )

62. तुलसी ने शत्रु-मित्र और मध्यस्थ इन तीनों की स्थिति किसके कारण बतलाई है ?
(क) प्रभु प्रेम के आधार पर (ख) भक्ति के आधार पर
(ग) मन में उत्पन्न विकारों के आधार पर
(घ) परस्पर विश्वास के आधार पर
(च) पारस्परिक व्यवहार के आधार पर । ( )

63 'कबहु ससि माँगत आरि करै, कबहुं प्रतिबिम्ब निहारि डरै ।
पंक्ति में किसका वर्णन हुआ है ?
(क) श्री राम की बाल सुलभ चपलता
(ख) दशरथ के चारों पुत्रों की बाल लीला
(ग) श्री राम की बाल हठ (घ) बालक के मन में व्याप्त भय
(च) माता पिता के मन का हर्ष । ( )

64. 'फिर बूझती है चलनो अब केतिक, पर्णकुटी करिहौं कित ह्वै ।'
उक्त पंक्ति में सीता जी के मन के किस भाव की अभिव्यक्ति हो रही है ?
(क) वन जीवन के प्रति उत्सुकता (ख) थकान के कारण आतुरता
(ग) नई गृहस्थी बसाने की चिन्ता
(घ) प्रिय की थकान के प्रति सहानुभूति
(च) वन जीवन की कठिनाई का अहसास । ( )

55. 'रावण सो राज रोगु बाढ़त उर' के उपचार के लिए मृगांक (औषधि विशेष) की रचना किसने की थी ?
(क) श्री सीता जी ने (ख) श्री लक्ष्मण ने

(ग) हनुमान जी ने (घ) सुग्रीव जी ने
(च) विभीषण जी ने ।

4. रहीम

66. रहीमदास जी को अपने जीवन के अन्तिम दिनों में दर-दर की खानी पड़ी थी—
(क) सम्राट अकबर के कारण (ख) सम्राट जहाँगीर के कारण
(ग) शाहजहां के कारण (घ) औरंगजेब के कारण
(च) बैराम खां के कारण । (

67. रहीम जी किस भाषा के विद्वान थे ?
(क) हिन्दी-संस्कृत (ख) अरबी
(ग) फारसी (घ) तुर्की
(च) उपर्युक्त सभी । (

68. मुसलमान होते हुए भी रहीम का अगाध प्रेमभाव था—
(क) भगवान कृष्ण के प्रति (ख) भगवान श्रीराम के प्रति
(ग) श्री हनुमान जी के प्रति (घ) काली माता के प्रति
(च) दुर्गा देवी के प्रति । (

69. रहीम की काव्य शैली सम्पूर्णतः कौन-सी है ?
(क) प्रबन्ध (ख) मुक्तक
(ग) गीति काव्य (घ) गद्य
(च) नाटक । (

70. रहीम बैकुण्ठ और कल्पवृक्ष की सुखद छाया को छोड़कर पलाश को महत्त्व देते हैं क्योंकि—
(क) पलाश की छाया शीतल होती है
(ख) पलाश की छाया सुखद होती है
(ग) पलाश वृक्ष की छाया मनोवांछित फल देने वाली होती है
(घ) वहां प्रिय कृष्ण का सामीप्य प्राप्त है
(च) उपर्युक्त में से कोई नहीं । (

71. रहिमन दाहे प्रेम के' प्रेम में जलने वाले हृदयों की क्या विशेषता है ?
(क) वे एक बार जल कर बुझ जाते हैं
(ख) वे एक बार बुझकर पुनः नही सुलगते
(ग) वे बार-बार बुझकर फिर सुलग जाते हैं
(घ) प्रेम करने वालों के हृदय जलते ही नहीं
(च) प्रेम करने वाले हृदय सदा हर्षित रहते है । (

72. 'यह न रहीम सराहिये, लेन-देन की प्रीति।' रहीम के अनुसार कौन-सा प्रेम सराहनीय है ?
(क) प्रेम जो सांसारिक व्यवहारों से उत्पन्न होता है
(ख) प्रेम जिससे लेन-देन का व्यवहार होता हो
(ग) प्रेम जो साहचर्य से उत्पन्न हुआ हो
(घ) प्रेम जो स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हुआ हो
(च) प्रेम जो प्रतिदान से रहित और त्यागपूर्ण हो। ( )

73. 'वहै प्रीति नाहिं रीति वह, नाहिं पाछिलो हेत' इस दोहे में रहीम ने प्रेम की किस विशेषता का वर्णन किया है ?
(क) प्रेम सदा समान रहता है
(ख) प्रेम में निरन्तर वृद्धि होती रहती है
(ख) प्रेम का समयानुसार ह्रास होता रहता है
(घ) प्रेम एक दिन समाप्त हो जाता है
(च) उपर्युक्त में से कोई नहीं। ( )

74. "जो 'रहीम' ओछो बढ़ै, " नीच व्यक्ति के आगे बढ़ जाने पर उसके स्वभाव में क्या परिवर्तन हो जाता है ?
(क) वह अहंकारी बन जाता है
(ख) वह बड़ों का सा व्यवहार करने लगता है
(ग) उसका छोटों के प्रति प्रेम बना रहता है
(घ) उसमें उदारता आ जाती है
(च) वह दुष्चरित्र बन जाता है। ( )

75. रहीमदास जी के अनुसार व्यक्ति का मान कब कम हो जाता है ?
(क) जब कोई बुरा काम करता है
(ख) जब वह किसी दूसरे व्यक्ति के घर पर जाता है
(ग) जब उसके पास दान देने को नहीं होता
(घ) जब व्यक्ति के पास कोई ऊंचा पद नहीं होता
(च) जब शासक रुष्ट हो जाता है। ( )

76. 'मित्र शत्रु ह्वै जात' रहीम के अनुसार मित्र भी शत्रु कब बन जाता है ?
(क) जब व्यक्ति के पास धन आता है
(ख) जब मित्रों के बीच में स्वार्थ आ जाता है
(ग) जब मित्रता कपट पूर्ण होती है
(घ) जब व्यक्ति के बुरे दिन आते हैं
(च) जब मित्र अस्वस्थ हो जाता है। ( )

77. रहीम के अनुसार व्यक्ति को किसी स्थान से कब तुरन्त ह
चाहिए ?
(क) जब चलने का समय हो जाये (ख) जब काम पूरा हो
(ग) जब मान-सम्मान में कमी दिखाई देने लगे
(घ) जब पास में पैसा नहीं रहे
(च) जब कोई परिचित वहां न हो।

78. 'धन थोरो इज्जत बड़ी, कहि 'रहीम' का बात।
जैसे कुल की कुल वधू, चिथड़न माहि समात॥"
उक्त दोहे में रहीम के कथन का भाव है कि—
(क) धन होने पर भी शीलवान का सम्मान होता है
(ख) कुल वधू चिथड़ों में भी शोभा देती है
(ग) धन न रहने पर भी व्यक्ति का मान रह सकता है
(घ) व्यक्ति का मान केवल धन के कारण ही होता है
(च) कुल वधू का धन न रहने पर भी मान होता है। (

79. "धनि 'रहीम' जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासो जाय॥"
उक्त दोहे में रहीम ने किसका महत्त्व बतलाया है—
(क) बड़े व्यक्तियों का जो अपने स्वार्थ में लगे रहते हैं
(ख) सागर का, जिसके तट से संसार प्यासा लौटता है
(ग) कीचड़ के जल का, जो छोटे जीवों की प्यास बुझाता है
(घ) समय पर काम आने वाले व्यक्ति का
(च) जो कभी किसी के काम नहीं आता, ऐसे व्यक्ति का। (

80. 'आप न काहू काम के, डार पात फल फूल।' दोहे में रहीम ने
प्रकार के व्यक्तियों का चित्रण किया है ?
(क) सज्जन व्यक्तियों के स्वभाव का
(ख) दुष्ट-दुर्जन व्यक्तियों के स्वभाव का
(ग) सहृदय-सुयोग्य व्यक्तियों के स्वभाव का
(घ) विरक्त-बैरागी स्वभाव के व्यक्तियों का
(च) उपर्युक्त सभी का। (

81. रहीम के अनुसार दूसरे व्यक्ति के दुःख को कौन समझ सकता है ?
(क) जो उसका प्रिय होता है
(ख) जो अपने निकट का रिश्तेदार होता है
(ग) जो स्वयं भुगतभोगी होता है (घ) जो सदस्य होता है
(च) जिसे लोक व्यवहार का ज्ञान होता है।

82. विधाता ने जिसे बड़ा बनाया है, वह दूसरों द्वारा अनेक बुराई निकाले जाने पर भी कैसा बना रहता है ?
(क) जो बुरा है, वह बुरा ही रहता है
(ख) जो भला है, वह भला ही रहता है
(ग) विधाता ने जिसे बडा बनाया है, वह बड़ा ही रहता है
(घ) विधाता द्वारा बड़ा बनाने पर भी लोक में वह छोटा हो जाता है
(च) लोक में विधाता की कुछ नहीं चलती । ( )

83. अशुभ स्थान पर जाकर भी कौन सा व्यक्ति कुकृत्य नहीं कर पाता ?
(क) जो ज्ञानी और विद्वान है (ख) जो सदा चारी है
(ग) जो उत्तम कुल के हैं (घ) जिनके मान-सम्मान का विचार है
(च) जिनका अपने मन पर नियन्त्रण है । ( )

84. 'मूढ़ ताहि लपटात' मूर्ख व्यक्ति किसमें लगे रहते हैं ?
(क) धन संचय करने में (ख) परस्पर वाद-विवाद में
(ग) सांसारिक विषय भोगों में (घ) लोक-विद्या की प्राप्ति में
(च) दिखावटी पूजा-पाठ में । ( )

85 रहीम के अनुसार 'दीन बन्धु सम' व्यक्ति कौन हैं ?
(क) जो दीनों की सेवा सहायता और उनसे प्रेम करता है
(ख) जो पत्थर के भगवान के समान कठोर बना रहता है
(ग) जो दीनों की आह-पुकार को सुनकर भी उनकी सहायता नहीं करता
(घ) जो लक्ष्मीपति बनकर भोग में लगा रहता है ।
(च) जो दीनों के मोहल्ले में जाकर रहने लगता है । ( )

86 'हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ।' संसार में हित-अनहित का ज्ञान कब होता है ?
(क) विपदा आने पर (ख) धन न रहने पर
(ग) परिवार में शोक होने पर (घ) स्वास्थ्य के बिगड़ जाने पर
(च) व्यवहार टूट जाने पर । ( )

87. बढ़त जात चित दिन-दिन, चौगुन चाव ।
मनमोहन तें मिलबौ, सखि कह दाव ॥
उक्त बरवै में नायिका के हृदय की किस भाव की व्यंजना हुई है ?
(क) विरह (ख) शोक
(क) विरक्ति (घ) मिलनोत्कण्ठा
(च) करुणा । ( )

88. ''मनमोहन बिन देखे, दिन न सुहाय।
गुन न भूलि हौं सजनी, तनक मिलाय॥
उक्त बरवै में जिस भाव की व्यंजना हुई है, वह है—
(क) कृतज्ञता (ख) सहानुभूति
(ग) संवेदना (घ) जुगुप्सा
(च) विद्गदता।

89. जदपि बसत है सजनी, लाखन लोग।
हरि बिन कित यह चित्त को, सुख संजोग॥
उक्त बरवै में नायिका के हृदयगत किस भाव की व्यंजना हुई है ?
(क) प्रेम में एक निष्ठता (ख) मिलनोत्कण्ठा
(ग) विरह-विकलता (घ) सहृदयता
(च) सखी के प्रति अनुराग। (

90. जैसे चौरासी लाख योनियों में मानव देह दुर्लभ है, वैसे ही संसार
(क) माता-पिता का होना दुर्लभ है।
(ख) पत्नी का प्रेम दुर्लभ है
(ग) सन्तान का प्रेम दुर्लभ है
(घ) धन की प्राप्ति दुर्लभ है
(च) सहज स्नेह दुर्लभ है। (

5. मीरा बाई

91. मीरा का प्रमुख स्थान है—
(क) हिन्दी की कवियत्रियों में (ख) प्रेम की आराधिकाओं
(ग) भारत की वीरांगनाओं में (घ) सन्त कवियों में।
(च) कृष्ण भक्ति शाखा के साधकों और कवियों में। (

92. मीरा के पिता थे—
(क) राव दूदा (ख) रावत रत्नसिंह
(ग) कुंवर भोजराज (घ) राणा सांगा
(च) महाराणा उदयसिंह। (

93. मीरा को ससुराल वालों ने मारने की कोशिश की—
(क) क्योंकि मीरा विधवा हो गई थी
(ख) क्योंकि वह लोक-लाज त्याग कर भक्ति करने लगी थी
(ग) क्योंकि पीहर वालों में कोई जीवित नहीं रहा था
(घ) क्योंकि वह मेवाड़ राज्य की स्वामिनी थी
(च) क्योंकि वह कवयित्री हो गई थी। (

94. मीरा की भक्ति किस प्रकार की थी ?
(क) दास्य भाव की (ख) सखा भाव की
(ग) पति-पत्नी भाव की (घ) वात्सल्य भाव की
(च) समर्पण भाव की। ( )

95. मीरा ने पारिवारिक कष्टों से तंग आकर किससे अपने छुटकारे का उपाय पूछा था ?
(क) गोस्वामी तुलसीदास से (ख) अब्दुर्रहीम खानखाना से
(ग) सूरदास से (घ) कबीरदास से
(च) रैदास से। ( )

96. मीरा की रचनाओं में कौन-सी रचना अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है ?
(क) नरसीजी को मायरो (ख) गीत गोविन्द की टीका
(ग) मीरानी गरबी (घ) रास गोविन्द
(च) राग सोरठ के पद। ( )

97. 'हम चितवत तुम चितवत नाहीं, दिल के बड़े कठोर।' में किस भाव की व्यंजना हुई है ?
(क) व्यंग्य (ख) विनय
(ग) उपालम्भ (घ) समर्पण
(च) विरक्ति। ( )

98. 'इन नैनन मेरा साहिब बसता, डरती पलक न नाऊं री।'
मीरा किस भय से अपने पलकों को नहीं गिराती है ?
(क) इससे उन्हें प्रिय को चोट लग जाने का भय है
(ख) इससे उन्हें प्रिय की मधुर मूर्त्ति के खो जाने का भय है
(ग) इससे उन्हें आंख लग जाने का भय है
(घ) वे प्रिय की मूर्त्ति को नेत्रों में नहीं बसाना चाहती
(च) वे प्रिय को हृदय में ही बसाये रखना चाहती है। ( )

99. 'अब तो बेलि फैल गई, आणंद फल होई' का आशय है ?
(क) अब बेल पर आनन्द के फल लगेंगे
(ख) अब परिश्रम का समुचित फल मिलेगा।
(ग) अब मेरा हृदय पूरी तरह से कृष्ण के रंग में रंग गया।
(घ) अब प्रिय से साक्षात्कार सम्भव है
(च) उपर्युक्त में से कोई विकल्प नहीं। ( )

100. 'मैं गोविन्द गुण गाणा' में किस भाव की व्यंजना होती है ?
(क) आस्था (ख) विश्वास
(ग) दृढ़ निश्चय (घ) प्रिय के कष्ट होने का भय

(च) परिजनों का भय

101. 'कहा करूं कछु नहि बस मेरो, पांख नहीं उड़ जावन को।'
उक्त पंक्ति में जिस भाव की व्यंजना हुई है, वह है—
(क) भक्ति (ख) प्रेम
(ग) उपालम्भ (घ) नैराश्य
(च) विवशता।

102. 'पंचरंग चोला पहर सखी म्हां झिरमिट खेलन जाती।' में चोला' का विशेष अर्थ क्या है ?
(क) पंच महाभूतों से निर्मित शरीर
(ख) पांच रंगों में रंगे वस्त्र
(ग) भगवद् भक्ति के लिए विशेष गेरुआ वस्त्र
(घ) रक्त में भीगा लाल वस्त्र
(च) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

103. 'पग बांध घुंघरयां णाच्या री' मीरा बाई पैर में घुंघरू बांध क है क्योंकि—
(क) पैरों में घुंघरू बांधने से नृत्य सुन्दर होता है
(ख) उन्हें घुंघरू बांध कर नाचना अच्छा लगता है
(ग) वे प्रिय कृष्ण को रिझाने के लिए ही नृत्य करती है
(घ) मीरा नृत्य और गायन में प्रवीण है
(च) उनके प्रिय कृष्ण को नृत्य का शौक है।

104. 'जोगिया भी निसदिन जोऊं बाट।' पंक्ति में किस भाव की व्य है ?
(क) चिन्ता (ख) मिलनोत्कण्ठा
(ग) विरह-वेदना (घ) अभिलाषा
(च) प्रतीक्षा।

105. 'पंडर होइ गया केस' कहकर मीरा किस भाव की व्यंजना करत है ?
(क) बाल झड़ गये हैं (ख) बाल पीले हो गये हैं
(ग) विरह व्यथा बढ़ गई है
(घ) प्रतीक्षा करते-करते वृद्धावस्था आ गई है
(च) मिलनोत्कण्ठा बढ़ गई है।

106. 'सावन में उमग्यो मेरा मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।'
उक्त पंक्ति में प्रकृति के किस रूप का वर्णन हुआ है ?
(क) आलम्बन रूप (ख) उद्दीपन रूप
(ग) उपदेशात्मक रूप (घ) वर्णनात्मक रूप

(च) मनोहारी रूप। ( )

'म्हारा ओलगिया घर आया जी।' पंक्ति में 'ओलगिया' शब्द का अर्थ है—

(क) अविनासी प्रियतम (ख) वैरागी प्रियतम

(ग) अन्तर्वासी प्रियतम (घ) कठोर हृदय प्रियतम

(च) प्रवासी प्रियतम। ( )

'दीदार' दिखाया हरि ने' में 'दीदार' शब्द का अर्थ है—

(क) दरवाजा (ख) दर्शन

(ग) दर्पण (घ) दोष

(च) दुःख। ( )

6. ढोला मारू रा दूहा

ढोला मारू की रचना मूलतः जिस शैली में हुई है, वह है—

(क) लोक काव्य (ख) प्रेम काव्य

(ग) प्रबन्ध काव्य (घ) मुक्तक काव्य

(च) दृश्य काव्य। ( )

मारवणी ने अपना संदेश ढोला को भेजा था—

(क) पत्र लिखकर डाक द्वारा (ख) पथिक के हाथ

(ग) अपने किसी सेवक के साथ (घ) अपनी सखी के हाथ

(च) ढाढ़ियों के माध्यम से। ( )

'जिमि-जिमि मन अगले किचइ, तार चढ़ंती जाय।' इस पंक्ति में आये 'तार चढ़ंतो' का भावार्थ निम्न में क्या है?

(क) तारक माला चढ़ना (ख) मन की तरंगों का ऊपर उठना

(ग) यौवन की तरंगों पर चढ़ना

(घ) वय के तारों पर चढ़ना-वयस्क होना

(च) तार पर चढ़ना। ( )

विवाह पश्चात मारवणी का ढोला से मिलन कब हुआ था?

(क) ससुराल जाने पर (ख) अपने पिता के घर में

(ग) नदी तट पर। (घ) स्वप्न में

(च) सखी के घर पर। ( )

सस्नेही समदाँ परइ, वसत हिया मंभार।

कुसनेही घर आंगणाई, जाण समदां पार॥

उक्त दोहे को आशय है—

(क) सच्चा प्रेमी दूर होने पर भी पास रहता है

(ख) प्रेमी के दूर रहने पर ही सच्चा सुख मिलता है
(ग) अस्नेही का सात समुद्र पार रहना ही अच्छा है।
(घ) प्रिय का घर-आंगन में रहना अच्छा है
(च) प्रिय हमेशा हृदय में रहता है।

114. 'प्रिय मेरा मइं प्रीउ की, तू प्रिउ कहइ सकूण।'
उक्त पंक्ति से नायिका के हृदयगत किस भाव की व्यंजना हुई है
(क) ईर्ष्या (ख) विरह जन्य खीझ
(ग) अनन्यता (घ) प्रिय पर एकाधिकार
(च) विरह जन्य वेदना।

115. मारवणी ने नींद न आने का क्या कारण बतलाया है ?
(क) शारीरिक अस्वस्थता (ख) परिजनों का बिछ
(ग) दिन भर के परिश्रम की थकान (घ) भविष्य की चिन्त
(च) प्रिय का वियोग।

116. 'सयणां तणीं संदेसड़ा, मुख बचने कहवाइ।'
प्रेमियों की प्रेम सन्देश भेजने की शैली क्या है ?
(क) मेघदूत (ख) पवत दूत
(ग) पक्षियों के पंखों पर लिखित
(घ) मुख से उवाचित
(च) नेत्रों से व्यंजित।

117. उवां लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ।' उक्त पंक्ति मे 'ला
का भावगत अर्थ क्या है ?
(क) लाख रुपये का पुरस्कार (ख) सबसे बड़ा इनाम
(ग) मनवांछित पुरस्कार (घ) लाख रुपये का दण
(च) इनमें से कोई भी नहीं।

118. 'जोवन जासइ प्राहुणउ, बेगइरऊ घर आय।' इस पक्ति में य
उपमा किससे दी गई है ?
(क) हिंस पशु से (ख) कमल पुष्प से
(ग) अतिथि स (घ) बालक की चंचलता से
(च) वर्षा की जल धारा से।

कचा विसर्जन (नाटक)

प्रस्तावना

119. नाटक में नट-नटी का क्या कार्य होता है ?
(क) गाना गाना (ख) नृत्य करना

(ग) दर्शकों का मनोविनोद करना (घ) कथा-सूत्रों को जोड़ना
(च) कहानी कहना। ( )

. 'इस तरह नट-नटी को देखकर कृपया नाक-भौं मत सिकोड़िये।'
नटी ने दर्शकों से उक्त निवेदन क्यों किया ?
(क) क्योंकि उनकी वेश-भूषा आकर्षक नहीं थी।
(ख) क्योंकि वे शिक्षित नहीं थे
(ग) क्योंकि वे प्राचीनता के प्रतीक हैं
(घ) क्योंकि वे मंच पर पहली बार आये थे
(च) आज मंच पर नट-नटी आवश्यक नहीं रहे। ( )

1. नटी के मतानुसार 'राग' का निवास कहां है ?
(क) संगीत के स्वरों में (ख) सबके हृदय में
(ग) जीवन की गति में (घ) कथा-कहानी में
(च) ईश्वर भक्ति में ( )

2. मां के ठाकुरजी थे—
(क) भगवान श्रीकृष्ण (ख) भगवान श्रीराम
(ग) हनुमान जी (घ) नरसिंहजी
(च) शिवजी। ( )

(प्रथम अंक)

3. मां संध्या समय खड़ी हुई क्या देख रही थी ?
(क) दूरदर्शन पर आ रहा धारावाहिक
(ख) डूबते हुये सूर्य का मनोहारी दृश्य
(ग) कार्यरत घर के सेवक (घ) परिजनों की प्रतीक्षा
(च) पड़ौस में हो रहा झगड़ा। ( )

4. मां ने शोनू को बाहर जाने से रोका, क्योंकि वह बाहर जाकर—
(क) दिन भर खेलता है (ख) दिन भर पढ़ता है
(ग) ऊटपटांग बातें सीखता है (घ) सिनेमा देखता है
(च) दोस्तों के साथ घूमता रहता है। ( )

5. शोनू के अनुसार 'लाइफ' कहां है ?
(क) घर के अन्दर (ख) घर के बाहर
(ग) विद्यालय में (घ) पुस्तकालय में
(च) खेल के मैदान में। ( )

6. शोनू के अनुसार जिन्दगी है—
(क) एक बेमतलब की वस्तु-जिसका कोई अर्थ नहीं

(ख) किसी विशेष उद्देश्य या लक्ष्य के लिए समर्पण
(ग) मौज-मस्ती और आशय की वस्तु
(घ) ठाकुरजी की निष्ठा पूर्वक सेवा
(च) दीन-हीन और गरीबों के प्रति सहानुभूति ।

127. शोनू के अनुसार पूजा पाठ का काम किसका है ?
(क) स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों का
(ख) ऑफिस जाने वाले क्लर्कों का
(ग) जिनकी मृत्यु निकट है, ऐसे बूढ़ों का
(घ) घर में रहने वाली महिलाओं का
(च) मन्दिर में पण्डे-पुजारियों का ।

128. 'बहू ! तुम कितना अच्छा अभिनय करती हो ! मैंने बिल्कुल ... था ।' उक्त कथन में मां का कौन-सा भाव प्रकट हुआ है ?
(क) व्यंग्य (ख) विनोद
(ग) परिहास (घ) उपहास
(च) सराहना ।

129. 'अफसर कॉलोनी' के पुरुष रहते है—
(क) दफ्तर में (ख) घर में
(ग) क्लबों में (घ) कुर्सी और फाइलों मे
(च) विदेश यात्रा पर ।

130. नीलम के अनुसार महापुरुषों की मूर्तियां होती है—
(क) उनके जीवन से प्रेरणा लेने के लिए
(ख) उनके कार्यों को स्मरण रखने के लिए
(ग) ड्राइंग रूम की सजावट के लिए
(घ) दूसरों को दिखाने के लिए
(च) स्वयं के देखने के लिए ।

131. "ओह ! तो महात्मा बुद्ध, शिव, दुर्गा, गणेश, सजावट के लिए देवी-देवताओं के साथ कुत्ते-घोड़े ।" उक्त कथन में मां का कौन-... प्रकट हुआ है ?
(क) आश्चर्य (ख) विनोद
(ग) व्यंग्य (घ) जिज्ञासा
(च) उपेक्षा ।

132. सेठ साहब को खाने की चीजों में क्या पसन्द था ?
(क) गर्म-गर्म हलवा (ख) 'चीज' पकौड़े
(ग) तले हुये पापड़ (घ) बेसन के लड्डू

) सांभर की फीणी । ( )

लम, शोनू को क्या बनाना चाहती थी ?

) बहुत बड़ा ऑफीसर (ख) अच्छा चिकित्सक

) इंजीनियर (घ) व्यापारी

) न्यूक्लियर फिजिक्स का व्याख्याता । ( )

टा प्रश्न करता है', यह कैसी बात है ?

) हर्ष की (ख) उल्लास की

) गर्व की (घ) सौभाग्य की

च) दुर्भाग्य की । ( )

ी प्रकाश चन्द्र पी. सी. कैसे बन गये ?

क) नौकरी में लगकर (ख) पद लाघव की कृपा से

ग) पत्नी की मेहरबानी से (घ) वर्तमान फैशन के कारण

च) दूसरों की नकल करके । ( )

ब से मनुष्य लिखे हुए को सच मानने लगा, तब से उसमें क्या परिवर्तन

 गया ?

क) वह अपने आपको भूल गया ।

ख) वह अपनी संस्कृति को भूल गया

ग) वह सब कुछ दूसरों के लिए करने लगा

घ) उसमें दिखावे की प्रवृत्ति आ गई

च) उपर्युक्त सभी परिवर्तन हो गए । ( )

ाँ के अनुसार उनका स्नान था—

क) नल के नीचे नहाना (ख) कूवे पर जाकर नहाना

ग) गोमती में स्नान (घ) वाणी संयम

च) मन की पवित्रता । ( )

ां के अनुसार 'मन्दिर' क्या है ?

क) ठाकुरजी की प्रतिमा (ख) श्रीकृष्ण की मूर्ति

ग) व्यक्ति का आचरण (घ) दिखावे की वस्तु

च) सांस्कृतिक शिक्षा का केन्द्र । ( )

ां ने अपनी दुर्गा बताया—

क) अपने चरित्र को (ख) अपने ठाकुरजी को

ग) चौक वाल मन्दिर को (घ) मन की स्वच्छता को

च) दीन-दुखियों की सेवा को ( )

ां के अनुसार उनका सत्संग था—

(क) गरीबों को दान (ख) असहायों की सहायता
(ग) मोहल्ले की स्त्रियों से गप-शप
(घ) उनका घर परिवार, आस-पड़ोस
(च) ठाकुरजी की सेवा ।

141. 'वाह रे तेरी समानता ।
उक्त कथन में किस भाव की अभिव्यक्ति होती है ?
(क) व्यंग्य (ख) हास्य
(ग) सराहना (घ) विनोद
(च) आश्चर्य ।

142. नीलम के अनुसार सेठी को किस चीज में जिज्ञासा है ?
(ख) नई-नई वस्तुएं देखने में (ख) नये शहर घूमने में
(ग) नई-नई वस्तुएं खाने में (घ) होटलों में घूमने में
(च) धर्म और अध्यात्म में ।

(द्वितीय अंक)

143 नीलम ने आशा को सेठी सहाब से क्या सुनाने को कहा था ?
(क) रामायण भजन (ख) अंग्रेजी गाना
(ग) फिल्मी सोंग (घ) देश भक्ति की कविता
(च) राष्ट्रीय गान ।

144. नीलम के अनुसार 'रामायण भजन' क्या है ?
(क) बूढ़े लोगों का काम (ख) हिप्पीजम की निसान
(ग) पिछड़ापन (घ) दिखावे की वस्तु
(च) आत्मा का दर्पण ।

145. 'अगर ऐसी गलती हुई तो मैं अपने भगवान के लिए प्राण दे दूंग
उक्त कथन से मां का कौन-सा भाव व्यक्त होता है?
(क) चेतावनी का (ख) संवेदना का
(ग) ईश्वर के प्रति भक्ति का
(घ) ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पण एवं त्याग का
(च) दिखावटीपन का

146. मां जी के अनुसार सुख कहां रहता है ?
(क) अपने ही अन्दर रहता है (ख) बाहर रहता है
(ग) सुन्दर वस्तुओं में रहता है (घ) हास्य विनोद में रहत
(च) सम्पन्नता में रहता है ।

147. मांजी का प्रयत्न करने से अभिप्राय था—
(क) किसी कार्य के लिए कोशिश करना ।

(ख) निरन्तर परिश्रम करना
(ग) किसी का हो जाना (घ) नित्य नये प्रश्न करना
(च) जिज्ञासा को जगाये रखना। ( )

148. सेठी के अनुसार भगवान में विश्वास जरूरी है क्योंकि—
(क) इससे मन को शान्ति मिलती है
(ख) मस्तिष्क का तनाव कम होता है
(ग) पूजा-पाठ में मन लगा रहता है
(घ) वृद्धों को सरलता से बहलाया जा सकता है
(च) मेडिकल साइन्स के अनुसार इसके बड़े फायदे हैं। ( )

149. 'आपकी कृपा से दिल्ली की नौकरी मिलते ही हम वैष्णव देवी के दर्शन करने जायेंगे।' श्रीमती नीलम के इस कथन का अभिप्राय था—
(क) सेठी को अपने पति की नौकरी के लिए स्मरण कराना
(ख) अपने भावी कार्यक्रम की जानकारी देना
(ग) सेठी पर अपनी धार्मिक आस्था को प्रकट करना
(घ) अपने पति की बड़ी नौकरी पर अभिमान करना
(च) इनमें से कोई नहीं। ( )

150. 'जो पत्थर को पूजा करता है, उसे बड़ा प्रेम है ?'
उक्त कथन से किस भाव की अभिव्यक्ति होती है ?
(क) हास्य (ख) विनोद
(ग) व्यंग्य (घ) उपालम्भ
(च) सराहना। ( )

151. मां को बहू की बातें बुरी नहीं लगती क्योंकि—
(क) वह भी किसी की बेटी है
(ख) वह उसके बेटे की पत्नी है
(ग) वह उसके प्यार की प्रतिष्ठा है
(घ) वह उसके वंश को बढ़ाने वाली है
(च) वह भी बच्चों की तरह बातें करती है। ( )

152. 'मेरे भरोसे पत्नी को छोड़ना ... नौकरों के भरोसे मां को छोड़ना.... यह कौन-सा जीवन है ?' इस कथन में किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है ?
(क) वेदना (ख) व्यथा
(ग) दुःख (घ) शोक
(च) निराशा। ( )

153. मांजी के अनुसार सवाद के लिए आवश्यक है—

(क) दो जैन का होना (ख) समानता का होना
(ग) अभिमान का होना (घ) विवाद का होना
(च) संघर्ष का होना । (

154. 'किसी ने बुलबुल से पूछा, दर्दे फुरकत' का इलाज ।'
'फुरसत' शब्द का क्या अर्थ है ?
(क) फुरसत का समय (ख) अलगाव-दूरी
(ग) दर्द का तेज होना (घ) बेचैन होना
(च) अस्वस्थ होना । (

155. 'बीमार आराम नहीं कर सकते' क्योंकि—
(क) वे हर वक्त बेचैन रहते हैं (ख) उन्हें नींद नहीं आती
(ग) मिलने वाले आते रहते हैं (घ) डॉक्टर परेशान करते हैं
(च) बार-बार दवा लेनी पड़ती है । (

156. नीलम आशा को कैसी लड़की बनाना चाहती है ?
(क) मिडीवियल (ख) मॉडर्न
(ग) एक्सरा-ऑडनरी (घ) घरेलू
(च) आर्य-कालीन । (

तृतीय अंक

157. नीलम के अनुसार धर्म-कर्म किस उम्र के बाद ठीक रहता है ?
(क) 25 की उम्र के बाद (ख) 40 की उम्र के बाद
(ग) 50 की उम्र के बाद (घ) 60 की उम्र के बाद
(च) 70 की उम्र के बाद (

158. मां के अनुसार सबूत की आवश्यकता होती है ?
(क) सच को झूठ साबित करने के लिए
(ख) झूठ को छुपाने के लिए
(ग) झूठ को सत्य बनाने के लिए
(घ) न्यायालय में मुकदमे के लिए
(च) परायों को विश्वास दिलाने के लिए । (

159. नीलम के अनुसार सत्य वह है—
(क) जिसका सबूत होता है (ख) जिसे सब स्वीकार करते
(ग) जो धार्मिक पुस्तकों में लिखा है (घ) जो विज्ञान मानता है
(च) जिसके विषय में कोई मतभेद नहीं होता । (

160. 'तरक्की के लिए श्रम नहीं, शक्ति चाहिए ।' यह विचार है—
(क) प्रकाश का (ख) मां का
(ग) नीलम का (घ) शोनू का
(च) आशा का । (

161 नीलम के अनुसार सेठो साहब समझदार हैं, क्योंकि—
(क) वे अपने मतलब की बात समझ जाते हैं
(ख) बिना बताये ही मन की बात जान जाते हैं
(ग) उन्हें लोक-व्यवहार का अच्छा ज्ञान है
(घ) उन्होंने प्रकाश चन्द्र को ऊंची नौकरी दे दी
(च) वे हर चीज को अपने स्वार्थ से देखते हैं। ( )

(चतुर्थ अंक)

162. सेठो साहब ने मां को बधाई किस बात की दी थी ?
(क) मांजी के पोता होने की
(ख) मांजी के पोते का विवाह होने की
(ग) बच्चों के परीक्षा में प्रथम आने को
(घ) प्रकाश के विदेश यात्रा पर जाने की
(च) प्रकाश के बहुत बड़ा अफसर बनने की। ( )

163. मांजी के लिए सेवा क्या है ?
(क) अहंकार का विसर्जन (ख) अहंकार का विकास
(ग) ठाकुर जी को भोग (घ) दीन-दुखियों की सहायता
(च) सबमें परमेश्वर का वास। ( )

164 सेठी के अनुसार पश्चिम की तरक्की का रहस्य क्या है ?
(क) वहां के लोग केवल काम करते हैं ( )
(ख) वे पूजा पाठ के चक्कर में नहीं पड़ते
(ग) वे पूजा पाठ का बहाना बनाकर काम चोरी नहीं करते
(घ) वहां के लोग मेहनती और ईमानदार हैं
(च) उपर्युक्त सभी। ( )

165. दिल्ली में बच्चों के एडमिशन के लिए कम से कम कितने प्रतिशत अंक चाहिए ?
(क) 40 प्रतिशत (ख) 50 प्रतिशत
(ग) 60 प्रतिशत (घ) 80 प्रतिशत
(च) 90 प्रतिशत। ( )

165. धर्म का अर्थ है ?
(क) कर्त्तव्य पालन (ख) पूजा-पाठ करना
(ग) रामायण पढ़ना (घ) सर्व जीवन के साथ एकाकार होना
(च) दीन-दुखियों की सेवा करना। ( )

एकांकी रत्नाकर

(सम्पादक—डॉ. श्रीधर सिंह)

1. दीपदान

167. 'दीपदान' एकांकी के लेखक हैं—
(क) उदय शंकर भट्ट (ख) भुवनेश्वर प्रसाद
(ग) डॉ. रामकुमार वर्मा (घ) विष्णु प्रभाकर
(च) लक्ष्मीनारायण लाल । (

168. 'दीपदान' एकांकी का शीर्षक रखने का मुख्य कारण है—
(क) अन्धकार को नष्ट करने के लिए प्रजा दीपदान करती है
(ख) चित्तौड की स्त्रियां तुलजा भवानी को दीपदान करती है
(ग) सोना नृत्यगान के साथ दीपदान करती है
(घ) पन्ना अपने पुत्र की बलि देकर दीपदान करती है
(च) बनबीर उदय सिंह को मारकर दीपदान करता है । (

169. 'दीपदान' किस श्रेणी का एकांकी है ?
(क) ऐतिहासिक (ख) सामाजिक
(ग) सांस्कृतिक (घ) धार्मिक
(च) पौराणिक । (

170. 'दीपदान' एकांकी से मिलने वाला संदेश है ?
(क) कर्त्तव्यपरायणता का (ख) परोपकारिता का
(ग) परिश्रमशीलता का (घ) त्याग और बलिदान का
(च) स्वावलम्बन का । (

171. "राज सेवा में जीवन जा रहा है, यह मेरे भाग्य की बात है ।" इस कथ
से पन्ना धाय की कौनसी चारित्रिक विशेषता प्रकट होती है ?
(क) निश्चितता (ख) कायरता
(ग) विलासिता (घ) आत्म गौरव
(च) स्वामिभक्ति । (

172. 'महल में धाय मां अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई है ।" इससे पन्ना ध
की किस विशेषता का पता चलता है ?
(क) कायरता (ख) अडियलपन
(ग) निर्भीकता (घ) कर्त्तव्यनिष्ठा
(च) स्वार्थपरता । (

173. पन्ना धाय के अनुसार चित्तौड़ भूमि है—
(क) राग रंग की (ख) त्याग-तपस्या की

(ग) देवताओं की (घ) सुख-दुःख की
(च) आत्म बलिदान और जौहर की। ( )

174. "राजपूतनी व्यापार नहीं करती, वह या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।" पन्ना के इस कथन में उसका कौनसा मनोभाव व्यक्त हुआ है?
(क) वीरता (ख) स्वाभिमान
(ग) निश्चय (घ) बलिदान
(च) आत्म त्याग। ( )

175. "ऐसा नहीं होगा, क्रूर, नराधम, नारकी, ले मेरी कटार का प्रसाद ले।" इस कथन से पन्ना की कौनसी चारित्रिक विशेषता प्रकट होती है?
(क) निर्भयता (ख) साहस
(ग) वीरता (घ) उत्साह
(च) दृढ़ता। ( )

176. बनवीर ने चित्तौड़ में दीपोत्सव क्यों मनाया था?
(क) प्रजा को भयमुक्त करने के लिए
(ख) नृत्यगान के प्रति अपना प्रेम प्रकट करने के लिए
(ग) तुलजा-भवानी की पूजा अर्चना के लिए
(घ) लोगों का ध्यान बटाकर उदयसिंह की हत्या के लिए
(च) विक्रमादित्य की हत्या पर हर्ष मनाने के लिए। ( )

177. "मेरे हृदय पर वज्र गिर रहा है। मेरी आंखों में प्रलय का बादल घुमड़ रहा है। मेरे शरीर के एक-एक रोम पर बिजली तड़प रही है।" पन्ना उक्त वाक्य क्या सोच कर कह रही है?
(क) बनवीर द्वारा उदयसिंह की हत्या के षड़यन्त्र की बात जानकर
(ख) कुंवर की हत्या की आशंका सोचकर
(ग) कुंवर की शैया पर अपने पुत्र चन्दन को सुला देने की बात सोचकर
(घ) महल को चारों ओर से सिपाहियों द्वारा घेर लेने की बात सोचकर
(च) कीरत बारी द्वारा उदयसिंह को छिपाकर ले जाने की योजना का बनवीर को पता चल जाने की बात सोचकर। ( )

2 दस हजार

178. "हाथ में चिट्ठी है, जिसे बार-बार उठाकर पढ़ता है और फिर सिरहाने रख देता है, फिर उठा लेता है, पड़ता है, और फिर रख देता है। उठकर बैठ जाता है और छत की ओर ताकता है और धम्म से फिर खाट पर लेट जाता है।" उपर्युक्त वर्णन सेठ विसाखाराम की किस स्थिति को प्रकट करता है?

(क) निश्चितता (ख) व्याकुलत
(ग) व्यग्रता (घ) बैचेनी
(च) उत्सुकता। (

179. "हे राम जी ! उबारो महाराज ! बड़ी विपदा आ पड़ी है।" सेठ बिस राम पर कौन सी विपदा आ गई थी ?
(क) उन्हें व्यापार में घाटा हो गया था
(ख) इबराहीम उनके रुपये लेकर फरार हो गया था
(ग) मुनीम जी ने खाण्ड महंगी खरीदी थी
(घ) मुनीम जी ने उस दिन की बिक्री का हिसाब नहीं दिया था
(च) लड़के को पठान उठा ले गये थे, जो फिरोती में दस हजार रुपये रहे थे। (

180. मुनीम जी के आने में देर होने का क्या कारण था ?
(क) वे सुन्दर को छुडाने चले गये थे
(ख) वे खान्ड के सौ बोरे खरीदने में रह गये थे
(ग) उन्हें रोकड़ मिलाने में समय लग गया था
(घ) वे इबराहीम की रिपोर्ट लिखाने पुलिस थाने गये थे
(च) वे मुहम्मद बक्स के आदमी से बात करने लग गये थे। (

181. "हा भगवान ! हे राम जी ! कैसा बुरा समय है।" सेठ जी के उक्त क का कारण था—
(क) इबराहीम उनके रुपये लेकर फरार हो गया था
(ख) पठान उनके लड़के को उठा ले गये थे
(ग) उनकी पत्नी लड़के की फिरोती में दस हजार रुपये देने को कह थी
(घ) लोग रुपया उधार लेकर लौटाने का नाम तक नहीं लेते
(च) सरकारी बोण्ड की कोई चिट्ठी नहीं आई। (

182. "मैं क्या सुन्दर का बाप नहीं हूँ ? तुम्ही बताओ। लड़के के बिना घर सूना सूना लगे है। पर, दस हजार ?" उक्त कथन से सेठ सुन्दर ल की किस चारित्रिक विशेषता का पता चलता है ?
(क) उसे संतान से पैसा अधिक प्रिय है
(ख) उसे पैसे से संतान अधिक प्रिय है
(ग) वह एक ममतालू पिता है
(घ) वह स्वभावतः कृपण और धन का लोभी है
(च) वह एक कुशल व्यापारी है। (

183. 'मुनीम जी, मैं तुम्हारे पैर पड़ूं हूँ। मेरे सुन्दर को ला दो।'
उक्त कथन में किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है ?
(क) विनम्रता (ख) उदासीनता
(ग) खुशामद (घ) विनय
(च) दीनता। ( )

184. "माता जी, घबराओ मत। सुन्दर को घर पर ही समझो।"
उक्त कथन में कथनकर्ता का कौनसा भाव प्रकट होता है ?
(क) आश्वस्त करने का (ख) धैर्य बंधाने का
(ग) सहानुभूति दिखाने का (घ) संवेदना प्रकट करने का
(च) चापलूसी करने का। ( )

185. "सेठ जी ! मैं तो आपको सलाह न दूंगा कि आप और इन्तजाम करें। नहीं तो आप लड़के से हाथ धो बैठेंगे। न करे ईश्वर !" उक्त कथन में परामर्शकर्त्ता का कौन-सा भाव प्रकट हुआ है ?
(क) भय (ख) आशंका
(ग) शोक (घ) उत्साह
(च) विनय। ( )

186. 'बेईमान हो गया है।' सेठ जी ने मुनीम जी के विषय ऐसा क्यों कहा था ?
(क) वह उनकी अनुमति के बिना ही लड़के को छुड़ाने चला गया था
(ख) उसने खान्ड को महंगे भाव से खरीदा था
(ग) उसने उस दिन की बिक्री का हिसाब नहीं दिया था
(घ) वह गोदाम की चाबियां देकर नहीं गया था
(च) उसने इबराहीम के विरुद्ध पुलिस में रिपोर्ट नहीं लिखवाई थी। ( )

187. प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक 'दस हजार' रखने का कारण है ?
(क) उस दिन सेठ जी की रोकड़ में दस हजार रुपये शेष थे
(ख) दस हजार रुपये की फिरोती देकर लड़के को छुड़वाया गया था
(ग) सेठ जी को व्यापार में दस हजार रुपये का लाभ हुआ था
(घ) सेठानी के जेवर दस हजार रुपये में बिके थे
(च) सुन्दर लाल दस हजार रुपये कमा कर लाया था। ( )

3. ऊसर

188. 'ऊसर' एकांकी में वर्णन किया गया है—
(क) मध्यमवर्गीय मानसिकता का (ख) व्यर्थ की गप-शप का

(ग) पारिवारिक विषयों की बातों का
(घ) ट्यूटर के कार्यों का (च) नासमझी के खेल का (

189. 'ऊसर' एकांकी का घटना काल है ?
(क) जनवरी माह की एक शाम (ख) दिसम्बर माह की एक शा
(ग) जून की भयंकर दोपहरी (घ) जुलाई में वर्षा की एक म
(च) अगस्त में स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व संध्या। (

190. गृह स्वामी ने छोटे लड़के को डांटा, क्योंकि—
(क) उसने कुर्सियां इधर उधर करदी थी
(ख) घर में मेहमान आये हुए थे
(ग) लड़का कुत्ते से खेल रहा था
(घ) उसने ढंग से कपड़े नहीं पहने थे
(च) वह ट्यूटर से पढ़ नहीं रहा था। (

191. ट्यूटर चाहकर भी गृह स्वामी से कुछ क्यों नहीं कह पा रहा था ?
(क) क्योंकि उसे कहने में लज्जा आती थी
(ख) गृह स्वामी सुवह से ही मेहमानों में व्यस्त थे
(ग) उसे कहने की आदत नहीं थी
(घ) गृह स्वामी का मिजाज कठोर था
(च) वह उसे छोटी-सी बात समझता था। (

192. 'गांधी तो सठिया गया है ?'' उक्त कथन है –
(क) मोटी रमणी का (ख) बडी लडकी का
(ग) ट्यूटर का (घ) गृह स्वामी का
(च) युवक का। (

193. मोटी रमणी के अनुसार दुनिया पर तबाइ कब आई ?
(क) गांधी जी के निधन के बाद
(ख) हिटलर की पराजय के बाद
(ग) द्वितीय महायुद्ध की सन्धियों के बाद
(घ) मलका विक्टोरिया के मरने के बाद
(च) भारत की स्वतन्त्रता के बाद। (

194. गृह स्वामिनी ट्यूटर को क्या समझती है ?
(क) अपनी बच्ची का शिक्षक (ख) पुत्रवत
(ग) नौकर (घ) भाइ-सदृश
(च) ज्ञान का सर्जक। (

195. इस एकांकी का शीर्षक 'ऊसर' रखा गया है क्योंकि इसमें

(क) खाली पड़ी जमीन का वर्णन है
(ख) इसमें 'ऊसर' भूमि का वर्णन है
(ग) इसमे मध्यम वर्गीय 'ऊसर' मानसिकता का वर्णन है
(घ) इसमें समाज के उच्च वर्ग का खोखलापन है
(च) इसमें किसी बांझ नारी की मर्मस्पर्शी घटना का वर्णन है। (   )

4. बलहीन

'बलहीन' एकांकी है—
(क) सांस्कृतिक (ख) सामाजिक
(ग) पौराणिक (घ) ऐतिहासिक
(च) धार्मिक। (   )

'बलहीन' एकांकी के लेखक हैं—
(क) डॉ. रामकुमार वर्मा (ख) विष्णु प्रभाकर
(ग) लक्ष्मीनारायण लाल (घ) उपेन्द्रनाथ अश्क
(च) लक्ष्मीनारायण मिश्र। (   )

'बलहीन' एकांकी की भाषागत विशेषता है?
(क) उसमें विदेशी शब्दों का सफल प्रयोग किया गया है
(ख) उसकी भाषा सरल, सुबोध और विषयानुकूल है
(ग) उसकी भाषा पात्रानुकूल हैं
(घ) उसकी भाषा देश-काल और वातावरण के अनुसार है,
(च) उसकी भाषा में लाक्षणिकता और प्रतीकात्मकता है। (   )

'बलहीन' एकांकी का प्रमुख उद्देश्य हैं—
(क) साहित्य के वर्तमान खोखले मूल्यों और अथार्थता पर व्यंग्य
(ख) टूटते हुए दामपत्य सम्बन्धों का अहसास
(ग) एक अमर कवि की नश्वर बीमारी का उल्लेख
(घ) नारी स्वतन्त्रता से जुड़े प्रश्नों पर विचार
(च) साहित्य से दर्शन की श्रेष्ठता सिद्ध करना। (   )

'बलहीन' एकांकी का प्रमुख पात्र है—
(क) कवि देवकुमार (ख) दर्शन का प्राध्यापक—शिवकुमार
(ग) देव कुमार की पत्नी—रजनी (घ) रजनी की मां—सरला
(च) रजनी का पिता। (   )

'सब कुछ उल्टा हो रहा है, सरला देवी। हमारे नेता शरीर को स्थूल कर रहे हैं और लेखक आत्मा को। उन्हें चरबी का रोग है और इन्हें क्षय का।' उक्त कथन में कौन-सा भाव निहित है?
(क) व्यंग्य (ख) उपहास

(ग) विनोद (घ) दुःख
(च) व्यथा ।

202. 'बलहीन' एकांकी में बलहीन कहा गया है—
(क) दर्शन के प्राध्यापक शिव नाथ को
(ख) पति उपेक्षिता रजनी को
(ग) जीवन की वास्तविकता और कर्त्तव्य से भागने वाले व्य
(घ) शारीरिक रूप से अशक्त व्यक्ति को
(च) पुत्री की पीडा जानकर भी कुछ करने में असमर्थ मां को

203. "पर आज का कवि सारे सम्बन्धों से छूटकर अम्बर में त्रिश
उक्त कथन में जिस भाव की अभिव्यक्ति हुई है, वह है—
(क) दुःख (ख) संवेदना
(ग) आत्मीयता (घ) व्यंग्य
(च) विनोद ।

204. "स्त्री का दुख स्त्री कभी नहीं समझती। पर जो पुरुष नहीं
निश्चय ही मन से" होता है—
(क) कायर (ख) कापुरुष
(ग) भयभीत (घ) स्त्री
(च) देवता ।

205. देवकुमार ने कवि की स्त्री कहा था—
(क) पत्नी को (ख) कविता को
(ग) ज्ञान को (घ) कल्पना को
(च) चिन्तन को ।

206. "धिक्कार है तुम्हें ! दूसरों की सहायता पर जीने वाले।"
किस भाव की अभिव्यक्ति होती है ?
(क) करुणा (ख) संवेदना
(ग) ईर्ष्या (घ) घृणा
(च) क्रोध ।

207. पुरुष का सत्य क्या है ?
(क) रुपया (ख) यश
(ग) स्त्री (घ) कविता
(च) उच्च पद ।

208. कला की पहली शर्त क्या है ?
(क) जीवन में अनुराग (ख) सौन्दर्य की अभिव्यक्ति

(ग) कल्पना की कमनीयता (घ) सहृदयता
(च) पारिवारिक जीवन की उपेक्षा। ( )

09. 'पाप का भार जितना कम रहे उतना ही अच्छा।' उक्त कथन से कथन कर्त्ता के मन की किस भावना की अभिव्यक्ति होती है ?
(क) पश्चाताप (क) उपदेश
(ग) घृणा (घ) आध्यात्मिकता
(च) उत्साह। ( )

10. विवाह के विषय में शिवनाथ का विचार था कि -
(क) वह जन्म-जन्मान्तरों का सम्बन्ध होता है
(ख) वह भाग्य का बन्धन होता है
(ग) वह संस्कारों से अनुमोदित होता है
(घ) वह बस जीवन में एक बार होता है
(च) वह दो आत्माओं का मिलन होता है। ( )

5. जोंक

211. 'जोंक' एकांकी किस शैली में रचित है ?
(क) वर्णनात्मक (ख) विवरणात्मक
(ग) उपदेशात्मक (घ) सामाजिक
(च) प्रहसन। ( )

12. 'जोंक' में जोंक कहा गया है ?
(क) एक कीट को (ख) प्रोफेसर आनन्द को
(ग) भोला नाथ को (घ) कमला को
(च) अनचाहे मेहमान को। ( )

213. बनवारी लाल कौन था ?
(क) डाक्टर (ख) कवि
(ग) अभिनेता (घ) देशभक्त
(च) मास्टर रहमत का दायां हाथ। ( )

14. बनवारी लाल ने भोलानाथ की पत्नी कमला को अपनी बहन बताया क्योंकि वह—
(क) नवां शहर की थी (ख) वह राहों नगर की थी
(ग) वह उसके चाचा की लड़की थी
(घ) वह उसके मित्र की लड़की थी
(च) वह उसके मामा की लड़की थी। ( )

15. भोलानाथ बनवारी लाल को मित्र न होने पर भी जाने के लिए क्यों नहीं कुछ कह पा रहा था ?

(क) दोनों हम वतनी थी
(ख) बनवारी उसके छोटे भाई का मित्र था
(ग) मास्टर रहमत का दांया हाथ था
(घ) उस शहर में अजनबी था
(च) शिष्टाचार के संकोच के कारण।

226. बनवारी लाल के अनुसार लौकी की खीर किस रोग में विशे
रहती है ?
(क) मोतीझरा (ख) चेचक
(ग) निमोनिया (घ) हिस्टीरिया
(च) डिप्थेरियां।

217. "कमबख्त गजब की रसोई बनाता है।" उक्त कथन में क
निहित है ?
(क) ईर्ष्या का (ख) प्रशंसा का
(ग) स्पर्धा का (घ) शाबासी का
(च) उपहास का।

218. 'उतरिये महाशय' अब जरा चन्द दिन बड़े घर की रोटियां तो
कथन में बनवारी लाल का कौन-सा भाव व्यक्त होता है ?
(क) हास्य (ख) उपहास
(ग) उपेक्षा (घ) व्यंग्य
(च) क्रोध।

219. "गुरुदास पुर में मेरा कोई परिचित नहीं था। अब आप सा
सब कुछ सुगमता से हो जायेगा। ठहरिये मै यह बैग उठा लूं।
लाल का उक्त कथन सुनकर भोलानाथ और प्रो. आनन्द का
हुआ होगा ?
(क) उन्हें काटो तो खून नहीं था
(ख) भई गति सांप छछुन्दर फेरी
(ग) आधा तीतर आधा बटेर (घ) अन्धा क्या चाहे दो आं
(च) न घर के न घाट के।

6. यह मेरी जन्म भूमि है

220. 'यह मेरी जन्म भूमि है' एकांकी की कथावस्तु है—
(क) पौराणिक (ख) सांस्कृतिक
(ग) सामाजिक (घ) ऐतिहासिक
(च) काल्पनिक।

1. "यह मेरी जन्म भूमि है" एकांकी का प्रमुख पात्र कौन है ?
(क) कर्नल होम्स (ख) मिस होम्स
(ग) महात्मा गांधी (घ) मनोहर लाल
(च) सीताराम । ( )

22. "यह मेरी जन्म भूमि है" एकांकी का मुख्य उद्देश्य है ?
(क) गुलाम बासियों की मनोव्यथा का चित्रण करना
(ख) भारत वर्ष के प्राकृतिक सौन्दर्य का उल्लेख करना
(ग) देश प्रेम, त्याग व बलिदान की प्रेरणा देना
(घ) अंग्रेजों व मुसलमानों के शासन का अन्तर बताना
(च) पदलोलुप भारतीयों की चमचागिरी का पर्दा साफ करना । ( )

23. मिस होम्स का कॉलेज से जल्दी लौटने का क्या कारण था ?
(क) उस दिन कॉलेज में और पीरियड नही थे
(ख) उस दिन कॉलेज की छुट्टी हो गई थी
(ग) उस दिन उसकी तबीयत खराब हो गई थी
(घ) कालेज के लगभग सभी छात्रों ने जुलूस में सम्मिलित होने का निश्चय किया था
(च) उसे अंग्रेजो द्वारा जुलूस को कुचलने की योजना का पता चल गया था। ( )

24. 'हमने उन्हें अमन से रहना सिखाया ।' कर्नल होम्स के इस कथन में उसका कौन-सा भाव अभिव्यक्त हुआ है ?
(क) गर्वोक्ति (ख) अभिमान
(ग) उदारता (घ) व्यंग्य
(च) विनोद । ( )

25. "वे विदेशी कपड़ों में, साहबी ठाठ में अकड़े हुए टेसू अपने आप को मानों खुदा समझते हैं लेकिन जिन्हें अपने मुल्क की गैरत नहीं वे क्या इंसान हैं ?" उक्त कथन में मिस होम्स के किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है ?
(क) दुख (ख) व्यथा
(ग) शोक (घ) सहानुभूति
(च) संवेदना । ( )

26. मिस होम्स अपने आप को हिन्दुस्तानी क्यों समझती थी ?
(क) क्योंकि वह हिन्दुस्तान में रहती थी
(ख) क्योंकि वह यहां के एक कॉलेज में पढ़ती थी
(ग) क्योंकि उसके पिता यहां कर्नल थे

(घ) क्योंकि उसका जन्म हिन्दुस्तान में हुआ था
(च) क्योंकि यहां के गरीब लोगों से उसे सहानुभूति थी ।

227. "जो लोग अंग्रेजी हुकूमत से छुटकारा पाना चाहते हैं वे खुद आमदा हैं ।" यह कथन है—
(क) राय साहब सीताराम का (ख) गुलाम मुहम्मद का
(ग) वली मुहम्मद का (घ) मनोहर लाल का
(च) कर्नल होम्स का ।

228. हिन्दुस्तान की भलाई के लिए राय साहब सीताराम क्या चाहते
(क) गांधी जी के आन्दोलन का समर्थन करना
(ख) कांग्रेस का अन्त करना
(ग) स्वतन्त्रता आन्दोलन का अन्त करना
(घ) अंग्रेजी शासन का अन्त करना
(च) अंग्रेजी शासन की खुशामद करना ।

229. मिस होम्स इस देश के लिए अपना बलिदान देने को क्यों तैयार थ
(क) क्योंकि उसने यहां शिक्षा पाई थी
(ख) क्योंकि उसके पिता को यहां ऊंचा पद मिला हुआ था
(ग) क्योंकि यह उसका फर्ज था
(घ) क्योंकि वह उस कौम की लड़की थी, जो आजादी पर प्राण देत
(च) यह देश उसकी जन्मभूमि है । (

230. "उस समय मुझे यह धन सम्पत्ति ऐश्वर्य अभिशाप जान पड़ता है ।" को ऐसा कब अनुभव होता है ?
(क) जब उसके पिता उसे खर्च के लिए पैसा नहीं देते
(ख) जब वह अपने से भी किसी अधिक रईस के बेटे के साथ होता
(ग) जब वह किसी स्वतन्त्र देश के युवक के सामने होता है
(घ) जब उसकी प्रेमिका उसके धनी होने के कारण नफरत करने है
(च) जब धन के कारण उसके साथी उससे दूर रहते है । (

7. मैं भी मानव हूं

231. "मैं भी मानव हूं" एकांकी सम्बन्धित है—
(क) कलिंग युद्ध के बाद अशोक के हृदय परिवर्तन से
(ख) मानवीय करुणा और त्याग की गाथा से
(ग) युद्ध के शौर्य और अदम्य साहस से
(घ) दीन-हीन गरीब व्यक्तियों के बोझिल जीवन से
(च) दुखी मानव के कठिनाई भरे जीवन से । (

मैं भी मानव हूँ एकांकी का प्रमुख पात्र है—
(क) कलिंग का राजकुमार (ख) महामात्य राधागुप्त
(ग) सम्राट अशोक (घ) भिक्षु उपगुप्त
(च) देवी संघामित्रा । ( )

. "मैं भी मानव हूँ" एकांकी के लेखक हैं—
(क) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल (ख) हरिकृष्ण प्रेमी
(ग) डॉ. रामकुमार वर्मा (घ) श्री विष्णु प्रभाकर
(च) उपेन्द्र नाथ अश्क । ( )

. 'मैं भी मानव हूँ' की कथावस्तु कैसी है ?
(क) ऐतिहासिक (ख) सामाजिक (ग) सांस्कृतिक (घ) पौराणिक
(च) मिश्रित । ( )

5. "मैं भी मानव हूँ" एकांकी विष्णु प्रभाकर के किस पुरस्कृत नाटक का अंश है ?
(क) प्रतिशोध (ख) ममता का विष
(ग) जज का फैसला (घ) सर्वोदय
(च) नव प्रभात । ( )

6. "हां, इस मरण पर्व में गिद्ध और गीदड़ ही तो आनन्द का संगीत अलापते हैं ।" यहां 'मरण पर्व' का अर्थ है—
(क) युद्ध (ख) मरण का त्योहार
(ग) दुर्घटना (घ) एक विशेष उत्सव
(च) मृत्यु पर गाया जाने वाला गीत । ( )

7. महामात्य राधागुप्त ने सम्राट अशोक को प्रसन्नता का क्या समाचार सुनाया ?
(क) युद्ध बन्द हो गया है
(ख) कलिंग के राजकुमार बन्दी हो चुके हैं
(ग) कलिंग कुमार को सम्राट के सामने उपस्थित किया जा सकता है
(घ) कलिंग कुमार बहुत वीर और साहसी है
(च) कलिंग में एक व्यक्ति ऐसा भी है, जो बोलना जानता है । ( )

8. बन्दीगृह में आकर कलिंग कुमार में क्या विशेष परिवर्तन आ गया ?
(क) वह पहले से अधिक निर्भीक बन गया
(ख) उसका मृत्यु का भय समाप्त हो गया
(ग) वह बिलकुल मौन हो गया
(घ) वह पहले से अधिक बोलने लगा
(च) उसने अपनी पराजय को नियति मानकर स्वीकार कर लिया । ( )

9. कौन किसी को कभी पराजित नहीं कर सकता ?
(क) वीर पुरुष (ख) उत्साहित पुरुष

(ग) हिंसक व्यक्ति (घ) कायर व्यक्ति
(च) सामान्य व्यक्ति ।

240. "कैसे विचित्र हैं कलिंग के लोग ! कितने असभ्य पर कितने
उक्त पंक्ति से किस भाव की व्यंजना होती है ?
(क) प्रशंसा (ख) आश्चर्य
(ग) उत्साह (घ) ईर्ष्या
(च) स्पर्धा ।

241. "विरासत एक प्रकार का दान है और दान लेना वीरता का अप
उक्त कथन से किस भाव की व्यंजना होती है ?
(क) सराहना (ख) निन्दा
(ग) विस्मय (घ) उपहास
(च) व्यंग्य ।

242. हृदय और आत्मा की बातें किन्हें शोभा देती हैं ?
(क) भिक्षुओं को (ख) वैरागियों को
(ग) सन्तों को (घ) नारियों को
(च) नारियों और भिक्षुओं को ।

243. "किसी का वध करने की कोई और रीति नहीं होती ।" सम्राट
किसी के वध करने की कौनसी रीति जानना चाहता था ?
(क) किसी को मारकर अपमानित किया जाये
(ख) किसी को मारकर सम्मानित किया जाये
(ग) जिसका वध करना हो उसके प्राण न निकले और वह मर जा
(घ) कोई व्यक्ति मरकर भी जीवित रह जाये
(च) किसी को उदारता पूर्वक क्षमा कर दिया जावे ।

244. साहसी मनुष्य को सामने पाकर कौन अपना काम करना भूल जाती
(क) मृत्यु (ख) हंसी
(ग) अस्वस्थता (घ) नारी
(च) संघामित्रा ।

245. 'व्यक्ति जब तक अपने लिए जीता है, तब तक वह'—
(क) बन्दी ही रहता है (ख) स्वार्थी रहता है
(ग) कृपण रहता है (घ) नश्वर रहता है
(च) संकीर्ण मनोवृत्ति वाला रहता है ।

246. किसी को पराजित करने की भावना क्या है ?
(क) मनुष्य की सबसे बड़ी कामना
(ख) मनुष्य की सबसे बड़ी उदारता

(ग) मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता
(घ) मनुष्य की सबसे बड़ी वीरता
(च) मानव मन की नीचता । ( )

5. सम्राटों के शासन में मनुष्यों की नियति क्या है ?
(क) चुपचाप युद्धों को सिरोधार्य करना
(ख) नित्य प्रति मरण-पर्व का आयोजन करना
(ग) सदैव विजय की कामना करना
(घ) आदेशों का पालन करना
(च) घायलों को जानवरों से बचाना । ( )

8. बसन्त ऋतु का नाटक

9. इलाहाबाद का प्रसिद्ध पार्क है—
(क) कम्पनी गार्डन (ख) ज्योलोजिकल गार्डन
(ग) अलफ्रेड पार्क (घ) गांधी पार्क
(च) इर्विन पार्क । ( )

. "ये लोग बड़ी मजेदार बात करने आये हैं ।" यहां ये लोग कहकर सम्बोधित किया गया है—
(क) लड़के व लड़की के पिताओं को
(ख) लड़के और उसके पिता को
(ग) लडकी और उसके पिता को
(घ) लड़के व लड़की को
(च) लड़का, लड़के का पिता और लड़की के पिता को । ( )

. युवक के पिता व युवती के पिता बाग में क्यों गये थे ?
(क) वे बाग में टहलने गये थे
(ख) वे एक विवाह के सम्बन्ध में बात करने गये थे
(ख) वे वहां खेलने गये थे
(घ) वे वहां मनोविनोद करने गये थे
(च) वे वहां वाद-विवाद करने गये थे । ( )

. लड़के के एम. ए. पास होते हुए भी बासन्ती के पिता ने लड़के के विवाह का प्रस्ताव को स्वीकार क्यों नहीं किया था ?
(क) क्योंकि लड़की भी एम. ए. पास थी
(ख) क्योंकि लड़का बेरोजगार था
(ग) लड़का किसी प्रतिष्ठित पद पर न था
(घ) लड़की उसे पसन्द नहीं करती थी
(च) लड़की का पिता उसे और अधिक पढ़ाना चाहता था । ( )

252. "आपका इस तरह दिमाग खराब हो जाना आपके लिए ठीक ही था सच, न्याय ऐसे में ही हुआ करता था।" उक्त कथन में जो भाव निहित वह है—
(क) हास्य (ख) व्यंग्य
(ग) विनोद (घ) सराहना
(च) अवहेलना। (

253. 'बसन्त ऋतु का नाटक' की मुख्य समस्या क्या है ?
(क) लड़के व लड़की के सम्बन्धों की (ख) प्रेम और विवाह की
(ग) दहेज प्रथा की (घ) विवाह से जुड़े प्रश्नों की
(च) माता-पिता की थोथी आदर्श वादिता की। (

254. "बसन्त ऋतु का नाटक' एकांकी के रचनाकार हैं—
(क) लक्ष्मीनारायणलाल (ख) उपेन्द्र नाथ अश्क
(ग) विष्णु प्रभाकर (घ) डॉ. राम कुमार वर्मा
(च) लक्ष्मीनारायण मिश्र। (

255. 'बसन्त ऋतु का नाटक' एकांकी की कथावस्तु कैसी है ?
(क) पौराणिक (ख) धार्मिक
(ग) सामाजिक (च) ऐतिहासिक
(च) आध्यात्मिक। (

छन्द–अलंकार

(छन्द)

256. 'वर्द्धक' शब्द में कौन-सा गण है ?
(क) भ गण (ख) न गण
(ग) म गण (घ) र गण
(च) य गण। (

257. 'निर्माल्य' शब्द में कौन-सा गण है ?
(क) त गण (ख) र गण
(ग) य गण (घ) स गण
(च) म गण। (

258. निम्नलिखित में से विषम मात्रिक छन्द कौनसा है ?
(क) दोहा (ख) सोरठा
(ग) गीतिका (घ) हरिगीतिका
(च) कुण्डलिया। (

259. नीचे लिखी पंक्तियों में हरिगीतिका का चरण कौनसा है ?
(क) को हिन्दू को तुरक कहावे, एक जिमी पर रहिये।
(ख) धूसरित धूलन रेणु तन मंडित, मुख दधि लेप किए

(ग) कहा कहत मामी के आगे, जानत नानी नानन।
(घ) सीस जटा सरसीरुह लोचन, बने परिधन मुनि चीर।
(च) अति विपरीत भई सुनि सूरज, मुरझाओ मदन जगायो। ( )

0. 'हरिगीति' का छन्द के प्रत्येक चरण में आरम्भ की दो मात्राएं कम करने से कौन-सा छन्द बनता है ?

(क) रोला (ख) उल्लाला
(ग) गीतिका (घ) द्रुतविलम्बित
(च) चौपाई। ( )

1. 'चौपाई' शब्द में कौन-सा गण है।

(क) य गण (ख) म गण
(ग) र गण (घ) ज गण
(च) त गण ( )

2. 'चौपाई' के विषय में कौन-सा कथन असत्य है ?

(क) प्रत्येक चरण में 16 मात्राएं होती हैं
(ख) अन्त में लघु-गुरु (IS) का प्रयोग होता है
(ग) अन्त में गुरु-लघु (SI) का प्रयोग होता है
(घ) यह वर्णिक सम छन्द है
(च) इसके अन्त में तुक मिलती है। ( )

3. 'गीतिका' के सम्बन्ध में कौन-सा कथन असत्य है ?

(क) इस छन्द में 4 चरण होते हैं
(ख) प्रत्येक मे चरण 26 मात्राएं होती हैं
(ग) प्रत्येक चरण में 13वीं मात्रा पर यति होती है।
(घ) प्रत्येक चरण के अन्त में लघु-गुरु (IS) का विधान होता है
(च) पहले की दूसरे से । तीसरे की चौथे से चरणान्त में तुक मिलती है। ( )

4. 'रोला और उल्लाला' से बना हुआ छन्द निम्नलिखित में से कौन-सा है ?

(क) मालिनी (ख) मन्दाकान्ता
(ग) छप्पय (घ) सवैया
(च) कुण्डलिया। ( )

. निम्नांकित पंक्ति किस छन्द का चरण है ?

'पर हित सरिस धरम नहिं भाई।'

(क) दोहा (ख) सोरठा
(ग) रोला (घ) उल्लाला
(च) चौपाई। ( )

266. 'दोहे' के सम्बन्ध में कौन-सा कथन असत्य है ?
(क) दोहे के विषय चरणों में 13-13 मात्राएं होती हैं
(ख) दोहे के सम चरणों में 11-11 मात्राएं होती हैं
(ग) दोहे के सम चरणों के अन्त में तुक का विधान होता है
(घ) दोहे क सम चरणों के अन्त में (ऽ।) का विधान होता है
(च) दोहे के सम चरणों के अन्त में (।ऽ) का विधान होता है। (

267. कौन-सा छन्द मात्रिक अर्द्धसम है ?
(क) गीतिका (ख) हरिगीतिका
(ग) कुण्डलिया (घ) उल्लाला
(च) रोला। (

268. निम्नलिखित में से कौन-सा छन्द वर्णिक है ?
(क) सवैया (ख) दोहा
(ग) चौपाई (घ) गीतिका
(च) कुण्डलिया। (

269. 'गीतिका' छन्द की परिभाषा किस विकल्प में सही है ?
(क) चार चरण, प्रत्येक चरण में 28 मात्राएं और 22 पर यति
(ख) चार चरण, प्रत्येक में 26 मात्राएं और 15-13 पर यति
(ग) चार चरण, प्रत्येक में 26 मात्राएं, 14 और 12 पर यति
(घ) चार चरण, प्रत्येक में 24 मात्राएं 13 और 11 पर यति
(च) चार चरण, प्रत्येक में 24 मात्राएं, 11 और 13 पर यति।
(

270. निम्नांकित में से कौन-सी उक्ति असंगत है ?
(क) कुण्डलिया संयुक्त छन्द है
(ख) छप्पय मात्रिक विषम छन्द है
(ग) चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएं होती हैं
(घ) हरिगीतिका के प्रत्येक चरण मे 15-13 पर यति होती है
(च) सवैया वर्णिक सम छन्द है। (

271. किस विकल्प में एक ही प्रकार के छन्द हैं।
(क) चौपाई-रोला (ख) दोहा-सवैया
(ग) चौपाई-मालिनी (घ) उल्लाला-मन्दाक्रान्ता (
(च) छप्पय-मत्तगयन्द।

272. 'चार चरणों का छन्द, प्रत्येक चरण में 24 मात्राएं, 11 वीं मात्रा यति, 13वीं मात्रा पर चरण पूर्ण।'
उपर्युक्त लक्षण किस छन्द के है ?
(क) उल्लाला (ख) दोहा
(ग) सोरठा (घ) रोला
(च) गीतिका। (

273. 'छप्पय' छन्द के लिए कौन-सा कथन सत्य है ?

(क) पहले दोहा फिर उल्लाला (ख) पहले रोला फिर उल्लाला
(ग) पहले उल्लाला फिर रोला (घ) पहले दोहा फिर रोला
(च) पहले उल्लाला फिर दोहा। ( )

274. 'चौदह चक्कर खायेगी, जब यह भूमि अभंग।
घूमेंगे इस ओर तब, प्रियतम प्रभु के संग ॥'
आएंगे तब हे सजनी।
अब दिन पर दिन गिनी और रजनी पर रजनी ॥
पर पल-पल ले रहा यहां प्राणों से टक्कर।
कलह मूल यह भूमि लगावे चौदह चक्कर॥'
उक्त कुण्डलिया का छूटा हुआ चरण कौन-सा है?
(क) प्रियतम प्रभु के संग (ख) प्रभु प्रियतम के संग
(ग) पति प्रियतम के संग (घ) प्रियतम पति के संग
(च) प्रियतम हरि के संग ( )

275. 'नाना चिन्ता सहित दिन को राधिका थी बताती।
आंखों को थी सजल रखती, उन्मना थीं दिखाती ॥'
उपर्युक्त उदाहरण में किस छन्द के लक्षण हैं?
(क) मालिनी (ख) मन्दाक्रान्ता
(ग) छप्पय (घ) रोला
(च) उल्लाला। ( )

276. पहले और तीसरे चरण में 15-15 मात्राएं, दूसरे तथा चौथे चरण में 13-13 मात्राएं, दूसरे और चौथे चरण के अन्त में गुरु (s) यह लक्षण किस छन्द पर घटित होता है?
(क) रोला (ख) दोहा
(ग) उल्लाला (घ) सोरठा
(च) चौपाई। ( )

277. निम्नलिखित में से 'मालिनी' छन्द का उदाहरण कौन-सा है?
(क) प्रकृति शांत हुई घर व्योम में।
चमकने रवि की किरणें लगी।
(ख) कर निकर सुधा से सिक्त राका शशि के।
प्रतापित कितने ही लोको को हैं बताते ॥
(ग) रोई आके कुसुम ढिग औ भृंग के साथ बोली।
वंशी द्वारा भ्रमति बन के बात की कोकिला से ॥
(घ) माथे चढ़ा मुदित सो उर में लगाऊं।
है चित चाह सुविभति उसे बनाऊं ॥

(च) हीन भये जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समाने ।
नीर सनेही को लाभ कलंक निराश ह्वै कायर त्यागत प्रानै ।
( )

278. निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण 'यगण' का है ?
(क) जननी (ख) भारत
(ग) भवानी (घ) पार्वती
(च) कनक । ( )

279. निम्नांकित गणों में कौन-सा नाम अशुद्ध है ?
(क) य गण (ख) भ गण
(ग) त गण (घ) स गण
(च) ल गण । ( )

280. तेईस वर्णों वाला वह छन्द कौन-सा है जिसमें 7. भ गण (ऽ।।) औ गुरु (ऽऽ) आते हैं ?
(क) रोला (ख) उल्लाला
(ग) सोरठा (घ) मत्तगयन्द
(च) मन्दाक्रान्ता । ( )

281 नीचे लिखी उक्तियों में से कौन-सी उक्ति गलत है ?
(क) मालिनी समवर्णिक छन्द है
(ख) वर्णिक छन्दों में गण-योजना भी रहती है
(ग) रोला मात्रिक सम छन्द है
(घ) छप्पय मात्रिक विषय छन्द है
(च) कुण्डलिया वर्णिक विषय छन्द है । ( )

282. निम्नांकित शब्दों में से किस शब्द में 3 मात्राएं है ?
(क) सौन्दर्य (ख) स्वास्थ्य
(ग) सावित्री (घ) सर्वत्र
(च) स्वर । ( )

283. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है ?
(क) छप्पय के पहले दो चरण उल्लाला के होते हैं
(ख) कुण्डलिया के अन्तिम दो चरण दोहे के होते है
(ग) सवैया गण-योजना का नियम नहीं होता
(घ) मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक चरण मे 6-6 गण होते है
(च) मालिनी के प्रत्येक चरण में 15-15 वर्ण होते हैं । ( )

284. दिवस का अवसान समीप था,

गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु शिखा पर थी अब राजती,
कमलिनी कुल वल्लभ की विभा ॥
उपर्युक्त पद में कौन-सा छन्द है ?

(क) मन्दाक्रान्ता (ख) भुजंग प्रयात
(ग) मालिनी (घ) द्रुतविलम्बित
(च) वंशस्थ। ( )

285. 'प्रत्येक चरण में 17 वर्ण, य, म, न, स और ल गण तथा 18 के क्रम से चरण पूर्ण।' उपर्युक्त लक्षण किस छन्द के हैं ?

(क) शिखरिणी (ख) बसन्त तिलका
(ग) मालिनी (घ) उल्लाला
(च) सवैया। ( )

286. 'यों ही प्रबोध करते पुरवासियों का।
नाना कथा परम शान्तिकारी सुनाते ॥
आये ब्रजाधिप निकेतन पास ऊधो।
पूरा प्रसार करती करुणा जहां थी ॥'
उपर्युक्त उदाहरण किस छन्द का है ?

(क) उल्लाला (ख) शिखारिणी
(ग) बसन्त तिलका (घ) गीतिका
(च) रोला। ( )

287. प्रत्येक चरण में त गण, भ गण, ज गण तथा अन्त में दो गुरु (ss) के योग से 14 वर्ण।
उपर्युक्त लक्षण किस छन्द पर घटित होते हैं ?

(क) मालिनी (ख) मन्दाक्रान्ता
(ग) मत्तगयन्द (घ) सवैया
(च) बसन्त तिलका। ( )

288. वह कौन-सा छन्द है जिसके प्रत्येक चरण में न गण, भ गण, भ गण और र गण के योग में 12 वर्ण होते हैं ?

(क) दोहा (ख) चौपाई
(ग) द्रुतविलम्बित (घ) हरिगीतिका
(च) छप्पय। ( )

289. 'मिली में स्वामी से, पर कह न सकी कथा संभल के।
बहे आंसू होके सरित, सब उपालम्भ गल के ॥'
उपर्युक्त उदाहरण जिस छन्द का है, वह है—

(क) मन्दाक्रान्ता (ख) बसन्त तिलका
(ग) शिखारिणी (घ) छप्पय
(च) रोला। (

290. 'नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुन्दर हैं।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर हैं॥
नदियां प्रेम प्रवाह, फूल-तारे मण्डन हैं।
बन्दीजन खग वृन्द, शेष फन सिंहासन हैं॥
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की॥'
उपर्युक्त उदाहरण 'छप्पय' छन्द का है, क्योंकि—
(क) क्योंकि इसमें रोला और उल्लाला दो छन्दों का मेल हुआ है
(ख) क्योंकि यह छन्द दोहा और रोला का सम्मिश्रण है
(ग) इस छन्द में 24 मात्राएं हैं
(घ) इसके प्रत्येक चरण में समान वर्ण हैं
(च) इसके पहले-तीसरे व दूसरे चौथे चरणों में समान मात्राएं हैं। (

अलंकार

291. निम्नलिखित में से शब्दालंकार नहीं है?
(क) अनुप्रास (ख) यमक
(ग) वक्रोक्ति (घ) उत्प्रेक्षा
(च) श्लेष। (

292. निम्नलिखित में से जो अलंकार अर्थालंकार नहीं है, वह है—
(क) यमक (ख) उपमा
(ग) रूपक (घ) सन्देह
(च) विभावना।

293. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सत्य नहीं है? (
(क) अलंकार काव्य के शोभा कारक धर्म है।
(ख) अलंकारों का काव्य में वही महत्त्व है जो एक स्त्री के लिए आभूष का होता है।
(ग) अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग से काव्य की सुन्दरता में निख आता है।
(घ) अलंकारों के प्रयोग से काव्य में चमत्कार आ जाता है
(च) अलंकारों के बिना काव्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती। (

. जिस अलंकार में उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाती है ?
(क) अनुप्रास (ख) उपमा
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) रूपक
(च) भ्रान्तिमान । ( )

"ज्ञान-दीप प्रकाश करि, भीतर भवन जराय ।
तहाँ सुमिर सतनाम को, सहज समाधि लगाय ।"
उपर्युक्त दोहे में कौन-सा अलंकार है ?
(क) विभावना (ख) विरोधाभास
(ग) उपमा (घ) रूपक
(च) अन्योक्ति । ( )

"उठा बगूला प्रेम का, तिनका उड़ा अकास ।
तिनका तिनके से मिला, तिन का तिन के पास ।।"
उपर्युक्त दोहे में किस अलंकार के सौन्दर्य का निरुपण हुआ है ?
(क) उपमा (ख) यमक
(ग) श्लेष (घ) सन्देह
(च) निदर्शना । ( )

कौन-सी परिभाषा सही नहीं है ?
(क) अनुप्रास में वर्ण बार-बार आते हैं ।
(ख) यमक में शब्द बार-बार आकर भी अर्थ नहीं बदलते हैं ।
(ग) रूपक में उपमेय और उपमान में अभेद दिखाया जाता है ।
(घ) श्लेष में शब्द एक बार आता है, पर अर्थ अनेक होते हैं ।
(च) उत्प्रेक्षा में एक वस्तु में दूसरी की सम्भावना की जाती है । ( )

"बिनु देखे बिनु अरस-परस बिनु, नाम लिए का होई ।
धन के कहे धनिक जो हो तो निरधन रहत न कोई ।।"
उपर्युक्त पंक्तियों में कौनसा अलंकार है ?
(क) निदर्शना (ख) मानवीकरण
(ग) दृष्टान्त (घ) विशेषण विपर्यय
(च) विरोधाभास । ( )

किस पंक्ति में उपमा अलंकार है ?
(क) राम मे स्नुत ऐसे बसे, जैसे जल मीना रे ।
(ख) साईं बिन दरद करेजे होय ।
(ग) मन ना रंगाये रंगाये जोगी कपड़ा ।
(घ) राम के कहे जगत गति पावै खांड कहे मुख मीठा ।
(च) संतो भाई आई ग्यान की आंधी रे । ( )

300. किस अलंकार में एक शब्द बार-बार आता है लेकिन अर्थ
नहीं होते हैं ?
(क) श्लेष (ख) यमक
(ग) अनुप्रास (घ) अन्योक्ति
(च) दीपक ।

301. "परा सो पेय समुद्र अपाशा लहरहिं लहर होई विसं भरा।"
उक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?
(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) प्रदीप
(च) अपन्हुति ।

302. निम्नलिखित में से उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण कौन-सा है
(क) विरह भौंर होइ भांवरि देइ। जन-जिन जीउ हिलोरा ले
(ख) कठिन मरन ते प्रेम बेवस्था। ना जिउ जियै, न दसवें अ
(ग) "जनु लेनिहार न लेहिं जिउ, हरहिं तरसहि ताहिं।
एसनै बोल आव मुख, करैं तराहि-तराहि ॥"
(घ) कहहु सो पीर, काह पुनि मांगा। समुद सुमेरू आय तुम्ह
(च) तुम राजा औ सुखिया, करहु राज सुख भोग।
एहि रे पंथ सो पहुंचे, सहै सो दुःख वियोग।

303. कौन-सी परिभाषा सही है ?
(क) श्लेष में शब्द की बार-बार आवृत्ति होती है।
(ख) यमक में अर्थ की आवृत्ति होती है।
(ग) रूपक में उपमेय को उपमान के समान बताया जाता है।
(घ) अनुप्रास में शब्द बार-बार अलग-अलग अर्थों में आता है
(च) मानवीकरण में मानवी भावों का आरोप प्रकृति
जाता है।

304. वह कौन-सा अलंकार है, जिसमें उपमेय का उपमान से अ
जाता है ?
(क) उपमा (ख) रुपक
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) यमक
(च) अन्योक्ति ।

305. निम्नलिखित में से किस पंक्ति में रूपक अलंकार नहीं है ?
(क) चरण कमल रज कहु सब कहई। मानुष करनि मूरि कव
(ख) जो प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद-पदुम पखार
(ग) मुनि मूरति मिय गौतलि बानी। भयउ बिकल जन
हानी ॥

(घ) जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिन्धु अपारा ॥
(च) अति आनंद उमगि अनुरागा। चरण सरोज पखारन लागा। ( )

6. 'लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि वेष, जनु रति रितुराज समेत ॥'
उपर्युक्त काव्यांश में कौन-सा अलंकार है ?
(क) उत्प्रेक्षा (ख) उपमा
(ग) रूपक (घ) दृष्टान्त
(च) निदर्शना। ( )

7. 'जो विषया सन्तन तजी, मूढ़ ताहि लपटात।
ज्यों नर डारत वमन कर, स्वान स्वाद सों खात ॥''
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?
(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) दीपक
(च) दृष्टान्त। ( )

8. "लखि मोहन की बंसी, बंसी जान।
लागत मधुर प्रथम पै, बेधत प्राण ॥"
उपर्युक्त काव्यांश में किस शब्द के कारण यमक अलंकार है।
(क) लखि (ख) मोहन
(ग) बंसी (घ) मधुर
(च) प्राण। ( )

9. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प रूपक अलंकार से सुशोभित है।
(क) मोहि पीत बिन देखें, छिन न सुहात।
पल-पल भरि-भरि उलझत, दृग जलजात ॥
(ख) कहा कान्ह ते कहनो, सब जग साजि।
कौन होत काहू के, कुबरी राखी ॥
(ग) उन बिन कौन निबाहै, हित की लाजे।
ऊधो तुमई कहियो, धनि बृजराज ॥
(घ) तुम सब भाँतिन चतुरे, यह कल बात।
होरी से त्योहारन, पीहर जात ॥
(च) उझकि-उझकि चित दिन-दिन, हेरत हार।
जब ते बिछुरे सजनी, नन्द कुमार ॥ ( )

निम्नांकित अर्द्धाली के काले पद को हटाने पर कौन-सा अलंकार होगा ?
"देखि चांद **अस** पद्मिनि रानी, सखी कुमीद सबै बिगसानी"
(क) उत्प्रेक्षा (ख) रूपक

(ग) अन्योक्ति (घ) अनन्वय
(च) अतिशयोक्ति ।

311. निम्नलिखित में से किस विकल्प में सन्देह अलंकार है ?
(क) पपइया रे पिव की वाणी न बोल ।
(ख) पिय बिन सूनो छै म्हारो देल ।
(ग) कै तो जोगी जग में नांहीं, कै र विसारी मोय ।
(घ) मीरां के प्रभु गिरधर नागर, आनंद मंगल गावन की ।
(च) म्हांरे घरे पधारो गिरधर, मगल गावैं नारी ।।

312. "बावहिया, तू चोर, थारी चांच कटाबिसूं ।
राति जो दीन्हीं लोर, मई जाणमउ प्री आवियउ ।।"
उपर्युक्त काव्यांश में अलंकार है—
(क) विरोधाभास (ख) सन्देह
(ग) विभावना (घ) भ्रान्तिमान
(च) निदर्शना ।

313. निम्नलिखित में से किस विकल्प में 'भ्रान्तिमान' का स्वाभा
हुआ है ?
(क) ज्यां की जोड़ी बीछड़ी, त्यां निसि नींद न आइ ।
(ख) जिणकी जोड़ी बीछड़ी, तिणका कवन हवाल ।
(ग) सूनि सेज, विदेस प्रिय, मधुरइ-मधुरई गाज्जि ।।
(घ) बाबाहिया डूंगर-दहण, छांडि हमारउ गांम ।
सारी रात पुकारियउ लइ-लइ प्रियकउ गांम ।।
(च) कावहिया तरपंखिया, तइं किऊं दीन्हीं लोर ।
मई जाण्यउ प्रिय आवियउ, ससहर चद चकोर ।।

314. निम्नलिखित में से कौन-सी उक्ति असत्य है ?
(क) वक्रोक्ति में स्रोता वक्ता के कथन का दूसरा अर्थ लगा लेता
(ख) श्लेष में एक ही शब्द एक से अधिक अर्थ देता है ।
(ग) यमक में एक ही शब्द की आवृत्ति भिन्न-भिन्न अर्थों में हो
(घ) विरोधाभास मे विरोध न होते हुए भी विरोध
रहता है ।
(च) दृष्टान्त अलंकार में उपमेय को उपमान बना दिया जात

315. निम्नलिखित में से कौन-सा अर्थालंकार नहीं है ?
(क) उत्प्रेक्षा (ख) अनन्वय
(ग) रूपक (घ) वक्रोक्ति
(च) दृष्टान्त ।

6. निम्नांकित में से कौन-सा कथन असंगत है ?
(क) रूपक में अभेद आरोप होता है ।
(ख) श्लेष में सन्दर्भ भेद से अर्थ भेद होता है ।
(ग) दृष्टान्त में एक कथन सामान्य और दूसरा विशेष होता है ।
(घ) अनुप्रास में वर्णों की आवृत्ति होती है ।
(च) अनन्वय में उपमान उपमेय एक ही होता है । ( )

7. दृष्टान्त अलंकार का कौन-सा लक्षण है ?
(क) उपमेय वाक्य और उपमान वाक्य में समानता बताने के लिए वाचक शब्दों का प्रयोग होता है ।
(ख) उपमेय वाक्य और उपमान की बातें एक-सी नहीं होतीं किन्तु मिलती जुलती होती हैं ।
(ग) उपमेय स्वयं अपना उपमान बन जाता है ।
(घ) उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है ।
(च) उपमेय से उपमान को अलग कर दिया जाता है । ( )

8. निम्नांकित में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है ?
(क) दृष्टान्त अलंकार में उपमेय वाक्य और उपमान वाक्य में बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव होता है ।
(ख) अन्योक्ति अलंकार में जो बात कहनी होती है, वह न कहकर कोई अन्य बात कही जाती है ।
(ग) अतिशयोक्ति अलंकार में बात बढ़ा-चढ़ाकर कही जाती है ।
(घ) भ्रान्तिमान अलंकार में उपमेय और उपमान में एकदम समानता होती है ।
(च) वक्रोक्ति अलंकार में वक्ता जिस अर्थ में अपनी बात कहता है, श्रोता वही अर्थ लेता है । ( )

9. "का सरवरि तेहि देऊं मयंकू ।
चाँद कलंकी वह निकलंकी ॥"
उपर्युक्त काव्यांश में कौन-सा अलंकार है ?
(क) व्यतिरेक (ख) विभावना
(ग) सन्देह (घ) रूपक
(च) दीपक । ( )

10. 'जीहु नाइ रे जिए गुसांई । कर नाहीं पर करे सवाई ॥"
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?
(क) प्रदीप (ख) दृष्टांत

(ग) सन्देह (घ) अपन्हुति

(च) विभाजन ।

321. निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण विभावना अलंकार का

(क) चित्रकूट जन अचल अहेरी । चुकइ न घात मार मुठ भेरी

(ख) राम लखन सिय पद सिरु नाई । फिरेउ बनिक जिमिक मु

(ग) सिय मुख सरद कमल, जिमि किमी कही जाय ।
निसि मलिन वह, निसि दिन यह विगसाई ॥

(घ) शून्य भीतों पर चित्र रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे ।

(च) हृदय घाव मेरे, पीर रघुवीरे ।

322. निम्नलिखित में से दीपक अलंकार की सही परिभाषा कौन-सी

(क) जहां उपमेय तथा उपमान का एक ही धर्म से सम्बन्ध स्थ
जाये ।

(ख) जहा उपमेय तथा उपमान अभेद हो जाये ।

(ग) जहां उपमेय उपमान की समानता बतलाई जावे ।

(घ) जहां उपमेय में उपमान की सम्भावना बतलाई जावे

(च) जहां उपमेय स्वयं अपना उपमान हो ।

323. "पौधे, सींचा ही नहीं उन्हें गोड़ो भी ।
डालों को चाहें जिधर उधर मोड़ो भी ॥
पुरुषों को तो बस राजनीति की बातें ।
नृप में माली में काट-छांट की घातें ॥
उपर्युक्त काव्यांशों में कौन-सा अलंकार है ?

(क) प्रतीप (ख) दीपक

(ग) विभावना (घ) निदर्शना

(च) असगति ।

324. 'या अनुरागी चित की गति समुझहि नहीं कोय ।
ज्यों-ज्यों बूडै स्याम रंग त्यों-त्यों उज्ज्वल होय ॥'
उपर्युक्त पंक्ति में विरोधाभास अलंकार है, क्योंकि—

(क) यहां वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास

(ख) इसमें किसी प्रकार का कोई विरोध नहीं है

(ग) अनुरागी हृदय की गति विचित्र होती है

(घ) अनुरागी हृदय को कोई समझ नहीं पाता

(च) काले रंग में डुबाने पर वस्तु सफेद नहीं होती ।

325. 'मानवीकरण' अलंकार का प्रयोग किसी शैली की रचनाओं मे
होता है ?

(क) रहस्यवादी (ख) प्रगतिवादी

(ग) प्रयोगवादी (घ) हालावादी

(च) छायावादी । ( )

6. "बीती विभावरी जाग री
अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा घट ऊषा नागरी ।"

उपर्युक्त पंक्तियों में मानवीकरण अलंकार है, क्योंकि—

(क) इनमें प्रातः कालीन मानवीय व्यवहार का उल्लेख है

(ख) इसमें प्रातकालीन प्रकृति की सुन्दरता का वर्णन है

(ग) इसमें प्रकृति पर मानवी भावों का आरोपण किया गया है

(घ) उपर्युक्त काव्यांश छायावादी शैली का है

(च) उपर्युक्त काव्यांश प्रगतिवादी शैली का है । ( )

7. "दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही
वह संध्या सुन्दरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे ।"

उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?

(क) प्रताप (ख) दीपक

(ग) व्यतिरेक (घ) मानवीकरण

(च) विभावना । ( )

28. 'विशेषण-विपर्यय' अलंकार का प्रयोग किया जाता है —

(क) अर्थ में चमत्कार उत्पन्न करने के लिए

(ख) भाव में चमत्कार उत्पन्न करने के लिए

(ग) शैली में चमत्कार उत्पन्न करने के लिए

(घ) शब्द चमत्कार उत्पन्न करने के लिए

(च) विशेषण बदलने के लिए । ( )

29. "अभिलाषाओं की करवट
फिर सुप्त व्यथा का जगना
सुख का सपना बन जाना,
गीली पलकों का लगना ।।"

उपर्युक्त काव्यांश में कौन-सा अलंकार है ?

(क) विशेषण विपर्यय (ख) मानवीकरण

(ग) असंगति (घ) व्यतिरेक
(च) निदर्शना ।

330. "जहां कारण के न रहने पर भी उसके फलस्वरूप होने वाले अ
किया जावे ।" वहां कौन-सा अलंकार होता है ?
(क) सन्देह (ख) भ्रान्तिमान
(ग) प्रतीप (घ) अपन्हुति
(च) विभावना ।

331. 'व्यतिरेक' अलंकार की कौन-सी परिभाषा है ?
(क) जहां उपमान की तुलना में उपमेय का गुणोत्कर्ष दिखलाया
(ख) जहां उपमान को ही उपमान बना दिया जावे
(ग) जहां उपमेय-उपमान अभेद हो जावें
(घ) जहां उपमेय में उपमान की सम्भावना की जावे
(च) जहां उपमेय उपमान की तुलना की जावे ।

332. "इस मुख के रहने पर भी
विधि ने क्यों शशि बनाया ?
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?"
(क) विभावना (ख) यमक
(ग) अपन्हुति (घ) प्रतीप
(च) विशेषण-विपर्यय ।

333 'प्रतीप' का शाब्दिक अर्थ होता है—
(क) दीपक (ख) प्रतीक
(ग) उल्टा (घ) सामान्य
(च) विशेष ।

334. 'प्रतीप' अलंकार होता है—
(क) जहां उपमेय के रहते उपमान को व्यर्थ बताया जाये
(ख) जहां उपमान को उपमेय से श्रेष्ठ बतलाया जावे
(ग) जहां उपमेय-उपमान की समानता बतलाई जावे
(घ) जहां उपमेय में उपमान की सम्भावना की जावे
(च) जहां उपमान के न रहने पर भी उपमेय से ही कार्य निकल ज

335. "अत्यन्त समानता के कारण जहां एक वस्तु में किसी दूसरी व
समानता का ज्ञान कर लिया जाय ।" वहां कौन-सा अलंकार होता
(क) सन्देह (ख) भ्रान्तिमान

(ग) प्रतीप (घ) दृष्टान्त

(च) अपन्हुति । ( )

336. "दिशाएं झुकी जा रही ज्यों सुराही ।
टपकती सुरा है, न ये ओस बूंदें ॥"
उपर्युक्त काव्यांश में कौन सा अलंकार है ?

(क) प्रतीप (ख) दृष्टान्त

(ग) अपन्हुति (घ) संदेह

(च) निदर्शना । ( )

337. 'उपमेय पर उपमान के निषेधपूर्वक आरोप' को कौनसा अलंकार कहते हैं ?

(क) यमक (ख) श्लेष

(ग) वक्रोक्ति (घ) अपन्हुति

(च) विभावना । ( )

338. निम्नलिखित में से कौन-सा अलंकार शब्दालंकार है ?

(क) प्रतीप (ख) सन्देह

(ग) दृष्टान्त (घ) अपन्हुति

(च) यमक । ( )

339. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है ?

(क) विशेषण-विपर्यय में शैली का चमत्कार होता है

(ख) मानवीकरण में मानवी भावों का आरोप प्रकृति पर दिया जाता है

(ग) उपमेय पर उपमान के निषेध पूर्वक आरोप को अपन्हुति कहते हैं

(घ) रूपक में उपमेय और उपमान की समानता दिखलाई जाती है

(च) जहां उपमेय के रहते उपमान को व्यर्थ बताया जावे, वहां प्रतीप अलंकार होता है । ( )

340. निम्नलिखित मे कौन-सा कथन सत्य है ?

(क) प्रतीप में उपमेय को उपमान बना दिया जाता है

(ख) अनुप्रास में शब्दों की बार-बार भिन्न-भिन्न अर्थ मे आवृत्ति होती है

(ग) विरोधाभास में वास्तविक विरोध होता है

(घ) विभावना में कारण के बिना ही कार्य की उत्पत्ति दिखाई जाती है

(च) अपन्हुति में उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाता है । ( )

उत्तरमाला (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

प्राचीन काव्य कलाधर

1. क	2. घ	3. ग	4. च	5. ख	6.
8. क	9. ग	10. घ	11. क	12. ख	13. ग
15. क	16. ग	17. घ	18. ग	19. ख	20. क
22. च	23. ख	24. घ	25. ग	26. घ	27. क
29. ग	30. ख	31. ग	32. च	33. क	34. घ
36. घ	37. ख	38. क	39. ग	40. घ	41. ग
43. क	44. च	45. ग	46. घ	47. ग	48. ख
50. घ	51. ख	52. घ	53. ग	54. घ	55. ग
57. क	58. ख	59. क	60. घ	61. च	62. ग
64. ख	65. ग	66. ख	67. च	68. क	69. ख
71 ग	72. च	73. घ	74. क	75. ख	76. घ
78. क	79. घ	80. ख	81. ग	82. ग	83. च
85. क	86. क	87. घ	88. क	89. क	90. च
92. ख	93. ख	94. ग	95. क	96. ख	9[illegible] ग
99. घ	100. ग				

101. च	102. क	103. ग	104. च	105. घ
107. च	108 ख	109. क	110. च	111. घ
113. क	114. ख	115. च	116. घ	117. ग

कथा विसर्जन (नाटक

119. घ	120. च	121. ख	122. क	123. घ
125. ख	126. क	127 ग	128. च	129. घ
131. ग	132. ख	133. ग	134. घ	135. क
137. घ	138. ग	139. क	140. घ	141. क
143. ख	144. ग	145 घ	146. क	147. ग
149 क	150. ग	151. च	152. ख	153. ख
155. क	156. ख	157. घ	158. ख	159. क
161. च	162. च	163. क	164. च	165. घ

एकांकी रत्नाकर

167. ग	168. घ	169. क	170. घ	171. च
173. च	174. च	175. ख	176. घ	177. ग
179. च	180. ग	181. घ	182. क	183. घ

185. ख	186. ग	187. ख	188. क	189. ख	190. ग
191. ख	192. च	193. घ	194. ग	195. ग	196. ख
197. च	198. ख	199. क	200. ख	201. च	202. ग
203. क	204. घ	205. ख	206. घ	207. ग	208. क
209. क	210. घ	211. च	212. च	213. च	214. क
215. च	216. घ	217. ख	218. घ	219. ख	220. घ
221. ख	222. ग	223. घ	224. क	225. ख	226. घ
227. क	228. ख	229. च	230. ग	231. क	232. ग
233. घ	234. क	235. च	236. क	237. ख	238. घ
239. घ	240. ख	241. च	242. च	243. ग	244. क
245. क	246. ग	247. घ	248. ग	249. च	250. ख
251. ख	252. ख	253. घ	254. क	255. ग।	

छन्द अलंकार

(छन्द)

256. क	257. क	258. च	259. क	260. ग	261. ख
262. घ	263. ग	264. ग	265. च	266. च	267. घ
268. क	269. ग	270. घ	271. क	272. घ	273. ख
274. क	275. ख	276. ग	277. ख	278. ग	279. च
280. घ	281. च	282. च	283. च	284. घ	285. क
286. ग	287. च	288. ग	289. ग	290. क।	

अलंकार

291. घ	292. क	293. च	294. ग	295. घ	296. ख
297. ख	298. ग	299. क	300. ग	301. ख	302. ग
303. च	304. ख	305. ग	306. क	307. च	308. ग
309. क	310. ख	311. ग	312. घ	313. च	314. च
315. घ	316. ग	317. ख	318. च	319. क	320. च
321. घ	322. क	323. ख	324. क	325. च	326. ग
327. घ	328. ग	329. क	330. च	331. क	332. घ
333. ग	334. क	335. ख	336. ग	337. घ	338. च
339. घ	340. घ।				

साधना पास बुक्स

सीनियर हायर सैकण्डरी परीक्षा

विशेष हिन्दी

भाग (अ)

अति-लघूत्तरात्मक प्रश्न

निर्देश - निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक का उत्तर 20 से 30
लिखिये।

प्राचीन काव्य कलाधर

1. कबीर

प्रश्न 1. 'हिन्दू-मुस्लिम एकता के संस्कार जन्मजात रूप से कबीर में ही विद्यमान थे।' उक्त कथन का औचित्य क्या है ?

उत्तर —कबीर का जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था उनका लालन-पालन मुस्लिम जुलाहा दम्पत्ति नीमा और नीरू ने किया था

प्रश्न 2. कबीर को बहुश्रुत क्यों कहा जाता है ?

उत्तर —कबीर ने विधिवत् कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की थी लेकिन अपने पारिवारिक वातावरण के कारण साधुओं, सन्तों और फकीरों की सुनने का खूब अवसर मिला था। उन्हीं से अर्जित ज्ञान कबीर का ज्ञान था

प्रश्न 3. कबीर के 'राम' का स्वरूप क्या है ? लिखिये।

उत्तर —कबीर के 'राम' दशरथ पुत्र न होकर कुछ और ही है। वह कार, निराकार, अजन्मा और अनादि होकर भी घट-घट वासी और अलख चर है। वह परब्रह्म परमात्मा है।

प्रश्न 4. कबीर के काव्य में खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति का मूल उद्देश्य क्या है ?

उत्तर—कबीर बाह्यडम्बरों, पाखण्डों और मिथ्याचारों के विरोधी थे। इनका खण्डन-मण्डन करके कबीर धर्म और समाज में सुधार लाना चाहते थे। वे धर्म के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत करना चाहते थे।

प्रश्न 5. कबीर-काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिये।

उत्तर—कबीर के काव्य में मुख्य रूप से तीन प्रवृत्तियां दृष्टिगोचर होती हैं—

(1) खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति, (2) धर्म और समाज सुधार की भावना और (3) आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति।

प्रश्न 6. जो कुछ किया सो तुम किया, मैं कछु किया नांहि।
कहो कही जो मैं कियो, तुम ही थे मुझ माहिं ॥
उक्त साखी में निहित कबीर के भक्ति भाव को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—भक्त को ईश्वर की सामर्थ्य, शक्ति और महानता पर अटूट विश्वास होता है। वह विश्व के समस्त कार्यों का कर्त्ता परमात्मा को मानता है। मनुष्य में कुछ भी करने की सामर्थ्य नहीं। वह तो निमित्त मात्र है। उक्त साखी में भक्त कबीर की विनय शीलता, लघुता व दीनता व्यक्त हुई है।

प्रश्न 7. "सार शब्द जाने बिना, कागा हंस न होय।"
उक्त पंक्ति में कागा और हंस किसके प्रतीक हैं ?

उत्तर—उक्त पंक्ति में कागा विकृतियों से युक्त, भ्रष्ट और भ्रमित व्यक्ति का प्रतीक है जबकि हंस शुद्ध-बुद्ध जीवन मुक्त के लिए प्रयुक्त हुआ है। परमात्म तत्त्व को जाने बिना कौआ हंस नहीं बन सकता।

प्रश्न 8. 'भक्ति भेष बहु अन्तरा" भक्त और वेशधारी साधु में क्या अन्तर है ?

उत्तर—भक्त भगवान के चरणों में लीन रहता है। वह माया से रहित, विनम्र और निस्पृह होता है जबकि वेशधारी जगत से आशा लगाये रखते हैं।

प्रश्न 9. 'बड़ी दूर है प्रेम घर, समझ लेहु मन मांहि।'
उक्त पंक्ति के कबीर के कथन का क्या आशय है ?

उत्तर—कबीर का आशय प्रेम मार्ग की कठिनाइयों की ओर संकेत करना है। प्रेम का मार्ग लम्बा, संकीर्ण और बाधाओं से भरा है। इस मार्ग के पथिक को मृत्यु-भय त्याग देना चाहिये।

प्रश्न 10. धन के सम्बन्ध मे साधु पुरुष की क्या नीति होती है

उत्तर—साधु धन का संचय नहीं करता। वह उतना ही ग्रहण जो उसकी आवश्यकता पूर्ति के लिए आवश्यक होता है। वह स्वभाव से और त्याग होता है।

प्रश्न 11. 'सर्पहि दूध पिलाइये सोई विष ह्वै जाय।'
उक्त पंक्ति मे निहित भावार्थ को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—सांप को दूध पिलाने से दूध जैसी उत्तम वस्तु भी जहर ब है। इसी प्रकार इस मन को जैसे-जैसे माया या सांसारिक सुखों से तृप्त वैसे-वैसे वह माया में लीन होता जाता है।

प्रश्न 12. 'दास कबीरा यों मुवा बहुरि न मरना होय।'
उक्त पंक्ति में निहित भाव को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—कबीर के उक्त कथन का भाव है कि संसार आवागमन के से बंधा है। वह फिर से जन्म लेने के लिए ही मरता है लेकिन कबीर ने भक्ति के द्वारा उस बन्धन को काट दिया है। उनकी जीवात्मा परमात्मा गई है।

प्रश्न 13. गुरु धोबी सिष कापड़ा, साबुन सिरजन हार।
सुरति सिला पर धोइये, निकसे ज्योति अपार॥
उक्त साखी के आधार पर गुरु महिमा का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—गुरु शिष्य के चित्त को धोबी के समान निरन्तर स्वच्छ निर्मल बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। वह परमात्मा रूपी साबुन से रूपी वस्त्र को स्मृति रूपी शिला पर धोकर उज्जवल बनाता है जिससे भक्त सांसारिक मोह-माया जनित मैल छूट जाता है और उससे अपार ज्योति लगती है।

प्रश्न 14 "मूरख ! बॉबी ना डँसे सर्प सबन को खाय।"
यहां पर बॉबी और सांप का क्या भावार्थ है ?

उत्तर—बॉबी और सर्प से कबीर का आशय क्रमशः शरीर और श व्याप्त माया-मोह से है। माया से बचने के लिए अज्ञानी शरीर को कष्ट लेकिन माया मोह के प्रति आसक्ति का त्याग नहीं करते।

प्रश्न 15. दोनों कबहूँ ना मिले रवि रजनी एक ठाम।' से कबीर क अभिप्राय है ?

उत्तर—कबीर के उक्त कथन का अभिप्राय है कि दो विरोधी वस्तु साथ नहीं रह सकती। जहां सूर्य होगा, वहा अन्धकार नहीं होगा। उसी जब तक मन मे कामनाओं का वास रहता है उस समय तक हरि का नाम सम्भव नही है। प्रभु भक्ति के लिए कामनाओं का त्याग आवश्यक है।

प्रश्न 15. कबीर ने माया और छाया में क्या समानता बतलाई है ?

उत्तर—जो व्यक्ति माया और छाया को पकड़ने का प्रयास करता है, उससे वे दूर ही रहती हैं लेकिन जो इनसे भागता है, दूर रहने का प्रयास करता है उसके ये पीछे-पीछे फिरती हैं।

प्रश्न 17. 'दरियाब की लहर दरियाब है जी' से कबीर क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर—कबीर उक्त उदाहरण द्वारा आत्मा और परमात्मा की एकता और अभिन्नता का वर्णन करना चाहते हैं। जैसे सागर और सागर के जल की लहर अभेद हैं वैसे ही परमात्मा और जीवात्मा भी एक है।

प्रश्न 18. 'भक्ति का मारग झीना रे' पद में कबीर ने भक्त की क्या विशेषताएं बतलाई हैं ?

उत्तर—भक्त सभी प्रकार की इच्छाओं से रहित और प्रभु भक्ति में लीन रहने वाला होता है। वह निरन्तर भक्ति की रस धारा में भीगा रहता है। वह भक्ति में वैसे ही डूबा रहता है जैसे मछली जल में। उसमें सर्व समर्पण और त्याग की भावना होती है।

प्रश्न 19. 'सत्त नाम ताही को मिलि है कहै कबीर सुजाना।'

कबीर के अनुसार सत्त नाम की प्राप्ति का अधिकारी कौन है ?

उत्तर—कबीर के अनुसार जो व्यक्ति मन में दया भाव रखकर अहिंसा धर्म का पालन करते हुए संसार के राग द्वेष व दुःख-सुख से उदास रहता है और सब जीवों से आत्म-भाव रखता है, उसे ही वह अनश्वर परमात्मा मिलते हैं।

प्रश्न 20. 'पंडित बाद बदै सो झूठा'

पंडितों का कथन असत्य कैसे है ?

उत्तर—पंडितों का कहना है कि राम-नाम लेने से ही व्यक्ति संसार सागर से पार हो जाता हैं। कबीर का मानना है कि प्रेम के अभाव में परमात्मा की वास्तविकता के ज्ञान के बिना नाम-स्मरण व्यर्थ है। उससे कोई लाभ नहीं होता। अतः पंडितों का कहना है मिथ्या और असत्य है।

प्रश्न 21. सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ि कै मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीनो चदरिया।।

उक्त काव्यांश में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—यह शरीर परमात्मा द्वारा निर्मित एक चादर है। इसे सभी को धारण करना पड़ता है लेकिन सभी इसको काम में लेकर मैला कर देते हैं। कबीर ने इस शरीर रूपी चादर को बड़े यत्न से काम में लिया और मृत्यु से पूर्व उसे वैसा ही निर्मल और स्वच्छ छोड़ दिया जैसी वह उन्हें जन्म के समय मिली थी।

प्रश्न 22. 'सन्तों भाई आइ ज्ञान की आंधी रे' ज्ञान की आंधी का परिणाम हुआ ?

उत्तर—ज्ञान की आंधी आने पर अर्थात् हृदय में ज्ञानोदय होने पर माया और भ्रम की झोंपड़ी उड़ गई। मन की सारी दुविधा, तृष्णता और भ्र भाग गये। मन का कपट-कूड़ा दूर होने से मन निर्मल हो गया। चारों ओर का आलौकिक प्रकाश दृष्टिगोचर होने लगा।

2. मलिक मौहम्मद जायसी

प्रश्न 23. मलिक मुहम्मद जायसी की उपलब्ध रचनाएँ कितनी हैं ? उन नाम लिखिये।

उत्तर—जायसी की अब तक उपलब्ध प्रमुख रचनाएँ चार हैं—(i) पद्मावत, (ii) अखरावट, (iii) आखिरी कलाम और (iv) चित्ररेखा या चित्रावत।

प्रश्न 24. 'पद्मावत' में रहस्यात्मकता स्वतः आ गई है ? कैसे ?

उत्तर—'पद्मावत' काव्य में राजा रत्नसेन आत्मा और पद्मावती परमात्मा के प्रतीक हैं। इनके लौकिक प्रेम पर अलौकिक प्रेम की स्पष्ट वलय है अतः 'पद्मावत' में रहस्यात्मकता स्वतः ही आ गई है।

प्रश्न 25 जायसी की काव्य भाषा की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—(i) लोक प्रचलित अवधी भाषा का प्रयोग।

(ii) फारसी के विद्वान् होने के कारण उनकी भाषा पर फारसिय का प्रभाव।

प्रश्न 26. जायसी की प्रबन्ध और मुक्तक काव्य शैलियों का एक-एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर—जायसी कृत 'पद्मावत' प्रबन्ध शैली की और शेष तीन रचना अखरावट, आखिरी कलाम और चित्रावत मुक्तक शैली की रचनाएँ हैं।

प्रश्न 27. प्रेम की स्थिति को मृत्यु से भी कठिन क्यों कहा गया है ?

उत्तर—प्रेम की स्थिति में व्यक्ति न तो जीता है और न पूरी तरह से मर ही जाता है। अधमरेपन की यह स्थिति मृत्यु से भी कठिन है।

प्रश्न 28. राजा रत्नसेन के मूर्च्छित होने का समाचार पाकर समागत व्यक्ति क्या विचार करने लगे ?

उत्तर—समागत व्यक्ति राजा रत्नसेन के मूर्च्छित होने के कारण और उसके उपचार पर विचार करने लगे। उन्होंने निश्चय किया कि राजा की अवस्था शक्ति बाण से पीड़ित लक्ष्मण के समान है और उपचार के लिए संजीवन बूटी की आवश्यकता है।

प्रश्न 29. "तुम राजा चाहहु सुख पावा। भोगहि जोग करत नहिं भावा।" उक्त पंक्ति में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—तोता राजा से कहता है कि योग और भोग ये दोनों विरोधी नयां हैं। तुम सुख के अभिलाषी राजा हो फिर भला योग को कैसे प्राप्त कर हो। योग को पाने के लिए राज्य सुख छोड़ना अनिवार्य है।

प्रश्न 30. "पांचों चोर न छांटहि, काया" काया के पांच चोर किन्हें कहा है?

उत्तर—काम, क्रोध, तृष्णा, मद और माया को शरीर के पांच चोर कहा है। ये शरीर का निरन्तर ह्रास करते रहते हैं।

प्रश्न 31. "हिम कै जोति दीप वह सूझा। यह जो दीप अँधियारा ॥" यहां हृदय के ज्योति दीप का क्या आशय है?

उत्तर—हृदय द्वीप का आशय ब्रह्म की ज्योति से प्रकाशित सिंघल द्वीप की पद्मावती से और इस द्वीप से आशय भौतिक संसार से है। जब हृदय में ज्योति का उदय होता है तो भौतिकता मिथ्या प्रतीत होने लगती है।

प्रश्न 32. "गुरु विरह चिनगी जो मेला। जो सुलगाई लेई सो चेला ॥" उक्त पंक्ति में सच्चे शिष्य की क्या पहचान बतलाई गई है?

उत्तर—सच्चा गुरु शिष्य के हृदय में परमात्मा से विरह की चिनगारी न करता है और वास्तविक शिष्य इस चिनगारी को सुलगाये रखता है तथा त्मा से एकाकार होने के लिए के लिए प्रयत्न करता है।

प्रश्न 33. रानी पद्मावती के आगमन का समाचार सुनकर गौरा-बादल या स्थिति हुई?

उत्तर—रानी के आगमन का समाचार सुनकर दोनों वीर भाई बाहर उन्होंने रानी का स्वागत कर आने का कारण पूछा। उन्होंने कहा आज की धारा उल्टी कैसे बहने लगी। हमसे कोई भूल हुई। हमारे प्राण तो की सेवा के लिए ही है, ऐसा कहकर वे उन पर चँवर डुलाने लगे।

प्रश्न 34. पिय जेहि बंदि जोगिनि होई धावौं। हौं बंदि लेउँ, पियहि ावौं।" उक्त पंक्ति में निहित रानी पद्मावती के हृदयगत भावों को स्पष्ट नए।

उत्तर—रानी पद्मावती अपने प्रियतम राजा रत्नसेन को बन्धन मुक्त ना चाहती है। वह जोगिन होकर वहां जाने को तत्पर है और प्रिय को मुक्त के लिए स्वयं बंदीगृह में पड़ जाने की भी कामना रखती है। इससे राजा के ति उसके अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति होती है।

प्रश्न 35. शिवजी द्वारा द्वितीया के चन्द्रमा को ललाट पर धारण करने के जायसी ने क्या कल्पना की है?

उत्तर सुन्दरता की मूर्ति पद्मावती को सिंघासन पर बैठे देखकर शिवजी रूप पर ऐसे मोहित हो गये कि उसी के समान द्वितीया के चन्द्रमा को अपने ट पर स्थान देकर मानो उसकी प्रतिमूर्ति कल्पित की।

3. गोस्वामी तुलसीदास

प्रश्न 36. तुलसीदास के मन में वैराग्य भावना का उदय कैसे हुआ

उत्तर—तुलसी पत्नी के प्रति अत्यधिक अनुरक्त थे। एक बार जब अनुपस्थिति में वह अपने भाई के साथ मायके चली गई तो वे भी वहां प लोक लाज से खिन्न होकर उसने तुलसी को फटकारा। पत्नी की फटकार उनके हृदय में वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

प्रश्न 37. तुलसीदास रचित काव्य ग्रन्थ कितने हैं? उनमें सर्वश्रेष्ठ सा है?

उत्तर—तुलसी द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या बारह मानी जाती है। 'रामचरितमानस' उनकी श्रेष्ठ कृति है। उनकी अन्य रचनाएँ हैं—

(1) विनय पत्रिका, (2) कवितावली, (3) दोहावली, (4) कृष्ण वली, (5) बरवै रामायण, (6) पार्वती मंगल, (7) जानकी मंगल, (8) वली, (9) रामलला नहछू, (10) वैराग्य सन्दीपनी और (11) रामाज्ञा प्रश्न

प्रश्न 38. तुलसीदास को लोकनायक क्यों कहा जाता है?

उत्तर—डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार लोकनायक वही हो सक जो समन्वय कर सके। तुलसी ने भी परस्पर विरोधी धार्मिक मान्यताओं के कारणों को खोजकर उनमें समन्वय किया था। इसीलिए उन्हें लोकनायक ज़ाता है।

प्रश्न 39. विषय-चयन की दृष्टि से तुलसी की क्या विशेषता थी?

उत्तर—तुलसी के विषय चयन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। उन्होंने और साहित्य की दृष्टि से सभी उपादेय विषयों को अपने काव्य में स्थान दिय

प्रश्न 40. "बिनु रघुपति पद पदुम परागा। मोहि कोउ सपनेहु सु लागा" सीताजी ने प्राणनाथ श्रीराम की अनुपस्थिति में किन-किन को नहीं होने का उल्लेख सुमन्त्र जी से किया था?

उत्तर—सीताजी अपने प्राणनाथ श्रीराम के अभाव में जगत् के सारे और सम्बन्धों को व्यर्थ मानती है। सम्पूर्ण सुखों से भरपूर पिता का घर, च ससुर कोशलनाथ दशरथ का ऐश्वर्य पूर्ण घर, अयोध्या निवास, प्रिय कु माता के समान सासुएँ, राज सुख, ऐश्वर्य और भोग सब पति के साथ न हो सुखद नहीं है।

प्रश्न 41. सीता द्वारा अयोध्या लोटने में असमर्थता प्रकट करने पर सुमन्त्र का क्या हाल हुआ?

उत्तर—सीताजी वापिस नहीं जायेंगी यह जानकर मन्त्री सुमन्त्र वैसे व्याकुल हो गया जैसे सांप अपनी मणि खो देने पर व्याकुल हो जाता है।

से न कुछ सुन रहा था, न आंखों से कुछ दिखायी देता था और न वाणी से प्रतिवाद ही करते बनता था।

प्रश्न 42. गंगा तट से अयोध्या लौटते समय सुमन्त्र की स्थिति कैसी हो थी?

उत्तर—मन्त्री सुमन्त्र बहुत दुःखी और हताश थे। उनकी स्थिति उस क की भांति थी जो लाभ की आशा से व्यापार हेतु बाहर जाये और अपना न खोकर लौटे।

प्रश्न 43. केवट द्वारा नाव न लाने के पीछे उसका क्या उद्देश्य था?

उत्तर—केवट प्रभु श्रीराम का चरणामृत पान करके सपरिवार मुक्ति ा था। अतः वह राम को बिना चरण धोये नाव पर नहीं बैठाने का हट रहा। अन्त में वह वाक् चातुर्य से अपने लक्ष्य में सफल रहा।

प्रश्न 44. "बाट परइ मोरी नाव उड़ाई" केवट ने यह बात क्यों कही?

उत्तर—केवट की आजीविका का आधार उसकी नौका थी। यदि वह म की चरण-रज के स्पर्श से सुन्दर स्त्री में परिवर्तित हो जाती तो वह क्या ? बाल-बच्चों का भरण-पोषण कैसे करता? उसे तो कोई दूसरा काम भी आता था। इसलिए उसने कहा नाव के न रहने पर वह लुट जायेगा, बरबाद ायेगा।

प्रश्न 45. "पद-नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु बचन मोहि मति ।" श्रीराम को देखकर गंगा क्यों हर्षित हुई?

उत्तर—भगवान को केवट का निहोरा खाते देखकर गंगा की बुद्धि मोह ंच गई थी परन्तु श्रीराम को समीप से देखकर और अपने उत्पत्ति स्थान के पद-नखों को देखकर उसका मोह नष्ट हो गया। प्रभु के चरण-कमलों के की आशा में गंगा हर्षित हो गई।

प्रश्न 46. "बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं" फूल वर्षा कर देवता ी सराहना करने लगे?

उत्तर—केवट भगवान की आज्ञा पाकर उनके चरण कमलों को अत्यन्त द और प्रेम में उमंग कर धोने लगा। उसे प्रभु चरणों की सेवा करने का र मिला देखकर देवता उसकी फूल वर्षा कर सराहना करने लगे। वे कहने क उसके समान अन्य कोई पुण्यवान नहीं है।

प्रश्न 47. श्रीराम ने केवट को उतराई में क्या दिया?

उत्तर—श्रीराम केवट को उतराई में सीताजी की मणि जड़ित अँगूठी देना थे पर केवट ने वह लेने से मना कर दिया, तब श्रीराम ने उसे अपनी भक्ति का वरदान देकर विदा किया।

प्रश्न 48. गंगा ने सीताजी को क्या आशीर्वाद दिया?

उत्तर—गंगाजी ने सीता से कहा कि तुमने मेरी विनय करके मु
दी है। तो भी हे देवी ! मैं अपनी वाणी सफल होने का तुम्हें आशीर्वाद
तुम अपने पति व देवर के साथ सकुशल अयोध्या लौटोगी, तुम्हारी मनो
पूरी होंगी तथा तुम्हारा यश जगत् में छा जायेगा।

प्रश्न 49. वाल्मीकि जी श्रीराम को वनवास के लिए उचित स्था
में संकोच क्यों अनुभव करते हैं ?

उत्तर—वाल्मीकि जी की भावनानुसार श्रीराम ब्रह्मा, विष्णु औ
को भी नचाने वाले जगदीश्वर हैं। वे सर्वव्यापक और सर्वान्तरयामी है
कोई स्थान नहीं जहाँ वे न हों। ऐसे में वाल्मीकि उन्हें आवास के लि
बताते हुए सकुचा रहे थे।

प्रश्न 50. वाल्मीकि जी ने श्रीराम को रहने के लिए कौन-
बतलाया ?

उत्तर—वाल्मीकि जी ने कहा हे प्रभु आप जानकी, लक्ष्मण स
भक्तों के हृदय में निवास कीजिए जिनके कान निरन्तर सागर की तरह
लीला-कथा सरिताओं से भरते रहते हैं तथा जिनके नेत्र चातक के समा
मेघ सदृश्य शरीर के दर्शन पाने में विकल रहते हैं।

प्रश्न 51. लखन जानकी सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि वेष जनु; रति रितुराज समेत॥
उपर्युक्त पंक्तियों का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—लक्ष्मणजी और श्री जानकी सहित श्रीराम जी घास पत्त
में शोभायमान है। मानो कामदेव मुनि का वेष धारण करके पत्नी
बसन्त ऋतु के साथ सुशोभित हो। उक्त दोहे में अनुप्रास और उत्प्रेक्षा
का मनोहारी तथा स्वाभाविक प्रयोग हुआ।

प्रश्न 52. 'तुलीदास परिहरे तीनों भ्रम, सो आपन पहिचाने।'
उक्त पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— परमात्मा द्वारा निर्मित इस सृष्टि को कोई सत्य मानता
असत्य और कोई सत्यासत्या-मिथ्या और सत्य का मिश्रण मानता है।
अनुसार ये तीनों ही मत भ्रमात्मक हैं। जो व्यक्ति इन तीनों भ्रमों से परे
परमात्मा की लीला को समझ सकता है।

प्रश्न 53. 'जो निज मन परिहरै विकारा।' पद में तुलसी ने
दुख का क्या कारण बताया है ?

उत्तर—तुलसी के अनुसार संसार में दुःख, शोक और संशय
कारण मन के विकार है। शत्रु मित्र और मध्यस्थ भी मन की ही क
क्योंकि न कोई किसी का शत्रु है, न मित्र। स्वर्ग, नरक, जड़-चेतन औ

भी इसी मन मे रहते है । अतः मन के विकार ही मानव के सब दुखों के मूल ... हैं ।

प्रश्न 54. 'तुलसी' मनरंजन रंजित अंजन नैन सुसंजन जातक से ।
सजनी ससि में समसील उभै नवनील सरोरुह से बिकसे ।।"

उक्त पंक्तियों में निहित शक सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर—उक्त पंक्तियों में श्रीराम के नेत्र सौन्दर्य का चित्रण किया गया ...ंजन लगे हुए बालक श्रीराम के नेत्र खंजन पक्षी के जातक के समान सुन्दर ...उनका मुख चन्द्रमा के समान है जिसमें उनके दोनों नेत्र नवनील कमल के ...न विकसित हो रहे हैं । उक्त पंक्तियों में उपमा व रूपक अलंकारों का सरल ...ग हुआ है । माधुर्य एवं प्रसाद गुण है । शान्त रस है ।

प्रश्न 55. 'अरविन्द सो आनन, रूप मरंद आनन्दित लोचन भृंग पिये ।'
उक्त पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर—अयोध्या नरेश महाराजा दशरथ ने अपने पुत्र बालक श्रीराम को ...में ले रखा है । वे उनके कमल से मुख को निहार रहे हैं । उनके नेत्र रूपी ...आनन्दित होकर श्रीराम के मुख कमल के रूप-पराग का पान कर रहे हैं ।

प्रश्न 56. 'कर टेकि रही पल टारत नहीं ।' विवाह के अवसर पर सीता ...इस स्थिति का क्या कारण था ?

उत्तर—सीता जी ने विवाह के अवसर पर जो कंगन पहन रखे थे, उनके ...में पास बैठे श्रीराम का प्रतिबिम्ब पड़ रहा था, जो सीता जी को दिखाई दे ...था । लोक लाज के कारण वे श्रीराम की ओर तो नहीं देख पाती थी, पर ...प्रतिबिम्ब को निहारने में ही वे अपनी सुध-बुध खो बैठी । उन्होंने अपने हाथों ...स्थिर कर लिया, जिससे राम का प्रतिबिम्ब उनसे चला न जावे ।

प्रश्न 57. "देत न अघात, रीझि जात पात आक ही के
भोलानाथ जोगी जब औढ़र ढरत हैं ।"

उक्त पंक्तियों में शिवजी के किन गुणों का उल्लेख किया गया है ?

उत्तर—शिवजी, भोलानाथ जब प्रसन्न होते हैं तो उस समय वे देते-देते ...ते नहीं हैं और जहाँ तक उनका प्रश्न है वे आक के पत्तों पर ही रीझ ... हैं ।

4. रहीम

प्रश्न 58. रहीम की प्रमुख काव्य कृतियाँ कौन-कौन सी हैं ?

उत्तर—रहीम दोहावली, बरवै नायिका भेद, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी श्रृंगार सोरठा रहीम जी की प्रमुख रचनाएँ हैं । 'नगर शोभा' नामक एक कृति भी इनकी सर्जना मानी जाती है ।

प्रश्न 59. रहीम के काव्य के मुख्य विषय क्या हैं ?

उत्तर—रहीम हिन्दी में मुख्यतः नीति कवि के रूप में प्रसिद्ध है के अतिरिक्त भक्ति, शृंगार और प्रेमभाव के विविध रूपों की अभिव्यि काव्य के विषय रहे हैं।

प्रश्न 60. 'रहिमन' मैन-तुरंग चाढ़ि, चलिबो पावक माहि।
प्रेम-पंथ ऐसो कठिन, सब छोड निबहत नाहि ।।

उक्त दोहे का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रेम के मार्ग पर चलना हर किसी के लिए सम्भव नहीं प्रेम का मार्ग अग्निपथ और कंटकाकीर्ण है। उस पर तो वे ही उत्साही वी होते हैं, जिनमें सर्वस्व बलिदान की भावना हो।

प्रश्न 61. 'रहिमन' नीचन संग बसि, लागत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि, सब समुझहि मद ताहि ।।"

उक्त दोहे के माध्यम से रहीम ने क्या सन्देश दिया है ?

उत्तर—उक्त दोहे में रहीम ने संगति के प्रभाव को बतलाया है। विक्रेता के हाथ में दूध होने पर भी लोग उसे शराब ही समझते हैं। दूस कुसंगति में रहने वाले सज्जन पुरुष को भी अपयश ही मिलता है। व्य नीच व्यक्तियों की संगति से बचना चाहिए।

प्रश्न 62. "कहु 'रहीम' कैसे जिए, थोरे जल की मीन।" उक्त रहीम का क्या आशय है ?

उत्तर—उक्त दोहे द्वारा रहीम यह कहना चाहते हैं कि जिस व्य जीवन अभावों और कठिनाइयों से भरा होता है, वह अधिक समय तक नहीं रह पाता। जीवित रहने के लिए आजीविका के समुचित साधन क आवश्यक है।

प्रश्न 63. रहीम के अनुसार बुरे व्यक्ति की बुरी बात का बुरा क मानना चाहिए ?

उत्तर—रहीम के अनुसार हर व्यक्ति अपनी बुद्धि, विवेक और बात के अनुसार बात कहता है। जिस व्यक्ति में अच्छाई है ही नहीं उससे अच्छ की अपेक्षा कैसे की जा सकती है। अतः उसका बुरा मानना व्यर्थ है।

प्रश्न 64. " 'रहीमन' रहिबो वह भलो, जौ लौं सील समूच।
सील ढील जब देखिए, तुरत कीजिए कूच ।।"

उक्त दोहे का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—रहीम के अनुसार किसी स्थान पर उतने ही समय तक उचित है जब तक कि हमारे शील-सदाचार को कोई हानि न होती हो

चार को हानि की आशंका होने लगे तो व्यक्ति को अविलम्ब प्रस्थान कर देना हिए।

प्रश्न 65. "है 'रहीम' रघुनाथ ते, सुजस भरत को बाढि।' भरत जी का त्व श्रीराम से अधिक होने का रहीम ने क्या कारण बतलाया है?

उत्तर—'रहीम' के विचारानुसार गुरुजनों के अनुचित आदेश को सिरोधार्य ी करना चाहिए। श्रीराम ने माता के अनुचित आदेश को मान लिया परन्तु रत जी ने उसे नहीं स्वीकारा। इसीलिये भरत का यश इस संसार में राम से अधिक है।

प्रश्न 66. 'अब 'रहीम' मुसकिल पड़ी' दोहे में रहीम ने किस कठिनाई का ल्लेख किया है?

उत्तर—रहीम के अनुसार यह संसार सत्य पर विश्वास नहीं करता और ठ बोलने पर भगवान रूठते हैं। सत्यासत्य के इसी फेर में व्यक्ति को लोक-रलोक दोनों का व्यवहार एक साथ निभाना कठिन हो गया है।

प्रश्न 67. "आदर घटै नरेस ढ़िग, बसे रहै कछु नाहिं।
जो 'रहीम' कोटिन मिलै, धिक जीवन जग माहिं॥"

उक्त दोहे में निहित रहीम के सन्देश का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—उक्त दोहे के द्वारा रहीम सन्देश देते हैं कि धन से सम्मान बड़ा । यदि राजा के पास बैठने पर भी मान न मिलता हो तो व्यक्ति को वहाँ नहीं ठना चाहिए। ससम्मान जीना ही जीवन का सार है।

प्रश्न 68. "एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
'रहिमन' मूलहि सीचिको, फूलहिं फलहिं अघाय॥"

उक्त दोहे में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—संसार में किसी भी एक आश्रय की सेवा करने से सब कुछ प्राप्त ो जाता है और सब या अनेक लोगों की सेवा से हमारे पास का सब कुछ चला ाता है। एक ईश्वर (कार्य) की आराधना ही फलदायी होती है।

प्रश्न 69. 'कदली, सीप, भुजंग मुख' दोहे में रहीम ने संगति का क्या हत्त्व बतलाया है?

उत्तर—व्यक्ति जैसी संगति में बैठता है, वह वैसा ही बन जाता है। वाति जल की बूँद संगति के प्रभाव से अलग-अलग स्वरूप धारण करती है। ले के पेड़ की संगति से वह कपूर, साँप की संगति से विष और सीप की संगति मोती बन जाती है।

प्रश्न 70. संसार में छिपाने से क्या-क्या चीजें नहीं छिपती?

उत्तर—रहीम के अनुसार कत्थे का दाग, खून का प्रभाव, खाँसी, लहर, शत्रुता, प्रेम और मद्य-पान ये चीजें छिपाने का प्रयास करने पर भी नहीं हैं।

प्रश्न 71. 'गिरिधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं।' उ का क्या आशय है?

उत्तर—बड़े व्यक्ति को छोटा कह देने से उसकी कोई हानि नहीं क्योंकि किसी के कहने मात्र से कोई बड़ा या छोटा नहीं हो जाता।

प्रश्न 72 रहीम ने दीपक और कुल-कपूत में क्या समानताएँ बतल

उत्तर—दीपक के जलाने पर उजाला और बुझाने पर अन्धेरा है है। इसी प्रकार जब कुल में कपूत पैदा होता है तो उसके भावी दुष्कर्मों न होने से खुशियाँ मनाई जाती हैं लेकिन बड़ा होने पर उसके दुष्कर्म साम पर कुल में अन्धेरा छा जाता है।

प्रश्न 73. रहीम के अनुसार व्यक्ति का जीवित रहना कब सार्थक है

उत्तर—रहीम के अनुसार व्यक्ति का जीवित रहना तभी तक सा जब तक कि उसमें दान देने की सामर्थ्य है। दान-देने में असमर्थ हो जा व्यक्ति का जीवित रहना बेकार है।

प्रश्न 74. धनी व्यक्ति निर्धन हो जाने पर कैसी बातें करता है?

उत्तर—धनी व्यक्ति निर्धन हो जाने पर भी बीते हुए समय की बा अभिमान के साथ करते रहते हैं। यद्यपि उनमें दान देने की सामर्थ्य नहीं फिर भी वे अपनी दानशीलता के गीत गाते रहते हैं। उनकी स्थिति क्व बादलों जैसी होती है।

प्रश्न 75. मूर्ख और विद्वान् के भेद का ज्ञान कब होता है?

उत्तर—मूर्ख और विद्वान् के भेद का ज्ञान उनके बोलने पर होता है तक दोनों मौन रहते हैं, उन्हें पहचानना कठिन होता है।

प्रश्न 76. 'यह 'रहीम' माने नहीं, दिल से नवा न कोय।' इस दो रहीम के कथन का क्या अभिप्राय है?

उत्तर—रहीम बताना चाहते हैं कि जो व्यक्ति स्वेच्छा से नहीं झुक स्वभाव से विनम्र नहीं होते, वे दूसरों को हानि पहुँचाते है। दुष्ट व्यक्तिय झुकना हमेशा घात के लिए ही होता है। चीता झुककर आक्रमण करता है, झुककर सेंध लगाता है और धनुष झुककर प्राणघातक बाण का प्रहार करता

प्रश्न 77. रहीम के अनुसार बन्धुजनों के बीच कब रहना उचित नही

उत्तर—रहीम के अनुसार निर्धन हो जाने पर, धन-सम्पत्ति के न रहने सगे-सम्बन्धियों या भाइयों के बीच नहीं रहना चाहिए। सम्पन्न सगे सम्ब निर्धन को मान नहीं देते।

प्रश्न 78. "जबते आयौ सजनी, मास असाढ़ ।
जानि सखि वा तिये के, हिय की गाढ़ ॥"

आसाढ मास के आने से सखी में क्या परिवर्तन हो गया है ?

उत्तर—आसाढ़ में वर्षा ऋतु का आरम्भ होता है। वर्षा के आरम्भ के साथ ही सखी के हृदय की पीड़ा को जाना जा सकता है। उसमें बिरह-वेदना उद्दीप्त हो जाती है।

प्रश्न 79. इन बातन कछु होत न, कहो हजार ।
सबही तें हँसि बोलत, नन्द कुमार ॥

उक्त बरवै में नन्द कुमार के स्वभाव की किस विशेषता का उल्लेख किया गया है ?

उत्तर—वे सभी से हँसकर बातें करते है।

प्रश्न 80. "अति अद्‌भुत छवि-सागर, मोहन गात ।
देखत ही साखि बूड़त, दृग-जलजात ॥"

उक्त बरवै के काव्यगत सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—श्री कृष्ण का शरीर सौन्दर्य का सागर है, देखते ही दर्शक के नेत्र-कमल उसमें डूब जाते हैं। उक्त बरवै में रूपक अलंकार और माधुर्य गुण भाव शोभा में वृद्धि करते हैं।

5. मीरा बाई

प्रश्न 81. मीरा के काव्य की दो भावगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—मीरा के काव्य में प्रेम की पीर और विरह की वेदना है। वास्तव में प्रेम की पीर और विरह की अनवरत धड़कन का नाम ही मीरा है।

प्रश्न 82. गोस्वामी तुलसीदास जी ने मीरा को पारिवारिक कष्टों से छुटकारे का क्या उपाय बतलाया था ?

उत्तर—गोस्वामी जी ने मीरा को उत्तर में अपना प्रसिद्ध पद 'जाके प्रिय न राम-वैदेही, तजिये ताहि कोटि वैरी सम, यद्यपि परम स्नेही' लिख भेजा था।

प्रश्न 83. मीरा की प्रमुख सर्जनाएँ क्या हैं ?

उत्तर—मीरा की प्रमुख सर्जनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) नरसी जी रो मायरो, (2) गीत गोविन्द की टीका, (3) मीरानी गरबी, (4) रास गोविन्द, (5) राग सोरठ के पद, (6) मीरां के पद आदि मीरा की प्रमुख सर्जनाएँ हैं।

प्रश्न 84. मीरा की काव्यभाषा और शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—मीरा की काव्य भाषा मुख्यतः राजस्थानी है। उसमें ब्रज, रा्ती, खड़ी बोली, अवधी आदि अनेक भाषाओं का सरस सम्मिश्रण मिलत उनकी शैली गीति-मुक्तक है।

प्रश्न 85. 'बसो मेरे ननन में नन्दलाल' पद में मीरा ने अपने आराध की जिन विशेषताओं का वर्णन किया है उनमें से कोई तीन विशेषताएँ लिखि

उत्तर—1. श्री कृष्ण अत्यन्त सुन्दर है। उनका रूप मोहक और कर्षक है।

2. वे सन्तों को सुख पहुँचाने वाले और

3. भक्तों से प्रेम करने वाले हैं।

प्रश्न 86. 'मेरी आसा चितवनि तुमरी, और न दूजी ठोर।

तुमसे हमकूं कब रु मिलोगे, हमसी लाख करोर।"

उक्त पंक्तियों के काव्य-सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मीरा की उक्त पंक्तियों में प्रतीक्षाकुशलता और प्रार्थना भावों की मार्मिक व्यंजना है। श्रीकृष्ण के प्रति समर्पण तथा अनन्यता का ही मीरा काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है, जिनकी इस पद में प्रभावी अभिव हुई है।

प्रश्न 87. 'भगति देखि राजी हुई, जगति देखि रोई।' इस पंकि निहित भाव सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मीरा बाई भक्त थी। उन्हें सांसारिक माया-मोह से कोई स नहीं था। वे हरि भक्तों को देखकर आनन्दित होती है और जगत व्यवहार कर दुखी होती हैं। उनके दुखी होने का मुख्य कारण संसार की ना समझी मानव देह पाकर भी मुक्ति के लिए प्रयास नहीं करता।

प्रश्न 88. 'जिणरो पिय परदेस बस्यां री, लिख-लिख भेज्यां पाती

म्हारां पिया म्हारे हियड़े बसता, णां आवां ना जाती ॥'

उक्त पंक्तियों में निहित भाव सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मीरा कहती है कि जिन स्त्रियों के परित परदेश में रहते है, उन्हे पत्र लिख-लिखकर भेजा करती हैं। मेरे पति मेरे हृदय में रहते हैं। मुझे उन्हें पत्र लिखने को आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 89. 'मीरा के प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा।' में जोत मिलाने से मीरा का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—उक्त पंक्ति में प्रियतम से मिलने को आकुल युग-युग की विर नारी का स्वर है। मीरा युग-युग से बिछुड़ी आत्म-ज्योति को चरम ज्यो अन्तर्लीन करने की प्रार्थना करती है, जिससे वह भव-बाधाओं से मुक्त हो स

प्रश्न 90. 'विरह की मारी मैं बन डोलूँ, प्रान तजूँ करवत ल्यूँ कासी।' मे निहित मीरा की विरह वेदना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत पंक्ति में मीरा की प्रेमनिष्ठा और वेदना का आकर्षक वर्णन हुआ है। मीरा प्रिय मिलन की आशा में वन-वन में घूमती फिरती है और कभी उसका मन काशी जाकर आरी से कट मरने को होता है, जिससे मृत्यु को गले लगाकर वह विरह-जन्य असह्य वेदना से सदा के लिए मुक्त हो सके।

प्रश्न 91. 'जाइ प्रीतम जी सूं यूं कहै रे, थांरी विरहणि धान न लाइ।' उक्त सन्देश भेजने के पीछे मीरा का क्या अभिप्राय था ?

उत्तर—मीरा प्रिय कृष्ण से अविलम्ब मिलना चाहती थी। वह अपने प्रिय को अनाज त्याग कर मरने का सन्देश भेजकर यह व्यक्त करना चाहती थी कि आप शीघ्र पधारें अन्यथा आप अपनी प्रिया को जीवित नहीं पा सकेंगे।

प्रश्न 92. 'मीरा विरहणि सीतल होई, दुख द्वन्द दूरि न्हसाया जी।'
उक्त पंक्ति में मीरा ने अपने सुख-सन्तोष का क्या कारण बतलाया है ?

उत्तर—प्रिय का आगमन और उनसे मिलन हो जाने से चिर विरहिणी मीरा सुख-सन्तोष का अनुभव करती है। प्रिय से मिलने के बाद उसके सभी दुःख द्वन्द्व दूर हो गये। वह पूर्ण सन्तुष्ट और आनन्दित है।

6. ढोला मारु रा दोहा

प्रश्न 93. ढोला-मारु का विवाह किस अवस्था में हुआ था ?

उत्तर—ढोला-मारु का विवाह बाल-अवस्था में हुआ था। उस समय राजकुमार ढोला की आयु तीन वर्ष और मारवणी की आयु मात्र डेढ़ वर्ष की थी।

प्रश्न 94. मारवणी के सन्देश ढोला तक क्यों नहीं पहुँच पाते थे ?

उत्तर—राजकुमार ढोला के बड़े होने पर उसका दूसरा विवाह राजकुमारी मालवणी के साथ हो गया था। मालवणी को राजकुमार के पूर्व विवाह का ज्ञान था। अतः वह मारवणी के हर सन्देश को राह में रोक लेती थी, जिससे ढोला उसे छोड़कर चला न जाये।

प्रश्न 95. ढोला-मारु रा दूहा और बिहारी के श्रृंगार वर्णन में क्या भिन्नता है ?

उत्तर—ढोला-मारु के दोहों में मारवणी के वियोग और संयोग के चित्र भावपूर्ण है जबकि बिहारी के दोहों की नायिका के संयोग एवं वियोग के चित्रों में कला पक्ष की प्रधानता है।

प्रश्न 96. 'ऊँची चढ़ि चातृंगि जिउं, मागि निहालइ मुग्ध'
उक्त पंक्ति में निहित भाव सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मुग्धा मारवणी चातक के समान ऊपर चढ़कर प्रिय की प्रत
कर रही है जैसे स्वाति के लिए लालायित चातक आकाश में ऊंचा उठ-उठ
अपने प्रिय मेघ के आने की राह देखता है, वैसे ही मिलनोत्कण्ठा मारवणी
प्रिय की प्रतीक्षा कर रही है।

प्रश्न 97. मारवणी ने अपनी सखी को उदासी का क्या कारण बताया

उत्तर—सखी के पूछने पर मारवणी ने बताया कि उसने स्वप्न में काम
के समान अपने प्रियतम के दर्शन किये हैं। वह उसके मनोज्ञ रूप को चाहकर
नहीं भुला पाती। अतः उनके वियोग में ही वह उदास है।

प्रश्न 98. 'बाबीहपउ नइ विरहणी, दुहुवां एक सहाव।'
कवि ने पपीहा नामक पक्षी और विरहिणी में क्या समानता बतलाई है

उत्तर—पपीहा और विरहण स्त्री उस समय अपने प्रियतम को बुलाने
पुकार अधिक करते हैं, जब बादल खूब वर्षा करते हैं। इस दृष्टि से दोनों
स्वभाव समान है। दोनों ही वर्षा ऋतु में प्रिय को याद करते हैं।

प्रश्न 99. मारवणी पावस ऋतु में पपीहे को बोलने से मना क्यों क
है ?

उत्तर—वर्षा ऋतु नायिका के हृदय में प्रेम के भावों का उद्दीपन कर
है। पपीहे के मुँह से पीउ-पीउ की टेर सुनकर उसे प्रिय की याद सताती
मारवणी को आशंका है कि इस टेर को सुनकर कोई विरहिणी तड़प-तड़प
अपने प्राण ही न दे दे।

प्रश्न 100. 'मई जाण्यउ प्रिउ आवियउ ससहर चन्द चकोर।'
उक्त दोहे में निहित अभिव्यक्ति सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—उक्त दोहे में भ्रांति और रूपक अलंकार का चमत्कार है। प
के मुँह से 'पी-आव' सुनकर मारवणी समझती है कि प्रिय आ गये। उसने स्वयं
चकोर और ढोला को चन्द्र सदृश्य माना है।

प्रश्न 101. "सगला मन ऊछव हुयउ, बूठं जे बरसात।"
वर्षा के आने पर किन-किन को हर्ष होता है ?

उत्तर—वर्षा के आने पर राजा, प्रजा, कवि, गुणीजन, पण्डितों
पेड़ों पर लगे पत्ते सभी का मन उल्लास से भर जाता है। वर्षा के आगमन
वियोगिनी को छोड़कर सभी प्रसन्न होते हैं।

प्रश्न 102. मारवणी कुंझों से पंख क्यों मांगती है ?

उत्तर—जिससे कि वह सागर को लांघकर अपने प्रियतम से मिल सके

प्रश्न 103. मारवणी पवन से क्या विनय करती है ?

उत्तर—मारवणी पवन से निवेदन करती है कि वह उसके प्रिय का स्पर्श कर लौट आये। वह पवन का स्पर्श करके ही प्रियतम के सुखद स्पर्श का अनुभव कर लेगी। यही उसका मनोवांछित पुरस्कार होगा।

प्रश्न 104. पंथी, एक संदेसड़ा, धण बिललंती देह।
पगसूं काढ़ई लीहटी, उर आंसुआं भरेइ॥"

उक्त दोहे में निहित भावगत सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—विलाप करती हुई मारवणी पथिक के हाथों संदेश भेजती है, पैर से धरती पर लकीरें बनाती है और उसका हृदय आँसुओं से भरा है। इसमें मारवणी के हृदय की कसमसाहट, अन्तर्द्वन्द्व और विवशता का मर्मस्पर्शी चित्रण है। वह लज्जा के कारण अपने हृदयस्थ भावों को कहने में असमर्थ है।

कथा विसर्जन (नाटक)
(प्रस्तावना)

प्रश्न 105. नटी ने नट से क्या प्रार्थना की?

उत्तर—नटी ने नट से कथा कहने अथवा कोई नाटक दिखाने की प्रार्थना की।

प्रश्न 106. 'बस-बस-बस। दर्शक भड़क जायेंगे ......रंगशाला छोड़ होटल-रेस्तरां में चले जायेंगे।' नटी के उक्त कथन का क्या कारण था?

उत्तर—नटी ने नट से कथा कहने को कहा था। नट ने कहा, कथा महापुरुषों की होती है। बताओ, भक्त प्रहलाद, भीष्म पितामह, दानवीर कर्ण, वीर अभिमन्यु, महाराजा विक्रमादित्य, महाराणा प्रताप, सन्त तुकाराम, तुलसीदास आदि में से किसकी कथा कही जाये। आज का दर्शक महापुरुषों की कथा नहीं सुनना चाहता, इसीलिए नटी ने उक्त कथन कहा था।

प्रश्न 107. नाटक क्या है?

उत्तर—विश्वास और यथार्थ में अन्तर की कथा ही नाटक है।

(प्रथम अंक)

प्रश्न 108. 'यह पढ़ाई का बस्ता है या कुली का बोझ?' माँ के इस कथन का क्या कारण था?

उत्तर—पाठ्यक्रम के नाम पर आज के विद्यार्थी को अनेक विषय और पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं। विद्यार्थियों को पुस्तकें प्रतिदिन विद्यालय ले जानी पड़ती हैं जिससे कि उनका बस्ता काफी भारी हो जाता है। माँ के इस कथन में अनोपयोगी शिक्षा पर व्यंग्य स्पष्ट है।

प्रश्न 109. आशा ने माँ से अपनी टीचर की क्या शिकायत की थ
उसमें निहित व्यंग्य को भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—आशा ने कहा था कि उसकी टीचर रोज अपनी बात बदल
है। वह अपने उत्तर पर कभी स्थिर नहीं रहती। इस प्रसंग द्वारा नाटकका
शिक्षकों के उथले या अधकचरे ज्ञान की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 110. 'तुम आदमी हो कि जानवर ?' माँ ने शोनू से ऐसा
कहा ?

उत्तर—शोनू कराटे की मुद्राएँ बनाकर उनका अभ्यास माँ पर करने
प्रयास करता है। यह देखकर माँ सहम जाती है, जिसे देखकर शोनू हँस प
है। शोनू की अशिष्टता को देखकर ही माँ ने उसे जानवर कहा था।

प्रश्न 111. 'कोई शौक पैदा कर अपने भीतर——जो तेरी हो'
माँ के उक्त कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—शोनू अपने जीवन का कोई अर्थ नहीं मानता। वह कहता है
सभी जिन्दगी को 'बेमतलब' समझते हैं। दादी के अनुसार जिन्दगी तभी
बेमतलब है, जब तक कि व्यक्ति बाहर रहता है और अपनी रुचि के अनुसार क
कार्य नहीं कर पाता। व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व का निर्माण स्वयं कर
चाहिए।

प्रश्न 112. "शोनू झूँठ बोलता है", आशा को माँ से यह शिका
करने का क्या कारण था ?

उत्तर—"शोनू ने माँ से कहा था कि उसे एक मित्र की जन्म दिन
पार्टी में जाना है। पर शोनू जन्म दिन की पार्टी में न जाकर मित्रों के साथ घू
गया था।

प्रश्न 113. "माँ, टेलीविजन में सभी फिल्में क्यों नहीं दिखाई जातीं ?
आशा के उक्त कथन का माँ ने क्या उत्तर दिया ?

उत्तर—माँ ने कहा फिल्मों से मिलने वाला ज्ञान यथार्थ नही होता।
अधकचरे ज्ञान को पाकर व्यक्ति रोज अपनी बात बदलता है। सभी को अप
बात बदलने की आदत न पड़ जाये, इसलिए टेलीविजन में सभी फिल्में न
दिखाई जातीं।

प्रश्न 114. माँ ने 'अफसर कॉलोनी' की स्त्रियों को क्या विशेषत
बतलाई ?

उत्तर—माँ ने कहा कि अफसर कॉलोनी की स्त्रियाँ स्वरविवेक से क
नहीं करतीं। वे केवल नकल करती हैं। दिन भर घर से बाहर रहती हैं अ
जब घर में होती हैं तो भीतर से कमरा बन्द करके सोती है।

प्रश्न 115. ''शहर में यह 'सिविल लाइन' है। 'सिविल लाइन' में यह ग्राफीसर कॉलोनी है। यहाँ कुछ करने से पहले बहुत सोचना पड़ता है।'' नीलम ने उक्त कथन किस अभिप्राय से कहा था ?

उत्तर—माँ ने नीलम के समक्ष 'संगीत कला मण्डल' बनाने का प्रस्ताव रखा था। नीलम झूठे दिखावे, ग्राडम्बर और प्रतिष्ठा में विश्वास रखती थी। उसके विचारानुसार ग्रॉफीसर्स की छोटी से छोटी बात की चर्चा का विषय बन जाती है। ग्रतः ग्रॉफीसर्स की बीबियों को इनसे बचकर ही रहना चाहिए।

प्रश्न 116. नीलम के अनुसार ड्राइंगरूम में मूर्तियाँ और चित्र क्यों लगाये जाते हैं ?

उत्तर—नीलम के अनुसार ड्राइंगरूम में महापुरुषों के चित्र, मूर्तियाँ सजावट के लिए लगाये जाते हैं। इससे दूसरों पर प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न 117. 'इस घर के केन्द्र में दादी, तुम्ही हो।' शोनू के इस कथन का दादी क्या उत्तर देती है ?

उत्तर—दादी कहती है कि सबके केन्द्र में वह नहीं ईश्वर है। ईश्वर सब जगह है। केन्द्र में भी और परिधि में भी वही है।

प्रश्न 118. 'जो हमारा नहीं है, वह हमारा कैसे हो गया ?' शोनू के इस कथन का माँ क्या उत्तर देती है ?

उत्तर—माँ कहती है कि तुम कौन हो, तुम्हारा क्या है, वह कहाँ गया ? इसको भुलाने के लिए ही पाप म्युजिक, मारकाट की फिल्में, अंग्रेजी भाषा, जूडो-कराटे आदि सिखाये जाते हैं। आज सभी अपने को भूल रहे हैं, इसीलिए दुखी हैं।

प्रश्न 119. माँ के अनुसार नीलम को किस बात की चिन्ता थी ?

उत्तर—माँ के अनुसार नीलम को भविष्य की चिन्ता थी। आज के बजाय से आने वाले कल की प्रतीक्षा थी। उसे अपनी, अपने बच्चों की और अपने पति घर बार की कोई चिन्ता नहीं थी।

प्रश्न 120. ''मैं 'मॉडर्न' नहीं हूँ। मनुष्य हूँ। जो मैं हूँ, अपनी हूं। तुम सब मेरे हो। मैं तुम सबकी हूँ।' माँजी के उक्त कथन का क्या आशय था ?

उत्तर—माँ के उक्त कथन का आशय है कि वे देखा-देखी नकल नहीं करतीं, दिखावे के लिए कोई कार्य नहीं करतीं। जो उचित समझती है, वही करती हैं और जहाँ उन्हें गलती नजर आती हैं, उसे गलत कहने में संकोच भी नहीं करतीं। वे सभी को अपना समझती हैं।

प्रश्न 121. प्रकाश ने माँ को घूमने के लिए कौन-कौन से स्थान बताये ? का उनसे क्या विरोध था ?

उत्तर—प्रकाश ने माँ से कहा कि वह बाहर घूमे। गोमती में स्नान भैंरो जी, दुर्गा जी के मन्दिर और सत्संग भवन जाये। माँ का विरोध व्यक्ति को अपने भीतर घूमना चाहिए बाहर नहीं, घर-आँगन देखना च दिखावे के लिए नहीं, सही समझकर काम करना चाहिए।

प्रश्न 122. नीलम के अनुसार पति के चरण छूना दकियानूसी क्यो

उत्तर—उसके विचारानुसार पति-पत्नी का दर्जा समानता का है। चरण छूने में छोटे-बड़े का भाव निहित है।

प्रश्न 123. माँ के अनुसार सेठी में क्या था ?

उत्तर—माँ के अनुसार सेठी में जिज्ञासा नहीं घमण्ड था—अपनी का, कुर्सी का, ताकत का। वे धर्म और आध्यात्म की बातें केवल दिखावे ही करते थे।

प्रश्न 124. 'उज्ज्वल रूप दिया बगुले को, कोयल कर दी कारी।' नट-नटी के गायन में उक्त विरोधाभास का क्या कारण है ?

उत्तर—समाज में जो सभ्य और शिष्ट दिखाई देते हैं वे बगुले की कपट आचरण करने वाले और अवसरवादी होते हैं तथा जिन्हें नीचा सम उपेक्षा की जाती है, आचरण की पवित्रता उन्हीं में मिलती है।

(द्वितीय अंक)

प्रश्न 125. नीलम के अनुसार नौकर को सम्मान देना क्या है ?

उत्तर—नीलम के अनुसार नौकर को सम्मान देना पिछड़ेपन की है। यह देहातीपन, अन्धविश्वासी होने की निशानी है।

प्रश्न 126. 'मेरे भगवान् सजावट की चीज नहीं हैं। सावधान बहू ने नीलम को यह चेतावनी क्यों दी ?

उत्तर—नीलम दिखावे में अधिक विश्वास करती थी। उसके विचार महापुरुष और भगवान् केवल दिखावे की वस्तुएँ है। सेठी साहब को दि लिए वह भगवान् की मूर्ति ड्राइंग रूम में ले आई थी।

प्रश्न 127. माँ जी के अनुसार सुख कैसे पाया जा सकता है ?

उत्तर—माँजी के अनुसार सुख बाहर नहीं भीतर है। वह दूस दिया हुआ नहीं अपना कमाया हुआ है। वह दूसरों से नहीं अपने से, अप परिवार से ही मिलता है। उसके लिए अपने स्रोत ही काम आते हैं।

प्रश्न 128. माँ के अनुसार स्वाभाविक और प्रयत्न में क्या अन्तर है

उत्तर—दुःखी रहना स्वाभाविक है और सुखी होना प्रयत्न है। प्र ही सुख को प्राप्त किया जा सकता है। प्रयत्न करने का अभिप्राय किसी जाना है। हम किसी के हो जायें और कोई हमारा हो जाये।

प्रश्न 129. शोनू के अनुसार उसके मम्मी-पापा घर के बाहर क्यों रहते ?

उत्तर—क्योंकि उनके मन में हर समय कोई न कोई भय समाया रहता वे अपने आप से उखड़े हैं। इसलिए घर से भी उखड़े हैं।

प्रश्न 130. 'पाप को पूजा से जोड़ दिया' से माँ का क्या अभिप्राय था ?

उत्तर—धर्म, कर्म, भगवान् स्मरण केवल दिखावे की वस्तु रह गई है। का उपयोग भी मनुष्य आज अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए करने लगा है।

प्रश्न 131. नाथू के अनुसार 'मेम साहब' के सिर दर्द का क्या कारण ?

उत्तर—नाथू के अनुसार मेमसाहब के सिर दर्द का कारण गुस्से को उतार ीं पाने की विकलता और विवशता है। बाजार में जब वे अपना गुस्सा उतार ीं पाई होंगी तो उन्हें सिर दर्द हो गया होगा।

प्रश्न 132. माँ के अनुसार भगवान् क्या है ?

उत्तर—माँ के अनुसार हर काम का आनन्द लेना ही भगवान् है। जो भी म करो वह पूरा आनन्द लेकर करो, चाहे घर का हो चाहे बाहर का। काम में नन्द लेना ही भगवान् है।

प्रश्न 133. माँ के अनुसार 'संवाद' कठिन क्यों है ?

उत्तर—संवाद के लिए समानता का होना आवश्यक है। आज समाज में ानता कहीं नहीं है। जहाँ देखो वहीं घमण्ड है, भेद है, दूरी है। जहां किसी भी ार का भेद है, वहाँ संवाद नहीं हो सकता।

(तृतीय अंक)

प्रश्न 134. माँ ने प्रकाश को क्या सीख दी थी ?

उत्तर—माँ ने प्रकाश से कहा था कि व्यक्ति को कभी हिम्मत नहीं हारनी हिए और भगवान् का सदैव स्मरण करना चाहिए। जो कार्य अच्छा लगे, वही ना चाहिए और जो रास्ता अच्छा लगे, उसी पर चलना चाहिए।

प्रश्न 135. "बिनु संतोष न काम नसाई।
काम अछत सुख सपनेहु नाही ॥"
उक्त पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—सांसारिक इच्छाएँ अनन्त हैं। बिना सन्तोष के सांसारिक इच्छाओं नाश नहीं होगा और जब तक मन में इच्छाएँ रहती हैं, तब तक सुख नहीं नता। सुख पाने के लिए इच्छाओं पर नियन्त्रण आवश्यक है।

प्रश्न 136. नीलम को पूजा-पाठ से बच्चों पर क्या दुष्प्रभाव पड़ने की ांका थी ?

उत्तर—नीलम विज्ञान की छात्रा थी, उसकी दृष्टि में पूज
बुढ़ापे के समय खाली वक्त गुजारने की चीजें थीं। बच्चों में इससे
होने, 'नार्मल ग्रोथ' रुक जाने और 'पर्सनल्टी स्पिलिट' हो जाने का भ

प्रश्न 137. नीलम के अनुसार बुढ़ापे की चीजें क्या-क्या हैं?

उत्तर—नीलम के अनुसार धर्म, ज्ञान, श्रद्धा, विश्वास ये म
चीजें हैं।

प्रश्न 138. शक्ति के सम्बन्ध में माँ और नीलम के विचारों मे
था?

उत्तर—मां का विचार था कि धर्म शक्ति है जबकि नीलम
सबसे बड़ी शक्ति समझती है।

प्रश्न 139 दिल्ली पोस्टिंग के बाद नीलम माँ की क्या व्य
चाहती थी?

उत्तर—नीलम मां को ऋषिकेश या हरिद्वार के किसी आश्रम
चाहती थी।

प्रश्न 139. प्रकाश की नजरों में उसकी माँ क्या थी?

उत्तर—प्रकाश की नजरों में माँ केवल माँ ही नहीं थी।
जननी, पिता, भाई, मित्र और आचार्या थी। जिनकी ऊंगली पकड़
दुनिया को जाना था।

प्रश्न 140 "एक ओर राम की जय, दूसरी ओर रावण की
एक साथ नहीं चलता।" मां के इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर—मां का कहना था कि भौतिकता और नैतिकता में
विरोध है। या तो व्यक्ति धर्मपूर्वक सात्विक आचरण करे या मॉडर्न
वह एक समय में केवल एक ही नाव पर चढ़ सकता है, दोनों पर नहीं

प्रश्न 141 फास्ट और व्रत में क्या अन्तर है?

उत्तर फास्ट का अर्थ डायटिंग है, जो मोटापा कम करने के
जाती है जबकि व्रत का अर्थ भूख-प्यास, लालच-डर से ऊपर उठना है।

प्रश्न 142. माँ का भजन क्या था?

उत्तर—मां का भजन था कि व्यक्ति भाव बना रहे, पदार्थ न

प्रश्न 143. मनुष्य अपने अहंकार से बचने के लिए क्या करता

उत्तर—अहंकार की कठोरता से बचने के लिए व्यक्ति भाव से
से, संगति से और सेवा से भगवान् को रिझाने का प्रयास करता है।
के चरणों में नतसिर होना ही अहंकार का शमन और ठाकुर जी की पू

चतुर्थ अंक

प्रश्न 144. 'इमे मे देवाः'' का क्या अर्थ है?

उत्तर—जो कुछ मेरे चारों ओर दीखता है—सब देव हैं—परमे

प्रश्न 145. हम ठाकुर जी की पूजा क्यों करते हैं ?

उत्तर—मानव अभावों का पुतला है। वह भूखा, प्यासा, थका-हारा है। जा के द्वारा वह प्रभु के भाव से अपने अभावों को भरता है।

प्रश्न 146. सेठी के अनुसार पूजा पाठ के क्या लाभ हैं ?

उत्तर—पूजा-पाठ से नींद अच्छी आती है। तनाव कम हो जाता है। सके पास समय हो, वही धर्म, आध्यात्म की बात सोचता है।

एकांकी रत्नाकार

(सम्पादक—डॉ० श्रीधर सिंह)

1. दीपदान

प्रश्न 147. "चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता, कुँवर ! जैसे लता में फूल खिलते हैं वैसे ही यहाँ वीरों के हाथों में तलवार खिलती है।" उक्त कथन का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—चित्तौड़ वीर भूमि है। वह आत्म त्याग, बलिदान और जौहर की भूमि है। वहाँ वीरों के हाथों में तलवार ऐसे शोभा देती है जैसे लता पर फूल खिलते हैं। जैसे लता पर फूलों का खिलना स्वाभाविक है, वैसे ही वीरों के हाथों में तलवार होना भी स्वाभाविक है।

प्रश्न 148. "तुम रात में कभी अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ जहरीले साँप घूम रहे हैं। किसी भी समय तुम्हें डस सकते हैं।" उक्त कथन में जहरीले साँप किन्हें कहा गया है ?

उत्तर—सत्तालोलुप बनवीर और उसके साथियों का, जो निष्कंटक राज्य की कामना से कभी भी कुँवर उदयसिंह की हत्या या कोई अन्य अनर्थ कर सकते थे, जहरीले सांप कहा गया है।

प्रश्न 149. "महल में धाय माँ अरावली पर्वत बनकर बैठ गई है।" पन्ना को अरावली पहाड़ क्यों कहा गया है ?

उत्तर—पन्ना धाय कुँवर उदयसिंह का पालन पूरी सतर्कता, कर्त्तव्य-परायणता और स्वामी भक्ति से कर रही थी। इस कारण बनवीर और पद लोलुप सामन्तों की घातक योजनाएँ और षडयन्त्र सफल नहीं हो पा रहे थे। वह उदयसिंह की सुरक्षा में अरावली पर्वत के समान डटी हुई थी। इसीलिए बनवीर ने पन्ना धाय को, अरावली पर्वत कहा था।

प्रश्न 150. "यहाँ का त्यौहार आत्म बलिदान है। यहां का गीत मातृभूमि की वंदना का गीत है। उसे सुनो और समझो।" पन्ना ने सोना को उक्त शब्द क्यों कहे ?

उत्तर—सोना बनवीर का अनुग्रह पाकर कल्पनालोक में विचरण करने

लगती है। वह धाय मां पर विद्रोह का आरोप लगाती है। उसे
पन्ना उक्त कथन कहती है कि चित्तौड़ के लिए राग-रंग के गीत अस्वा
यहां तो सदैव मातृभूमि की वन्दना के गीत गाये गये हैं। उन्हें समझ
करो। अपना कर्त्तव्य करो।

प्रश्न 151 "तुलजा भवानी ! तुम चित्तौड़ की देवी हो। क
तुम्हारे त्रिशूल में अब शक्ति नहीं रही।" सामली ने उक्त कथन कब
कहा ?

उत्तर—बनवीर ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर दी थ
उदयसिंह की हत्या को तत्पर था। यह जानकर ही सामली ने उक्त शब
वह स्वामीभक्त सेवक थी और इस अनीति से उसे मर्मान्तक पीड़ा पहुँच

प्रश्न 152. पन्नाधाय ने कुँवर उदयसिंह को नाच देखने जाने क
क्यों नहीं दी थी।

उत्तर—बनवीर ने असमय ही दीपदान और रास-रंग का आयो
था। इससे पन्ना के मन में आशंका थी कि कहीं बनवीर या उसके सह
काण्ड न रच दें। वे धोखे से कुँवर को कोई हानि न पहुँचा सकें। इसी
उदयसिंह को नाच देखने जाने की अनुमति नहीं दी।

प्रश्न 153. 'विलासी और अत्याचारी राजा कभी निष्कंटक र
कर सकता।" उक्त कथन का भावार्थ समझाइये।

उत्तर—विलासी और अत्याचारी राजा के अनेक शत्रु बन ज
उसका घात करने के लिए अवसर की प्रतीक्षा में रहते हैं। अतः ऐ
अधिक समय तक नहीं टिका करता।

प्रश्न 154. "मेरे महाराणा का नमक मेरे रक्त से भी महान् है
से रक्त बनता है, रक्त से नमक नहीं।" उक्त कथन से पन्ना धाय की कि
त्रिक विशेषता का पता चलता है ?

उत्तर—पन्नाधाय स्वामी भक्त, कर्त्तव्यपरायण और साहसी महि
वह कुँवर उदयसिंह की रक्षा के लिए अपने पुत्र चन्दन का बलिदान
निश्चय करती है जो उसकी स्वामीभक्ति और आत्म-त्याग का परिचायक

प्रश्न 155. "आज तुम जैसे एक छोटे आदमी ने चित्तौड़ के मु
सम्भाला है। एक तिनके ने राजसिंहासन को सहारा दिया है। तुम धन्य
उक्त शब्द किसको सम्बोधित करके और क्यों कहे गये हैं ?

उत्तर—उक्त शब्द कीरत बारी को सम्बोधित करके कहे गये है
कुँवर उदयसिंह को झूठी पत्तलों के टोकरे में रख कर चित्तौड़ से बाहर
है। उसने कुँवर को बचाने में पन्ना को सहयोग दिया था। इसलिए
कृतज्ञता प्रकट करते हुए उक्त कथन कहती है।

प्रश्न 156. "आज मैंने भी दीपदान किया है।" पन्ना धाय ने किस र दीपदान किया था ?

उत्तर—पन्ना धाय ने उदयसिंह को बचाने के लिए अपने पुत्र चन्दन का दान दिया। उसने अपने जीवन का दीप-अपना कुल दीपक रक्त की धारा पर दिया। पुत्र का बलिदान ही उसका दीपदान था।

प्रश्न 157. बनवीर ने दीपदान उत्सव का आयोजन क्यों किया था ?

उत्तर—बनवीर चाहता था कि दीपदान उत्सव में नगरवासी व्यस्त हो और वह महाराणा विक्रमादित्य और उदयसिंह की हत्या करके अपने राजा की बधाएं दूर कर सके :

प्रश्न 158. बनबीर ने पन्नाधाय को अपनी ओर करने के लिए क्या च दिया ?

उत्तर—बनवीर ने कहा कि वह उसे एक जागीर देगा। वहां उसके लिए ा भवानी का मन्दिर बनवा देगा। लोग उसका सम्मान करेंगे और देवी र पूजा किया करेंगे।

प्रश्न 159. प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक 'दीपदान' क्यों रखा गया है ?

उत्तर—पन्नाधाय ने राजकुमार उदयसिंह की रक्षा के लिए अपने पुत्र न की बलि देकर दीपदान किया था उसके त्याग को बताने के लिए ही इस की का शीर्षक दीपदान रखा गया है।

प्रश्न 160. 'दीपदान' एकांकी से हमें क्या संदेश मिलता है ?

उत्तर—आज समाज में चारों ओर हिंसा, आतंक, सत्ता की भूल और पद पता का नृत्य हो रहा है। ऐसे में यह एकांकी हमें त्यागमय और बलिदानी वन जीने की प्रेरणा देता है।

2. दस हजार

प्रश्न "सेठ बिसाखाराम सम्पन्न होते हुए भी कंजूस था।" दो उदाहरण इस कथन की पुष्टि कीजिये।

उत्तर—"सेठ बिसाखाराम तीन-चार लाख रुपये का मालिक एक सम्पन्न ारी था। उसके चार-चार कोठियां थीं, पर उन्हें किराये पर उठाकर वह गली के एक छोटे से मकान में रह रहा था। उसके घर के वस्त्र मैले और वर टूटा हुआ था। जो उसकी कृपणता के प्रमाण हैं।

प्रश्न 162. सुन्दर की मां अपने बेटे को पाने के लिए क्या कुछ करने को र थी ?

उत्तर—सुन्दर की मां अपने लाडले को पाने के लिए अपना सब कुछ दे ो तैयार थी। वह मुनीम जी को अपने सारे जेवर उतार कर देती हैं और बेटे को पठानों से छुड़ा लाने का निवेदन करती है।

प्रश्न 163. सुन्दरलाल की फिरोती के लिए अमीर अली ने कितने रुपये की मांग की थी और क्या चेतावनी दी थी ?

उत्तर—अमीर अली पठान ने सुन्दर की फिरोती के लिए दस ह की मांग की थी और चेतावनी दी थी कि यदि रुपया बुधवार को शाम तक काबुली फाटक पर नहीं पहुँचा तो लड़के को मार दिया जायेगा।

प्रश्न 164. पुत्र के वियोग में माता का क्या हाल हो गया था ?

उत्तर—वह कई रातों से सो नही सकी थी। रात भर रोती उसकी आंखें सूज गई थीं। उसने कुछ खाया-पिया भी नहीं था। हमेश आंखें हम पर ही लगी रहती थीं।

प्रश्न 165. 'पुलिस भी क्या करेगी सेठजी, पुलिस भी तो डरे उसे क्या मालूम नहीं है, पर वह करे तब तो।' उक्त पंक्तियों के द्वारा कार क्या कहना चाहता है ?

उत्तर—उक्त पंक्तियों के माध्यम से लेखक कानूनी व्यवस्था के और समाज में बढ़ती हुई अराजकता की ओर संकेत कर उनमें सुधार सन्देश देता है।

प्रश्न 166 'लड़का कपूत निकला।' बिलाखाराम ने अपने लड़के ऐसा क्यों कहा ?

उत्तर – बिलाखाराम स्वभाव से ही कृपण था। उसके बेटे को पट कर ले गये और उन्होंने उसकी फिरोती में दस हजार रुपये मांगे। छुड़ाने के लिए उन्हें दस हजार रुपये देने होंगे, यही विचार कर वे अपने विषय में बुरा-भला कहते हैं।

प्रश्न 167. राजो की माँ के अनुसार रुपये का सदुपयोग कैसे ह है ?

उत्तर—राजो की माँ आस्तिक विचारों वाली महिला थी। वह सदुपयोग तीर्थ, व्रत, दान और गरीबों की सहायता में मानती थी। ढंग व खाना तथा आवश्यक कार्यों में पैसा खर्च करने को भी वह उचित समझ

प्रश्न 168. 'दस हजार' एकांकी का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

उत्तर—इस एकांकी का मुख्य उद्देश्य धनिक वर्ग की अर्थ प्रधा सिकता का चित्रण करना है, जिससे निजी सम्बन्धों का कोई महत्त्व नही

3. ऊसर

प्रश्न 169. छोटा-लड़का कुत्ते से क्या कहता है ?

उत्तर—लड़का कुत्ते को सम्बोधित कर कहता है—'तुम मेले हो ... चुपके से जब सब सो जाएं, तुम हमारे बिस्तर पर आ जाना, हम तुम भाई हैं।'

प्रश्न 170. गृह-स्वामी ने ट्यूटर की व्यवस्था क्यों की थी ?

उत्तर—गृह-स्वामी को ट्यूटर की दीन-दशा पर तरस आ गया था और ने उनकी सहायता की गरज से वह इन्तजाम किया था।

प्रश्न 171. आने वाली जेनरेशन के विषय में गृह स्वामी के क्या विचार

उत्तर—आने वाली जेनरेशन के विषय में गृह स्वामी का विचार था कि उनसे अच्छी होगी, चाहे वह जेनरेशन बिल्लियों की हो या सर्पों की। उनके ार में जेनरेशन आती नहीं है। जमीन आतें बजाय हजम करने के कै कर देती उसी से नई जेनरेशन बनती है।

प्रश्न 172. गृह स्वामी का यकीन किस बात पर था ?

उत्तर—गृह स्वामी का विश्वास था कि दुनिया के सब गोले-बारूद एक मी की मर्जी से चाहे वह हजारों मील दूर बैठा हो, फट सकते हैं।

प्रश्न 173. 'ऊसर' एकांकी का उद्देश्य लिखिये।

उत्तर—ऊसर एकांकी का उद्देश्य मध्यमवर्गीय परिवार की अधकचरी, वाली मानसिकता और फैशन रूप में नेताओं तथा महापुरुषों की विचार चर्चा ी गम्भीरता, संदर्भहीन बातों को कहने-सुनने की रीति-नीति को उजागर करना यह एकांकी मध्यमवर्गीय चेतना पर सफल व्यंग्य है।

4. बलहीन

प्रश्न 174. शिवनाथ ने नेता और लेखक में क्या अन्तर बतलाया ?

उत्तर—नेता शरीर को स्थूल कर रहे हैं और लेखक आत्मा को। नेताओं चरबी का रोग है और लेखकों को क्षय का।

प्रश्न 175. देवकुमार की कविता की क्या विशेषता थी ?

उत्तर—देवकुमार एक कल्पना विलासी कवि था। वह धरती की नहीं न् किसी अज्ञात लोक की कल्पना में रहता था। उसकी कविता का इस जगत इस जगत के जीवित प्राणियों और घटनाओं से कोई सम्बन्ध नहीं था। उनमें तरह का पागलपन, मन की रंगीनी, झूठा प्रेम, झूठी पीड़ा का उल्लेख होता ।

प्रश्न 176. "वह व्यक्ति यदि कहीं ईमानदार होता तो आपकी इस लड़की कविता समझना। पर वह कायर है, जीवन के तथ्यों से भाग रहा है। उन्माद वह ज्ञान समझ रहा है।" उक्त पंक्तियों में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—आधुनिक कवि जीवन और जगत की उपेक्षा करके कल्पना लोक विचरण करते हैं। वे जीवन के दायित्व और कर्त्तव्य की उपेक्षा करते हैं। ऐसा

व्यक्ति जो अपने कर्त्तव्यों के प्रति ईमानदार नहीं है। वह कायर है,
है।

प्रश्न 177. 'कविता का सम्बन्ध ब्रह्म से नहीं, मनुष्य के जीव
उक्त कथन में निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—उक्त कथन में लेखक ने अध्यात्म विलासा, लोक च्युत
जीवन की यथार्थता पर काव्य रचना करने का संदेश दिया है। जो
वास्तविकताओं की उपेक्षा करता है, वह कायर है।

प्रश्न 178. 'दामाद की बीमारी में बुलाने का सवाल नहीं है, बे
कथन में किस नीति की बात कही गई है?

उत्तर—उक्त कथन में लोक नीति और लोक व्यवहार की बात
है। सास को अपना दामाद पुत्र से भी अधिक प्रिय होता है। उसकी बीमारी
या सुनकर उसे मिलने आने के लिए बुलावे की प्रतिक्षा नहीं रहती।

प्रश्न 179. 'फिर विवाह क्यों किया तुमने?' सरला के इस प्रश्न
कुमार ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर—उसे किसी साथी की आवश्यकता थी, जो उसके काम में
सके।

प्रश्न 180. स्त्री के सामने स्त्री की जीभ कब रुकी है। मैं पहले
थी कि तुम पुरुष हो।' रजनी ने अपने पति से ये शब्द क्यों कहे?

उत्तर—रजनी का पति देवकुमार कवि था, पर उसकी कविता में
का अभाव था। उसका आचरण और व्यवहार भी स्त्रियों जैसा था। वह
ब्रह्म की बहुरिया मानकर कल्पना लोक में रहता था। उसने वास्तविक जी
भुला दिया था।

प्रश्न 181. आरम्भ के कवि और आरम्भ के प्रेमी में क्या समानता
है?

उत्तर—दोनों को ही समाज निष्ठुर लगता है और वे उसके बन्धन
होना चाहते हैं। दोनों को ही फूलों और चांदनी के लोक की तलाश रह
वे सूर्य के प्रकाश से भागते हैं और एक नवीन लोक की मिथ्या कल्पना में जी

प्रश्न 182. हिन्दी में सत्य से भागने वाले कवियों की परम्परा का
कब से हुआ?

उत्तर—हिन्दी में सत्य की उपेक्षा करने वाले कवियों की परम्प
आरम्भ अंग्रेजी के रहस्यवादी गीतों से हुआ। इन गीतों को 'सोनेट' या 'ि
कहते हैं। इनके माध्यम से कवि अपनी अतृप्त वासना को अभिव्यक्ति करता

प्रश्न 183. मोक्ष क्या है ?

उत्तर—अतृप्ति से मुक्त होना ही मोक्ष है। जब तक मनुष्य के मन में भूख ती है, उसे मुक्ति नहीं मिलती।

प्रश्न 184. 'बलहीन' एकांकी का उद्देश्य लिखिए।

उत्तर—बलहीन एकांकी में साहित्य के थोथे, आदर्शहीन और व्यर्थ के यों पर व्यंग्य किया गया है। साथ ही दाम्पत्य जीवन की टूटन का अहसास राया गया है। नारी चेतना और नारी स्वतन्त्रता से जुड़े प्रश्नों पर भी चार करना इस एकांकी का उद्देश्य रहा है।

5. जोंक

प्रश्न 185. 'जोंक एकांकी का मुख्य पात्र कौन है ? उसे जोंक क्यों कहा या है ?

उत्तर—जोक एकांकी का मुख्य पात्र बनवारी लाल है जो अपने हम वतनी लानाथ के यहां आकर जाने का नाम ही नहीं लेता। यद्यपि भोला नाथ सके सामने ऐसी अनेक परिस्थितियां पैदा करता है फिर भी वह उससे इसी तरह पटा रहता है जैसे जोंक चिपटती है।

प्रश्न 186. "शिक्षा जब से बड़ी और हिन्दुस्तानियों के भोजन की मात्रा ब से घटी है, तब से कॉलजों में ऐसे छात्र आने लगे हैं, जिनको उसकी माताए सानी से आधा टिकट लेकर अपने पास जनाने डिब्बे में बैठा सकती हैं।" उक्त न से प्रोफेसर आनन्द की कैसी छवि उभरकर हमारे सामने आती है ?

उत्तर—प्रोफेसर आनन्द एक दुबले पतले युवक थे। उनकी आकृति देखकर हें कोई भी प्रोफेसर समझने की भूल नहीं कर सकता था। उनका कद छोटा , जिसके कारण उन्हें कोई मैट्रिक का छात्र समझ सकता था।

प्रश्न 187. कमला ने बीमार होने का बहाना और पीयर जाने का नाटक ं किया था ?

उत्तर—अनचाहे मेहमान बनवारी लाल को घर से निकालने के लिए ही ने यह बहाना और नाटक किया था। पर उसे अपने प्रयास में सफलता नहीं ली।

प्रश्न 188. खाने के लिए उचित समय के विषय में बनवारी ने क्या कहा ?

उत्तर—खाने के ठीक समय के विषय में बनवारी ने कहा था 'सम्पन्न जब मन हो और विपन्न को जब मिले'। वही उपयुक्त समय होता है।

प्रश्न 189. प्रो. आनन्द रोशनदान के रास्ते बाहर जाना चाहता था ?

उत्तर—दरवाजे के बाहर बनवारी चारपाई बिछा कर सो रहा
उसे बिना बताये ही चुपके से निकल जाना चाहता था।

प्रश्न 190. प्रो.आनन्द को खिड़की से जाते देखकर बनवारी ने क

उत्तर—उसने चोर-चोर का शोर मचा कर वहां भीड़ इकट्ठी क
स्वयं पुलिस को फोन करने चला गया।

प्रश्न 191. बनबारी लाल भोला नाथ के सारे प्रयासों के बाद
घर में ही डटा रहा। इस स्थिति को एक वाक्य में बताइये।

उत्तर—उनकी स्थिति 'तू डाल-डाल मैं पात-पात' की कहावत जैस

6. यह मेरी जन्म भूमि है

प्रश्न 192. कर्नल होम्स के अनुसार इस देश में क्या खराबी है?

उत्तर—इस देश की आबो हवा गर्म है जो आदमी की काम
ताकत छीन लेती है। इस जलवायु में व्यक्ति आराम से काम नहीं कर स

प्रश्न 193. 'कार में बैठते हुए शर्म मालूम होती है।' एक
की बेटी को कार में बैठने में क्या शर्म थी?

उत्तर मिस होम्स का जन्म भारत में हुआ था। वह इस देश क
जन्म भूमि समझती थी। उसके मन में इस देश के गरीब और दीन-हीन व्य
प्रति प्रेम थायहां गरीबी और भुखमरी हो और वह कार में बैठकर
कैसे सम्भव हो सकता था।

प्रश्न 194. "तो इसमें कानून के खिलाफ कौन-सी बात है। हिन्
लोग अपना हक चाहते हैं। वे आजादी मांगते हैं।" मिस होम्स के उक्त
उसकी कौन-सी चारित्रिक विशेषता प्रकट होती है?

उत्तर—मिस होम्स भारत को अपना देश मानती है। उसका ज
भूमि में हुआ था। उक्त कथन में भारत और भारतीयों के प्रति उसके प्र
संवेदना के भाव प्रकट हुए है।

प्रश्न 195. 'हमने उन्हें अमन से रहना सिखाया है।' कर्नल होम्स
कथन का मिस होम्स ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर—मिस होम्स एक उदार युवती थी। उसने कहा कि अम
शान्ति के नाम पर अंग्रेजों ने इस देश के लोगों को ठगा है और उनकी
मौत का पानी भर दिया है। धीरे-धीरे जहर देकर मौत के घाट पहुंचा दि

प्रश्न 96. "मुगलों ने इस देश को सिर्फ फतह किया था, मारा
हमने इसे फतह नहीं किया बल्कि मार डाला।" मिस होम्स के इस कथन
आशय है?

उत्तर—मुगलों ने भारतवर्ष केवल जीता और लूटा था, पर
भारत की संस्कृति को कोई हानि नहीं पहुंचाई थी जबकि अंग्रेजों ने

…संस्कृति को ही समाप्त करने का निश्चय किया था। जिस देश की संस्कृति का …न हो जाता है, वह देश भी मर जाता है।

प्रश्न 197. गुलाम मुहम्मद कर्नल होम्स को क्या सूचना देने आये थे ?

उत्तर—मुसलमानों में से कोई भी कांग्रेस का साथ नहीं देगा और जो …सलमान कांग्रेस का साथ देने का प्रयास करेंगे इस बार उनको ऐसा सबक …खाया जायेगा कि भविष्य में लाख कोशिश करने पर भी वे कांग्रेस में शामिल …हीं होंगे।

प्रश्न 199. हिन्दू और मुसलमान अपने ही मुल्क, अपने ही नेशन के …खिलाफ बेईमानी करने को क्यों तैयार थे ?

उत्तर—केवल कुछ लोग जो अपने तमगों, खिताबों, और बेईमानी से …माई हुई जायदादों को कायम रखना चाहते थे, वे ही अपने स्वार्थ के लिए देश …गद्दारी कर रहे थे।

प्रश्न 199. "जब किसी स्वतन्त्र देश के युवक के सामने जाता हूं तो …री आँखें नीचे हो जाती हैं।" मनोहर की ऐसी स्थिति होने का क्या कारण …ा ?

उत्तर—वह एक गुलाम देश का नागरिक था। देश की आजादी के लिए …सने कुछ नहीं किया था। वह इसी हीन भावना से ग्रस्त था।

प्रश्न 200. 'इन्सानियत के खिलाफ जो हुक्म है उसको न मानना, गोली- …लों की परवाह न करके जुलूस निकालने की हिम्मत करना।' यह किस बात …ा प्रमाण था ?

उत्तर—इस देश के लोग आजादी के लिए अपना प्राण देने को तैयार हैं। …ब इस देश की आजादी असम्भव नहीं रही है।

प्रश्न 201. 'गांधी के नाम में ही कुछ जादू है।' गांधी के नाम में क्या …ादू था ?

उत्तर—गांधी के नाम पर सभी धर्मों के अनुयायी अपना द्वेष भाव भूल …र देश की आजादी के लिए कांग्रेस के झण्डे के नीचे एकत्रित हुए थे। वे लोग …ाजादी के लिए बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने को तैयार थे। गांधी के संकेत पर वे …पने प्राण भी न्यौछावर कर सकते थे।

प्रश्न 202. 'गजब हो गया, सरकार। इस घर में आग लग गई, घर के …राग से' गुलाम मुहम्मद ने ऐसा क्यों कहा था ?

उत्तर—गुलाम मुहम्मद ने ऐसा इसलिए कहा था क्योंकि स्वयं उसका पुत्र …लाफत आन्दोलन में शामिल हो गया था। उसने राय साहब के पुत्र मनोहर …र मिस होम्स के साथ बगावत का झण्डा पकड़ा था। उनके इरादों को नाकाम- …ब कर दिया था।

प्रश्न 203. 'आप लोग पब्लिक को समझायें कि वे जुलूस बन्द क
घर लौट जाएं।' कर्नल होम्स के इस कथन का मनोहर ने क्या उत्तर दि

उत्तर—मनोहर ने कहा था कि वे महात्मा गांधी के हुक्म की इ
कारी हुक्म से ज्यादा करते हैं और उस इज्जत को रखने के लिए अपने
कीमत देने को तैयार हैं।

प्रश्न 204. मिस होम्स अपने पिता की अवज्ञा करके राष्ट्रीय
में क्यों कूद पड़ी थी?

उत्तर—मिस होम्स का जन्म इस भूमि में हुआ था। इसके अन्न
उसका शरीर बनकर पुष्ट हुआ था। वह अपने को भारतीय समझती थ
इसकी जिन्दगी और मौत को अपनी जिन्दगी और मौत समझती थी।
के लिए अपना फर्ज निभाने के विचार से ही वह राष्ट्रीय आन्दोलन में
थी।

प्रश्न 205. 'आज मां के तीन लाड़ले बच्चे एक राष्ट्र मन्दिर
डालेंगे। अपनी हड्डियों और खून से मां का यह मन्दिर बनाएंगे।' मां के
लाडले कौन थे?

उत्तर—मां के ये तीन लाडले मिस होम्स, मनोहर और वली मुह
जो अंग्रेज हुकूमत की खून की प्यास बुझाने के लिए अपना बलिदान
तैयार थे।

7. मैं भी मानव हूं

प्रश्न 206. 'मैं भी मानव हूं', एकांकी का मूल प्रतिपाद्य क्या है?

उत्तर—दानवता पर मानवता की विजय इस एकांकी का मुख्य प्रतिप
इसमें युद्ध और हिंसा की व्यर्थता को सिद्ध किया गया है। मानवता के
हेतु शान्ति, प्रेम, करुणा का स्थायी सन्देश इस एकांकी की उल्लेखनीय वि
है।

प्रश्न 207. 'वे हमसे अच्छे हैं।' दूसरे प्रहरी ने गिद्धों को सैनिकों से
क्यों बताया?

उत्तर—गिद्ध शवों पर आक्रमण करते हैं जबकि सैनिक जीवित
पर।

प्रश्न 208. देवी संघामित्रा ने कुमार के बन्दी हो जाने का समाचा
कर क्या कहा था?

उत्तर—देवी संघामित्रा ने कहा था कि कुमार के साथ वही बर्ताव
चाहिए जो कि एक वीर पुरुष के साथ होता है।

प्रश्न 209. 'गलती से आप तलवार को शौर्य का प्रतीक समझ बैठे हैं।' संघामित्रा के उक्त उक्त कथन का क्या आशय था ?

उत्तर—तलवार रक्षा के लिए है, हत्या के लिए नहीं। जब तलवार का प्रयोग हत्या के बलात्कार के लिए होता है तो वह वीरता नहीं वरन् कायरता है। हृदय की विशालता या उदारता का नाम ही वीरता है।

प्रश्न 210. 'तुम भी अशोक पहले हो, सम्राट पीछे।' कलिंग कुमार के उक्त कथन का क्या अभिप्राय था ?

उत्तर—कलिंग कुमार के उक्त कथन से अभिप्राय था कि हर व्यक्ति वास्तविक अवस्था में साधारण होता है। पद या स्थिति का प्रश्न बाद में आता है। वह अवास्तविक अवस्था है। स्थायी नहीं है।

प्रश्न 211. 'तुम जीत कर भी हार गये हो, अशोक और कलिंग मिटकर भी अमर हो गया है।' उक्त कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जो व्यक्ति किसी लक्ष्य या ध्येय को लेकर अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देता है, इसका जीवन सार्थक है। भले ही उसे सफलता मिली हो या नहीं। कलिंग हार गया पर उसने अपनी विजय के लिये स्वयं को मिटा डाला। अतः वह हार कर भी जीत गया और तुम (अशोक) जीतकर भी हार गये। क्योंकि अब कलिंग में लाशों के अलावा और कुछ नहीं है।

प्रश्न 212. कलिंग कुमार के वे कौन-से शब्द थे जिन्होंने सम्राट अशोक के हृदय में हलचल मचा दी ?

उत्तर—कलिंग कुमार ने कहा था—खोपड़ी को ठुकराने के लिए तो अनेक गीदड़ शमशान में घूमा करते हैं, लेकिन वह वीर पुरुषों का मार्ग नहीं है।

प्रश्न 213. 'कुमार को दण्ड देकर आपने राज सत्ता की ही नहीं, अपने स्वभाव की मर्यादा की भी रक्षा की है।' संघामित्रा के उक्त कथन का क्या आशय था ?

उत्तर संघामित्रा का आशय था कि राजसत्ता अपने विरोधियों को जीवित नहीं देख सकती। उसे वीर पुरुषों से ईर्ष्या होती है। वह ऐसे व्यक्तियों को जिनका व्यक्तित्व शासक से प्रखर हो, समाप्त करके ही दम लेती है। इस प्रकार राजसत्ता की मर्यादा की रक्षा होती है। स्वभाव से तो अशोक आरम्भ से ही आक्रामक और क्रूर था ही। अतः जो दिया गया है वह असम्भावित नहीं है।

प्रश्न 214. 'आकाँक्षा की परिधि सीमित है परंतु उसकी प्यास बड़ी भयंकर होती है। मकड़ी के जाले के समान उसमें फंसकर कोई भी जीवित नहीं रहता।' उक्त कथन का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जब तक मनुष्य के मन में इच्छाएं रहती हैं, तब तक ही वह

प्रयत्नशील रहता है। इच्छा पूर्ति में मनुष्य आजीवन लगा रहता है
लगकर अपने प्राण दे देता है।

प्रश्न 215. 'मैंने इतना नहीं सोचा था।' भिक्षु उपगुप्त
सोचा था ?

उत्तर—भिक्षु उपगुप्त ने यह नहीं सोचा था कि सम्राट अशो
युवराज को जीवन दान देकर उन्हें मुक्त कर देंगे। उसकी कामना
कलिंग कुमार को दिये जाने वाले दण्ड को कम या सीमित करवाना

8. बसन्त ऋतु का नाटक

प्रश्न 216. 'हैं जी। देखिये जज साहब, ये अंग्रेज भी खूब
के पिता ने अंग्रेजों की प्रशंसा किस कारण से की थी।

उत्तर—अंग्रेज दूरदर्शी थे। उन्होंने शहरों में पार्क बनाये
रहने वाले इण्डियन्स आकर अपनी समस्याओं को हल कर सकें।

प्रश्न 217. जज साहब ने अपनी बेटी बासन्ती की शादी
की बात को अपने लिए इज्जत की बात क्यों कही ?

उत्तर क्योंकि बासन्ती का नाम धमेन्द्र के साथ जोड़ा जाने
इस बात को अब अनेक नाते-रिश्तेदार भी जान गए थे।

प्रश्न 218. 'ब्याह हमारे यहां महज एक कर्मकाण्ड है— एक
पालन। यह जीवन-अनुभूति, जीवन संगीत नहीं है।' उक्त कथन का
कीजिए।

उत्तर—विवाह दो आत्माओं का पवित्र मिलन है। एक स
अनुभूति है। यह जीवन संगति का वाद्य यन्त्र है। पर हमारे यह
विवाह केवल एक धार्मिक संस्कार मान कर माता-पिता द्वारा दिये
इसमें लड़के या लड़की की व्यक्तिगत भावना को कोई महत्त्व नहीं दिय

प्रश्न 219. लड़के के पिता और लड़के को नहीं-नहीं कहकर
की आवश्यकता क्यों आ पड़ी थी ?

उत्तर—क्योंकि लड़की का पिता अव्वल दर्जे का शक्की
मक्खीचूस था। यदि वे नाटक नहीं करते तो धमेन्द्र और बासन्ती का
हो पाता।

प्रश्न 220. 'बसन्त ऋतु का नाटक' का मुख्य उद्देश्य क्या
कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी के द्वारा वर्तमान मध्यमवर्गीय परिवा
म्बनापूर्ण स्थिति को उजागर किया गया है। शिक्षित वर्ग का जीवन
आडम्बरपूर्ण है। विवाह से सम्बन्धित प्रश्नों जैसे दहेज प्रथा, परम्परे

व्यक्ति विवाह, कन्या की बेचारगी, माता-पिता का परम्पराबद्ध संकीर्ण सोच आदि को भी एकांकी में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

छन्द-अलंकार

प्रश्न 221. छन्द किसे कहते हैं ? छन्द की परिभाषा दीजिये।

उत्तर—कविता में प्रयुक्त होने वाले वर्ण, मात्रा, यति, गति आदि के संघटन को छन्द कहते हैं। छन्द की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है—

'नियत मात्रा या वर्ण, गति, यति, लय, विराम और चरण आदि नियमों से बनी रचना को छन्द कहते हैं।

प्रश्न 222. छन्द के कितने प्रकार होते हैं ?

उत्तर—छन्द दो प्रकार के होते है—(i) मात्रिक छन्द और (ii) वर्णिक छन्द। जिन छन्दों में मात्रा या वर्ण का विधान नहीं होता, उन्हें मुक्तक छन्द कहा जाता है।

प्रश्न 223. मात्रा किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद होते हैं ?

उत्तर—किसी स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है, उस अवधि को मात्रा कहते हैं। मात्रा दो प्रकार की होती है—(1) लघु (I) और (2) गुरु (S)। ह्रस्व की एक व दीर्घ वर्णों की दो मात्राएं गिनी जाती हैं।

प्रश्न 224. गण किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर—तीन-तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं। वर्णों के लघु व दीर्घ के विचार से गण आठ प्रकार के होते हैं। य (ISS), म (SSS), त (SSI), र (SIS), ज (ISI), भ (SII), न (III) और स गण (IIS)।

प्रश्न 225. चरण किसे कहते हैं ?

उत्तर—कविता की प्रत्येक पंक्ति को चरण कहते हैं। प्रत्येक छन्द में चार चरण होते हैं। जिन छन्दों में चार से अधिक चरण होते हैं, वे दो छन्दों के मेल से बने होते हैं। जैसे कुण्डलिया, छप्पय आदि।

प्रश्न 226. गति और यति से आप क्या समझते हैं ? लिखिये ?

उत्तर— छन्दों को पढ़ते समय नियत वर्ण संख्या या मात्रा के बाद बीच में कुछ देर के लिए रुकना पड़ता है। इस रुकने की क्रिया को यति कहते हैं। कविता में जो एक प्रकार का प्रवाह होता है, उस प्रवाह को गति कहते हैं।

प्रश्न 227 दोहा किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—दोहा मात्रिक अर्द्धसम छन्द होता है। इसके पहले व तीसरे विषय चरणों में 13-13 मात्राएं तथा दूसरे और चौथे सम चरणों में 11-11 मात्राएं होती हैं। चरणान्त में लघु होना जरूरी है, यथा—

'प्रभुता को सब कोउ भजे, प्रभु को भजे न कोय।
कह कबीर प्रभु को भजै, प्रभुता चेरी होय॥'

प्रश्न 228. **चौपाई छन्द के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण भी दी**

उत्तर—चौपाई मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण
मात्राएं होती हैं और प्रत्येक चरण के अन्त में दो गुरु होते हैं। यथा-

चरण कमल रज कहुँ कब कहई।
मानुष करनि मूरि कछु अहई॥
छुवत सिला भई नारि सुहाई।
पाहन तें न काठ कठिनाई॥

प्रश्न 229. गीतिका छन्द की परिभाषा लीखिए।

उत्तर—यह मात्रिक सम छन्द है। इसमें छब्बीस (26) मात्राए
चौदह और बारह पर यति होती है तथा अन्त में लघु-गुरु होते हैं।

प्रश्न 230. गीतिका व हरिगीतिका छन्द में क्या अन्तर हैं ?

उत्तर—गीतिका व हरिगीतिका दोनों ही मात्रिक सम छन्द हैं
के प्रत्येक चरण में 14 और 12 की यति से 26 मात्राएं होती हैं, ज
गीतिका में 16 और 12 की यति से 28 मात्राएं होती हैं।

प्रश्न 231 गीतिका छन्द हरिगीतिका कब बन जाता है ?

उत्तर—जब गीतिका छन्द के आरम्भ में दो मात्राएं बढ़ाकर 2
पर 28 मात्राएं कर दी जाएं।

प्रश्न 232. रोला छन्द की परिभाषा लिखिये।

उत्तर—यह मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में चौबी
होती हैं। इसमें ग्यारह और तेरह मात्राओं पर यति होती है। अन्त
दूसरे से व तीसरे की चौथे से तुक मिलती है।

प्रश्न 233. उल्लाला को अर्द्धसम मात्रिक छन्द क्यों माना जात

उत्तर—उल्लाला के पहले और तीसरे (विषम) चरणों मे 15
दूसरे तथा चौथे (सम) चरणों में 13-13 मात्रायें होती हैं। चारों चर
दो चरणों में समान मात्राओं के कारण ही इसे मात्रिक अर्द्धसम छन्द

प्रश्न 234. मालिनी छन्द के क्या लक्षण हे ?

उत्तर—मालिनी वर्णिक सम छन्द हैं। इसके प्रत्येक चरण मे
न, न, म, य, य गणों के क्रम से होते हैं। 8वें व 7वें वर्ण पर यति
यथा—

प्रियपति वह मेरा प्राण प्यारा कहां है ?
दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहां है ?
लख मुख जिसका आज लौं जी सकी हूं।
वह हृदय हमारा, नयनतारा कहां है।

प्रश्न 235. 'छप्पय' छन्द को संयुक्त छन्द क्यों कहते हैं ? एक उदाहरण
ए।

उत्तर-- छप्पय रोला और उल्लाला के संयोग से बनता है। इसके प्रथम
चरण रोला के और अन्तिम दो चरण उल्लाला के होते हैं। यही कारण
छप्पय संयुक्त छन्द कहलाता है। यथा—

जिसकी रज में लोट, लोटकर बड़े हुए हैं।
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं॥
परमहंस सम बालकाल में सब सुख पाये।
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाये॥
हम खेले-कूदे हर्ष युत जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में॥

प्रश्न 236. 'द्रुतविलम्बित'—को वर्णिक सम वृत का महत्त्वपूर्ण छन्द क्यों
जाता है ?

उत्तर—इसके प्रत्येक चरण में एक न गण, दो भ गण एवं एक र गण के
से 12 वर्ण होते हैं। सभी चरणों में समान वर्ण व क्रम होने के कारण द्रुत-
म्बित को वर्णिक सम छन्द कहते हैं।

प्रश्न 237. बसन्ततिलका—छन्द की परिभाषा लिखिए।

उत्तर—यह वर्णिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं
क्रमशः त गण, भ गण, ज गण, ज गण एवं दो गुरु वर्णों से बनता है।

प्रश्न 238. शिखारिणी' को वर्णिक सम छन्द क्यों कहते हैं ?

उत्तर—शिखारिणी के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं जो क्रमशः य गण
गण, न गण, स गण, भ गण और अन्त में लघु-गुरु के नियम से आते हैं।
क चरण में समान वर्णों के कारण ही इसे वर्णिक सम छन्द कहा जाता है।

प्रश्न 239. 'द्वार खड़े प्रभु के छरिया तहं, भूपति जात न पावत नेरे।'

उपर्युक्त चरण के नीचे लघु-गुरु के चिन्ह लगाकर सिद्ध कीजिए कि यह
ा का चरण है।

उत्तर—द्वार खड़े प्रभु के छरिया तहं भूपति जात न
SII SII SII SII SII SII

पावत नेरे।
SII + SS = 17

सवैया वर्णिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में सात भ गण (SII) और

अन्त में दो गुरु होते हैं। कुल 23 वर्ण होते हैं। उपर्युक्त उदाहरण
है। अतः यह चरण सवैया छन्द का है।

प्रश्न 240. 'कुण्डलिया' छन्द में दोहा और रोला छन्द क
प्रकार किया जाता है ?

उत्तर—कुण्डलिया में पहले दो चरण दोहे के तथा चार
रखे जाते हैं। दोहे का चौथा रोला का प्रथम चरण होता है तथ
दोहे का आरम्भ होता है, उसी शब्द से रोला का अन्त होता है।
निर्मित होने के कारण कुण्डलिया को विषम मात्रिक छन्द कहते हैं

प्रश्न 241. अलंकार किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के ह

उत्तर- काव्य के शोभा कारक धर्मों को अलंकार कहते हैं।
के होते हैं—(1) शब्दालंकार और (2) अर्थालंकार। जहां शब्द
जाता है, वहां शब्दालंकार और जहां अर्थ में सौन्दर्य पाया जाता है
कार होता है।

प्रश्न 242. शब्दालंकार किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद

उत्तर—जहां पर शब्द विशेष के रहने पर ही काव्य की
होती है, उसे शब्दालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार के कई भेद हैं। जैसे अनुप्रास, यमक, श्लेष आ

प्रश्न 243. अर्थालंकार की परिभाषा दीजिए तथा कुछ
नाम भी लिखिये।

उत्तर—जहां पर किसी शब्द के स्थान पर उसका पर्यायवा
भी सुन्दरता बनी रहे, वहां अर्थालंकार होता है। अर्थालंकार में शब्द
होकर उसके अर्थ का महत्त्व होता है।

कुछ प्रमुख अर्थालंकार हैं, यथा-उपमा, रूपक, सन्देह, भ्रान्ति
दीपक, निदर्शना, दृष्टान्त, उत्प्रेक्षा, अपन्हुति आदि।

प्रश्न 244. काव्य में अलंकारों का क्या महत्त्व है ?

उत्तर—काव्य में अलंकारों का वही महत्व है जो एक स्त्री के
षणों का होता है। वे काव्य के लिए आवश्यक तो हैं, पर अनिवार्य
होने से काव्य की सुन्दरता में वृद्धि होती है।

प्रश्न 245. अनुप्रास, अलंकार की परिभाषा सोदाहरण लि

उत्तर—जहां रस के अनुकूल किसी वर्ण, शब्द या वाक्यांश
होती हो, वहां अनुप्रास अलंकार होता है। यथा—

'चारु चन्द्र की चंचल किरणें।'

यहां 'च' वर्ण की तीन बार आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार

प्रश्न 246. यमक अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर—जहां पर किसी शब्द का बार-बार अलग-अलग अर्थों में प्रयोग ा है, वहां यमक अलंकार होता है। जैसे –

"उठा बगूला प्रेम का, तिनका उड़ा अकास।
तिनका तिनके से मिला, तिन का तिन के पास ॥"

यहां तिनका शब्द की बार-बार अलग-अलग अर्थों में आवृत्ति के कारण क अलंकार है।

प्रश्न 247. श्लेष अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर—जहां पर कोई शब्द केवल एक बार आये लेकिन वहां उसके दो दो से अधिक अर्थ निकलते हों, वहां श्लेष अलंकार होता है। यथा—

"पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून।"

प्रश्न 248. "जो रहीम गति दीप की, कूल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगे, बढ़े अंधेरो होय ॥"

उपर्युक्त दोहे में श्लेष अलंकार क्यों है?

उत्तर—उपर्युक्त दोहे में 'बारे' और 'बढ़े' शब्दों का प्रयोग एक-एक बार हुआ है. पर दीपक और कपूत के संदर्भ में उसके दो-दो अर्थ हैं। इसलिए यहां ष अलंकार है।

प्रश्न 249. उपमा अलंकार की परिभाषा दीजिए।

उत्तर—जहां पर दो वस्तुओं की समानता किसी विशेष गुण, धर्म कर्म या ा के आधार पर बताई जावे, वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा का शाब्दिक है—तुलना करना। एक उदाहरण देखिए—

बिन देखें कल नाहिन, यह आंखियान।
पल-पल कटत कलय सों, अहो सुजान ॥

प्रश्न 250. 'अरविन्द सों आनन'

उपर्युक्त पंक्ति में उपमा अलंकार क्यों है?

उत्तर—श्रीराम के मुख (उपमेय) की तुलना अरविन्द (उपमान) से करने कारण उक्त पंक्ति में उपमा अलंकार है। कमल अपनी सुन्दरता कोमलता और ावट के लिए प्रसिद्ध है। श्रीराम के मुख की समता कमल से होने के कारण यहां उपमा अलंकार है।

प्रश्न 251. रूपक अलंकार की परिभाषा दीजिए।

उत्तर—जहां उपमेय उपमान का रूप धारण कर ले अथवा जहां उपमान उपमेय पर अभेद रूप से आरोप किया जाय, वहां रूपक अलंकार होता है। क में किसी वाचक शब्द की आवश्यकता नहीं होती।

प्रश्न 252. 'तिन्ह के हृदय सदन सुख दायक। बसहु रघुनायक।'

उपर्युक्त पंक्ति में रूपक अलंकार क्यों है ?

उत्तर—यहां पर सदन (उपमान) का, हृदय (उपमेय) प आरोप होने के कारण रूपक अलंकार है।

प्रश्न 253. उत्प्रेक्षा अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर—जहां उपमेय उपमान के समान न हो, फिर भी जाये कि वह लगभग समान है, वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। य

सुनि समंत्रु सिय सीतलि बानी।

भयउ बिकल जनु फनि मनि हानी।

प्रश्न 254. उपमा और उत्प्रेक्षा में दो समानताएं बतला

उत्तर—उपमा और उत्प्रेक्षा दोनों ही अर्थालंकार हैं। दोनों की उपमान से समानता बतलाई जाती है। उपमा में उपमेय के जबकि उत्प्रेक्षा में उनकी समानता की सम्भावना की जाती है।

प्रश्न 255. उपमा व रूपक में दो समानता बताइये।

उत्तर—उपमा व रूपक दोनों ही अर्थालंकार है। उपमा समानता उपमान से बताई जाती है। वे दोनों समान होते हुए भ रहते हैं जबकि रूपक में उपमान का उपमेय पर अभेद रूप से आरोप

प्रश्न 256. दीपक अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर—जहां प्रस्तुत (उपमेय) तथा अप्रस्तुत (उपमान) का सम्बन्ध स्थापित किया जाये, वहां दीपक अलंकार होता है। यथा—

पुरुषों को तो बस राजनीति की बातें।

नृप में माली में काट-छांट की घातें॥

प्रश्न 257. विभावना अलंकार की सोदाहरण परिभाषा दी

उत्तर—जहां कारण के बिना ही कार्य होना हुआ दिखाय विभावना अलंकार होता है। यथा—

'शून्य भीति पर चित्र, रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे।'

प्रश्न 254. 'बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ न

उक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ? उसके लक्षण भी लिखिए

उत्तर—उक्त पंक्ति में विभावना अलंकार है। क्योंकि यहां पर (सेवा) के कार्य (द्रवित होना) का उल्लेख किया गया है।

प्रश्न 259 विरोधाभास की अलंकार की सोदाहरण परिभाषा लिखिए।

उत्तर—वास्तविक विरोध न होते हुए भी जहां विरोध का आभास मालूम वहां विरोधाभास अलंकार होता है। यथा—

या अनुरागी चित्त की गति, समुझहिं नहीं कोय।
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग त्यों-त्यों उज्ज्वल होय॥

प्रश्न 260. व्यतिरेक अलंकार की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

उत्तर—जहां उपमेय में उपमान से सकारण उत्कर्ष दिखलाया जाये, वहां तिरेक अलंकार होता है। यथा—

सम सुबरन सुखमाकर सुखद न थोर।
सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर।

प्रश्न 261. रूप, रंग आदि का सादृश्य होने के कारण उपमेय में उपमान संशय होने पर सन्देह अलंकार होता है। यथा—

कै तो जोगी जग में नाहीं, कै र विसारी मोय।

उक्त उदाहरण में निश्चय का अभाव है। अतः सन्देह अलंकार है।

प्रश्न 262 बाबहिया, तू चोर, धारी चांच कटाबिसूं।
राति ज दीन्हीं लोर, मई जारायउ प्री आवयउ॥

उपर्युक्त पंक्तियों मे भ्रान्तिमान अलंकार क्यों है? समझाइये।

उत्तर—यहां पर पपीहे की आवाज सुनकर मारवाणी को प्रिय के आने का न हो ा है, पर वस्तुतः प्रिय आते नही है। जहां समानता के कारण ऐसी भ्रान्ति ती है, वहां भ्रान्तिमान अलंकार होता है।

प्रश्न 263. सन्देह और भ्रान्तिमान अलंकारों का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—सन्देह में सादृश्य के कारण उपमेय और उपमान का निश्चय नहीं पाता। वहां यह है कि अथवा वह का संशय बना रहता है जबकि भ्रान्तिमान सादृश्य के कारण उपमेय में उपमान का मिथ्या निश्चय हो जाता है।

प्रश्न 2 4. अपन्हुति अलंकार की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

उत्तर—उपमेय पर उपमान के निषेध पूर्वक आरोप को अपन्हुति अलंकार हते हैं। यथा—

है न सुधा यह किन्तु है सुधा का रूप सत्संग।

अपन्हुति का अर्थ छिपाना है। यहां पर सुधा पर सत्संग का आरोप करने लिए उसमे अमृत के गुण का निषेध किया गया है।

प्रश्न 265. 'प्रतीप' अलंकार की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

उत्तर—प्रतीप का शाब्दिक अर्थ है—उल्टा। जहां उपमेय के रहते उपमान व्यर्थ बतलाया जावे, वहां प्रतीप अलंकार होता है। यथा—

इस सुख के रहने पर भी,
विधि ने क्यों शशि बनाया ?

प्रश्न 266. घन की धुनि सुनि मोर मगन भया ।
यूं मेरे आणंद छाया जी ।

उपर्युक्त पंक्तियों में दृष्टान्त अलंकार होने का सकारण उ

उत्तर—जहां पर उपमेय, उपमान एवं उसके सामान्य प्रतिबिम्ब भाव दिखाई पड़े, वहां दृष्टांत अलंकार होता है। यहां ध्वनि सुनकर मोर और मीरा के मन में होने वाले आनन्द में बिम्ब होने के कारण दृष्टान्त अलंकार है ।

प्रश्न 267. निदर्शना अलंकार की सोदाहरण परिभाषा लि

उत्तर—जहां दो वाक्यों के विभिन्न अर्थ होते हुए भी एक-दू इस प्रकार स्थापित किया जाये कि दोनों में समानता लक्षित हो निदर्शना अलंकार होता है । यथा—

जिसे जीत लेना जग में लोहे के चने चबाना है ।
उसी मरण पर विजय प्राप्त कर हमे अमर हो जाना है ।

प्रश्न 268. मानवीकरण अलंकार की परिभाषा दीजिए ।

उत्तर—जड़ वस्तुओं, प्रकृति के दृश्यों तथा मानव अनुभू व्यक्तित्व प्रदान करना मानवीकरण है । मानवीकरण में मानवी भाव प्रकृति पर किया जाता है । यथा—

"अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा घट ऊषा नागरी ॥"

प्रश्न 269. विशेषण विपर्यय अलंकार की परिभाषा लिखिए

उत्तर—जो विशेषण जिस विशेष्य के साथ जुड़ना चाहिए उस के साथ प्रयोग करके जहां शैलीगत चमत्कार उत्पन्न किया जाये, विपर्यय अलंकार होता है । यथा—

वेदना के सुरीले हाथ से ।

प्रश्न 270. पाश्चात्य प्रभाव से हिन्दी में आये किन्हीं दो अलंक लिखिये ।

उत्तर—(1) मानवीकरण और (2) विशेषण विपर्यय पाश्च से हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले अलंकार हैं ।

साधना पास बुक्स

सीनियर हायर सैकण्डरी परीक्षा

विशेष हिन्दी

व्याख्या खण्ड

भाग (ब)

निर्देश--परीक्षा में एक प्रश्न व्याख्या से सम्बन्धित होगा। इस प्रश्न के भाग होंगे। प्रत्येक भाग में अलग-अलग पुस्तकों से एक-एक व्याख्या करनी ी। इस प्रकार परीक्षा के लिए निर्धारित तीनों पुस्तकों से तीन व्याख्याएं करनी ी। प्रत्येक व्याख्या 8 अंक की होगी। पूरे प्रश्न के 24 अंक होंगे। अतः ार्थियों को व्याख्या का संदर्भ सहित अभ्यास करना चाहिए।

आपके अभ्यास के लिए यहां प्रत्येक पुस्तक से परीक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण ाख्याओं को दिया जा रहा है।

प्राचीन काव्य कलाधर

निर्देश—निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये :—

1. कबीर

जाके मुंह माथा नहीं, नाही रूप कुरूप।
पुहुप बास तें पातरा, ऐसा तत्त्व अनूप॥

शब्दार्थ—जाके = जिसके। रूप = सुन्दर। पुहुप = फूल। बसा = सुगन्ध। = से। पातरा = पतला या सूक्ष्म। अनूप = अनोखा, अद्भुत।

संदर्भ—प्रस्तुत साखी संत कवि कबीरदास द्वारा रचित है। यह हमारी ठ्य पुस्तक प्राचीन काव्य कलाधर में संकलित है। इसमें कबीर ने अपने आराध्य ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन किया है।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि मेरे ईश्वर निराकार ब्रह्म के न तो ह है और न ही मस्तिष्क ही। वह न तो रूपवान अर्थात् सुन्दर ही है और न

कुरूप अथवा भद्दा है। वस्तुतः वह सुन्दर और असुन्दर की परिभा
वह निर्गुण और निराकार है। वह अनुपम ईश्वर इतना सूक्ष्म है कि
भी उसकी सूक्ष्मता से समता नहीं कर सकती। वस्तुतः निराकार ब्र
अद्भुत और अनुपम है। उसे अनुभव तो किया जा सकता है, परन्तु श
कर उसे अभिव्यक्त करना कठिन है।

विशेष—निराकार ब्रह्म का स्वरूप अद्भुत और अनुपम है।
का विषय है, अभिव्यक्ति का नहीं। इसलिए बिम्ब को किसी वस्तु
समता नहीं की जा सकती।

(2)

साहेब सों सब होत है, बंदे ते कछु नाहि।
राई ते पर्वत करे, पर्वत राई माहि॥

शब्दार्थ—साहेब ईश्वर, निराकार, ब्रह्म। सों = से। बंदे
तें = से। माहि = में, अन्दर।

सन्दर्भ—प्रस्तुत अवतरण प्राचीन काव्य कलाधर में संकलित
साखियों से लिया गया है। इसमें ईश्वर की अद्भुत सामर्थ्य का उल्लेख
बताया गया है कि निराकार ब्रह्म ही सब कार्यों का कर्ता है। जो कुछ
वही करता है। मानव में इतनी सामर्थ्य नहीं कि वह उसके आदेश के
कुछ कर सके।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि निराकार ब्रह्म ही सब कार्यों का
उससे सभी कार्य सहज भाव से पूर्ण हो जाते हैं, लेकिन मुझ मनुष्य से
काम नहीं होता है। वह सामर्थ्यवान ब्रह्म राई से पर्वत का निर्माण क
और राई के अन्दर ही पर्वत को स्थापित कर देता है। ये सभी कार्य मानव
असम्भव हैं पर निराकार ब्रह्म इन्हें सहज भाव पूर्ण कर देता है।

विशेष—निराकार ब्रह्म सर्व सामर्थ्यवान है। वह राई को प
पर्वत को राई बना सकता है। जबकि मानव के लिए ये कार्य असम्भव है

(3)

जो कुछ किया सो तुम किया, मैं कछु किया नाहि।
कहो कही जो मै किया, तुम ही थे मुझ माहि॥

शब्दार्थ—किया = करा। तुम किया = ईश्वर ने किया है। मै
मानव ने किया। मुझ माहि = मेरे भीतर।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी महाकवि कबीर विरचित है। यह हमारी
पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधार' में संकलित कबीर की साखियों में से

साखी में कबीर ने निराकार ब्रह्म की सर्वोपरिता और उसकी सर्वोच्च शक्ति का वर्णन किया है। वस्तुतः ब्रह्म ही सृष्टि के सभी कार्यों का है।

व्याख्या—प्रस्तुत साखी में कबीर दास जी ईश्वर की विशिष्टता और अद्भुत सृजन क्षमता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हे ईश्वर ! तुम अद्-द्वितीय और विशिष्ट हो। अतः इस संसार में जो कुछ होता है, वह सब ही किया हुआ होता है। मुझ नाचीज में इतनी सामर्थ्य कहां, जो कुछ मैं ? मैंने कोई भी कार्य नहीं किया है। यदि कभी कोई छोटा-मोटा कार्य भी जाता है तो वस्तुतः उसका कर्ता भी तू परमात्मा की जीवात्मा में होकर कार्य करा लेता है। अतः जो कार्य मैं करता हुआ दिखाई देता हूं कर्त्ता भी परमात्मा ही है।

विशेष—गीता में भगवान् कृष्ण ने ऐसा ही कहा है कि मैं स्वयं ही सृष्टि कार्यों का कर्ता हूं। मानव जो भी कर्म करता है वह ईश्वरीय प्रेरणा करता है।

प्रस्तुत साखी में कबीर की विनयशीलता, विनम्रता और लघुता संकेतित ईश्वर की महत्ता और सच्चे भक्त की लघुता उक्त साखी में व्यक्त हुई है।

(4)

ज्ञान-दीप परकास करि, भीतर भवन जराय।
तहां सुमिर सतनाम को, सहज समाधि लगाय॥

शब्दार्थ--परकास = प्रकाश। भीतर भवन = अंतस् या हृदय रूपी भवन राय = जलाकर। सुमिर = स्मरण कर। सतनाम = श्रेष्ठ और पवित्र नाम र का है। लगाय = लगाकर।

सन्दर्भ-प्रस्तुत साखी कबीर द्वारा विरचित है। इसमें कबीर ने सहज का उल्लेख करते हुये हरि स्मरण की प्रेरणा दी है। श्रेष्ठ और पवित्र स्मरण ही वास्तविक ईश्वरोपासना है।

व्याख्या—कबीर सन्तमार्गी कवि थे। अन्तः साधना पर उनका विशेष था। अन्तः साधना से ही हृदय पवित्र और निर्मल बनता है तथा ईश्वर करना सहज हो जाता है। इसी भावना से प्रेरित होकर वे कहते हैं जीवात्मा ! तू अपने हृदय में ज्ञान का दीपक जलाकर प्रकाश करले और रूपी अन्धकार को इस ज्ञान के प्रकाश से मिटा दे। ज्ञान-दीप से प्रकाशित ही श्रेष्ठ एवं पवित्र नाम वाले ईश्वर का स्मरण सम्भव है। नाम त सहज ही समाधि लग जायेगी और तू ईश्वर को प्राप्त कर सकेगा।

विशेष—(1) प्रस्तुत साखी में 'ज्ञान-दीप' और भीतर भवन में रूपक

अलंकार, तथा सम्पूर्ण साखी में रूपकातिशयोक्ति और अनुप्रास अलंकारों क विक प्रयोग हुआ है।

(2) 'सहज' शब्द एक पारिभाषिक शब्द है। कबीर-काव्य में इस स्वाभाविक के अर्थ में ही हुआ है। कतिपय स्थलों पर कबीर ने इसक निर्गुण ब्रह्म के लिए भी किया है। स्व. डॉ सरनामसिंह शर्मा के अनुसार शब्द का प्रयोग कबीर ने व्यापक भूमिका पर किया है। कबीर काव्य मे जीवन पद्धति का वाचक है।

(5)

उठा बगूला प्रेम का, तिनका उड़ा अकास।
तिनका तिनके से मिला, तिन का तिन के पास॥

शब्दार्थ—बगूला = बवण्डर। अकास = आकाश तिनका = तृण, जी तिनके से = निराकार ब्रह्म से। तिन के = उनके, परमात्मा के।

सन्दर्भ—कवि कबीर विरचित यह साखी हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य कलाधर' में संकलित है। इस साखी में कबीर ने आत्मा और परम मिलन का सहज वर्णन किया है।

व्याख्या—कबीरदास जी प्रेम की आंधी में होने वाले कार्य क करते हुए कह रहे हैं कि हमारे हृदय में प्रेम का बवण्डर उठा। प्रेम अतिशयता में जीवात्मा रूपी तृण उड़ करके आकाश (समाधि अवस्था) पहुंचा और उसका दूसरे तृण (निराकार ब्रह्म) से मेल हो गया। जीवात्म कार ब्रह्म से मिलकर उसी में समाहित हो गई, एकाकार हो गई और यह वान शरीर इस धरती पर ही पंचतत्व में मिलने हेतु रह गया।

विशेष—प्रस्तुत साखी में रूपक और यमक अलंकार का स्वाभाविक हुआ है। दूसरी पंक्ति में अनुप्रास की सुन्दरता अवलोकनीय है।

(6)

जब लगि मरने से डरै, तब लगि प्रेमी नाहिं।
बड़ी दूर है प्रेम घर, समझ लेहु मन माहिं॥ (Imp.)

शब्दार्थ—जब लगि = जब तक। डरै = डरता है। तब लगि = तब प्रेम घर = निराकार ब्रह्म का निवास। मन-माहि = मन में।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन काव्य कला अवतरित है। इसके रचयिता संतमार्गी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि कबी इसमें कवि ने प्रेम के लिए निर्भयता को आवश्यक बतलाया है। जिस व्य मन में मृत्यु का भय है, वह प्रेमी हो ही नहीं सकता।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि हे साधक! ईश्वर की प्रा करने से पूर्व तू एक बात को भली प्रकार से जान ले कि प्रेम करना सह

जब तक व्यक्ति के मन में मृत्यु का भय रहता है, उस समय तक वह प्रेमी ही नहीं। प्रेम और भय दो विरोधी भाव हैं। यदि तू परमात्मा से करना चाहता है तो भय को अपने हृदय पूरी तरह निकाल दे। सच्चा प्रेमी के भय से मुक्त होता है। भय से पूरित मन को प्रेमी मन नहीं कहा जा ा। प्रेम का घर भी बड़ा दूर है। उसका मार्ग अनेक प्रकार की बाधाओं से है, वहां पहुंचना सहज नहीं है। वहां तक पहुंचने के प्रयास में तुझे अपने भी देने पड़ सकते हैं। इस बात को तू अच्छी प्रकार से समझ ले और मृत्यु से मुक्त हो जा।

विशेष—प्रेम के लिए सर्व समर्पण और बलिदान की भावना का होना क्षित है। जिस व्यक्ति में आत्मोत्सर्ग की भावना नहीं है, वह सच्चा प्रेमी नहीं सकता। कबीर ने इसी भाव को दर्शाते हुए एक अन्य साखी में कहा है—

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
शीश उतारे भू धरे, सो पैठे घर माहिं॥

(7)

हरि जन से तू हेत कर, कर हरिजन से हेत।
माल मुलुक हरि देत है, हरिजन हरिहीं देत॥

शब्दार्थ—हरि = निराकार ब्रह्म। जन = नहीं, मत। हेत = प्रेम। हरिजन श्वर भक्त। माल मुलुक = धन सम्पत्ति। हरिहीं = भगवान को।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य-पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधर' में लित कबीर की साखियों से उद्धृत है। ईश्वर भक्त को ईश्वर से भी बढ़कर ाया है। ईश्वर प्रसन्न होकर सांसारिक सुख एवं ऐश्वर्य प्रदान करता है क भक्त भगवान से ही साक्षात्कार करा देता है।

व्याख्या—कबीरदास जी ईश्वर भक्तों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं हे भक्त! भले ही तू ईश्वर की आराधना न कर क्योंकि इससे तेरी कोई हानि वाली नहीं, पर तू हरि भक्तों से अवश्य प्रेम कर। भगवान दीन बन्धु हैं। का मन ही उस दीन बन्धु का निवास स्थान है। दीन हृदय ही मन्दिर और नद है। भगवान वास वहीं पर है। मानव सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है। तू हरि भक्तों की सेवा कर। भगवान की सेवा करने से यदि वे प्रसन्न भी हो तो तुझे क्या मिलेगा? भगवान प्रसन्न होने पर अपने भक्तों को सांसारिक ऐश्वर्य, धन-सम्पत्ति देते। वह भला तेरे किस काम की है? लेकिन हरिभक्त होकर तेरा ईश्वर से ही साक्षात्कार कराने में सक्षम है। हरिभक्तों की सेवा तू ईश्वर को प्राप्त हो सकता है।

विशेष—1. प्रस्तुत साखी में हरि भक्त और मानव सेवा के महत्त्व को किया गया है। ईश्वर प्राप्ति सहज रूप में हो सकती है।

2. अनुप्रास और यमक अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से

(8)

साधू गाँठि न बाँधई, उदर समाता लेय ।
आगे पीछे हरि खड़े, जब माँगे तब देय ।। (Imp.)

शब्दार्थ—गाँठि न बाँधई=गाँठ में नहीं बाँधता है । उदर=पेट
भगवान-निराकार ब्रह्म । तब देय=तभी दे देता है ।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी कबीर की उपदेशात्मक प्रवृत्ति की
कबीर ने इसके संचय वृत्ति का निषेध करने के साथ-साथ साधु पुरुषों की
का उद्घाटन भी किया है ।

व्याख्या—साधु मनोवृत्ति का उद्घाटन करते हुए कबीरदास जी
कि साधु कभी संचय करके नहीं रहते । वे गाँठ बाँध-बाँध कर धन या वस
संचय नहीं करते । वे अपनी आवश्यकता जितना ही ग्रहण करते हैं । उ
पर अटूट विश्वास और निष्ठा होती है । भगवान् सदैव ईश्वर भक्त के स
हैं जो आवश्यकता पड़ने पर उसकी पूर्ति उसी समय कर देते हैं ।

विशेष—(1) 'उदर समाता' साभिप्राय शब्द है । इसका प्रयोग ल
सौन्दर्य से युक्त है । साधु कभी भी अपनी आवश्यकता से अधिक ग्र
करता । उसकी तो सदैव यही भावना रहती है कि—

साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम्ब समाय ।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय ।।

(2) साधु मनोवृत्ति का सुन्दर वर्णन हुआ है ।

(9)

सर्पहि दूध पिलाइए, सोइ विष ह्वै जाय ।
ऐसा कोई ना मिला, आपे ही विष खाय ।।

शब्दार्थ—सर्पहि=साँप को । विष ह्वै जाय=जहर हो जाता है
ही=स्वयं ही । विष खाई=विष युक्त माया सर्पिणी को खा जाता है ।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने माया रूपी सर्पिणी के प्र
उल्लेख किया है । व्यक्ति जैसे-जैसे माया की ओर बढ़ता है, वैसे-वैसे व
विषयुक्त प्रभाव में उलझता चला जाता है ।

व्याख्या—कबीर कहते है कि सर्प को दूध पिलाने से कोई लाभ नह
क्योंकि दूध उसके मुँह में जाकर विष ही बनता है । बुराई की संगति से
वस्तु भी विष के समान हानिकारक बन जाती है । कबीर कहते हैं कि ह
ऐसा साधक नहीं मिला जो विषयुक्त इस माया की सर्पिणी को खाकर न

ता। भाव यह कि माया से माया का जाल बढ़ता जाता है। ईश्वरोपासना लिए माया के इस जाल को तोड़ना आवश्यक है। माया की सर्पिणी को खाकर साधक ईश्वर को प्राप्त करने में सफल होता है।

विशेष 'साँप को दूध पिलाना' एक मुहावरा है। इस अर्थ में साखी को ग्रहण करने से उसका भाव सौन्दर्य और भी बढ़ जाता है।

(10)

कथनी मीठी खाँड-सी, करनी विष की लोय।
कथनी तजि करनी करै, विष से अमृत होय॥

शब्दार्थ—कथनी = कहना। खाँड-सी = शक्कर के समान मीठी। करनी = करना या व्यवहार। लोभ = लपट, ज्वाला। तजि = त्यागकर।

सन्दर्भ—संत कवि कबीर ने कहने से अधिक कर्म को महत्त्व दिया है। जीवन का सार कर्म करने में है। अकर्मण्य जीवन व्यर्थ है। कर्म से फल मिलता और सुकर्म करके व्यक्ति अपनी भाग्य लिपि के कुअंक को मिटा देता है। कर्मण्य व्यक्ति जीवन के सच्चे सुख को प्राप्त करता है।

व्याख्या—दूसरे को उपदेश देना सरल है किन्तु जब व्यक्ति अपने ही कथन व्यवहार में लाना चाहता है तो उसे उसकी वास्तविकता का बोध होता है। ल कहना, मीठी या मधुर वाणी बोलना सहज है परन्तु व्यवहार विष के न कटु होता है। व्यक्ति को चाहिए कि वह कर्म और वाणी में सामञ्जस्य । वह उपदेश करना त्याग कर स्वयं भी कर्म की ओर अग्रसर हो। जो व्यक्ति पथ के अनुयायी होते हैं उनके समक्ष जीवन की कटुता टिक ही नहीं पाती। कठिनाइयाँ कर्मवीरों के पथ की बाधक नहीं बनती। कर्मण्य व्यक्ति के लिए विष अमृत के तुल्य हो जाता है।

विशेष—1. प्रस्तुत साखी में कबीर ने वाणी और व्यवहार में एकरूपता का उपदेश दिया है। जहाँ इन दोनों में विरोध है, वहीं जीवन में कटुता है जहाँ एकरूपता है वहाँ समरसता और मधुरता है।

2. प्रस्तुत साखी में 'खाँड-सी' और 'विष की लोय' में उपमा अलंकार का सौन्दर्य दृष्टव्य है।

3. कबीर आडम्बर के विरोधी थे। वे वाणी और व्यवहार में एकरूपता प्रशंसक थे। दिखावा उन्हें पसन्द नहीं था।

(11)

मरते-मरते जग मुआ, औरस मुआ न कोय।
दास कबीरा यों मुवा, बहुरि न मरना होय॥

शब्दार्थ—मुआ = मर गया। औरस = अन्य, दूसरे तरीके से। बहु
फिर से।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाध
उद्धृत है। इसकी रचना संत कवि कबीर ने की है।

व्याख्या—यह संसार क्षण भंगुर और नश्वर है। जिसने जन्म लि
उसका मरना भी निश्चित है। यह सारा जग ही धीरे-धीरे मृत्यु को प्राप्त
जा रहा है। व्यक्ति जन्म लेता है और मर जाता है। सबका यही क्रम है।
भी किसी अन्य विधि या रीति से मृत्यु को प्राप्त नही हुआ। मृत्यु के बाद पु
होता है। व्यक्ति फिर मरने के लिए पैदा हो जाता है। कोई भी आवाग
इस क्रम को नहीं तोड़ सका। लेकिन कबीरदास जी ने कर्म प्रभाव की शृंखल
काटकर इस प्रकार की मृत्यु को पा लिया है जिससे कि वह आवागमन के
से मुक्त हो गया है। अब वे फिर से मरने के लिए पैदा नहीं होंगे। भाव य
जब साधक की आत्मा परमात्मा को प्राप्त कर एकाकार हो जाती है तो वह
और जीवन के चक्र से मुक्त हो जाती है। ईश्वर का साक्षात्कार करके कबी
अपने को मृत्यु-बन्धन से मुक्त हुआ अनुभव करते हैं।

विशेष—कबीर के अनुसार जीवन की सार्थकता परमात्मा की प्रा
है। निराकार ब्रह्म को प्राप्त कर व्यक्ति आवागमन के बन्धन से मुक्त हो
है। पुनर्जीवन से मुक्ति ही साधक की आराधना का चरम फल है।

(12)

जा मरने से जग डरै, मेरें मन आनन्द।
कब मरिहौं कब पाइ हौं, पूरन परमानन्द॥

शब्दार्थ—सरल है।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्य कबीर की साखियों से उद्धृत है। इसमें क
मृत्यु भय से मुक्त होने की प्रेरणा दी है। कबीर को मृत्यु की प्रतीक्षा है व
मृत्यु के बाद ही परमात्मा से साक्षात्कार हो सकता है।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि जिस मृत्यु से संसार डरता है, उ
विचार करके मेरे मन में आनन्द होता है। मैं मृत्यु की उत्कण्ठा से प्रतीक्ष
रहा हूँ कि कब मरकर उस पूर्ण ब्रह्म से साक्षात्कार करूँ? उस परमात्मा
मृत्यु के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है फिर उसके बिना जीवित भी
ऐसे जीवन से क्या फायदा? अर्थात् कबीर मृत्यु के लिए इसलिए उत्सु
प्रसन्न है कि ईश्वर को मरने के उपरान्त ही प्राप्त किया जा सकता है।

विशेष—तुलना कीजिए—

"तोड़ दो बन्धन क्षितिज के देख लूँ उस ओर क्या है।
जा रहे जिस पंथ से, युग कल्प उसका छोर क्या है।
फिर भला प्राचीर बनकर, क्यों आज मेरे प्राण घेरे।
फिर विकल हैं प्राण मेरे।"—महादेवी

(13)

कबिरा सीप समुद्र की, रटै पियास पियास।
और बूँद को ना गहै, स्वाति बूँद की आस॥ (Imp.)

शब्दार्थ—पियास=प्यास। ना गहै=ग्रहण नहीं करती है। स्वाति बूँद=स्वाति नक्षत्र के जल की बूँद।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने प्रेम की एकनिष्ठता, अनन्यता और दृढ़ता का उल्लेख किया है।

व्याख्या—कबीर एकनिष्ठ प्रेम की सराहना करते हुए कहते हैं कि समुद्र की सीप अथाह जल में रहने के उपरान्त भी प्यासी ही रहती है। वह निरन्तर पानी की रट लगाये रहती है। उस सीप को केवल स्वाति नक्षत्र की बूँद की ही आशा रहती है और इसी कारण वह अन्य जल की एक बूँद भी ग्रहण नहीं करती। जिस प्रकार पतिव्रता नारी संसार में अनेक पुरुषों के रहते हुए भी केवल अपने पति पर ही निष्ठा और विश्वास रखती है, उसी प्रकार मानव को भी ईश्वर के प्रति सच्ची निष्ठा रखनी चाहिए। व्यक्ति को सीप के समान दृढ़ विश्वास लेकर जीना चाहिए। इस विश्वास में चाहे उसके प्राण ही क्यों न चले जायें, पर उसे अपनी निष्ठा का त्याग नहीं करना चाहिए।

विशेष—सम्पूर्ण दोहे में अन्योक्ति अलंकार और 'पियास-पियास' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का स्वाभाविक प्रयोग दृष्टव्य है।

(14)

गुरु धोबी सिष कापड़ा, साबुन सिरजन हार।
सुरति सिला पर धोइये, निकसे ज्योति अपार॥ (Imp.)

शब्दार्थ—सिष=शिष्य। कापड़ा=वस्त्र। सिरजन हार=सृजनकर्त्ता परमात्मा। सुरति=स्मृति। सिला=पत्थर। अपार=असीम और अद्भुत।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने सांग रूपक के माध्यम से गुरु रूपी धोबी के द्वारा शिष्य रूपी वस्त्र को, परमात्मा रूपी साबुन से सुरति शिला पर धोकर उज्ज्वल बनाने का उल्लेख किया है।

व्याख्या—गुरु रूपी धोबी शिष्य रूपी वस्त्र को परमात्मा रूपी सा धोता है। जिस प्रकार मैले वस्त्र को साबुन से धोने पर वह उज्ज्वल हो जा उसी प्रकार सतगुरु भी शिष्य के मन के मैल को परमात्मा रूपी साबुन से स्वच्छ बनाते हैं। कपड़े को जैसे शिला या पटिया पर धोया जाता है, उसी शिष्य रूपी कपड़े को 'सुरति की शिला' पर धोकर चमकाया जाता है। फल शिष्य रूपी वस्त्र से ज्ञान की चमक फूटने लगती है। गुरु से ज्ञान का प्रकाश जीवात्मा और भी उज्ज्वल बन जाती है और जैसे-जैसे वह ईश्वराधना की अग्रसर होती है उसके भीतर का प्रकाश सर्वत्र फैल जाता है।

विशेष—(1) प्रस्तुत साखी में अनुप्रास और सांग रूपक का सुन्दर हुआ है। गुरु महिमा का स्पष्ट उल्लेख है।

(2) 'सुरति शिला' पर धोने का उल्लेख करके निराकार ब्रह्म के स के महत्त्व को प्रतिपादन किया गया है। भाषा सहज सुबोध है।

(15)

उदर समाता अन्न लै, तनहि समाता चीर।
अधिकहिं संग्रह ना करै, ताका नाम फकीर॥

शब्दार्थ—उदर=पेट। सामान्य=जितना पेट में समा सके। चीर= संग्रह=संचय। ताका=उसका। फकीर=साधु।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने साधु पुरुष के लक्षणों का वर्णन है।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि साधु सन्तोषी होता है। वह उतना ही करता है जो उसके लिए आवश्यक होता है। वह अन्न ग्रहण करता है तो ही जितना उसका पेट पचा सके। वह वस्त्र लेता है तो उतना ही जो उसके ढकने के लिए अपेक्षित होता है। साधु की प्रवृत्ति संचय की नहीं होती। में वही सच्चा साधु है जो अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं को न तो करता है और न उनका संचय ही। भाव यह है कि साधु का जीवन सरल सादा होता है, उसमें त्याग की वृत्ति होती है।

विशेष—कबीर साधु में त्याग वृत्ति का होना आवश्यक मानते थे। अ ग्रह ही साधु जीवन का मुख्य लक्षण है।

(16)

प्रभुता को सब कोउ भजे, प्रभु को भजे न कोय।
कह कबीर प्रभु को भजै, प्रभुता चेरी होय॥ (Imp.)

शब्दार्थ—प्रभुता=ऐश्वर्य। भजे=भजता है; स्मरण करता है। =दासी।

सन्दर्भ– प्रस्तुत साखी 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संकलित कबीर के पाठ द्धृत है। कबीर ने इस साखी के द्वारा संसार की प्रवृत्ति का उल्लेख किया ंसार में सभी लोग प्रभुता के पीछे पड़े हैं, ईश्वराधना की ओर किसी का नहीं है।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि सांसारिक लोग माया के मोह-जाल में रहते हैं। सभी धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य और अधिकार की कामना करते हैं और के लिए प्रयत्न करते हैं। प्रभु स्मरण की ओर किसी का ध्यान नहीं है। र कहते हैं कि जो व्यक्ति प्रभु का स्मरण करता है, प्रभुता स्वयं उसकी दासी जाती है। प्रभु को पाकर व्यक्ति की सारी इच्छायें स्वतः ही पूर्ण हो जाती कर उसे किसी ऐश्वर्य की आवश्यकता नहीं रहती।

विशेष—1. प्रस्तुत साखी में मन की वृत्ति का उल्लेख किया गया है। यक्ति प्रभु को प्राप्त कर लेता है, प्रभुता स्वयं उसके चरणों में लौटने ी है।

2. मन की वृत्ति के सम्बन्ध में बिहारी की निम्न पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

भजन कह्यो ताते भज्यो, भज्यों न एकै बार।
दूरी भजन जाते कह्यो, सौं तैं भज्यो गंवार॥

(17)

माया महा ठगिनि हम जानी।
तिरगन फाँसि लिये कर डोले बोलै मधुरी बानी॥
केशव के कमला होइ बैठी सिव के भवन भवानी।
पडा के मूरत होई बैठी तीरथ में भई पानी।
जोगी के जोगिन होइ बैठी, राजा के घर रानी।
काहू के हीरा होइ बैठी काहू के कौड़ी कानी॥
भक्तन के भक्तिन होइ बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी। (Imp.)

शब्दार्थ—ठगिनि=ठगने वाली। तिरगुन=तीन गुण, सत्य, रजस व । फाँसि=फन्दा। कर=हाथ। मधुरी=मीठी। कमला=लक्ष्मी। केशव= । भवानी=पार्वती। कौड़ी कानी=गरीबी। अकथ=न कहने योग्य।

व्याख्या—माया के विस्तार का चित्रण करते हुए कबीर कहते हैं कि मैंने च्छी तरह समझ लिया है कि माया एक महान ठगिनी है। वह अनेक प्रकार ार के व्यक्तियों और देवताओं को धोखा देती है। वह माया अपने हाथों में

सत्य, रजस व तमस नामक तीन गुणों की फांस को लिए हुए बड़ी मी
बोलती हुई घूमती रहती है और मनुष्यों को अपने जाल में फंसाती
मनुष्य ही क्या माया तो देवताओं को भी अपने जाल में फँसा लेती है।
भगवान को फँसाने के लिए उनके पास लक्ष्मी बन कर बैठ गई और
पास संसार की माता पार्वती बन कर बैठ गई। पंडे और पुरोहितों के
मूर्ति का रूप धारण कर लिया और तीर्थस्थानों में उसने पानी का रूप
लिया है। जोगी लोगों के पास वह जोगिन बन कर बैठ जाती है और
महलों में रानी बन जाती है। किसी के पास वह हीरे-जवाहरात
सम्पत्ति का रूप धारण कर लेती है और किसी के पास कानी कौ
गरीबी बन जाती है। भक्तों को ठगने के लिए वह भक्तिन बन जाती
ब्रह्मा को अपने चक्कर में फँसाने के लिए ब्रह्मानी बन जाती है। कबीर
कि हे भाई साधुओं! तुम अच्छी तरह सुन और समझ लो कि इस
रूपों और विस्तार की कहानी इतनी बड़ी है कि मुँह से कही भी
सकती है।

विशेष—माया के नाना रूपों का चित्रण करते हुए उसकी व्याप
वर्णन किया गया है। कबीर ने माया का नारी रूप में कई स्थलों प
किया है। कभी उसकी तुलना वेश्या से की है और कभी सर्पिणी से;
कलुषित, ठगिया और छलिया रूप में चित्रित करके संसार को उससे
उद्बोधन किया है।

(18)

जहाँ खेलत बसन्त रितुराज
जहाँ अनहद बाजा बजै बाज।
चहुँ दिसि जोति की बहै धार
बिरला जन कोई उतरै पार॥
कोटि कृष्ण जहँ जोड़ैं हाथ
कोटि विष्णु जहँ नावैं माथ।
कोटिन ब्रह्मा पढ़ैं पुरान
कोटि महेश धरैं जहँ ध्यान॥

शब्दार्थ—रितुराज=ऋतुओं का राजा बसन्त। अनहद बाजा
भाषिक शब्द जिसका आशय ध्यान की चरमावस्था से है जिसमें साधक
त्रिक आनन्दानुभूति होती है। चहुँ दिस=चारों ओर। ज्योति=ज्योति
बिरला कोई-कोई ही। कोटि=करोड़ों। नावैं माथ सिर झुकाते हैं
शिव।

सन्दर्भ प्रस्तुत पद 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संकलित कबीर के काव्य द्धृत है। इसमें कबीर ने परमात्म लोक का वर्णन किया है।

व्याख्या सत्यलोक का वर्णन करते हुए संत कबीर कहते हैं कि वह लोक त है। वहाँ ऋतुराज बसन्त निरन्तर अठखेलियाँ करता प्रतीत होता है। अनहद नाद का सरस बाजा निरन्तर बजता रहता है। वहाँ चारों ओर श की अखण्ड धारा प्रवाहित होती है। ऐसे अलौकिक लोक में कोई-कोई न्त ही मुश्किल से पहुँच पाता है। वहाँ कोटि-कोटि कृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु, महेश द देवता हाथ जोड़े खड़े रहते हैं, फिर अन्य देवी-देवताओं की तो गिनती ही है? वहाँ उस परम ज्योति के समक्ष करोड़ों विष्णु अपना सिर नवाकर ाम करते हैं। वहाँ करोड़ों ब्रह्मा वेदों और पुराणों का पाठ करते हैं और वहाँ ड़ों शिव निरन्तर उसी का ध्यान करते हैं। वह सत्यलोक अद्भुत और अलौ- क है। वहाँ केवल ईश्वर भक्तों और हंस-सदृश्य सन्तों की ही पहुँच सम्भव हो ती है।

विशेष—(1) प्रस्तुत अवतरण में समाधि अवस्था के अलौकिक आनन्द चित्रण है। अनहद नाद की अवस्था साधना की चरमावस्था है जिसमें साधक अद्भुत अनुभूति कर आनन्दोपलब्धि करता है।

(2) लाटानुप्रास का सौन्दर्य दृष्टव्य है। शैली की सरसता प्रशंसनीय है।

(19)

भक्ति का मारग झीना रे।
नहिं अचाह नहिं चाहना, चरनन लौ लीना रे।
साधन के रस-धार में, रहे निस-दिन भीना रे।
राम में स्रुत ऐसे बसे, जैसे जल मीना रे।
साँई सेवन में देत सिर, कुछ बिलम न कीना रे।
कहैं कबीर मत भक्ति का, परगट कर दीना रे। (Imp.)

(राज. विश्वविद्यालय 1988)

शब्दार्थ—झीना = कोमल, संकरा। अचाह = चाह का न होना। चाहना = ाएँ। लौ = लगन। लीना रे = तल्लीन हुआ। भीना = डूबा हुआ। स्रुत = । देत सिर सिर देना, न्योछावर हो जाना। बिलम = विलम्ब, देर। ाट = प्रकट, प्रत्यक्ष।

सन्दर्भ—प्रस्तुत अवतरण सन्त कबीर के काव्य से अवतरित है। कबीर स पद में भक्ति के मार्ग को वर्णित किया है।

व्याख्या—कबीर भक्ति मार्ग को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि मार्ग अत्यन्त कोमल व संकीर्ण है। इस मार्ग के पथिक अर्थात् भक्ति के मन में किसी प्रकार की कोई चाह या इच्छा नहीं होती। वह सभी इच्छाओं से परेशान रहता है और उसका मन निरन्तर प्रभु चरणों में है। उसके मन में उस ब्रह्म की ही लगन लगी रहती है। वह प्रभु साधन धारा में निरन्तर डूबा रहता है। दिन-रात वह उसी भक्ति रस में तल्ल है। ईश्वर के प्रेम में समस्त शास्त्रों का ज्ञान इस प्रकार से रहता है जैसे मछली रहती है। मछली जैसे एक क्षण भी जल के बिना नहीं रह सक प्रकार ईश्वर के प्रेम में ज्ञान का निरन्तर निवास रहता है। भाव यह और प्रेम एक साथ ही रहते हैं। जो व्यक्ति प्रभु की सेवा में अपना सि अपने को न्योछावर करने में जरा भी आगा-पीछा नहीं देखता वही परम कबीर कहते हैं कि इन शब्दों में मैंने भक्ति का मार्ग प्रत्यक्ष कर दिया है

विशेष—1. प्रेम-भक्ति के लिए सर्वस्व समर्पण और सर्व- भावना का होना आवश्यक है। बलिदान के बिना भक्ति को प्राप्त क म्भव है।

2. तुलना कीजिए—

कबीरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारे भुइं धरै; सो पैठे घर माहिं।

(20)

मन ना रँगाये रंगाये जोगी कपड़ा।
आसन मारि मन्दिर में बैठे
ब्रह्म-छाँड़ि पूजन लागे पथरा॥
कनवा फड़ाय जटवा बढ़ौले
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होई गैले बकरा।
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले
काम जराय जोगी होय गैले हिजरा॥
मथवा मुँड़ाय जोगी कपड़ा रंगौले,
गीता बाँच के होय गैले लबरा।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो,
जम दरवजवा बांधल जैबे पकड़ा॥

शब्दार्थ—पथरा=पत्थर, मूर्ति। कनवा फड़ाय=कान प जटवा=जटाएं। बढ़ौले=बढ़ा ली। लबरा=झूठा। जम=यम। जैबे=

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद में संत कबीर ने बाहरी आडम्बरों और मिथ्याचारों दा करते हुए आन्तरिक शुद्धि और सात्विकता पर बल दिया है।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि आजकल साधु बाहरी आडम्बर खूब करते अपने वस्त्रों को लाल या भगवा रंग में रंगकर योगी का भेष धारण करते अपने मन को प्रभु भक्ति के रंग में रंगने का प्रयास नहीं करते। भला इस र से कभी भगवान मिलते हैं ? जब तक मन ही प्रभु रंग में न डूबा हो तब ता भक्ति कैसे हो सकती है ? इससे उनको परमात्मा की प्राप्ति होने वाली । इस प्रकार पद्मासन लगाकर मन्दिर में बैठकर मूर्ति पूजा करने से भी भु मिलता नहीं है। यदि पूजना ही है तो निराकार ब्रह्म का नाम स्मरण वह मूर्ति कुछ देने वाली नहीं है। कानों में छेद करवाकर, उनमें कुण्डल करने व बाल बढ़ाने व दाढ़ी बढ़ाकर बकरे की शकल धारण करने से भी न नहीं मिलते। जंगल में जाकर आग की धूनी तपने और काम को जला पुंसक बनने से भी भगवान नहीं मिलते। सिर का मुण्डन करवाने, भगवा गाकर पहिनने और गीता का पाठ करने से भी उसकी प्राप्ति सम्भव वह इन सब बाह्याचारों से बहुत परे है। वह परमात्मा इन झूठी, मिथ्या से रीझने वाला नहीं है। कबीर कहते हैं कि हे साधुओं ! सुनो जो भी बाहरी आडम्बरों में फँसकर मूर्ति पूजा करते हैं; वेद शास्त्र पढ़ते हैं अपने मन को प्रभु भक्ति के रंग में नहीं रंगते, उन्हें भगवान कभी नहीं मिल । ऐसे ढोंगी यमराज के द्वार पर बंधे हुए तथा पकड़े हुए जाते हैं। वे मन के बंधन से बंधे रहते हैं। ऐसे लोगों को बार-बार मरना व जन्म ड़ता है। बाह्याचारों से मुक्ति सम्भव नहीं है।

विशेष—प्रस्तुत पद में बाहरी आडम्बरों की निन्दा व योगियों, नाथ , सिद्धों मूर्ति पूजक ब्राह्मणों, वेद-शास्त्रों और गीता की झूठी उक्ति कहने उपदेशकों पर व्यंग्य किया गया है तथा भक्ति के सहज मार्ग का उल्लेख गया है।

(21)

पंडित बाद बदै सो झूठा ।

राम के कहे जगत गति पावै खांड कहे मुख मीठा ।।
पावक कहे पांव जो दाहै जल कहे तृषा बुझाई ।
भोजन कहे भूख जो भागै तो दुनिया तरि जाई ।।
नर के संग सुवा हरि बोलै, हरि प्रताप नहिं जानै ।
जो कबहूं उडि जाय जंगल को तो हरि सुरति न आनै ।।

बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु नाम लिए का होई।
धन के कहे धनिक जो हो तो निरधन रहत न कोइ ।।
सांची प्रीत विषय माया सों हरि भगतन की हाँसी।
कह कबीर एक राम भजे बिन बाँधे जयपुर जासी ।।

शब्दार्थ—याद बदैं=बहस करें, तर्क देते हैं। पावक=आग। दा
जाना। तृखा=प्यास। सुवा=तोता। सुरति न आनै=स्मरण नहीं क
परस=स्पर्श। निरधन=निर्धन, गरीब। जमपुर जासी=यमलोक जायेंगे

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधर'
लित कबीर के काव्य से उद्धृत है। इसमें कबीर ने राम को जाने बिन
नाम उच्चारण की निरर्थकता का वर्णन किया है।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि प्रेम के अभाव में केवल राम-नाम
मुक्ति हो जाती है, यह असत्य है। पंडित लोग कहते हैं कि राम का नाम
व्यक्ति संसार-सागर से पार हो जाता है, यह झूठ है। राम नाम के उ
मात्र से संसार को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है और न ही शक्कर का न
मात्र से हमारा मुँह मीठा होता है, जिस प्रकार मुँह शक्कर खाने से मीठ
है, उसी प्रकार ईश्वर से प्रेम करने पर ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है
आग शब्द के कहने मात्र से ही पाँव (पैर) जल जावें, पानी कहने मात्र से
बुझ जावे और भोजन के उच्चारण से ही व्यक्ति की भूख शान्त हो
राम का नाम लेने से ही सबका उद्धार हो जावे। पर भला यह कैसे सम
सकता है?

मनुष्य के साथ-साथ तोता भी भगवान का नाम बोलता है, प
भगवान की महिमा व गुणों को नहीं जानता। इसलिए यदि कभी वह
निकलकर जंगल में उड़कर चला जाता है तो फिर कभी भगवान का
स्मरण नहीं करता है या उसे भगवान् का नाम स्मरण होता ही नहीं
विकता यह है कि वह उस नाम की महिमा को जानता ही नहीं यदि ज
जंगल में जाकर भी वह भगवान का नाम स्मरण करता। वस्तुतः राम क
बिना और उससे प्रेम के अभाव में केवल नाम उच्चारण से ही हमार
सम्भव नहीं है। धन का नाम लेने से कोई कभी धनवान नहीं हो जात
ऐसा होता तो कोई भी निर्धन नहीं रहता। उसी प्रकार केवल नाम स्मर
उद्धार होता तो सभी लोग मुक्ति को सहज में ही प्राप्त कर लेते। आस
यह है कि ऐसे लोगों का भगवान से सच्चा प्रेम होता ही नहीं। उनका
केवल सांसारिक विषयों और मोह-माया से होता है और वे भगवान के
हँसी उड़ाते है। कबीर कहते है कि जो राम से प्रेम नही करते, वे कर्म

मृत्यु लोक को प्राप्त करेंगे तथा उन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी। मुक्ति के लिए न से सच्चा प्रेम होना आवश्यक है।

विशेष—1. इस पद में कबीर ने दृष्टान्त अलंकार का स्वाभाविक प्रयोग अपनी अनुभूतियों को प्रामाणिक शिल्प में बांधकर प्रस्तुत किया है।

2. कबीर का आग्रह सच्ची भक्ति पर था। वे बाह्याचारों और मिथ्या- ों के विरोधी थे। मन की समर्थता साध्य को समझने में है। ज्ञान के अभाव क्ति सम्भव नहीं है।

(22)

झीनी-झीनी बीनी चदरिया।
काहे कै ताना काहे कै भरनी कौन तार से बीनी चदरिया।
इंगला पिंगला ताना भरनी सुषमन तार से बीनी चदरिया।
आठ कमल दल चरखा डोले पाँच तत्त गुन तीन चदरिया।
साँई को सियत मास दस लागे, ठीक ठीक कै बीनी चदरिया।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ि, ओढ़ि कै मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया।

शब्दार्थ—झीनी-झीनी=महीन और बारीक। बीनी=बनी हुई। ी=धागा भरने का यन्त्र। गुण तीन=अर्थात् तीन गुण सत्, रज और तम्। त=सीने में। ज्यों की त्यों=जैसे की तैसे। धरि दीनी=रख दी।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद सन्त कवि कबीर की लाक्षणिक शैली का सुन्दर उदा- ण है। इसमें सांग रूपक के माध्यम से कवि ने शरीर रूपी चादर की रचना वर्णन किया है।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि मानव शरीर रूपी इस चादर को परमात्मा ने न्त कोमल और बारीक बनाया है। इसे देखकर कबीर प्रश्न करते हैं कि र के बुनने में तो ताना, बाना और धागा भरने के यन्त्र का उपयोग होता है तो शरीर की रचना में निराकार ब्रह्म ने किस ताने-बाने और भरना का उपयोग ा है। वस्तुतः इसका ताना-बाना और धागा क्रमशः इडा, पिंगला और सुषुम्ना क नाड़ियों से बनाया गया है। इसमें आठ पंखुडियों वाला कमल दल ही ता है, पाँच तत्त्व अग्नि, जल, वायु, आकाश और पृथ्वी ही पांच खूंटियाँ हैं सत्, रज, तम् रूपी तीनों गुणों की माल (रस्सी) है। इसी की सहायता से शरीर रूपी वस्त्र के लिए धागा बनाया गया है। इस अद्भुत धागे से बुनी इस चादर को सीकर तैयार करने में विधाता को दस माह का समय लगा -तब यह चादर ठीक-ठीक से बन पाई है। विधाता द्वारा निर्मित इस चादर

को देवता, मनुष्य और मुनि सभी ओढ़ते हैं अर्थात् सभी को शरीर
करना पड़ता है। इन्होंने इस चादर को ओढ़ने में जरा भी सावधानी
और इसे ओढ़-ओढ़ कर खूब मैली या गन्दी कर दी है। भाव यह है कि
माया जनित विकारों के वशवर्ती होकर इसे अपवित्र बना दिया है परन्तु
के दास इस कबीर ने इस चादर को ऐसे यत्न से ओढ़ा है कि उस पर त
मैल नहीं लगा है। उन्होंने इसे जीवन के अन्तिम क्षणों में उसी पवित्र औ
रूप में छोड़ा है जैसी स्वच्छ और पवित्र यह उन्हें जन्म के समय प्राप्त हुई

विशेष—(1) प्रस्तुत पद में रूपक अलंकार का सार्थक प्रयोग हुआ
(2) शैली में प्रतीकात्मकता और लाक्षणिकता है जो कबीर
विशिष्टता है।

(23)

सन्तों भाई आई ग्यान की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उडांणी, माया रहै न बाँधी रे।
दुचिते की दोई थूनीं गिरानी, मोह बलीड़ा टूटा।
त्रिस्ना छानि परी घर ऊपरि कुबुधि का भाँडा फूटा।
जोग जुगति करि संतौ बाँधी, निरचू चुवै न पाणी।
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जांणी॥
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरी जन भींना।
कहै कबीर भान के प्रगटें, उदित भया तम षींना॥ (Imp
(राज. वि

शब्दार्थ—टाटी=टट्टी, छप्पर। उडांणी=उड़ गई। थूनी=छ
रोकने के खम्बे। बलीड़ा=छप्पर को मजबूत करने के लिए उसके सिरे पर
जाने वाला फूँस का लम्बा-लम्बा भाग। कुबुधि=कुबुद्धि। निरचू=ले
भी। बूठा=बरसा। भान=भानु, सूर्य। षीना=क्षीण, पतला।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद महात्मा कबीर के अत्यन्त लोकप्रिय और प्रसि
में से एक है। उसमें कवि ने ज्ञानोदय होने पर भ्रम के निवारण का प्रभा
वर्णन किया है।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि हे सन्तों! ज्ञान की आँधी आई जिससे
बन्धनों से बंधी भ्रम की छपरिया उड़ गई। ज्ञान के आते ही माया दुम द
भाग गई। वह किसी भी प्रकार रोकने से नहीं रुकी। ज्ञान का उदय ह
सर्वत्र ज्ञान ही ज्ञान दिखाई देने लगा और जीवात्मा जिन मोह जनित बन्ध
बंधी हुई थी, उनसे मुक्त हो गई। जिस प्रकार आँधी आने पर छोटे-मोटे

ायो हो जाते हैं वैसे ही ज्ञान की आंधी आने पर भ्रम के झोंपड़े और माया हल जमीन पर आ गिरे। ज्ञान प्राप्ति के कारण ही मिथ्या प्रेम जनित ना की थूनियां गिर गईं एवं मोह का बलींडा भी टूट गया। इस प्रकार तृष्णा ान घर-संसार से अलग जा पड़ी तथा कुबुद्धि का भेद खुल गया कि वह गलत मार्ग पर थी। भाव यह है कि जब तक जीवात्मा को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी तभी तक वह कामनाओं के छप्पर के नीचे रहती थी किन्तु ज्ञान की ब्धि के साथ ही तृष्णाओं का छप्पर भी नीचे आ गिरा। सभी कामनाएँ और ाएँ उसी के साथ नष्ट हो गई।

हे सन्तो! जीवात्मा ने यह छप्पर बड़े यत्नपूर्वक बांधा था जिससे कि ज्ञान एक बूँद भी इसमें न पड़ सके किन्तु ज्ञान की इस आंधी ने इसे उड़ाकर शरीर ापों रूपी कूड़े को निकाल बाहर किया। इस आंधी के पश्चात् प्रभु भक्ति के जल की वर्षा हुई उसमें सभी हरि भक्त भीग गये। कबीर कहते हैं कि इसी र ज्ञान रूपी सूर्य के उदित होते ही अज्ञानान्धकार विदीर्ण हो गया, छंट । भाव यह कि ज्ञान के सूर्य ने उदित होकर मोह जनित अज्ञान और विषय नाओं के अन्धकार को नष्ट कर दिया। इससे आत्मा निर्मल, उज्ज्वल और त्र हो गई।

विशेष—कबीर के इस पद में सांगरूपक और रूपकातिशयोक्ति अलंकारों सार्थक एवं सुन्दर प्रयोग हुआ है। सरल भाषा में ज्ञान के प्रभाव की हृदयग्राही ख्या कबीर जैसे सिद्ध सन्त से ही सम्भव थी।

2. मलिक मुहम्मद जायसी

प्रेम-खण्ड

(24)

सुनतहि राजा गा मुरछाई। मानौं लहरि सुरुज कै आइ॥
प्रेम भाव दुख जान न कोई। जेहि लागै जानै तै सोई॥
परा सो पेम समुद्र अपारा। लहरहिं लहर होई विसँभारा॥
बिरह भौंर होइ भाँवरि देइ। खिन खिन जीउ हिलोरा लेई॥
खिनहिं उसास बूढ़ि जिउ जाई। खिनहिं उठै निसरै बौराई॥
खिनहिं पीत, खिन होइ मुख सेता। खिनहिं चेत, खिन होइ अचेता॥
कठिन मरन तें प्रेम बेवस्था। ना जिउ जियै, न दसवँ अवस्था॥
जनु लेनिहार न लेहिं जिउ, हरहिं तरसहिं ताहि॥
एसनै बोल आव मुख, करैं 'तराहि तराहि'॥1॥

शब्दार्थ—लहरि सुरुज कै=सूर्य की लहर, लू का झोंका। विसंभरा= ुत। भांवरि=चक्कर/बेवस्था=अवस्था। दसवँ अवस्था=मृत्यु। लेनिहार= वाले, प्राण निकालने वाले यमदूत। तराहि-तराहि=त्राहि-त्राहि।

प्रसंग—यह पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधर' लित महाकवि जायसी के 'पद्मावत' नामक प्रबन्ध काव्य के 'प्रेमखण्ड' से है। जब हीरामन तोते ने राजा रतनसेन के समक्ष पद्मावती के अनुपम का वर्णन किया तो उसे सुनकर राजा मूर्च्छित हो गया। यहाँ पर राजा की इसी अचेत अवस्था का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—हीरामन तोते से रानी पद्मावती का नख-शिख सौन्दर्य राजा मूर्छित हो गया, मानो सूर्य की लहर आ गई हो। अर्थात् वह इस अचेत हो गया जैसे उसे लू लग गई हो। प्रेम के घाव का दुःख कोई नहीं ज जिसे घाव लगता है, वही जानता है। वह रतनसेन प्रेम के अपार समुद्र गया था और लहर पर लहर आने से बेसुध होता जाता था। उसका विरह की तरह उसे घुमा रहा था, जिसके कारण क्षण-क्षण में उसका जीव हिलो था अर्थात् बाहर और भीतर आता और जाता था। वह क्षण भर में बिन के हो जाता था और जी डूब जाता था। फिर दूसरे क्षण में बौराकर नि छोड़ने लगता था। उसका मुख क्षण में पीला और क्षण में श्वेत हो जात उसे एक क्षण में चेत होता और दूसरे में वह अचेत हो जाता था। प्रेम की मरने से भी कठिन होती है क्योंकि उसमें प्राण न तो जीता है और न ही होती है।

मानो यमराज के दूत उसके प्राण निकालकर हर रहे हों और उ रहे हों। उसके मुँह से तनिक-सा बोल भी नहीं निकलता था। वह केवल त्राहि-(बचाओ-बचाओ) चिल्ला रहा था।

विशेष—(1) जायसी के इस काव्यांश में प्रेम-मार्ग की प्रथम अवस्थ अर्थात् 'उन्माद' की दशा का सुन्दर चित्रण हुआ है।

(2) प्रेम विरह के संचारी भावों का चित्रण मनोरम शैली में हुआ

(3) तुलना कीजिए—

घायल की गति घायल जान, कै जो घायल होय।। मीराबाई

(24)

सबन्ह कहा मन समुझहु राजा। काल सेंति कै जूझ न छाजा।।
तासौं जूझ जात जो जीता। जानत कृष्ण तजत गोपीता।।
और न नेह काहू सौं कीजै। नाँव मिटै, काहे जिउ दीजै।।
पहिले सुख नेहहिं जब जोरा। पुनि होय कठिन निबाहत ओरा।।
अहुठ हाथ तन जैस सुमेरू। पहुँचि न जाइ परा तस फेरू।।
ज्ञान दिष्टि सौं जाइ पहुँचा। पेम अदिस्ट गगन तें ऊँचा।।

धुव तें ऊँच पेम धुव ऊआ। सिर देइ पाँव देइ सो छुआ ।।
तुम राजा औ सुखिया, करहु राज सुख भोग।
एहि रे पंथ सो पहुँचै, सहै जो दुःख वियोगा। (Imp.)

शब्दार्थ—सबन्ह=सभी ने। काल सेंति कै=काल या मृत्यु को समझकर तासों=उससे। नेहहिं जब जोरा=पहले पहल जब प्रेम जुड़ता है। हत=निर्वाह करते समय। अहुठ=साढ़े तीन। दिष्टि=दृष्टि। पेम धुव =प्रेम का ध्रुव तारा उदित होता है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधर' में लित मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' के 'प्रेम खण्ड' से त है। इसमें विरह व्यथित राजा रत्नसेन को उसके सभासद समझा रहे हैं आपको इस तरह का आचरण नहीं करना चाहिए। प्रेम का मार्ग अत्यन्त न और अगम्य होता है।

व्याख्या—सभी सभासदों ने राजा को समझाते हुए कहा, हे राजन! मन वचारकर देखो। काल की शक्ति से लड़ना शोभा नहीं देता। युद्ध उसी से रहता है जिसे जीतने की आशा हो। यदि ऐसा न होता तो कृष्ण भी यों को न छोड़ जाते अर्थात् कृष्ण में गोपियों से जूझने की शक्ति न थी। लिए वे उन्हें छोड़कर चले गये थे। फिर किसी से प्रेम भी नहीं करना हिए क्योंकि प्रेम का नाम मधुर है, पर उसको (प्रेम फल) खा लिया जाये तो देना पड़ता है। जब प्रेम जोड़ते हैं तो पहले सुख मिलता है, पर उसे अन्त तक हना बड़ा कठिन हो जाता है। साढ़े तीन हाथ का यह शरीर सुमेरू जैसा है। में इतना फेर पड़ा है, इतना घुमाव है कि पहुँचा नहीं जाता। आकाश में दृष्टि ने से सुमेरु पर पहुँचा जा सकता है, किन्तु प्रेम दृष्टि में नहीं आता; वह काश से भी ऊँचा है। प्रेम तो ध्रुव से भी अधिक दृढ़ और ऊँचा है, जो व्यक्ति के बल इस मार्ग पर चलने की क्षमता रखता है वही इस प्रेम रूपी ध्रुव को कर पाने में समर्थ होता है।

अन्त में कवि जायसी कहते हैं कि हे राजा! तुम राजा हो और सुखी हो र्थात् सुख से रहने के अभ्यस्त हो। अतः अपने राजसुख का भोग करो। इस मार्ग पर तो वही सफल होता है जो वियोग और कष्ट सहने की क्षमता ता है।

विशेष—उक्त काव्यांश में प्रेम की अगम्यता और प्रेम मार्ग की कठिनता वर्णन रहस्यवादी शैली में किया गया है। 'पेम ध्रुव' रूपक अलंकार का दर्य दृष्टव्य है।

(26)

का भा जोग कवनि के केथे । निकसै घिउ न बिना दधि मथे ।
जो कहि आप हेराइ न कोई । तौ कहि हेरत पाव न सोइ ।
पेम पहार कठिन विधि बढ़ा । सो पै चढ़ै जो सिर सौं चढ़ा ।
पंथ सूरि कै उठा अंकूरू । चोर चढ़ै, की चढ मंसूरू ।
तू राजा का पहिरसि कंथा । तोरे घरहि माँझ दस पंथा ।
काम, क्रोध, तिस्ना, मद, माया । पाँचों चोर न छाँड़हि, काया ।
नव सेंख तिन्ह कै दिठियारा । घर मूसहि निसी, की उजियारा ।

अबहू जागु अजाना, होत आव निसि भोर ।
तब किछू हाथ न लागिहिं, मूसि जाहि जब चोर ॥6॥

शब्दार्थ—कथे=कहने से । घिउ=घृत, घी । हेराई=खोना । अंकुर । मंसूरु=प्रसिद्ध सूफी सन्त मंसूर जो अनहलक का जाप करते हुए के खलीफा मुक्तदिर की आज्ञा से सूली पर चढ़ा दिया गया । पहिरसि नोगे । कंथा=कंथरी । दस पंथा=नौ चक्र और दसवाँ गुप्त रन्ध्र जो के मूलाधार चक्र से आरम्भ करके सुषुम्ना में होता हुआ ब्रह्म रन्ध्र तक काया=शरीर । नव सेंध=नव इन्द्रिय द्वार । दिठियारा=देखी हुई । प्रातःकाल ।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन काव्य कल उद्धृत है । इसके रचयिता प्रसिद्ध प्रेममार्गी कवि मलिक मुहम्मद जाय इसमें हीरामन तोता राजा रत्नसेन को प्रेम की गरिमा और उसकी स का वर्णन करता है ।

व्याख्या—हीरामन कहता है कि हे राजा ! योग की कहानी कहने लाभ ? दही को मथे विना घी नहीं निकलता । जब तक कोई स्वयं नहीं खो तब तक जिसे ढूंढ़ता है, उसे नहीं पाता । विधाता ने प्रेम का पर्वत कठिन है । वही उस पर चढ़ सकता है जो सिर के बल चढ़ता है । भाव यह है पर्वत की चढाई असाधारण होती है । इस पर वही चढ़ सकता है जो सांस का सर्वथा त्याग कर देता है ।

हीरामन कहता है कि प्रेम का मार्ग सूली का मार्ग है । उस पर स्थान पर सूलियों के अंकुर निकले हैं । या तो चोर ही उन सूलियों पर या मनसूर चढ़ा था । तू राजा है । कथरी क्यों पहनता है ? तेरे अपने ही दस मार्ग हैं । काम, क्रोध, तृष्णा, मद और माया ये पाँचों चोर तेरे श

ी छोड़ते । इस घर में नौ सेंध (इन्द्रिय द्वार) हैं, जिनमें घुसकर चोर दिन और त घट को लूटते हैं ।

हे बेसमझ (अयाने) राजा ! तू अब भी जाग । अब तो बिलकुल सवेरा ता आ रहा है, जब चोर तुम्हारे समस्त घर को लूट लेंगे (तब सिवा पछताने कुछ हाथ न लगेगा । भाव यह है कि अभी भी समय है कि ज्ञान प्राप्त कर ना उद्धार कर ले और इन्द्रियों की वशवर्तिता छोड़ दे ।

विशेष—(1) प्रस्तुत अवतरण में प्रेम मार्ग की कठिनता का उल्लेख ा है । प्रेम के मार्ग पर चलना सहज नहीं है । बिना कठोर साधना के सिद्धि हीं मिलती ।

(2) 'पद्मावत' में हीरामन गुरु है जो राजा रत्नसेन से प्रेम मार्ग की धाओं का उल्लेख कर रहा है । गुरु अपने शिष्य की संकल्पनिष्ठा का आभास र उसे प्रेम मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है ।

(27)

सुनि सो बात राजा मन जागा । पलक न मार, पेम चित लागा ।।
नैनन्ह ढरहिं मोति औ मूँगा । जस गुर खाइ रहा होइ गूँगा ।।
हिय कै जोति दीप वेह सूझा । यह जो दीप अँधियारा बूझा ।।
उलटि दीठि माया सौं रूठी । पलटि न फिरी जानि कै झूठी ।।
जौ पै नाहीं अहथिर दसा । जग उजार का कीजिय बसा ।।
गुरू बिरह चिनगी जो मेला । जो सुलगाइ लेइ सो चेला ।।
अब करि फनिग भृंग कै करा । भौंर होहुँ जेहि कारन जरा ।।
फूल फूल फिर पूछौं, जा पहुँचौं ओहि केत ।
तन नेवछावरि कै मिलौं, ज्यों मधुकर जिउ देत ।।7।। (Imp.)

शब्दार्थ—गुर=गुड़ । दीप=दीपक, पद्मावती या सिंहल द्वीप । हथिर=स्थिर । उजार=उजाड़ । फनिग भृंग कै करा=जब कोई किसी के ान में तन्मय हो जाय और अपने आपको सर्वात्मना उसमें लीन कर दे, तो की उपमा भृंगी कीट से दी जाती है । केत=केतकी अथवा तुलना । छावरि=न्योछावर । जिउ=प्राण ।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी के 'प्रेम खण्ड' अवतरित है । हीरामन तोते के समझाने से राजा को ज्ञान होता है । ज्ञान

प्राप्त होने के बाद दिव्य प्रेम से पीड़ित साधक की अवस्था का वर्णन
गया है।

व्याख्या—हीरामन तोते की ज्ञान भरी बातें सुनकर राजा रत्नसे
हुआ। वह राजा प्रेम की अनन्य अवस्था में पहुँच गया था। दिव्य
लवलीन होने के कारण राजा पलक तक नहीं मार रहा था। उसके नेत्र
और मूंगे (आंसू और रक्त बिन्दु) झर रहे थे। उसकी ऐसी अवस्था
कोई गुड़ खा लेने से गूँगा हो गया हो अर्थात् स्वाद ले चुका हो पर क
रहा हो। उसे हृदय के प्रकाश में उस दीपक रानी पद्मावती के दर्शन
जिससे यह भौतिक जगत राजा को अन्धकारपूर्ण दिखाई देने लगा। उ
अन्तर्मुखी हो गई और माया से रूठ गई और फिर सांसारिक माया
समझकर वह इस ओर नहीं फिरी। वह सोचने लगा, यदि संसार की
स्थिर नहीं है तो इस उजाड़ संसार में रहने से लाभ ही क्या? सच्चा
जो अपने शिष्य के चित्त में इस अग्नि को प्रज्वलित कर देता है, प
पक्का शिष्य भी वह है जो इस अग्नि को सुलगा लेता है अथवा
रखता है। राजा मन ही मन विचार करने लगा कि अब पतिंगे और
कला करके मैं उसके लिए भौंरा बनूंगा जिसके कारण विरहाग्नि
रहा हूँ।

राजा ने मन ही मन निश्चय किया कि मैं एक-एक फूल के पा
उसका पता पूछूँगा। यदि उस केतकी (रानी पद्मावती) के पास पहुँच
अपना शरीर देकर भी उससे मिलूँगा जैसे भौंरा उससे छिदकर प्राण देत

विशेष—(1) सूफी साधना में गुरु को विशेष महत्त्व दिया गया
का महत्त्व जायसी ने भी यहाँ स्पष्टतः स्वीकार किया है।

(2) **कनिग भृंगी के करा**—मादा भृंगी पतिंगे को डंक मारक
कर देती है और उसी के शरीर पर अपने अण्डे देती है। कुछ समय
निकलकर उस कीड़े के शरीर को खाकर बढ़ते रहते हैं और उसकी ठठरी
उड़ जाते हैं। इसी आधार पर यह लोक धारणा बनी कि वह मूर्च्छित
भृंगी रूप हो जाता है।

(3) उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकार का सहज प्रयोग हुआ है।

(28)

कही रोई पदमावती बाता। नैनन्ह रकत दीख जग जा

उथल समुद जब मानिक भरे। रोइसि रुहिर आँसु तस ढरे॥
रतन के रंग नैंन पै वारौं। रति रति कै लोहू ढारौं॥
भँवरा ऊपर कँवल भवावौ। लेइ चलु तहाँ सूर जहँ पावौ॥
हिय के हरदि बदन कै लोहू। जिउ बलि देउं सो संवरि बिछोहू॥
घरहि आँसू जस सावन नीरू। हरियरि भूमि, कुसुंभी चीरू॥
चढ़ी भुअंगिन लट लट केसा। भइ रोवति जोगिन के भेसा॥
वीर बहूटी भई चली, तबहुँ रहहिं नहिं आँसु।
नैंबहि पंथ न सूझै, लागेउ भादौं मासु॥ (Imp.)

शब्दार्थ—दीख = दिखाई पड़ा। उथल = उमड़ता है। भवांवौ = चक्कर ाऊँगी। सूर = सूर्य, रत्नसेन। हरदि = हल्दी। बदन = मुख। संवरि = स्मरण । वीर बहूटी = इन्द्रवधू, वीरांगना।

प्रसंग यह पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधर' से धृत है। कवि मलिक मुहम्मद जायसी विरचित महाकाव्य 'पद्मावत' के द्मावती-गोरा-बादल संवाद खण्ड' से यह पद लिया गया है। पद्मावती, गोरा दल के पास जाती है और उनसे अपनी करुण गाथा कहती है कि पति वियोग वह कैसी हो रही है। कवि ने प्रस्तुत अंश में पद्मावती के मनोभावों का बड़ा आलंकारिक शब्दों में वर्णन किया है।

व्याख्या—जब गोरा-बादल ने पद्मावती से उनके घर आने का कारण ा तो उसने रो-रोकर सब समाचार सुनाया। उस समय उसके नेत्रों में रक्त के सू देखकर संसार भी लाल हो गया। उसके रोने से रक्त के आँसू इस प्रकार र रहे थे जिस प्रकार समुद्र अपने भीतर भरे हुए माणिक्यों को उलीचता है। ने कहा कि मैं रत्नसेन के प्रेम में अपने नेत्रों को न्यौछावर कर दूँगी और -बूँद कर अपने समस्त रक्त को बहा दूँगी। मैं अपने नेत्र रूपी कमलों पर से ली रूपी भौंरों को उड़ाकर वहाँ भेजूँगी जहाँ वह सूर्य रत्नसेन है। उस प्रियतम वियोग का स्मरण करती हुई मैं हृदय का केसरिया बाना करके और मुँह को रू बनाकर अपना प्राण न्यौछावर कर दूँगी।

कवि जायसी लिखते हैं कि प्रिय वियोग में उसके आँसू ऐसे गिर रहे थे सावन में मेह बरसता है। उससे भूमि हरी होती है और इससे तन का चीर भी बन रहा था। उस समय उसके सिर के बालों की लटें साँपों की तरह लोट थी और उस रुदन में उसका भेष जोगिन का बन गया था।

कवि कहता है कि उस रानी के रक्त आँसू पृथ्वी पर गिरने से
बहूटियाँ रेंगने लगीं। तब भी उस वीरांगना के आँसू रुकते न थे। ने
नहीं सूझता था। भादों मास की वृष्टि की भाँति नेत्रों से आँसुओं की
थी।

विशेष—(1) उपमा, रूपक एवं प्रतीय अलंकारों का स्वाभावि
हुआ है। भाषा प्रसाद गुण सम्पन्न और मधुर है।

(2) पद्मावती के आत्म निवेदन में मार्मिकता और भावुकता व

(29)

लीन्ह पान बादल औ गोरा। केहि लेइ देऊँ उपम तुम्ह जोरा
तुम सावंत, न सरवरि कोऊ। तुम्ह हनुवंत अंगद सम दो
तुम अरजुन औ भीम भुवारा। तुम बल रन दल मंडन हा
तुम टारन भारन्ह जग जाने। तुम सुपुरुष जस करन बखा
तुम बलवीर जैस जगदेऊ तुम संकर औ मालकदे
तुम अस मोरे बादल गोरा। काकर मुख हेरों, बंदिछोरा
जस हनुवंत राघव बंदि छोरी तुस छोरि मेरावहु जो

जैसे जरत लखाधर, साहस कीन्हा भीउँ।
जरत खंभ तस काढ़हु, के पुरुषारथ जीउ॥

शब्दार्थ—लीन्ह पान=पान लेना, किसी गुरुत्तर कार्यभार का
लेना। उपम=उपमा, तुलना। सरवरि—समान। भुवारा=भूपाल
जगदेऊ=जाग और जयदेव। लखाधर=लाक्षागृह। भीउँ=भीम। खभ
राजा रत्नसेन।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यावतरण महाकवि जायसी विरचित 'प
प्रबन्ध काव्य के 'गोरा-बादल संवाद खण्ड' से उद्धृत है। इस पद्य
पद्मावती गोरा-बादल को अनेक प्राचीन कथाएँ सुनाकर उत्साहित कर
जिससे वे उसके पति राजा रत्नसेन को अलाउद्दीन की कैद से छुड़ा
सकें।

व्याख्या—रानी की दीन दशा देखकर बादल और गो
हो गये और उन्होंने राजा को छुड़ाने का बीड़ा स्वीकार कर
यह देखकर रानी प्रसन्न हुई और उसने कहा कि मैं तुम्ह

व्याख्या—रानी की दीन दशा देखकर बादल और गोरा द्रवित हो गये और ...ने राजा को छुड़ाने का बीड़ा स्वीकार कर लिया यह देखकर रानी प्रसन्न हुई ... उसने कहा कि मैं तुम्हारी इस जोड़ी की उपमा किस से दूँ ? सामन्तों में ...रे समान कोई दूसरा नहीं है। तुम दोनों बल में हनुमान और अंगद के समान ... तुम वीर वर अर्जुन और भीम के समान हो और रण में शत्रु दल का नाश ... वाले हो। तुम दूसरे का भार (दुःख) हटाने में जग विख्यात हो। तुम कर्ण ...मान सुपुरुष हो। तुम दल के निधान जगदेव के समान हो। तुम साक्षात शिव ... मालक देव के समान हो। हे बादल और गोरा जब तुम्हारे जैसे वीर और ...क्रमी व्यक्ति मेरे सामन्त हैं तब मैं अपने स्वामी को बन्धन मुक्त कराने के लिए ...का मुंह देखूंगी ? जैसे हनुमान ने श्री राम को बन्धन मुक्त करवाया था वैसे ...म राजा को छुड़वाकर हम दोनों को मिलवाओगे।

जैसे जलते हुए लाक्षागृह में भीम ने साहस किया था और अपने भाइयों ... मां को सुरक्षित बाहर निकाल लिया था, उसी प्रकार तुम भी साहस कर ... हुए खम्भे (राजा रत्नसेन) को जान पर खेल कर अलाउद्दीन खिलजी के ...गृह से निकाल लाओ।

विशेष—अनुप्रास, उपमा एवं रूपक अलंकार की छटा दृष्टव्य है।

(30)

गोरा बादल बीरा लीन्हा। जस हनुवंत अंगद बर कीन्हा॥
सजहु सिंघासन, तानहु छातू। तुम्ह माथे जुग-जुग अहिवातू॥
कंवल चरन भुइ धरि दुख पावहु। चढ़ि सिंघासन मंदिर सिधावहु॥
सुनतहि सूर कंवल हिय जागा। केसरि वरन फूल हिय लागा॥
जनु निसि महं दिन दीन्ह देखाई। भा उदोत, मसि गई विलाई॥
चढ़ी सिंघासन झमकती चली। जानहु चांद दुइज निरमली॥
औ संग सखी कुमोद तराई। ढारत चंवर मंदिर लेई आई॥
देखी दुइज सिंघासन, संकर धरा लिलाट।
कंवल चरन पदमावती, लेई बैठारी पाट॥

शब्दार्थ—बर=बल। अहिवातू=सुहाग, सौभाग्य। मन्दिर=राजमहल। ...=सिंघासन। चरन लै=चरन स्पर्श करना। निरमली=निर्मल ज्योति।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधर' से ...त है। मलिक मुहम्मद जायसी कृत महाकाव्य 'पद्मावत' 'पद्मावती गोरा-...संवाद-खण्ड' से लिया गया है। गोरा-बादल महारानी पद्मावती के मुख ...की विरह-व्यथा सुनकर प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने शरीर में प्राण रहने तक ... रत्नसेन को अवश्य सकुशल लायेंगे।

व्याख्या—गोरा-बादल ने बीड़ा ले लिया। जैसे अंगद और हनुमान काज के लिये किया थ, वैसे ही उन्होंने भी भार ग्रहण कर लिया। अर्थात् भी अंगद और हनुमान की तरह अपने बल का प्रदर्शन किया। वे बोले लिए सिंघासन सजाकर उस पर छत्र तानेंगे। तुम्हारे माथे पर युग-युग तक सुख रहेगा। अपने चरण कमल पृथ्वी पर रखकर तुमने दुःख पाया सिंघासन पर चढ़ो और अपने राजमन्दिर को प्रस्थान करो। सूर्य (रत्न नाम सुनकर कमल पद्मावती का हृदय प्रसन्नता से खिल गया। उन दोनों वाक्य केसरिया रंग बनकर उसके हृदय में लग गया। जैसे रात में सूर्य वि गया हो, इस प्रकार का उजाला हो गया और कालिमा मिट गई। वह सिंघ चढ़कर प्रकाश फैलाती हुई चली मानो दोयज का निर्मल चन्द्रमा हो कुमुदिनी और तारों के समान सखियां चंवर ढुलाती हुई रानी को र में ले आई।

दोयज के चन्द्रमा के समान निर्मल उस रानी पद्मावती को सिंघ बैठे देखकर शंकर ने द्वितीया के चन्द्रमा को अपने ललाटरूपी आसन दिया। अर्थात् सुन्दरता की मूर्ति पद्मावती को सिंघासन पर बैठे देखकर उसके रूप पर ऐसे मोहित हो गए कि उसी के समान द्वितीया के चन्द्रमा मस्तक पर स्थान देकर मानो उन्होंने उसकी प्रतिमूर्ति कल्पित की। पद् कमल रूपी चरणों का स्पर्श करके सखियों ने उसे पाट पर बैठाया। अर्थ बादल की भेंट के अनन्तर सखियों ने पहली बार पद्मावती को राज पद कर उसकी अभ्यर्थना की।

विशेष :—(1) रूपक, उत्प्रेक्षा अलंकार और भ्रान्तिमान अलंकार स्वाभाविक रूप से हुआ है।

(2) 'केसरी वरन फूल हिय लागा" अर्द्धाली में कवि व्यंज पद्मावती का हृदय कमल रत्नसेन के प्रति प्रेम पराग से परिपूर्ण हो ग

3. गोस्वामी तुलसीदास

(केवट प्रसंग)

(31)

प्राननाथ प्रिय देवर साथा। बीर धुरीन धरें धनु भाथ
नहिं मग श्रमु भ्रमु दुख मन मोरें। मोहि लगि सोचु करिअ जनि भो
सुनि सुमंत्रु सिय सीतलि बानी। भयउ बिकल जनु फनि मनि हा
नयन सूझ नहिं सुनइ न काना। कहि न सकइ कछु अति अकुला
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भांती। तदपि होति नहिं सीतलि छाती

जतन अनेक साथ हित कीन्हे। उचित उतर रघुनन्दन दीन्हे ।।
मेटि जाइ नहिं राम रजाई। कठिन करम गति कछु न बसाई ।।
राम लखन सिय पद सिरु नाई। फिरेउ बनिक जिमिक मूर गवांई ।।
रथु हांकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देखि निषाद बिषादबस धुनहिं सीस पछितांहिं ।।

शब्दार्थः—बीर धूरीन=वीर पुरुषों में श्रेष्ठ। धनु=धनुष। मग श्रमु=मार्ग …थकावट। जनि=नहीं। भोरें=भूलकर भी। फनि=सर्प। प्रबोधु=ज्ञान देना, …भाना। रजाई=आज्ञा। नाई=नवाकर। मूर गवांई=मूल धन को भी खोकर। …=घोडे। पछितांहिं=पछताते हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश रामचरित मानस के अयोध्या काण्ड में आये केवट प्रसंग …लिया गया है। इस अंश में वनवास के समय जब श्री राम गंगा किनारे पहुँचे …मंत्री सुमन्त को लौटाते समय सीता अपने मनोगत भाव प्रकट करती हुई राम …थ वन जाने के औचित्य का उल्लेख कर यह कथन कहती है।

व्याख्या—सीता ने विनय पूर्वक मधुर वाणी में मंत्री सुमन्त से अपनी …ति स्पष्ट करते हुए कहा, हे पितृव्य, आप मेरी जरा भी चिन्ता न करें। …कि मेरे साथ वीरों में धुरंधर और धनुषबाण लिये हुए मेरे प्रिय प्राणनाथ और …रे देवर लक्ष्मण साथ हैं। मेरे मन में न तो रास्ता चलने की थकावट है, न …है, और न ही किसी प्रकार का दुख हो रहा है। अतः आप भूलकर भी मेरे लिए …तप्त न हों। सीता के उक्त वचन सुनकर मंत्री सुमन्त ऐसे विकल हो गये, जैसे …वाले सांप से उसकी मणि ही चली गयी हो। उन्हें ऐसा अहसास होने लगा …उनके नेत्र कुछ देख नहीं रहे हैं और कानों ने सुनना ही बन्द कर दिया है। …हीं कुछ इस प्रकार की व्याकुलता हुई कि वे कुछ कह ही न सके।

मंत्री सुमन्त के इस प्रेम को देखकर श्री राम ने उनको अनेक प्रकार से …झाया, तो भी उनके हृदय को शान्ति नहीं मिली। उन्होंने श्री राम के साथ …ने के लिए अनेक यत्न किये, लेकिन श्री राम ने उनको उचित व अवसरानुकूल …र देकर सन्तुष्ट किया। श्री राम की आज्ञा को टाला नहीं जा सकता। कर्म …ति विचित्र है। उसके समक्ष मानव का कोई वश नहीं चलता। जब सुमन्त जी …हो गये तो वे श्री रामचन्द्र जी, लक्ष्मण जी और माता सीता के चरणों …र नवाकर शृंगवेरपुर लौटे। तो उनकी दशा ठीक वैसे ही थी जैसे कोई …क परदेश में लाभ के लिए जाता है किन्तु लौटते समय उसने अपना मूल धन …वां दिया हो।

वापस चलने के लिए जब सामन्त जी ने रथ को आगे बढाया तो रथ के …श्री राम को देख-देखकर हिनहिनाने लगे। पशुओं का भी ऐसा प्रेम देखकर …द लोग दुख के वशीभूत होकर अपने सिर को पीट-पीटकर पछताने लगे।

विशेष:—चौपाई की तीसरी पंक्ति में उत्प्रेक्षा और अन्तिम पंक्ति मे अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। श्रीराम के प्रति मंत्री, निषाद लोग अ का प्रेम अत्यन्त मार्मिक है।

(32)

जासु बियोग बिकल पसु ऐसें। प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसे।।
बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए।।
माँगी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।।
चरन कमल रज कहुँ सब कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई।।
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।।
तरनिउ मुनि घरनि होइ जाई। बाट परई मोरि नाव उड़ाई।।
एहिं प्रतिपालउं सबु परिवारू। नहिं जानउं कछु अउर कबारू।।
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू।।
छं.—पद कमल धोई चढ़ाई नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब सांची कहौं।।
बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पांय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं।। (I

शब्दार्थ—बिकल = व्याकुल। बरबस = जबरदस्ती। पठाए = भेजा किया। सुरसरी = गंगा। तीर = किनारा। मरमु = मर्म या रहस्य। धूल। सुहाई = सुन्दर। पाहन = पत्थर। काठ = लकड़ी। तरनिउ = नौका घरनि = गृहिणी। बाट परइ = मुहावरा, मेरे निर्वाह का मार्ग बन्द हो कबारू = कार्य। अवसि = अवश्य ही। पखारन = धोने के लिए। राउरि = बरु = चाहें। पै = तथापि।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'प्राचीन काव्य कल संकलित महाकवि तुलसीदास रचित रामचरितमानस में आये केवट अवरित है जब श्री राम वनवास जाते समय गंगा किनारे पर पहुंचते है से गंगा पार करने हेतु नौका लाने को कहते है। केवट श्री राम के चरण को धोये बिना उन्हें नाव पर बैठाने को तैयार नहीं होता। उसने इसके पीछे दिये, उन्हीं का पल्लवन इस अंश में किया गया।

व्याख्या—जब मंत्री सुमन्त रथ को हांकने लगे तो रथ के घोडे भी से वियोग की कल्पना में व्याकुल हो गये। यह देखकर सुमन्त जी ने कहा वियोग में पशु भी ऐसे विकल है, उनके बिना प्रजा, माता, पिता और किस तरह जीवित रहेंगे? श्री राम ने मंत्री सुमंत को जबरदस्ती रवान

... स्वयं सीता व लक्ष्मण के साथ गंगा के किनारे पर आ गये। श्रीराम ने गंगा ...ार उतरने के लिए केवट से नाव मंगवाई। लेकिन वह नाव नहीं लाया और ...य पूर्वक कहने लगा, हे स्वामी, मैंने आपके मर्म को जान लिया है। आपके ...णों की धूल के सम्बन्ध में सभी व्यक्ति जो कहते हैं, वही मैं भी कह रहा हूँ। ... धूल मनुष्य बनाने वाली कोई जड़ी है। इसका स्पर्श पाते ही पत्थर भी सुन्दर ...ी में बदल जाते हैं। फिर मेरी नाव तो लकड़ी की बनी हुई है। हे स्वामी आप ...नते हैं कि काठ पत्थर से कठोर नहीं होता। वह कोमल होता है। यदि मेरी ... भी मुनिपत्नी (अहिल्या) के समान सुन्दर नारी में बदल गयी, तो मैं क्या ...गा ? मैं तो पूरी तरह से लुट जाऊंगा। मेरी तो आजीविका ही समाप्त हो ...येगी। मैं इसी नाव से अपने पूरे परिवार का पालन करता हूँ और इसके अलावा ...ई दूसरा काम-धन्धा भी नहीं जानता हूं। ऐसे में मैं क्या करूंगा ? अतः हे प्रभु यदि ... गंगा पार जाना ही चाहते हैं तो मुझे अपने चरन-कमल धोने का आदेश ...जये मैं आपके चरन-कमलों को धोकर ही आपको अपनी नाव पर चढ़ा लूगां ... गंगा पार करा दूगां। हे स्वामी, मैं आपसे कोई उतराई या पारिश्रमिक भी नहीं ...ां। हे राम मुझे आपकी और महाराजा दसरथ की शपथ है। मैं आपसे सच-सच ...सब निवेदन कर रहा हूँ। यदि लक्ष्मण जी मुझे तीर भी मारे तो मैं आपको ... आपके चरणों को धोये अपनी नाव पर नहीं चढ़ाऊंगा। हे तुलसी के नाथ, ...पालु, हे दयालु मैं आपको किसी भी स्थिति में बिना चरण धोये पार उतारने ... नहीं हूँ। अतः आप मुझें अपने चरण-कमल धोने की आज्ञा दीजिये।

विशेषः—(1) प्रस्तुत काव्यांश में अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि ...कारों का सुन्दर व स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

(2) भाषा शैली में सरसता और मधुरता है। प्रसाद और माधुर्य गुण की ...नता है।

(33)

तब मज्जनु करि रघुकुल नाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा ॥
सिय सुरसरिहि कहेउ कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउबि मोरी ॥
पति देवर संग कुशल बहोरी। आई करौं जेहि पूजा तोरी ॥
सुनि सिय बिनय प्रेम रस सानी। भइ तब बिमल बारि बर बानी ॥
सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही। तब प्रभाउ जग बिदित न केही ॥
लोकप होहिं बिलोकत तोरें। तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें ॥
तुम जो हमहि बड़ि बिनय सुनाई। कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई ॥
तदपि देवि मैं देबि असीसा। सफल होन हित निज बागीसा ॥

दो.—प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ ।
पूजिहि सब मनकामना सुजसु रहिहि जग छाइ ॥

शब्दार्थ—मज्जनु=स्नान । पारथिव=मिट्टी का शिव लिंग । सु
गंगा को । पुरउबि=पूर्ण करें । बिमल = निर्मल, स्वच्छ । लोकप = ल
बागीसा = वाणी । सुजसु = सुयश ।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संकलित '
मानस' के अयोध्या काण्ड से अवतरित है । वन गमन के समय गंगा पार
श्रीराम ने शिव लिंग की और सीता जी ने गंगा की स्तुति की । प्रस्तु
उसी का पल्लवन किया गया है ।

व्याख्या—गंगा पार उतरकर रघुकुल के स्वामी श्रीराम ने स्न
पार्थिव पूजा की और शिवजी को शीश नवाया । सीता जी ने हाथ जोड़कर
से कहा— हे माता ! मेरा मनोरथ पूरा कीजियेगा । जिससे मैं पति औ
साथ सकुशल लौटकर आपकी पूजा करूँ । सीता जी की प्रेम-रस में सनी
सुनकर गंगा के निर्मल जल में श्रेष्ठ वाणी हुई । हे रघुवीर श्रीराम
जानकी ! सुनो, तुम्हारा प्रभाव जगत् में किसे नहीं मालूम है ? तुम्हारे (
से) देखते ही लोग लोकपाल हो जाते हैं । सब सिद्धियां हाथ जोड़े तुम
करती हैं । हे सीता ! तुमने जो मुझको बड़ी विनय सुनाई, यह तो मुझ
की और बड़ाई दी है, तो भी हे देवि ! मैं अपनी वाणी सफल करने के
आशीर्वाद दूँगी । हे सीता ! तुम अपने प्राणनाथ श्री राम और देव
सहित सकुशल अयोध्या लौटोगी । तुम्हारी सारी मनोकामनाएँ पूरी ह
तुम्हारा सुन्दर यश जगत् में छा जायेगा ।

विशेष:—(1) अनुप्रास और उक्ति अलंकार का स्वाभाविक प्रयोग
(2) शान्त रस और प्रसाद-माधुर्य गुण सम्पन्न अवधी भाषा ।

(चित्रकूट में राम)

(34)

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । विधि हरि संभु नचावनिहारे ॥
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । और तुम्हहि को जाननिहारा ॥
सोइ जानइ जेहिं देहु जनाई । जानत तुम्हहिं तुम्हइ होई जाई ॥
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन । जानहि भगत भगत उर चन्दन
चिदानंदमय देह तुम्हारी । बिगत बिकार जान अधिकारी ॥
नर तनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥

राम दीख मुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहि सुखारे॥
तुम्ह जो कहहु करहु सबु सांचा। जस काछिअ तस चाहिअ नाचा॥

दो.—पूँछेहु मोहि कि रहौं, कहँ मैं पूँछत संकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि, तुम्हहिं देखावौ ठाउँ॥ (Imp.)

शब्दार्थ—पेखन = खिलौना, तमाशा। करे = श्रेष्ठ। भगत-चन्दन = भक्तों हृदय को शीतल करने वाले चन्दन। मरमु = मर्म। ठाऊँ = स्थान।

सप्रसंग व्याख्या—अयोध्या काण्ड के प्रसंग 'चित्रकूट में राम' से अवतरित अंश राम के ब्रह्म स्वरूप को प्रकट करता है वाल्मीकि श्री राम से कह रहे हैं हे राम! यह संसार एक खेल तमाशे जैसा है और आप इसके देखने वाले हो राम! आप ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश को जो इस संसार में सृष्टि-पालन व हार करते हैं, उनको भी नचाने वाले हैं। वे भी आपके वशीभूत हैं। जब ये तीनों आपके रहस्य को नहीं समझ सके, तो फिर इस संसार में और कौन है जो पको जान सकता है? हे श्री राम! आपको तो वही जान सकता है जिसे आप यं अपना परिचय दे देते हैं। वह व्यक्ति आपके रहस्य को जानते ही आपका ही कर रह जाता है अर्थात् उसे संसार से कोई मतलब नहीं रहता है। हे रघुनन्दन! पकी कृपा होने पर ही भक्त आपको जान पाते हैं। आप भक्तों के लिए हृदय को तल करने वाले चन्दन के जैसे हैं। श्री राम! आपका यह शरीर चिदानन्दमय अर्थात् आपका शरीर प्रकृति जन्य पंच महाभूतों से व कर्म बन्धन मुक्त है। शिष्ठ मायिक नहीं है। आपका यह शरीर उत्पत्ति, नाश, वृद्धि व लक्ष्य आदि ी हानियों से परे है। आपके इस रहस्य को वही जान सकता है जिसे आप धिकार प्रदान करें। आपने देवताओं के और सन्तों के कार्यों को पूर्ण करने के ए ही यह दिव्य मानव देह धारण किया है। आप ठीक उसी तरह रहते, कहते र करते हैं जैसे कि कोई प्रकृति के तत्वों से निर्मित देह वाला राजा करता है। राम! आपके इस चरित्र को देख और सुनकर मूर्ख व्यक्ति तो मोह के वशीभूत जाते हैं और बुद्धिमान व्यक्ति सुख का अनुभव करते हैं। आप जो भी कहते हैं, ते हैं, वह सब सत्य ही है, क्योंकि जैसा भेष बनाया जाय उसी के अनुरूप नाच होना चाहिये। इसी कारण आपको अभी मानवोचित कार्य करने चाहिए। हे राम! आपने मुझ से पूछा कि मैं किस जगह पर रहूं? परन्तु मुझे आपसे यह ते संकोच होता है कि आप ऐसी जगह बता दीजिये जिस जगह आप स्थित न फिर मैं आपको रहने के योग्य स्थान बताऊँगा।

विशेष—(i) अनुप्रास, यमक और पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार की छटा व्य है।

(ii) प्रस्तुत काव्यांश में श्रीराम के ब्रह्मत्व और उनके सर्वव्याप
मान्यता प्रदान की गई है।

(35)

सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने। सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने।
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी। बानी मधुर अमिअ रस बोरी।
सुनहु राम अब कहउँ निकेता। जहाँ बसहु सिय लखन समेता।
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना।
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे। तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे।
लोचन चातक जिन्ह करि राखे। रहहिं दरस जलधर अभिलाषे।
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होहिं सुखारी।
तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक।

दो.—जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनी जीहा जासु।
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु॥

शब्दार्थ—प्रेम रस साने=प्रेम के रस में डूबे हुए। मनमहुँ=मन ही
बहोरी=पुनः। अमिअ रस बोरी=अमृत रस में डूबी हुई, मधुर। निकेता=
घर। सुभग सरि समाना=सुन्दर सरिता के समान हैं। रूरे=सुन्दर। जी
मुकताहल=मोती। हिय तासु=उसके हृदय में।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश में महाकवि बाल्मीकि श्रीराम को उनका आ
सदन बतला रहे हैं, उसी का विस्तार यहां किया गया है।

व्याख्या—श्री राम जी मुनि बाल्मीकि के प्रेम रस में भीगे वचनों को
सकुचा गये क्योंकि उन्हें अपना रहस्य खुल जाने का डर हो गया। अतः
मन ही मन में मुसकराने लगे। मुनि बाल्मीकि जी भी हंस दिये और पुन
मीठी अवाज को अमृत के रस में डुबोकर बोले हे राम! सुनिये अब मैं आप
स्थान बतलाता हूं जहां आप माता जानकी और लक्ष्मण के साथ निव
सकते हैं। जिनके कान समुद्र के समान हैं आपकी सुन्दर कथा को अनेक
नदियों की तरह निरन्तर भरते रहते हैं फिर भी उनके कान तृप्त नहीं
आप उन्हीं के हृदय में अपना निवास स्थान बनाइये। जिन्होंने अपनी आं
चातक के समान बना रखा है। वे केवल मात्र आपके ही दर्शन रूपी ब
लिए सदा प्यासे रहते हैं और जो बड़ी-बड़ी नदियों, समुद्रों और झीलों
का निरादर करते हुये आपके इस सौन्दर्य रूपी बादल से प्राप्त केवल एक
जल से सुखी हो जाते हैं। अर्थात् वे आपके इस दिव्य सच्चिदानन्दमय स्व
किसी एक अंग की जरा सी भी झलक मात्र के सामने स्थूल, सूक्ष्म और

जगत् के अर्थात् पृथ्वी स्वर्ग और ब्रह्म लोक के सौन्दर्य का भी तिरस्कार है। हे रघुनाथ जी ! आप इन लोगों के हृदय रूपी सुखदायी भवनों में अपने लक्ष्मण जी और सीता जी सहित निवास कीजिए।

वाल्मीकि जी श्री राम से कहते हैं कि हे राम जी ! आपके यशरूपी निर्मल सरोवर में जहां पर जीभ हंसिनी बनी हुई आपके गुण रूपी मोती चुगती है, हे रामजी ! आप ऐसे ही व्यक्तियों के हृदय में निवास कीजिये.

विशेष (i) उपमा, रूपक; सहोक्ति, अनुप्रास, और उत्प्रेक्षा अलंकारों का व मार्मिक प्रयोग इस काव्यांश में हुआ है, जो दृष्टव्य है।

(ii) प्रस्तुत काव्यांश में शैली में अलंकारिता के साथ-साथ चित्रात्मकता मधुरता का गुण भी विद्यमान है।

(36)

रघुबर कहेउ लखन भल घाटू। करहु कतहुं अब ठाहर ठाटू ॥
लखन दीख पय उतर करारा। चहु दिसि फिरउ धनुष जिमि नारा ॥
नदी पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना ॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चुकइ न घात मार मुठभेरी ॥
अस कहि लखन ठाउ देखरावा। थलु बिलोकि रघुबर सुखु पावा ॥
रमेउ राम मनु देवन्ह जाना। चले सहित सुर थपति प्रधाना ॥
कोल किरात बेष सब आए। रचे परन तृन सदन सुहाए ॥
बरनि न जाहि मन्जु दुइ साला। एक ललित लघु एक बिसाला ॥
दो.—लखन जानकी प्रभु, राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि वेष, जनु रति रितुरात समेत ॥

शब्दार्थ—घाटू=घाट। ठाटू=व्यवस्था, रहने का स्थान। साउज=शिकार जाने वाले जानवर, निशाना। मुठभेरी=समीप से। थपति-प्रधाना=विश्वकर्मा =शिकारी। अचल=अटल। निकेत=घर, शाला। ललित लघु=सुन्दर और। जनु=मानो। रितुराज=बसन्त।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्य पंक्तियां महाकवि तुलसी विरचित 'रामचरित मानस योध्या काण्ड से उद्धृत हैं। वन में राम महर्षि वाल्मीकि से अपने आवास ए उपयुक्त स्थान पूछते हैं तब ऋषि उन्हें 'चित्रकूट' में रहने का निवेदन करते स्तुत अंश में चित्रकूट की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कवि तुलसी न के प्रति श्री राम व लक्ष्मण के सन्तोष को व्यक्त किया है।

व्याख्या—चित्रकूट के सौन्दर्य को देखकर श्रीराम मुग्ध हो गये और लक्ष्मण जी से कहा—लक्ष्मण ! यह अच्छा घाट है। अतः अब यहीं किसी

स्थान पर अपने ठहरने की व्यवस्था कर लो। तब लक्ष्मण जी ने में उतर कर उसके ऊंचे किनारों को ध्यान से देखा, और कहा चारों ओर धनुष के जैसा एक नाला फिरा हुआ है। यह नदी म धनुष की डोरी है और शम्-दम-दान इसके बाण हैं। कलियुग के समस्त अनेक हिंसक पशु रूप निशाने हैं। चित्रकूट ही मानों अचल शिकार निशाना कभी चूकता नहीं है और जो सामने से मारता है। ऐसा क जी ने स्थान दिखलाया। स्थान को देखकर श्रीरामचन्द्र जी ने मुख देवताओं ने यह जाना कि श्रीरामचन्द्र जी का मन यहां रम गया, त के प्रधान वास्तुकार विश्वकर्मा को साथ लेकर चल पडे। सभी दे कोलों भीलों का वेष बनाकर आये और उन्होंने दिव्य पत्तों और घ घर बना दिये। दो ऐसी सुन्दर कुटिया बनायी जिनका वर्णन नहीं उनमें एक बड़ी सुन्दर छोटी कुटी थी और दूसरी बड़ी थी। लक्ष्म जानकी जी सहित प्रभु श्रीरामचन्द्र जी सुन्दर घास-पत्तों से घर म शो मानो कामदेव मुनि का वेष धारण करके पत्नी रति सहित और ऋतु के साथ सुशोभित हों।

विशेष:–(i)सांगरूपक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, उपमा अलंकारों क स्वाभाविक प्रयोग हुआ है

(ii) चित्रकूट की मनोरम झांकी प्रस्तुत की गई है।

विनय-पत्रिका

(37)

केसव कहि न जाई का कहिये।
देखत तब रचना विचित्र अति, समुझि मनहिं मन रहिये।।
सून्य भीति पर चित्र, रंग नहि, तनु बिनु लिखा चितेरे।
धोये मिटइ न मरइ भीति, दुख पाइय इहि तनु हेरे।।
रविकर–नीर बसें अति दारुन, मकर रूप तेहि माहीं।
बनद–हीन सौं ग्रसे चराचर, पान करन जे जाहीं।।
कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल कोउ मानें।
तुलसिदास परिहरे तीन भ्रम, सो आपन पहिचानें।।

शब्दार्थ–रचना=सृष्टि। हेरे=देखने से। रविकर नीर=सूर्य की भ्रम वश दिखाइ देने वाला पानी। अति दारुन=भयकर। मकर रूप= का सा। बदन हीन=मुख रहित। चराचर=संसार के जड़=चेतन पदार्थ छोड़ता है।

प्रसंग—गोस्वामी तुलसीदास 'विनय पत्रिका, के इस पद में भ सृष्टि पर आश्चर्य प्रकट कर रहे हैं। वे द्वैत–अद्वैत तथा विशिष्टा द्व को छोड़कर आत्मरूप को पहनाने का संदेश देते हुए कह रहे हैं—

व्याख्या—तुलसीदास जी कहते हैं कि हे प्रभु ! तुम्हारा यह रचना अत्यन्त है. इसकी अद्भुतता मन से परे है। उसे मन में समझकर ही रहना है। हे प्रभु ! आपकी यह कैसी अद्भुत लीला है। इस संसार रूपी चित्र को निराकार चित्रकार ने शून्य दीवार पर बिना रंग के ही बनाया है। भाव यह है सृष्टिकर्त्ता निराकार परमात्मा ने माया रूपी दीवार पर जो शून्यमय भास रही है, ये विचित्र चित्र खींचे हैं, जिनमें रंग का लेश भी नहीं है। अर्थात् संकल्प से शून्याधार पर पांच भौतिक रचना का प्रसार किया है। अन्य चित्रकारी धोने से मिट जाती है, पर इस निराकार चित्रकार के खींचे हुए चित्र धोने से नहीं मिटते, अर्थात् कर्म आदि करने से यह पांच भौतिक रचना नष्ट नहीं होती और भी पक्की हो जाती है। जड़ चित्रों को कभी मरने का भय नहीं होता, इन चित्रों को सदा मृत्यु का भय रहता है तथा इन्हें देखने से दुःख होता है।

सूर्य की किरणों से, ग्रीष्म ऋतु में जो जल की लहरें दिखाई देती है, उनमें भयानक मगर रहता है। यद्यपि उस मगर के मुख नहीं है, पर जो भी जल जाता है, चाहे वह जड़ हो चैतन्य उसे वह निगल जाता है। आशय यह कि संसार मृग जल के समान भ्रमात्मक है। जैसे—सूर्य की किरणों को जल समझकर मृग वहां दौड़ते हुए जाते हैं, पर वहां जल कहां है ? वे जितना भी भागेंगे मृग जल उतना ही दूर दिखाई देगा। अन्त में बेचारे छटपटाकर मर जाते हैं। इसी प्रकार अविद्या जन्म मिथ्या संसार के विषयों में जो सुख खोजना चाहते हैं उन्हें मिलता तो कुछ नहीं, पर उसी प्रवृत्ति में फंसे रहने के कारण, एक दिन बिना मुख का मगर अर्थात् अव्यक्त काल उन्हें खा जाता है।

संसार की इस रचना को कोई सत्य कहता है, कोई मिथ्या। कोई-कोई सत्य और मिथ्या का संमिश्रण भी कहते हैं। अर्थात अद्वैतवादी वेदान्ती इस जगत् को मिथ्या अथवा भ्रम मात्र मानते हैं। वे ब्रह्म की ही रचना स्वीकार करते और उसी में रज्जु-सर्पवत जगत् का आभास मानते हैं। जबकि द्वैतवादी तथा विशिष्टा द्वैतवादी कर्म प्रधान जगत् को सत्य मानते हैं। एक तीसरा पक्ष इस संसार को सत्य और असत्य दोनों ही मानता है। तुलसीदास जी कहते हैं कि मेरे विचार से ये तीनों धारणायें भ्रम रूप हैं। जो इन तीनों भ्रमों से छुटकारा पा जाता है, जो सब-कुछ को भगवान की लीला ही मानता है, वही वास्तविक स्वरूप पहचान सकता है।

विशेष—(i) तुलसीदास जी का यह पद अत्यन्त जटिल और गूढ़ार्थवाला है। तुलसीदास के दार्शनिक विचारों की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।

(ii) अद्भुत रस शान्त रस को पुष्ट कर रहा है।

(iii) विभाजना, रूपक, अतिशयोक्ति एवं विरोधाभास अलंका भाव से प्रयोग हुआ है।

(iv) तुलसी प्रभु चरणों में जाने का ही मानव जीवन का सा है। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है—

सर्वधर्मनि परित्यज्य मामेकं शरण व्रज ।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षाभिष्यामि मा शुचः ।।

(38)

ऐसो को उदार जग माहीं ।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं ।।
जो गति जोग बिराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी ।।
जो सम्पति दससीस अरपि करि रावन सिव पह लीन्हीं ।
सो सम्पदा बिभीषन कहँ अति सकुच-सहित हरि दीन्ही ।।
तुलसीदास सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।
तौ भजु राम, काम सब पूरन करै कृपानिधि तेरो ।।

शब्दार्थ—उदार = दयावान । जग माहीं = संसार में । द्रवै = द्र है। सरिस = समान । जतन = यत्न । दससीस = रावण । सकल = सम्पूर

प्रसंग—प्रस्तुत पद्य 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संकलित महाक विरचित 'विनय पत्रिका' से लिया गया है। इस पद में भगवान श्रीराम रता, भक्त वत्सल्यता और कृपा सुलभता का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—संसार में ऐसा और कौन उदार हृदय है, जो बिना किये दीन जनों को निहाल कर देता है। राम ही ऐसे आराध्य हैं, उन कोई दूसरा उदार व्यक्ति नहीं है। वे बिना विधिवत सेवा के ही गरी अनाथों पर कृपा करने वाले हैं।

जिस परम गति मुक्ति को बड़े-बड़े तत्वज्ञानी मुनि भी योग, वै अनेक साधन कर-कर प्राप्त नहीं कर पाते, उसे प्रभु श्रीराम गीध और श को दे देते है और उसे अपने मन में बहुत थोड़ा ही मानते है। शिवजी को अपने दसों सिर अर्पित कर जो सम्पदा प्राप्त की थी, वह श्री बड़े संकोच के साथ विभीषण को दे दी। उन्हें संकोच इस बात का था कुछ दे न सके। लंका का राज्य तो उसका आनुवांशिक ही था, वह उसक धिकारी कभी न कभी तो होता ही।

अन्ततः तुलसीदास जी कहते हैं कि अरे मन ! जो तू सब प्रकार से सुख है तो श्रीराम जी का भजन कर। कृपा सागर प्रभु तेरे मन की सारी ाएं पूरी कर देंगे, तेरे सभी मनोरथ सफल हो जायेंगे।

विशेष :—(i) 'बिनु सेवा……….पर' बिना किसी बदले की आशा से जो ी जाती है वही सच्ची कृपा है, वही सच्चा प्रेम है। बदले के लिए जो जाता है वह कृपा नहीं वाणिज्य है। निष्कारण कृपा करने वाला तो एक मा ही है।

(ii) इस पद में श्रीराम की उदारता का मनोहर चित्रण किया गया है। 'श्री भगवद् गुण दर्पण' उदारता के लक्षण इस प्रकार बताये गये हैं–

पात्रापात्रविवेकेन देशकालाधुपेक्षणात्।
वदान्यत्वं विदुर्वेदा औदार्यवचसा हरे॥

(iii) 'रामचरित मानस' में भी 'जो सम्पति……..दीन्हीं' का उल्लेख हुआ

'जो सम्पति सिव रावनहि, दीन्ह दिये दस माथ।
सो सम्पदा विभीषनहिं, सकुचि दीन्ह रघुनाथ॥'

(कवितावली)

(39)

पग-नूपुर औ पहुंची कर कंजनि, मंजु बनी मनिमाल हिये।
नवनील कलेवर पीत भगा झलकैं पुलकैं नृप गोद लिये॥
अरविंद सो आनन, रूप मरन्द अनन्दित लोचन-भृंग पिये।
मन मों न बस्यो अस बालक जो 'तुलसी' जग में फल कौन जिये॥

शब्दार्थ—कर=हाथ। कंजनि=कमल। मंजु=सुन्दर। हिय=हृदय। ील=नवीन नीले। कलेवर=शरीर। अरविन्द=कमल। मरंद=पुष्प पराग। न=आंखें। भृग=भौंरे। अस बालक=श्रीराम-सा बालक।

व्याख्या—भगवान राम के बाल सौन्दर्य का चित्रण करते हुए तुलसीदास हते हैं कि राम के पांवों में नुपुर है और हाथों रूपी कमलों में पहुंची है। हृदय पर सुन्दर मणियों की माला सुशोभित है। नवीन नीले कोमल शरीर ीले रंग का झंगुला है, ऐसे राम को गोद लिए राजा दशरथ अत्यन्त प्रसन्न कमल के समान सुन्दर राम के मुख सौन्दर्य के मरकन्द को महाराजा दशरथ ों रूपी भौंरें आनन्दित होकर पी रहे हैं। ऐसे रूप से सम्पन्न बालक राम व्यक्ति के मन में नहीं बसते हैं, उसको संसार में जीवित रहने का कोई फल मिलता है। श्रीराम जी ही मानव जीवन के सर्वोच्च साध्य हैं, जिनको उनके लगाव नहीं है, उनका जीवन व्यर्थ है।

विशेष :—(i) कर कंजनी, लोचन-भृंग में रूपक तथा 'अरविन्द' में उपमा अलंकारों का सौन्दर्य दृष्टव्य है।

(ii) श्रीराम की प्राप्ति ही जीवन का चरम फल है। जिसकी चरणों में रति नहीं है, उसका जीवन व्यर्थ है।

(40)

दूलह श्री रघुनाथ बने, दुलहि सिय सुन्दर मन्दिर माहीं।
गावति गीत सबै मिलि सुन्दरि, वेद, जुवा जुरि विप्र पढ़ाहीं।
राम को रूप निहारति जानकी कंकन के नग की परछाहीं।
यातें सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही पल टारत नाहीं॥

शब्दार्थ—दूल्ह=वर, दूलहा। दुलही=दुल्हन। जुवा=जवान। जुरि=इकट्ठे होकर। सुधि=याद। टेकि रही=एक स्थान पर रखे रही।

प्रसंग—प्रस्तुत पद 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संकलित महाकवि ... विरचित कवितावली से लिया गया है। इसमें राम सीता के विवाह का चित्र मनोहारी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या—तुलसी कहते हैं कि जनकपुरी के राजमहलों में प्रभु श्रीराम दूल्हे के रूप में और सीता जी दुल्हन रूप में सुशोभित हो रहे हैं। उनके ... अनेक सुन्दर युवतियां हैं जो मधुर वाणी में मंगल गीत गा रही हैं। और अनेक ब्राह्मण वहां एकत्रित हैं जो वेद मन्त्रों का उच्चारण कर रहे हैं। सीता जी ने अपने हाथ में जो कगन धारण कर रखे हैं, उनके नगों में श्रीराम का प्रतिबिम्ब पड़ता है, जिसे निहारने में वे इतनी लीन हो गई कि उन्हें अपनी ... नहीं रही। वे अपने हाथों को उसी स्थिति में स्थिर रखे हुए हैं जिससे राम का रूप उन्हें निहारने को मिलता रहे। भावार्थ यह है कि हाथों के ... से उन नगों में श्रीराम का प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं देता। अतः वे प्रतिबिम्ब ... के लिए अपने हाथों को स्थिर करके बैठ गई है।

विशेष—(i) प्रस्तुत पद मतगयंद या इंदव सवैया का सुन्दर उदाहरण ... इसमें प्रथम हेतु अलंकार का सौन्दर्य अवलोकनीय है।

(ii) श्रीराम के प्रति सीता जी के अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति हुई ...

(41)

एहि घाट ते थोरिक दूर अहै कटि लौं जल-थाह दिखाइहौं जू।
परसे पगधूरि तरै तरनी, घरनी घर क्यों समुझाइहौं जू।
'तुलसी' अवलम्ब न और कछू लरिका केहि भाँति जिआइहौं जू।
बरु मारिय मोहि बिना पग धोये हौं नाथ न नाव चढ़ाइहौं जू।

शब्दार्थ—एहि=इस। कटि लौं=कमर तक। थाह=गहराई। तरनी=नाव, घरनी=घर वाली, गृहिणी। अवलम्ब=सहारा। बरु=चाहें। हौं नाथ=मी।

सप्रसंग व्याख्या—'कवितावली' से अवतरित इस पद में महाकवि तुलसी ने का वाक चातुर्य प्रकट किया है। राम गंगा नदी पार जाने के लिए केवट को ाने के लिए कहते हैं, पर केवट उन्हें बिना उनके चरण धोये पार ले जाने ार नहीं होता। इसी प्रसग का मनोहारी चित्रण इस पद में हुआ है। केवट से कहने लगा हे नाथ! इस घाट से थोड़ी दूर पर नदी में कमर तक का नी है। चलिये मैं आपको वहां के पानी की गहराई दिखा देता हूं। मैंने सुना आपके पांवों की रज के स्पर्श से शिला ने सजीव नारी अहिल्या का रूप कर लिया था, उसी प्रकार आपकी चरण-रज के स्पर्श से यदि मेरी नाव न्दर स्त्री में परिवर्तित हो गई तो मैं अपनी गृहिणी को क्या कहकर सम-गा? वह तो किसी तरह से इस पर विश्वास नहीं करेगी। केवट कहता है स्वामी! मेरे तो इस नाव के अतिरिक्त जीविका का कोई दूसरा सहारा भी है। मैं इसके बिना अपने बाल-बच्चों का पालन कैसे करूँगा? हे स्वामी! आप चाहें तो मुझे मार डालिये पर मैं तो बिना आपके चरणों को धोये नाव पर चढ़ाने वाला नहीं हूँ।

विशेष:—(i) प्रस्तुत पद में केवट की पारिवारिक स्थिति और उसकी मनो-की अभिव्यक्ति हुई है।

(ii) इस पद से दास भाव की भक्ति व्यंजित होती है। साथ ही श्रीराम रणों की महिमा भी व्यंजित होती है।

(42)

भागीरथी जलपान करौं अरु नाम द्वै राम के लेत नितैंहौं।
मोको न लेनो न देनो कछू कलि! भूलि न रावरी ओर चितैंहौं।
जानि कै जोरु करौं परिनाम, तुम्है पछितैंहौ पै मैं न मितैंहौं।
ब्राह्मण ज्यों उगिल्यों उरगारि, हौं त्योंहीं तिहारे हिये पै हितैंहौं॥

शब्दार्थ—भागीरथी=गंगा। नितैं=रोज ही। रावरी=आपकी। जोरु=न। उरगारि=शिव। तिहारे=तुम्हारे।

प्रसंग—प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संक-है। इस पद से कवि तुलसी कलिकाल के हाथों से बचने का उपाय बता । साथ ही वे यमराज को भी अपने से दूर रहने की चेतावनी देते हैं क उन्होंने यमराज से छुटकारा दिलाने वाले प्रभु श्रीराम की शरण ग्रहण कर है।

व्याख्या—कलिकाल को सम्बोधित कर तुलसीदास कह
कलिकाल ! तू मुझ से दूर ही रहा कर। अपने से दूर रहने का कार
वे कहते हैं कि मैं रोजाना ही राम नाम के दो अक्षरों को जपता हूं और
नदी का स्वच्छ पानी पीता हूँ। मुझे तेरे से कोई काम नहीं है अर्थात्
कोई लेना-देना नहीं है। मैं भूलकर भी तुम्हारी तरफ नहीं देखूंगा।
मुझे क्यों परेशान करते हो ? और मेरी चेतावनी के उपरान्त भी तुम
और मेरे साथ जबरदस्ती अत्याचार करोगे तो इसके बुरे परिणाम तु
होंगे। फिर मैं तुमसे डरने वाला नहीं हूँ। जिस तरह से ब्राह्मण गरुड़
नहीं पच सकता था और उसे वापस उगलना पड़ा था उसी प्रकार यदि
अपने पेट में समाहित करोगे तो मैं तुम्हारे पेट में पचने वाला नहीं हूँ।
मुझे उगलना होगा।

विशेष :—(i) राम नाम और गंगा के जल-पान का महात्म्य व
(ii) उत्प्रेक्षा से पुष्ट अनुप्रास अलंकार का स्वाभाविक प्रयोग ह

(43)

पिंगल जटा कलापु, माथे पै पुनीत आपु,
पावक नैना, प्रताप भ्रू पर बरत है ।।
लोचन बिसाल लाल, सोहै बालचन्द्र भाल,
कण्ठ कालकूट व्याल भूषन धरत है ।।
सुन्दर दिगम्बर विभूति गात, भांग खात,
रूरे सृंगी परे काल-कंटक हरत है ।।
देत न अघात,.रीझि जात पात आक ही के,
भोलानाथ जोगी जब औढर ढरत है ।। (V. I

शब्दार्थ—पिंगल=भूरो। कलापु=समूह। पुनित=पवित्र। आपु=
प्रताप=अग्नि। बरत=दमकतो। लोचन=नेत्र। भाल=ललाट। कालकू
व्याल=सांप। गात=शरीर। रूरे=मनोहर। काल-कंटक=कालरूपी कांटा
दूर करते हैं। अघात=अघाते। आकहीके=आक के पत्तों को चढाने से। औ
है=बेतरह प्रसन्न होते हैं।

सप्रसंग व्याख्या—कवितावली के उत्तरकाण्ड में महाकवि तुलसी
भगवान शंकर का वर्णन करते हुए कह रहे है शिवजी का जटाजूट पिंग
का है, और उनके मस्तक पर परम पवित्र गंगा जल सुशोभित हो रहा है
नेत्रों में स्थित अग्नि की ज्योति उनकी भौंहों पर दमक रही है। उनके ने
और अरुण वर्ण के ललाट पर द्वितीया के चन्द्रमा शोभायमान हैं, गले में

है तथा वे सर्पों के आभूषण धारण किये हुए हैं। उनका अति सुन्दर दिगम्बर है और वे शरीर में भस्म रमाये रहते हैं, भांग खाये हैं तथा सींग का मनोहर … करके काल रूपी कण्टक को निवृत कर देते हैं। जिस समय वे भोलानाथ …ी बेतरह प्रसन्न होते हैं, उस समय वे देते-देते अघाते नहीं, और स्वयं आक के …ों से ही रीझ जाते हैं।

विशेष—(i) अनुप्रास, उपमा, रूपक, अलंकार का स्वाभाविक रूप से …ग हुआ है।

(ii) शिवजी के शारीरिक और स्वभाव जनित सौन्दर्य का सुन्दर और …ावी चित्र इस पद में देखने को मिलता है। भाषा सरस और मधुर है।

(iii) शान्त रस, प्रसाद एवं माधुर्य गुण युक्त भाषा।

4. रहीम

(44)

जे सुलगे ते बुझ गए, बुझे ते सुलगे नाहिं।
'रहिमन' दाहे प्रेम के, बुझि-बुझिकें सुलगाहिं ॥2॥
यह न 'रहीम' सराहिये, देन-लेन की प्रीति।
प्रानन बाजी राखिये, हार होय के जीत ॥3॥
बढ़े प्रीति नहिं रीति बह, नहीं पाछिलो हेत।
घटत-घटत 'रहिमन' घटै, ज्यों कर लीन्हे रेत ॥5॥

शब्दार्थ—सुलगे=जल गये। दाहे=जले हुए। सराहिये=प्रशंसा कीजिये। …छिला=पीछे का। हेत=प्रेम। रेत=मिट्टी।

प्रसंग—ये दोहे 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संकलित रहीम के काव्य से …वृत हैं। इन दोहों में कवि ने प्रेम की प्रगति और उसकी उपेक्षा का मनोहारी …ण किया है। इन दोहों मे रहीम के प्रेम सम्बन्धी विचारों पर अच्छा प्रकाश …ता है।

व्याख्या—प्रथम दोहे में कवि कह रहा हैं कि संसार के जिस पदार्थ में आग … जाती है, वह कभी न कभी बुझ जाती है और जो आग एक बार बुझ जाती …वह फिर से नहीं सुलगती लेकिन प्रेम का जलना इससे भिन्न है। जो प्रेम की …ग में जलते हैं वे बुझ बुझकर भी पुनः जल उठते हैं। प्रेम की आग एक बार … जाने पर फिर कभी पूरी तरह समाप्त नहीं होती।

दूसरे दोहे में कवि ने संसारिक व्यवहारों से उत्पन्न प्रेम की निन्दा की … संसार में जो प्रेम लेन-देन के व्यवहार पर आधारित है, वह प्रेम नहीं है। …-देन का कार्य व्यापारी को शोभा देता है, प्रेम करने वालों को नहीं। प्रेम में …प्राणों की बाजी लगानी होती है। परिणाम चाहे कुछ भी क्यों न हो प्रेमी

इसका विचार नहीं करते। भाव यह है कि प्रेम के लिए समर्पण, त्य
दान की भावना का होना आवश्यक है।

तीसरे दोहे में कवि ने प्रेम निर्वाह की कठिनता बतलाते हुए
प्रेम का स्वरूप सदा समान रहता है। उसमें कमी या अधिकता नहीं
कि हाथ में रेत या मिट्टी लेने पर वह धीरे-धीरे गिर कर समाप्त हो
वैसी रीति-प्रेम की नहीं है। प्रेम में सदैव समानता बनी रहती है।

विशेष—(i) प्रथम दोहे में कवि ने प्रेम की विचित्रता का उ
है। प्रेम की आग एक बार सुलग जाने पर कभी नहीं बुझती।

(ii) दूसरे दोहें में कवि ने प्रतिदान रहित प्रेम को ही सच्चा
है।

(iii) तीसरे दोहे में प्रेम की निरन्तरता व समानता का उल्ले

(45)

जो 'रहीम' ओछो बढ़ै, सो अति ही इतराय।
प्यादे से फरजी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय ॥6॥

रहिमन' नीचन सग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारनि हाथ लखि, सब समुझहि मद ताहि ॥7॥

खरच बढ्यो उद्यम घट्यो, नृपति निठुर मन कीन।
कहु 'रहीम' कैसे जिए, थोरे जल की मीन ॥9॥

शब्दार्थ—ओछो=नीचा। इतराय=अभिमान करना।
फरजी=वजीर। कलारिन=शराब बेचने वाली। लखि=देखकर।
उद्यम=परिश्रम। नृपति=राजा। निठुर=कठोर। मीन = मछली।

प्रसंग—ये दोहे 'प्राचीन काव्य कलाधर' से संकलित रही
अवतरित हैं। इन दोहों में कवि ने नीच व्यक्तियों के स्वभाव, संगति
और अभावग्रस्त जीवन का वर्णन किया है।

व्याख्या—प्रथम दोहे में कवि रहीम नीच व्यक्तियों के स्वभाव
करते हुए कहते हैं कि यदि दुष्ट व्यक्ति को धन अथवा कोई अच्छा प
हे तो उसके मन में बहुत अहंकार आ जाता है। अपनी इस बात को
से स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं, जैसे-शतरंज में यदि पैदल बजीर ब
उसकी चाल तिरछी हो जाती है। ऐसे ही ओछा व्यक्ति आड़ा-टेढ़ा
है।

द्वितीय दोहे मे कवि ने संगति के प्रभाव को स्पष्ट किया है।
दुष्ट व्यक्तियों की संगति में रहने से अच्छे व्यक्ति भी कलंकित होते हैं

कलारिन के हाथ म दूध देखकर भी लोग उसे राशब ही समझते हैं। भाव है कि जैसी संगति में व्यक्ति रहता है लोग उसी के आधार पर अच्छा या बुरा ने लगते हैं।

तीसरे दोहे में रहीम ने लिखा है कि जब व्यक्ति का खर्च बढ़ जाता है, श्रम द्वारा कार्य सिद्ध करने की शक्ति कम हो जाती है और राजा (आश्रयदाता मन कठोर हो जाता है तो व्यक्ति का जीना दुभर हो जाता है। जैसे—कम पानी हने वाली मछली का जीवन कठिन होता है, वैसे ही आमदनी कम होने पर घर का खर्चा नहीं चलाया जा सकता।

विशेष—(i) तीनों दोहों मे ही दृष्टान्त का सुन्दर, स्वाभाविक प्रयोग है।

(ii) दृष्टान्त हेतु दी हुई उपमाओं मे मौलिकता और नवीनता है।

(iii) अन्तिम दोहे में थोरे जल की मीन बड़ा सार्थक प्रयोग हुआ है।

(46)

जैसी जाकी बुद्धि है, तैसी कहै बनाय।
ताको बुरो न मानिये, लेन कहाँ सूँ जाय ॥10॥
'रहिमन' तब लगि ठहरिए, दान, मान, सनमान।
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहि करिय पयान ॥13॥
धन थोरो, इज्जत बड़ी, कहि 'रहीम' का बात।
जैसे कुल की कुलबधू, चिथड़न माँहि समात ॥16॥

शब्दार्थ—बनाय=बात बनाना। ताको=उसका। लगि=तक। तुरतहि= त। पयान=प्रस्थान। चिथड़न=फटे कपडे। समात=रहना।

सप्रसंग व्याख्या—ये दोहे रहीम के नीति सम्बन्धी विचारों का प्रतिपादन ते हैं। इनमें रहीम ने लोक-व्यवहार, आत्म-सम्मान और पतिव्रता स्त्री का ख किया है। प्रथम दोहे में कवि रहीम कहते हैं कि व्यक्ति अपनी बुद्धि स्तर नुसार ही कार्य करता है और वह कर भी क्या सकता है ? यही कारण है कि व्यक्ति अपनी बुद्धि के अनुसार बात किया करता है। यदि कोई बुरा व्यक्ति या हल्की बात कहता है तो उसका बुरा मानने का लाभ ही क्या है ? क्योंकि इससे अच्छी बात कह ही नहीं सकता। अतः ऐसे व्यक्ति की बात का बुरा ना उचित नहीं है।

द्वितीय दोहे में कवि रहीम ने दान-मान और सम्मान के होने तक ही ठह- उचित बताया है। व्यक्ति को जब भी अपने मान में या आदर-सत्कार में दिखाई दे तो उसे तुरन्त ही वहां से प्रस्थान कर जाना चाहिए। भाव यह मान के न रहने पर किसी स्थान पर ठहरना नहीं चाहिए।

अन्तिम दोहे में रहीम ने धन से शील, सदाचार को बड़ा ब व्यक्ति का समाज में सम्मान होता है, लेकिन सदाचारी के पास ध भी लोग उसकी प्रतिष्ठा करते हैं। फटेहाल रहने वाली पतिव्रता उसके शील व सदाचार से ही है, धन के कारण नहीं।

विशेष—(i) उपर्युक्त दोहों में रहीम ने सहानुभूतियों का किया है और शील को धन से अधिक महत्व देकर नैतिक आच किया है।

(47)

धनि 'रहीम' जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिया सो जाय ॥17॥
अनुचित बचन ना मानिये, जदपि गुरायसु गाढ़ि।
हैं 'रहीम' रघुनाथ ते, सुजस भरत को बाढ़ि ॥18॥
अब 'रहीम' मुसकिल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिले न राम ॥19॥ (Ir

शब्दार्थ—पंक = कीचड़। लघु=जीव। पियत=पीकर। अघाय उदधि = सागर। गुरायसु = गुरुजनों की आज्ञा। गाढ़ि = गम्भीर। स गाढ़े = कठिन।

सप्रसंग व्याख्या—प्रस्तुत दोहे रहीम द्वारा रचित है। इन ने नीति और लोक व्यवहार का सुन्दर वर्णन किया है। प्राचीन से संकलित रहीम के ये दोहे जीवन के दर्पण है। प्रथम दोहे में कि काम आने वाले व्यक्ति को महत्व दिया है। उनके अनुसार कीचड़ है, जिसे पीकर छोटे-छोटे प्राणी सन्तुष्ट व तृप्त होते हैं। उस मह बड़ाई दी जा सकती है, जो अथाह जल रहकर भी प्यासे को सकता। सागर का जल खारा होता है, अतः पीने के काम नहीं आत है कि जो व्यक्ति सम्पन्न होते हुए भी दूसरों के लिए अनुपयोगी है होना सराहनीय नहीं हैं।

द्वितीय दोहे में रहीम कहते हैं कि गुरूजनों की अनुचित आज्ञ मानना चाहिए। श्रीराम ने माता कैकयी की आज्ञा को मानकर व किया। लेकिन भरत ने राम द्वारा अयोध्या के राज सिंहासन की अनु नहीं माना। अनुचित आज्ञा की अवहेलना भरत का यश इस संसार अधिक है।

तृतीय दोहे में रहीम ने लोक और परलोक के व्यवहार कारण आने वाली कठिनाई का सुन्दर वर्णन किया है। कवि क

सत्य से नहीं चलता। लोक व्यवहार में असत्य भाषण होता ही है लेकिन बोलने से परलोक के कार्य में बाधा पड़ती है। झूँठे को राम नही मिलते सत्य के इस फेर में लोक व परलोक दोनों में कठिनाई का सामना करना है।

विशेष—(i) प्रथम दोहे में कवि ने महानता का लक्षण पद व धन को न र परोपकार को माना है। दूसरे में नीति कथन किया है और तीसरे में परलोक के आचरण की भिन्नता को व्यंजित किया है।

(ii) भाषा सरल, सरस व सहज है।

(48)

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
'रहिमन' मूलहि सींचिबो, फूलहिं फलहिं अघाय ॥22॥
अन्तर दाव लगी रहै, धुआँ न प्रगटै सोय।
कै जिय जाने आपनो, जा सिर बीती होय ॥23॥
कदली, सीप, भुजंग, मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ॥24॥ (Imp.)

शब्दार्थ—साधे = साधने या बनाये रखने पर। अघाय = तृप्त होना, पूर्ण । दाव = अग्नि। कदली = केला। भुजंग = सर्प। तैसोई = वैसा ही।

सप्रसंग व्याख्या—'प्राचीन काव्य कलाधर' से अवतरित रहीम के दोहे उनके कण है। इन दोहों में एकनिष्ठता का महत्त्व, सहानुभूति और संगति के का उल्लेख किया है। प्रथम दोहे में कवि कहता है कि एक कार्य को सिद्ध से दूसरे अन्य कार्य भी स्वतः ही सिद्ध हो जाते हैं। यदि मूल को सींचा जावे उसे मिलने वाले फल से ही पूर्ण सन्तोष की प्राप्ति होती है। भाव यह कि ही इस सृष्टि का मूल कारण है। अतः हमें ईश्वर की ही भक्ति सप्रेम करनी । एक ईश्वर की प्राप्ति से ही हमारे अन्य कार्य भी स्वतः ही सिद्ध हो ।

द्वितीय दोहे में कवि कहता है कि ईश्वर भक्तों के हृदय में प्रेम की अग्नि र जलती रहती है। यह अग्नि ऐसी विशिष्ट होती है कि इसका धुँआ दिखाई नहीं देता। इसका आभास या तो उस व्यक्ति को होता है, जिसके में वह अग्नि लगी होती है अथवा इसे वही जानता है जो भुगत भोगी होता बिना पीड़ा को भोगे हम दूसरे की पीड़ा का अहसास नहीं होता।

तृतीय दोहे में कवि रहीम ने संगति के प्रभाव का वर्णन किया है। व्यक्ति संगति में रहता है, वह वैसा ही बन जाता है। स्वाति जल की एक बूँद संगति

के प्रभाव से अलग-अलग परिणाम दिखाती है। यदि वह केले के प
है तो कपूर, सीपी में गिरने पर मोती और सर्प मुख मे गिरने पर वि
है। संगति का प्रभाव व्यक्ति अथवा वस्तु सभी पर समान रूप से पड़त

विशेष—प्रस्तुत दोहे नीति और लोक-व्यवहार से ओत-प्रोत
में सरलता मिश्रित लाक्षणिकता है। प्रथम दोहे की पहली तथा ती
अन्तिम पंक्ति प्रायः लोकोक्ति के रूप में व्यवहार में आती है।

(49)

जो बड़ेन को लघु कहै, नहिं 'रहीम' घटि जाहिं।
गिरिधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं ॥31॥
जो 'रहीम' गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगे, बढ़े अँधेरो होय ॥32॥
जो 'रहीम' मन हाथ है, तो तन कहु किन जाहिं।
जल में जो छाया परे, काया भीजति नाहिं ॥33॥

शब्दार्थ—गिरिधर=गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले श्री कृ
जलाने पर, बचपन में। बढ़े=बुझ जाने पर, बड़ा होने पर। तन=शरी

सप्रसंग व्याख्या—प्रस्तुत दोहे 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संक
के दोहों से अवतरित हैं। इन दोहों में कवि ने लोक-नीति, व्यवहार
संयम के महत्त्व का उल्लेख किया है। प्रथम दोहे में रहीम कह रहे
बड़े व्यक्ति को छोटा कह दिया जाये तो केवल कहने मात्र से उसकी
नहीं होती। उसकी प्रतिष्ठा में कोई कमी नहीं आती। जैसे गोवर्धन
ऊँगली पर धारण करने वाले कृष्ण को कोई मुरली धारण करने वाला
कहे तो इसका उनके यश पर क्या प्रभाव पड़ता है? इसका तो श्रीकृष्ण
नहीं मानते। उनके ये दोनों ही कार्य लोक रक्षण और लोक रंजन के
अतः इसका बुरा मानना भी अनुचित है।

द्वितीय दोहे में कवि ने दीपक और कुल कपूत की स्वाभावगत स
का उल्लेख किया है। कवि कहता है कि दीपक और कुल के कपूत की ग
है। दीपक को जलाने पर वह प्रकाश देता है और बुझाने पर अन्धेरा
इसी प्रकार कपूत के परिवार में होने पर (उसके भावी कुकृत्यों का ज्ञान
से) खुशियाँ मनाई जाती है लेकिन जब कपूत बड़ा होता है तब उसके कुकृ
आने पर कुल में अन्धेरा हो जाता है।

तृतीय दोहे में रहीम कहते हैं कि जब तक व्यक्ति का अपने मन
कार है तब तक वह कहीं पर भी जाये उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

क की छाया पड़ती है, पर उसका कोई प्रभाव व्यक्ति के शरीर पर नहीं । वह भोगता नहीं है, ऐसे ही मन पर अधिकार रहने पर शरीर अशुभ पर जाकर भी कुकृत्य नहीं करता ।

विशेष—(1) प्रथम दोहे में 'गिरिधर' और 'मुरलीधर' शब्दों का प्रयोग ाय हुआ है । (2) दूसरे दोहे में श्लेष अलंकार का चमत्कार है । (3) तीसरे आत्म संयम या मन संयम के महत्त्व का उल्लेख हुआ है । (4) दृष्टान्त ार का प्रयोग भी सहज स्वाभाविक है ।

(50)

जो विषया सन्तन तजि, मूढ़ ताहि लपटात ।
ज्यों नर डारत वमनकर, स्वान स्वाद सों खात ।।34।।

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखे न कोय ।
जो 'रहीम' दीनहिं लखै, दीनबंधु सम होय ।।37।।

'रहिमन', विपदाहू भली, जो थोरे दिन होय ।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ।।41।।

शब्दार्थ—विषया=विषय-वासना । मूढ़ = मूर्ख । ताहि=उसी से । वमन= । स्वान=कुत्ता । दीन=गरीब । लखत है=देखता है । दीनबन्धु=भगवान । सम= र । विपदा=संकट । हित-अनहित=अच्छा बुरा ।

सप्रसंग व्याख्या—प्रस्तुत दोहे रहीम की नैतिक तथा आचरणिक मान्यताओं पष्ट करते हैं । इनमें कवि के अनुभवपरक जीवन की अभिव्यक्ति हुई है । प्रथम में रहीम कहते हैं कि जिन सांसारिक विषय भोगों को साधु-सन्त बुरा समझ- याग देते हैं, मूर्ख व्यक्ति उनको ही अच्छा समझकर उनके स्वाद में उलझते यह ऐसा ही है जैसे किसी व्यक्ति द्वारा की गई वमन (उल्टी) को कुत्ता बड़े द से खाता है ।

द्वितीय दोहे में रहीम ने दीन सेवा को ही ईश्वर सेवा बताते हुए कहा है कि व्यक्ति सहायता की आशा से सभी की ओर देखता है, पर दीन-गरीब को नहीं देखता । लोग उसे देखकर भी अनदेखा कर जाते हैं । जो व्यक्ति दीन हायता करता है, वह दीनबन्धु भगवान से कम नहीं है ।

तृतीय दोहे में रहीम कहते हैं कि यदि विपदा कुछ ही समय रहने वाली ो वह भी अच्छी होती है । क्योंकि इस संसार में अपना भला व बुरा सब ही ते हैं और सुख-दुःख का सभी को सामना करना पड़ता है । इस थोड़े से समय पने-पराये, मित्र-शत्रु की पहचान भी हो जाती है । अतः कम समय तक रहने विपदा बुरी नहीं है ।

विशेष—रहीम के दोहों में दान, सेवा और सहयोग के महत्व मिलता है। दूसरे दोहे में कवि ने मानव सेवा को ईश्वर सेवा बता महत्व दिया है। प्रथम दोहे में दृष्टान्त का चमत्कार मौलिकता लिए है

बरवै

(51)

बढ़त जात चित दिन-दिन, चौगुन चाव।
मनमोहन तैं मिलबौ, सखि कहँ दाँव ॥
मनमोहन बिन देखे, दिन न सुहाय।
गुन न भूलिहौं सजनी, तनक मिलाय ॥
जबते आयौ सजनी, मास असाढ़।
जानि सखि वा तिय के, हिय की गाढ़ ॥
जदपि बसत हैं सजनी, लाखन लोग।
हरि बिन कित यह चित को, सुख संजोग ॥
इन बातन कछु होत न, कहो हजार।
सबही तैं हँसि बोलत, नन्दकुमार ॥
कहा छलत हो ऊधौ, दै परतीति।
सपनेहूँ नहिं बिसरै, मोहनि-मीति ॥

शब्दार्थ—चाव=उत्साह। दाँव=उपाय। सुहाय=अच्छा लगना। अहसान। तिय=स्त्री, वियोगिनी। संजोग=संयोग। परतीती=विश्वास भूलना। मीति=मूर्ति, प्रेम।

सप्रसंग व्याख्या—प्रस्तुत अवतरण रहीम के 'बरवै' का अंश कवि की अनुराग एवं प्रेम सम्बन्धी भावनायें व्यक्त हुई हैं। प्रथम बरवै नोत्कण्ठा नायिका अपनी सखी से अपना अनुराग बताती हुई कहती है कि मन को मोहित करने वाले श्रीकृष्ण से मिलने का कोई उपाय बना उनसे मिलने को मेरे हृदय में दिनों-दिन चौगुना उत्साह बढ़ रहा है।

दूसरे बरवै में वियोगिनी नायिका प्रेमी से मिलाने हेतु सखी क करती हुई कहती है कि मनमोहन श्रीकृष्ण को देखे बिना मुझे ये दिन अ लगते। हे सखी! मैं तेरे इस उपकार के गुण को कभी नहीं भूलूँगो, तू श्रीकृष्ण से मिला दे।

तीसरे बरवै में नायिका श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम की एकनि उल्लेख करती हुई कहती है कि हे सखी! यद्यपि यहां पर लाखों लोग पर श्रीकृष्ण के बिना मेरे इस मन को सुख मिलने का सयोग अवसर सकता है। अर्थात् श्रीकृष्ण से मिलकर ही मेरा चित्त सुख पाता है।

चौथे बरवै में कवि ने श्री कृष्ण के हँसमुख स्वभाव का वर्णन किया है। ो से कृष्ण हँसकर बात करते हैं तब उसकी सखियां उसका मजाक बनाती बयां की व्यंग्योक्ति सुनकर नायिका स्पष्टीकरण देती हुई कहती है कि तुम्हारी गपूर्ण बातों से कुछ नहीं होता, तुम एक बार न कहकर चाहे हजार बार तें कहो क्योंकि हँसकर बोलना श्रीकृष्ण का स्वभाव ही है। वे जैसे मुझ से ऐसे ही सभी गोपियों से हँसकर बोलते हैं। फिर यदि वे मुझसे हँसकर हैं तो इसमें विशेष बात क्या हो गई? भाव यह कि तुम्हारा शक है।

अन्तिम बरवै में गोपियों का उधव से कथन है। हे उधव! आप हमें स दिलाकर छल क्यों कर रहे हैं? हम तो स्वप्न में भी प्रिय श्रीकृष्ण की ी मूर्ति को विस्मृत नहीं कर पाती।

विशेष—उक्त बरवों में रहीम के प्रेम-अनुराग सम्बन्धी भावनाओं की सहज, और स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है। श्रीकृष्ण का स्वभाव वर्णन, सखियों की क तथा नायिका की मिलनोत्कण्ठा हृदय-स्पर्शी है।

(52)

मानुष तन अति दुर्लभ, सहजहि पाय।
हरि भजि कर सत संगति, कह्यो जताय॥
अति अद्भुत छवि-सागर, मोहन-गात।
देखत ही सखि बूड़त, दृग-जलजात॥
बिन देखें कल नाहिन, यह अँखियान।
पल पल कटत कलप सों, अहो सुजान॥
जब तब मोहन झूठी, सौंहें खात।
इन बातन ही प्यारे, चतुर कहात॥ (Imp.)

शब्दार्थ—बूड़त=डूब जाते हैं। दृग जलजात=नेत्र रूपी कमल। कल=चैन। युग। सौंहें=शपथ।

सप्रसंग व्याख्या—प्रस्तुत वाक्यांश प्रसिद्ध नीति कवि रहीम के 'बरवै' से त है। इनमें कवि ने भक्ति, नीति एवं शृंगार सम्बन्धी भावनाओं को क्ति दी है। प्रथम बरवै मे रहीम भगवान की भक्ति और सन्त संगति का देते हुए कहते हैं कि इस जग में मनुष्य की देह अत्यन्त दुर्लभ है। बारम्बार त्यु के करोड़ों चक्करों के बाद मानव देह मिलती है। इस देह को तुमने ही पा लिया है। अब इसे व्यर्थ न करो और भगवान की भक्ति तथा सद्- के द्वारा इस जीवन को सुधारने का प्रयास करो। भाव यह कि बिना हरि और सुसंगति के मानव-जीवन सफल नहीं होता।

दूसरे बरवै में रूप के सागर श्रीकृष्ण की सुन्दरता का वर्ण है। एक सखी की उक्ति है कि हे सखी ! प्रिय श्रीकृष्ण का शरीर अ अनुपम रूप का सागर है। उनको देखते ही मेरे नेत्र कमल उसमें पूरी जाते हैं। मैं उनके रूप के सागर में पूरी तरह निमग्न हो जाती हूँ।

तीसरे बरवै में वियोगिनी नायिका की उक्ति है कि प्रिय कृ बिना इन नेत्रों को चैन नहीं पड़ता। हे चतुर कृष्ण ! तुम्हारे वियोग पल एक-एक युग के समान लम्बा प्रतीत होता है।

विशेष--दूसरे बरवै में रूपक का चमत्कार दृष्टव्य है। भाषा अ प्रसाद और माधुर्य गुण सम्पन्न है।

(53)

कैसे जीवत कोऊ, दूरि बसाय।
पल अन्तरहू सजनी, रह्यो न जाय॥
गये हेरि हरि सजनी, बिहँसि कछूक।
तबते लगनि अगनि की, उठत भबूक॥
उझकि उझकि चित दिन-दिन, हेरत द्वार।
जबते बिछुरे सजनी, नन्द कुमार॥

शब्दार्थ--हेरि=देखकर। बिहँसि=मुसकराकर। भबूक=लप देखना।

सप्रसंग व्याख्या—प्रस्तुत काव्यांश 'प्राचीन काव्य कलाधर' रहीम के 'बरवै' से अवतरित है। इस अवतरण में प्रेम के स्वभाव तथ रत नायिका की विकल दशा का सरस चित्रण हुआ है। एक नायिका अपनी सखी से कहती है कि हे सखी ! जब किसी का प्रियतम रहता हो तो उसके वियोग में उसकी प्रेमिका कैसे जीवित रह सकती है मैं तो प्रिय कृष्ण के वियोग में एक क्षण भी सुख से नहीं रह सकती हूँ।

द्वितीय बरवै में प्रथम दर्शन से उत्पन्न प्रेम का वर्णन करत नायिका सखी से कहती है कि जब से श्रीकृष्ण मेरी ओर देखकर कुछ ह गये हैं, तब से ही हे सखी ! उनके प्रति प्रेम की अग्नि की लपटें मेरे उठ रही हैं।

अन्तिम बरवै में प्रतीक्षारत वियोगिनी का आकर्षक चित्र कवि है। प्रिय की प्रतीक्षा में नायिका एक स्थान पर बैठी नहीं रहती। वह उ कर प्रतिदिन द्वार की ओर देखती है कि न जाने कब उसके बिछुड़े हुए किशोर आ जायें और कब उनसे मिलना हो जाये।

विशेष—प्रस्तुत काव्यांश में वियोग शृंगार का सुन्दर चित्रण हुआ है। ...नियों की मिलनोत्कण्ठा हृदय-स्पर्शी है। शैली चित्रात्मक है।

(54)

तुम सब भाँतिन चतुरे, यह कल बात।
होरी से त्यौहारन, पीहर जात॥
अन्तरगत हिय बेधत, छेदत प्रान।
विष सम परम सबन तें, लोचन बान॥
लखि मोहन की बंसी, बंसी जान।
लागत मधुर प्रथम पै, बेधत प्रान॥
कहा कान्ह ते कहनों, सब जग साखि।
कौन होत काहू के, कुबरी राखि॥

शब्दार्थ--कल=सुन्दर। विष सम=जहर के समान। लोचन बान=नेत्र रूपी ...। लखि=देखकर। बंसी=बांसुरी व मछली पकड़ने का कांटा। साखि=साक्षी।

सप्रसंग व्याख्या--प्रस्तुत अवतरण रहीम के 'बरवै' का अंश है। इनमें ...न अलंकारिक भाषा में प्रेम-व्यंगोक्ति, नेत्रों की प्रभावशीलता, बसी की ...ना और उपालम्भ का सुन्दर वर्णन किया है। प्रथम बरवै में होली के ... पर अपने पीहर जाने को तैयार प्रेयसी पर व्यंग्य करते हुए नायक कहता ...हे प्रिय! तुम सभी प्रकार से चतुर हो। तुम्हारी चतुराई की इससे सुन्दर ...या बात हो सकती है कि तुम होली जैसे मस्ती भरे रंगीले त्यौहार पर पीहर जाने की बात करती हो। भाव यह कि तुम्हें त्यौहार के अवसर पर नहीं जाना चाहिये।

द्वितीय बरवै में आंखों की मारक शक्ति का वर्णन किया गया है। नेत्रों ...भाव बतलाते हुए रहीम कहते हैं कि ये हृदय के भीतरी भाग को बेध देते हैं ...प्राणों में छेद कर देते हैं। नेत्र रूपी बाणों का प्रभाव विष के समान मारक है। नेत्रों के हलाहल का पान करके कोई जीवित नहीं रहता। सभी अपनी ...ध खो देते हैं।

तीसरे बरवै में वंसी की मधुर धुन के प्रभाव का वर्णन है। कवि कहता है ...हन की बांसुरी को देखकर ही मुझे यह अहसास हुआ कि वह बांसुरी न ... मछली को पकड़ने वाला कांटा है। जिस प्रकार कांटे पर लगा हुआ पदार्थ ... को बड़ा मीठा लगता है और उसको खाने के प्रयास में वह उसी में फंसकर ...ता है। उसी प्रकार कृष्ण की बांसुरी सुनने में बड़ी मोहक लगती है, पर वही प्राणों की ग्राहक बन जाती है।

अन्तिम बरवै में प्रेम विदग्ध नायिका का सुन्दर उपालम्भ है। ... है कि श्रीकृष्ण से अब क्या कहना ? सारा संसार ही इसका साक्षी है। ... बात अब जग विदित है जो व्यक्ति किसी कुबड़ी से ही प्रेम करने ... और किसका हो सकता है ?

विशेष—(1) व्यंगोक्ति, उपमा, रूपक, यमक, अनुप्रास आ... सहज भाव से प्रयुक्त हुए हैं।

(2) नायक-नायिका की व्यंगोक्ति एवं उपालम्भ मनोहारी है।

(3) भाषा सरस, मधुर एवं विषयानुकूल है।

5. मीराबाई

(पदावली)

(55)

नैनन बनज बसाऊँगी, जो मैं साहिब पाऊँ।
इन नैनन मेरा साहिब बसता; डरती पलक न नाऊँरी।
त्रिकुटी महल में बना है झरोखा, तहाँ से झांकी लगाऊँरी।
सुन्न महल में सुरत जमाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँरी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार-बार बलि जाऊँरी ॥

शब्दार्थ—नैनन=नेत्रों में। बनज=कमल। साहिब=स्वामी, श्र... त्रिकुटी=दोनों नेत्रों के बीच का स्थान। सुन्न महल=ब्रह्म रूध्र। सु... बलि जाऊँरी=न्यौछावर होती हूँ।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन काव्य क... उद्धृत है। इसमें मीरा का अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण के प्रति समर्पण... मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।

व्याख्या—मीराँ कहती है कि मैं अपने परम प्रियतम श्रीकृष्ण के... उनकी कमल सी मुखाकृति को अपने नेत्रों में बसा लूँगी। वैसे भी मेरे... मेरे प्रिय का ही साम्राज्य है। वे मेरे नेत्रों में रहते हैं। इसी कारण ... पलकों का संचालन भी बन्द कर रखा है, जिससे कि प्रिय को कोई ... हो। प्रिय की असुविधा के भय से मैं अपनी पलकों को भी नहीं गिराती ... कह रही है कि मैंने त्रिकुटी महल में एक सुन्दर झरोखा बना रखा है ... मैं अपने प्रिय के दर्शन करती हूं। वे कृष्ण के लिए शून्य (एकान्त... साधनारत होना चाहती हैं और वहीं प्रिय मिलन के लिए सुख की सेज... चाहती हैं। स्पष्ट शब्दों में मीराँ साधना के द्वारा ही प्रिय को प्राप्त कर... है। मीरां कहती है कि उनके प्रभु गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले...

। वे ही उसके सर्वस्व है और उन्ही के चरण कमलों में मैं बार-बार न्यौछावर जाती हूँ।

विशेष—(1) मीरां के इस पद में हृदय पक्ष की प्रधानता के कारण यधिक प्रभावोत्पादकता आ गई है।

(2) मीरां की साधना माधुर्य भाव की थी, जिसका इस पद में स्पष्ट वर्णन ा है।

(3) 'त्रिकुटी महल' और 'सुन्न महल' शब्दों से विदित होता है कि मीरां र निर्गुण पंथी हठयोगियों और नाम पंथियों का प्रभाव था।

(56)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
छांडि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई।
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आणंद फल होई।
भगति देखि राजी हुई, जगति देखि रोई।
दासी मीरां लाल गिरधर, तारो अब मोहीं ॥5॥ (V. Imp.)

शब्दार्थ—जाके=जिसके। सोई=वही। कानि=मर्यादा। ढिग-समीप। ाणंद फल=आनन्द रूपी फल। तारो=उद्धार करो।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्य 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संकलित मीरां के पदों में से क है। इसमें मीरां की श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति, प्रेमाराधना का भाव और मर्पण की एकनिष्ठता व्यक्त हुई है।

व्याख्या—मीराँ कहती है कि मेरे प्रभु गोवर्धन को धारण करने वाले और ायों के पालक हैं। उन जन रक्षक और सर्व-पालक प्रभु को छोड़कर मेरा इस नियां में कोई प्रिय नहीं है। मोर मुकुट धारण करने वाले श्रीकृष्ण ही मेरे पति । उनको पाने के लिए मैंने अपने कुल की मर्यादाओं का त्याग कर दिया है। प्रेम रा अपना विषय है इसके लिए मेरा कोई क्या करेगा? अर्थात् इस विषय में झे किसी के कहने-सुनने की कोई परवाह नहीं है। मैंने संतों की संगति में बैठ-ठ कर सांसारिक लोक लाज का त्याग कर दिया है। मैंने आंसुओं के जल से ींच-सींचकर प्रेम की बेल बोई है! अब यह बेल फैल गई है अर्थात् काफी बढ़ ई है। अब इसमें से आनन्द के फल निकलेंगे। भाव यह है कि मैं प्रभु आराधना इतनी आगे बढ़ गई हूँ कि अब निश्चय ही प्रभु से मिलन होगा।

मीराँ कहती है कि मैं प्रभु भक्तों को देखकर प्रसन्न होती हूँ
व्यवहार में फँसे मनुष्यों को देखकर मुझे दुःख होता है क्योंकि स
आवागमन से मुक्ति के लिए मानव देह पाकर भी कुछ प्रयास नहीं
प्रभु से निवेदन करती है कि हे प्रभु ! मैं आपकी दासी हूँ। अतः आ
संसार-सागर से मेरा उद्धार कर दीजिये।

विशेष—(1) प्रस्तुत पद में मीराँ ने अपने आराध्य देव
घोषणा की है। यह पद उनकी भक्ति की दृढ़ता तथा सम
उदाहरण है।

(2) 'अँसुवन जल सींची-सींची प्रेम बेली बोई' में प्रेम
सरलता और निश्छलता की व्यंजना होती है।

(3) अनुप्रास और रूपक अलकार का स्वाभाविक प्रयोग हुआ

(57)

रे पपइया प्यारे कब को बैर चितारयो।
मैं सूती छी अपने भवन में, पिय पिय करता पुकारयो
दाध्या ऊपर लूण लगायो, हिवड़ो करवत सारयो
उठि बैठो वा बृच्छ की डाली, बोल-बोल कंठ सारयो
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरि-हरिचरणां चित धारयो

शब्दार्थ—पपइया=पपीहे। चितारयो=याद दिलाना। सूती=स
दाध्य--लगायो=जले पर नमक छिड़कना। करवत=करवत, करोत।
कंठ सारयो=चुप नहीं रहा। धारयो=लगाया।

प्रसंग—प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाध
लित है। इस पद की रचना मीराँबाई ने की है। इस पद में मीराँ
रही है कि तू पीउ शब्द का उच्चारण कर मेरे विरह को क्यों उ
रहा है ?

व्याख्या—मीराँ बाई पपीहे को सम्बोधित करते हुए कह रही
पपीहे ! तूने मेरे से कब का बैर निकाला ? अर्थात् तू पीउ पीउ शब्द
विरह को उद्दीपन कर पता नहीं कब की शत्रुता निकाल रहा है।
भवन में आराम से सो रही थी कि तूने पीउ पीउ शब्द का उच्चार
जगा दिया। मैंने सोचा कि शायद मेरे प्रियतम आ गये है। इस काय
तूने मुझ विरहिणी के दग्ध हृदय पर मानो नमक छिड़ककर उसे और
उस समय मेरे हृदय पर मानो करोत सी चल गयी। तू मुझे ही सताने
पर ऊँची डाली पर बैठा और पीउ पीउ शब्द बोलने लगा फिर तू

न नहीं रहा है। पपीहे तू कितना दुष्ट और निर्मम है। मीराँ कहती है कि मेरे भगवान गिरधर नागर ही हैं और मैंने उन्हीं भगवान के चरणों में अपना मन या है।

विशेष—(1) प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण।

(2) वियोग-शृंगार की प्रभावी अभिव्यक्ति।

(3) माधुर्य गुण एवं शान्त रस।

(58)

कोई कहियौ रे प्रभु आवन की।
आवन की मन भावन की।
आप न आवै लिख नहीं भेजै, बाण पड़ी ललचावन की।
ए दोइ नैण कह्यो नहिं मानै, नदिया बहै जैसे सावन की।
कहा करूँ कछु बस नहीं मेरो, पाँख नहीं उडजावन की।
मीराँ कहै प्रभु कब रे मिलोगे, चेरी भई हूँ तेरे दाँवन की ॥9॥

शब्दार्थ—प्रभु आवन की=प्रिय के आने की। मन-भावन=मन को भाने ना। बाण=आदत, स्वभाव। चेरी=दासी। दाँवन=आँचल।

प्रसंग—प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य-पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधर' मे संकलित ा है। इसमें प्रेम वियोगिनी मीराँ की प्रतीक्षा, विरह व्याकुलता और आराध्य प्रति समर्पण भाव की सरस अभिव्यक्ति हुई है।

व्याख्या—मीराँ कहती है कि मेरे प्रिय के आगमन की कोई तो सूचना । मेरे प्रिय मेरे मन भावन हैं। उनके आने के समाचार से मुझे अपार हर्ष ता है। मेरे प्रिय कुछ ऐसे निष्ठुर हो गये हैं कि वे स्वयं नहीं आते और न हीं ई समाचार लिखकर ही भेजते हैं। उन्हें तो मुझे प्रतीक्षा कराते रहने में ही नन्द आता है। उन्हें मुझे ललचावन की कुछ आदत सी पड़ गई है। मैं प्रभु ोग में कुछ ऐसी पागल सी हो गई हूँ कि मेरे नेत्र भी मेरे वश में नहीं रहे और दोनों नेत्र ऐसे बरसते हैं जैसे सावन मास में नदियां बहती हों। मैं इन्हें झाना चाहती हूँ, पर नत्रों से आँसू थमते ही नहीं है। मीराँ अपनी विवशता उल्लेख करती हुई कहती है कि मैं प्रिय से मिलना चाहती हूँ, पर मेरे पक्षियों भांति पंख भी नहीं हैं जो उड़कर उनके पास तक पहुँच जाऊँ। मैं हर प्रकार लाचार और विवश हूँ। अन्त में मीराँ कहती हैं कि हे प्रभु! आप मुझे कब न देंगे? मैं तो आपके चरणों की दासी हूँ। मैंने तो हमेशा के लिए आपका ल थाम लिया है। आप आकर मुझसे कब मिलेंगे?

विशेष—(1) इस पद में मीराँ की विरह वेदना, परवशता और प्रिय की ठुरता का प्रभावी वर्णन हुआ है।

(2) उपमा एवं अनुप्रास का स्वाभाविक प्रयोग भावाभि
बनाने में सहायक हुए हैं।

(59)

मेरा मन रामहि राम रटै रे।
राम नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।
जनम जनम के खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे।
कनक कटोरे इम्रत भरियो, पीवन कौन नटै रे।
मीराँ कहै प्रभु हरि अविनासी, तन मन ताहि पटै रे।

शब्दार्थ—रटै रे=रटता है। कोटिक=करोड़ों। कटै रे=ना
अपराध। इम्रत=अमृत। अविनासी=अमर। पटै रे=भरे हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत पद 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संकलित म
से लिया गया है। इस पद में मीराँ ने प्रभु के नाम स्मरण की म
किया है।

व्याख्या—कवयित्री मीराँ कहति हैं कि हे सखी! मेरा
सांवरे कृष्ण का ही स्मरण करता है। मीराँ सामान्य मनुष्यों
कर कहती है कि हे प्राणियों! प्रभु का नाम स्मरण करने से तेरे
कट जायेंगे। जन्म-जन्म से चले आ रहे तेरे अनेक अपराध श्री
स्मरण करने से समाप्त हो जायेंगे। प्रभु की भक्ति स्वर्ण पात्र में
जैसी है फिर भला उसे पीने से कौन इन्कार करेगा? मीराँ कहती
अनश्वर हरि है और मेरा तन मन सब उन्हीं से मिल गया है।
अपने सांवरे की हो गई हूँ।

विशेष—प्रभु के नाम स्मरण की महिमा का उल्लेख है।

(60)

म्हाँ गिरधर रंग राती, सैंया म्हाँ।
पंचरंग चोला पहर सखी, म्हाँ झिरमिट खेलन जाती
वाँ झिरमिट माँ मिल्यो सांवरो, देख्यो तन मन राती
जिणरो पिय परदेश बस्यांरी, लिख लिख भेज्यां पाती
म्हारां पियां म्हारे हीवड़े बसतो, णां आवां ना जाती
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मग जोवां दिण राती।

शब्दार्थ—म्हां=मैं। राती=रंग गई। पंचरंग चोला=पंच मह
शरीर। झिरमिट=एक खेल जिसमें अंगुलियां पकड़ कर गोलाई
दिण=दिन। पाती=पत्र। हीवड़े=हृदय में।

प्रसंग मीरां अपने प्रियतम कृष्ण को सदैव अपने हृदय में ही देखती है। हती है—

व्याख्या—मीराँ कह रही है कि मैं तो कृष्ण के प्रेम में रंग गई हूँ। उन्हीं अपना प्रियतम स्वीकार किया है। मैंने पंच महाभूतों से निर्मित शरीर रूपी पहना है और मैं श्रीकृष्ण के साथ झिरमिट का खेल खेलने जाती हूँ। कभी यतम के अपने हृदय में दर्शन करती हूँ और कभी वे लुप्त हो जाते हैं। उसी मुझे कृष्ण दिख गये। मैं उनको देखते ही अपने तन-मन से उनको समर्पित ई। जिन स्त्रियों के पति दूसरे देशों में रहते हैं वे ही स्त्रियां पत्र लिख-लिखकर पास भेजती हैं। लेकिन मुझे तो इस तरह की कोई जरूरत महसूस नहीं।

मेरे प्रिय तो मेरे हृदय में ही रहते हैं। मैं अपने प्रभु की प्रतीक्षा में निर-लीन रहती हूँ। गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले प्रभु श्री कृष्ण ही मेरे हैं। हे प्रिय! मुझे आप कब अपने दर्शनों से कृतार्थ करेंगे।

विशेष—(1) प्रस्तुत पद रहस्यवादी भावना से परिपूर्ण है। पंचरंग चोला झिरमिट आदि शब्द सन्तों की भाषा जैसे हैं। रंगराती में लाक्षणिकता है।

(2) अन्तिम दो पंक्तियों में विरोधाभास तथा लिख-लिख में पुनरुक्ति प्रकाश रों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

(61)

राणा जी थे क्यांने राखो म्हाँसू वैर।
थे तो राणा जी म्हांने इसड़ा लागो ज्यों अच्छन में कैर।
महल अटारी हम सब त्याग्या, त्याग्यो थारा बसनो सहर।
काजल टीकी राणा हम सब त्याग्या भगवीं चादर पहर।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, इमरित, कर दियो जहर ॥15॥

शब्दार्थ—थे=आप। क्यांने=क्योंकर। म्हांसू=मेरे से। इसड़ा=ऐसे। अच्छन= कैर=कटीला व पत्र-हीन झाड़। बसनो=बसना, शासित। भगवी=गेरुए या य वस्त्र। इमरित=अमृत। गिरधर नागर=श्री कृष्ण।

सप्रसंग व्याख्या—मीराँ बाई राणाजी को सम्बोधित करते हुए कह रही हे राणाजी! आप मुझसे इस प्रकार शत्रुता क्यों कर रखते हैं? मैंने आपके या बुरा कार्य किया है जो आप मुझसे शत्रुता रखते हैं। मैं तो अपने भग-श्रीकृष्ण की ही आराधना में लगी रहती हूँ। आप मेरे से अकारण ही बैर क्यों रखते हो? इसी कारण आप मेरे को इस तरह प्रतीत होते हो जैसे—कि अन्दर कैर का वृक्ष होता है। अर्थात् जिस तरह पत्र व पुष्प रहित कैर का

वृक्ष असुन्दर होता है, उसी तरह आप भी मेरे को अच्छे नहीं लगते श्रीकृष्ण प्रेम के कारण ही आप के महल और अटारी सबको साथ ही आपके द्वारा शासित शहर को भी छोड़ दिया है। भाव यह पूर्ण रूप से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है। हे राणाजी मैंने श्री काजल, टीकी सब का त्याग कर दिया है अर्थात् सौन्दर्य व शृंग साथ ही सौभाग्य सूचक चिन्हों का भी त्याग कर दिया है। मैंने धारण कर लिया है। मीराँ कहती है कि हे प्रभु गिरधर नागर! विशेष कृपा है। इसी कारण आपने राणा द्वारा भेजा गया जहर लिए अमृत में बदल दिया। इस तरह आपकी कृपा का किन शब्दों मे आपकी मुझ पर अपार कृपा है।

विशेष—(1) प्रस्तुत पद आत्म साक्ष्य से सम्बन्धित है। के बाद उन्हें अपने ससुराल मे जिन कष्टों का सामना करना उसका एक प्रमाण है।

(2) भाषा में राजस्थानी पुट और संस्कृति की झलक है।

(62)

जोगियाजी निसदिन जोऊं बाट।
पांव न चाले पंथ, दुहेलो आड़ा औघट घाट।
नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पा
मैं भोली भोलापन कीन्हों राख्यों नहीं बिलमा
जोगिया कूं जोवत बोहो दिन बीता, अजहूँ आयो नाह
बिरह बुझावण अन्तरि आवो, तपन लगी तन माह
कै तो जोगी जग में नाही, कैर बिसारी मो
कांई करु कित जाऊरी सजनी, नैण गुमायो रो
आरत तेरी अन्तरि मेरो, आवो अपणी जाणि
मीराँ व्याकुल विरहणी रे, तुम बिन तलफत प्राणि

शब्दार्थ—जोगियाजी=योगीजी, प्रियतम। निसदिन=रात-दि प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। चाले=चलता है। दुहेलो=विकट। औघट घाट=अटपटा मार्ग। बिलमाइ=प्रेम पाश में फंसा लेना। खोजते। बोहो=बहुत। विरह-बुझावन=विरह के ताप को बुझाने के लालसा। अन्तरि=हृदय में। कै=या। कैर=अथवा। कांई=क्या किया। जाणि=जानकर। तलफत=तड़पता है। प्राणि=प्राण।

प्रसंग—यह पद हमारी पाठ्य-पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधर' से संकलित इस पद में मीराँ का विरहिणी रूप अभिव्यक्त हुआ है। प्रस्तुत पद पर नाथ ों का भी पर्याप्त प्रभाव देखा जा सकता है।

व्याख्या—अपने प्रियतम को सम्बोधित करते हुए मीराँ कहती है कि हे राज प्रियतम ! मैं तो रात-दिन तुम्हारी ही बाट जोहती रहती हूँ। प्रेम के विकट मार्ग मे मेरे पांव नहीं चल पाते क्योंकि प्रेम का यह मार्ग विचित्र और है। मीराँ कहती है कि वह योगी नगर में आया था किन्तु मेरे मन की भावना का मूल्यांकन नहीं कर सका। साथ ही मैं भी भोली थी जो उस योगी अपने प्रेम-पाश में नही फंसा सकी। उस योगी की प्रतीक्षा करते-करते बहुत बीत गये, वह अभी तक नहीं आया। मीराँ कहती है कि हे योगीराज प्रिय-! विरहाग्नि को बुझाने के लिये मेरे हृदय में बस जाओ। मेरा शरीर भी के ताप से जल रहा है। योगी के न आने के कारण मीराँ निराश हो जाती र सोचती है कि या तो वह योगी संसार में नहीं है अथवा उसने मुझे भुला है मीराँ अपनी सखी से पूछती है कि हे सखी ! मैं क्या करूँ ? कहां जाऊँ ? तो योगी के विरह मे रोते-रोते अपने नेत्र अर्थात् उनकी ज्योति भी नष्ट कर । हे योगीराज ! मेरे हृदय में तेरी लालसा बनी हुई है। अपना जानकर मुझे देने आओ। मैं तो व्याकुल विरहिणी हूँ और तुम्हारे बिना मेरे प्राण अर्थात् तड़प रहा है।

यदि तुमने दर्शन नहीं दिये तो मेरा जीवित रहना मुश्किल है।

विशेष—(1) मीराँ के इस पद में विरह की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। प्रतीक्षा, चिंता और अभिलाषा जैसी विरह दशायें इस पद में देखी जा सकती है।

(2) 'कै तो जोगी जग में नहीं' पंक्ति में संदेह अलंकार का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

(3) 'जोगिया' शब्द साभिप्राय है जो श्रीकृष्ण का वाचक है। मीराँ ने अपने अनेक पदों में जोगिया शब्द को श्रीकृष्ण के पर्याय रूप में ही प्रयोग किया है।

(63)

जोगी मत जा मत जा मत जा, पांइ परूं मैं तेरी चेरी हौं।
प्रेम भगति को पैंडों ही न्यारो, हमकूं गैल बता जा।
अगर चंदण की चिता बणाऊं, अपने हाथ जला जा।
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अंग लगा जा।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा ॥18॥

शब्दार्थ—पैंड़ों=मार्ग । गैल=रास्ता । भस्म=राख । जोत=ज्योति

सप्रसंग व्याख्या—प्रस्तुत पद में मीराँ के विरह की चरमावस्था व्यक्त होती है । वह आये हुए प्रियतम को न जाने के लिए विनय करती है–हे योगीराज प्रिय ! तुम हमें छोड़कर मत जाओ, मत जाओ । मैं तुम्हें तुम्हारे चरण पकड़कर विनय करती हूँ कि मुझे अकेला छोड़कर मत प्रिय ! तुम्हारे प्रेम-भक्ति का मार्ग बड़ा ही विचित्र है । तुम्हें पाने के यथा सम्भव सब कुछ किया फिर भी तुम्हें प्राप्त नहीं कर सकी । अब तुम्हा मुझ से न हो सकेगी । मैं अपने को पूरी तरह से तुम पर न्यौछावर कर दे हूँ । मैं अगर और चन्दन की चिता सजाती हूँ उसमें तुम अपने हाथों से दो । मैं जलकर भस्म की ढेरी बन गई हूँ अब इसे अपने अंग पर ल जाना । जीवित रहते न सही मर कर ही तुम्हारे स्पर्श का सुख तो मैं से प्राप्त कर लूंगी । अन्त में मीरा गिरधर नागर से प्रार्थना करती हुई हे प्रभु ! मेरी जीवात्मा को अपना ही अंश मानकर अपने आप में मिला इससे मैं आपसे एकाकार होकर जन्म-मरण के बन्धन से छूट जाऊं जीवन सार्थक हो जायेगा ।

विशेष - प्रस्तुत पद में मीराँ की विरह भावना की सरस अभि है । मीराँ प्रभु से एकाकार होने को उत्सुक है । 'जोति में जोति मिल मीराँ का दर्शन संकेतिक है ।

(64)

थाने काँई काँई कह समझाऊँ, म्हारा बाला गिरधारी ।
पूर्व जन्म की प्रीत हमारी, अब, नाँहि जात निवारी ।
सुन्दर बदन जोवते सजनी, प्रीति भई छै भारी ।
म्हारे घर पधारो गिरधर, मंगल गावै नारी ।
मोती चौक पुराँउ बाल्हा, तन मन तो पर वारी ।
म्हारों सगपण तोसूँ साँवलिया, जुगसूँ नहीं विचारी ।
मीराँ कहे गोपिन को बाल्हा, हमसूँ भयो ब्रह्मचारी ।
चरण सरण हैं दासी तुम्हारी, पलक न कीजै न्यारी ।।19

शब्दार्थ—काँई=क्या । जोवते=देखते हुए । निवारी=भूलाई । मो पुराँउ=मोतियों से चौक सजाऊँ । जुगसू=जगत से । बाल्हा=बालक ।

सप्रसंग व्याख्या—मीराँ बाई अपने प्रियतम साँवरे गिरधारी को करते हुए कह रही है कि हे गिरधारी ! मैं आपको क्या-क्या कह कर स जिससे आप प्रसन्न हो जायें । हे गिरधर लाल ! आपकी और मेरी तो

गति है। इसे किस प्रकार भुलाया जा सकता है। अर्थात् जन्म जन्मान्तरों के प्रगाढ़ प्रेम-सम्बन्ध का विच्छेद कर आप मुझसे अलग न हों। हे साजन! के सुन्दर मुख की छटा देखते ही बनती है। मैं तो इस अनुपम रूप माधुरी पर हारी जाती हूँ। हे श्याम! आप कृपा कर मेरे यहाँ पधारे, मेरे घर आँगन वित्र करें। आपके स्वागत में हम सब नारियाँ मंगल गीत गायेंगी। आपके मन के उपलक्ष्य में हम मोतियों से चौक पुरायेंगी, नयनों के पलक पावड़े येंगी तथा अपना तन मन सर्वस्व आप पर न्यौछावर कर देंगी। हे साँवलिया प्रेम तो आपसे हो गया है फिर मैं इस संसार की चिन्ता क्यों करूँ? मीराँ रही है कि हे कृष्ण! आप गोपियों के लिए तो प्रियतम रूप में हो जाते हो आप मेरे लिए ब्रह्मचारी किस प्रकार बन जाते हैं। यह मीराँ तो आपके ही णों की शरण में है। अतः आप इसे पल भर भी अलग मत कीजिये। भाव कि मीराँ को अपनी प्राण-संगिनी बनाकर इसकी जन्म-जन्मान्तर की साधना ल कीजिए।

विशेष—प्रस्तुत पद मे मीराँ की भक्ति भावना की सरस अभिव्यक्ति हुई मीराँ अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर श्रीकृष्ण से अपना अटूट सम्बन्ध जोड़ती है। स्थानी संस्कृति और लोकाचार की अभिव्यक्ति मीराँ काव्य की विशेषता है।

(65)

पपइया रे पिव की वाणी न बोल।
सुणि पावेली बिरहणी रे थारो रालेली पाँख मरोड़।
चाँच कटाऊँ पपइया रे, ऊपरि कालर लूण।
पिव मेरा मैं पीव की रे तू पिव कहै स कूण।
थारा सबद सुहावणा रे, जो पिव मेला आज।
चाँच मढाऊँ थारी सोवनी रे, तू मेरे सिरताज।
प्रीतम कूँ पतियाँ लिखूँ, कउवा तू ले जाइ।
जाइ प्रीतम जी सूँ यूँ कहै रे, थारी बिरहणी धान न खाई।
मीराँ दासी व्याकुल रे, पिव पिव करत बिहाय।
बेगि मिलो प्रभु अन्तर जामी, तुम बिनि रह्यो ही न जाइ ॥22॥

(Imp.)

शब्दार्थ—पपीहा=चातक। पिव की=प्रिय की। रालेली=डालेगी। काल =काला नमक। मेला=मिलन। सोवनी=सोने से। कउवा=कव्वा। धान= न। बिहाइ=बिताती है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद मीराँ की बिरह भावना से सम्बन्धित है। इस पद

मीरां पपीहे को सम्बोधित कर अपनी विरह भावना को मार्मिक ढंग से
अन्तर्यामी प्रियतम से मिलन हेतु निवेदन करती है।

व्याख्या—पपीहे को पीव-पीव बोलते सुनकर मीराँ कहती है कि तू मेरे प्रियतम की वाणी मत बोल। तेरे पीव-पीव बोलने से मुझ वि अपने प्रियतम की स्मृति हो जाती है। यदि तू मेरी बात नहीं माने विरहिणी मीरां तेरे पखों को मरोड़ डालेगी। मैं तेरी चोंच को कटवा क काला नमक छिड़क दूंगी। अरे पपीहा! क्या तू नहीं जानता कि प्रिय मैं प्रिय की हूँ फिर भला तू प्रिय-प्रिय कहने वाला होता कौन है? विरहिणी मीराँ की मनः स्थिति में परिवर्तन होता है और वह पपीहे से पूर्वक कहती है कि यदि तेरी पी-पी सुनकर मेरा प्रिय आ जायेगा तो स्वर (प्रिय की उपस्थिति में) बड़ा सुहावणा लगेगा। हे प्यारे! तब चोंच को सोने से मँढ़वा दूँगी।

मीराँ कोवे को सम्बोधित करके कहती है कि हे कोवे! मैं पत्र लिखूंगी और उन पत्रों को ले जाकर तुम प्रिय को दे देना। तुम यह सन्देश कहना कि तुम्हारी विरहिणी तुम्हारे वियोग में अन्न का त्याग है और वह आपके वियोग में निरन्तर आपका ही स्मरण करने हुए जैसे- समय बिताती है। मीराँ कह रही है कि हे अन्तर्यामी प्रभु! आप शीघ्र मुझे दर्शन दीजिये। अब तो आपकी अनुपस्थिति में मेरा और जीवित रह नहीं है। भाव यह है कि यदि अभी भी आपने दर्शन नहीं दिये तो यह प्राणों को त्याग देगी।

विशेष-(1) इस पद में मीरां की विरह भावना की प्रभावोत्प व्यक्ति हुई है। मीराँ की दो विपरीत मनः स्थितियों का इस पद में सु हुआ है।

(2) पपीहे को सम्बोधित कर विरह संदेश भेजने का उल्लेख रा दूहा' और 'जायसी ग्रन्थावली' में भी देखने को मिलते हैं। भा दृष्टि से एक उदाहरण देखिये—

"बाबहिया निलपंखिया, बाढत दइ-दइ लूण।
प्रिय मेरा मइ प्रीउ की, तू प्रिउ कहइ स कूण॥"

(66)

झुक आई बदरिया सावन की, सावन की मनभावना की।
सावन में उमग्यो मेरा मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़ घुमड़ चहु दिसि से आयो, दामण दमक झर लावन की।

नन्ही नन्हीं बूंदन मेहा बरसै, सीतल पवन सोहावन की।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, आनंद मंगल गावन की ॥25॥

शब्दार्थ—बदरिया=बादली। मन भावन=मन को भाने वाली। उमग्यो=
त हुआ। भनक=समाचार। दामण=बिजली। झर-झड़ी। गावन की=
।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्य 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संकलित मीराँबाई के पदों
तृत है। इसमे मीरां प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित कर अपने प्रिय के
का संदेश प्राप्त करती है। प्रकृति के उद्दीपन रूप का चित्र प्रस्तुत करते
यिनी ने प्रिय मिलन की मनोहारी कल्पना की है।

व्याख्या—मीरां अपनी सखी को सम्बोधित कर कहती है कि हे सखी!
मास की बादली बरस रही है। सावन की यह ऋतु मन को भाने वाली और
त करने वाली है। इस ऋतु में मैंने प्रिय आगमन की हल्की सी खबर सुनी
तः मेरा मन आनन्दित हो रहा है। बादल चारों ओर से उमड़-घुमड़ कर
हैं, बिजली चमक रही है और वर्षा की झड़ी लगी है। नन्ही-नन्हीं जल
दों के रूप में वर्षा हो रही है और सुहावनी शीतल हवा चल रही है।
कहती है कि यह सारा वातावरण मुझे प्रिय आगमन का संदेश दे रहा है।
यतम गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले चतुर कृष्ण हैं। मैं उनके
न पर आनन्दित होकर मंगल गीत गाऊँगी।

विशेष :— ( ) प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण हुआ है।

(2) उपमा, अनुप्रास और पुनरुक्ति प्रकाश अलकारों का स्वाभाविक प्रयोग
सौंदर्य में वृद्धि कर रहा है।

(67)

म्हारां ओलगिया घर आया जी।
तन की ताप मिटी सुख पाया, हिलमिल मंगल गाया जी।
घन की धुनि सुनि मोर मगन भया, यूं मेरे आणंद छाया, जी।
मगन भई मिलि प्रभु आपणासूं, भौ का दरद मिटाया, जी।
चंद कूं देखि-देखि कमोदणि फूलै, हरखि भया मेरी काया जी।
रग-रग सीतल भई मेरी सजनी, हरि मेरे महल सिधाया जी।
सब भगतन का कारज कीन्हा, सोई प्रभु मैं पाया जी।
मीरां बिरहणि सीतल होई, दुख दुन्द दूरि न्हसाया जी ॥27॥

शब्दार्थ—ओलगिया=प्रियतम जो प्रवासी हो। म्हारां=हमारे। ताप=
। मगन=प्रफुल्लित। अपणासूं=अपने से। भौं=भव। हरख=हर्ष। काया=

शरीर। सजनी = सखी। भगतन=भक्तों। कारज=कार्य। दुन्द=झग
नष्ट कर दिये।

प्रसंग—इस पद में मीरां ने प्रिय मिलन से प्राप्त आनन्द का वर्णन किया है। प्रिय मिलन से उनके समस्त दुःख सन्ताप नष्ट हो

व्याख्या—मीरां कह रही है हमारा प्रवासी प्रिय घर आ मिलन से सारे शरीर की पीड़ा दूर हो गई है। मुझे आनन्द भी प्र मैंने प्रियतम से मिलकर मंगल गीत गाये। जिस प्रकार बादलों की मोर प्रसन्न हो उठते हैं उसी प्रकार प्रियतम के मिलन से मुझे भी प्राप्त हुआ है। मैं अपने स्वामी से मिलकर आनन्द मग्न हो गई हूँ अ सांसारिक पीड़ा नष्ट हो गई। जिस प्रकार चन्द्रमा को देखकर कुमुदि है उसी प्रकार प्रिय दर्शन से मेरा शरीर प्रफुल्लित हो गया। हे स मेरे राज भवन में पधारे हैं। जो भगवान सब भक्तों पर दयालु हैं औ कार्य करते हैं, उसी भगवान को मैंने प्राप्त कर लिया है। विरहिणी के मिलन से तृप्त हो गई और उसके दुःख-द्वन्द्व सब नष्ट हो गये है

विशेष--(1) 'घन की धुनि सुनि मोर मगन भया' और ' कमोदिनी फूलें' में दृष्टान्त अलकार हैं।

(2) प्रिय मिलन की आनन्दमयी स्थिति का चित्रण स्वाभा

6. ढोला मारु रा दूहा

(68)

ऊलंबे सिर हथ्थड़ा, चाहंती रसलुध
विरह महाघरा उमड़यउ, थाह निहालइ मुध्ध ॥3॥
ऊलंबे सिर हथ्थडा, चाहंती रसलुध ।
ऊंची चढि चातृंगि जिउं, मागि निहालइ मुध्ध ॥4॥
थाइ निहालइ, दिन गिणइ, मारु आमा लुध्ध।
परदेसे घांघल घणा, विखउ न जाणइ मुध्ध ॥5॥

शब्दार्थ–अलम्बे=अवलम्बित किये। हथ्थड़ा=हथेलियों पर। रस विभोर। महाघरा=प्रलय मेघ। थाह=सीमा। निहालई=देखती है मुग्ध=मुग्धा नायिका। घांधल=झंझट। विखउ=कष्ट।

प्रसंग–ये दोहे राजस्थान की प्रसिद्ध प्रेम गाथा 'ढोला मारू' क हैं। इन दोहों में विरहिणी मारवणी की व्याकुलता का मर्मस्पर्शी चि मिलनोत्कण्ठा दर्शनीय है।

व्याख्या—विरहिणी मारवणी अपनी हथेलियों का अवलम्ब टिकाए अन्य मनस्क भाव से अपने जीवन में उमड़ आये प्रलय मेघों क

है। वह अपनी इस असीम विरह वेदना का अन्त पाना चाहती है और निराकरण के उपाय का चिन्तन कर रही है।

विरहिणी मारवणी चातक की भाँति ऊँचो चढ़कर प्रियतम के आने का ख रही है। भाव यह कि जिस प्रकार चातक को स्वाति मेघ की प्रतीक्षा है, उसी प्रकार मारवणी को अपने प्रिय के आने की प्रतीक्षा है। वह बार-अट्टालिका पर चढ़कर प्रिय के आने की राह देखती है।

कवि कहता है कि मारवणी प्रिय मिलन की आशा में थाह खोजती है। थाह विरह सागर का अन्त खोजना चाहती है और प्रतीक्षा में डूबी व्याकुलता नुभव करती हुई दिन गिनती रहती है। परदेश में अनेक प्रकार के झंझट हैं पर मुग्धा नायिका को इसका ज्ञान नहीं है। यदि उसे विदेश-प्रवास की ओं का ज्ञान होता तो वह प्रिय को लेकर इतनी चिन्तित नहीं होती।

विशेष-(1) प्रस्तुत काव्यांश में मारवणी की विरह कथा, मिलनोत्कण्ठा, अभिलाषा का बड़ा सरस चित्रण हुआ है।

(2) रूपक अतिशयोक्ति व उत्प्रेक्षा अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

(3) भाषा में प्रवाह और मधुरता है।

(69)

सस्नेही समंदा परई, वसत हिया मंझार।
कुसनेही घर आँगणई, जांण समंदाँ पार ॥9॥
सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा तोइ।
खिण खिण अन्तर संभरइ, नहीं विसारइ सोइ ॥10॥
दाबहियउ नइ विरहणी, दुहुवां एक सहाव।
जब ही बरसइ घण घणउ, तबह कहइ प्रीयाव ॥13॥ (In.p)

शब्दार्थ—सस्नेही=सच्चा प्रेमी। समंदा=समुद्र। परइ=दूर। मंझार=में। हा=वालम। अणदिट्ठा=बिना देखा। तोइ=तथापि। संभरइ=स्मरण। ां=दोनों का। घण=घन, बादल। प्रीयाव=प्रिय आओ।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश राजस्थान के प्रसिद्ध लोक काव्य 'ढोला मारू' से लित हैं। इन दोहों में कवि ने सस्नेही और कुस्नेही के भेद को बताते हुए है तथा विरहिणी की स्वभावगत समानता का उल्लेख किया।

व्याख्या—मारवणी अपनी सखियों से कहती है कि सच्चा प्रेमी व्यक्ति समुद्रों पार रहकर भी हृदय में निवास करता है और जिस व्यक्ति से हमारा व नहीं होता वह चाहे घर में ही रहे तो भी वह हमें समुद्र पार से दूर लगता भाव यह कि स्नेह ही व्यक्ति को पास लाता है। जिससे स्नेह है वह दूर रहकर पास रहता है और जिससे स्नेह नहीं है वह पास रहकर भी दूर ही रहता है।

मारवणी कहती है कि मैंने अपने साजन को अभी तक देखा न... मेरा हृदय प्रति क्षण उसकी याद करता है और उसे भूलता नहीं है...

मारवणी की विरह व्यथित स्थिति की तुलना पपीहे से... कवि कहता है कि नई विरहिणी तथा पपीहे दोनों का स्वभाव स... ये दोनों ही उस समय अपने प्रियतम को बुलाने की पुकार अधिक... बादल खूब अधिक वर्षा करते हैं। भाव यह कि वर्षा ऋतु वियोगिन... दुखदायी होती है।

विशेष—(1) प्रथम दोहे के भाव साम्य की दृष्टि से कबीर... पंक्तियां देखी जा सकती है—

"कुमुदनी जल हरि बसै, चन्दा बसै आकास।
जो जाहि को भावता, सो ताहि के पास॥"

(2) तीसरे दोहे में प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण हुआ है।

(3) उपमा और अनुप्रास का स्वाभाविक प्रयोग दृष्टव्य है।

(70)

बाबहिया निलपंखिया, मगरि ज काली रेह।
मति, पावस सुणी विरहणी, तलफि-तलफि जिउ देह॥17॥
बाबहिया तरपंखिया, तइ किऊं दीन्ही लोक।
मई जाण्यउ प्रिउ आवियउ, ससहर चंद चकोर॥18॥
बाबहिया निलपंखिया, बाढत दइ दइ लूण।
प्रिय मेरा मइं प्रीउ की, तू प्रिउ कहइ स कूण॥19॥

शब्दार्थ—बाबहिया=पपीहे। निलपंखिया=हरे पंखों वाले। म... रेह=रेखा। तलफि=तड़पकर। तरपंखिया=हरे पखों वाले। लोक=टेर... चन्द्रमा। बाढत=काटना। कूण=कौन।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'प्राचीन काव... से उद्धृत है। मारवणी अपने प्रिय ढोला के वियोग में दुःखी है। वह... सम्बोधित कर अपनी विरह व्यथा को अनेक भावों से व्यक्त करने का प्र... है। प्रस्तुत अंश म मारवणी के विरह की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति हुई है।

व्याख्या—मारवणी कह रही है कि हे नीले अर्थात् हरे पंख... पर काली रेखाओं वाले पपीहे! तू अब और न बोल। इस पावस... विरहणी तेरी टेर सुनकर ...ी तड़प-तड़प कर प्राण ही न दे दे। ... तेरी टेर प्रिय का स्मरण कराने वाली है और प्रिय वियोग में प्रिय की ... कर ...ोई विरहिणी अपने प्राण दे सकती है। अतः इस वर्षा में ... स्मृति न दिला।

ाहे को पी-आव, पी-आव की टेर लगाते सुनकर मारवणी कहती है रे पंखों वाले पपीहे तूने यह टेर लगाना क्यों शुरू कर दिया ? तेरी इस ाकर मुझे लगा कि मेरे प्रियतम आ गये। वे प्रिय मुझे दर्शनोत्सुक चकोर शांकधर चन्द्रमा के समान हैं।

ारवणी पपीहे से कहती है कि हे पपीहे ! तू अपनी टेर से मुझ विरहिणी को और अधिक उद्दीप्त कर मानो मुझे नमक लगा-लगाकर काट रहा पपीहे ! मैं पिउ की हूं और मेरा पिउ मेरा है फिर भला तू पिउ-ने वाला कौन होता है ?

विशेष—(1) प्रस्तुत काव्यांश में विरहिणी मारवणी की विरह व्यथा जन्य मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। प्रकृति का वर्णन उद्दीपन रूप में किया

(2) उदाहरण, रूपक व पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का सहज सौन्दर्य ीय है।

(71)

गिरिवर मोर गहक्किया, तरवर मूँक्या पात।
धणियां घण सालण लगा, बूठंतै बरसात ॥24॥
राजा, परजा, गुणिजयण, कविजण, पंडित पात।
सगलां मन ऊछव हुयउ, बूठंजै बरसात ॥25॥
ऊनमियउ उत्तर दिसइ मेंड़ी ऊपर मेह।
ते विरहिणी किम जीवसे प्यांरा दूर सनेह ॥27॥

शब्दार्थ—गिरिवर=पर्वतों पर। गहक्किया=उमंग से भर गये। मूंक्या= । धणि=पति। घण=स्त्री, प्रेयसी। सालण=सताने। पात=पत्ते। ऊछव= । ऊनमियउ=उमड़ आई है। मेंडी=अटारी। किम=कैसे।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश 'प्राचीन काव्य कलाधर' में संकलित 'ढोला-मारु' ों से उद्धृत है। इसमें वर्षा ऋतु के आरम्भ में विरहिणी मारवणी के दुःख का मार्मिक वर्णन देखने को मिलता है।

व्याख्या—वर्षा होने के साथ ही पर्वतों पर मोर उमंग से भर गये हैं तथा ने नये पत्ते दिये हैं। वर्षा की इस मादकता में प्रोषित पतिकाओं को पतियों की याद सालने लगी। वियोगनियों को रह-रहकर अपने प्रिय की आने लगी।

वर्षा ऋतु के साथ ही राजा, प्रजा, गुणी, कविजन, पण्डित और पेड़ों पर सभी के मन में उल्लास भर गया। सभी आनन्दित हो गये परन्तु

विरहिणी मारवणी प्रिय के पास न होने पर उदास हो गई। उस
की झड़ी लग गई।

मारवणी अपनी दशा का वर्णन करती हुई कह रही है
की ओर से मेरी अटारी पर मेघमाला उमड़ कर आ गई है, ऐसे में
कैसे जियेगी जिसका प्रिय उससे दूर है। भाव यह कि वर्षा ऋतु
का जीवित रह पाना कठिन होता है।

विशेष—(1) प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण है। वर्षा ऋ
का जीवित रह पाना सम्भव नहीं हो पाता।

(2) वियोग शृंगार, माधुर्य भाव और भाषा की सहजता द

(72)

गिरह खालरण, सर भरण, नदी हिंडोलणहारि
सूती सेजइ एकली, हइ-हइ दइव म मारि ।।
बिज्जलियां नीलज्जियां, जलहर तूं ही लज्जि
सूनी सेज, विदेस प्रिय मधुरइ-मधुरइ गज्जि ।।3
राति जु सारस कुरलिया गुंजि रहे सब ताल।
जिणकी जोड़ी बीछड़ी, तिणका कवण हवाल ।।3
कूंझड़ियां कलिअल कियउ, सुणी उपंखइ वाइ।
ज्यां की जोड़ी बीछड़ी, त्यां निसि नीद न आइ ।।3

शब्दार्थ—गिरह=गिरि, पर्वत। पखालण=धोना। हिंडो
झोरने वाली। सेजइं=शैय्या पर। दइव=दैव। म=मत। नीलज्जि
बेशर्म। जलहर=जलधर, बादल। गज्जि=गर्जना कर। कुरलिया=दर्द
बोलना। कूंझड़ियां=क्रौंच पक्षी। कलीअल=करुण रव। वाइ=वायु।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश 'ढोला मारू दोहा' से उद्धृत है
वियुक्ता रानी मारवणी की विरह-व्यथा का मार्मिक चित्रण कि
वियोगिनी के लिए वर्षा ऋतु, प्रिय से सूनी सेज, सारस, पपीहे, चात
का करुण क्रन्दन असहनीय होता है। उन सबमें वह अपने को अ
पाती है।

व्याख्या—वर्षा ऋतु में सर्वत्र आनन्द छा गया है, पर वियोगि
पति के न होने पर अत्यन्त दुःखी है। वह कामना करती है कि जै
प्रकृति में हुआ है, वैसा ही उसके जीवन में भी हो जाय। वह कह
वर्षा ऋतु पर्वतों को अपने शीतल जल से धोकर स्वच्छ करने वाली,
जल से भरने वाली, और नदियों को अपने अथाह जल से झकझोरने

ुखकारी ऋतु मे मारवणी अपने पति से विमुक्त हुई अकेली सेज पर । हे देव ! तू मुझे मत मार। अर्थात् शीघ्र से मेरे प्रियतम से मेरा ा दे।

रहिणी मारवणी मेघ को पुरुष रूप देती हुई कहती है कि हे मेघ ! ये निर्लज्ज हो गई हैं जो मुझे विरह व्यथित देखकर भी बार-बार चमक व्यथा को बढा रही है, पर तू तो पुरुष रूप है। तू ही कुछ समझ से काम ो मेरे प्रिय कुँवर ढोला विदेश म है और मेरी सेज सूनी है । इसलिये हें गर्जना ही है तो धीमी और मधुर आवाज में गरजो। इतने जोर से चित नहीं है।

ारवणी अपनी सखी से कहती है कि रात मे जो सारस ने दर्द भरी में पुकारा तो उसकी करुण पुकार से सारे सरोवर गूँज उठे। भला जोड़ी बिछुड़ जाती है, उनका यह क्या दशा होती है ? भाव यह कि मेरे समीप नहीं हैं। अतः मैं भी व्यथित हुई जा रही हूं। पर मेरी इस पीड़ा ाव नुम कैसे कर सकती हो। विरही की दशा तो केवल विरही ही समझ ।

मारवणी कह रही है कि क्रौंचों ने करुण स्वर में बोलकर अपने पंख फड़- ौर उनके पंखों की ध्वनि मैंने सुनी है। सच ही है कि जिनकी जोड़ी ाती है उन्हें रात को नींद नहीं आती। विरहिणी क लिए रात गुजारना ठन होता है।

विशेष—(1) प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण है। बादलों की गर्जना, की चमक और वर्षा की झड़ी वियोगिनी को पीड़ादायक होती है।

(2) वियोगिनी अपने दुःख की छाया प्रकृति के दूसरे प्राणियों के दुःख में । सारस और क्रौंच की व्यथा को लक्ष्य करके कहे गये दोहों में यही ।

(3) मारवणी की विरह व्यथा का हृदय-स्पर्शी चित्रण प्रभावशाली बन ।

(4) भाव साम्य की दृष्टि से मीरां की निम्न पंक्ति दृष्टव्य है—

'घायल की गति घायल जाणै, और न जाने कोय।'

(73)

कुंझा, द्यउ नइ पंखड़ी, थाकउ विनउ वहेसि।
सायर लंघी प्री मिलिउं प्री मिल पाछी देसि ॥42॥

पांखे पांणी थाहरइ, जलि काजल गहिलाइ
सयणां तणीं संदेसड़ा, मुख वचने कहवाइ ॥
आडा डूंगर, भुइ घणी, सज्जण रहइ विदेस
मांगी तांगी पखुड़ी, केती बार लहेस ॥
जिणी देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ
उआं लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ ॥

शब्दार्थ—द्यउ नइ=दे दो न। वहीसि=पोशाक। सायर=... लांघ कर, पार करके। पाछी=वापिस। थाहरइ=तुम्हारे। गहिलाइ=... सयणां तणीं=प्रेमियों के। भुइ=भूमि। केती=कितनी। वज्जउ=बहे... पवन। लाख पसाउ=लाख रुपये का दान या पुरस्कार।

प्रसंग—विरहिणी मारवणी से वियोग के क्षण काटे नहीं... अभिलाषा करती है कि यदि उसके पंख होते तो वह उड़कर प्रिय से... वह क्रोचों से पखों के लिए विनय भी करती है। पर यह एक दिन... अतः रोज-रोज मांगना भी उचित नहीं। अतः वह पवन से ही... कि वह स्वामी का स्पर्श करके लौट आवें, यहां उसके लिए लाख प... होगा। प्रस्तुत काव्यांश में मारवणी के इन्हीं वियोग कथनों को... है। विरहानुभूति हृदय स्पर्शी एवं मार्मिक है।

व्याख्या—मारवणी कुंझों को सम्बोधित कर कहती है कि... तुम मुझे अपने पंख दे दो। मैं तुमसे पंखों के लिए याचना करती... लगाकर मैं समुद्र पार करके अपने प्रियतम से जाकर मिलूँगी... लौटकर ये पंख तुम्हें लौटा दूँगी।

कुरझे मारवणी का संदेश लिखकर देने को कहती है पर स... पर लिखना उचित नहीं है। इसी विषय में मारवणी कहती... तुम्हारे पंखों पर तो पानी है। इनके जल से सन्देश की स्याही धुल... लिखकर भेजना व्यर्थ हो जायेगा। हे कुरझो प्रेम-सन्देश तो मुख... योग्य होते हैं।

मारवणी कुँझों से उनके पंख मांगती है फिर स्वयं ही विच... है कि मेरे और प्रियतम के बीच में कई दुर्गम पर्वत हैं, अनेक देश... साजन परदेश में रहते हैं। उनसे मिलने के लिए मुझे कितनी बार... मिलेंगे? अर्थात् मांगने पर कौन मुझे रोज-रोज पंख देगा? अतः प्रि... का यह उपाय भी उचित नहीं।

अन्त में मारवणी पवन से निवेदन करती है कि वह प्रिय... दिशा में बहता हुआ जावे और उसका स्पर्श करके लौटकर उसक...

का यह स्पर्श पाकर ही वह आनन्दित हो जायेगी। उसके लिए इतना सा
ी 'लाख पसाव' मन मांगा पुरस्कार होगा।

विशेष—प्रस्तुत काव्यांश में विरहणी मारवणी की मिलनोत्कण्ठा, अभि-
, विवशता आदि की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। प्रकृति को संदेश वाहक के
व्यक्त किया गया है। भावों में सरसता, सरलता और मधुरता है।

मारवणी का संदेश

(74)

ढाढी एक संदेसड़उ प्रीतम कहिया जाइ।
सा धण बलि कुइला भई, भसम ढंढोलिसि आइ ॥2॥
ढाढ़ी जे प्रीतम मिलइ, यूं कहि दाखविआह।
पंजर नहि छइ प्रांणियउ, थाँ दिस झल रहियाइ ॥3॥
पंथि एक संदेसड़उ, भल माणसंइ भख्ख।
आतम तुम पासइ अहइ, ओलग रूड़ा रख्ख ॥4॥
ढाढी जे साहिब मिलइ, यूं दाखविया जाइ।
आंख्यां सीप विकासियां, स्वाति ज बरसउ आइ ॥5॥

(Imp.)

शब्दार्थ—संदेशड़उ=संदेश। धण=स्त्री। कुइला=कोयला। ढ़ढोलसी=ढूंढ़ना।
तुम्हारी। झल=लपट। माणसईं=मनुष्य। भख्ख=कहना। पासइं=पास में।
इं=है। ओलग=अलग। रूड़ा=शरीर। दाखविया=कहना। बरसउ=बरसो।

प्रसंग—प्रस्तुत दूहे हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन काव्य कलाधर' में
लित 'मारवणी संदेश' से उद्धृत हैं। इन दोहों में मारवणी अपनी विरह
ना को व्यक्त करती हुई ढाढ़ियों व पंथियों के हाथ प्रियतम ढोला को संदेश
षत करती हुई कहती है।

व्याख्या—मारवणी कह रही है कि हे ढ़ाढी! मेरे प्रियतम ढोला को यह
श देना कि तुम्हारी प्रियतमा (मैं) तुम्हारे विरह की ज्वाला में जलकर कोयला
गई है। अब तुम जाकर उसकी राख ढूँढ लो, तुम्हारे विरह की पीड़ा सहते-
ते उसका शरीर निष्प्रभ हो गया है। अब उसमें सौन्दर्य बिलकुल भी नहीं रह
ा है।

हे ढाढी! यदि तुमको प्रियतम मिल जावें तो उनसे यों कहना कि उसके
ीर में अब प्राण नहीं है, उसके प्राणों की लौ तुम्हारी तरफ ही लगी है. वह
नी सुध-बुध खो बैठी है प्रति ल उसे तुम्हारा ही ध्यान रहता है।

हे पथिक ! उस भले मानस से मेरा एक सदेश कहना कि
तो उसके पास ही है। यहां तो मात्र शरीर ही पड़ा है। मैं मानसि
पूरी तरह तुम्हारे प्रति ही समर्पित हूँ।

हे ढाढ़ी ! यदि प्रियतम तुम्हें मिल जावे तो उनसे जाकर यों
उसकी (तुम्हारी प्रियतमा की) आंखें तुम्हारी प्रतीक्षा में सीपी के समा
है। हे स्वाति घन ! तुम उनमें जाकर बरसो। भाव यह कि जिस प्रक
जल प्राप्त करके सीपी कृतार्थ हो जाती है। उसी प्रकार तुम्हें पाकर व
भी धन्य हो जायेगी। उसका जीवन सफल हो जायेगा।

विशेष—(1) वियोगिनी मारवणी की विरह व्यथा का मार्मिक
शयोक्ति पूर्ण चित्रण।

(2) अतिशयोक्ति, उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि अलंकारों की
व्यंजना दृष्टव्य है।

(3) भाषा सहज, सरल और माधुर्य भाव से सिक्त है। वियो
प्रसाद और माधुर्य गुण की अभिव्यक्ति प्रस्तुत काव्यांश की विशेषता है

(75)

पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहच्याइ।
सावज संकल तोडस्यइ, वैसासरइ न जाइ ॥8॥
पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलहि पैहच्याय।
जोबन जायइ प्राहुणउ, बेगइरऊ घर आय ॥9॥
पंथी, एक संदेसड़ा, धण बिललती देह।
पगसूं काढ़ई लीहटी, उर आंसुआं भरेइ ॥10॥

शब्दार्थ—सावज=(यौवन रूपी) हिंस्र पशु। संकल=बन्धन। व
विश्वास दिलाने पर। प्राहुणउ=अतिथि। बेगइरऊ=शीघ्रता से। ध
बिललंति=विलाप करती हुई। लीहटी=रेखा। भरेइ=भरती हुई।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश 'मारवणी संदेश' का अंश है। इस क
मारवणी की विरह व्यथा की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।

व्याख्या—हे पथिक ! मेरा यह संदेश मेरे प्रियतम ढोला तक
कि यौवन रूपी हिंस्र पशु (लोक लाज की) शृंखला को तोड़ने के लिए
रहा है। हे प्रियतम ! शीघ्र आओ। इस मन को अब और दिलासा देक
नहीं किया जा सकेगा। अर्थात् यौवन का आवेग अब धैर्य का ब
मानेगा।

हे पथिक ! मेरा यह संदेश प्रियतम तक पहुंचा दो कि यौवन अ

वह थोड़े ही दिन का अतिथि रहकर वापस चला जाता है। इसलिए तुम र आओ। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आने से पूर्व ही मेरा यौवन चला ढल जावे)।

विलाप करती हुई मारवणी पथिक को अपना संदेश कहती है। वह पैर से र लकीरें बनाती है और उसका हृदय आँसुओं से भरा है। यहां विरह के ों का मार्मिक चित्रण किया गया है। धरती पर पैर से लकीरें बनाना ी के अन्तर्द्वन्द्व का सूचक है। विरही हृदय की कसमसाहट और पीड़ा मारवणी के रूप में साकार हो चली है।

विशेष—(1) विरहिणी नायिका के लज्जागत अनुभावों का मार्मिक हुआ है। विरहिणी की मिलनोत्कण्ठा, उत्सुकता, अभिलाषा एवं उसकी वेदना जन्य पीड़ा मन को छू लेती है।

(2) वियोग शृंगार, माधुर्य भाव, प्रसाद गुण और भाषा की सहजता कनीय है।

कथा विसर्जन (नाटक)

(लेखक–लक्ष्मीनारायण लाल)

(प्रस्तावना)

---

(76)

आप सब जानते हैं, नट का काम मंच पर गाना नहीं है। और आज ? जब र नट की कोई जरूरत ही नहीं समझी जा रही है; श्रीमान् नटी अपने नट ग नहीं रह सकती। इसलिए अपने मंच पर इस तरह नट-नटी को देखकर नाक-भौं मत सिकोड़िये। नट के पाँव पड़ती हूँ, ये कोई कथा कहे, कोई दिखाएँ।.... ओ, मेरे नट नागर ! मेरी ओर देखो। कितने दिन हो गए था नहीं कही। ऐसे सिर मत हिलाओ। हाँ, हाँ, आलाप लेते हो, ताकि ाग फूटे ! ...क्या कहा, राग कहाँ है ? कम से कम तुम तो ऐसे ना बोलो ! ा है। सबके हृदय में छिपा है।....उसे छेड़ो तो भला !

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश 'कथा विसर्जन' नाटक की प्रस्तावना से अवतरित समके लेखक प्रसिद्ध नाटककार और रंगशिल्पी लक्ष्मीनारायण लाल टक के आरम्भ से पूर्व मंच पर संगीत उभर रहा है। नट आलाप ले रहा

है। परन्तु उससे कोई राग नहीं निकल रहा है। इसी समय नटी मंच
और वह दर्शकों को सम्बोधित कर उक्त कथन कहती है।

व्याख्या—नटी दर्शकों को सम्बोधित कर कहती है कि यह सर्व
है कि नट मंच पर गाता नहीं है। उसका काम मंच पर आकर गाना
आज के नाटकों में नट की कोई आवश्यकता नहीं समझा जाता। पाश्च
से नाटकों में नट-नटी की उपेक्षा होने लगी है, पर नट-नटी का सम्ब
है। यदि नाटक है तो नट-नटी भी हैं। जिस प्रकार नारी के बिन
कल्पना असम्भव है उसी प्रकार नटी के बिना नट की कल्पना भी सम्भव
अतः मंच पर नट-नटी को देखकर दर्शकों को नाक-भौं नहीं सिकोड़
इसके पश्चात् वह नट से सविनय निवेदन करती है कि वे कोई कथा क
दिखावें क्योंकि उन्हें ऐसा किये हुए काफी समय बीत गया। इसी समय
संकेत से मना करता है तब नटी उसे पुनः कहती है कि सिर हिलाने से
चलेगा। तुम आलाप ही इसलिए ले रहे हो जिससे कि कोई राग फू
आलाप के राग नहीं फूटा करते। राग अर्थात् प्रेम सभी के हृदय में है,
की अति बौद्धिकता में वह दब सा गया है। वह अपने सहज भाव से
होगा जिस प्रकार वीणा के तारों पर झंकार करने से राग फूटता है उ
अति बौद्धिकता से ग्रस्त प्राणियों को भी सचेत करने से उनके भीतर
तत्व प्रकट होता है। प्रेम सभी के हृदय में विराजमान है, वह सुप्ताव
उसे सचेत करने की आवश्यकता है। तभी मधुर स्वर लहरी बाहर निक

विशेष :—(1) अवतरण की भाषा सहज, सरल और मुहा
'नाक-भौं सिकोड़ना' मुहावरे का सार्थक प्रयोग हुआ है।

(2) अवतरण के अन्तिम अंश की भाषा लाक्षणिक औ
प्रधान है।

(3) मंच पर नट-नटी की उपस्थिति को वर्तमान समय में आव
माना जाता पर नाटककार 'लाल' ने अपने नाटकों में इनका सफल प्र
प्राचीन परम्परा को न केवल जीवित ही रखा है, वरन् उसे नवीनता
की है।

(प्रथम अंक)

(77)

जो बहुत से लोग करते हैं, क्या वही ठीक होता है? सुनो,
से आते ही मझसे अपनी टीचर की शिकायत की थी कि टीचर रो
बात बदल देती है तो हम क्या जानें किसी शब्द का सही अर्थ क्या

ाहती हो ? तुम्हारी टीचर यही फिल्मी पत्रिका पढ़कर और फिल्म देख-
टीचर बनी है, जिसे रोज अपनी बात बदलनी पड़ती है।

संग—प्रस्तुत गद्य अवतरण श्री लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा लिखित
र्जन' नाटक के प्रथम अंक से अवतरित है। यह कथन 'मां' का है। मां
ा में संवाद हो रहा है। आशा दादी मां से कहती है कि शोनू झूठ बोलता
किसी दोस्त का आज जन्म दिन नहीं है। वह दोस्तों के साथ घूमने
पर दादी मां की नजर आशा के बस्ते पर टिकी रहती है और उसमें
त्रिका देखकर पूछती है कि वह कहां से आई ? आशा कहती है कि फिल्मी
हुत से लोग पढ़ते हैं। वह पढ़ती है तो कुछ अनुचित नहीं है।

ाख्या—आशा की उक्त बात का उत्तर देती हुई दादी मां उससे एक प्रश्न
कि जो बहुत से लोग करते हैं, क्या वह ठीक होता है ? माना कि फिल्मी
हुत से लोग पढ़ते हैं, पर इसका यह आशय नहीं कि उसका पढ़ना
लिए अनिवार्य है या वह सभी के लिए उपयोगी है। कुछ लोग अपना
मय गुजारने के लिए फिल्मी पत्रिका पढ़ते हैं, पर विद्यार्थी के पास इतना
ं कि वह उसको पढ़े। विद्यार्थी का प्राथमिक कर्त्तव्य पाठ्य पुस्तकों का
। अतः जो कार्य एक के लिए उचित है, वह दूसरे के लिए भी उचित
कहना ठीक नहीं है।

मी प्रसंग में दादी मां आशा को उसकी एक शिकायत की याद दिलाती है
टीचर रोज अपनी बात बदल देती है। दादी इस बात को गम्भीरता से
आज के शिक्षकों के उथले और सही ज्ञान पर व्यंग्य करती है। आज की
कोई भी व्यक्ति ऊंची उपाधि पाकर शिक्षक बन जाता है, पर वह शिक्षा
ज्ञान के लिए नहीं वरन् आजीविका के लिए करता है। इसलिए वास्त-
की ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता। वास्तविक ज्ञान
ाधना का परिणाम होता है। उसके लिए कठिन मेहनत, एकाग्रता
वसाय की आवश्यकता होती है। आज के शिक्षकों के पास इतना समय
हल्का और सस्ता साहित्य पढ़ते हैं, जिनसे मिलने वाला ज्ञान भी हल्का
। उसमें गहनता और गम्भीरता नहीं होती। यही कारण है कि आज के
अपनी बात रोज बदलनी पड़ती है। आवश्यकता इस बात की है कि
वनोपयोगी सत्य साहित्य का गम्भीरतापूर्वक मनन करें और इस तपस्या
तत्व से अपने विद्यार्थियों को अवगत करें।

शेष:—(१) प्रस्तुत अवतरण की भाषा सहज एवं व्यंग्यपूर्ण है। इसमें
सच्ची बात को सीधे ढंग से कहा गया है जो डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
शैली की निजी विशेषता है।

(2) मां के माध्यम से लेखक ने यह संकेत किया है कि बहु
द्वारा किया जाने वाला कार्य सदैव ही अनुकरणीय और उपयोगी नह

(3) वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर सार्थक व्यंग्य देखते ही बनत

(78)

बहू ! तुम कितना अच्छा अभिनय करती हो ! मैंने बिल्कुल था। तुम अभिनय क्यों नहीं करती ? तुम कितना अच्छा गाती विशारद··· नृत्य प्रभाकर। तुम्हें कितने भजन याद थ ? सुनो बहूरा एक संगीतकला मण्डल बनाएँ। सब मिलकर गाएँ-बजाएँ। व्रत-त्यौह करें। देखो न, अफसर कालोनी की सारी स्त्रियां दिन-भर घर से है और जब घर में होती है दिन में, तो भीतर से कमरा बन्द रहती हैं।

प्रसंग—'कथा विसर्जन' नाटक के प्रथम अंक से अवतरित मां का कथन है। नीलम जब कमरे की चीजों को इधर-उधर दे नाथू से पूछती है कि ये चीजें अपने स्थान से कैसे हट गई ? नाथू कह धोबी के बच्चे आये थे। तब वह मांजी की नकल उतारते हुए कह मांजी ने कहा होगा—आओ-आओ यहां बैठो, सोफे पर बैठो। खेलो इन्हें कुछ खिलाओ। मां जी यह सब देखकर हंस पड़ती हैं और नील कहती है।

मांजी अपनी बहू के अभिनय की प्रशंसा करती हुई कह वास्तव में ऐसे ही कहा था। तुम्हारा अभिनय कितना अच्छा है ? अच्छा हो। तुमने संगीत में कई उपाधियां प्राप्त की है फिर क्यों न का लाभ दूसरे लोगों को मिले। तब मांजी एक संगीत कला मण्ड प्रस्ताव रखती है। इसके माध्यम से व्रत-त्यौहारों के अवसरों पर उ सकते है। सब मिल बैठकर गा-बजा सकती हैं। इससे सभी का स होगा। मांजी अपनी कालोनी की स्त्रियों की दिनचर्या बताती हुई कह तो दिन-भर घर से बाहर रहती हैं और जब घर में होती है तो दिन करके सोती रहती है। यहां नाटककार ने तथाकथित उच्च वर्ग की महि और सारहीन दिनचर्या पर व्यंग्य किया है। अपने पति के पद और ये महिलाएं समाजिकता से कट जाती हैं और अपनी उच्चता तथ झूठा दिखावा करती हैं।

विशेष :—डॉ. लाल की भाषा सहज सरल होने हुए भी व्यंजनात्मक है। अफसर कालोनी की स्त्रियों का दिन भर घर से

[बाहर कहीं जाने के बजाय घ]र पर रहने पर दरवाजा बन्द कर सोते रहने के द्वारा उनके जीवन की [कृत्रि]मता और मिथ्याचरण का प्रभावी विश्लेषण किया है।

(79)

यही तो जानने की बात है बेटे, वह हमारा कहां गया ? तुम उसे जान न [सको] इसीलिए तो तमको फसा दिया गया है—पॉप म्यूजिक, मारकाट की फिल्में, [अंग्रेजी] भाषा, जूडो-कराटे, खो खो खोला, पो पो पोला।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा लिखित 'कथा [कही एक जले पेड़] ने' नाटक के प्रथम अंक से अवतरित है। नाथू मांजी से पूछता है कि आज [कौनसी] तिथि है ? इसे मांजी विक्रम सम्वत् की तिथि बतलाती है। शोनू कहता है [सी]धे-सादे ढंग से आप अंग्रेजी तारीख क्यों नहीं बता देती। इस पर दादी मां [कहती] है कि अंग्रेजी तारीख हमारी नहीं है। यह विदेशी है। तब शोनू पूछता है [जो] हमारा नहीं है, वह हमारा कैसे हो गया ? शोनू के इसी प्रश्न का उत्तर [दादी] मां इस अवतरण में देती है।

व्याख्या—दादी मां शोनू को समझाते हुए कहती है कि आज की इस [आधुनि]कता की चकाचौंध में जो हमारा था, वह कहां चला गया और जो हमारा [नहीं] है, वह हमारा कैसे हो गया, यही जानने की आवश्यकता है। जब हम अपनी [वास्त]विकता को जान जायेंगे तो हमारे सारे भ्रम, संशय और सन्देह स्वतः दूर हो [जायेंगे]। पर यह कुछ ऐसा सांस्कृतिक षड्यन्त्र है कि हमें हमारे से अलग रखा गया [है। ह]मारे सामने हमेशा विदेशी चीजों को, विदेशी सभ्यता और संस्कृति को [अच्छा] कहकर प्रस्तुत किया जाता रहा है। जो कुछ हमारा नहीं है, उससे हमारा मानसिक मेल नहीं बैठता। तब हम भ्रम में फंसे रहते हैं। हमें भ्रम में फसाने [के लि]ए ही पॉप म्यूजिक, मार-काट की हिंसात्मक फिल्में, अंग्रेजी भाषा, जूडो-[कराटे] आदि दिखाये, सिखाये और खिलाये जाते हैं। इनसे हम अपनी संस्कृति को [भूलक]र पाश्चात्य रंग में रंग गये हैं। इन सब चीजों का हमारी सभ्यता और [संस्कृ]ति से कोई मेल नहीं है। इसलिए हम भ्रमित हैं। अपने को जानना ही सच्चा [ज्ञान] है। अपने को जाने बिना भ्रान्तियों का निवारण सम्भव नहीं है।

विशेष—प्रस्तुत अवतरण की भाषा सरल होते हुए भी लक्षणा और व्यं-[जना] प्रधान है। पाश्चात्य संस्कृति के मिथ्या जाल को काटने की प्रेरणा दी गई [है।] स्वयं को जानना ही सच्चा ज्ञान है।

(80)

बाहर से न जाने कितनी चीजें इस घर में आती हैं। कौनसी चीज कैसी है, [माता]-पिता को चिन्ता होनी चाहिए। तुम्हें कोई चिन्ता है ? न अपनी न अपने [बच्चों] की, न पति की। चिन्ता है तो केवल भविष्य की। आज की नहीं कल की। [...] प्रश्न करता है, वह तो बड़े सौभाग्य की बात है। (Imp.)

प्रसंग--प्रस्तुत अवतरण डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा
आधुनिकतम नाटक 'कथा विसर्जन' के प्रथम अंक से अवतरित है
जब माँ जी शोनू को समझाती है कि अपने को जानना ही सच्चा
इस पर नाराज हो जाती है और कहती है कि आपने यह क्या कि
से तो हम बर्बाद हो जायेंगे। 'मैं' कौन हूं। यह खतरनाक प्र
जायेगा ? तब उत्तर में माँ कहती है कि बच्चों ने यह प्रश्न तुमसे
इनकी माँ हो। अतः उत्तर तुम्हें ही देना चाहिये। तब नीलम माँ
बच्चो को यह प्रश्न मिला कहाँ से। इसी का उत्तर देते हुए माँ प्र
कहती है।

व्याख्या--माँ जी कहती है कि मैं देख रही हूँ कि इस घर
अनेक वस्तुएँ है, जो बाहर से आती है। बाहर से घर में आने व
अनगिनत होती हैं। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों को ब
चीज उनके लिए उपयोगी और कौनसी अनुपयोगी है। वे उन चो
चुनें जिससे उनका जीवन सुधर सके। बच्चों में यह समझ नहीं होती
है और क्या बुरा। अतः माता-पिता का यह दायित्व है कि उन
करायें। पर मैं देखती हूं कि मार्डन कहलाने वाले माता-पिता को न
ही है और न इतनी समझ ही। बच्चों के प्रति माता का दायित्व स
समाज उसके तीन रूपों को विशेष मान्यता देता है। प्रथम रूप उसक
है, दूसरा पत्नी का और तीसरा माँ का, पर आधुनिकाएँ अपनी इन
काओं का निर्वाह सही ढंग से नहीं कर रही है। स्त्री के रूप में उन
लज्जा, शर्म, संकोच का अभाव है। स्त्री गृहणी के रूप में घर-प
सम्भाल करती है, पर आधुनिकाओं को अपने घर की कोई चिन्ता
रूप में उन्हें पति की चिन्ता होनी चाहिये, पर उनका यह क्षेत्र भ
माता के रूप में उन्हें अपनी सन्तान को प्रथम शिक्षिका के रूप में सुसं
चाहिए, पर उनका ध्यान अपने इस कर्तव्य की ओर भी नहीं है
है तो केवल भविष्य की। आज की नहीं आने वाले कल की। वे यह
है कि भविष्य का निर्माण वर्तमान की नींव पर ही होता है। हमार
कल के दरवाजे तक ले जाता है। यदि हमारा वर्तमान ही सुन्दर
भविष्य कैसे बनेगा। बच्चों में जो संस्कार हम आज विकसित करेंगे
कल का वर्तमान बनेगा। आज की स्थितियाँ ही बच्चों के कल की
यदि बेटा प्रश्न करता है तो यह अच्छी बात है। उसमें कुछ सीखने
जिज्ञासा है। यदि उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो उसकी जि
लिए मर जायेगी। उसका विवेक कुंठित हो जायेगा। वह आत्म

...जाय पराश्रित हो जायेगा। अतः बच्चों की जिज्ञासा का समाधान आव-... है।

विशेष—(1) प्रस्तुत अवतरण में नारी के तीन रूपों का उल्लेख करते ...नाटककार ने स्त्री, पत्नी और माँ के कर्त्तव्यों की ओर संकेत दिया है। वास्तव ... इस नाटक की जीवन्त पात्र है। उसके कथन नाटककार की मान्यताओं के ... हैं।

(2) भाषा अर्थ गाम्भीर्यपूर्ण है। वाक्य सरल और छोटे है पर लेखक ने ... गागर में सागर भर दिया है। नाटककार ने छोटे-छोटे वाक्यों के द्वारा ...रे सांस्कृतिक बोध को जगाया है।

(81)

... क्या है अपना ? देखो न ! यह बंगला सरकार का है। तुम्हारे पति की नौकरी ...ार की कृपा पर है। ये फर्नीचर, ये सामान, ये चीजें दूसरों को दिखाने और ...वित करने के लिए हैं। तुम्हारे बच्चे....? एक अमेरिका का है ...एक इंग्लैण्ड ...एक इंजीनियर....एक लेडी डाक्टर। दूसरों की नकल में सब कुछ नकली।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा लिखित 'कथा ...र्जन' नाटक के प्रथम अंक से अवतरित है। इस अंक के दूसरे दृश्य के अन्तिम ... में माँ और नीलम में संवाद चल रहा है। नीलम माँ जी से कहती है कि ...ने अपने बेटे को अपनी तरह से पाला। मुझे अपने बच्चों को अपनी तरह से ... दीजिये। नीलम के इस प्रश्न पर माँ उससे एक सीधा प्रश्न करती है कि ...रा अपना क्या है ? जिसे तुम अपना मानती हो, वह कितना तुम्हारा है। ...बात को माँ प्रस्तुत कथन में नीलम को समझा रही है।

व्याख्या—माँ कहती है कि मुझे तुम्हारा कुछ भी दिखाई नहीं देता। जो ...है वह सब पराया, नकली और दिखावटी। जिस बंगले को तुम अपना बत-... हो, वह सरकारी है और उसका सम्बन्ध तुम्हारे पति की नौकरी से है। ...तक नौकरी है तभी तक यह बंगला है। नौकरी भी तुम्हारे पति की अपनी ...है। वह सरकार की कृपा पर निर्भर करती है। सरकार जब चाहे तब उसे ...ी से हटा सकती है। इस प्रकार न यह बंगला तुम्हारा है और न ही पति की ...ी या पद तुम्हारा है। रही बात फर्नीचर की और घर के दूसरे सामान की; ...ी तुम्हारा नहीं है क्योंकि तुम उसे अपना समझकर उपभोग नहीं कर सकती। ...ब कीमती सामान केवल दूसरों को दिखाने और उन्हें प्रभावित करने के लिए ...यं के उपभोग के लिए नहीं। इसी प्रकार यदि बच्चों को देखें तो वे भी ...रे नहीं हैं। इनमें से एक को तुम अमेरिका और दूसरे को इंग्लैण्ड भेजने की

सोचती हो। एक वहाँ जाकर इंजीनियर बनेगा और दूसरी लेडी
इन दोनों में कोई भी तुम्हारा नहीं बन सकेगा। वे डॉक्टर अ
तो रहेंगे पर तुम्हारी बेटी या बेटे नहीं रहेंगे। उनमें तुम्हारा कं
होगा। यह सब तुम दूसरों की नकल कर रही हो और नकल
मौलिक कहलाती है और न हितकारी ही होती है। भाव यह है
करो अपना करो। कुछ ऐसा करो जिसे तुम अपना कह सको। जि
सको या जिसे अपना कहने में संकोच अनुभव हो, उस कार्य को क
क्या ?

विशेष—प्रस्तुत अवतरण में 'मार्डन' समाज पर व्यंग्य कि
नाटककार उन्हें नकल और दिखावा छोड़कर जीवन की वास्तविकत
से जुड़ने की प्रेरणा देता है। मौलिकता का आग्रह इस अवतर
छटता है।

भाषा सरल होते हुए भी भाव गाम्भीर्यपूर्ण है। छोटे-छोटे व
नाटककार ने जीवन सत्य को वाणी दी है,

(82)

चाहता है, मैं भी बाहर ही बाहर घूमूँ ? मेरा स्थान मेरी व
मन्दिर मेरा आचरण है। मेरी दुर्गा मेरा चरित्र है। मेरा सत्संग मेर
आस-पड़ौस है।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नवीनतम
विसर्जन' के प्रथम अंक से उद्धृत है। प्रथम अंक के दूसरे दृश्य में प्र
दिन भी दफ्तर जाने को तैयार है। तब माँ बहू से कहती है कि तू
दफ्तर जा। इस पर प्रकाश कहता है कि बहू जानती है कि वह
न होकर, सरकार का आदमी है। साथ ही प्रकाश माँ से भी कह
भी बाहर घूम आना चाहिये। जैसे गोमती के किनारे, भैरो जी का
में दुर्गा जी का मन्दिर, लक्ष्मण टीला के उस पार सत्संग भवन आदि
प्रकाश के इसी कथन का उत्तर माँ जी प्रस्तुत अवतरण में देती हु
कहती है।

व्याख्या—माँ कहती है कि बेटा ! तुम भी यही चाहते हो कि
ही बाहर घूमूँ ? पर बाहर है क्या ? जब तक व्यक्ति अपने से नहीं
उसका बाहर भी छूटा हुआ रहता है। तुम कहते हो कि मैं गोमती
आऊँ, पर स्नान करने से क्या होता है ? शीतल जल में स्नान से
शान्त होता है उसी प्रकार मेरी वाणी से मेरे मन और मस्तिष्क

। अतः गोमती न स्नान करने की बात मुझे उचित प्रतीत नहीं होती। तुम कि मैं मन्दिर में जाकर दर्शन कर आऊँ। मन्दिर में भगवान के दर्शन उद्देश्य आचरण की शुद्धि के अलावा भला और क्या है? मैं घर पर चारपूर्ण जीवन व्यतीत करती हूँ, फिर मन्दिर की आवश्यकता ही क्या रह । दुर्गा के दर्शन भी पाप या दुष्ट कार्यों के दलन के लिए किये जाते हैं हमारा चरित्र ही पवित्र नहीं होगा तब तक दुर्गा के दर्शनों से क्या लाभ? रित्र ही मेरी दुर्गा है। अतः मुझे वहाँ जाने की आवश्यकता भी नहीं है। मंग में भी जाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मेरा घर-परिवार और डौस ही मेरा सत्संग है। सत्संग से मानसिक शान्ति मिलती है, जो मुझे डौस या घर-परिवार के कार्यों को करने से मिल जाती है। अतः मेरा में जाना भी अनावश्यक है।

विशेष—प्रस्तुत अवतरण में आचरण की शुद्धता, चरित्र की पावनता और जानने की प्रेरणा दी गई है। जब तक मनुष्य अन्दर से स्वच्छ नहीं होगा क बाहरी स्वच्छता का कोई मूल्य या महत्त्व नहीं है। माँ जी के चरित्र की टताओं की इस अवतरण में सुन्दर व्यंजना हुई है।

(द्वितीय अंक)

(83)

बाहर केवल चीजें····सामान····पदार्थ····। बाहर कोई सुख नहीं है। सुख ीन अगर बाहर है···दूसरों का दिया हुआ····बताया हुआ····वह सुख हो ही सकता। सुख तो अपना ही है। अपना कमाया हुआ। अपने आप से पाया ··· अपने से, अपने घर-परिवार से, अपनी जड़ से····अपने स्रोत से।

(M. Imp.)

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश 'कथा विसर्जन' नाटक के द्वितीय अंक के आरम्भ के से लिया गया है। इस अवतरण में लेखक ने सुख का स्रोत स्वयं के अन्दर तलाया है। प्रकाश के बॉस श्री सेठी साहब एक दिन नीलम के घर आते हैं। न के उत्तर में माँ जी सेठी साहब को 'सुख पाओ' कहकर अशीर्वाद देती है। र सेठी साहब कहते हैं आप भी क्या आशीर्वाद देती हैं—सुख पाओ। आशी- दीजिये--सुखी रहो। इस पर माँ जी कहती है कि सुख कहीं है नहीं, वह तो ही होता है। उसे तो अपने भीतर ढूँढना होता है। इस पर सेठी साहब हैं कि जो वस्तु बाहर होती है उसे ही ढूँढा जाता है। अपने भीतर की चीज या भला ढूँढना कहते हैं? सेठी साहब के इसी प्रश्न का उत्तर माँ जी का यह है।

व्याख्या--माँ जी कहती है कि बाहर जो कुछ हम देखते हैं वे चीजें, ान, पदार्थ हैं, सुख नहीं है। वस्तुतः सुख का अस्तित्व बाहर होता ही नहीं

है। सुख तो अनुभूति जन्य है और अनुभूति हृदय से की जाता पदार्थ से नहीं। यदि बाहरी पदार्थ से सुख का आभास भी ह क्षणिक होता है, दूसरों का दिया अथवा बताया हुआ होता है। है ही नहीं, वह हमें सुख नहीं दे सकती। सुख कोई पदार्थ नहीं से प्राप्त कर लें। यह तो स्वअर्जित धन है। हृदय की अनुभूति और मानसिक है। सुख का अस्तित्व बाहर नहीं है। जिसने भी अपने आप से, अपने स्रोतों से, अपने प्रयासों से, अपने घर-परिवा अनुभूति व्यक्तिगत है, समष्टिगत नहीं। अतः समष्टि से या बाह को न तो खोजा जा सकता है और न ही उसे प्राप्त किया जा स सुख के सूत्र तो हमारे भीतर ही समाये रहते हैं। जिस तरह से नाभी में ही रहती है, पर अज्ञान के कारण वह उसे बाहर खोजत एक दिन शिकारी के बाण से आहत होकर अपने प्राण दे देता है जो व्यक्ति सुख को बाहर खोजते हैं उनकी स्थिति भी कस्तूरी मृग होती है।

उक्त कथन द्वारा नाटककार का भाव यह है कि सच्चा सुख और संस्कृति से जुड़ने में है। जो व्यक्ति अपनी जड़ से कट गया, ही कहां रहता है। यहां नीलम, सेठी साहब और प्रकाश की स्थिति पाश्चात्य संस्कृति के मोह जाल में फंसकर वे उसे अपना मान बैठे भ्रान्ति ही दुःख का कारण है। जब तक व्यक्ति अपने से नहीं जुड़ नहीं हो सकता।

विशेष :—(1) बाहरी सुख क्षणिक और अस्थायी होता है। आन्तरिक सुख सच्चा और स्थायी होता है।

(2) माँ का तेजस्वी व्यक्तित्व व उनकी अद्भुत वाक् पटुत होती है, जिसका आधार है उनकी सांस्कृतिक परम्परा।

(3) भाषा शैली सरल, व्यावहारिक और प्रसाद गुण सम्पन्न

(84)

तुम सबमें कोई भीतरी लगाव नहीं है। सब बाहर-बाहर ... .किसी को चाय, लंच, डिनर पर बुलाते हो तो उसका आन काम का आभार लेना, यही भगवान है। (रुककर) फैजाबाद, फिर इल लखनऊ और अब दिल्ली। यह कैसी यात्रा है? कहीं रुककर देखा

प्रसंग—ये गद्य पंक्तियाँ डॉ लक्ष्मीनारायण लाल के नवीनतम विसर्जन' के दूसरे अंक से उद्धृत है। प्रकाश की पत्नी नीलम बीमार बाहर से आया है और फिर दफ्तर जाना पड़ता है। उसके पास

ाना भी समय नहीं है। माँ उससे पूछती है कि मेरे भरोसे पत्नी को नौकरों के भरोसे माँ को छोड़ना........यह कैसा जीवन है ? इस पर प्रकाश —माँ तुम्हें तकलीफ है ? इस पर माँ कहती है कि सबके आधार ठाकुर उनके रहते हुए मुझे कोई तकलीफ नहीं। तकलीफ तुम्हें, बहू और बच्चों इस पर प्रकाश भाँकता है। तब माँ ने उसे समझाते हुए उक्त कथन ।

व्याख्या—माँ कहती है कि बेटे प्रकाश ! इसमें चौंकने की बात नहीं है। तुम में कोई भीतरी लगाव या रुचि नहीं है। तुम्हारे सम्बन्ध दिखाने के औपचारिक हैं। उनमें आत्मीयता का अभाव है। जिनमें आत्मीयता होती है -पास उठते-बैठते और बातें करते हैं। एक-दूसरे के दुःख-सुख की सुनते, और उसका अहसास करते हैं। पर तुम लोगों में ऐसा नहीं है। तुम सब एक से कटे-कटे रहते हो। एक-दूसरे के पास बैठने को बजाय बाहर भागते हो। रखो कि जो भी कार्य करो उसे पूरी रुचि के साथ करो। उसका पूरा द लो। कार्य छोटा हो या बड़ा उसे समान मनोयोग से करो। यदि किसी को लच या डिनर के लिए बुलाओ तो उसका भी पूरा आनन्द लो। औपचारि-या दिखाने के लिए कुछ करना ठीक नहीं। हर काम में आनन्द लेना यही न है। जिस व्यक्ति को अपने काम में सुख नहीं मिलता, वह कभी सुखी नहीं कता। तुम निरन्तर कहीं न कहीं घूमते रहते हो। कभी फैजाबाद, कभी ाबाद, कभी लखनऊ तो कभी दिल्ली। तुम्हारी यह कैसी यात्रा है ? क्या ात्रा का कोई अन्त नहीं है ? इस बात पर बेटे ! जरा रुककर गौर करो। र तुम बाहर जाते ही क्यों हो ? ध्यान रखो जो अपने से नहीं जुड़ा, वह से भी नहीं जुड़ पाता। अपने को, अपने काम को और काम को समझकर आनन्द लेने को ही जिन्दगी कहते हैं।

विशेष :—आधुनिकता के दीवाने और उसी को सर्वस्व समझने वाले व्य-पर व्यंग्य किया गया है। भाषा सरल होते हुए भी प्रभावशाली और मार्मिक हर काम में आनन्द लेना, यही भगवान है।" उक्ति मन को प्रभावित है।

(85)

परस्पर संवाद बड़ा कठिन है रे। संवाद वहाँ नहीं हो सकता जहाँ घमण्ड संवाद के लिए चाहिये दो जन। हाँ, एक नहीं दो। दोनों में समानता हो। क और नौकर में संवाद नहीं हो सकता। छोटे-बड़े में संवाद नहीं हो सकता।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यावतरण डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा लिखित नाटक विर्सजन' के दूसरे अंक के तीसरे दृश्य से अवतरित है। इस अंश में शोर

दादी माँ से संवाद शब्द का अर्थ पूछकर स्वयं ही उसका अर्थ '
है। तब दादी माँ उसे संवाद और डायलाग का अन्तर स्पष्ट कर
विशेषताएँ बतलाती है। प्रस्तुत अवतरण दादी माँ का वही उत्त

व्याख्या—दादी माँ कह रही है कि परस्पर संवाद क
इसके अनेक कारण हैं। उन अनेक कारणों में से एक है अभिमान
है, वहाँ संवाद हो ही नहीं सकता। अभिमानी व्यक्ति अपने को
भता है। उसके हृदय में दूसरे के लिए स्थान होता ही नहीं है।
अभिमान से भरा रहता है तब तक वह समूह में रहकर भी अकेला
अकेला व्यक्ति कभी संवाद नहीं कर सकता। संवाद के लिए दो व्य
श्यकता होती है। जहाँ परस्पर आत्मीयता और प्रेम हो। इन
व्यक्ति अकेला ही रहता है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि उन
में समानता हो। दो असमान व्यक्तियों के बीच संवाद हो ही नहीं
लिए मालिक और नौकर के बीच, बड़े व छोटे के बीच कभी संवा
भाव यह है कि प्रकाश, नीलम, शोनू और आशा सभी अभिम
उनमें निरभिमानता, आत्मीयता और परस्पर प्रेम नहीं है। इसीि
बजाय बाहर भागते हैं। एक-दूसरे से संवाद करने की बजाय अलग
भाव यह है कि संवाद के लिए समानता, आत्मीयता और निर
आवश्यकता होती है।

विशेष :—संवाद का शाब्दिक अर्थ होता है—सम्यक्+वाद
अर्थ समान लगाना कहाँ तक उचित है? नाटककार ने अपनी ले
उदाहरण देते हुए संवाद के लिए समानता, आत्मीयता और नि
होना आवश्यक बतलाया है।

भाषा सरल है पर भावों में चिन्तन का सा गाम्भीर्य है।

(86)

अरे माँ, सबका अपना-अपना स्वभाव होता है। मसलन,
जगह, हर चीज में, भगवान ठाकुर जी दिखाई देते हैं। तुम्हारा अप
अपने संस्कार हैं। तुम्हारी बहूरानी नीलम विज्ञान की छात्रा रही है
विकास, भविष्य की चिन्ता करती है। एक ओर भगवान ठाकुर जी
वह नहीं है।

प्रसंग :—प्रस्तुत गद्यांश डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा
विसर्जन' नामक नाटक के दूसरे अंक के तीसरे दृश्य से अवतरित है
व पुरानी पीढ़ी के वैचारिक संघर्ष के कारण को स्पष्ट किया ग
पुरानी पीढ़ी की और उनकी बहू नीलम आधुनिक पीढ़ी की प्रति

कि दोनों के विचारों में भिन्नता है, टकराव है। पुरानी पीढ़ी अपनी
से जुड़ी है जबकि वर्तमान पीढ़ी पर पाश्चात्य प्रभाव है। प्रकाश चन्द्र की
लम अपनी पुत्री आशा के मुँह पर चाँटा मार देती है तब माँ उसे भगवान
पर बस करने को कहती है। नीलम को शोनू के स्वर में व्यंग्य दिखाई
। तब वह माँ जी से कहती है कि आप बच्चों को बिगाड़ रही हैं। प्रकाश,
नी और बच्चों की बातों को बाहर खड़ा-खड़ा सुनता है। उसके अन्दर आने
उससे पूछती है कि क्या मैं तुम्हारे बच्चों को बिगाड़ रही हूँ? माँ के इस
का उत्तर प्रकाश इन शब्दों में देता है।

व्याख्या—प्रकाश माँ को समझाता हुआ कहता है कि हर व्यक्ति का अपना
, शिक्षा-स्तर और संस्कार होते हैं। इसी से दो व्यक्तियों के विचार आपस
मिलते। सभी के सोचने-समझने का अपना-अपना तरीका है। उदाहरण के
माँ के संस्कार प्राचीन संस्कृति से जुडे हैं। वह हर बात में ठाकुर जी को
ले आती है। जबकि नीलम उच्च शिक्षा प्राप्त नारी है। उस पर पाश्चात्य
ति का प्रभाव है। ठाकुर जी पर उसका विश्वास नहीं। वह हर चीज को
ता और सत्य की कसौटी पर कसना चाहती है। उसका कार्य कारण सम्बन्ध
ना उसका स्वभाव है। माँ का विश्वास वर्तमान पर है। वह उसी को दृढ़ता-
पकडे रखना चाहती है जबकि नीलम का ध्यान भविष्य पर टिका है। उसकी
योजनाएँ भविष्य के लिए है। संस्कारों की इस भिन्नता के कारण ही उनके
रों में भी असमानता और टकराव है।

विशेष—प्रकाश का, रूख गुट-निरपेक्ष या तटस्थता का है। वह निर्णय देने
बजाय दोनों पक्षों की अच्छाई या बुराई पर ही अपना मत प्रकट करता है।
न उनको अच्छा या बुरा नहीं बताता। प्रकाश के चरित्र की यही विशेषता
अवतरण में भी मुखर हुई है।

(तृतीय अंक)

(87)

माँ मुझे पत्र लिखतीं—और यही दोहराती रहतीं—'हारिए न हिम्मत,
ारिए न रामनाम' माँ ने मुझ पर कभी नहीं थोपा कि मैं भी पूजा-पाठ
। माँ ने हमेशा यही कहा—'बेटे, तुम्हें जो अच्छा लगे, वही करना। जिस
ते पर खुद चलना चाहो, उसी पर चलना।'

(सहमा) अरे, तुम तो सो गई। अजीब स्त्री है! सब की चिन्ता अपने
। चाहती है, सब इसी के अनुसार हों। मेरी माँ ने मुझे नहीं बनाया। यह
नी है—मैं बनाऊँगी अपने बच्चों को आधुनिक, कर्मठ, महत्त्वाकांक्षी। पर

अजीब खेल है--दोनों बच्चे माँ से आकृष्ट हैं । नीलम को यह बर्दा
देखो तब वही तीनों । तीनों की दोस्ती । हम दो अकेले ।

प्रसंग :—प्रस्तुत गद्यांश डॉ लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा लि
'कथा विसर्जन' के तीसरे अंक के पहले दृश्य में अवतरित है । इस
पात्र प्रकाशचन्द्र और नीलम दोनों परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं । नी
है जबकि प्रकाश बंधनों को स्वीकारने वाला आधुनिक युवक है । घर
के कारण प्रकाश चिन्ता-मग्न है । नीलम उससे पूछती है कि 'क्या
नीलम के इसी प्रकाश का उद्देश्य इस अवतरण का विषय है ।

व्याख्या—प्रकाश कहता है कि जब मैं पढ़ता था, तब माँ अस्सी
पर एक प्राइमरी स्कूल में अध्यापिका थी । इनमे से चालीस रुपये वे
माह भेज देती थी और शेष चालीस से घर का सारा खर्च चलाती थी
मेरे पास बराबर आते रहते थे । वे हर पत्र में मुझे हिम्मत बधाती आ
थी । उनका यही कहना था कि कठिन से कठिन समय से भी व्यक्ति
हिम्मत नहीं खोनी चाहिये तथा प्रभु का नाम कभी विस्मरण नहीं कर
जब व्यक्ति भगवान को भूल जाता है तभी उसका साहस जवाब देने लग
माँ ने अपने विचारों को मुझ पर थोपने का कभी प्रयास नहीं किया ।
नहीं यह कहा कि मैं भी पूजा-पाठ करूँ । उनका यही कहना था कि
स्वयं को अच्छा लगे वही करना चाहिये । किसी के दबाव या उसको प्र
के विचार से किया गया कार्य कभी फलीभूत नहीं होता । सफलता उस
चलने से मिलती है जो हमारी रुचि के अनुकूल होता है । इतना कहते-क
पत्नी की ओर देखता है । इसी बीच वह सो चुकी थी । प्रकाश उसकी अ
कहता है कि यह कैसी अजीब स्त्री है ! सबकी चिन्ता अपने पर लेना च
चाहती है कि सभी कुछ उसी की इच्छानुसार हो । दूसरे की इच्छा या
इसे परवाह ही नहीं है । वह सोचता है कि माँ ने उस पर कभी अपने वि
थोपने का प्रयास नहीं किया पर इसका मानना है कि यह अपने बच्चों
ढंग से कर्मठ, महत्वाकांक्षी और आधुनिक बनायेगी । कैसी अजीब बात
अपनी माँ को चाहने के बजाय दादी माँ को चाहते हैं । वे हर समय उन
लगे रहते हैं । जब देखो तब तीनों की कोई मित्रता सी दिखाई देती है ।
को यह पसन्द नहीं । क्या कारण है कि हम दोनों अकेले पड़ जाते हैं ।
नहीं चाहते । दूसरे भी हमसे दूर रहते हैं । इस अलगाव का कारण क्या
यह कि नाटककार ने इस अवतरण के माध्यम से अपने विचार दूसरों प
का विरोध किया है । जब व्यक्ति अपने विचार दूसरों पर जबरदस्ती

ा है तो लोग उससे कटने लगते हैं। दूसरों का प्यार पाने के लिए उन
। और उनसे आत्मीयता आवश्यक है।

िष—नाटककार ने प्रकाश के माध्यम से नई व पुरानी पीढ़ी की वैचा-
ा को मुखर किया है। पुराने लोग बालक के व्यक्तित्व विकास में बाधक
े जबकि आधुनिक अभिभावकों का उस पर भारी हस्तक्षेप है।
ाषा सरल और वाक्य छोटे-छोटे हैं। भाषा में भावों की गम्भीरता और
ता है।

(88)

ाँ मेरी केवल माँ नहीं है। वह मेरी जननी है। पिता है, भाई है, मित्र
सबसे ऊपर वह मेरी आचार्या हैं। प्रातः चार बजे से पहले माँ उठती थीं।
े हुए घर में झाड़ू लगाती थीं। मैं भी उठकर गाने लगता था। महीने
से पर्व के दिन आते, जब माँ सवेरे उठकर नदी-स्नान को जातीं। उनकी
कड़कर मैं साथ हो लेता। माँ के साथ उनका पल्ला पकड़ काशी, अयोध्या,
न्दावन, कुम्भ मेला, गंगा-स्नान—ऐसी अनेक यात्राएँ कीं। अनुभव और
मलती। घर में प्रीतिभोज होता। कोई वृक्ष फलता तो सबसे पहले आश्र-
बांटा जाता।

प्रसंग—ये गद्य पंक्तियाँ 'कथा विसर्जन' नाटक के तीसरे अंक के दूसरे दृश्य
ित हैं। प्रकाश अपनी तरक्की के लिए प्रयत्नशील है। वह तरक्की पर
ायेगा। वहीं पहुँचकर अपने लिए मकान भी बनायेगा। नीलम कहती
सी पोस्टिंग होते ही माताजी को ऋषिकेश या हरिद्वार के किसी आश्रम
ेंगे। वहाँ उन्हें कोई तकलीफ नहीं होगी। प्रकाश कहता है कि ऐसा कुछ
ा। माँ अपने साथ ही रहेगी। तब नीलम साश्चर्य पूछती है—क्या?
े इसी 'क्या' का उत्तर प्रकाश का यह कथन है।

व्याख्या—माँ के प्रति अपने प्रगाढ़ सम्बन्ध को बताता हुआ प्रकाश कहता
अपनी माँ को अपने से अलग नहीं करूँगा क्योंकि वह न केवल मेरी
वरन् मेरी पिता, भाई, मित्र और इन सबसे ऊपर वह मेरी आचार्या भी
पन में पिता नहीं रहे थे, कोई भाई और मित्र भी मेरे नहीं थे। माँ ने
ी इन सब अभावों को दूर किया। इतना ही नहीं वरन् एक शिक्षक की
झे ज्ञान दिया, संस्कार किया और अच्छे-बुरे का निर्णय करने का विवेक
माँ सुबह चार बजे उठकर ही घर का काम करने लगती थी। वे गाती
म करती थीं। मैं भी उनके देखे-देखे गाने लगता था। महीने में कई ऐसे
दिन आते थे जब माँ गंगा स्नान को जाती थीं। मैं भी उनकी ऊँगली
उनके साथ-साथ न जाने कहाँ कहाँ घूमा हूँ। मैं माँ के साथ जब भी जाता
न कुछ नवीन सीखने को मिलता। प्रसाद तो हमेशा होता ही था। घर

में प्रीतिभोज भी होता। जब घर के वृक्षों में से किसी पर कोई
स्वयं खाने के बजाय आस-पड़ोस में बाँटा जाता। हमारे घर का वा
त्यागमय और धर्मयुक्त था। माँ ने अपने विचार कभी मुझ पर न
प्रत्यक्ष दर्शन कर स्वानुभूति से ज्ञानार्जन की प्रेरणा दी। इसी क
मैं स्वविवेक से दूसरों का ध्यान रखते हुए निर्णय लेने में विश्वा

विशेष :—प्रस्तुत अवतरण में प्रकाश का आत्म-चिन्तन
माँ और पत्नी के व्यवहार की तुलना करता है। नीलम की आधु
दृष्टि भी इससे व्यंजित होती है। प्राचीन जीवन सादा और त्या
वर्तमान जीवन आडम्बरपूर्ण और स्वार्थ पर आधारित है।

(89)

माँ ने कभी मुझे डाँटा तक नहीं। कभी कोई आज्ञा नहीं दी
और आचरण से माँ मेरी आचार्या बनीं। तुमने माँ को देखा है,
नहीं बैठीं। इस उम्र में भी सिलाई, बुनाई, घर की सफाई,
रसोई, पकवान कितना कुछ इतने शौक-उत्साह से माँ करती हैं।
है। अपने-आपको ? अपने जीवन में संयम, सादगी, त्याग का आच

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नवीनत
विसर्जन' के तृतीय अंक से अवतरित है। नीलम और प्रकाश के
अंश है। नीलम आधुनिका है जबकि प्रकाश आधुनिक होते हुए भी
से बंधा है। इस अवतरण में प्रकाश अपनी माँ और पत्नी की चा
ताओं के अन्तर को स्पष्ट करता हुआ कह रहा है।

व्याख्या—प्रकाश कह रहा है कि माँ ने उसे कभी डाँटा नह
आज्ञा नहीं दी कि यह करो, वह न करो। उन्होंने सदैव अपने
व्यवहार से मुझे सिखाने का प्रयास किया। माँ जो मुझसे अपेक्षा
ही उसने स्वयं भी किया। जिस चीज को वह मेरे लिए बुरा समझ
उसने स्वयं भी अपने आचरण में नहीं अपनाया। वह जो मुझे
चाहती थी, वैसा ही स्वयं भी करती थी। माँ तो निठल्ले रहने
बात करने से सदा परहेज रहा। वे कभी खाली नहीं बैठी। इस
वे घर का यथासम्भव सभी काम सिलाई, बुनाई, घर की सफाई,
सभी बड़े उत्साह से करती हैं। तुमने भी माँ को देखा है। क्या
बैठी हैं ? क्या उन्होंने कभी किसी कार्य के प्रति अपनी अरुचि प्रदर्श
विपरीत तुम्हारा चरित्र है। जिसमें न कोई सादगी है न संयम। ह
कुछ लालसा रहती है। स्वयं न काम करके तुम दूसरों से काम क
हो। दूसरों की रुचि का विचार तुम्हारे मन में नहीं आता। तुम

ही करें, जैसा तुम चाहती हो। स्वयं काम न करके दूसरों पर आदेश
ना जीवन भी भला कोई जीवन है ?

शेष--प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने सादा जीवन उच्च विचार की
ो प्रकट किया है। जीवन के लिए सादगी, त्याग, संयम और सदाचार
है। इन गुणों से रहित जीवन जीवन नहीं।

ाषा सहज, सरल परन्तु अर्थपूर्ण है। छोटे-छोटे वाक्यों के द्वारा व्यापक
ने की क्षमता डॉ. लाल की भाषा की विशेषता है।

(90)

"मैं आचरण करूँ या न करूँ, दूसरे जैसा मैं कहूँ, वैसा आचरण जरूर
ता उन्हें मारा-पीटा जाए। यह समझ हमें कहाँ से मिली ? एक सिखाने
सरा आचरण करने वाला। यही है बाहर, जो भीतर आया। अपने
साथ, समान रूप से अभिनन्ता अनुभव होती हैं। इस आत्मीयता के रंग
सबके दोष अपने से लगते हैं।"

ंग—प्रस्तुत गद्य अवतरण डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा रचित 'कथा विस-
ंक नाटक के तृतीय अंक के दूसरे दृश्य से अवतरित है। नाटक के प्रमुख
श चन्द्र और उसकी पत्नी में वार्तालाप चल रहा है। प्रकाश चन्द्र अपनी
दगीपूर्ण, त्यागमय एवं आदर्श सदाचार युक्त जीवन का वर्णन करता है।
न सबको फिजूल की बातें कहती हैं तब प्रकाश चन्द्र उसकी बात का
ा है। प्रस्तुत अवतरण प्रकाश चन्द्र द्वारा दिया गया उत्तर ही है।

व्याख्या—प्रकाश नीलम को समझाता हुआ कहता है कि हम बच्चों से
रण की अपेक्षा करें हमें भी वैसा ही आचरण करने की आवश्यकता होती
क में अनुकरण की अद्भुत क्षमता होती है और वह वैसा ही आचरण
जैसा कि उसके परिवार में उसके बड़े करते हैं। अतः यदि तुम बच्चों को
त करना चाहती हो तो अपने में भी संस्कारों को विकसित करो। लेकिन
चाहे कैसा भी आचरण करें पर दूसरा वैसा ही करे, जैसा हम चाहते
कैसे सम्भव हो सकता है ? यदि बच्चे तुम्हारे कहने के अनुसार आचरण
े तो तुम केवल उन्हें डांटती डपटती हो नहीं हो, वरन् उन्हें पीटती
तुम में यह समझ कहां से आई कि दूसरा-वही सीखे जैसा तुम चाहती
रतीय संस्कृति ने कभी अपने को बलात् किसी पर लादने का प्रयास नहीं
यह भावना स्वदेशी नहीं, विदेशी है। यही वो चीज है जो इस देश में बाहर
माता-पिता को अपने बच्चों से समान रूप से अभिन्नता रखनी चाहिये।
कभी भी यह अहसास नहीं होने देना चाहिये कि उनमें और हम में कोई
यदि बालक के मन में यह भाव बैठ गया तो वह कभी अपने से नहीं जुड़

सकेगा। माँ जी को देखो। वे सभी से आत्मीयतापूर्ण समानता का व
हैं। इसीलिये दूसरों में जो दोष या कमियाँ हैं, उन्हें वे अपना ही क
मानने लगती हैं। उनके लिए कोई पराया नहीं है। सभी उनके
कारण है कि हमारे बच्चे भी हमारे अधिक निकट न होकर माँ के
हैं।

विशेष–प्रकाश की जीवन शैली स्वतः स्पष्ट एवं संकेतिक है
अपनी भावनाओं को लादना उचित नहीं। यदि हम दूसरों को कुछ सि
हैं तो भय से नहीं प्रेम से सिखाये। स्व-आचरण द्वारा सिखाये।
होते हुए भी अर्थपूर्ण है।

(91)

'फास्ट' माने 'डाइटिंग'–मोटापा कम करने के लिए व्रत माने
प्यास-लालच-डर से ऊपर उठना। जो हमें बहुत प्रिय हैं, उन्हें ईश
में अर्पित करना। मनुष्य अपने अहंकार में जमकर पत्थर न हो जाए
के लिए अपनी कठोरता को पिघलाता रहता है—भाव से, आँसुओं
और सेवा से। परमराज्य के चरणों में नतशिर होकर अपने अहंक
करना, यही ठाकुरजी की पूजा है। हम भाव बने रहें, पदार्थ न हो
मेरी माँ का भजन है।

प्रसंग—ये गद्य पंक्तियाँ डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नवीन
विसर्जन' के तीसरे अंक के दूसरे दृश्य से ली गई हैं। प्रकाश और नील
लाप चल रहा है। यह वार्तालाप मूल्यों की मीमांसा से सम्बन्धित है
को आवश्यकता और उपयोगिता से जोड़ना चाहती है जबकि प्रकाश
मूल्यों का शाश्वत महत्व है। नीलम व्रत व फास्ट को एक ही सम
प्रकाश की दृष्टि में पर्याप्त अन्तर है। प्रस्तुत अवतरण में प्रकाश
को स्पष्ट किया है।

व्याख्या—प्रकाश कहता है कि फास्ट का अर्थ डायटिंग है जो
करने के लिए किया जाता है जबकि व्रत व्यक्ति का आध्यात्मिक वि
उसे भूख, प्यास, लालच, डर से ऊपर उठाता है। फास्ट करते समय
में अधिक न खाने का भय रहता है। उसका कोई निश्चित प्रयोजन
होता है जो आवश्यकता और उपयोगिता से जुड़ा है जबकि व्रत
कोई उद्देश्य नहीं होता। उसके पीछे कोई प्रयोजन या भय भी नह
मन को नियमित करने का साधन है। मनुष्य को भोजन से प्रेम है
प्रिय है उसे हम निराहार रहकर प्रभु के चरणों में भेंट करते हैं। मनु
अहंकारवादी है; अहंकार व्यक्ति को कठोर बनाता है। व्रत, उपव

...क्ति से मानव का यह अहंकार पिघल कर बहता रहता है। अपने अहं... गलाने के लिए ही मनुष्य विविध कलाओं की ओर प्रेरित होता है। ...दय की करुणा कभी भाव से, कभी आँसुओं से, कभी संगीत से और ...ता मे व्यंजित होती है। गीत, भजन या पूजा पाठ से मानव देवता के ...में अपना सिर नवाकर अपने अहंकार का ही शमन करता है। अहंकार ...का चिन्ह है। भावना, संगीत और सेवा मनुष्य की दृढ़ता को कम करते ...उसे पत्थर बनाते रहते हैं। ऐसी माँ जो पूजा-पाठ व भजन करती है ...लिये यही भाव है। अहंकार का शमन ही माँ का भजन है।

विशेष—प्रस्तुत अवतरण में व्रत और फास्ट का अन्तर स्पष्ट किया गया ...षा विवेचनात्मक है। उसका लाक्षणिक रूप भी सांकेतिक है। छोटे-छोटे ...में बड़ी बात कहना डॉ. लाल की भाषागत निजी विशेषता है।

(92)

...माँजी, पूजा-पाठ से नींद अच्छी आती है। तनाव कम हो जाता है जिसके ...संत है वही धर्म, अध्यात्म, पूजा-पाठ के बारे में सोच सकता है। पश्चिम ...तरक्की कैसे कर रहा है? हमारी तरह वहाँ कोई चक्कर नहीं। हमारे ...लोग काम नहीं करना चाहते, बहाना करते हैं पूजा-पाठ का। अब माँजी की ...न ओर है। क्यों माँजी? माँजी चुप क्यों है?

प्रसंग—प्रस्तुत गद्य अवतरण डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक 'कथा ...' के चौथे अंक के प्रथम दृश्य से अवतरित है। इस दृश्य में नीलम, सेठी ...और माँजी का वार्तालाप चल रहा है। नीलम आधुनिक विचारों की स्वार्थी ...चापलूस महिला है। वह धर्म को दिखावे और स्वार्थ सिद्धि का साधन ...ती है। सेठी साहब उसके पति के बॉस हैं। उसके पति की तरक्की उन्हीं के ...है। इसलिये वह माँजी को सेठी साहब की हाँ में हाँ मिलाते रहने की बात ...है। माँजी कहती है कि जो ठाकुर जी की इच्छा होगी, वैसा ही होगा। ...कहती है, कोई ठाकुर-वाकुर नहीं। आप मुंह बन्द रखें, चले और पास ...माँजी को चुप देखकर सेठी साहब पूजा-पाठ के लाभ को माँ सम्बोधित कर ...ते हैं।

व्याख्या—सेठी साहब कहते हैं कि पूजा-पाठ के अनेक लाभ है। इससे नींद ...आती है। मनुष्य के मन का तनाव कम हो जाता है। व्यक्ति मानसिक कार्य ...थक जाता है। चिन्ताओं के कारण उसे नींद नहीं आती। पूजा-पाठ मन ...तनाव को कम करके उसे अच्छी नींद लाने में सहयोगी होते हैं। पूजा पाठ ...के लाभ होते हुए भी मनुष्य इन्हें समुचित समय नहीं दे पाता। जिसके पास ...है, फुर्सत है, वही व्यक्ति धर्म, अध्यात्म और पूजा-पाठ के विषय में सोच

सकता है। हमारा देश पश्चिम की तुलना में पिछड़ा है। उसका
हमारा अधिकांश समय धार्मिक कार्यों में निकल जाता है। पाश्च
सम्मुख धर्म, कर्म और आध्यात्म का चक्कर नहीं होता। वे लोग प्रग
हैं। वे धर्म, कर्म को प्रमुखता न देकर ठोस कार्यों को महत्व देते
वासियों के लिए काम ही सब कुछ है। जबकि हम भारतवासी धर्म
पाठ, आध्यात्म का बहाना बनाकर निठल्ले और कामचोर होते जा र
का पूजा-पाठ करना ठीक है। उनके पास समय है। माँजी पूजा-पा
तो अच्छा ही करती है, लेकिन हम जैसे लोगों के लिए यह सब सम्भ
अपनी बात कहकर वे माँजी से उसकी स्वीकृति चाहते हैं। माँजी को
उन्हे आश्चर्य होता है।

विशेष–सेठी साहब का भौतिकवादी दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है
व्यक्तित्व आज बिखरा हुआ क्यों है? यह सेठी साहब के उक्त क
होता है। वे पूजा-पाठ के समर्थक होते हुए भी उसकी निन्दा करने हु
लगते हैं।

भाषा सरल है। वाक्य छोटे-छोटे हैं। छोटे वाक्यों में बड़ी
डॉ लाल की अपनी विशेषता है, जो इस अवतरण में भी दिखाई दे

(93)

मुझे तरक्की नहीं चाहिए। मैंने नौकरी कर ऐसा धर्मिकमा क
निरपेक्ष रहने की इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी, मुझे पता नहीं
पेट के लिए है, अन्नमय कोष के लिए। जीवन मनोमय कोष का भोज
लिए वह धर्म है। धर्म का अर्थ है सर्वजीवन के साथ एकाकार होना

प्रसंग--प्रस्तुत अवतरण डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के 'कथ
नाटक के अन्तिम अंक के अन्तिम दृश्य से उद्धृत है। माँ जो स्वर्ग सि
नीलम माँजी की स्मृति के साथ-साथ उनकी सारी चीजों व यहां तक कि
कि मूर्ति को भी घर में रखने को तैयार नहीं है। सोनू और आशा माँ
थे। उनके संस्कारों से जुड़े थे। इसीलिए वे उन सबको अपने पास र
हैं। प्रस्तुत अवतरण में प्रकाश की निरपेक्ष दृष्टिकोण में आये बदल
किया गया है।

व्याख्या--प्रकाश अपनी पत्नी नीलम से कहता है कि उसने
इन्कार कर दिया है। वह तरक्की लेना नहीं चाहता। अपने अफसर
को प्रसन्न करके तरक्की लेने के चक्कर में अपनी धर्मपरायणा, भ
धर्म मूर्ति माँ को खो दिया। जब मैंने निरपेक्ष रहने का निर्णय लि
यह कल्पना भी नहीं की थी कि मुझे इसकी इतनी बड़ी कीमत च

...पेक्ष रहने के चक्कर में मैंने अपनी माँ को खो दिया। नौकरी का उद्देश्य उदर ... है। हमारे अन्नमय कोष का पोषण होता है। जीवन मनोमय कोष का भोजन ... इसलिए वह धर्म है। जीवन भौतिक सुख सुविधा जुटाने का नाम नहीं है। यदि ...कि को पेट भरने से बढ़कर कोई काम करना है तो उसे भौतिकता से ऊपर ...ना होगा। उसे धर्म के मार्ग पर चलना होगा। पेट भरने का साधन अर्थ और ...ोमय कोष का साधन धर्म है। धर्म व्यक्तिगत नहीं होता उसका सम्बन्ध सबसे ...र समान है।

विशेष—प्रस्तुत अवतरण में प्रकाश चन्द्र की बदली हुई मनोस्थिति और ...पेक्ष नीति पर करारा व्यंग्य किया गया है।

भाषा सरल है और उसमें दार्शनिकता का पुट है।

(94)

"माँ मेरा भय लेकर चली गई। इस नौकरी ने मेरा सत्यानाश किया, पर ... के आशीर्वाद से मैं इतना नहीं गिरा कि माँ के विश्वास को अपनी तरक्की के ...ए बाजार में बेच दूँ।"

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश 'कथा विसर्जन' नाटक के अन्तिम अंक से अवतरित ...। यह गद्यांश प्रकाश का कथन है। प्रकाश और उसकी पत्नी नीलम में बातचीत ...न रही है। माँ के रहने तक प्रकाश निरपेक्ष रहता है। परन्तु माँ के निधन के ...द उसके संस्कार उसे निरपेक्षता छोड़ने को प्रेरित करते हैं। जब वह अपना ... विचार पत्नी के समक्ष प्रकट करता है तो वह इसे खतरनाक कहती है। नीलम ... इसी कथन का उत्तर प्रस्तुत अवतरण का प्रतिपाद्य है।

व्याख्या—प्रकाश नीलम से कहता है कि मेरी नौकरी ने मेरा सत्यानाश ...र दिया। मैंने तरक्की के चक्कर में माँ की उपेक्षा की, उसकी भावनाओं को ... पहुँचाया और तुम्हारी ऊलजलूल हरकतों को सहन किया। केवल इसलिये ... मुझे तरक्की मिल जाये। माँ को भी यही भय था कि यदि उन्होंने कुछ गलत-...त कह दिया तो उसका मेरे बेटे की तरक्की पर कोई विपरीत प्रभाव न पड़ ...ये। लेकिन माँ सच्चाई को कहने से डरती नहीं थी। उनकी आत्मा पवित्र थी। ...नके विचारों में स्पष्टता और दृढ़ता थी। माँ ने जो संस्कार मुझे दिये वे आज ... मेरे साथ हैं। अपने उन्हीं संस्कारों के आधार पर मैं अपनी तरक्की का सौदा ... के विश्वास से नहीं करूँगा। माँ नौकरी में भी पवित्रता की समर्थक थी। मैं ...ी पवित्रता को बनाये रखूँगा, तभी माँ की आत्मा को सच्ची शांति मिलेगी।

विशेष—इस अवतरण में प्रकाश के विचारों में आये हुए बदलाव को स्पष्ट ...दों में व्यक्त किया गया है। मानव जब तक निरपेक्ष रहता है। तभी तक वह ...ई निर्णय स्वयं लेने में समर्थ नहीं होता। निरपेक्षता को छोड़कर ही व्यक्ति ...ालम्बन की डगर पर चल पाने में सफल होता है।

3. एकांकी रत्नाकर

(सम्पादक डॉ. श्रीधर सिंह)

1. दीपदान

(95)

मैं ही क्या, सारे नगर निवासी यह त्यौहार मना रहे है
हो, तो तुम ! धाय माँ, तुम ! पहाड़ बनने से क्या होगा ? राजमह
कर रह जाओगी, बोझ ! और नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ
अपने सिर पर धारण करेंगे, आनन्द और मंगल तुम्हारे किनारे
प्रवाह होगा, उमंगों की लहरें होंगी जो उठने में गीत गाएँगी
नाचेंगी ।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्य अवतरण डॉ. श्रीधर सिंह द्वारा स
पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी रत्नाकर' के 'दीपदान' शीर्षक एकांकी से उ
लेखक डॉ. रामकुमार वर्मा है । इसमें उस समय का चित्रण है
सिंह के साथ खेलने वाली राव सरूपसिंह की पुत्री सोना पन्ना धाय
सिंह को उत्सव में नहीं भेजने का कारण पूछती है । साथ ही व
है कि बनवीर ने कहा है कि धाय माँ महल में अरावली पर्वत बन
पहाड़ जड़ता का प्रतीक है और नदी सजीवता तथा सरसता की
धाय माँ को नदी बनने का परामर्श देती है । प्रस्तुत अवतरण सो
मर्श का अंश है ।

व्याख्या—सोना धाय माँ को उदयपुर नगर में मनाये ज
उत्सव की जानकारी देती हुई कहती है कि आज सम्पूर्ण नग
अत्यन्त [illegible] और उल्लास के साथ मनाया जा रहा है । सभी नगर
ले रहे हैं । धाय माँ ! इस उत्सव से कोई वंचित है तो केवल आप
इस उत्सव में भाग लेती हैं ? आपका जीवन पहाड़ के समान है ।
के बोझ हैं । बोझ को उठाकर कोई अधिक समय तक नहीं चल पात
महल के लिए बोझ बन गई हैं जो उसकी इच्छा के अनुसार क
राज विरोध करके कोई भी प्रसन्न नहीं रहा । यदि आपका यही

...ा जीवन भी पर्वत के समान बाक बन जायेगा। अतः पर्वत बनने से नदी ... अच्छा है। नदी का जल निरन्तर प्रवाहित रहता है। वह अपने साथ शिला-...ओं को बहाकर उनका दर्प चूर्ण कर डालता है। वह मार्ग में आने वाली ...ओं की परवाह नहीं करता। उसके दोनों किनारे आनन्द और मंगल से ...र्ण होते हैं। निरन्तर प्रवाह ही उसका जीवन होता है। जीवन जो आनन्द ... उमंग की तरंगों में आलोडित होता है। जीवन जो जल के उड़ने के समान ...ास के गीत गाता है और जिसका गिरना भी नृत्य के समान मनोहारी होता ... आशय यह है कि पहाड़ के समान बने रहने पर तुम्हारा जीवन पर्वत के समान ...स्थिर और आनन्द विहीन हो जायेगा और नदी के समान प्रवाहित होने पर वह ... आनन्द, उमंग और सुख से परिपूर्ण होगा। अतः पहाड़ के स्थान पर तुम नदी ...कर प्रवाहित हो।

विशेष— पर्वत और नदी की तुलना की गई है। नदी के समस्त अंगों के ...ण में सांग रूपक की छटा निखरती है। भाषा प्रतिकात्मक है। जिससे अर्थ ...भीर्य आ गया है। शैली प्रवाह पूर्ण और माधुर्य गुण सम्पन्न है।

(96)

"आँधी में आग की लपटें तेज ही होती है, सोना ! तुम भी उसी आँधी में ...खड़ा कर गिरोगी। तुम्हारे ये सारे नूपुर बिखर जाएँगे। न जाने किस हवा का ...का तुम्हारे इन गीत की लहरों को निगल जाएगा। चित्तौड़ राग-रंग की भूमि ... है, जौहर की भूमि है। यहां की आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल ... लड़कियां नहीं।

तोड़ो ये नूपुर ! यहाँ का त्यौहार आत्म-बलिदान है। यहाँ का गीत मातृ-...न की वंदना का गीत है। उसे सुनो और समझो।"

प्रसग - प्रस्तुत गद्य अवतरण डॉ. राम कुमार वर्मा द्वारा लिखित प्रसिद्ध ...तिहासिक एकांकी 'दीपदान' से अवतरित है। बनवीर दासी पुत्र है और वह ...पुर राज्य को हड़पने का सुख-स्वप्न सजोता है। वह नगरवासियों को 'दीपदान' ...व में उलझाकर अपने राह के कांटे महाराणा विक्रमादित्य और कुँवर उदय ...ह की हत्या कर देना चाहता है। वह सोना और उसकी सहेलियों को नाच-गाने ...लिए तैयार करता है। कुँवर नाच के बीच से उठकर घर आ जाते हैं पन्ना उसे ... जाने नहीं देती। सोना कुँवर को बुलाने आती है और धाय माँ को भी उत्सव ...आने के लिए आमंत्रित करती है। धाय माँ अपनी आशंका सोना के समक्ष ...ट करती है। सोना उन पर विद्रोह की बातें करने का आरोप लगाती है। ...ना के आरोप का उत्तर देते हुए पन्ना धाय उसे समझाती हुई कहती है। प्रस्तुत ...वतरण पन्ना का उक्त सन्दर्भ में कहा गया कथन ही है।

व्याख्या—पन्ना सोना को समझाती है कि यदि राजा
बनता है तो राजा का आचरण ही उनका उत्तरदायी होता
की लपटें तेज हो होती है, शान्त नहीं। आज उदयपुर राज्य
आँधी चल रही है। तुम भी उस आँधी के बहाव में बच न स
गिर पड़ोगी और तब तुम्हारे सारे नूपुर बिखर जायेंगे। आ
नाच-गाने सब भूल जाओगी न जाने किस अज्ञात हवा का झोंक
लहरों को निगल जायेगा। कारण स्पष्ट है क्योंकि चित्तौड़ रा
की भूमि नहीं वरन् जौहर की भूमि है। यहां की नारियों ने
लिए अपना बलिदान दिया है। चित्तौड़ में केवल आग की ल
करती हैं, तुम्हारी जैसी रावल लड़कियां नहीं। अतः तुम अपने
और आत्म-बलिदान के लिए तैयार हो जाओ। चित्तौड़ में केवल
जाता है—मातृभूमि की वन्दना का गीत। उस गीत की गूंज अ
वातावरण में है तुम उसे सुनो और समझने का प्रयास करो।
राजद्रोह पन्ना धाय नहीं वरन् बनवीर करना चाहता है।
रोकने के लिए यदि तुम्हें अपना उत्सर्ग भी करना पड़े तो करो
को समझने का प्रयास करो क्योंकि चित्तौड़ की नारियों ने मातृ-भू
की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया है। तुम भी उस बलिदान
हो जाओ।

विशेष—भाषा पात्रानुकूल और ओजगुण सम्पन्न है।
उसकी राज भक्ति सांकेतिक है। समय आने पर वह आत्म बलिदा
वीर भूमि मेवाड़ के वीरतापूर्ण कार्यों का उल्लेख प्रशसनीय है।

(97)

"तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धार बही। अब हृदय से रक्त
तो मैं कैसे रोक सकूँगी! मेरे लाल! मेरे चन्दन! जाओ, यह
मातृभूमि पर चढ़ा दो! आज मैंने भी दीपदान किया है। दीपद
का दीप मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है। ऐसा दीपदान
है। एक बार तुम्हारा मुख देख लूँ। कैसा सुन्दर और भोला मु

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'एक
सकलित 'दीपदान' शीर्षक एकांकी से उद्धृत है। इस ऐतिहासिक
डॉ. राम कुमार वर्मा है। प्रस्तुत अवतरण में धाय मां पन्ना
चीत्कार है जब वह चित्तौड़ के एक मात्र उत्तराधिकारी कुँवर
बनवीर से रक्षा के प्रयास में कुँवर की शय्या पर अपने एक म
गीत गाकर सुला देती है। तब परिस्थिति की भीषणता की क

...मन अन्तर्द्वन्द्व से गूँज उठता है और वह अपने कर्त्तव्य का पथ निर्धारित ...में सफल हो जाती है।

व्याख्या—पन्ना मन ही मन अपने सोये हुए पुत्र चन्दन को लक्ष्य करके ...है कि मेरे लाल ! आज तुम्हारे अँगूठे में रक्त की धारा बही और अब कुछ ...र बाद तुम्हारे हृदय से रक्त की धारा बहेगी तब मैं उसको कैसे रोक सकूँगी ? ...के इस दुःखमय क्षण में मैं आँसू भी नहीं बहा सकूँगी ! कैसी विवशता है ! ...त्र ! अपनी रक्त धारा को मातृभूमि के सम्मान की रक्षा में बहा दो। मैंने ...आज अपने जीवन के अन्धकारपूर्ण मार्गों को दीपक के समान आलोकित करने ...अपने पुत्र का बलिदान मातृभूमि की बलिवेदी पर करके दीपदान किया है। ...अपने वंशधर कुल दीपक पुत्र को खून की धारा में तैरने में लिए कुँवर ...सिंह की शैय्या पर सुला दिया है। कुछ ही देर में बनवीर आकर अपनी ...र की प्यास मेरे लाल के रक्त से बुझायेगा। अब तक किसी माँ ने ऐसा ...दान नहीं किया होगा जो अपने ही हाथों, अपनी आँखों के सामने अपने पुत्र ...त्या होते देखे और सन्तुष्ट हो। मेरा यह बलिदान अद्भुत और अपूर्व होगा। ...की ममता सन्तान का अन्तिम बार मुख देखने को विकल हो जाती है और ...देखकर बड़े प्यार और दुःख से वह कहती है कि मेरा लाल कितना सुन्दर ...भोला है। भाग्य की विडम्बना है कि आज मुझे अपने ही पुत्र का दीपदान ...दान) करना पड़ रहा है।

विशेष—परिस्थिति की भीषणता में धाय माँ जरा भी विचलित नहीं ...और वह अपने कर्तव्य का निर्धारण कर अपने पुत्र का बलिदान देने को ...र होती है। उसका 'दीपदान' इस एकांकी के शीर्षक को सार्थक करता है। ...जैसा आदर्श और त्यागमय चरित्र राजस्थान के इतिहास की अमूल्य धरोहर ..."ऐसा दीपदान भी किसी ने किया है।", कथन उसके चरित्र की कसौटी पर ...तरह खरा उतरता है।

(98)

"यही है, यही है मेरे मार्ग का कंटक। आज मेरे नगर में स्त्रियों ने दीप- ...किया है। मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा यमराज। लो ...दीपक को। यह मेरा दीपदान।"

प्रसंग—ये गद्य पंक्तियाँ डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित 'दीपदान' ...की की अन्तिम पंक्तियाँ हैं। इस एकांकी में कुँवर उदयसिंह के सरंक्षक दासी ...बनवीर द्वारा कुँवर उदयसिंह की हत्या के षडयन्त्र और उसे विफल करने में ...माँ पन्ना द्वारा अपने एक मात्र पुत्र चन्दन के बलिदान देने को ऐतिहासिक

कथा का वर्णन है। इस अवतरण में कुँवर उदयसिंह की
चन्दन को उदयसिंह समझकर उसकी हत्या करने से पूर्व कहे गये
को उद्धृत किया गया है।

व्याख्या—कुँवर उदयसिंह की शय्या के पास जाकर उस
चन्दन को कुँवर उदयसिंह समझकर क्रूर बनवीर प्रसन्न होकर
बालक ही मेरे मार्ग का कांटा है। मैं उदयपुर राज्य का महाराणा
हूँ लेकिन उसके इस उत्तराधिकारी के रहते हुए ऐसा होना सम्भव
महाराणा बनने की बाधा यही कुँवर है। मैं आज इसकी हत्या
को निष्कंटक कर लूँगा। आज सम्पूर्ण नगर ने दीपदान उत्
स्त्रियों ने तुलजा भवानी को दीपदान किया है। मैं भी अपने मार्ग
का यमराज को दान करूँगा। ऐसा संकल्प कर वह तलवार को उ
और फिर उसका भरपूर प्रहार बालक पर करते हुए वह यमराज
कर कहता है कि उसके दीपदान को स्वीकार करो। कुँवर के जीव
उसका दीपदान है।

विशेष—प्रस्तुत अवतरण में क्रूर बनवीर की क्रूरता एव
प्रभावशाली चित्रण हुआ है। 'दीपदान' यहां कुँवर उदयसिंह के
व्यक्त हुआ है जो इसके शीर्षक की उपयुक्तता की ओर संकेत क
सरल और वाक्य छोटे-छोटे हैं।

2. दस हजार

(99)

यह तो सुन्दरलाल की ही लिखावट है। लिखता है—'
मेरी जिन्दगी चाहते हो तो किसी भी आदमी के हाथ काबुली
आज ठीक शाम के आठ बजे दस हजार रुपया पहुँचा दो! पुलिस क
सहायक लेकर आए तो खान कहता है, लड़के को मरा ही समझो।
मुझे बड़ी तकलीफ दी है। शायद नरक की कोई भी यातना इससे
हो सकती। मुझे विश्वास है, आप मेरी रक्षा करेंगे।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश श्री उदयशंकर भट्ट द्वारा रचित 'दस
एकांकी से अवतरित है। इसमें उस समय का चित्रण है जब सेठ वि
एकमात्र पुत्र सुन्दरलाल का अपहरण पठान लोग कर लेते हैं और फि
हजार रुपये मांगते हैं। पठानों की इस माग से सूद खोर विशाखा
दहल जाता है और वह चारपाई पकड़ लेता है। पठानों ने सुन्दरला
लिखावट एक पत्र भेजा है। सन्ध्या समय मनोमल के आने पर सेठ

हुए कि मै तो बरबाद हो गया, पत्र को जोर से पढ़ने को कहते हैं।
ग में उसी का वर्णन है।

...ता—पत्र को हाथ म लेकर जब मुनीमजी उसे पढ़ने लगते हैं तो
लिखावट देखकर चौंक पड़ता है। पत्र में लिखा है कि पिताजी !
जीवित देखना चाहते है तो आज शाम के आठ बजे किसी के हाथ
के बाहर दस हजार रुपया लेकर भेज दो। अन्यथा ये लोग मुझे
साथ ही खान न यह चेतावनी भी दी है कि यदि साथ में पुलिस या
हायक को लेकर आये तो लड़के को मार दिया जायेगा। ये लोग
यातना देते है और पीटते है। इसलिये यदि आप मेरा जीवन चाहते
पये भिजवा दो। मुझे विश्वास है कि आप लोग मुझे चाहते हैं और
रक्षा करेंगे।

...ष—प्रस्तुत पत्र अपराधियों द्वारा लिखवाया गया है। इसकी भाषा
भी दुक्त भोगी माता पिता का हृदय विचलित हो सकता है। पत्र
काल और वातावरण के अनुकूल और प्रभावशाली है।

(100)

माया है तो फायदा। न तीरथ, न जप-तप न व्रत। कभी हरिद्वार भी
तो तुम्हारा पैसा जानती ही नहीं ? चार कोठियाँ हैं और हम इसी
सड़ रहे हैं। आज तीन-चार लाख रुपए के मालिक हो। एक पैसा भी
हीं किया। ऐसा रुपया किस काम का ?"

...—प्रस्तुत गद्यावतरण श्री उदयशंकर भट्ट द्वारा रचित 'दस हजार'
कं से अवतरित है। जब सूदखोर सेठ बिशाखाराम के एक मात्र पुत्र
का अपहरण पठानों ने कर लिया और फिरोती में दस हजार रुपये की
सेठ जी को पैसा जाने की कल्पना से ही भारी कष्ट होता है। उन्होंने
रिश्रम करके पिछले चालीस वर्षों में रुपया कमाया था। सेठजी के इस
नकी पत्नी उन्हें समझाती हुई यह कथन करती है।

ख्या—सेठजी की पत्नी सेठजी को कहती है कि यदि आपने चालीस
होकर धन कमाया भी तो उसका हमें क्या फायदा हुआ ? धन का
कार्यों में किया जाता है, पर इतने वर्षों में आपने कभी कोई धार्मिक
कया। आप न किसी तीर्थ पर गये, न आपने जप-तप किया और न
नाम ही रखा। आपने हरिद्वार तक की यात्रा नहीं की। आपका
व्यापार के लिए रहा, घर या घर की आवश्यकता पूर्ति पर आपका
ही नहीं। मैं तो आपके पैसे को धन समझती ही नहीं। यदि आप पैसा
ते है तो आपको उसे खर्च करना भी आना चाहिये। आपने परिवार
लए कभी एक पैसा भी खर्च नहीं किया। तब आपके पैसे से हमें क्या
न लाभ से चार-चार कोठियाँ खरीद ली है, पर वे हमारे किस काम

की ? हम तो गली के पुराने और गन्दे मकान में ही रहते हैं। य
रहने का सुख मुझे या आपके बच्चों को नहीं मिला तो वे जैसी हैं
उनका होना न होना हमारे लिए कोई अर्थ नहीं रखा। आज ला
आप तीन-चार लाख रुपये के मालिक बन गये हो परन्तु आपने ए
में खर्च नहीं किया। कभी गरीबों की सहायता नहीं की। जो रुपय
भोग में खर्च न हो उसके होने का क्या लाभ! अतः वह हमारे लि

विशेष—प्रस्तुत अवतरण की भाषा पात्रानुकूल है। इसमें
और उसकी पत्नी की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन हुआ है
की भाषा कटुता लिए हुए है उसमे सेठ की कंजूसवृत्ति भ
होती है।

3. ऊसर

(101)

मैं इस भीड़-भड़क्के से बहुत भड़कता हूँ और औरतों को तुम
जब बाहर के आदमी होंगे तो बिल्कुल दूसरी ही हो जाएँगी और अ
यही उम्मीद करेंगी। आपके टेबल पर फिगर बोल मैंने सुनी भी न
मेम साहब शायद यह दिखलाना चाहती थीं जैसे हम लोग हफ्ते में द
बोल बरतते हैं।"

प्रसग—यह गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी
संकलित श्री भुवनेश्वर द्वारा रचित 'ऊसर' एकांकी से अवतरित
तरण में मिस्टर सिबल ट्यूटर से बातें करते हुए अपनी पत्नी
उल्लेख कर रहे हैं।

व्याख्या—मिस्टर सिबल कहते हैं कि उन्हें भीड़-भाड़ अच्छी
वे भीड़-भड़क्के से बहुत अधिक भड़क जाते हैं। इसलिये घर में मेहम
वे प्रायः उनसे दूर ही रहते हैं। औरतों के स्वभाव के विषय में
व्यक्त करते हुए वे कहते हैं कि तुम (ट्यूटर) औरतों के स्वभाव से
हो। औरतों में दिखावे की भावना बहुत अधिक होती है और जब ब
आदमी आता है तो वे उसके सामने अपनी वास्तविकता से बढ़-चढ़
प्रयास करती हैं और वैसा ही प्रदर्शन भी करती हैं। साथ ही वे य
हैं कि इस नाटक में उनके पति उन्हें सहयोग करें। वे भी उ
मिलावें। यही देखिये कि अस्वस्थ होते हुए भी वे मेहमानों को घूम-घ
और पार्क दिखलाती रहेंगी और बाद में हफ्ते भर स्ट्रैण्डहार्ट से
मुझे भीड़-भाड़ अच्छी नहीं लगती। अतः मैं उनके साथ नहीं गया।
मुझे मिसेज सिबल की तरह दिखावे की जरा भी आदत नहीं। म
टेबिल पर मैंने फिगर बोल के विषय में इससे पूर्व कभी नहीं सुना था,
मेहमानों के सामने फिगर बोल का वर्णन इस प्रकार से कर रहा है ज
हफ्ते में दस दिन फिगर बोल बरतते हैं। अपने इस व्यवहार में वे

सहयोग चाहती हैं और उनकी हाँ में हाँ न मिलाने पर वे नाराज ...तः ऐसे अवसरों पर मैं उनसे दूर ही रहता हूँ।

—मिसेज सिबल का चित्रांकन करने के माध्यम से लेखक ने स्त्रियों ...सुन्दर उद्घाटन किया है। स्त्रियों में स्वभावतः आडम्बर एवं ...ना होती है।

(102)

...एक किताब पढ़ी थी, उसमें हमारी सभ्यता तहजीब की तशबीह एक ...की गई थी—ऊपर, ऊपर, ऊपर—चढ़े चले जाइए, पर नीचे जमीन ...हजम करने के लिए बेताब हैं! वाकई आने वाली जेनरेशन ... पर मैं ... जेनरेशन आती नहीं! यहीं जमीन की आँतें अब बजाय हजम... ...र देती हैं....।"

—प्रस्तुत गद्य अवतरण डॉ. श्रीधरसिंह द्वारा सम्पादित हमारी पाठ्य ...ी रत्नाकर' में संकलित श्री भुवनेश्वर द्वारा रचित 'ऊसर' शीर्षक ...लिया गया है। प्रस्तुत एकांकी में मध्यवर्गीय परिवार और उसके भीतर ... उजागर किया गया है। एकांकी में पात्रों की संदर्भहीन बातें और ...ता को प्रदर्शित किया गया है—जहाँ विचार की धरती पर कुछ ...ीं है। भीतर केवल खोखलापन, प्रसंगहीनता और दिखावा है। ...ण भी गृह स्वामी मिस्टर सिबल के एक ऐसे ही कथन से सम्ब-

...ा—मिस्टर सिबल और ट्यूटर में एक प्रसंगहीन वार्तालाप चल ...टर सिबल आने वाली जेनरेशन के विषय में कहते हैं कि आने वाली ... वह बिल्लियों को हो या सर्पों की हमसे अच्छी होगी। फिर वे ...ते हैं कि उन्होंने एक ऐसी किताब पढ़ी थी जिसमें हमारी सभ्यता ...की तुलना एक बड़ी दुकान से की गई थी। इस दुकान में आप ...र चढ़ते चले जाइये पर कोई लाभ नहीं क्योंकि नीचे की जमीन की ... करने को लालायित हैं। भाव यह कि भले ही हम सभ्यता के क्षेत्र ...आगे क्यों न निकल जायें हमारे संस्कार हमें आगे बढ़ने नहीं देंगे। ...छे की ओर खींच लेंगे। पतन के गर्त में ले गिरेंगे। फिर भी अपनी ...बात को दोहराना चाहते हैं कि आने वाली जेनरेशन हमसे अधिक ... फिर अनायास उन्हें कुछ सूझ पड़ता है और वे कहते हैं कि कोई भी ...ी नहीं है वरन् जमीन की आँतें उन्हें ... कर देती है। जिस प्रकार से ...विकार होने पर उल्टी हो जाती है उसी प्रकार आने वाली जेनरेशन

भी अरुचिकर होगी और पृथ्वी उसे वमन कर देगी। इस प्रकार मि
की बात अप्रसांगिक, सन्दर्भहीन और व्यर्थ का सा प्रतीत होती है।

विशेष—प्रस्तुत अवतरण में मिस्टर सिबल द्वारा कहा गया क
और अर्थहीन है। जो इस एकांकी के शीर्षक 'ऊसर' बजर की सार्थक
संकेत करता है। मध्यवर्गीय बौद्धिक चेतना पर व्यंग्य करता है।

(103)

"उन्हीं का नहीं, आज सब जवान आदमियों का यह हाल है।
के अधकचरे असर से बगावत तो करना चाहते हैं, पर नहीं कर सकते; औ
पूछता हूं वह बगावत किसके खिलाफ है ? आप नेचर से बैर कर सकते
कर सकते। आप छत से गिरेंगे तो दुनिया की कोई ताकत आपका सि
नहीं रोक सकती।"

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यावतरण श्री भुवनेश्वर प्रसाद द्वारा रचि
एकांकी से अवतरित है। इसका सम्बन्ध उस घटना से है जब घर आये
के समक्ष गृहस्वामिनी ट्यूटर के विषय में कुछ कहती है तब उसी का सम
हुए गृहस्वामी मिस्टर सिबल यह कथन करते हैं।

व्याख्या—गृह-स्वामी कहते हैं कि केवल ट्यूटर ही नहीं वरन
का हर युवक इसी तरह की बात करता है जिसका कोई अर्थ नहीं। भ
शिक्षा पाकर आज का युवक अपने को बड़ा समझने की भूल कर बैठत
पुस्तकों में समाजवाद और समानता के विषय में पढ़ता है और यह स
भूल कर बैठता है कि पढ़कर वह बड़ों और समान व्यक्तियों की जमा
का अधिकारी हो गया। पुस्तकों में जो लिखा है उसी के आधार पर वे
परिवर्तन लाना चाहते हैं और वर्तमान में जो चल रहा है उसके प्रति वि
हैं। लेकिन जो परम्परा से चला आ रहा है, उसके प्रति वे विद्रोह करके
हो सकते हैं ? फिर वे युवक की ओर देखकर कहते हैं कि आखिर वे य
किसके विरुद्ध कर रहे हैं ? क्या अपने माता-पिता के विरुद्ध नहीं कर रहे
ऐसा करने से उन्हें क्या मिलेगा। यह विरोध समाज का स्वाभाविक
विरुद्ध है। जो स्वाभाविक है—उसके प्रति विरोध हो ही नहीं सकता।
छत जैसी ऊँचाई से नीचे गिरने के समान है, और जो नीचे गिरता है उ
फटता ही है। भाव यह कि वर्तमान युवा पीढ़ी अपने समसामयिक
विरोध करके लाभ में नहीं रहेगी। अन्त में इससे उसी को हानि होगी
पीढ़ी को जीवन के इस कटु सत्य को भली प्रकार समझ लेना चाहिये
में जो कुछ लिखा होता है वह सब सत्य नहीं होता। उसे सत्य और
निर्णय स्वविवेक से करना चाहिये।

—प्रस्तुत अवतरण में गृह-स्वामी के अर्थहीन चिन्तन को लेखक ने ढंग से प्रस्तुत किया है। स्वयं ही प्रश्न करना और स्वयं ही उसका यवर्गीय समाज की आदत सी बन गई है जो ऊसर-बंजर और व्यर्थ । गृह-स्वामी का यह अनर्गल कथन इसके शीर्षक की सार्थकता ही ।

4. बलहीन

(104)

तरह का पागलपन, मन की रंगीनी, झूठा प्रेम, झूठी पीड़ा। मन जाते हैं। ऐसे लोग आकाश में उड़ते हैं: धरती की धूल से उनकी ी। इसी धूल से उनका शरीर बना है, यह सत्य भी वे भूल जाते हैं। नयों से आँख चुराते हैं, उनके निकट बैठने का साहस उन्हें नहीं होता, में अनन्त प्रेम का राग अलापते हैं।"

—प्रस्तुत गद्यावतरण श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र रचित बलहीन एकांकी है। श्री देवकुमार एक ख्याति प्राप्त कवि हैं। समाचार पत्रों में उनके का समाचार प्रकाशित हुआ है जिसे पढ़कर विश्वविद्यालय के एक शिवनाथ उनसे मिलने के लिए आते हैं। वे रजनी और सरला से कहते कुमार जी की बीमारी को जान गया हूं। यह बीमारी हिन्दी के नए कवियों में प्रायः देखने को मिलती है। वे दर्शन के आवरण में लपेट बातें लिखते हैं। वे जिस प्रेम का आलाप करते हैं वह मांसल प्रेम न एक झूठा और रंगीनी प्रेम होता है। सरला द्वारा यह पूछने पर कि ये कवियों की रचनाओं में क्या होता है? शिवनाथ उसका उत्तर देते चन कहते हैं।

ख्या—शिवनाथ सरला से कहता है कि हमारे नये कवियों को क्षय का है। वे शरीर का क्षय करके आत्मा को स्थूल कर रहे हैं। वे जो कविता समें किसी जीवित स्त्री-पुरुष का आकार नहीं होता। वह महज एक । झूठा प्रेम और झूठी पीड़ा, जिसका जीवन की वास्तविकता से कोई । ऐसे लोग कल्पनाशील अधिक होते है। उनकी कल्पना धरती को य में उड़ती है। उसमें किसी रहस्यमय लोक का वर्णन होता है। सच्चाई और वास्तविकता का तो वह स्पर्श भी नहीं कर पाती। वे इस भूल जाते हैं कि वे इसी धरती के जीव हैं और उनका शरीर इसी -कूद कर पुष्ट हुआ है। ऐसी रंगीनी कल्पना करने वाले कवि अपनी आंख चुराते हैं। उनके पास बैठने का साहस उनमें नहीं होता। आश्चर्य ना में अनन्त प्रेम का राग अलापने वाले कवि अपने जीवन के यथार्थ

प्रेम को भूल जाते हैं और उसकी उपेक्षा करते हैं। भाव यह कि जिस
मानवीय प्रेम की अनुभूति नहीं उसकी कविता में आत्मिक प्रेम की अभि
हो सकती है ? प्रेम तो एक पवित्र और सात्विक भाव है। जब तक
प्रेम की इस पवित्रता का बोध नहीं होता तब तक उसका कल्पना लोक में
करना व्यर्थ है।

विशेष—प्रस्तुत अवतरण में आज की हिन्दी कविता की प्रकृति
समीक्षा की गई है। हिन्दी की छायावादी कविता इसी रंगीनी प्रेम का
है। भाषा सरल मुहावरेदार और व्यंग्य युक्त है।

(105)

"साहित्य और कला के नाम पर स्त्री चाहे जो करे, पर पुरुष को
में भी पुरुष रहना है। पुरुष की आँखों में जब स्त्री के आँसू दीख पड़ते हैं
कण्ठ में जब स्त्री की वाणी गूँजती है, उसके अनुराग में जब स्त्री की
नाचती है, उस दशा में उससे नारी ही अच्छी है। ऐसे पुरुष को पति
अधिकार कहाँ है ? पुरुष जाति का कलंक है वह अभागा ! भावनाओं में डू
वाला !"

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र द्वारा रचित
शीर्षक एकांकी से लिया गया है। इसमें उस समय का चित्रण है जब कवि
के बीमार होने पर उसकी सास सरला और विश्वविद्यालय के एक प्राध्याप
मिलने के लिए आते हैं। शिवनाथ कहता है कि वह कवि के रोग को सम
है। आज के अधिकांश कवि इसी रूमानी प्रेम से आक्रान्त हैं। वे धरती के
को तोड़कर त्रिशंकु बन गये हैं। वे अपनी कविता में भूठे आध्यात्मिक प्र
कल्पना करते-करते जीवन के वास्तविक और सच्चे प्रेम को भुला बैठे हैं।
कविता में स्वयं को नारी रूप में देखते हैं और अपनी पत्नियों से आँखें चु
रजनी उन्हें कहती है कि उनके रोग का इलाज आप ही कर सकते हैं।
शिवनाथ कहता है कि आपको मेरी बात माननी होगी। रजनी की स्वीकृ
जाने पर शिवनाथ इस अवतरण में अपनी बात कह रहा है।

व्याख्या—शिवनाथ रजनी को समझाता हुआ कहता है कि घबराने
नहीं चलेगा। आपको धैर्य रखना होगा। शिवनाथ पुरुष है। उसने कल्प
में प्रेम की कल्पना कर-करके चाहे तुम्हारी उपेक्षा की हो लेकिन एक
उसका यह स्वप्न भंग होगा तब वह वास्तविक जीवन की ओर लौटेगा अवश्
को वास्तविक जगत में लाने और उसमें जोड़ने के लिए ही तुम्हारी महा
आवश्यकता है। कला और साहित्य के नाम पर स्त्री कुछ भी कर सकती

...होती है। उसका प्रेम यदि काल्पनिक और रोमानी हैं तब भी ...रहता है। प्रेम कल्पनाओं में वह पुरुष नहीं बन जाती, पर जब ...रुष को भूलकर स्त्री बन जाता है, जब उसकी आँखों में स्त्री के आँसू ..., जब उसके कण्ठ में स्त्री की वाणी गूँजती है और जब उसके अनुराग ...लज्जा नाचती है तब उस पुरुष से नारी कई गुणा अच्छी है। ऐसे ... को पति बनने का अधिकार नहीं रहता। जो स्वयं अपने को स्त्री ...वह भला स्त्री को क्या सुख दे सकता है? ऐसा पुरुष, पुरुष जाति का ...वह अभागा अपनी ही कल्पनाओं में डूब मरने वाला, जीवन के वास्त-... वंचित रह जाता है।

...ष—प्रस्तुत अवतरण में साहित्य और कला के क्षेत्र में स्त्री और पुरुष ... की सुन्दर मीमांसा की गई है। कल्पना लोक के प्रेम और जीवन के ...म में बड़ा अन्तर है। कवि को रोमानी प्रेम के पीछे अपने यथार्थ ...हीं भुला देना चाहिये। जीवन की उपेक्षा करने वाला कवि, कवि

(106)

...न की कलियों में कला के फूल आते हैं, महोदय! आरम्भ के कवि और ...प्रेमी, दोनों को एक ही गति होती है। दोनों को संसार निष्ठुर लगता ... इसके बन्धन से मुक्त होना चाहते हैं। कोई ऐसा लोक, जहाँ बराबर ... कोयल कूकती रहे, भौंरे गूँजते रहें, फूलों और चाँदनी का लोक, ये ... फिरते हैं। सूर्य की किरणें दोनों को असह्य होती है। सूर्य के प्रकाश ...ना चाहते हैं, आरम्भ का कवि और आरम्भ का प्रेमी दोनों।"

(Imp.)

...—प्रस्तुत अवतरण श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र द्वारा रचित 'बलहीन' ...अवतरित है। इसमें उस समय का वर्णन है जबकि कवि देवकुमार और ... कविता, प्रेम और काम पर वार्तालाप हो रहा है। देवकुमार कहते ...कविता करने की प्रेरणा चौदह वर्ष की अवस्था में मिली। शिवकुमार ...क यदि यह प्रेरणा तुम्हें सोलह साल की अवस्था में मिलती तो तुम ...स्थ प्राणी होते। इस समय रोगी हो, तब देवकुमार काम के तीर का ...म्बन्ध जानना चाहता है। शिवनाथ देवकुमार के इसी प्रश्न का उत्तर ...रण में दे रहे हैं।

...ख्या—शिवनाथ कहता है कि काम और कविता का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध ... के कवि और आरम्भ के प्रेमी दोनों का स्वभाव समान होता है।

दोनों को ही संसार से विरक्ति होती है। दोनों ही समष्टि को छोड़कर
जीवन जीना चाहते हैं। प्रेमी एकान्त चाहता है और कवि भी। दोनों ही
बिहारी होते हैं। दोनों ही ऐसे लोक की कल्पना में व्यस्त रहते हैं जहाँ स
हो, कोयल की कूक हो, भौंरों का गुँजार हो, फूलों की चाँदनी हो। दोन
चाँदनी भाती है और वे सूर्य के प्रकाश से बचना चाहते हैं। उन्हें दिन भा
लगता है और वे रात होने की प्रतीक्षा करते हैं। आरम्भ के कवि और प्रे
का स्वभाव लगभग समान होता है।

विशेष—प्रस्तुत अवतरण में कवि और प्रेमी के स्वभाव की समान
मनोहारी चित्रण हुआ है। भाषा भावमयी और अलंकारिक है।

(107)

"रक्त और मांस की भूख हमारे इस जीवन में सबसे बड़ा सत्य है। व
वहीं है, जहाँ वह एक व्यक्ति की है, जहाँ वह आसक्ति है, पर जहाँ वह वि
है, अनासक्त है, वहाँ देवी है। रसराज शृंगार को महिमा हमारे पुराने
में इसीलिए है। कालिदास की शंकर और पार्वती की प्रणय-लीला को
मनुष्य अपनी अतृप्ति से मुक्त होता है। अतृप्ति से मुक्त होना ही मोक्ष है।"

(M.

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यावतरण डॉ. श्रोधरसिंह द्वारा सम्पादित हमारी
पुस्तक 'एकांकी रत्नाकर' में संकलित 'बलहीन' शीर्षक एकांकी से अवत
इसके लेखक श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र हैं। इसमें उस समय का वर्णन है जब
एक शिवनाथ कवि देवकुमार को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि क
पहली शर्त है जीवन के प्रति अनुराग। जहाँ जीवन में रस नहीं वहाँ भला
कैसे हो सकती है? इस पर देवकुमार कहता है कि तब तो कला में कुछ
नहीं है, रक्त और मांस को भूख भर है। इसी का उत्तर शिवनाथ इन श
देते हैं।

व्याख्या—शिवनाथ लौकिक और दैविक प्रेम का अन्तर स्पष्ट क
कहते हैं कि रक्त और मांस की भूख हमारे जीवन का सबसे बड़ा सत्य है।
जिस लोक में रहता है वहाँ उसके सजीव प्राणियों के प्रति आकर्षण होना
विक है। स्त्री और पुरुष का यह आकर्षण ही प्रेम कहलाता है, जो सत्
और व्यावहारिक भी। जब तक व्यक्ति की किसी एक व्यक्ति के प्रति आसक्ति
है तब तक प्रेम सुखदायक है। वह दुखद या नारकीय नहीं है। पर
आसक्ति का केन्द्र व्यक्ति विशेष न रहकर विश्व बन जाता है, तब वह लौ
रहकर दैविक हो जाता है। काव्य में इसी लौकिक प्रेम का वर्णन किया जा

ने शंकर और पार्वती की प्रणय-लीला में मानवीय प्रेम को ही देखा है। मानवीय प्रेम से ही तृप्ति मिलती है। कला तथा साहित्य का उद्देश्य की अतृप्ति को समाप्त करना ही है। वस्तुतः अतृप्ति से मुक्त होना ही जब व्यक्ति को कोई अतृप्ति या असन्तोष नहीं होता तभी वह सुखी बनता रमानन्द को प्राप्त करता है। साहित्य से मिलने वाला सुख भी तृप्ति-ता है। इसलिये साहित्य में शृंगार अर्थात् रति को सर्वोच्च आसन पर किया गया है। भाव यह है कि जिस कला और साहित्य को पढ़कर मिले वह दैवी कदापि नहीं हो सकता। तृप्ति प्रदान करना ही साहित्य का और यही मोक्ष भी।

वशेष—प्रस्तुत अवतरण में सांसारिक और दैविक प्रेम के अन्तर को स्पष्ट है। जिस प्रेम से तृप्ति मिले और अतृप्ति का लोप हो, वही सुखकारी भावमयी है। शैली में विषय प्रतिपादन की क्षमता के साथ ही प्रभाव-आ गई है।

5. जोंक

(108)

शिक्षा जब से बढ़ी और हिन्दुस्तानियों के भोजन की मात्रा जब से घटी कालेजों में ऐसे छात्र आने लगे हैं, जिनको उसकी माताएँ आसानी से कट लेकर अपने पास जनाने डिब्बे में बैठा सकती हैं।"

संग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी रत्नाकर' में संक-उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा रचित 'जोंक' एकांकी के आरम्भ से सम्बन्धित है। आनन्द कालेज से निकलकर प्रोफेसर बने हैं। उनका कद छोटा और ला-पतला है। वे शक्ल-सूरत से प्रोफेसर मालुम ही नहीं होते। प्रोफेसर वर्णन करके हुए यह लेखक का कथन है।

ाख्या—प्रो. आनन्द का परिचय देते हुए लेखक वर्तमान शिक्षा पद्धति ग्य कर बैठता है। आज की शिक्षा मानसिक विकास पर तो ध्यान देती ारीरिक विकास के लिए उसमें कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। यही शिक्षा के प्रचार के साथ हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों के भोजन की मात्रा घटने पढ़ने समय नींद आने की आशंका से विद्यार्थी भोजन कम करते हैं। ा शारीरिक विकास रुक जाता है। यही कारण है कि कॉलेजों में पढ़ने आज छोटे बालकों जैसे दिखाई देते हैं। वे इतने छोटे लगते हैं जैसे दस-के बालक जिनको उनकी माताएँ सरलता से आधा टिकट लेकर अपने डिब्बे में यात्रा कर सकती है। भाव यह कि शिक्षा में शारीरिक अवहेलना की जाती है जो अनुचित है।

विशेष—शिक्षा में मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विका भी समुचित स्थान मिलना चाहिये। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपनी कथा' में लिखा है कि जिस शिक्षा में शारीरिक विकास की ओर ध्यान नहीं जाता वह अपूर्ण है। शिक्षा का ध्येय बालक का सर्वांगीण विकास करना कि केवल मानसिक विकास। भाषा व्यंग्यात्मक और हास्य प्रधान है।

(109)

"एक बार किसी ने एक साधु से पूछा था—खाने का ठीक समय क है? उसने उत्तर दिया—सम्पन्न का जब मन हो और विपन्न को जब मिले

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्री उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा लिखित 'जोंक' एकांकी से अवतरित है। भोलानाथ के यहां बनवारी मेहमान बनकर आया। स्वामी भोलानाथ बनवारी को फालतू का आदमी समझकर टालना चाह वह भोजन खिलाने से बचने के लिए पत्नी के हिस्टीरिया के दौरे पड़ने की बात कहता है। साथ ही स्वयं को खाने का मूड न होने का बहाना बनात उस समय बनवारी भोजन के विषय मे उक्त कथन कहता है।

व्याख्या—प्रस्तुत अवतरण में बनवारी भोलानाथ और प्रोफेसर को भोजन विषयक नीति समझाता हुआ कहता है कि सम्पन्न और विप भोजन करने का समय अलग-अलग होता है। सम्पन्न के पास भोजन की अ ती है। अतः उसका जब मन करता है, वह तभी भोजन कर लेता है। लिए भोजन की रुचि होना ही भोजन का उपयुक्त समय है। विपन्न-निर्ध भोजन का ठिकाना नहीं होता। उसके पास खाद्य सामग्री का अभाव होत अतः उसे भोजन जब सुलभ हो जावे वही उसके लिए भोजन का उपयुक्त होता है।

6. यह मेरी जन्मभूमि है

(110)

"हमने उनकी जिन्दगी छीन ली है। उन्हें डरपोक और नामर्द बना है। अमन और कानून की हिफाजत के नाम पर, तहजीब और तालीम के उनकी नसों में मौत का पानी भर दिया है। हमने धीरे-धीरे जहर दे-देक मौत के घाट पर पहुँचाया है।"

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्री हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा रचित 'यह मेरी जन है' शीर्षक एकांकी से अवतरित है। इसका प्रसंग उस घटना से है जब अंग्रेज अफसर कर्नल होम्स गांधीजी को गिरफ्तार किए जाने के विरोध में जाने वाले जलूस को रोकने जाने की तैयारी करते हुए अपनी पुत्री से कहता

भारतवासियों को अमन से रहना सिखाया है। तब उसी की पुत्री मिस उत्तर देते हुए उक्त कथन कहती है।

व्याख्या—मिस होम्स अपने पिताजी से कहती है कि आप यह कहते हैं कि भारतवासियों को अमन से रहना सिखाया है, यह पूर्णतः असत्य है। क्योंकि और व्यवस्था को बनाये रखने के लिए अंग्रेजों ने जो कानून बनाये हैं वे अमन के विरोध में हैं। वस्तुतः अमन के नाम पर हमने भारतीयों का जीवन लिया है। तुम्हें उत्साहहीन, कायर और नामर्द बना दिया है। अब वे अमन के नाम पर हमारा विरोध नहीं करते। जो बात अनुचित और अन्यायपूर्ण है, उसे सिर झुकाकर स्वीकार कर लेते हैं। जहाँ उन्हें विरोध करना चाहिये, वहां मौन होकर रह जाते हैं। हकीकत यह है कि कभी अमन और व्यवस्था के नाम और कभी तहजीब और शिक्षा के नाम पर हमने उनका खूब शोषण किया है। नसों में मौत का पानी भर दिया है, जिससे कि वे अपने को, अपने देश को अपनी संस्कृति को कभी न जान सकें। जो देश अपनी संस्कृति को भुला देता है अधिक समय तक जीवित नहीं रह पाता। हमने धीरे-धीरे भारतीयों को पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के रंग में रंगकर उन्हें मौत के घाट उतार दिया भारत की वैचारिक और सांस्कृतिक हत्या कर दी है। अब यह देश अधिक तक जीवित नहीं रह सकेगा। वाह, खूब हमने इसकी हिफाजत की है।

विशेष—मिस होम्स का देश प्रेम और स्पष्टवादिता की सुन्दर व्यंजना हुई इसकी निर्भीकता और स्पष्टवादिता सराहनीय है। भाषा सरल और शैली पूर्ण है।

(111)

"वे विदेशी कपड़ों में, साहबी ठाट में, अकड़े हुए टेसू अपने आपको खुदा समझते हैं, लेकिन जिन्हें अपने मुल्क की गैरत नहीं वे इंसान हैं? हमने इस देश के धन्धे छीन लिए, तालीम ने लोगों की धन्धे करने आदत छुड़ा दी, वे नौकरियों के लिए दर-दर घूमने लगे, अब हम उन्हें जी चाहे नाच नचाते हैं। मुग़लों ने इस देश को सिर्फ फतह किया था, मारा नहीं था, इसे फतह नहीं किया, बल्कि मार डाला।"

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी रत्नाकर' में त श्री हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा रचित 'यह मेरी जन्म भूमि है' शीर्षक एकांकी तरित है। कर्नल होम्स अपनी पुत्री से कहते हैं कि हमने भारतीयों को अमन ना सिखाया है। तब वह कहती है कि हमने अमन और शान्ति के नाम पर देशवासियों को मार दिया है। इस पर कर्नल होम्स कहते हैं कि तुम भी

ऐसा कहती हो, बेटी ! तब उसी का उत्तर देते हुए मिस होम्स कहती है।

व्याख्या—मिस होम्स अपने पिता कर्नल होम्स से कहती है कि मैं के बनाये हुए भारत के झूठे इतिहास को पढकर नहीं, वरन् यहां के नवयु पाश्चात्य रंग-ढंग को देखकर ऐसा कहती हूँ। मेरा कथन सत्य और धारित है। कॉलेजों में आने वाले भारतीय नौजवान अंग्रेजी ठाट-बाट हैं और विदेशी वस्त्रों में अकड़े हुए से घूमते हैं। वे अपने को अंग्रेजी वेश देखकर प्रसन्न होते हैं और अभिमान में फूले नहीं समाते हैं। उन्हें अप देश का और अपनी संस्कृति का जरा भी विचार नहीं है। जिन नवयु अपने देश के प्रति प्यार नहीं, अपनी संस्कृति पर अभिमान नहीं, भल इन्सान हैं ? उनको इन्सान कहने में भी मुझे संकोच होता है। हमने इस निवासियों के साथ कौन-सा अच्छा व्यवहार किया है ? हमने इस देश के धन्धों को चौपट कर दिया। यहां के युवकों को अंग्रेजी शिक्षा देकर श्रम उनकी निष्ठा को समाप्त कर दिया। पढ़कर भारतीय युवक स्वावलम्बी ब बजाय आज नौकरी के लिए भटकता है। हमने उन्हें परावलम्बी रहन दिया है। अब हम उन्हें अपनी इच्छानुसार नाच नचा सकते हैं। जरा वि देखिये मुगलों और हम अंग्रेजों में कितना अन्तर है। मुगलों ने इस देश को जीता था। यहां के लोगों का धन-माल छीना था लेकिन उसे मारा नहीं अंग्रेजों ने इस देश को जीता ही नहीं वरन् उसे पूरी तरह से नष्ट क डाला। केवल उसका आर्थिक शोषण ही नहीं किया वरन् सांस्कृतिक प किया है। जिस देश की संस्कृति नहीं रहती वह देश जीता नहीं वर जाता है।

विशेष—मिस होम्स की स्पष्टवादिता और निर्भीकता का प्रभा चित्रण हुआ है। मुगलों व अंग्रेजों की विजय के अन्तर का वर्णन रोच पड़ा है। शिक्षा के एकाकीपन पर तीखा व्यंग्य है। अंग्रेजी शिक्षा व्य परावलम्बी बनाती है और श्रम के प्रति निष्ठा को कम करती है। भाषा पूर्ण और शैली प्रभावशाली है।

(112)

"कैसी खतरनाक साजिश है। हिन्दू और मुसलमान अपने ही मुल्क ही नेशन के खिलाफ बेईमानी क्यों करने चले हैं ? कुछ तमगों, कुछ खिताबों बेईमानी से कमाई हुई जायदादों को कायम रखने के लिए ! इन्सानियत का ऊँचा खयाल है आजादी, सबसे पहली ख्वाहिश है आजादी, सबसे प्यारी

जादी, उसे चन्द सिक्कों की खातिर बे बेच देना हते हैं। मैंने भी
का अन्न खाया है, क्या मेरा उसके लिए कोई फर्ज ही।''

(Most Imp.)

संग—प्रस्तुत अवतरण श्री हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा रचित 'यह मेरी जन्म
शीर्षक एकांकी से उद्धृत है। इसमें उस समय की घटना का वर्णन है
अंग्रेज सरकार गांधीजी को हिरासत में लिए जाने के विरोध में कांग्रेस
काले जाने वाले जुलूस को रोकने की योजना बनाती है। कर्नल होम्स के
लूस को रोकने का भार डाला गया है। इसी समय हिन्दू नेता राय
ताराम और मुसलमान नेता गुलाम मुहम्मद कर्नल होम्स के घर पर
लूस रोकने के लिए उनके द्वारा अपनायी जाने वाली योजना का वर्णन
मिस होम्स यह सब सुनकर दुःखी होती है। प्रस्तुत अवतरण मिस होम्स
न्द्व से सम्बन्धित है।

याख्या—मिस होम्स राय साहब सीताराम और हाजी गुलाम मुहम्मद
रोकने के लिए की जाने वाली कार्यवाही को सुनकर हतप्रभ रह जाती
सोचती है—यह कैसा खतरनाक षड्यन्त्र है। हिन्दू और मुसलमान दोनों
के निवासी हैं, पर यह कैसी विडम्बना है कि वे दोनों आज अपने ही
वरुद्ध षड्यन्त्र करने में लगे हैं आखिर देश के प्रति इस बेईमानी का
या है? ये लोग अपने कुछ अलंकरण तथा बेईमानी से कमाई गई
को सुरक्षित रखने के लिए ही यह सब कर रहे हैं। पर इन्हें अपने देश
दी का जरा भी विचार नहीं है। आजादी इन्सानियत का सबसे ऊँचा
। स्वतन्त्रता से बढ़कर और कोई धन नहीं है। यह इन्सान की सबसे
ीज और सर्वोत्तम विचार है। पर अफसोस कि धन या पद के भूखे ये नेता
द्र चाँदी के सिक्कों के लिए इसकी अवहेलना कर रहे हैं। स्वतन्त्रता को
तराजू पर तौल रहे हैं। फिर वह सोचती है कि यह समय केवल दुःख
ने का नहीं है वरन् कर्त्तव्य करने का है। मैं भी इस देश की बेटी हूँ;
भी इसी भूमि में हुआ है। तब क्या इसके प्रति मेरा कोई कर्त्तव्य नहीं
करें या न करें मुझे अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये।

वशेष—मिस होम्स का भारत प्रेम सचमुच सराहनीय है। उसके मन
वतन्त्रता की ललक है। वह स्वार्थ में डूबे भारतीयों की साजिश देखकर
ी है। वह कर्त्तव्यपालन का निश्चय करती है। अवतरण में मिस होम्स
का प्रभावशाली उद्घाटन सम्भव हो सका है।

(113)

"इस वक्त आप मेरे फादर नहीं हैं। आप सरकारी मशीन के पु
इस अभागे देश की एक पुत्री हूँ। इस देश में मैं पैदा हुई हूँ, इसका
खाया है, इसके लिए मेरा जो फर्ज है वह मैं अदा कर रही हूँ। मैं इस
अंग हूँ। इसके सुख-दुःख मेरे सुख-दुःख हैं। इसकी जिन्दगी और
जिन्दगी और मौत है।"

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यावतरण श्री हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा लिखित
जन्म भूमि है' एकांकी से अवतरित है। मिस होम्स बलिदान का लक्ष्य
कर अपने सहपाठी मनोहर और वली मुहम्मद को जुलूस का नेतृत्व करने
तैयार करती है और ये तीनों जुलूस में सबसे आगे चलते हैं। कलक्टर स
कर्नल होम्स से उनके हाल पूछते हैं तब वे कहते हैं कि आप देख रहे
लड़की ने भी बगावत का झण्डा उठाया है। कलक्टर साहब मिस हो
उसके दोनों साथियों को समझाने के लिए बुलाते हैं तब मिस होम्स अपने
उक्त कथन कहती है।

व्याख्या—मिस होम्स अपने पिताजी से कहती है कि इस समय
पिता न होकर सरकारी मशीन के एक पूर्जे बने हुए हैं। मेरा आ
सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि मैं इस अभागे देश की एक पुत्री हूँ। आप शास
मैं शासित, फिर भला दोनों में मेल कैसे सम्भव है? मैं इस भारत भूमि
हुई हूँ। इसके अन्न जल से मेरा शरीर बना और पुष्ट हुआ है। मैंने
नमक खाया है। इसके प्रति जो मेरा कर्त्तव्य होना चाहिये, मैं उसी क
कर रही हूँ। मैं इस राष्ट्र की नागरिक होने की दृष्टि से इसका एक
जिस प्रकार शरीर पर आये संकट का शरीर के सारे अंग मिलकर सामन
हैं और सुख-दुःख को समान भाव से सहते हैं उसी प्रकार इस देश रूपी
सुख-दुःख मेरे सुख-दुःख हैं। इसकी जिन्दगी और मौत मेरी जिन्दगी अ
है। जिस प्रकार प्राण के रहने पर सारे अंग चैतन्य रहते हैं और मरने
शिथिल पड़ जाते हैं, निर्जीव हो जाते है, उसी प्रकार मेरा जीवन भी
साथ है। यदि राष्ट्र रहेगा तो मैं भी रहूँगी।

विशेष—मिस होम्स का साहस, स्पष्टवादिता, देश प्रेम और
की भावना सराहनीय है। उसके विचार कितने भव्य, सुन्दर और उ
भाषा पात्रानुकूल है और चरित्र को स्पष्ट करने में सक्षम है भाषा में औ
प्रसाद गुण हैं।

मैं भी मानव हूं

(114)

लाखों मनुष्यों का रक्त तुम्हारे पतन की घोषणा कर रहा है। लाखों की कराह मे तुम्हारे पतन का स्वर गूंज रहा है। ललनाओं की सूनी माँगों ओं की खाली गोदियो मे, शिशुओं की निरीह शून्य दृष्टि में-- सब कहीं न की कहानी अंकित है। कलिंग के उजडे हुए ग्राम, वीरान प्रदेश, म्हारे पतन के साक्षी हैं। तुम जीतकर भी हार गए हो, अशोक। और टकर भी अमर हो गया है।"

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियां श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित "मैं भी मानव क एकांकी से ली गई है। इसमें उस समय की घटना का चित्रण है जब राधागुप्त कलिंग विजय पूर्ण हुई का समाचार सम्राट अशोक को देते ाथ ही यह भी कहते है कि कलिंग कुमार को सम्राट के चरणों में प्रस्तुत किया जा सकता है। सम्राट की आज्ञा मिल जाने पर कलिंग कुमार को समक्ष उपस्थित किया जाता है। तब सम्राट अशोक उसे कहते हैं कि दुर्बल नीति के कारण ही तुम्हारा पतन हुआ है। तब कलिंग कुमार कि पतन तुम्हारा हुआ है, मेरा नहीं। प्रस्तुत अवतरण अशोक द्वारा म्राट के पतन को असम्भव कहने पर कलिंग कुमार का उत्तर है।

व्याख्या—कलिंग कुमार कहते हैं कि कलिंग युद्ध में लाखों कलिंग-वासियों को न्यौछावर किया है। उसमें लाखों लोगों का रक्त बहा है। जो मनुष्य जय के लिए लाखों मनुष्यों से खून की होली खेलता है वह मानवता के सन मे गिर जाता है। युद्ध में लाखों मनुष्य ही घायल हुए है, उन लाखों ी कराह में तुम्हारे ही पतन की गूंज है। जो मनुष्य, लाखों मनुष्यों के कारण बना, भला वह भी कैसा मनुष्य है ? लाखों स्त्रियां विधवा हो गई, नी मांगों में, लाखों माताओं ने अपने लाल खो दिये, उनकी खाली गोदों जो बच्चे अपने पिताओं को खोकर अनाथ हो गये उनको निरीह दृष्टि में— तुम्हारे इसी पतन की कहानी अंकित है। जो मनुष्य लाखों पुरुषों की खों घायलों को पुकार लाखों स्त्रियों और बच्चों के कष्टों का कारण बने, य ही दानव है। कलिंग को तुमने पूरी तरह से उजाड़ दिया है। उसके ये हुए ग्राम, वीरान प्रदेश सब तुम्हारे पतन के साक्षी है। इस प्रकार तुम भी हार गये और कलिंग मिटकर भी अमर हो गया।

विशेष-- जो व्यक्ति [illegible] क, क्रूर, [illegible] और बेदर्द है, वह मानव नहीं दानव त्व का कार्य दूसरे व्यक्तियों के कष्टों को दूर करना है, उन्हें दुःखी बनाना लिंग कुमार के ओजस्वी व्यक्तित्व का भी अच्छा परिचय मिलता है।

"तुम कैसे वीर हो जो एक बन्दी का सिर भी नहीं झुका स
ठुकराने के लिए तो अनेक गीदड़ श्मशान में घूमा करते हैं, लेकिन वह
का मार्ग नहीं है। अशोक, तुम जो कुछ आज कर रहे हो, एक दिन रक्त
से उसके लिए तर्पण करोगे। तुम्हारी अपनी आत्मा तुम्हें धिक्कारेगी।
की आग में तुम्हें जलना होगा। जिन्हें आज तुम मार रहे हो उन्हीं
चरण चूमोगे।" (Mo

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित एकां
तरित है। यह सम्राट अशोक और कलिंग कुमार के वार्तालाप से सम्ब
अशोक कलिंग कुमार से अपना सिर उसके सामने झुकाने को कहता है
झुकाने पर उसे काट देने की धमकी देता है। कलिंग कुमार कहता है
ठुकराने के लिए तो अनेक गीदड़ श्मशान में घूमा करते हैं लेकिन वह
का मार्ग नहीं है। कलिंग कुमार को कारागृह में भेजने के बाद जब अशो
होता है तो वह मन ही मन कलिंग कुमार के साहस और निर्भीकता की
करता है। यह अंश अशोक के अन्तर्द्वन्द्व से सम्बन्धित है जो उसके हृदय
का मुख्य कारण बनता है।

व्याख्या—कलिंग कुमार के जाने के बाद एकान्त में अशोक सम्पू
चक्र पर विचार करता है। उसे कलिंग कुमार के शब्द याद आते हैं।
कुमार ने कहा था कि खोपड़ियों को ठुकराने का काम वीरों का नहीं
होता है। वीर लाशों को काटकर वीर नहीं बनते। वे तो अपने समान
पराक्रमी, व्यक्तियों का सोत्साह मुकाबला करते हैं। व्यक्ति का गलत कार्य
पश्चाताप का कारण बनता है। कलिंग कुमार ने भी यही कहा था कि
तुम्हें अपने इस कार्य के लिए रक्त के आंसू बहाने होंगे और तब फिर कुछ
सकेगा क्योंकि बीता हुआ समय वापिस नहीं आता। तुम्हें अपने कर्म का
ताप होगा। एक दिन तुम्हारी आत्मा ही तुम्हारे इस निन्दनीय कार्य की
करेगी तब तुम्हें हृदय के दुःख की आग में जलना होगा। आज जिन्हें तुम
चाह रहे हो कल उन्हें ही तुम अपनी गलती का अहसास हो जाने पर उचि
और सम्मान दोगे। ध्यान रखो कि गलत कार्य करके व्यक्ति दूसरों की आंखें
बच सकता है परन्तु अपने अन्तर की आँख से नहीं। व्यक्ति के भले-बुरे
समीक्षा उसकी आत्मा निरन्तर करती रहती है। जब तुम अपने कृत्य पर
लोचन करोगे तो तुम्हें एक दिन पछताना पड़ेगा।

विशेष—मानवीय अन्तःकरण स्वतः मनुष्य के भले-बुरे कर्मों की
करता रहता है। अशोक के हृदय में अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न कर नाटक
उसके हृदय का मनोवैज्ञानिक ढंग से परिवर्तन होने का चित्रण किया है।

(116)

चाहता तो उसी क्षण उसका सिर काट लेता, लेकिन साहसी मनुष्य
पाकर मौत भी अपना काम भूल जाती है। उसका साहस अंगद के पैर
रे क्रोध के सामने डटा रहा। उसने मुझे चुनौती दी—बस एक बन्दी
नहीं झुका सके सच, मैं एक बन्दी का सिर नहीं झुका सका। मैं, जिसके
लक्ष्य-लक्ष्य सिर पैरों को चूमते है, जिनकी भृकुटी पर काल काँप उठता
क्रोध की ज्वाला में सम्पूर्ण विश्व भस्म हो सकता है वह एक सिर नहीं
! (दीर्घ निःश्वास) संघमित्रा कहती थी, शौर्य तलवार में नहीं होता।
ठीक कहती थी। तभी तो मैं जीते जी उसका सिर नहीं झुका सका।

(Imp.)

ंग—प्रस्तुत अवतरण श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित 'मैं भी मानव'
एकांकी से अवतरित है। कलिंग विजय पूर्ण हो जाने के बाद लाखों
वध, लाखों घायलों की कराह, स्त्रियों की चित्कार और निरीह बालकों
ष्टियों को देखकर, संघमित्रा तथा कलिंग कुमार से वार्तालाप करके उसे
स होता है कि युद्ध मानवीय नहीं है। वह मानव नहीं है। उसकी पीड़ित
मानवीय मार्ग खोजने को प्रेरित करती है। उसके मन में अन्तर्द्वन्द्व
ा है। उसे संघमित्रा और कलिंग कुमार द्वारा कही गई बातें स्मरण होने
और उसके हृदय में परिवर्तन होता है। यह अशोक के अन्तर्द्वन्द्व से सम्ब-
है।

ख्या—अशोक कलिंग कुमार के वीरतापूर्ण निर्भीक कार्य का स्मरण कर
कि यदि मैं चाहता तो उसी क्षण उसका सिर काट लेता, पर मुझमें
स ही उत्पन्न नहीं हुआ। उसका साहस अंगद के पैर के समान मेरे क्रोध
डटा रहा। जिस प्रकार अंगद रावण के दरबार में पहुँचकर भी निर्भीक
ही कलिंग कुमार भी मेरे सामने निडर बना रहा। इतना ही नहीं उसने
ी दी, मेरा उपहास किया, मुझ पर व्यंग्य किया तो भी मैं उसका कुछ
बिगाड़ सका। उसने कहा कि मैं एक बन्दी का सिर भी नहीं झुका सका।
कर अशोक अहंकार में भर जाता है। वह अपनी शक्ति की समीक्षा
और कहता है कि मेरे संकेत पर लाखों सिर मेरे चरणों में झुक जाते हैं। जब
आता है तो काल भी काँप जाता है। मेरे क्रोध की ज्वाला में सारा विश्व
म हो सकता है, पर आश्चर्य मैं एक बन्दी का सिर नहीं झुका सका।
स्वतन्त्र नहीं होता, मुक्त नहीं होता, पराधीन रहता है। मैं उसका सिर
झुका सका। उसे देवी संघमित्रा का कथन स्मरण होता है। संघमित्रा ने

कहा था कि शौर्य तलवार में नहीं रहता। हृदय की उदारता का न
है। उसका कहना कदाचित ठीक था तभी तो मैं जीते जी एक बन्दी
नहीं झुका सका। ओह! मैं कितना कायर और कमजोर हूँ।

विशेष—प्रस्तुत अवतरण में अशोक के हृदय परिवर्तन का
चित्रण किया गया है। वह अपने कार्य की समीक्षा करता है और एक
बनने हेतु तत्पर होता है। प्रस्तुत अंश इस एकांकी के शीर्षक 'मैं भी
सार्थक व्यंजना करता है।

(117)

"जब तक व्यक्ति अपने लिए जीता है तब तक वह बन्दी है
आकांक्षा की परिधि सीमित है, परन्तु उसकी प्यास बड़ी भयंकर होती
के जाले के समान उसमें फँसकर कोई भी जीवित नहीं रहता।"

प्रसंग—ये गद्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक एकांकी रत्नाकर
श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित 'मैं भी मानव हूँ' शीर्षक एकांकी से अ
कलिंग विजय के बाद देवी संघमित्रा और कलिंग कुमार के कथन उसे
के लिए प्रेरित करते हैं। वह कलिंग कुमार के सिर को काट लेने
वापस लेना चाहता है। इस विषय में वह महामात्य राधागुप्त से बात
राधागुप्त उसे सम्राट के पद की मर्यादा का स्मरण करने को कहता है।
कहता है कि मैं सम्राट हूं किसी का बन्दी नहीं। अशोक के इस कथन
से मिलने की प्रतिक्षा में बाहर खड़ा बौद्ध भिक्षु उपगुप्त सुन लेता है।
के प्रश्न का उत्तर देते हुए उक्त कथन कहता है।

व्याख्या—उपगुप्त सम्राट अशोक से कहता है कि जब तक व
व्यक्तिगत सुख, आशा, आकांक्षाओं और इच्छापूर्ति के लिए जीता है,
बन्दी ही बना रहता है। व्यक्तिगत स्वार्थ का बन्दी। यद्यपि व्यक्ति की
की परिधि सीमित होती है लेकिन उसकी प्यास बड़ी भयंकर होती
अपने हित का साधन करने के लिए क्रूर, बर्बर, हिंसक, जंगली और न
बना बन जाता है। अपने स्वार्थ की पूर्ति में वह दूसरे के सुखों की
करता है, उन्हें दुःख पहुँचाता है। आकांक्षाएँ मकड़ी के जाले की तरह
निरन्तर घेरे रहती हैं। एक आकांक्षा की पूर्ति हुई नहीं कि दूसरी उत्पन्न
है। आकांक्षाओं के उत्पन्न होने और उनके पूरे होने का क्रम निरन्तर च
है, परन्तु उसका कभी अन्त नहीं आता। एक दिन मनुष्य अपनी इ
आकांक्षाओं को लिए हुए मृत्यु की गोद में सो जाता है। अतः यह है कि
आप को स्वतन्त्र करना चाहते हो तो आकांक्षाओं के बन्धन से बाहर
जब तक मानव मन में इच्छाएँ रहती हैं तब तक वह बन्दी ही रहता है

—प्रस्तुत कथन संक्षिप्त होते हुए भी सारगर्भित है। यह अशोक के न के लिए मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि का निर्माण करता है। भाषा सार-निक है। वस्तुतः जब तक व्यक्ति के मन में चाह रहती है तब तक रहता है। महात्मा कबीर ने भी कहा है—

"चाह गई चिन्ता मिटी, मनवा बे परवाह।
जिनको कछू न चाहिये, सोही शहनशाह॥"

8. बसन्त ऋतु का नाटक

(118)

है वह नहीं हैं यहां। हाँ जी, तो मैं यह बता रहा था कि वह जज यशोदानन्दन जी वाजपेयी एक बडे ही टेढ़े आदमी थे। अव्वल-दरजे क्रोधी और मक्खीचूस! भाइयो और बहिनो! अगर मेरे इस लाड़ले बेटे हाँ-नहीं' कहकर वह नाटक न रचा होता, हैं जी, तो मेरे बेटे और शादी न हो पाती। और अगर बड़ी मुश्किल से करते भी तो मुझे और ब्याह में एक पैसा भी नहीं मिलता। हैं जी! क्योंकि यह प्रेम ब्याह

ग--प्रस्तुत गद्यावतरण 'एकांकी रत्नाकर' में सकलित श्री लक्ष्मीनारायण त 'बसन्त ऋतु का नाटक' शीर्षक एकांकी से अवतरित है। इस लेखक ने विवाह की औपचारिकता, दहेज प्रथा तथा प्रेम विवाह आदि ओं पर व्यंग्य किया है। यह एकांकी के अंतिम अंश से सम्बन्धित दूसरे लड़के के पिता का कथन है।

ख्या—लड़के के पिता श्री दीनबन्धु शुक्ला मंच पर जाकर दर्शकों को बीती सुना रहे हैं। उनका लड़का धर्मेन्द्र श्री यशोदानन्दन जी वाजपेयी बसन्ती से प्रेम करता था। लड़का व लड़की एक-दूसरे से प्रेम करते लड़की के पिता पूरे शक्की, क्रोधी और मक्खीचूस थे। जब मेरे लड़के की री लगी तो वे शादी के लिए तैयार हो गये। मेरे सपूत बेटे ने उनके बार-बार स्वीकार नहीं किया। यदि वह ऐसा नहीं करता तो मेरे बेटे का विवाह नहीं हुआ होता और यदि वे विवाह के लिए तैयार भी हो हेज में फूटी कौड़ी भी नहीं देते। यह प्रेम विवाह था और लड़की का जानकर दहेज देना नहीं चाहता। इसीलिए हमें यह सब नाटक करना

शेष—प्रस्तुत अवतरण की भाषा सरल और पात्रानुकूल है। लड़की के धिक दहेज पाने की लालसा में लड़कों के पिता अच्छे प्रस्ताव को भी है। वर्तमान समय के प्रेम-विवाह भी दहेज के लिए ही होते हैं।

सीनियर हायर सैकण्डरी—विशेष हि

भाग—ब

लघूत्तरात्मक प्रश्न

निर्देश—इस भाग में तीनों पुस्तकों, छन्दों, अलंकारों और हिन्दी के इतिहास से सम्बन्धित ऐसे प्रश्न होंगे जिनका उत्तर 60 शब्दों से 150 श लिखना होगा। परीक्षार्थियों को इनका समुचित अभ्यास करना चाहिये; वि छन्दों, अलंकारों, हिन्दी साहित्य का इतिहास और पाठ्य रचनाओं के प्र वर्ग में आते हैं।

यहाँ आपके अभ्यास के लिए परीक्षा की दृष्टि से पाठ्यक्रम के सभी पर अपेक्षित महत्वपूर्ण प्रश्नों को दिया जा रहा है।

प्राचीन काव्य कलाधर

1. कबीर

प्रश्न 1. कबीर के 'राम' या 'साहेब' के स्वरूप का वर्णन कीजिये

उत्तर—कबीर का 'राम' दशरथ पुत्र राम न होकर कुछ और ही अनुपम तत्त्व है। यद्यपि कबीर ने इस ब्रह्म का स्मरण 'राम', 'साहेब' मुरारी गोपाल, विष्णु आदि नामों से किया है तो भी वह निर्गुण निराका मस्तिष्क से रहित, अजन्मा और निर्लिप्त है। वह फूल की सुगन्ध से सूक्ष देह रहित है। देह रहित होकर भी वह सर्वान्तरयामी घट-घट वासी है। सृष्टि के कण-कण में समाहित है। उसे प्रेममय स्मरण से प्राप्त कि सकता है—

> देही माँहि विदेह है, साहेब सुरति सरूप।
> अनन्त लोक म रमि रहा, जाके रंग न रूप॥

वह निराकार ब्रह्म इस सृष्टि का निर्माता और सर्व कार्यों का क मानव जो कुछ भी करता है वह सब उसी की प्रेरणा और शक्ति से कार

कया कुछ नहीं होता, परमात्मा ही सर्व समर्थ है। वह अपनी सामर्थ्य पर्वत और पर्वत को राई में समाहित कर सकता है—

साहेब सों सब होत हैं, बंदे ते कछु नाहिं।
राई ते पर्वत करे, पर्वत राई माहिं॥

परमात्मा जन्म-मरण से रहित और एक है। उसके अनेक होने की तो व्यर्थ है। उस परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचानकर प्रेम और से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है।

परमात्मा जप-तप-ध्यान-पूजा-पाठ और आडम्बर से प्रभावित नहीं तो उस सदाचारी, दयालु, विनम्र और सहनशील भक्त को प्राप्त होता प्राणियों में आत्म तत्व को देखता है तथा राग-द्वेष, सुख-दुःख आदि की से दूर रहकर सच्चे धर्म का हृदय से पालन करता है।

दया राखि धरम को पालै, जग को रहै उदासी।
अपना-सा जिव सबको जानै, ताहि मिलै अविनासी॥

तः कहा जा सकता है कि कबीर का राम या साहेब अद्वैती स्वरूप का निराकार, निरूपाधि ब्रह्म है। वह प्रेम के वशीभूत है। उसे हृदय की और सच्चे प्रेम से प्राप्त किया जा सकता है।

श्न 2 पठित साखियों के आधार पर साधु स्वभाव की विशेषताओं का जिये।

त्तर—कबीर आडम्बर, ढोंग और मिथ्याचारों के विरोधी थे। उनका श्वास था कि परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को जाने बिना उसकी भक्ति नाम स्मरण से कुछ नहीं होता। वह परमात्मा पूजा, पाठ, भेंट, जाप, भगवे वस्त्र पहनने से प्रसन्न नहीं होता। उसका चित्त साधु के समान पवित्र होता है। उसका स्वरूप साधु जैसा होता है। यही कारण है साधु इस संसार में दुलर्भ ही रहता है। जैसे सब वन चन्दन के नहीं व्यक्ति वीर नहीं होते और हर सागर में मोती नहीं होते वैसे ही इस साधु भी दुर्लभ होता है—

सब वन तो चन्दन नहीं, सूरा का दल नाहिं।
सब समुद्र मोती नहीं यों साधु जग माहिं॥

धु की वृत्ति सन्तोषी होती है, उसका संग्रह या संचय पर विश्वास नहीं कल की जरूरत की चिन्ता करके कुछ जोड़कर नहीं रखता। वह तो ग्रहण करता है, जितनी उसकी आवश्यकता होती है। उसका ईश्वर पर होता है। ईश्वर उसकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले हैं वह संचय करके क्या करेगा?

साधु गांठ न बांधई, उदर समाता लेय ।
आगे पीछे हरि खडे, जब मांगे तब देय ।।

साधु कभी किसी को दुःख नहीं देता । वह किसी के मार्ग की बा बनता । उसका स्वभाव शिला खण्ड जैसा न होकर मार्ग की धूल जैसा होत सभी को आगे बढ़ने को राह देता है ।

साधु का मन निर्मल होता है । वह वर्षा के जल की भाँति सदा दूसरे मन की गन्दगी धोने का प्रयास करता है । वह अपनी संगति से सांसारिक को भक्ति के पारस पत्थर से छूकर स्वर्ण बना देता है । मोह-माया जनित धोकर साफ कर देता है ।

साधु का स्वभाव सदा समान रहता है । वह जल के समान शीत गर्म नहीं होता । वह सदैव एक रस-भाव में निमग्न रहता है । वह प्रभुता क्रोध, मद-मोह, लोभ आदि प्रवृत्तियों से रहित शुद्ध, बुद्ध और पावन होत

साधु स्वभाव की विशेषताओं को यदि हम एक वाक्य में कहना कहा जा सकता है कि वह भगवान जैसा होता है—

साधु ऐसा चाहिये जो हरि जैसा होय ।

प्रश्न 3. "ज्ञानमार्गी साहित्य गुरु की महिमा को सर्वत्र स्वीकार किया गय उक्त कथन के प्रकाश में कबीर के पठित काव्य के आधार पर गुरु महि वर्णन कीजिये ।

उत्तर—भारतीय सन्त परम्परा में और विशेष निर्गुण सन्तों की प में गुरु को अत्यन्त महत्व दिया गया है । इस असार संसार में गुरु के समान हितैषी और अपना सगा नहीं है । उसकी महिमा को केवल वही समझ पा जिसके ज्ञान-चक्षु खुल गये हों । गुरु की कृपा जिस पर होती है, कलियुग का भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता । गुरु अपने शिष्य की अन्तर की ज्यो प्रज्ज्वलित करने में समर्थ है । वह शस्त्रों की जंग छुड़ाने वाले सिकलीगर की शिष्य की अज्ञान रूपी जंग को छुड़ाकर उसे उज्ज्वल बना देता है । वह उस के मैल को दूर कर उसके चित्त रूपी दर्पण को चमका देता है । यथा—

गुरु सिकलीगर कीजिये, मनहिं मस्कला देय ।
मन की मैल छुड़ाई कै, चित्त दरपन करि लेय ।।

सच्चा गुरु धोबी के समान शिष्य रूपी वस्त्र को सदिट निर्मलता रूपी से स्मरण शिला पर धोकर स्वच्छ बनाता है । जिससे उसके मन का मै होता है और निर्मल, पवित्र ज्ञान प्रकाश उसे आलोकित कर देता है—

गुरु धोबी सिष कापड़ा, साबुन सिरजनहार ।
सुरति सिला पर धोइये, निकसै मोति अपार ।।

च्चा गुरु सभी प्रकार की आशाओं से दूर रहता है। वह प्रभु भक्ति रूपी ाला स्वयं पीता है और अपने शिष्य को पिलाता है। वह माया-मोह में य को सही मार्ग का निर्देशन करता है और उसके मन की शंकाओं का करता है—

"जब मैं भूला रे भाई,
मेरे सतगुरु जुगत लखाई।"

अपनी इन्हीं विशिष्ठताओं के कारण गुरु का स्थान भगवान् के स्थान के होता है। कहीं-कहीं तो कबीर ने गुरु को भगवान् से भी अधिक महत्व है

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागौं पाय।
बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दिया बताय॥

संक्षेप में गुरु की महिमा अपरम्पार है। वह दयावान, हितैषी, मार्ग-दर्शक, और प्रभु सदृश्य या उससे भी बढ़कर होता है।

प्रश्न 4 'साखी' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए कबीर की साखियों के वर्ण्य-को संक्षेप में स्पष्ट कीजिये।

उत्तर— साखी का अर्थ सामान्यतः साखी शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के और साक्ष्य शब्दों से स्वीकार की जाती है। श्री परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार से अभिप्राय उस पुरुष से है, जिसने किसी वस्तु या घटना को अपनी आंखों हो।" कबीर की साखियाँ भी उनके जीवनानुभवों का प्रति रूप हैं। अपने उपदेशों में 'कागज की लेखी' कहने की बजाय 'आंखन से देखी' को कना दी। उन्होंने साखी को इस रूप में विवेचित किया है जिससे कि वे र्णय में सहायक हो सकी हैं। कबीर ने लिखा है—

साखी आंखी ज्ञान की, समुझि देखि मन मांहि।
बिन साखी संसार का, झगड़ा टूटत नाहिं॥

अर्थात् यदि भली प्रकार से सोच-विचार कर देखा जाये तो साखियाँ ज्ञान- काम देती हैं। यदि उन्हें साक्षी पुरुष के समान तत्व निर्णायक मान लें अपने आपको भव बन्धन से मुक्त कराने में सफल हो सकते हैं।

वर्ण्य-विषय—साखियों का वर्ण्य विषय कबीर की आत्मानुभूतियाँ हैं। ये साखियाँ अनेक हैं। अतः उनके विषय में विविधता और अनेकता है। ग्रन्थावली में संकलित साखियाँ 59 वर्गों में विभक्त हैं। इनमें प्रतिपादित धारा कोई एक नहीं है। अतः विषय की दृष्टि से कबीर की साखियों को त शीर्षकों में रखा जा सकता है—

(1) सामाजिक सुधार (2) प्रेम और भक्ति परक (3) नीति और परक (4) दर्शन परक (5) जीवनानुभवों से सम्बन्धित (6) योग दर्शन से सम्बन्धित (7) ज्ञान परक (8) वैराग्य परक (9) मन-विषयक और (10) सदाचार विषयक।

उक्त दस शीर्षकों से यह व्यंजित होता है कि वर्ण्य विषय की दृष्टि से कबीर की साखियों की व्याप्ति असीम है। उनमें कबीर के सुधारवाद, भक्तिवाद, रहस्यवाद, सामाजिक मानवतावाद और आचरणिक दृष्टिकोण को देखा जा सकता है।

डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा है कि—"कबीर की साखियाँ वैयक्तिक अनुभूतियों का भण्डार है, प्रगल्भता और प्रभविष्णुता में बेजोड़ हैं। वे सहज स्वाभाविक सौन्दर्य से ओत-प्रोत हैं, अत्यन्त साधित हैं तथा ज्ञान और भक्ति, नैतिकता और व्यावहारिकता, दार्शनिकता और भावुकता, आध्यात्मिकता और अलौकिकता का समुच्चय हैं। इन साखियों द्वारा सर्व साधारण को उस सर्वशक्तिमान का परिचय देकर उस शक्ति के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए साधना के अज्ञात और अक्षय स्रोतों का द्वार खोल दिया है।"

प्रश्न 5. कबीर की भाषा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

अथवा

"कबीर भाषा के 'डिक्टेटर' थे।" इस कथन का विश्लेषण करते हुए कबीर की भाषा की प्रमुख-प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—भाषा भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। कबीर की भाषा यद्यपि सादी, अलंकार विहीन और कहीं-कहीं अनगढ़ या अपरिष्कृत भी है किन्तु उसमें अभिव्यक्ति की अद्भुत क्षमता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कबीर का भाषा पर पूर्ण अधिकार था। भाषा उनके संकेतों की चेरी थी। वे जैसा चाहते भाषा को वैसे ही नचाते थे। इसी कारण तो डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें भाषा का डिक्टेटर (तानाशाह) कहा है।

कबीर की भाषा में निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं—

1. सधुक्कड़ी अथवा मिश्रित भाषा—'प्राचीन काव्य कलाधर' के सम्पादक **श्री हजारीलाल शर्मा** के अनुसार—"उनकी भाषा को सधुक्कड़ी कहा जाता है। उसमें ब्रज, अवधी, राजस्थानी, पूर्वी, हिन्दी, अरबी, फारसी आदि सभी भाषाओं के शब्दों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है। उनकी भाषा में यदि कहीं अलंकारिता आई भी है तो वह प्रयत्न साध्य न होकर पूर्णतः स्वाभाविक ही है। सादृश्य मूलक अलंकारों की सहज छटा वहाँ देखी जा सकती है।"

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा के मतानुसार,—"इस सधुक्कड़ी भाषा का जो ढाँचा हमारे सामने आ रहा है उसमें ब्रज और खड़ी बोली का एक रूप है अथवा यह क

होगा कि ब्रज भाषा के गर्भ से दिल्ली और मेरठ के आस-पास की
ारक और क्रिया रूपों को लेकर फारसी और अरबी के सहयोग से
ित हो रही है, कबीर ने उसी का प्रयोग किया है।"
घुमक्कड़ी वृत्ति के संत-फकीर थे। अतः उनकी भाषा में विभिन्न
ाओं का मिश्रण होना स्वाभाविक ही था।

य और भाव के अनुकुल भाषा—कबीर की भाषा की सबसे बड़ी
भाव और विषय के अनुकूल होना है। जब वे अन्धविश्वास या
ार करते हैं तो उनकी भाषा में ओज गुण, प्रेम ज्ञान और भक्ति के
गुण तथा नीति और सदाचार के वर्णन में प्रसाद गुण दिखाई देता
हिन्दुओं, पण्डितों और वैष्णवों को सम्बोधित करते समय उनकी
दी होती थी जबकि मुसलमानों को समझाते हुए उसमें उर्दूपन आ
प्रकार कबीर की भाषा विषय एवं भाव के अनुकूल थी।

ेतात्मक एवं प्रतीकात्मक भाषा—कबीर की भाषा असाधारण रूप
के साथ-साथ संकेतात्मक और प्रतीकात्मक भी है। उनकी भाषा में
ब्दावली का प्रयोग देखने को मिलता है। यथा शून्य, अनहद, सहज,
, अवधूत, इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना। 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया'
संकेतात्मक एवं प्रतीकात्मक भाषा का उदाहरण है।

यता एवं संगीतात्मकता—कबीर की वाणी सहज और स्वाभाविक
ो कुछ कहा मुक्त भाव से कहा। उन्होंने पद, दोहे और राग-रागि-
प से रची हैं। उनमें गेयता होने के साथ-साथ गीतिकाव्य के अन्य
विद्यमान हैं।

में सम्पादक **श्री हजारीलाल शर्मा** के शब्दों के साथ अपनी सहमति
ए कहा जा सकता है—'कबीर की वाणी का कला या अभिव्यक्ति
के तुलसी व सूर जैसे कवियों के समक्ष तो नहीं ठहरता, पर उसमें
, वह सीधा हृदय से प्रस्फुटित है तथा पाठक के हृदय को प्रभावित
ारे विचार में यह उपलब्धि भी किसी तरह गौण नहीं कही जा
ाषा कैसी भी हो, भाव चाहिये मित्त' की दृष्टि से कबीर काव्य की
ा है।

6. टिप्पणी लिखिये—कबीर का रहस्यवाद।

अथवा

र हिन्दी के प्रथम रहस्यवादी कवि हैं।" इस कथन की विवेचना
ोर के रहस्यवाद की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—"मानव में जब से ज्ञान-बुद्धि नामक तत्व की स्थिति हुई त
उसकी चिन्तन प्रक्रिया में सृष्टि के उदगम और अपने मूल के सम्बन्ध में
रही है। उसने जब इस सृष्टि नियन्ता के स्वरूप की गुत्थी को ज्ञान का
लेकर सुलझाने का प्रयास किया तब यह दर्शन का विषय बन गया, किन्तु
कवि ने समझने का प्रयास कर अपने अनुभवों को वाणी को विशेष पद्धति
व्यक्त किया तब इसे 'रहस्यवाद' कहा गया। संसार का लगभग प्रत्येक श्रे
किसी न किसी अंश में रहस्यवादी होता है। क्योंकि जन मानव की भावना
के द्वारा अभिव्यक्ति पाती है।" **अमेरिकन प्रो. प्रार** (Prof. Prar) का कथ
ही है—

"Every Poet has at least a touch of mysticism."

रहस्यवाद की परिभाषा—रहस्यवाद आत्मा और परमात्मा के
सम्बन्ध को व्यक्त करने वाली स्थिति है। इसके लिए अद्वैतवाद और नि
ब्रह्म की कल्पना आवश्यक होती है। विद्वानों ने रहस्यवाद की व्याख्या भि
प्रकार से की है। **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** का कथन है—

"ज्ञान के क्षेत्र में जिसे अद्वैतवाद कहते हैं, भावना के क्षेत्र में वही
वाद कहलाता है।"

डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के मतानुसार—"बुद्धि के सहारे आध्यात्मि
का निरूपण करना ज्ञान है। भावना और प्रेम के सहारे ब्रह्म के आधिदैविक
की उपासना भक्ति है। रहस्यवाद इन दोनों से भिन्न है। जब साधक भ
सहारे आध्यात्मिक सत्ता की रहस्यमयी अनुभूतियों को वाणी के द्वारा
चित्रों में सजाकर रखने लगता है, तभी साहित्य में रहस्यवाद की सृष्टि हो

प्रथम रहस्यवादी कवि कबीर—रहस्यवाद की झलक सर्वप्रथम
देखने को मिलती है, पर वैदिक प्रार्थनाओं में शुद्ध रहस्यवाद जैसी स्थिति
तदन्तर सिद्धों और योगियों की वाणी में रहस्य भावना के दर्शन है, कि
भावना से प्रमुख साधना है। वस्तुतः सूफियों और (सन्तों में) कबीर के
रहस्यवाद को प्रेम की मधुर भावना प्राप्त होती है। सन्तों में कबीर
चिन्तक हैं जिन्होंने अपनी भावनाओं और मान्यताओं के अभिव्यंजन के लिए
वादी शैली का अवलम्ब लिया।

कबीर का रहस्यवाद—सामान्यतः रहस्यवाद के तीन प्रकारों का
किया जाता है—(1) भावात्मक रहस्यवाद (2) साधनात्मक रहस्यवा
(3) प्रेम मूलक रहस्यवाद। कबीर के काव्य में रहस्यवाद के उपर्युक्त त
प्रकार देखने को मिलते हैं। इसके अतिरिक्त **प्रो. पद्मपाल सिंह** ने कबीर

चौथे प्रकार के रहस्यवाद के होने का भी उल्लेख किया है जिसे अभिव्यक्ति रहस्यवाद की संज्ञा से अभिहित किया गया है।

(1) **भावात्मक रहस्यवाद**—भावात्मक रहस्यवाद का तात्पर्य उस स्थिति जब भावात्मक भूमि पर अज्ञात सत्ता से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास जाता है। इसमें गुरु प्रेरणा से ईश्वर तत्व की ओर उन्मुख होने, उससे के लिए व्याकुलता होना और आत्मा-परमात्मा के चिर मिलन का उल्लेख है। कबीर के काव्य में भावात्मक रहस्यवाद की ये तीनों ही स्थिति प्रभाव-ढंग से स्थान पा सकी हैं। गुरु प्रेरणा का उल्लेख करते हुए-

"जब मैं भूला रे भाई,
मेरे सतगुरु जुगत बताई।"

गुरु से उस आध्यात्म सत्ता का ज्ञान प्राप्त कर शिष्य के मन में ज्ञान की चल पड़ी जिसमें मोह-माया और भ्रान्ति जनित अज्ञान की टाटी उड़ गई। पण्डितों की उक्तियां मिथ्या प्रतीत होने लगी। वह समझ गया कि 'पण्डित बदै सो झूठा।" और तब उसे भक्ति का मार्ग 'झीना' प्रतीत होने लगा। त्मा से मिलने की तड़पन वह अपने हृदय में अनुभव करने लगा—

"साईं बिन दरद करेजे होय।
दिन नहीं चैन रात नहिं निदिया, कासे कहूँ दुख होय।
आधी रतियां पिछले पहरवा, साईं बिना तरस रहो सोय।
कहत कबीर सुनो भाई प्यारे, साईं मिले सुख होय।।

भावनात्मक रहस्यवाद की तीसरी स्थिति चिर मिलन की है। जीवात्मा परम सत्ता से मिलने को विकल थी, अन्त में उससे महामिलन होता है और त्मा को वास्तविक सुख की अनुभूति होती है—

एक समाना सकल में, सकल समाना नाहिं।
कबीर समाना ब्रह्म में, तहां दूसरा नाहि।।

उसकी यह अनुभूति जितनी तीव्रतर होती है, उसकी आनन्दानुभूति भी वैसे बढ़ती जाती है।

(ii) **साधनात्मक रहस्यवाद**—कबीर में दूसरे प्रकार का रहस्यवाद वहां होता है, जहां वे उस प्रिय को विविध हठयोगी साधनाओं से प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। यहां भावना की मधुरता नहीं वरन् साधना की जटिलता है—

चौंसठ दीया जोई करि, चौदह चन्दा मांहि।
तिहि घर किसका चानणा, जिहि घट सतगुरु नाहिं।।

इस प्रकार के साधनात्मक रहस्यवादी स्थल कबीर के काव्य में विरल नहीं इनमें कबीर ने हठयोग का वर्णन नाथों, सिद्धों व योगियों से प्रभावित होकर किया है।

(iii) **प्रेम मूलक रहस्यवाद**—प्रेम मूलक रहस्यवाद कब
सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है। आत्मा को प्रियतमा के समान हो प्रिय
प्रतीक्षा है—

बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन को, मनि नहीं विश्राम॥

धीरे-धीरे जीवात्मा की आकुलता बढ़ती जाती है और वह
दीपक बनाकर, प्राणों की बाती में रक्त का तेल सींचकर प्रिय
व्याकुल हो जाती है। फिर भी उसे प्रिय की प्राप्ति नहीं होती।
है कि प्रिय से मिलन होना सहज नहीं है। अपनी अनुभूति को
व्यक्त करती है—

हंसि-हंसि कंत न पाइया, जिन पाइया तिनि रोय।
जो हांसे ही हरि मिलै, तौ नहीं दुहागिनी कोय॥

अन्त में जीवात्मा के प्रयत्न सफल होते हैं और उसका प्रियत
होता है। कबीर ने आत्मा-परमात्मा के साक्षात्कार को भी बड़ी
प्रस्तुत किया है।

(iv) **अभिव्यक्ति जनित रहस्यवाद**—अभिव्यक्ति जनित र
सिद्धों, योगियों की संध्या भाषा के अनुकरण पर उलट बांसियों में
एक उदाहरण देखिए—

समंदर लागी आगि, नदिया जलि कोइला भई।
देखि कबीरा जागि, मंछी रूंखा चढ़ि गई॥

संक्षेप में कबीर के काव्य में उपर्युक्त चारों प्रकार का र
जाता है। इनमें प्रेम मूलक रहस्यवाद कबीर की प्रकृति के अनुकूल
सर्वश्रेष्ठ है। इसमें सन्देह नहीं कि कबीर हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रथ
कवि हैं। अमेरिकन महिला अण्डरहिल ने उन्हें "भारतीय रहस्यवाद
में सर्वाधिक रोचक व्यक्ति" माना है जो उचित ही है—

"The most interesting personality of the histor
mysticism."

2. मलिक मुहम्मद जायसी

प्रश्न 7. पद्मावती का नख-सिख सौन्दर्य सुनकर राजा रत्न
स्थिति हुई?

उत्तर—पद्मावती का अलौकिक सौन्दर्य का वर्णन सुनकर
मूर्च्छित हो गया। वह प्रेम के अथाह सागर में गिर पड़ा। विरह भ

का मन हिलोरे लेने लगा। वह कभी निःश्वास छोड़ता और कभी बिना सांस हो जाता। क्षण में उसका मुँह पीला और क्षण में श्वेत हो जाता। उसकी न सु होती थी और न ही उसमें प्राण थे। उसके मुँह से केवल त्राहि-त्राहि, बचाओं-ाओ के बोल ही निकलते थे। इसके अलावा वह और कुछ नहीं बोल पा हा था।

उसे जैसे ही चेतना हुई वैसे ही उसमें वैराग्य उत्पन्न हो गया। वह बालक समान रोने लगा। उसने कहा कि अभी मैं अमृत नगरी में उस प्रिय के पास । अब यहाँ कहा मृत्यु लोक में आ गया हूँ। मेरे प्राण तो वहीं रह गये हैं। ब मेरा शरीर प्राणहीन और निर्जीव है। प्रिय मुझे निकट ही दिखाई देता है। र मेरा हाथ उस तक पहुँच नहीं पा रहा है। प्रेम में उसका चित्त ऐसा लगा था क वह पलकें भी बन्द नहीं कर पा रहा था। उसकी दशा ऐसी थी जैसे कोई गुड़ ा लेने पर गूंगा हो गया हो। उसे अपने हृदय में वह दीप दिखाई देने लगा जहां सके प्राण थे। शेष सारी सृष्टि उसे अन्धकारमय लगने लगी। उसने अपना नश्चय बताते हुए कहा कि वह एक-एक फूल के पास जाकर उस प्रिय का पता छेगा। वह भौंरे के समान उस केहाकी के पास पहुँचकर अपने प्राण न्योछावर र देगा।

इस प्रकार पद्मावती का नख-सिख सुनकर राजा रत्नसेन उसके अथाह मे सागर में पड़कर हिलोरे लेने लगा। उसे अपने जीवन की कोई आशा नहीं रही। वह रानी पद्मावती को पाने के लिए वैरागी बनकर घर से निकल गया।

प्रश्न 8. राजा को प्रेम के अथाह सागर में पड़ा देखकर उसके हितैषी उसे क्या-क्या कहकर समझाने लगे?

उत्तर—राजा को प्रेम बाण से पीड़ित जानकर उसके सगे सम्बन्धी तथा कुटुम्ब के लोग शीघ्र आये और अनेक प्रकार से उपचार कर उसे होश में लाने का प्रयास करने लगे। राजा के चेत में आने पर उन्होंने उसे समझाते हुए कहा कि किसी से प्रेम करना उचित नहीं है। प्रेम का फल मधुर होता है, उसे चखने वाले को प्राण देने पड़ते हैं। प्रेम को जोड़ने में सुख मिलता है पर प्रेम सम्बन्ध का निर्वाह करना अत्यन्त कठिन है प्रेम का ध्रुव आकाश के ध्रुव से भी ऊँचा है और जो पहले सिर देकर इस मार्ग पर पैर रखता है, वही प्रेम के ध्रुव को छू पाता है। वियोग दुःख को सहन करने वाला ही साध्य तक पहुँच पाता है।

गुरु रूपी तोते ने राजा को समझाते हुए कहा कि हे राजन् प्रेम करन बहुत कठिन है। प्राण देकर भी इस मार्ग की सफलता सदिग्ध रहती है। तुम राज हो, तुम से वियोग साधा नहीं जायेगा। भोग और योग में स्वतः विरोध है। तुम जानते हो कि दही को मथे बिना घी नहीं निकलता। वैसे ही जब तक कोई स्व

इस मार्ग को कठिनाईयों को नहीं सह पाता, तब तक वह जिसे ढूँढता है
नहीं सकता। विधाता ने प्रेम के पर्वत को दुर्गम व कठिन बनाया है। इ
चलना तेरे बूते की बात नहीं है।

तोते की बात सुनकर राजा के जी में चेत हुआ। उसके नेत्रों
रक्त बहने लगे। उसकी दशा ऐसी थी कि मानो गुड़ खा लेना पर कोई
गया है। उसे इस संसार से विरक्ति हो गयी और वह राज्य को छोड़
बन गया।

प्रश्न 9. पद्मावती गोरा बादल संवाद खण्ड का सारांश अपने
लिखिये।

उत्तर—चित्तौड़ के राजा रत्नसेन को दिल्ली के राजा अलाउद्दी
द्वारा बन्दी बना लिये जाने के बाद रानी पद्मावती विरह सागर में
वह प्रिय के ध्यान में मग्न होकर योगिन के समान रहने लगी और चक्र
घूमते हुए नेत्रों से प्रियतम की बाट जोहने लगी। उसकी यह दशा देखक
ने उसे गोरा बादल नामक दो सामन्त वीर भाइयों के पास जाकर सह
का परामर्श दिया। इस परामर्श को सुनकर वह चिन्ता से मुक्त होकर
गयीं। उसने कभी पृथ्वी पर पैर नहीं रखे थे। अतः वहाँ तक चलने में
पैरों में छाले पड़ गये।

रानी का अपने द्वार पर आगमन जानकर वे क्षत्रिय वीर थर-थ
लगे और रानी का स्वागत करने के लिए घर से बाहर आये। वे चँवर
कर रानी पर चँवर डुलाने लगे। उन्होंने निवेदन किया कि आपको इन
रहते इतना कष्ट पाना शोभा नहीं देता। आप हमें आज्ञा दे। हम आपक
पूरा करने में अपने प्राणों को दांव पर लगाने पर भी नहीं हिचकिचा
वीरों का आश्वासन जानकर रानी ने रो-रोकर सब समाचार सुनाये
कि तुम इस राज्य के आधार स्तम्भ हो। युद्ध कौशल में निपुण हो। तुम्ह
वीर पूरे राज्य में नहीं हैं। मेरे स्वामी बन्धन में पडे है। मैं जोगिन बन
के पास जाऊँगी और स्वयं को बन्दी गृह में डालकर अपने प्रिय को ब
कराऊँगी।

रानी की व्यथा सुनकर दोनों वीर द्रवित हुये। उन्होंने कहा, कि
ही तुर्क से मेल करने के विरुद्ध थे, लेकिन हमारी बात नहीं माना ग
स्वामिभक्त सेवक है। तुम अपने स्वामी के रहते जोगिन कैसे बनोगी?
प्राणों का मोह त्यागकर उन्हें छुड़ा कर लायेंगें। गोरा बादल की यह उ
रानी ने उन्हें पान का बीड़ा स्वीकार करने का निवेदन किया और कह
अंगद, हनुमान, मुष्टिक, मार्कण्डेय, अर्जुन, भीम, परशुराम और कर्ण

हनुमान ने श्रीराम को बन्धन मुक्त करवाया था, वैसे ही तुम राजा को मुक्त करके हम दोनों का मेल करा दो।

रानी की विरह व्यथा देखकर और उसके दीनता भरे वचनों को सुनकर सामन्तों ने ... और कहा कि हम तुम्हारे लिए सिंहासन सजाकर छत्र तानेंगे। तुम पालकी में बैठो और राजमहल को प्रस्थान करो। उन सामन्तों के आश्वासन भरे शब्दों को सुनकर रानी का हृदय कमल खिल उठा। उसके हृदय से अन्धकार छँट गया और सर्वत्र उजाला हो गया। वह सिंहासन पर बैठकर सखियों के साथ राजमहल को लौट गयी। इस अंश में रानी का राजा के प्रति असीम एवं पवित्र प्रेम का वर्णन हुआ है। राजा को पुनः पाने के लिए रानी अपना सर्वस्व त्याग करने को तत्पर है। गोरा-बादल की वीरता भी विशेष रूप से स्मरणीय है।

3. गोस्वामी तुलसीदास

प्रश्न 10. श्रीराम-सीता के अयोध्या न लौटने के विचार को सुनकर मंत्री सुमन्त का क्या हाल हुआ ?

उत्तर—श्रीराम और सीता अयोध्या लौटकर नहीं चलेंगे यह जानकर सुमन्त वैसे ही विकल हो गया। जैसे कोई सर्प अपनी मणि खोकर विकल होता है। उसे न तो नेत्रों से कुछ दिखायी ही देता था और न उसके कान कुछ सुन पाते थे। वह चाहकर भी अपने मन के भावों को प्रकट नहीं कर पा रहा था। यद्यपि श्रीराम ने उसे अनेक प्रकार से समझाने का प्रयास किया फिर भी उसके हृदय का ताप कम नहीं होता था। श्रीराम ने उसकी सभी शंकाओं का समाधान किया अन्त में इसे अपने कर्म की गति जानकर उसने स्वीकार कर लिया। जिस प्रकार कोई वणिक लाभ की आशा से विदेश जाये पर वहाँ अपना मूलधन भी खो दे और दुखी होकर आये, वैसा ही दुःख सुमन्त जी को हो रहा था। वह लौटकर जाने का जरा भी इच्छुक नहीं था, पर श्रीराम की आज्ञा को मानकर उसे अयोध्या लौटना ही पड़ा।

प्रश्न 11 केवट-प्रसंग का सार अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर—मंत्री सुमन्त जी को विदा करके श्रीराम, सीता और लक्ष्मण सहित गंगा के किनारे पर गये। गंगा पार जाने के लिए श्रीराम ने केवट से नाव लाने को कहा। केवट नाव नहीं लाया और कहने लगा कि मैंने आपके चरण-कमलों के प्रभाव को जान लिया है। लोग कहते हैं कि आपके चरण कमलों की धूल मनुष्य बना देने वाली औषधि है। उसके स्पर्श से पत्थर की शिला सुन्दर स्त्री बन गई। यदि मेरी नाव भी मुनि की स्त्री में बदल गई तो मैं क्या करूँगा। यह नाव ही मेरी आजीविका का आधार है। मैं इसके अतिरिक्त दूसरा कार्य भी नहीं

जानता, तो हे प्रभु ! मैं अपने बच्चों का भरण-पोषण कैसे कर
गंगा पार जाना ही चाहते हैं तो मुझे अपने चरण-कमल धो
दीजिये ।

केवट ने श्रीराम से कहा कि मैं आपकी और महाराजा
खाकर सत्य कहता हूँ कि मैं आपके चरण-कमलों को धोये बिना
नहीं बैठाऊँगा । भले लक्ष्मण जी मुझे बाण से ही अहित क्यों न क
मैं आपसे किसी प्रकार की उतराई भी नहीं चाहता हूँ । केवट के
वचनों को सुनकर करुणानिधान श्रीराम, सीताजी और भाई लक्ष्म
कर मुस्कराने लगे ।

श्रीराम ने मुस्कराते हुए केवट से कहा, हे भाई ! तुम व
तुम्हें कोई हानि न हो । जल्दी से पानी लाकर मेरे पैर धो लो औ
उतार दो । श्रीराम की आज्ञा पाकर केवट पानी का कटोरा भरके
प्रेम की उमंग में आनन्दित होकर उनके चरणों को धोने लगा । फि
परिवार के साथ उसने चरणामृत पान करके श्रीराम को प्रसन्न म
ले गया ।

राम, सीता, लक्ष्मण और निषादराज नाव से उतरकर गं
हो गये । पति के हृदय को समझने वाली सीताजी ने अपनी मणि
उतार कर श्रीराम को दी और कहा कि हे स्वामी ! इससे कहियेगा
उतराई ले ले । यह सुनकर केवट विकल होकर प्रभु के चरणों में गि
कहा, हे स्वामी ! मैं बहुत समय से मजदूरी कर रहा हूँ पर आज
पर कृपा की है । मुझे अपने कार्य की अच्छी मजदूरी मिल गयी है ।
आप लौटते समय जो कुछ देंगे, मैं उसे स्वीकार करूँगा । श्रीराम
सीता ने केवट से मजदूरी लेने का बहुत आग्रह किया । लेकिन
लिया । अन्त में श्रीराम ने अपनी निर्मल भक्ति का वरदान देकर उसे

प्रश्न 12. सीता जी ने गंगा की पूजा करके उससे कौनस
करने की प्रार्थना की ?

उत्तर—गंगा पार उतरकर सीताजी ने गंगा से प्रार्थना क
मेरे सभी मनोरथों को पूरा करना, जिससे कि मैं अपने पति श्री
लक्ष्मण के साथ सकुशल लौटकर आपकी पूजा कर सकूँ । सीत
भरी मधुर वाणी को सुनकर गंगा जी ने मधुर वाणी में कहा
सीता ! तुम्हारा प्रभाव सारे विश्व को विदित है । तुम्हारी कृपा द
साधारण मनुष्य भी लोकपाल बन जाते है । सब सिद्धियां हाथ ज
सेवा करती है । तुमने जो विनय प्रकट की है, यह तो मुझ पर कृपा

देवी ! मैं अपनी वाणी को सफल होने के लिए तुम्हे आशीर्वाद दूँगी । तुम अपने प्राणनाथ और देवर सहित सकुशल अयोध्या लौटोगी । तुम्हारी सारी मनोकामनाएं पूरी होगी और संसार में तुम्हारा यश छा जायेगा ।

प्रश्न 13. श्री वाल्मीकि जी ने श्रीराम के निवास के योग्य कौनसा स्थान बताया ?

उत्तर—वाल्मीकि जी ने प्रभु श्रीराम से अत्यन्त संकोच के साथ कहा कि स्वामी ! आप तो सर्वव्यापी और अन्तर्यामी है । आप ही ऐसा कोई स्थान बतला दीजिये, जहां आप नहीं रहते हो ? आपने पूछा है तो सुने, आप सीताजी और लक्ष्मण सहित उन व्यक्तियों के हृदयों में निवास कीजिये, जिनके काम समुद्र की भांति आपकी लीला रूपी कथाओं सरिताओं से निरन्तर भरते रहते हैं, लेकिन तृप्त नहीं होते हैं । जिन्होंने अपने नेत्रों को आपके मेघ रूपी रूप के दर्शन के लिए चातक बना रखा है, आप उनके हृदय सरोवर में निवास कीजिये । जिन मनुष्यों की वाणी मानसरोवर में हंसिनी बनी हुई आपके गुण रूपी मोतियों को चुगती रहती हैं, आप उनके हृदय में निवास कीजिये । जो व्यक्ति आपको अर्पण करके भोजन करते हैं और आपके प्रसाद रूप ही वस्त्र और आभूषण धारण करते हैं, जो देवता, गुरु और ब्राह्मणों के प्रति श्रद्धावन्त हैं और नित्य प्रति आपके चरणों की पूजा करते हैं, जिनके चरण आपके तीर्थों में चलकर जाते है, जो निरन्तर आपके नाम को जपते हैं और सपरिवार आपकी पूजा करते है, आप उनके मन-मन्दिर में रहिये ।

हे प्रभु ! जिनके मन में काम क्रोध, मद, अभिमान, मोह, लोभ, राग, द्वेष, कपट और माया नहीं है; जो सबके प्रिय और सबका हित करने वाले हैं । आप उन्हीं के हृदय में निवास कीजिये । भाव यह है कि आप अपने भक्तों के हृदयों में सदा आवास कीजिये ।

प्रश्न 14. तुलसी की काव्यगत विशेषताओं को संक्षेप में लिखिये ।

उत्तर—हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति काल को विद्वानों ने स्वर्ण युग की संज्ञा प्रदान की है । महाकवि तुलसी इसी स्वर्ण युग की अनुपम देन है । दूसरे शब्दों में यदि यह कह दिया जाय कि भक्ति काल को स्वर्ण युग मानने का सुदृढ़ आधार तुलसी साहित्य ही था, तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं होगी । वस्तुतः अपने युग के प्रतिनिधि कवि थे । तुलसी का काव्य चिर नूतन है । उसमें पाठक को प्रत्येक बार नवीनता के दर्शन होते हैं । ऐसे काव्य की विशेषताओं का एक बार ही सम्पूर्ण रूप मे उल्लेख कर देना सम्भव नहीं है फिर भी संक्षेप में तुलसी की काव्यगत विशेषताएं निम्नांकित हैं—

1. तुलसी भक्त पहले हैं, कवि बाद में । फलतः तुलसी का काव्य भक्ति से ओत-प्रोत है ।

2. तुलसी ने मानव अन्तःकरण की सूक्ष्म से सूक्ष्म वृत्तियों का में चित्रण किया है।

3. उनके काव्य में बाह्य जगत् के भी विभिन्न रूपों मिलता है।

4. उन्होंने राम कथा के मार्मिक स्थलों का चयन करके उनका वर्णन किया है।

5. तुलसी का श्रृंगार वर्णन भी अत्यन्त मर्यादित, संयत है।

6. उनके काव्य में सभी रसों का परिपाक हुआ है।

7. उनका काव्य स्वान्तः सुखाय होते हुए भी सर्व जन हिताय कल्याण की भावना उसमें फूट-फूट कर भरी हुई है।

8. तुलसी के काव्य में गम्भीरता और मर्यादा सर्वत्र दृष्टि है।

9. तुलसी का काव्य अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है।

10. तुलसी का काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।

11. तुलसी प्रबन्ध काव्य की रचना में परम पटु हैं।

12. उनके काव्य में तीनों गुण मिलते हैं। प्रसाद गुण के कारण काव्य जनता का कण्ठहार बना हुआ है।

13. तुलसी के काव्य में भाव और कला दोनों पक्ष ही प्रबल एव

14. उनके काव्य में अलंकार अनायास ही आये हैं जो श्रेष्ठ विक हैं।

15 उनकी भाषा भावानुकूल और छन्द योजना रसानुकूल है

इस प्रकार हम देखते हैं कि तुलसी के काव्य में अनेक वि जिनके कारण उन्हें समस्त हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ कलाकार क ही है।

4. रहीम

प्रश्न 15 रहीम के प्रेम निरूपण की विशेषताएँ लिखिये।

उत्तर—रहीम द्वारा वर्णित प्रेम में अनन्यता और प्रिय के प्रति का भाव देखने को मिलता है। प्रिय का साथ न रहने पर बैकुण्ठ कल्पवृक्ष का छाया भी उन्हें ग्राह्य नहीं है। प्रेम सदा समान रहता है व्यवहारों की तरह लेन-देन का भाव नहीं रहता। प्रेम के बलिदान और समर्पण की भावना का होना आवश्यक है। जिस प्र

..., वह सच्चा प्रेम नहीं है। प्रेम की आग हृदय में एक बार लग जाने ...ो शान्त नहीं होती। वह बुझ-बुझ कर भी बार-बार सुलगती

...न 16. रहीम के नीति सम्बन्धी दोहों में से किन्हीं तीन दोहों का सार ... में लिखिये।

...तर- रहीम हिन्दी साहित्य में नीति कवि के रूप में विख्यात है। उनके ... अनेक अवसरों पर दृष्टान्त स्वरूप कहे जाते हैं। यहाँ हम उनके तीन ...न्हीं दोहों का उल्लेख करेंगे।

...हीम जी कहते हैं कि जब कोई नीचा व्यक्ति बड़ा बन जाता है, तो उसमें ...ा जाता है। वह इतराने लगता है और उसकी चाल ढाल तथा व्यवहार ...ग्रा जाता है।

...हीम जी लिखते हैं कि नीच व्यक्ति की संगति से सज्जन और सरल ... व्यक्ति भी कलंकित हो जाते हैं। जैसे कलारिन के हाथ में दूध भरा ... पर भी सब उसे मदिरा ही समझते हैं।

...रहीमदास जी लिखते है कि शीलवान सदाचारी व्यक्ति के पास धन न ...ी उसकी भी प्रतिष्ठा रहती है, जैसे कुलवधू चिथड़ों में भी सभी का ...प्राप्त करती है। यथा—

"धन थोरो, इज्जत बड़ी, कहि 'रहीम' का बात।
जैसे कुल की कुलवधू, चिथडन माहि समात ॥"

...न 17. रहीम ने संगति के प्रभाव के सम्बन्ध में क्या लिखा है?

...उत्तर—रहीम ने संगति के प्रभाव का अपने अनेक दोहों में विस्तार से ...या है। उनके अनुसार व्यक्ति जैसी संगति में रहता है, वह स्वयं भी वैसा ...जाता है। जैसे स्वाति जल की बूँद संगति के प्रभाव से विविध परिणाम ... वह बूँद केले के वृक्ष की संगति से कपूर, सीप की संगति में मोती और ...र्प की संगति में विष बन जाती है। इसी प्रकार बुरी संगत में रहने वाली ...स्तु या व्यक्ति को अपयश मिले बिना नहीं रहता। कलारिन के हाथ में ...पात्र होने पर भी लोग उसे मदिरा ही समझते हैं।

रहीम के अनुसार संगति का प्रभाव केवल उसी व्यक्ति पर नहीं पड़ता, ... अपने मन पर पूरी तरह से नियन्त्रण है। आत्म संयमी पुरुष अशुभ स्थान ...कर भी कुकृत्य नहीं करता। जैसे कि जल में शरीर की छाया पड़ने से ...व्यक्ति का शरीर जल से प्रभावित होकर भीगता नहीं है। यथा--

जो 'रहीम' मन हाथ है, तो तन कहुँ किन जाय।
जल में जो छाया परे, काया भीजति नाहिं ॥

अर्थात् संगति के कुप्रभाव से केवल आत्म-संयमी पुरुष ही बच पाते हैं।

प्रश्न 18. रहीम ने दुष्ट व्यक्तियों की प्रवृति के विषय में क्या कहा है लिखिये।

उत्तर—रहीमदास जी ने नीच व्यक्तियों के स्वभाव के विषय में बताते कहा है कि नीच व्यक्ति कभी किसी के काम नहीं आते। वे स्वयं तो किसी कार्य करते नहीं और यदि कोई दूसरा किसी के काम आता है तो उसे भी रोक का प्रयास करते हैं। दूसरों का हित उन्हें कभी नहीं सुहाता। दुष्ट व्यक्तियों थोड़ा धन या कुछ ऊँचा पद मिलते ही वे इतराने लगते हैं। उनमें अहंकार जाता है। उनकी गति टेढ़ी हो जाती है। ऐसे व्यक्तियों के साथ रहने पर क किसी को सुयश नहीं मिलता। वे हमेशा हल्की और ओछी बातें ही करते अ कहते हैं। ऐसे व्यक्तियों के कहने-सुनने का कोई विचार मन में नहीं ला चाहिये।

प्रश्न 19. रहीम के बरवों के आधार पर उनकी भक्ति भावना पर प्रक डालिये।

उत्तर—रहीम जी यद्यपि मुसलमान थे तो भी उनके हृदय में भगव कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम था। उनके अनेक दोहों में कृष्ण के प्रति उनका अन विश्वास और एक निष्ठता देखने को मिलती है। पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'बर छन्दों में कृष्ण के प्रति उनका भक्ति भाव विशेष रूप से मुखर हुआ है। कृष्ण से मिलने की उत्कण्ठा उनके हृदय में वियोगिनी नायिका के समान सदा ब रहती है और दिन-प्रतिदिन उसमें निरन्तर वृद्धि होती जाती है। प्रिय के अभ में उन्हें दिन में चैन नहीं पड़ता। वे निरन्तर उनके दर्शनों के लिए विक रहते हैं।

रहीम की भक्ति में एकनिष्ठता है। अनेक देवी-देवताओं के रहते हुए भी तो प्रियतम कृष्ण का ही ध्यान करते हैं। यथा—

"जदपि बसत हैं सजनी, लाखन लोग।
हरि बिन कित यह चित को, सुख संजोग॥"

उनको भगवान की मोहनी मूर्ति स्वप्न में भी विस्मृत नही होती—

"सपनेहूँ नहिं बिसरै, मोहनि-मोति।"

प्रिय की प्रतीक्षा करते-करते उनके प्राण उनकी पलकों में ही आ गये हैं-

जब ते मोहन बिछुरै, कछु सुधि नाहि।
रहे प्रान परि पलकनि, दृग मन माहिं॥

अनुसार मानव देह अत्यन्त दुर्लभ है। इस देव-दुर्लभ देह को दो ही कार्यों को प्रमुखता देनी चाहिये—प्रथम तो भगवान की सद्जनों को संगति। यथा—

मानुष तन रति दुर्लभ, सहजहिं पाय।
हरि-भजि कर सत संगति, कह्यौ जताय॥

कवियों के इस भगवद् प्रेम को देखकर ही हिन्दी के किसी हा था—'इन मुसलमान हरिजनन पर, कोटिन हिन्दू वारीय।' कृष्ण प्रेम और उनकी भक्ति सराहनीय है।

5. मीरांबाई

0. मीराँ ने नाम स्मरण की महिमा का वर्णन किन शब्दों में ये।

मीराँ गिरधर नागर कृष्ण की माधुरी मूर्ति की दीवानी थी। धारण करने वाले मुरारी और गिरधारी कृष्ण उसके प्रियतम हैं। पने प्रिय का ही नाम स्मरण करती रहती है। नाम स्मरण की ए मीराँ ने लिखा है कि प्रभु नाम का स्मरण करोड़ों पापों को है। जन्म-जन्मातरों के पुराने पाप नाम स्मरण से कट जाते हैं। मृत से भरा हुआ प्याला है, जिसके पीने से कोई इन्कार नहीं कर का तो तन-मन उन्हीं अनिश्वर प्रभु को महिमा में तल्लीन

"मेरा मन रामहि राम रटै रे।
राम नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे॥
जनम-जनम के खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे।
कनक कटोरे इम्रत भरयो, पीवन कौन नटै रे॥
मीराँ कहै प्रभु हरि अविनासी, तन-मन ताहि पटै रे॥"

ार मीराँ की भक्ति में नाम स्मरण का अत्यधिक महत्व था।

1. 'पपइया' को लक्ष्य करके मीराँ ने क्या कहा? उसके कथन के स्पष्ट कीजिये।

—मीराँ के काव्य में प्रकृति के उद्दीपन रूप में पपीहे का वर्णन हुआ लक्ष्य करके मीराँ ने अनेक पद लिखे हैं, जिनमें से दो पद हमारी भी संकलित हैं। विरहणी को पपीहे के बोल नहीं सुहाते। उसकी ट सुनकर उसे अपने प्रियतम का स्मरण हो आता है और तब उ-पीउ का स्मरण करते ही बीतती है। मीराँ अपने महल में आनन्द

से सो रही थी। अकस्मात् उसे पपीहे के बोल सुनाई देते हैं। वह जाग जा पपीहा उसे अपना शत्रु लगने लगता है। उसे अनुभूत होता है कि उसने उ दुःख को जगाकर जले पर नमक छिड़कने का कार्य किया है। अतः वह प लक्ष्य करके कहती है—

'रे पपइया प्यारे कब को बैर चितार्‌यो।
मैं सूती छी अपने भवन में, पिय-पिय करत पुकार्‌यो।
दाध्या ऊपर लूण लगायो, हिवड़ो करतब मार्‌यौ॥''

कभी विरहणी पपीहे को पीव की वाणी बोलने से मना करती है उससे विनय करती हुई कहती है कि—''पपइया रे पिव की वाणी न बोल'' यदि कोई विरहणी उसकी आवाज सुन लेगी तो वह क्रोध के आवेश में चोंच ही नोंच कर रख देगी और ऊपर से काला नमक छिड़क देगी जिससे उसकी वेदना को अनुभव कर सके।

विरहणी मीराँ पपीहे से प्रिय पर एकाधिकार प्रकट करती हुई क कि प्रिय मेरे हैं, मैं प्रिय की हूँ, तू पिउ-पिउ कहने वाला कौन होता है? ही उसकी मनः स्थिति में परिवर्तन होता है और वह कहती है कि तेरे पुक यदि आज मेरे प्रिय आ गये तो मैं तेरे बोल को सुहावणां मानूँगी। मैं तेरे साथ आनन्द से पीउ-पीउ कहूँगी। मैं तेरी चोंच को सोने से मढ़वा दूँग प्रकार हम देखते हैं कि पपीहे को लक्ष्य करके मीराँ ने जो कहा है उसमे भास है। इस विरोधाभास का कारण उसकी वियोग जन्य अवस्था है। वि मनः स्थिति पर नियन्त्रण कर पाना प्रायः कठिन होता है। यही कार मीराँ के पपीहे प्रसंग में विरोधाभास है, जो स्वाभाविक ही है।

6. ढोला मारू रा दूहा (कुशल लाभ)

प्रश्न 22. ''मारू स्वप्न में पति दर्शन और विरहाकुलता'' शी का सारांश अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर—मारवणी का यौवनागम तथा स्वप्न दर्शन ढोला में ना विरह की पृष्ठभूमि निर्मित करता है। स्वप्न में अपने पति को देखने के ब विरह संताप से व्याकुल होकर निःश्वासें भरने लगी और शून्य मनस्क अपलक देखती हुई प्रिय के आगमन की प्रतीक्षा में दिन गिनने लगी। यहा मानसिक दशा के अनुरूप कवि ने उसको शारीरिक चेष्टा (अनुभाव) भावपूर्ण चित्र खींचा है—

ऊंलत्रे गिर [illegible], [illegible] लुब्ध।
ऊँचा चढ़ी [illegible], मारग [illegible] मुग्ध।''

नय को याद कर उसकी आँखों से आँसू छलक पड़े। वह अहर्निश सन्तप्त । सखियों से उसका यह हाल देखा नहीं गया। सखियों ने उसकी उदासी ा पूछा। मारवणी ने कहा—स्वप्न में मैंने कामदेव के समान मनोज्ञ मूर्ति किये हैं। उसकी याद मुझे भुलाये नहीं भूलती। यद्यपि मैंने साजन को , तो भी हर क्षण मुझे उनकी याद सालती रहती है।" सखियां उसे कि हमारी समझ में तुमने स्वप्न में अपने पति ढोला कुँवर को ही

"मारु नूं आखइ सखी, एह हमारी बुझ्झ।
साल्ह कुँवर सुहिणइ मिल्यउ, सुन्दरि सऊवर तुझ्झ॥"

नब मारवणी को पता चला कि स्वप्न में उसने जिस व्यक्ति को देखा है ा पति ही है तो उसके हृदय में मिलनोत्कण्ठा बढ़ गई। उसकी वेदना हो उठी। वह भी पपीहे के समान कातर स्वर में पिउ-पिउ की टेर लगाने ाषाढ़ आ गया। पपीहे की साध पूरी हुई। उसका पिउ जो गया था, पर मारवणी का प्रिय नहीं आया था। अतः उसे पपीहे की पुकार अब ागी। वह उससे पिउ-पिउ की टेर न लगाने की विनय करती है। उसकी सुनकर उसे प्रिय के आगमन की भ्रान्ति हो जाती है। वह कह उठती है—

"बाबहिया तू चोर, थारी चाँच कटाबिसूं ५।
राति ज दीन्ही लोर, मई जरायउ प्री आवियउ॥"

और कभी वह उसे ऊँची भीत पर चढ़कर पिउ-पिउ की टेर लगाने की रती है। शायद उसकी पुकार और बादलों की आवाज सुनकर उसके आयें। कभी वह उससे कहती है कि तू बोलना बन्द करके या मेरे पर- नतम को ही यहां ला दे। अन्त में हार कर वह यह भी कहती है कि तेरे डूंगर भी जलने लगने हैं, पर्वत जैसा कठोर हृदय भी वेदना की ज्वाला लगना है। इसलिये अच्छा है कि तू हमारा गांव छोड़कर चला जा—

"बाबहिया डूंगर-दहण, छांडि हमारउ गाम।
सारी रात पुकारियउ, लइ-लइ प्रिय कउ नाम॥"

वरसात आने पर राजा, प्रजा, कविजन, पण्डित और गुणी सभी आनन्दित यदि दुःखी है तो केवल मारवणी क्योंकि उसके प्रिय उसके साथ नहीं हैं। काश में दुष्टा बिजलियां वियोगिनी के घावों पर नमक छिड़कती हैं। वे मों शिखरों के गले लग-लगकर चमकने लगीं। मेघ भी आलिंगन के मोद नर्जन करने लगे। अब तो वियोगिनी से रहा न गया। उसने मेघ से ही ी—

"बिज्जुलियां नीलज्जियाँ, जलहर तूँ ही लज्जि।
सूनी सेज विदेस प्रिय, मधुरइ मधुरइ गज्जि॥"

नारी तो सपत्नीक ईर्ष्या से और जलाना चाहती है, अतः पुरुष म
को ही मारवणी ने अनुरोध किया। नारी मनोविज्ञान का कैसा
रहस्य है।

मेघ से अनुरोध करने पर भी विरह की आग बुझी नहीं। उधर कु
उसकी अन्तर्व्यथा को भड़का दिया। अब तो वह विरह विक्षेप में पागल सी
पड़ी। सरोवर के तीर पर कुछ कुरझों को देखकर उसने उनके पंख मांगे
कुरझे अपने पंख क्यों देने लगी? तब वह ढोला तक सन्देश पहुँचाने की
करती है। कुरझों ने कहा--हमारी पांखों पर लिख दो। लेकिन पांखों प
पड़ने से स्याही के बह जाने का जो भय था। अतः वह कहती है कि
सन्देशा तो मुख द्वारा ही कहलवाया जा सकता है।

विरहिणी मारवणी जब प्रिय मिलन का कोई उपाय नहीं देखती त
पवन से प्रार्थना करती है। हे पवन, प्रिय का स्पर्श करके मुझे छुओ, व
लिए लाख पसाव होगा। यथा—

जिणि देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ।
उवां लगे मो लग्गसो, ऊ ही लाख पसाउ॥

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मारवणी के विरह में विरहिण
मिलनोत्कण्ठा मर्मस्पर्शी ढंग से व्यक्त हुई है। उसके विरह में औरत का स
स्वप्न, अभिलाषा, मृत्यु की ध्वनि, बिजलियों के गर्व और मद पर कुढ़न
सञ्चारियों का प्रभावशाली ढंग से चित्रण हुआ है।

———

कथा विसर्जन (नाटक)

(लेखक–लक्ष्मीनारायण लाल)

प्रश्न 24. कथा का क्या अर्थ होता है ? 'कथा विसर्जन' में कथा का क्या है ?

उत्तर—'कथा' शब्द का प्रयोग हिन्दी साहित्य में प्रेमाख्यानक काव्यों में गया है जैसे—सत्यवती कथा, कथा रत्नावती, कथा कामलता, कथा ती, नल-दमयन्ती कथा। लेकिन 'कथा' का प्रयोग संस्कृत साहित्य में भी यत से होता था और आचार्यों ने कथा-काव्य के लक्षण निर्धारित किये थे।

आचार्य भामह के अनुसार—"कथा कवि के साभिप्राय कथनों से युक्त होती उसका विषय कन्या हरण (कन्या या प्रेयसी की प्राप्ति), युद्ध, वियोग होता हम देखते हैं कि डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने कथा विसर्जन नाटक में शब्द का प्रयोग उक्त रूप में नहीं किया है। इसमें सन्देह नहीं कि इसमें नाटक-के कथन साभिप्राय हैं, पारिवारिक संघर्ष की झाँकी है और प्रियजन का भी है। इस प्रकार 'कथा विसर्जन' में आचार्य भामह द्वारा निरूपित तथा के चार लक्षणों में से तीन का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है।

कथा का अर्थ—डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के अनुसार कथा गढ़ी या बनाई जाती। कथा तो होती है। बनाने वाली चीज तो कहानी या प्लाट है। कथा जीवन और समय की लीला है। वह हमारे भीतर से गुजरती है और क्रीड़ा मुस्कराती है। उसका स्रोत जीवन की सनातनता है। उसका आदि भी है समापन भी। उसका सुमिरन है और विसर्जन भी। वही कथा हमारी रा है। जो हमें हमारी संस्कृति से जोड़ती है। कथा में समाज को संस्कृति से रखने की शक्ति होती है। 'नृत्य संगीत, नाटक, मूर्ति स्थापत्य कला, लोगों लन-जुलन, कर्म, सुख-दुःख सबके बीच में वही कथा सूत्र है।" डॉ. लक्ष्मी-ण लाल ने इसी अर्थ में कथा को ग्रहण किया है।

"नाटक का मूल तत्त्व भी कथा है। कथा में ही नाटक की वस्तु। वस्तु में पात्र उस वस्तु को धारण करने वाला। पात्र से ही अभिनेता दर्शकों को

रस पिलाता है और दर्शक एकात्म होकर पीते थे।" यह सब संस्कृति के म
से सम्भव होता था। सारे तार जुड़े थे, इसलिए बिजली चारों तरफ धड़ से
जाती थी। लोग अकेले-अकेले नहीं थे पूरे समाज थे। इसलिए एक ही
कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, सौराष्ट्र से लेकर अरुणाचल, मेघालय
समान रूप से प्रचलित थी---इतनी अलग-अलग भाषाओं और बोलि
बावजूद।"

कथा विसर्जन में कथा का महत्व–अपनी कथा का सुमिरन ही—
विसर्जन' है। कथा किसी की भी हो सकती है। बात कहने और करने की
नाटक में कथा कही नहीं जाती, वरन् दिखाई जाती है। प्रस्तुत नाटक '
विसर्जन' में भी लेखक ने कथा कही नहीं है वरन् नट-नटी के धरातल पर
दिखाई है। आज हम पश्चिम का अन्धानुकरण कर रहे हैं और इसमें यह भी
गये है कि हम कौन हैं ? हमारे पूर्वज कौन थे ? जब कोई समाज अपनी पर
से कट जाता है तो वह दिग्भ्रान्त और दिशाहीन हो जाता है। आज हमारे स
की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। उच्च शिक्षा के आवरण की केंचुली पहने
सेठी साहब, प्रकाशचन्द्र और श्रीमती नीलम जैसे पात्रों की हमारे समाज म
कमी नहीं है; जो केवल नाम से ही भारतीय हैं, परन्तु आचरण और व्यवहा
पूरी तरह विदेशी।"

अपनी संस्कृति से कटे लोगों के लिए पारिवारिक शान्ति, एकता,
और प्रेम का कोई महत्व नहीं है। सब एक-दूसरे से कटे-कटे, अलग-थलग अ
अपने स्वार्थ और अहं को लेकर चलने वाले। जो आँखें वाले होते हुए भी
बने रहते है। सब कुछ जानकर भी अनजान होने का स्वांग रचते है। जो अ
जीवन की पूर्णता भारतीय नहीं विदेशी होने में मानते हैं लेकिन यह भूल जाते
कि पूर्व पश्चिम नहीं हो सकता और न ही पश्चिमी सभ्यता पूर्वीय हो सकती
अत: ऐसे लोग अपने से, अपनों से, अपने परिवार से, सब से कट जाते हैं
जीवन का सुख घर में नहीं घर से बाहर ढूँढ़ते हैं। इस प्रकार डॉ. लाल ने अ
इस नाटक की कथा द्वारा हमें अपने आप, अपने परिवार, परिवेश, समाज,
कर्म, राष्ट्र, संस्कृति से जुड़ने और अपने आप को पहचानने की प्रेरणा दी है।
कौन हूँ ? इसको जानना ही जीवन की वास्तविक सार्थकता है।

प्रश्न 25. 'कथा विसर्जन' नाटक में 'प्रस्तावना' की उपयोगिता पर प्रक
डालिये।

उत्तर—आचार्य रुद्रट ने नवीं शती में कथा के तत्वों का उल्लेख करते
'प्रस्तावना' को कथा का एक प्रमुख तत्व माना है। उनके अनुसार 'आरम्भ

र होना चाहिये जो प्रधान कहानी का प्रस्ताव कर सके। प्रस्तावना का स्कृत नाटकों में बहुतायत से देखने को मिलता है। इसका प्रमुख उद्देश्य की मूल समस्या से दर्शकों को, सामाजिकों को परिचित कराना है जिससे था के विषय में जानकार संघर्ष की विविध स्थितियों का पूर्णतः रसास्वादन । भला कथा के प्रसंग या समस्या को जाने बिना हम उसकी कथा को कैसे सकते हैं ?

नाटक म नाटककार स्वयं कुछ कहने की स्थिति मे नहीं होता। वह सामा- के साथ नाटक की कथा को होते हुए देखता है। कथा में ही नाटक की ती है। पात्र उसी वस्तु को धारण करते हैं। पात्र से ही अभिनेता दर्शकों पिलाते हैं और दर्शक एकात्म होकर पीते है। कथा-सूत्र को जाने बिना क पात्रों और वस्तु से तादात्म्य स्थापित नहीं कर पाते। फारसी नाटकों के ण पर और उसी के प्रभाव से विकसित भारतीय नाट्य परम्परा में कथा का सीधा होना दर्शाया जाता है। जिससे दर्शक अपने आप को की कथा से कटा-कटा अनुभव करता है।

डॉ. लाल के अनुसार नाटक का आरम्भ एक विचार, एक प्रस्ताव, एक का आरम्भ है। समस्या के आरम्भ से पूर्व दर्शकों को पूर्व ज्ञान देना या से अवगत करा मनोवैज्ञानिक और सीखने की प्रक्रिया के अनुकूल है। ाटककार अतीत और वर्तमान के अन्तराल को दूर करता है। कथा शाश्वत । उसकी इसी शाश्वतता के क्रम में जो अवरोध आ जाता है उसे प्रस्तावना जोड़ा जाता है। नाटकों में पूर्व रंग अथवा देवता पूजन का विधान है, प्रत्येक देश की अपनी-अपनी रूढि और विश्वास की बात है। फारसी में भी रंग-पूजा का विधान था। चीन और जापान के नाट्य साहित्य में परम्परा देखने को मिलती है परन्तु पाश्चात्य नाटकों में इस क्रिया का पूर्ण र कर दिया है। जब से भारतीय साहित्यकार पश्चिम के मुखापेक्षी न्होंने भी देखा-देखी इसका त्याग कर दिया। फलतः हम अपनी परम्परा स्कृति से कट गये।

कथा विसर्जन में प्रस्तावना की उपयोगिता—कथा विसर्जन में डॉ. लाल ने परम्परा से जुडने और जोड़ने का प्रयास किया है। बिना मूल से जुडे कैसे हो सकता है ? हमारे समाज में आज सर्वत्र अशान्ति है। व्यक्ति घर, और परिजनों से कट गया है। वह जीवन को, जीवन के सुख को घर में वयं में नहीं बाहर ढूँढ़ता फिरता है। जब तक व्यक्ति अपने से नहीं जुड़ता उसे सच्ची शान्ति प्राप्त नहीं होती। लेखक ने हमारे समाज में व्याप्त

अशान्ति का मूल कारण अपनी परम्परा से कट जाने को माना है। परम्परा जाने के फलस्वरूप नाटक मंचीय न होकर केवल साहित्यिक बन जाते हैं।

कथा विसर्जन की प्रस्तावना में लेखक ने हमारी वर्तमान मनोवृत्ति वास्तविक रूप दिखलाने का प्रयास किया है। प्राचीन महापुरुषों के ना दर्शकों का भड़क उठना, रंगशाला छोड़ होटल रेस्टरां में चले जाना; विश्वास यथार्थ का अन्तर ही नाटक है, कथा ही नाटक है; राग सबके हृदय में छिप आज मंच पर नट-नटी की कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती, आदि नट-नट उक्तियां हमें प्राचीन सन्दर्भों से जोड़ देती है। लखनऊ शहर में आँखों देखो को दिखाना व नट को अहंकारी बताना भी एक व्यंग्य है। भगवान की करना और दर्शकों का आशीर्वाद लेना भी एक नाट्य परम्परा है। प्रस्ताव अन्तिम भाग में नाटक के प्रधान पात्र माँ का परिचय देना दर्शकों का नाटक की कथा की ओर करने का प्रयास है।

लखनऊ शहर।
बड़े अफसर की एक माँजी थी।
कृष्ण की छोटी सी मूर्ति उनके पास थी।
जिसे ठाकुर जी कहती थी।
सारा जीवन माँ के लिए पूजा था।
सब उनका था कुछ भी नहीं दूजा था।।

उक्त प्रस्तावना सामाजिकों में उत्साह भरती है और उन्हें नाटक के तैयार करती है। 'हो गई शाम न आई री कन्हैया' भी नाटक की भावी कथा संकेत है।

'इस प्रकार 'कथा विसर्जन' में 'प्रस्तावना' का होना अपनी परम्परा जुड़ने का एक विनम्र प्रयास है। इससे एक ओर तो प्राचीन नाट्य परम्परा पालन हुआ है और दूसरी ओर आज के बेघर व उखड़े हुए दर्शकों को संस्कृ जोड़ने का सत्प्रयास भी है।

प्रश्न 26. नट-नटी के प्रयोग से नाटक में क्या प्रभाव उत्पन्न हुआ है?

उत्तर—नाटक के मंच पर आज नट-नटी की कोई उपयोगिता नहीं स जा रही है। दर्शक नट-नटी को देखकर नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं। पश्चिम नाटकों का प्रारम्भ सीधा होता है। उसमें न प्रस्तावना होती है और न नाटक कथा का कोई सूत्रधार ही। हिन्दी नाटकों पर पश्चिमी के नाटकों का क प्रभाव है। अतः वर्तमान साहित्यिक नाटकों में उनका प्रयोग नहीं हो रहा है।

भारतीय परम्परा—संस्कृत नाटकों में प्रस्तावना का विधान था। प्रस्ता के प्रयोग का अधिकारी सूत्रधार कहलाता था। अंग्रेजी साहित्य समीक्षकों आदि ने सूत्रधार को प्रोफेसर, इंजीनियर आदि की संज्ञा दी है। श्री आर.

के अनुसार पौराणिक सूत्र जो वास्तु कला में दक्ष होता था और
यं गायकों का परिचय आदि देता होता था, वही नाटकों में सूत्रधार
। वस्तुतः सूत्रधार नटों में प्रमुख होता था। वह रंगशाला निर्माण में दक्ष,
संगठन में प्रवीण और नृत्य, अभिनय, संगीत व नाटक सम्बन्धी अन्य
ास्त्रों तथा नियमों का ज्ञाता होता था। वह नाटक, नाटककार व नायक
ग्राह्य वस्तु के गुणों को नान्दी द्वारा सूचना देने वाला भी होता था।
ाटकों में सूत्रधार के अतिरिक्त स्थापक नामक एक अन्य पात्र भी होता
ार्य था। नाटक का नाम बताना, वस्तु का परिचय देना और प्रस्तावना करना
। कालान्तर में स्थापक का अस्तित्व समाप्त हो गया और उसका स्थान
लिया। सूत्रधार की पत्नी ही नटी कहलाने लगी। पश्चिम के अन्धा-
के कारण हिन्दी नाटकों में भी इनका स्थान गौण हो गया।

कथा विसर्जन—परम्परा से जुड़ने का प्रयास—आज नाटक में नट-नटी
स्थिति एक कठिन कल्पना की स्थिति है। यह प्रयास उस समय जबकि घर
र पर पश्चिम पूरी तरह से हावी हो और भी कठिन प्रतीत होता है। इस
पनी परम्परा से जुड़ने के विचार से नट-नटी का प्रयोग एक स्तुत्य
।

"यह बात आज तब कहना कितना आश्चर्यजनक और पीड़ादायक है
नो संस्कृति ही न हो। इससे कितना संक्रान्त होता है अपने भीतर। हमें
क्षणों में अनुभव होता है कि जो हमें परम्परा से दिया गया है वह और
नव हमें अपनी पीड़ा से होता है, दोनों से हम स्वयं परम्परा बनते हैं—
परम्परा हम में आकर परिव्याप्त हो जाती है और हमों से परम्परा आगे
।" अपने को पहचानने और परम्परा से जुड़ने तथा उसको आगे बढ़ाने
र से ही डॉ. लाल ने इस नाटक में नट-नटी का प्रयोग किया है।

कथा विसर्जन में नट-नटी की उपयोगिता—डॉ. लाल ने नट-नटी का
'कथा-विसर्जन' की प्रस्तावना में तो किया ही है—साथ ही वस्तु के अन्य
ों भी उसका प्रभावशाली एवं सफल प्रयोग किया है। नाटक में नाटककार
ों कहना। उसे जो कहना होता है वह नट-नटी के मुख से ही कहलाता है।
अंक के दूसरे दृश्य में नीलम के कार्यों में जो तेजी है उस पर थोड़ा अंकुश
सांस्कृतिक सदर्भ का ध्यान दिलाना आवश्यक था। अतः इस दृश्य के
नट-नटी के गायन का उपयोग नाटककार ने किया है।

हे मन धीरे चलो मैं हारी।
हाथ गठरिया सिर पै गगरिया।
पैरों में पायल भारी—हे मन!
उज्जवल रूप दिया बगुले को

कोयल कर दी कारी,
नार चतुर को बाँझ कर डारी
राजा हो गये भिखारी—हे मन !

गीत में प्रयुक्त प्रतीक कथा के संदर्भ में अपनी सार्थक उपयोगिता रख इसी प्रकार दूसरे अंक के दूसरे दृश्य की समाप्ति पर आधुनिक विचा सारांश देना आवश्यक समझकर नाट्यकार ने नट-नटी से कहलवाया है—

पाप को पूजा से जोड़ दिया।
बाहर के लोभ में घर को छोड़ दिया।

इसी प्रकार नाटक की प्रमुख पात्र माँ की मृत्यु पर नट-नटी ने जिस गायन किया है, वह माँ की वेदनामयी मृत्यु की सशक्त अभिव्यक्ति करत देखिये—

किसी ने बुलबुल से पूछा
दर्दे फुरकत का इलाज।
शाखे गुल से गिरी
तड़पी।
तड़पकर रह गई।

माँ की यह तड़पन भरी मृत्यु नाटक की वस्तु को परम्परा से जोड़ती प्रकाशचन्द्र जो मां के रहते न्यूट्रल बना रहता है और भौतिकता की दौड़ में अ बुरा करके अपना भविष्य बनाने का स्वप्न देखता है, वह परम्परा से जुड़ है। नाटक के अन्तिम दृश्य में नीलम अकेली रह जाती है।

भारतीय प्राचीन नाटकों में नाटक के अन्त में भरत वाक्य का वि होता था। डॉ. लाल ने इस नाटक में नट-नटी के माध्यम से भरत व कहलाया है। अन्त में नट-नटी दोनों गाते हैं—

कथा विसर्जन होता है, सुनों वीर हनुमान।
राम लखन सीय जानकी, सदा करो कल्याण।
जो जन जहाँ से आयहू, कथा सुनो मन लाय।
अपने-अपने भवन को, हरषि जाहु सुख पाय॥

नाटक की प्रस्तावना में नट-नटी ने सामाजिकों से आशीर्वाद चाहा और अब नाटक की समाप्ति पर उन्हें सुख के साथ विदा करना उनका कर्त्त भी बन जाता है।

निष्कर्ष—इस प्रकार डॉ. लाल द्वारा 'कथा-विसर्जन' में नट-नटी का उप नाटक को भारतीय परम्परा से जोड़ने का एक कठिन प्रयास है। नाटकका अपने कौशल से उनकी उपस्थिति सम्पूर्ण नाटक में रखी है और वे कथा के

टिप्पणियां देते हुए उसे सरस बनाये रखते है। इससे रंगमंच सज्जा ...ताओं को तैयार होने के लिए अवसर भी मिलता रहा है और दर्शक ...सा का पाकर उत्सुक भी बने रहे हैं। आगामी कथा-सूत्र का संकेत ...में भरत वाक्य की प्रस्तुति नट-नटी द्वारा करवाना इस नाटक को अधिक ...ी बनाने में सहायक सिद्ध हुई है।

...श्न 27. 'कथा-विसर्जन' शीर्षक से नाटक का क्या सम्बन्ध है?

अथवा

...था विसर्जन' नाटक के शीर्षक के औचित्य पर प्रकाश डालिये।

...तर–किसी भी साहित्यिक कृति का शीर्षक उसके मुख्य पात्र, वस्तु, ...चार या भाव के आधार पर रखा जाता है, कभी-कभी लेखक की इच्छा ...र्षक निर्भर करता है परन्तु कुछ नाटक ऐसे विशिष्ट नामकरण वाले ... वे अपने समस्त विषय वस्तु को ही समेटकर चलते हैं। डॉ. लाल द्वारा ...कथा-विसर्जन' भी एक ऐसा ही नाटक है, जिसका शीर्षक संक्षिप्त, सार्थक ...क है।

...क्षिप्त शीर्षक–नाटक का शीर्षक अत्यन्त संक्षिप्त है–कथा विसर्जन। संक्षिप्त ... सीमा पाँच शब्दों की होती है–परन्तु प्रस्तुत नाटक का शीर्षक केवल ... का है। इन दो शब्दों में ही नाटक की सम्पूर्ण कथा, भाव, विचार, ...व और उद्देश्य को यह अपने में समाहित किये हुए है।

...र्षक की सार्थकता–प्रस्तुत नाटक का शीर्षक कथा के अनुकूल और ...किसी भी कथा का जब आरम्भ होता है तो उसका विसर्जन भी होता ...र विसर्जन एक नई कथा का आवाहन होता है। नाटककार ने स्वयं ... लिखा है–

...कथा विसर्जन नाट्य को अपने साथ लिए हुए नट-नटी हमें क्रीड़ा भाव ... मुस्कराते हैं, देखो यह वही रास्ता है, जिस पर से हम कितने सौ साल ... थे। यहीं हमारी वह भेंट हुई थी। यह स्मृति का खेल नहीं है, यही ...ट्य है। कथा विसर्जन और आवाहन दोनों एक हैं जैसे संस्कृति और ... एक है।"

...टककार के मन में अपनी परम्परा से टूटने की पीड़ा है। आज हमारे ...प्राचीन परम्पराओं का विसर्जन हो गया है। लेखक अपनी परम्परा से ...हता है अपने सामाजिकों को जोड़ना चाहता है। वह परम्परा को आगे ...हता है, परम्परा का कभी अन्त नहीं होता। उसका कभी विसर्जन ...। यदि विसर्जन दिखाई भी देता है तो उसका आवाहन करने के लिए ... विसर्जन भी अपनी संस्कृति से जुड़ने का आवाहन ही है।

नाटककार ने स्वयं स्वीकार किया है कि "कथा विसर्जन नाटक क परम्परा से इसलिए जोड़ सका कि इस नाटक की मूल पात्र माँ अपनी जुड़ी थी। उनमें आत्मा-उन्मूलित होने का किसी प्रकार का अनाथ भाव न

अपने इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए वह नाटक के आरम्भ में हो उज्ज्वल, पावन और प्रेरक मूर्ति का निर्माण करता है।

'लखनऊ शहर, बडे अफसर की एक मांजी थी।
कृष्ण की छोटी सी मूर्ति, उसके पास थी,
जिसे ठाकुर जी कहती थी।
सारा जीवन माँ के लिए पूजा था।
सब उनका था, कुछ भी नहीं दूजा था।"

आगे की कथा माँ के इसी-सर्वजनीन जीवन की झांकी है। जिनकी और कर्म में पवित्रता है। जो 'सियाराममय सब जग जानी' समझकर ध बच्चों को भी अपने घर के ड्रांइग रूम में प्यार से खेलने देती है। जो निष्पाप और क्षमाशील हैं। जिनके लिए धर्म-कर्म दिखाने की नहीं वरन की वस्तु हैं। लेकिन जब नीलम की बढ़ती हुई महत्वाकांक्षा पुत्र के मुख देकर उन्हें चुप रहने को विवश करती है तो वह बुलबुल शाखे गुल मर गई। यही कथा का विसर्जन हो जाता है। परन्तु जैसा नाटककार कि विसर्जन और आवाहन दोनों एक है। माँ का यह विसर्जन ही उनके का अभूतपूर्व प्रभाव आशा, शोनू और प्रकाशचन्द्र पर डालता है और परम्परा से जुड़ जाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस नाटक का तरह से लेखक की सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुरूप, उपयुक्त और सार्थक है

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि डॉ. लाल के 'कथा नाटक का शीर्षक, संक्षिप्त, उपयुक्त, सार्थक और नाटक की सम्पूर्ण वस्तु को में समेटने वाला है। नाटक की प्रमुख पात्र 'माँ' मंत्रपाठ करती हुई कहती

'आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरम्।।"

लेखक की दृष्टि में आवाहन और विसर्जन में कोई अन्तर नहीं है विसर्जन है तभी आवाहन है। नाटक के अन्त में नट-नटी का यह गायन भी की उपयुक्तता की ओर ही संकेत करता है —

"कथा-विसर्जन होत है
सुनो वीर हनुमान।"

हम अपनी परम्परा से कट गये हैं। उसका विसर्जन हो गया है। सामाजिकों को उसी परम्परा से जुड़ने के लिए आवाहन करता है।

...28. "कथा विसर्जन' नाटक में चरित्र नहीं, पात्र हैं।" इस कथन ...स्पष्ट कीजिये।

...र—'कथा विसर्जन' डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा लिखित आधुनिक ...क सशक्त नाटक है। नाटककार अपने युग और परिवेश का पश्चिम ...रंगा-धुला देखकर तथा देशवासियों और कला तथा साहित्य को अपनी ...कटा देखकर असीम पीड़ा होती है अतः वह इस नाटक की रचना ...आधुनिकता द्वारा उखाड़े और बेघर किये गये भारतीय, रंगमच और ...उसकी परम्परा के विचार से जोड़ने के लिए करता है। नाटक की ...वह स्पष्ट करता हुआ कहता है—"हमारे नाटक का मूल कथा। कथा ...क का वस्तु। वस्तु में पात्र। पात्र उसी वस्तु को धारण करने वाला। ...अभिनेता दर्शकों को रस पिलाता था और दर्शक एकात्म हो पीते थे।

...रित्र और पात्र में अन्तर—नाटक के चरित्रों का निर्माण नाटककार स्वयं ...वह उन्हें जैसा रूप देना चाहें, जिस ढाँचे में ढालना चाहे ढाल लेता है ...नाटककार की उपज नहीं होते। वे वस्तु में निहित होते हैं, वस्तु को ...ते हैं, वस्तु में जीते हैं और वस्तु में ही मर जाते हैं। उनका व्यक्तित्व ...नहीं बनाता, वरन् कथा ही उनका सृजन करती है।

...था विसर्जन के पात्र—कथा विसर्जन में चरित्र नहीं, पात्र है क्योंकि वे ...की सर्जना न होकर कथा से उद्भूत है। नाटक की प्रमुख पात्र माँ ही ...को अपनी परम्परा से जोड़ पाने में सफल होती है क्योंकि वह अपने से ...अपनी परम्परा से जुड़ी है। नाटक के शेष पात्र प्रकाशचन्द्र, आशा, शोनू ...ू भी इसी परम्परा से जुड़ने का प्रयास करते हैं। नीलम का व्यक्तित्व ...धुनिक शिक्षित, भ्रमित, महत्वाकांक्षी, अहमवादी नारी का प्रतिनिधित्व ...वह भी अपने परिवेश से जुड़ी है। वह नाटककार के हाथ की कठ-...है।

...प में पात्र स्वाभाविक होते हैं—उनमें कोई कृत्रिमता या बनावट नहीं ...के चरित्र लेखक की रचना या कृति होते हैं पात्र वस्तु में जीते हैं जबकि ...टककार के हाथ की कठपुतली होते हैं।

...न 29 'कथा विसर्जन' नाटक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिये।

...र—साहित्य सृजन एक सोद्देश्य कर्म है। नाटककार लाल ने भी अपने ...निरुद्देश्य नहीं लिखा। 'कथा विसर्जन' की भूमिका में वे लिखते हैं—...मैंने नाटकों की रचना निरुद्देश्य नहीं की है। प्राचीन इतिहास हमारी ...दुर्बलता का दर्पण है। मैंने बार-बार यह दर्पण अपने देशवासियों के ...ा है ताकि हम अपने देश के अतीत को देखकर व्यक्तिगत, सामाजिक

एव राजनीतिक जीवन की उन दुर्बलताओं को दूर करें, जिन्होंने हमे
के पाश में बाँधा ।"

सामान्यतः नाटक का उद्देश्य किसी न किसी समस्या को प्रस्तुत
समाधान को खोजना होता है यह समस्या सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक
सांस्कृति या कोई अन्य हो सकती है । डॉ. लाल ने अपने नाटकों के द्वारा
सांस्कृतिक समस्याओं का हल खोजने का प्रयास किया है । आज हम
संस्कृति के रंग में इस प्रकार रंग गये हैं कि हम अपने को भूल गये हैं, अप
परा को भूल गये हैं, अपनी संस्कृति को भूल गये हैं । फलतः भूल से त्रिन्
का जो दुष्परिणाम होता है, वही हमारा भी हो रहा है । जीवन के स
में इसका प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । कभी भूले-भटके हमें इसका
भी होता है पर नाटक के पात्र प्रकाशचन्द्र की तरह हम न्यूट्रल बने रहते हैं
कर भी अनजान बने रहते हैं । दूसरों की देखादेखी अपने पैरों पर कुल्हाड़
रहते है । यह त्रिशंकु की स्थिति बड़ी दुखद है । अब वह समय आ गया है
अपने ज़ातिय सिद्धान्तों को समझे और अपना सम्बन्ध अपने पूर्वजों से

हमें अब यह तथ्य भली प्रकार से समझ लेना चाहिए कि पूर्व और
में मूलभूत अन्तर है । पूर्व कभी पश्चिम नहीं हो सकता और पश्चिम
नहीं बन सकता । पश्चिम में झूठे मोह ने हमें अपनी संस्कृति और परम्परा
उखाड़ फेंका है, कथा विसर्जन अपनी कथा का ही सुमिरन है । इसके म
लेखक ने नाटक को अपनी परम्परा से जोड़ने का प्रयास किया है । ले
नाटक मे अपने घर में बेघर हुए पात्रों को अपनी परम्परा से जोडने म
सफल हो सका क्योंकि इस नाटक की मूल पात्र 'माँ' अपनी परम्परा से जुड़
कथा विसर्जन में अपने मूल से जुड़ाव का स्मृति का सारा श्रेय इस ना
माँ को है । उन्होंने ही गुरु बनकर दिखलाया । मैंने कुछ नहीं देखा, क्योंकि
वाला समष्टि के साथ एकात्म हो चुका था ।"

संक्षेप में अपनी परम्परा और संस्कृति से जुडने का प्रयास ही इस
का प्रमुख उद्देश्य है । हमारी परम्परा का विसर्जन हो गया है । यह विस
हमें पुनः अपनी संस्कृति से जुड़ने का आह्वान करता है । नाटक की प्रमु
माँ के विसर्जन के बाद नाटक के पात्र अपनी संस्कृति से अपनी परम्परा
हैं । मैं कौन हूँ का अहसास कराना ही वस्तुतः कथा विसर्जन का प्रमुख उ
जिसे प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में नाटककार सफल रहा है ।

प्रश्न 30. नाटक म संघर्ष का क्या महत्व है ? 'कथा विसर्जन' ना
निहित संघर्ष को स्पष्ट कीजिये ।

र—संघर्ष जीवन का आधार है। बिना संघर्ष के जीवन जड़ और गति ता है। मानव जन्म से ही संघर्ष कर विकास की ओर उन्मुख होता यं ही उसके अस्तित्व की रक्षा करता है। जो संघर्ष में विफल होते में भी विफल हो जाते है।

य में नाटक का स्थान परम रम्य माना गया है। "काव्येषु नाटकं के इस कथन से यह निश्चित हो जाता है कि लोक-वृत्ति का चित्रण न और अधम मनुष्यों के क्रिया कलाप का कोई भी अंग निदर्शन ाहित्य का अंग हो सकता है। लोक प्रवृति प्रकृति की बनाई हुई है वि कल्पना से उसका निर्माण नहीं करता।

टक का ध्येय लोक प्रवृत्ति का विरोध करना नहीं है वरन् जीवन में असत् का उद्घाटन करना है। नाटककार का ध्येय असत् का चित्रण महत्व देना रहता है। डॉ. लाल के शब्दों में—"जहाँ जमकर आर्य-ाण, शूद्र धर्म और संस्कृति, दर्शन और कर्म, वेदान्त और आनन्द, श्रेय तथा व्यक्ति और समाज, नैतिकता बनाम अनैतिकता, राक्षस बनाम न और सेक्स, आचार बनाम दुराचार, सामाजिक भ्रष्टाचार और व्यक्ति सदवृत्ति पर वाद और विवाद और बहस हो सके; जहाँ भाषा के तीखे सत्य का पर्दाफाश किया; जहाँ हिन्दू धर्म की उदारता बनाम मजहबी हिन्दू-मुसलमान की एकता, नमाज और इन्सानियत, छूत-अछूत, साम्प्र-और राष्ट्रीयता, मराठे, राजपूत और हिन्दुत्व बनाम मुगल संस्कृति बनाम गाँधी, कर्त्तव्य और अधिकार, ज्ञान और शान्ति, बौद्ध धर्म बनाम संस्कृति और वर्ग भेद, पाश्चात्य बनाम भारतीय जीवन दृष्टि तथा शोषण, अछूतोद्धार, पाप-पुण्य, हिंसा-अहिंसा, सेवा और महत्व, व्यक्ति विषयों पर समुचित प्रकाश मिले। उन्हें ज्ञान भी हो और प्रकाश भी

ा विसर्जन में संघर्ष—कथा विसर्जन में संघर्ष का ध्येय यही ज्ञान और कामना है। इस नाटक की प्रमुख पात्र माँ अकेली अपनी परम्परा से उसमें सांस्कृतिक निष्ठा और लगाव है जिसकी रक्षा वह अपने प्राण रना चाहती है। अपनी संस्कृति से उखड़े उसके बेटे-बहू प्रकाशचन्द्र न्यूट्रल रहकर तथा पाश्चात्य संस्कृति की महानता का गीत गाकर हुँचाते हैं। अपने से जुड़े होने की भावना माँ में भी इतनी गहराई से न चाहकर भी उनका कुछ अनर्थ नहीं कर पाती, पर बार-बार अपने उन्हें दबाने का विफल प्रयास अवश्य करती है कभी उनकी बेटी की दुहाई देकर और कभी अपने भविष्य का वास्ता देकर। नाटक की

चरम सीमा पर वह माँ को चुप रहने को विवश कर देती है। परिणाम
विसर्जन होता है और प्रकाशचन्द्र अपने न्यूट्रल रहने की नीति का त्या
है। इतना ही नहीं वरन् वह माँ की परम्परा से जुड़ भी जाता है।
संघर्ष का अन्त और दूसरे का श्री गणेश होता है। सत् असत्य का
चिरकाल से चलता आया है, चल रहा है और भविष्य में चलता रहेग
का आरम्भ होगा और उसका विसर्जन भी और फिर हर विसर्जन नये
हन करता है।

निष्कर्ष—नाटककार लाल ने इस प्रकार संघर्ष को अपने नाटक
स्थान दिया है। यह संघर्ष आन्तरिक और बाह्य दोनों ही रूपों में स
चित्रित करने में वे सफल रहे हैं। नाटक की कथा वस्तु संघर्ष की वि
स्थाओं को पार कर माँ जी के विसर्जन के साथ ही अपनी चरम सीमा
जाती है और नाटक फिर एक नये संघर्ष के बीज वपन कर अन्त की अ
होता है। डॉ. लाल के शब्दों में—"नाटक मूलतः नाटक होते हैं जो मान
और उसके संघर्ष के दर्पण हैं।" इस दृष्टि से 'कथा विसर्जन' एक प्र
नाटक है।

प्रश्न 31. "यह पढ़ाई का बस्ता है या कुली का बोझ ?" इस
संदर्भ में आधुनिक शिक्षा पद्धति पर किये गये व्यंग्य को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—हमारी शिक्षा आरम्भ से ही पाठ्यक्रम की अधिकता से
रही है। बच्चे को अधिक से अधिक विषयों का ज्ञान देने की महत्वाकांक्षा
शास्त्री बालक की शारीरिक और मानसिक शक्ति की सीमा का भी विस
देते हैं। कक्षा एक से ही बच्चे के पाठ्यक्रम में इतनी पुस्तकें भर दी जा
उन सबका पढ़ना तो दूर उनका बोझ ढोना ही उसके लिए कठिन हो ज
हम आये दिन छोटे-छोटे बच्चों को अपने शरीर के वजन उठाने की क्षम
अधिक भारी बस्ता लाते ले जाते देखते हैं। जिनका बोझ ढोते-ढोते उस
दर्द करने लगती है और कमर झुक जाती है। इसलिए 'कथा विसर्जन'
का उक्त कथन सार्थक प्रतीत होता है।

पहले 8 + 2 + 1 + 3 की शिक्षा पद्धति में कक्षा 9 के विद्यार्थिय
'अनिवार्य और तीन ऐच्छिक विषयों की पुस्तकों का भार होता था। 1
नई शिक्षा को देखकर ऐसा लगा था कि इसमें ऐच्छिक विषयों के न
बच्चों पर पाठ्यक्रम का भार कुछ कम हो जायेगा, परन्तु ऐसा कुछ नह
अनिवार्य विषयों में पाठ्य-पुस्तकों की संख्या बढ़ा दी गई और शिक्षा
व्यवसायोन्मुखी बनाने के प्रयास में समाजोपयोगी उत्पादन कार्य और समा
[illegible] एवं शारीरिक शिक्षा नाम के [illegible] विषय पाठ्यक्रम

गये। परिणामतः पाठ्यक्रम की अधिकता का मिथ्या मोह देश के भावी के शारीरिक स्वास्थ्य को घुन की तरह धीरे-धीरे समाप्त करता जा

शिक्षा को व्यावहारिक बनाने के सारे प्रयास विफल होते दिखाई देते हैं। के पढने की बजाय गाइड या पास बुक पढ़कर अपना भविष्य बनाने का रने लगे हैं, पर वे भूल जाते हैं कि सैकिण्ड हैण्ड ज्ञान सदैव हानिकारक नाटक की पात्र मां जी के स्वर में स्वर मिलाकर वे भी यह कहते ते हैं कि 'गाइड बुक से बी. ए., बी. एस. सी. पास किया जा सकता है। शिक्षा आज जो ज्ञान हमें दे रही है वह मौलिक और स्थायी नहीं है। ता के प्रयास में हम फिल्म, टेलीविजन या पत्र-पत्रिकाओं से मिलने वाले ही वास्तविक ज्ञान समझ बैठे हैं। इसीलिए हमें अपनी बात रोज बदलने होना पड़ता है। मां जी आशा से कहती है—"सच्चाई जानना चाहती हारी टीचर यही फिल्मी पत्रिका पढ़कर और फिल्म देखकर ऐसी टीचर जिसे रोज अपनी बात बदलनी पड़ती है।" हम वस्तु स्थिति को जानने झने का प्रयास करें।

शिक्षा के सम्बन्ध में एक बात और कि आज वह नैतिकता से कहीं-कहीं, खड़ी दिखाई देती है। शोनू दोस्तों के साथ घूमने जाने के लिए दोस्त के का बहाना बनाता है। वह स्कूल से आते ही दादी मां पर कराटे की का अभ्यास करने लगता है। इस सब आचरण के पीछे कौनसी वृत्ति कार्य है। यह भी विचारणीय है।

माता-पिता, अभिभावकों से भी अपेक्षा है कि वे श्रीमती नीलम की तरह मय पढ़ाई को लेकर बच्चों के पीछे नहीं पड़े रहें वरन् बच्चों को माँ जी से अपनी परम्परा और संस्कृति का ज्ञान भी दें। अपनी संस्कृति को और उसी के अनुकूल आचरण व व्यवहार करना वास्तविक शिक्षा है। कार्य चरित्र का निर्माण करना है न कि आचरणहीनता का पाठ

प्रश्न 32. 'दादी जी, लाइफ बाहर ही है।' शोनू का यह कथन यदि आप या होता तो आप क्या उत्तर देते ?

उत्तर—पाश्चात्य सभ्यता ने हमें घर से बेघर कर दिया। इसीलिये हमें ली की बजाय पड़ौसी की थाली में घी अच्छा लगने लगा। हम जीवन में, अपने लोगों में, अपने परिवार में खोजने के बजाय बाहर खोजने ... पर ... पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पड़े बिना नहीं ...

इसीलिये शोनू जैसा दसवीं कक्षा में पढ़ने वाला बालक भी जीवन को
बाहर समझने लगा। यदि शोनू का यह कथन हमसे कहा गया होता तो
समझाने का प्रयास करते। उसे कहते कि लाइफ स्थिर नहीं गतिशील है।
अस्तित्व मन की भावना के साथ है। हम मन से जैसा सोचते है, वैसा
अनुभव करने लगते हैं। यदि हमारा लगाव घर से बाहर अधिक होगा
वहीं जीवन की रंगीनी दिखाई देगी लेकिन हम अपने मन को यदि अपने
केन्द्रित करेंगे तो हमें जीवन वहीं दिखाई देने लगेगा और घर में रहकर
प्रसन्न रहेंगे। हर बात जो दूसरे लोग कहते हैं वह सत्य नहीं होती जैसे ह
कने वाली वस्तु सोना नहीं होती। अतः व्यक्ति को अपने विवेक से काम
चाहिये और इस सम्बन्ध में अपने अनुभव को ही सत्य मानना चाहिये।

बिहारी ने भी कहा है—

समय-समय सुन्दर सबै, रूप-कुरूप न कोय।
मन की रुचि जेति जितै, तित तेती रुचि होय॥

अतः मन को घर की ओर लगाकर यदि हम उसमें जीवन ढूँढने ल
हमें जीवन की वास्तविकता वहीं देखने को मिलेगी। बाहर हमारे जितने भी
हैं वे केवल दिखावे के लिए या स्वार्थ पर आधारित होते हैं जबकि पारि
सम्बन्ध निस्वार्थ और आत्मीयतापूर्ण होते हैं।

प्रश्न 33. 'मैं, मार्डन नहीं, मनुष्य हूँ' माँ के इस कथन का क्या
है ?

उत्तर—वैसे तो मार्डन और मनुष्य में कोई अन्तर दिखाई नहीं देता
मार्डन भी मनुष्य ही होता है। लेकिन व्यवहार में हमें दोनों का अन्तर
दिखाई देता है। मार्डन व्यक्ति के सभी कार्य दूसरों को दिखाने और प्रभावित
के लिए होते हैं। वह अपनी गलती को आसानी से स्वीकार नहीं करता।
मनुष्य चालू और अधिक समझदार होता है। वह अपनी गलतियों पर अ
डालता तथा उन्हें ढकने में कुशल होता है। वह सतर्क नहीं होता इसीलिये ग
करता रहता है। अपनी गलती पर उसका ध्यान नहीं जाता पर दूसरे की
पकड़ने में वह सिद्धस्थ होता है। उसका ध्यान पहनने-ओढ़ने, खाने-पीने और
रबर पर अधिक होता है। वह भगवान की मूर्ति को केवल सजावट की मू
झता है। भक्ति, पूजा, पाठ को वह केवल फैशन समझता है और उसी के अ
आचरण भी करता है। वह दिखावे में जीता, रहता और मरता है।

इसके विपरीत मनुष्य वह है जो सादा तथा सरल जीवन जीता है।
हृदय निश्छल और पवित्र होता है। वह जैसा कहता है, वैसा ही आचरण
है। उसकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होता। वह अपनी गलतियों

है और उनमें सुधार करने का प्रयास करता है। दूसरे की गलतियों पर ध्यान कम जाता है लेकिन यदि कोई गलती उसके ध्यान में आ गई तो रे का ध्यान उस ओर दिलाने में संकोच नहीं करता। उसके मन में अपने-का भेद नहीं होता। वह दूसरों को भी अपने प्रेम का अवलम्ब देता है।

संक्षेप में माडर्न केवल दिखावे में दिखावे के लिए जीता है जबकि मनुष्य सरल जीवन जीते हुए भी दूसरों में अपने को देखता है। उसका हृदय संवेदन-भावुक और निस्कलुष होता है।

प्रश्न 34. 'पाप को पूजा से जोड़ दिया।' कथन का आशय स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—पाप और पूजा परस्पर विरोधी कार्य हैं। जो पापी है वह पुजारी हो सकता क्योंकि जो पुजारी है वह पाप कर ही नहीं सकता। पाप-छल है, है, दिखावा है, धोखा है। जब व्यक्ति अपनी वास्तविकता को भूलकर अधिक ाह करने लगता है तो वह पाप की ओर प्रवृत्त होता है। झूठ बोलता है, बाजी करता है। पापी की आत्मा कभी शुद्ध रहती ही नहीं है। इस नाटक लम का जीवन पाप का प्रतीक है। वह दिखावे में विश्वास रखती है। यहाँ की ठाकुर जी की प्रतिमा को भी सजावट की वस्तु समझती है। उसका सारा न सच्चाई से कोसों दूर है। मि. सेठी को दिखाने के लिए वह अपने बच्चों अंग्रेजी किताब पढ़ने और अंग्रेजी गाने, गाने को कहती है। वह माँ को अपनी पूर्ति का साधन बनाना चाहती है और जैसे ही उसका स्वार्थ पूरा हो जाये उन्हें हरिद्वार या देहरादून भिजवा देने की बात कहती है।

पापी व्यक्ति के मन में समानता का भाव आता ही नहीं। इसलिये नीलम पति से कहती है—'देखो डियर, सेठी साहब के सामने नाथू को भाई नाथू-मत कहना। नाथू हमारा नौकर है। नाथू यानी नाथू। लेकिन यही नीलम ो सास द्वारा पति के चरण छूने की बात सुनकर समानता की दुहाई देने ी है।

ापी मनुष्य अच्छे या बुरे साधन को नहीं देखता। उसके सामने केवल उसका लक्ष्य है और वह किसी भी तरह पूरा होना चाहिये। इसके विपरीत पुजारी वह है में श्रद्धा है, विश्वास है, पवित्रता है। भला बिना श्रद्धा के भी पूजा हो सकती लेकिन जब पापी मनुष्य पूजा की बात करे, धर्म और भगवान की बात करे, ाप उसे क्या कहना चाहेंगे ? नीलम का व्यवहार ऐसा ही है। अतः लेखक सके आचरण को देखते हुए ही यह कहा है कि—पाप को पूजा से जोड़ दिया।

प्रश्न 35. "बेटा प्रश्न करता है, यह तो बड़े सौभाग्य की बात है।" माँजी के कथन का आशय स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—प्रश्न करना मानवीय आचरण का चिन्ह है। प्रश्न वह करता है,

जिसमें कुछ जानने की जिज्ञासा होती है। बालकों के लिए यह दुनिया बड़ी
होती है। उन्हें उसका ज्ञान नहीं। अतः वे निरन्तर प्रश्न करते हैं। उनके
जानना चाहते हैं। यदि बेटा प्रश्न करें तो यह पिता के लिए प्रसन्नता क
होना चाहिए। लेकिन आज के अधिकांश माता-पिता श्रीमती नीलम और
प्रकाश चन्द्र जैसे हैं। वे बच्चों की जिज्ञासा का सही समाधान करने क
उन्हें डांट देते हैं। इससे बच्चा निरुत्साहित हो जाता है और उसका वि
जाता है।

प्रश्न करने की प्रवृति मानव को सत्य के द्वार तक ले जाती
वैज्ञानिक के मानस में कोई प्रश्न न उठे तो वह नया आविष्कार नहीं कर
हम जानते हैं कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है और 'जिन खो
पाइया, गहरे पानी पेट।' जो पानी में डूबने से डरता है, वह सागर तल की
को कभी नहीं नाप सकता। प्रश्न करना मानवता की निशानी है और उ
संस्कृति को बनाये रखना है। अतः यदि हम बच्चों के जिज्ञासाओं के सह
ढूँढने में उनकी सहायता कर सकें तो यह उनके लिए और हमारे लिए
लिए सौभाग्य की बात है।

प्रश्न 36. जो बहुत से लोग करते हैं, क्या वही ठीक होता है
लीजिये कि माँ का यह प्रश्न आशा से न होकर आप से है, तब आप माँ के
का क्या अर्थ ग्रहण करते ?

उत्तर—उचित और अनुचित के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कु
कठिन होता है। किसी समय विशेष पर देश, काल व परिस्थिति के अनु
बात सत्य होती है। तो किसी अन्य समय व अवसर पर वही असत्य है
झूठ बोलना पाप है लेकिन उससे किसी के जीवन की रक्षा होती हो तो
उस असत्य को सत्य से भी महान् सत्य कहा गया है। हिंसा या हत्या क
है। लेकिन युद्ध में उसी को सबसे बड़ा धर्म माना गया है। अतः बहुत से
कहते हैं या करते हैं। वह हर समय उचित होता हो, यह कहना गलत
क्योंकि कुछ कामों को गलत समझ कर भी करते हैं, क्योंकि वे ऐसा करने को
होते हैं। मानव को परमात्मा ने समझ इसलिए दी है कि वह समय औ
स्थिति के अनुसार उचित-अनुचित का निर्णय ले सकें। बहुत से लोगों द्वा
गया कोई बात सत्य हो सकती है, लेकिन वही शाश्वत सत्य है, ऐसा हम
को तैयार नहीं है।

प्रश्न 37. जो हमारा नहीं है, वह हमारा कैसे हो गया ? हम
गया. सोनू का यह प्रश्न यदि आपसे होता तो आप उसका क्या उत्तर दे

उत्तर—वर्तमान समय अन्तर्राष्ट्रीयता का है। आज एक चीज क

...सी स्थान विशेष पर ही नहीं पड़ता। वरन् उसका प्रभाव विश्वव्यापी ... सभ्यताओं का आदान-प्रदान होता रहता है। व्यक्ति बाहर घूमता है ...र लौट आता है। वह कहीं भी रहता है, घर से जुड़ा रहता है। जो घर ...या, उसका अस्तित्व कटी पतंग के समान बन जाता है। जो अपने मूल से ...इधर-उधर हवा के थपेड़े खाती हुई अन्त में भूमि पर जा गिरती है आज ...स्थिति भी बहुत कुछ ऐसी ही है। हम अपनी सभ्यता व संस्कृति से कट ... उसे भुला चुके हैं। इसलिए जो हमारा नहीं है, जो पराया है, उसे हमने ... रखा है। ऐसा अभिनय करते-करते हम पराये को ही अपना समझने ... हम अपने देश, जाति, सभ्यता, संस्कृति और परम्परा को भूलकर ... सभ्यता व संस्कृति को अपना मान बैठे हैं। हमारा कहीं गया नहीं है, ... भूल गये हैं और जो पराया था, वह उन्हें अपना लेने के कारण हमें ...ा लगता है।

प्रश्न 38. "जबसे लिखा हुआ सच मान लिया गया, तभी से मनुष्य का ...कुछ नहीं रहा।" क्या आप लेखक के उक्त कथन से सहमत हैं? सतर्क ...ीजिये।

उत्तर—मनुष्य विवेकमान प्राणी है। वह हर विचार को अपने अनुभव ...जू पर तोल कर अपनाता है। कानों सुनी और आंखों देखी बात में चार ...का फर्क होता है। हमेशा जैसा हम कानों से सुनते हैं, वह सत्य नहीं ...आंखों देखी बात भी कभी-कभी असत्य सिद्ध हो जाती है। फिर कागज ...े हुए को आंख मीचकर कैसे स्वीकार किया जा सकता है। कबीर ...मा अनुभव पर बल देते हुए वेदज्ञ पंडितों को फटकारते हुए कहा

"तू कहता कागज की लेखी, मैं कहता आँखन की देखी।"

वस्तुत: आंखों देखा सत्य होता है और पुस्तकों में लिखा हुआ कई ...सत्य होता है, लेकिन जबसे मनुष्य ने दूसरे के लिखे हुए को सत्य मान ...तब से ही उसका विकास अवरुद्ध हो गया। प्रगति सिर धुनने लगी और ...ा अपना कुछ नहीं रहा। व्यक्ति किसी की बात को सहज में ही गले नहीं ...ता। जब वह स्वयं हीरे तराजू तोलकर अपने मुख से कोई बात निकालता ...सरे की बात को अर्थात् लिखे हुए को बिना हीरे तराजू में रखे वह कैसे ...न सकता है। वास्तव में दूसरों का अन्धानुकरण ही मनुष्य के पतन का ...ारण है।

प्रश्न 39. हर काम का आनन्द लेना यही, भगवान है।" मांजी के इस ...ा आशय स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—कार्य करना मानव की प्रकृति है। कार्य करना ही उस बड़ा धर्म है। यही उसके हाथ में है। यही उसके वश में है। कार्य ही है, कार्य ही पूजा है, जो व्यक्ति कार्य में आनन्द लेता है, उसे सदैव सि है। सफलता उसके चरण चूमती है और वह प्रसन्न रहता हुआ जी करता है। इसके विपरीत वे मनुष्य जो काम को भार समझते हैं। जि करने में कोई रुचि नहीं होती, वे जल्दी थक जाते हैं, ऊब जाते हैं औ ही वृद्ध हो जाते हैं। अतः व्यक्ति यदि प्रसन्नता पूर्वक जीना चाहता है भी कार्य करें उसमें रस लेना चाहिए। रस ही जीवन का सार है, भगवान है। इसलिये भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में आनन्दपूर्वक कर्म संदेश दिया है।

---

3. एकांकी रत्नाकार

(डॉ. श्रीधर सिंह)

1. दीपदान (डॉ. रामकुमार वर्मा)

प्रश्न 40. 'यहाँ का त्यौहार आत्म बलिदान है। यहाँ का गीत की वन्दना का गीत है। उसे सुनो और समझो।" उक्त कथन किसने, क्यों कहा ?

उत्तर—उक्त कथन डॉ. रामकुमार के प्रसिद्ध एकांकी की प्रमुख माँ पन्ना ने सोना से कहे थे। सोना बनवीर के संकेत पर राजकुमार को दीपदान महोत्सव के बहाने ले जाना चाहती थी। पन्ना बनवीर की भली-भाँति समझ रही थी। उसे इस उत्सव के पीछे किसी षड़यन्त्र क रही थी। अतः उसने उक्त कथन सोना को समझाते हुए कहा।

पन्ना ने कहा कि चितौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है, वह जौह की है। यहाँ की स्त्रियों ने वासना के पंक में विकसित होना नहीं सी वे देश के लिए अपना आत्मोत्सर्ग करती रही हैं। आत्म बलिदान ही सबसे बड़ा पर्व, त्यौहार और उत्सव है। यहाँ जो गीत गाये जाते हैं वे या धार्मिक गीत नहीं होते। यहाँ के गीत मातृभूमि की वन्दना से पूरि पन्ना ने सोना को चितौड़ की परम्परा की स्मृति कराते हुए उसे आ प्रेरणा दी।

न 41. चन्दन को कुँवर उदयसिंह के स्थान पर सुलाने के बाद पन्ना
ो विचार उठे उन्हें अपने शब्दों में लिखिये।

तर—चन्दन को कुँवर उदयसिंह की शैय्या पर सुलाने के बाद पन्ना
ड़प उठा। उसके हृदय में भावों का तूफान उमड़ने लगा। वह सोचने
राणे के पुत्र की रक्षा के लिए आज उसने अपने स्वयं के पुत्र को अपने
कडे चन्दन को मृत्यु का ग्रास बनने के लिए सुला दिया। मैं भी कैसी माँ
ोरी गाकर अपने ही पुत्र को मृत्यु की चिरनिद्रा में सुलाने की चेष्टा
मैं माँ नहीं सर्पिणी हूँ। सर्पिणी जो अपने ही बच्चों को खा जाती है।
ोले-भाले मासूम बच्चे के साथ कपट करने जा रही हूँ। मैंने अपने हाथों
से अन्तिम बार भोजन कराया और न ही उसको माला गूँथ सकी।
कल पन्ना तुझे तेरी हृदयहीनता के लिए धिक्कारेगा। पुनः उसके मन
चार भी आया होगा कि कर्तव्य की कठिन बलिवेदी पर बहुत कुछ
करना पड़ता है। हम राजपूत नारियाँ हँसते-हँसते अपने पतियों को युद्ध
भूमि में भेज देती है। स्वयं जौहर करती हैं। अपने को अग्नि के
र देती हैं। कर्त्तव्य के महान् पथ पर आगे बढ़ने के लिए वह ममता को
की जंजीर नहीं बनने देगी, भले ही इतिहास भविष्य में इसके लिए कुछ
लिखे। ऐसा दृढ़ निश्चय करके उसने अपने को कर्त्तव्य पूर्ति हेतु तैयार
ा।

श्न 42. 'दीपदान' एकांकी से हमें क्या संदेश प्राप्त होता है?

त्तर—'दीपदान' ऐतिहासिक एकांकी है। इतिहास की घटनाऐं अनुकूल
पाकर प्रायः अपने को दोहराती रहती हैं। इस एकांकी में सत्ता लोलुप
ारा षड्यन्त्र रचकर सत्ता हथियाने के कुत्सित कर्म का उल्लेख कर कर्त्तव्य
न्ना द्वारा अपने पुत्र का बलिदान देकर उसे विफल करने का उल्लेख है।
ांकी हमें मानवता की उन्नति के लिए त्यागमय और बलिदानी जीवन
प्रेरणा देती है। सत्ता लोलुप और मानवता विरोधी हर प्रयास को हमें
व विफल बनाने का प्रयास करना चाहिये मातृभूमि के लिए यदि हमें अपना
भी देना पड़े तो उसे निस्संकोच देने के लिए तत्पर रहना चाहिये।

श्न 43. 'दीपदान' एकांकी के शीर्षक के औचित्य पर प्रकाश डालिये।

त्तर—किसी भी एकांकी का शीर्षक प्रमुख पात्र, घटना, वस्तु या भाव
संक्षिप्त और सार्थक होना चाहिए। इस दृष्टि से डॉ. रामकुमार वर्मा
'दीपदान' का शीर्षक संक्षिप्त, आकर्षक, रोचक, सार्थक और उपयुक्त
ी की सम्पूर्ण कथा वस्तु दीपदान पर केन्द्रित है। बनवीर अपने लक्ष्य की
ए दीपदान महोत्सव का आयोजन करता है। नगर की सभी स्त्रियाँ

तुलमा भवानी के सामने नाचती-गाती और दीपदान करती हैं। बनवीर भी तलवार से कुँवर उदयसिंह के भ्रम में चन्दन की हत्या कर उसे अपना 'दी कहता है। यथा—

"यही है मेरे मार्ग का कटक। आज मेरे नगर में स्त्रियों ने दीपदान है। मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज ! लो इस को। यह मेरा दीपदान।"

इसी प्रकार पन्ना धाय भी अपने पुत्र को चन्दन के जीवन र धारा में तैराकर दीपदान करती है। वह कहती है—"आज मैंने भी दीपदान है। अपने जीवन का दीप कैसे रक्त की धारा पर तैरा दिया है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इस एकांकी के सभी पात्र अपने-अप से दीपदान करते हैं। इस शीर्षक की प्रतीकात्मकता भी स्पष्ट है— पन्न अपने कुलदीपक चन्दन के जीवन का दान। अतः 'दीपदान' शीर्षक सार्थक युक्त, संक्षिप्त और प्रतीकात्मक है। इससे अच्छा इस एकांकी का कोई शीर्षक हो ही नहीं सकता।

2. दस हजार (उदयशंकर भट्ट)

प्रश्न 44. 'दस हजार' एकाँकी "सामाजिक मनोवैज्ञानिक व्यंग्य कथ आधारित है।" इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिये।

अथवा

'दस हजार' एकांकी में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—'दस हजार श्री उदयशंकर भट्ट की एक व्यग्य प्रधान रचना इस एकांकी में एक ओर तो धनिक वर्ग की अर्थ प्रधान मानसिकता का चि हुआ है तो दूसरी ओर कानूनी व्यवस्था के खोखलेपन और बढ़ती हुई अराज पर तीखा व्यंग्य है।

सामाजिकता पर व्यंग्य—हमारे समाज में कानून-व्यवस्था धीरे-धीरे ड़ती जा रही है। आये दिन अपराध होते हैं। पुलिस अपराधियों को जानत है फिर भी वह अपने कर्त्तव्य का विधिवत् पालन नहीं करती है। सेठ विश राम के पुत्र सुन्दरलाल को पठान उड़ाकर ले जाते हैं और वे फिरौती में दस ह रुपये की मांग करते हैं। यह रुपया न देने पर वे सुन्दर लाल की हत्या कर यह धमकी भी वे देते हैं। अपहरण और हत्या अपराध है। पुलिस का दायि कि वह अपराधों की रोकथाम करे, परन्तु सम्भवतः ऐसा हो नहीं रहा इसी अपराध बढ रहे हैं। देखिये—

विशाखाराम—"दस हजार ! न कम न थोड़ा। अरे और कोई इन्तज हो सके है मुनीम जी ? पुलिस को खबर क्यों न कर दो।"

..ीम–'पुलिस भी क्या करेगी सेठजी पुलिस भी तो डरे है और उसे
..न नहीं है, पर वह करे तब तो।"

..लस की निष्क्रियता पर यह करारा व्यंग्य है। पुलिस अपराधियों को
..ो अनजान बनी रहती है और अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करती।

..नोवैज्ञानिक आधार–धनी वर्ग की मानसिकता आज इस कद्र धन पर
.. गई है कि उसके पीछे आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध भी गौण हो गये हैं।
..म को अपने पुत्र को छुड़वाने की चिन्ता नहीं है, उसे चिन्ता है अपना
..त करने इब्राहिम से सूद लेने और सरकारी बाण्ड खरीदने की। इसके
..अपनी पत्नी, पुत्री और अन्य हितैषियों की हितैषी बातों पर भी ध्यान
..। वह दान-धर्म सबको गौण समझता है। अपने खाने-पीने और रहने पर
..म से कम खर्च करना चाहता है। एकांकीकार ने धनिक वर्ग की इस धन-
..और कंजूसी पर करारा व्यंग्य किया है।

..ष्कर्ष—संक्षेप में 'दस हजार' एक व्यंग्य प्रधान एकांकी है जिसमें सामा-
..नोवैज्ञानिक आधार पर कानून की बिगड़ती हुई हालत, बढ़ते हुए अपराध
.. निष्क्रियता तथा धनी वर्ग की अर्थ सम्बन्धी मानसिकता जिसके कारण
..क सम्बन्ध भी गौण हो गये हैं, पर तीखा व्यंग्य किया गया है। यह
.. कुछ सोचने को प्रेरित करता है।

..श्न 45. "रंग निर्देश और संकलन-त्रय के सम्यक निर्वाह ने 'दस-हजार'
..ो सफल बनाया है।" उक्त कथन के आधार पर 'दस हजार' एकांकी की
.. पर प्रकाश डालिये।

..त्तर– 'दस हजार' श्री उदय शंकर भट्ट द्वारा लिखित एक सफल एकांकी
..एकांकी में केवल एक ही दृश्य है और घटना क्रम का विस्तार भी संक्षिप्त
.. ने रंगमंच संकेत और पात्र संकेत भी दिये हैं। पात्रों की संख्या भी
..है। इसमें केवल पांच पात्र हैं—विशाखाराम, उसका बेटा सुन्दरलाल,
.., सुन्दरलाल की माँ और उसकी बहिन राजी। इसमें वर्णित घटनाओं
..तापूर्वक रंगमंच पर दिखाया जा सकता है। इसके अभिनय में कोई
..नहीं है। अतः अभिनेयता की दृष्टि से यह एक सफल एकांकी है।

..कलनत्रय में स्थान, काल व पात्रों की एकता का विधान होता है। इस
.. एक ही स्थान पर सारी घटनाओं को घटित होने अथवा सूचित होते
..या है, दृश्य भी एक ही है, काल भी एक-दो दिन से सम्बन्धित है और
..संख्या भी सीमित है। इस प्रकार इस एकांकी में संकलन-त्रय का प्रभाव-
.. से समन्वय हो सका है।

..ष्कर्ष—अतः कहा जा सकता है कि 'दस हजार' एकांकी मंच व्यवस्था

और अभिनेयता को ध्यान में रखकर लिखा गया है। उसमें संकलन की एकता सम्यक रूप से निर्वाह हुआ है। अतः मंचीय आधार पर यह एक स एकांकी है।

3. ऊसर (भुवनेश्वर प्रसाद)

प्रश्न 46. "जिन्दगी अगर इस तरह लटकों और फारमूलों में बांधी सकती तो आज तक कब की खत्म हो जाती।" ऊसर एकांकी के गृहस्वामी के कथन का आशय स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—जिन्दगी क्या है? इस विषय में अन्तिम रूप से कुछ कह कठिन है। कुछ लोग जिन्दगी को केवल दिखावे की वस्तु मानते हैं और अपने शो-पीस बनाकर रख देते हैं। कुछ जिन्दगी को किसी मकसद को पूरा करने साधन मानते हैं और उसे पूरा करने के प्रयास में अपना जीवन बिता देते है समाज में कभी समाजवादी और कभी पूंजीवादी दर्शन को मान्यता है, क आध्यात्मिकता बढ़ती है और कभी भौतिकता। क्या जीवन को किन्हीं निश्चि फार्मूलों में बांधा जा सकता है?

हमारे विचार से जिन्दगी एक साधना है जो एक नहीं वरन अनेक कर्त्त व दायित्वों का निर्वाह करने हेतु मिली है। ये दायित्व या कर्त्तव्य युगानुरूप ब लते रहते हैं। यदि जिन्दगी का केवल एक ही उद्देश्य होता तो वह कभी का पू हो चुका होता और तब जीवन का कोई अर्थ शेष न रह जाता। पर ऐसा है नहीं जीवन एक ही सिद्धान्त या किसी एक ही फार्मूले पर आधारित नहीं है। व समय और परिस्थिति सापेक्ष है। इसीलिए उसका आज भी अस्तित्व है औ भविष्य में भी बना रहेगा।

प्रश्न 47. "आने वाली जेनरेशन, चाहे वह बिल्लियों की हो या सर्पों की हमसे अच्छी होगी।" उक्त कथन में निहित व्यंग्य को 'ऊसर' एकांकी के सन्दर्भ स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—'ऊसर' श्री भुवनेश्वर प्रसाद की एक व्यंग्य रचना है। इस मध्यमवर्गीय परिवार और उसकी मानसिक चेतना को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तु किया गया है। आज मध्यम वर्ग दिखाने में जीता है। उसके पास अपना कह को कुछ नहीं - वह केवल नकल करता है। यदि प्रसंगवश वह गांधीवाद, समाज वाद, समानतावाद या धर्म निरपेक्षता आदि की चर्चा करता है तो केवल फैश के लिए। आज के शिक्षित वर्ग की जैसे मानसिक उर्वरता समाप्त हो चली है वह पूरी तरह से बंजर और ऊसर हो गया है।

मध्यमवर्गीय इस मानसिकता के सन्दर्भ में उक्त कथन को लिया जा सकत है जिसमें प्रमुख पात्र गृहस्वामी मानवों की भावी पीढ़ी का वर्णन करते-कर

ओर सर्पों का तुलना करने लग जाता है। भला भावी पीढ़ी से बिल्लियों के अच्छे होने की चर्चा से क्या लाभ? क्या मानव की तुलना क्षुद्र पशु पतंग आदि से की जा सकती है? पर ट्यूटर पर अपना 'इन्टीलेक्यूअल जमाने के विचार से गृह-स्वामी बिना सोचे-विचारे कुछ न कुछ बोलते। इस एकांकी के सभी पात्र जो वर्तमान मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व कर इसी रोग से पीड़ित दृष्टिगोचर होते हैं। अतः कहा जा सकता है कि एकांकी अपने नाम के अनुकूल मध्यमवर्गीय मानसिकता पर तीखा है।

प्रश्न 48. 'ऊसर' एकांकी के शीर्षक की उपयुक्तता पर अपने विचार व्यक्त ।

उत्तर—'ऊसर' श्री भुवनेश्वर प्रसाद द्वारा लिखित प्रतीकात्मक एकांकी समें मध्यमवर्गीय खोखली मानसिकता पर तीखा व्यंग्य किया गया है। शीर्षक संक्षिप्त, विषयानुकूल प्रतीक और उपयुक्त है।

'ऊसर' उस भूमि को कहते है, जो बंजर होती है और जहाँ कुछ भी उत्पन्न होता। लेखक ने इस एकांकी में मध्यवर्गीय व्यक्तियों की खोखली मानसिकता, क दिवालियापन, औपचारिकता, दिखावा, टीपन, नकल की भावना और लेपन को उजागर किया है। विचार या तर्क की कसौटी पर आज यदि मध्यम का मूल्यांकन करें तो हमें वहाँ कुछ विशेष नहीं मिलेगा। वह बंजर भूमि मान खोखला और अनुर्वर है।

संक्षेप में 'ऊसर' एक प्रतीकात्मक एकांकी है। इसका शीर्षक, संक्षिप्त, एवं वस्तु के अनुकूल और उपयुक्त है।

4. बलहीन (लक्ष्मीनारायण मिश्र)

प्रश्न 49. "हमारे नेता शरीर को स्थूल कर रहे हैं और लेखक आत्मा। उन्हें चरबी का रोग है और इन्हें क्षय का।" उक्त पंक्तियों में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—उपर्युक्त पंक्तियों में लेखक श्री लक्ष्मीनारायण ने आधुनिक युग के और कवियों को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है। नेता जन-सेवक और रक्षक होते हैं। जनता के हित की रक्षा में उनका दिन का चैन और रात की चली जाती है, पर आजकल सब उल्टा हो रहा है। नेता लोग दिन और रात की नींद सोते हैं और माल पर हाथ साफ करते हैं। इसीलिए उनका शरीर होने की बजाय स्थूल होता जा रहा है इसके विपरीत कवियों को मानसिक से स्वस्थ्य होना चाहिए। स्वस्थ्य मस्तिष्क का आवास एक स्वस्थ्य शरीर में होता है, पर हमारे कविगण वास्तविक लोक को छोड़कर कल्पना विलासी हो

गये है। उनका मस्तिष्क ठीक नहीं है। अतः उनका शरीर भी बिगड़ता जा है। उनकी आत्मा तो अवश्य स्थूल हो गई है, पर शरीर कमजोर बन गया है

भाव यह कि लोकहित में जिन्हें सूक्ष्म शरीर का होना चाहिये था, वे आज स्वहित में स्थूल शरीर के होते जा रहे हैं तथा जिन कवियों की सू आत्मा और स्थूल शरीर का होना चाहिये था, वे आज शरीर से सूक्ष्म और आ से स्थूल बन रहे है। सभी कुछ विपरीत हो रहा है।

प्रश्न 50. "स्त्री का दुःख स्त्री कभी नहीं समझती। पर जो पुरुष न समझता, निश्चय ही वह मन से स्त्री है।" उक्त पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिये

उत्तर— कहा जाता है कि नारी न मोहे नारी के रूप। अर्थात् स्त्री, स्त्री सौन्दर्य पर मोहित नहीं होती। उसी प्रकार स्त्री भी स्त्री के रोग को नहीं समझ क्योंकि उस रोग को स्वाभाविक समझ कर उसका ध्यान उस ओर जाता ही नहीं परन्तु स्त्री के लिए स्त्री का जो रोग स्वाभाविक है, वही रोग पुरुष की नजर अस्वाभाविक होता है। अतः पुरुष स्त्री के रोग को शीघ्र समझ लेता है। परन्त जो पुरुष स्त्री के रोग को नहीं समझता वह पुरुष होकर भी स्त्री ही बना रहत है।

नारी स्वाभावतः पुरुष के प्रेम की आकांक्षा करती है। नारी दूसरी नारी के इस स्वभाव जन्य रोग को समझकर भी अनजान बनी रहती है। वह स्वयं कुछ कर पाने में असमर्थ होती है लेकिन जो पुरुष किसी नारी को अपने प्रति समर्पित जानकर भी उसकी कामना की पूर्ति नहीं करता, वह पुरुष होकर भी पुरुष नहीं रहता। उसमें तथा अन्य साधारण स्त्री में कोई भेद नहीं होता।

प्रश्न 51. "पुरुष का सत्य स्त्री होती है, बिना उसके वह पूरा नहीं होता।" उक्त पंक्ति का भावार्थ समझाइये।

उत्तर—स्त्री और पुरुष परिवार रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं। एक के अभाव में गाड़ी नहीं चलती। जिस प्रकार पक्षी को विस्तृत गगन में उड़ान भरने के लिए दोनों पंखो का होना अपेक्षित है, उसी प्रकार गृहस्थी की गाड़ी स्त्री-पुरुष की समझ व सहयोग से चलती है। पुरुष को ईश्वर ने बल और स्त्री को सौन्दर्य दिया है। बल को सदैव सौन्दर्य की और सौन्दर्य को बल का स्वाभाविक आकांक्षा होती है। इस स्वाभाविक कामना की पूर्ति के लिए समाज ने स्त्री और पुरुष के जोडे को मान्यता दी है जो परस्पर पति-पत्नी कहलाते हैं। पुरुष का सत्य स्त्री होती है क्योंकि वह अपने सौन्दर्य के द्वारा उसकी कामना पूर्ति करती है। इसी प्रकार स्त्री का बल पुरुष है। दोनों एक-दूसरे के अभाव में अपूर्ण और असत्य रहते हैं। हमारे यहाँ इसीलिए अर्द्धनारीश्वर की कल्पना की गई है।

प्रश्न 52. "अतृप्ति से मुक्त होना ही मोक्ष है।"

उक्त पंक्ति के भावार्थ को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर मनुष्य के मन में जब तक अतृप्ति रहती है, तब तक वह मनुष्य रहता है। उसका सारा प्रयास, दिनचर्या और परिश्रम तृप्ति की प्राप्ति ही होता है। मनुष्य तृप्ति की आकांक्षा में भोग का दास बन जाता है। प्ति की प्राप्ति के लिए सन्तोष का होना परम आवश्यक होता है। सन्तोष निवारण से ही हो सकता है। महात्मा कबीर ने कहा है—

'रूखी-सूखी खाय के, ठण्डा पानी पी।
देख पराई चोपड़ी, क्यों ललचावे जी॥

अन्यत्र उन्होंने कहा है :

"चाह गई, चिन्ता मिटी, मनवा वे परवाह।
जिन को कछु न चाहिए, सोही शहंशाह॥"

अतः तृप्ति को पाने के लिए पहले लोभ पर विजय पाना आवश्यक है। का मोह दूर होने पर व्यक्ति को सन्तोष मिलता है। सन्तोष से तृप्ति होती से मोक्ष का साधन माना गया है। अतः यह कहना उचित है कि अतृप्ति से होना ही मोक्ष है।

5. जोंक उपेन्द्रनाथ अश्क)

प्रश्न 53. "खाने का ठीक समय कौन-सा है? सम्पन्न का जब मन हो वि न्न को जब मिले।" इस सम्बन्ध में अपने विचार लिखिये।

उत्तर—श्री उपेन्द्रनाथ अश्क का उक्त कथन हमारे समाज की यथार्थ र उपस्थित करता है। सम्पन्न व्यक्तियों के पास इतना धन है कि उनको पीने की कोई कमी या अभाव नहीं होता। उनको केवल संकेत भर करने की श्यकता होती है। उनकी वांछित वस्तु उनके सामने आ जाती है इसके विपरीत को खाद्यान्न का अभाव होता है। अतः उसकी इच्छा या अनिच्छा का ही नहीं उठता। अतः उक्त कथन हमारे विचार से सही है कि खाने का क्त समय सम्पन्न की इच्छा पर निर्भर करता है और निर्धन के लिए भोजन उपयुक्त समय वह होता है जब उसे भोजन उपलब्ध हो जाता है।

प्रश्न 54. 'जोंक' एकांकी के शीर्षक की उपयुक्तता पर एक संक्षिप्त णी लिखिये।

उत्तर—'जोंक' जल का जीव है, जो प्राणी शरीर से चिपकने और उसका पीने का अभ्यस्त होता है। एक बार चिपकने के बाद यह सरलता से नहीं रता और उसे उतारने के लिए अनेक उपाय काम में लेने पड़ते हैं। 'जोंक' ांकी में जोंक शब्द का प्रयोग इसी प्राणी के स्वभाव से समता रखने वाले एक मान बनवारी के लिए किया गया है, जो घर में आकर जोंक की भाँति चिपक-

कर जाने का नाम ही नहीं लेता। इस प्रकार इस एकांकी का शीर्षक संक्षिप्त प्रतीकात्मक और उपयुक्त है।

अतिथि बनवारी भोलानाथ के घर की विपन्न स्थिति और अन्य परिस्थितियों से परिचित होने के बाद भी एक बार आने के बाद जाने का नाम नहीं लेता। भोलानाथ और उसकी पत्नी कमला भुक्त भोगी हैं। अतः उसे आया देखकर ही वे उसे भगाने के उपाय सोचने लगते हैं। भोलानाथ अपने मित्र प्रो. आनन्द से कहता है—"यह फिर आ गया आनन्द! तुम मेरी सहायता करो परमात्मा के लिए।" पांव तले से धरती निकलना, मरता क्या न करता, मोल ली हुई दांत घता बताना, खबर लेना, यह जोंक है आदि कथनों का प्रयोग भोलानाथ और उसकी पत्नी कमला की मानसिक विवशता के द्योतक है। मेजबान उन्हें भगाने के अनेक उपाय करते हैं किन्तु वे सब निष्फल हो जाते है। अन्त में मेजबान अपनी पत्नी कमला और प्रो. आनन्द को साथ लेकर गुरदासपुर जाने की बात कहता है तो बनवारी भी वहाँ जाने को तैयार हो जाता है। उसका आचरण जोंक के समान ही है। अतः प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक संक्षिप्त, सार्थक, उपयुक्त एवं प्रतीकात्मक है।

6. यह मेरी जन्मभूमि है (हरिकृष्ण प्रेमी)

प्रश्न 55. 'लेकिन जिन्हें अपने मुल्क की गैरत नहीं, वे क्या इन्सान है' उक्त पंक्ति के आधार पर देश प्रेम का महत्व समझाइये।

उत्तर—देश प्रेम के सम्बन्ध में राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त की निम्नांकित पंक्तियाँ कितनी सार्थक है—

'जो भरा नहीं है भावो से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥'

स्वदेश के प्रति हर मानव के हृदय में सहज आत्मीयता होती है। वह भूमि उसकी मातृभूमि, जन्मभूमि होती है जिसे वह स्वर्ग से भी अधिक गरिमा मण्डित समझता है। लेकिन कुछ व्यक्ति ऐसे स्वार्थी भी होते है जिनके लिए प्रेम भी एक षड़यन्त्र हैं। वह स्वार्थ पूर्ति का साधन है। स्वार्थ पूर्ति के लिए वे घर परिवार क्या देश को भी बेच देते हैं। ऐसे ही स्वार्थी लोगों में रायसाहब, सीताराम और गुलाम मुहम्मद भी है जो केवल कुछ तमगे पाने, कुछ खिताबें और बेईमानो से कमाई हुई जायदादों की रक्षा के लिए वतन से गद्दारी करते है। ऐसे ही खुदगर्ज और देशद्रोही व्यक्तियों के लिए मिस टॉम्स ने कहा कि वे इंसान नहीं है। सचमुच जिस मनुष्य को स्वदेश पर गर्व न हो और जिसके लिए वह अपने सारे स्वार्थों और यहाँ तक कि प्राणों को न्योछावर करने के लिए तैयार न हो, वह इंसान नहीं है। ऐसे मनुष्य को इन्सान कहना इन्सानियत का अपमान करना है।

प्रश्न 56 "कैसी खतरनाक साजिश है।" यह साजिश क्या थी ? यदि न्यायाधीश हों तो ऐसी साजिश करने वालों को क्या दण्ड देंगे ? उत्तर ना कर लिखिए।

उत्तर—अंग्रेजी सरकार ने महात्मा गाँधी को गिरफ्तार कर लिया था। ेस उनकी गिरफ्तारी के विरोध में जुलूस निकालने का निश्चय करती है। ज कलक्टर उसे न निकलने देने की आज्ञा देता है। सारी सरकारी मशीनरी कत में आ जाती है। ऐसे में कुछ देशद्रोही भी सरकार का साथ देते हैं। इनमें य साहब, सीताराम और गुलाम मुहम्मद प्रमुख हैं। राय साहब हिन्दुओं के नेता । वे कर्नल होम्स से कहते हैं—"ऐसी चाल चलेंगे कि कांग्रेसी जिन्दगी भर लूस निकालने का नाम न लें। सच बात तो यह है, कर्नल साहब, कि मैं तो दिल हिन्दुस्तान में अंग्रेजी हुकूमत चाहता हूँ। जो लोग अंग्रेजी हुकूमत से छुटकारा हते हैं वे खुदकुशी करने पर आमदा हैं।"

गुलाम मुहम्मद मुसलमानों के नेता हैं। उनका कहना है—"अमीर मुसलमानों से कोई भी काँग्रेस का साथ नहीं देगा। दे भी तो मैंने सोच रखा है कि इस ार काँग्रेस को ऐसा सबक पढ़ाया जाय कि, खुदा कसम लाख कोशिश करने पर ी फिर कभी मुसलमान उसके साथ न आये।" यह देश के प्रति, देशवासियों के ति एक गहरी और खतरनाक साजिश थी।

यदि मैं न्यायाधीश के पद पर आसीन हूं तो देश के प्रति गद्दारी करने वाले लोगों को कठोर से कठोर सजा देता। ऐसे लोगों के लिए आजीवन कारावास, काला पानी और फांसी की सजा भी कम होती। देश के प्रति षड़यन्त्र रचने वाले षडयन्त्रकारियों की सजा है उन्हें तिल-तिल करके तड़फा-तड़फा कर सार्वजनिक रूप से मारने की सजा देना, जिससे दूसरे गद्दारों को भी सबक सीखने का अवसर मिलता।

प्रश्न 57. 'गाँधी के नाम में ही कुछ जादू है।" कर्नल होम्स के इस कथन का क्या आशय था ?

उत्तर—महात्मा गाँधी भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के नेता थे। उन्होंने कांग्रेस के राजनीतक आन्दोलन को जन आन्दोलन का रूप दे दिया था। जनता उनके संकेत पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार थी। वह उनके इसारे पर जेल जाने, लाठी खाने और यहां तक कि प्राण देने को भी तत्पर थी। गांधीजी की एक आवाज पर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। शराब की दुकानों पर धरना दिया गया। सरकारी कर्मचारियों ने अपनी नौकरी से स्तीफा दे दिया। भारतीय जनता गांधी को सच्चे हृदय से प्यार करती थी। सच ही, गांधी के नाम में ही जादू है। आज तक विश्व

इतिहास में ऐसा जनप्रिय नेता न तो कोई दूसरा हुआ है और न भविष्य की संभावना है। जिस नेता को देश की जनता इतना चाहती हो अब और अधिक समय तक पराधीन नहीं रखा जा सकेगा। उसे स्वतन्त्रत ही होगी। कर्नल होम्स के उक्त कथन का यही आशय है।

प्रश्न 58. 'यह मेरी जन्मभूमि है' एकांकी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजि

उत्तर–प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य भारतीय स्वतन्त्रता प्रेमियों के त्याग व बलिदान से परिपूर्ण जीवन का चित्रण करना है। व समय में देश को ऐसे ही समर्पित व्यक्तियों की आवश्यकता है, कि इस एकांकी में मिस होम्स, मनोहर एवं वली मुहम्मद हैं और कलक्टर साह ही इन्साफ पसन्द अफसरों की आवश्यकता है जो व्यर्थ में किसी का खून ब आतंक नहीं फैलाना चाहते हैं। वास्तव में यह कहना सर्वथा सत्य है कि प्रेमी का यह एकांकी जीवन्त संदेश का संवाहक है। इससे राष्ट्र प्रेम, त्याग बलिदान की प्रेरणा मिलती है और यही इस एकांकी का प्रमुख उद्देश्य है।

7. मैं भी मानव हूं (विष्णु प्रभाकर)

प्रश्न 59. 'समझ में नहीं आता उनको भगाने से लाभ क्या है ? वे ह अच्छे ही हैं। शवों पर आक्रमण करते हैं। हम तो जीवित व्यक्तियों को बनाते है।'' उक्त कथन किसने किससे कहा और क्यों ?

उत्तर—उक्त कथन 'मैं भी मानव हूं' एकांकी के प्रहरियों के वार्तालाप अंश है। प्रहरी कलिंग युद्ध में घायल सैनिकों पर से गिद्धों को हटा रहे हैं। अ कार्य करते-करते अचानक उन्हें यह विचार होता है कि वे जो कर रहे हैं- उचित है या अनुचित। सैनिक युद्ध में जीवित मनुष्यों पर प्रहार करते हैं, उनका वध कर देते हैं। उन्हें ध्यान आता है कि जिन गिद्धों को वे भगा रहे जीवित मनुष्यों पर वार नहीं करते वरन् शवों पर वार करते हैं। उन्हें अपने हिंस हेय कार्य के प्रति आत्मग्लानि होती है और वे अपने से गिद्धों को श्रेष्ठ सम लगते हैं।

प्रश्न 60. 'किसी को पराजित करने की भावना ही सबसे बड़ी दुर्बल है।'' उक्त कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

उत्तर—मनुष्य सदैव समान व्यवहार का आकांक्षी रहा है परन्तु जब बल और प्रभुता मिल जाती है तो वही दूसरे को पराधीन बनाने की काम करने लग जाता है। दूसरे व्यक्ति को पराजित करने की भावना मनुष्य की स बड़ी दुर्बलता है। शक्ति का उपयोग तभी उचित है जब वह दूसरे के रक्षण के हो लेकिन जब मनुष्य उसकी सहायता से दूसरे के मान पर आघात करता है [illegible] । अपने शत्रु को मार

सके अस्तित्व को सदा के लिए समाप्त कर देना मानव की कमजोरी है। एक
ीय कार्य है। हम भी लेखक के उक्त कथन से सहमत हैं।

प्रश्न 61. "सम्राटों के शासन में आदेशों का पालन करना ही मनुष्य की
त है।" उक्त कथन के भावार्थ को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—सम्राट सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न होते थे। राजतन्त्र में व्यक्तिगत
त्रता का कोई महत्व नहीं होता था। प्रजा को आदेश मिलता था और उसकी
व्याख्या अथवा टीका टिप्पणी के उन्हें वह मानना होता था। पहले प्रहरियों
आदेश हुआ कि वे घायल सैनिकों पर मडरा रहे गिद्धों को भगायें। फिर आदेश
कि कलिंग कुमार को सूरज की पहली किरण के साथ मार दिया जाये और
आदेश हुआ कि कलिंग कुमार को ससम्मान मुक्त कर दिया जावे। इस प्रकार
ट कब क्या आदेश दें, यह अनिश्चित है। आदेश उचित हो या अनुचित उसकी
ख्या का अधिकार प्रजा को नहीं होता। अतः सम्राटो के शासन में उनके
शों की पालना करना ही मनुष्य की नियति अथवा उसका भाग्य है।

इसके विपरीत प्रजातन्त्र के वर्तमान युग में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को महत्व
ा जाता है। प्रजा राज्य के सर्वोच्च अधिकारी के आदेश के अनुचित होने पर
के विरुद्ध न्यायालय में आवाज उठा सकती है। राजतन्त्र और प्रजातंन्त्र में
त अन्तर है। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के महत्त्व के कारण ही प्रजातन्त्र श्रेष्ठ है।

प्रश्न 62. 'मैं भी मानव हूँ' एकांकी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—'मैं भी मानव हूँ' श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित एक सफल
ऐतिहासिक एकांकी है। इसका एक मात्र उद्देश्य कलिंग युद्ध के बाद अशोक के हृदय
परिवर्तन को दिखलाना है। इसके लिए लेखक ने मनोवैज्ञानिक पृष्ठ भूमि का
सहारा लेते हुए एक नया कारण प्रस्तुत किया है। अशोक अपनी प्रचण्ड वीरता,
सा, अहंकार, स्वाभिमान के लिए प्रसिद्ध था लेकिन कलिंग कुमार की निर्भीकता
सम्मुख उसे अपना सारा वैभव साम्राज्य सब बड़ा हेय लगता है। उसके हृदय
घृणा, द्वेष, अहकार, हिंसा की भावनाओं के स्थान पर प्रेम, करुणा, दया,
हिंसा आदि भावों की विजय दिखलाने में यह एकांकी सफल रहा है। लेखक ने
शोक के हृदय परिवर्तन को बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। इस प्रकार
द्देश्य की दृष्टि से यह एकांकी सफल है।

8. बसन्त ऋतु का नाटक (लक्ष्मीनारायण लाल)

प्रश्न 63. "ब्याह हमारे यहाँ महज कर्मकाण्ड है—एक परम्परा का पालन।
ह जीवन अनुभूति जीवन संगीत नहीं है" 'बसन्त ऋतु का नाटक' शीर्षक, एकांकी
युवक के उक्त कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

उत्तर—विवाह एक सामाजिक संस्था है। यह दो हृदयों का आत्मि है। विवाह को हमारे समाज में जन्म-जन्मांतर का सम्बन्ध मानते हैं। हिन् में विवाह एक सौदा या समझौता नहीं है। लेकिन सभ्यता के विकास के स हमारी विवाह सम्बन्धी मान्यताओं में काफी अन्तर आ गया है। अब लड़की का विवाह युवक के पौरुष, बल, यश अथवा गुणों के आधार पर न उसकी नौकरी, पद, जायदाद, भौतिक सुख-सुविधा के साधन को देखकर है। उसमें पहले की सी पवित्रता दृष्टिगोचर नहीं होती। ऐसा लगता है फेरों का यह जाल केवल परम्परा पालन के लिए है—एक कर्मकाण्ड है स्वाभाविकता और आत्मियता का अभाव है। विवाह दो आत्माओं का मिलन है। लेकिन आधुनिक विवाहों में जीवन की वह अनुभूति व मधुरत गोचर नहीं होती। युवक के कथन में सचाई के साथ-साथ तीखा व्यंग्य भी

प्रश्न 64. अभिनेयता की दृष्टि से 'बसन्त ऋतु का आगमन' की समी कीजिये।

उत्तर—बसन्त ऋतु का नाटक श्री लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा लिखि सामाजिक व्यंग्य प्रधान एकांकी है। इसकी कथा वस्तु अत्यन्त संक्षिप्त है। प संख्या भी सीमित हैं। इसमें कुल चार पात्र है। सम्पूर्ण एकांकी एक ही और एक ही स्थान पर होता हुआ दिखाया गया है। एकांकीकार ने इसमें निर्देश व रंग संकेत दिये हैं। पात्रों की वेशभूषा, कार्य व्यापार तथा अ संकेत दिये है वे सब नाटक को रंगमंच की दृष्टि से सफल सिद्ध करते हैं काल व वातावरण की दृष्टि से घटना के संगठन व प्रभाव की दृष्टि से संकलन-त्रय की एकता है। अतः इस नाटक को रंगमंच पर सरलतापूर्वक किया जा सकता है।

मुद्रक : शर्मा प्रिन्टर्स, जयपुर-302004

साधना पास बुक्स

सीनियर हायर सैकण्डरी—विशेष हिन्दी

भाग—ब

निबन्धात्मक प्रश्न

निर्देश—इस भाग में तीनों पुस्तकों और हिन्दी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित ऐसे प्रश्न होंगे जिनका उत्तर दो से चार पृष्ठों में लिखना होगा।

यहाँ आपके अभ्यास के लिए परीक्षा की दृष्टि से पाठ्यक्रम के सभी भागों पर अपेक्षित महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को दिया जा रहा है।

प्राचीन काव्य कलाधर

1. कबीर

प्रश्न 1. "कबीर कवि ही नहीं, समाज सुधारक भी थे।" इस मत की विवेचना कीजिये। (Imp.)

अथवा

धर्म तथा समाज सुधार की भावना कबीर के काव्य की प्रमुख विशेषता है। इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिये।

अथवा

कबीर के सुधारक रूप पर प्रकाश डालिये।

अथवा

"कबीर पहले सन्त थे, बाद में कवि।" इस उक्ति की तर्क सम्मत समीक्षा कीजिये।

उत्तर—महापुरुष अपने समय की देन होते है। महात्मा कबीर भी के तिमिराच्छन्न वातावरण में अपना ज्ञानदीप लेकर अवतरित होते है जिससे भटकी जनता उचित पथ का सम्बल पाती है। इसमें तो कोई सन्देह कबीर कवि थे और वे अपनी जीवनानुभूतियों को सरल भाषा में व्यक्त करने हुए। विवाद इस बात का है कि वे पहले सन्त थे या कवि। कबीर को कहा जाता है और सच्चे सन्त का कार्य समाज को सहज मार्ग का निर्देश उसे आडम्बरों, मिथ्याचारों और झूठे-व्यवहारों से निकालकर सही पथ का शंन करना है। कबीर ने भी अपने समाज का नेतृत्व किया था। उसे मानवता का पाठ पढ़ाकर नये और स्वस्थ जीवन से संयुक्त करने का उपक्रम था। उनकी आडम्बर विहीन जीवन के प्रति निष्ठा थी। इसीलिये वे सन्त इसीलिए उन्हें सुधारक कहा जाता है।

कबीर जिस युग में जी रहे थे, जिस समाज में रह रहे थे उसे भांति समझते और पहचानते थे। इसीलिए उनका यह प्रयास रहा कि स सही दिशा मिले और इन्सान-इन्सान के बीच की दूरी समाप्त हो जाय। का यह परिष्कार सन्त का बाना पहनने से ही सम्भव था और ऐसा ही उन्हों भी। जिस पारिवारिक वातावरण में पलकर वे बड़े हुए थे, ज्ञान दाया थ भी उन्हें सन्त बनने की प्रेरणा दी। अतः कबीर सन्त पहले थे और कवि ब

काव्य रचना के पीछे कबीर को कवि होने का गौरव या यश प्राप्त की कामना नहीं थी वे अपने परिवेश को स्वच्छ, निर्मल, स्वस्थ और नैति बनाना चाहते थे। अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण वे सुधारक बने। दूसरे कह सकते हैं कि सुधारक न बनना चाहते हुए भी राम दीवाने कबीर को का पद प्राप्त हो जाता है। श्री प्रकाश चन्द्र गुप्त ने उचित ही कहा है "ज दुःख दर्द और उसकी वेदना से फूटकर ही उनके काव्य की सरस्वती बही थ

सुधारक कबीर—कबीर मूलतः सुधारक थे। यदि वे केवल कवि तो सामाजिक व्यवस्था पर इतने प्रहार न करते और तब उनके काव्य में इ का सामञ्जस्य भी देखने को न मिलता। कबीर में खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति वतः थी। चाहे जाति प्रथा का संदर्भ हो या ऊँच-नीच की भावना हो, च पूजा हो या अन्य साधना हो सभी के प्रति उनका दृष्टिकोण खण्डनात्मक पोथियों में लिखे धर्म को न तो वे धर्म मानते थे और न मुक्ति का साध श्री हजारी लाल शर्मा के शब्दों में - "उनके खण्डन-मण्डन का मूल उद्देश्य था। वे थोथे और हास्यास्पद धार्मिक तथा सामाजिक बन्धनों से ऊपर उठ दृढ़ आत्मविश्वास का भाव पैदा करना चाहते थे।"

इसीलिये कबीर स्थान-स्थान पर बड़े निस्संकोचपूर्वक यह कह जाते

"सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ि के मैली कीनी चदरिया।
दास कबीरा जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया॥"

'सुर, नर, मुनि' सबको अपनी चारित्रिक श्रेष्ठता की उद्घोषणा से पीछे ...जाने वाला यह आत्म-विश्वास धन्य है।

सामाजिक क्षेत्र में सुधारवाद—कबीर का सारा प्रयत्न लोक कल्याण की ...ना से प्रेरित था। उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में फैले मिथ्याचारों की धज्जियाँ ... दी। इस आलोचना में उन्होंने हिन्दू, मुसलमान, हठयोगी और नाथ पंथियों ...ी को नहीं बख्शा। उनके समय में कबीरदास के अतिरिक्त समस्त समाज कुपथ-...ी हो रहा था—

"एक न भूला दोई भूला, भूला सब संसारा।
एक न भूला दास कबीरा, जाके राम अधारा॥"

कबीर मानवीय कर्म की श्रेष्ठता के पक्षधर थे। ब्राह्मणों ने उस समय जन्म ...आधार पर, चाहे आचरण कितना ही निम्न क्यों न हो, अपनी श्रेष्ठता प्रति-...दित कर रखी थी। इसीलिये उन्होंने ब्राह्मणों को उनकी श्रेष्ठता सिद्ध करने के ...ए ललकारा—

"जो तू बामन बामनी जाया।
आन बाट ह्वै क्यों नहीं आया॥"

कबीर कर्म और वाणी की एकता में विश्वास करते थे। उनका कहना था ... जो उपदेश या कथन, कथनकर्त्ता स्वयं आचरण में नहीं लाता, वह विश्वास ...ग्य नहीं होता। अतः उस पर विशेष ध्यान नहीं देना चाहिये।

"कहता तो बहुता मिला, गहता मिला न कोय।
सो कहता बहि जान दे, जो नहीं गहता होय॥"

कबीर संतोषी प्रवृत्ति के सन्त थे। संचय पर उनका विश्वास नहीं था। ...नका मानना था कि हर व्यक्ति को अपनी आवश्यकता के अनुरूप ही ग्रहण करना ...ाहिये—

"उदर समाता अन्न लै, तनहि समाता चीर।
अधिकहिं संग्रह ना करै, ताका नाम फ़कीर॥"

कबीर का मानना था कि व्यक्ति को कभी किसी के सामने हाथ नहीं पसा-...ना चाहिये। मांगने से व्यक्ति की इज्जत, आदर और संकोच सब नष्ट हो जाता ...—

आब गई, आदर गया, नैनन गया सनेह।
ये तीनों तब ही गये, जबहि कहा कछु देय ॥

कबीर दया, धर्म और आत्मभाव को ऊँचा स्थान देते थे। उनक
था कि मानव सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है—

दया राखि धर्म को पालै, जग सो रहे उदासी।
अपना सा जिव सबको जानै, ताहि मिलै अविनासी ॥

कबीर का जांति-पांति में विश्वास नहीं था। वे मानव की सम
पक्षधर थे—

'जाति-पाति पूछे नहीं कोई,
हरी को भजै सो हरी का होई।'

अथवा

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान ॥

जातीय विभेद दूर करने के अतिरिक्त कबीर ने समाज की आचरण
को दूर किया। तत्कालीन समाज के लिए यह बहुत बड़ा उपकार था।
युग में वासना अपना भयंकर रूप धारण करती जा रही थी। कबीर
डटकर सामना करना पड़ा था। उसके लिए उन्हें स्त्रियों की निन्दा कर
ब्रह्मचर्य का उपदेश देना पड़ा। उन्होंने समाज में सात्विक प्रवृत्तियों के प्र
लिए बड़ा तप किया था।

धार्मिक क्षेत्र में सुधारवाद—कबीर के समय में धार्मिक दृष्टि से अ
अन्धविश्वास, मिथ्याचार और आडम्बरों का प्रचलन था। कबीर ने अ
के माध्यम से इन पर तीखा प्रहार किया और जन-साधारण को सच्चे धर्म
दिया। उन्होंने बताया कि मानव मात्र की सेवा और सभी प्राणियों में
रखना ही सच्चा धर्म है—

ना हरि रीझै जप तप कीन्हें, ना काया के जारे।
ना हरि रीझै धोती छाँडें; ना पांचों के मारे ॥
दया राख धर्म को पालै, जग सो रहे उदासी।
अपना-सा जिव सबको जानै, ताहि मिलै अविनासी ॥

कबीर ने हठयोग की पद्धति, नाथ पंथी आडम्बर और मिथ्य
कभी बर्दास्त नहीं किया। उन्होंने उनमें व्याप्त बुराइयों की सदैव निन्दा

मन ना रँगाये, रंगाये जोगी कपड़ा।
आसन मारि मन्दिर में बैठे
ब्रह्म-छाँड़ि पूजन लागे पथरा ॥

कनवा फड़ाय जटवा बढ़ौले
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होई गैले बकरा।
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले
काम जराय जोगी होय गैले हिजरा॥
मथवा मुँड़ाय जोगी कपड़ा रंगौले,
गीता बाँच के होय गैले लबरा॥
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो।
जम दरवजवा बांधल जैबे पकड़ा॥

कबीर जप, माला, छापा, तिलक, व्रत, पूजा, पाठ, तीर्थ-यात्रा, मूर्ति-पूजा, आदि के घोर विरोधी थे। वे जानते थे कि ये आडम्बर सच्चे धर्म के अंग । इन मिथ्याचारों को त्यागने से ही संसार धर्म के वास्तविक रूप को समझ । इसीलिये उन्होंने कहा—

"माला तिलक लगाइ के, भक्ति न आई हाथ।
दाढ़ी मूँछ मुँडाय के, चले दुनी के साथ॥"

कबीर दुनिया के साथ चलने या देखा-देखी आचरण के विरोधी थे। उन्होंने ा कि जब तक हम सत्य का साक्षात्कार नहीं करेंगे, हमें ज्ञान की प्राप्ति होगी। पण्डितों को फटकारते हुए उन्होंने कहा—

पण्डितवाद बदै सो झूँठा।
राम कहै दुनिया गति पावै, खांड कहे मुख मीठा॥

उन्होंने जहाँ हिन्दुओं को मूर्ति-पूजा के लिए फटकारा वहीं मुसलमानों की अजान की गलत रीति की निन्दा की—

कांकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, बहिरा हुआ खुदाय॥

कबीर हिंसा के विरोधी थे। वे मांसाहार को अनुचित मानते थे। इसलिये ोंने कहा—

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल।
जे नर बकरी खात हैं, तिनको कौन हवाल॥

दोनों मतों के दोषों को प्रकट करने में कबीर ने निष्पक्षता से काम लिया । वे किसी धर्म के न प्रचारक थे न पक्षधर। वे तो धर्म को आडम्बर के कीचड़ निकालकर उसे कमल के समान उज्ज्वल बनाना चाहते थे। मुसलमानों और दुओं के बीच वैमनस्य, भेद-भाव की खाई को पाटने का स्तुत्य प्रयास किया था, र ने।

निष्कर्ष – इस प्रकार हम देखते हैं कि कबीर ने समाज व धर्म के वि क्षेत्रों में फैले अतिचार, अन्ध-विश्वास, पाखण्ड और आडम्बर को दूर कर समा व्यवस्था स्थापित की। डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत ने उचित ही कहा है—

"उन्होंने देश में, धर्म में, समाज में, दर्शन में, साधना में सभी क्षेत्रों क्रान्ति की जो धारा बहाई थी, उनसे निश्चय ही उन क्षेत्रों के कालुष्य बह गये थे

"वास्तव में कबीर ने मध्यकाल में अपने इन अमृतोपम वचनों से अज्ञान कार में भटकती जनता का बड़ा उपकार किया। इस कलि-मल-हरन पावन व नावली से वह मनुष्य भी कुछ प्रकाश रेखाएँ प्राप्त कर सकता है जो आज की वैज्ञानिक सभ्यता में विपन्न है।"

प्रश्न 2. "कबीर की वाणी का कला या अभिव्यक्ति पक्ष भक्तिकाल तुलसी व सूर जैसे कवियों के समक्ष तो नहीं ठहरता, पर उसमें जो कुछ भी है सीधा हृदय से प्रस्फुटित है तथा पाठक के हृदय को प्रभावित करता है।" कथन की समीक्षा करते हुए कबीर के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालिये।

अथवा

कबीर के पठित काव्य के आधार पर कबीर-काव्य के भाव-पक्ष और क पक्ष के सौष्ठव की समीक्षा कीजिये।

उत्तर – कबीर हिन्दी साहित्य की सन्त काव्य परम्परा के प्रतिनिधि कवि समाज सुधारक, क्रान्तिकारी पुरुष और ज्ञानी थे। तुलसी की भाँति लोक-मंग की उच्च भावना से प्रेरित होकर उन्होंने अपनी आत्मानुभूतियों को एक सच सरल सहृदय कवि की भाँति अभिव्यक्ति दी है। उनकी वाणी में व्यक्त मधुर भा नायें सहृदय को प्रभावित किये बिना नहीं रहती। यह ठीक है कि उन्होने न तो कविता के लिए कविता की, और न कविता करना उनका लक्ष्य था। इसलि उनकी छन्द योजना और अलंकार विधान आदि सभी कुछ अप्रयत्नज और स्वाभ विक है। वे काव्य रूढ़ियों के न तो जानकार ही थे और न कायल ही। उन्ह तो काव्य के माध्यम से अपने हृदय में उमड़ रही भावनाओं को ही अभिव्यक्ति है। उनकी वाणी का कला या अभिव्यक्ति पक्ष भले ही तुलसी और सूर जैसे कवि के समक्ष नहीं ठहर सके, पर वह सीधा हृदय से प्रस्फुटित है और पाठक के हृ को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। कबीर का सम्पूर्ण काव्य ही उनके सह जीवन की तरह सहज की सहज अभिव्यक्ति है। कबीर लाग-लपेट और बाह्याच के विरोधी थे। वे सामाजिक प्रतिष्ठा के न भूखे थे और न अभिलाषी। वे चा थे कि समाज को उसकी वास्तविकता से अवगत कराया जाये जिससे वह अप कमियों को जानकर उनसे मुक्त हो सके। खरी और सच्ची बात सहज वाणी

के कारण पाठक के हृदय को बाँधती है; उसे प्रभावित करती है। किसी ससे बड़ी सफलता और क्या हो सकती है ? कबीर का भाव-पक्ष और क पक्ष सहज होकर भी सबल है और अपने पाठकों को प्रभावित करने क्षमता । इस दृष्टि से हम 'प्राचीन काव्य कलाधर' के सम्पादक श्री हजारीलाल मत से पूरी तरह सहमत हैं।

कबीर का काव्य सौन्दर्य—काव्य के दो पक्ष होते हैं—एक अनुभूति पक्ष रा अभिव्यक्ति पक्ष। अनुभूति पक्ष को भाव पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष को भी कहा जाता है। यहां हम कबीर काव्य के सौन्दर्य का मूल्यांकन इन्हीं क्षों के आधार पर करेंगे।

भाव पक्ष—कबीर साहित्य के गम्भीर अध्ययन से हमारे सामने उनके प स्पष्ट रूप से उभर कर आते हैं। वे रूप हैं—1. खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति और समाज सुधार की भावना और 3. आत्मानु त। पहली भावना के उन्होंने धर्म और समाज में विद्यमान पाखण्डों तथा आडम्बरों का खुलकर किया। समाज में फैली कुरीतियों और बाह्याचारों पर प्रहार किया तथा ठेकेदारों की पोल खोलकर उन्हें नंगा कर दिया। हिन्दू और मुसलमान, ी और नाथपंथी कोई भी उनके व्यंग्य बाण से नहीं बचा। उन्होंने अपनी के वे तीखे प्रहार किये कि उनकी चोट से वे बुरी तरह तिलमिला गये। पण्डितों को फटकारते हुए कहा—

पंडित बाद बदै सो झूठा।
राम के कहे जगत गति पावै, खाँड कहे मुख मीठा।

उन्होंने बताया कि ईश्वर न मन्दिर में है न मसजिद में, वह तो सर्वान्तर- और घट-घटवासी है, पर अज्ञान के कारण तू उसे देख नहीं पा रहा है—

घर-घर दीपक बरै, लखै नहिं अन्ध है।

दुनियादारी में फंसकर सभी अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं, और जो ँजी उनके पास है उसे भी नष्ट कर रहे हैं—

दीन गंवायो संग दुनी दुनी न चाली साथ।
पांव कुल्हाडी मारिया मूरख अपने हाथ।

. धर्म और समाज सुधार की भावना उनके काव्य की दूसरी प्रमुख विशेषता उनके खण्डन-मण्डन का मूल उद्देश्य ही समाज सुधार था। इस रूप में उन्होंने कुछ कहा वह खण्डन-मण्डन की भावना से ओत-प्रोत होने के कारण नीरस; और कर्कश भाषा में है। उसमें साहित्यिक सौन्दर्य का अभाव है। उन्होंने का ढाई अक्षर पढ़कर ही पांडित्य प्राप्त किया था। एक कवि के लिए प्रतिभा,

शिक्षा और अभ्यास की आवश्यकता होती है। उनके पास प्रतिभा तो थी, पर दोनों गुणों का अभाव था। अतः कबीर काव्य में खण्डन-मण्डन या समाज की प्रवृत्ति में बुद्धि-तत्व तो भरपूर रहा परन्तु उसमें कल्पना या रागात्मक का अभाव ही अधिक रहा।

आत्मानुभूति का चित्रण कबीर की वाणी का तीसरा दिव्य पक्ष है। प्रेम और रहस्य का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। कवि की सरल तल्ली भी यहीं दिखाई देती है। हमारे विचार से उनकी कवित्व प्रतिभा और अनु की तरल गहनता भी यहीं प्रस्फुटित हुई है। यही कारण है कि इस प्रका प्रसंग निरुपण में कबीर की साखियों तथा पदों में मीराँ की सी तन्मयता, सू की सी सरलता और विधापति का सा सौदर्य है। कबीर के पास अनुभूति का था, समर्पण जनित विश्वास था और विरहिणी आत्मा की प्रतीक्षा, आकुलता मिलनोत्कंठा थी। अतः इस प्रकार के प्रसंगों से कबीर का काव्य रागात्मक हो है। ऐसे स्थलों पर उसमें कल्पना का चमत्कार, भावजनित संवेदना का गौरव अनुभूतिगत ईमानदारी मिलती है। कुछ उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो स है—

जा मरने से जग डरै, मेरे मन आनन्द ।
कब मरिहौं कब पाइहौं, पूरन परमानन्द ॥
'परमातम गुरु निकट विराजै,
जाग-जाग मन मेरे ।
धाय के प्रीतम चरनन लागै,
साई खड़ा सिर तेरे।
जुगन-जुगन तोहि सोवत बीता,
अजहुँ न जाग सबेरे ॥"

रस सौन्दर्य—रस को काव्य की आत्मा या उसका प्राण तत्व कहा जाता कबीर काव्य का वर्ण्य विषय ही कुछ इस प्रकार का है कि उसमें सभी रसों स्थिति को खोजना सम्भव नहीं है फिर भी उसमें श्रृंगार, शान्त, अद्भुत रसों योजना स्वाभाविक रुप से हुई है।

(1) श्रृंगार रस—कबीर के काव्य का श्रृंगार सांसारिक रति से आत्मा-परमात्मा के संयोग-वियोग, मिलन-बिछोह, आह्लाद और विषाद श्रृंगार है। आत्मा-परमात्मा के संयोग को दुलहिन-दूल्हा के भांवरों के रूप बाँधते हुए कबीर ने लिखा है—

दुलहिन गावहुँ मंगलाचार ।
हमारे घर आये राजा राम भरतार ।

संयोग शृंगार की अपेक्षा कबीर के काव्य में वियोग शृंगार अधिक मार्मिक है। प्रिय के विरह में विरहिणी आत्मा के अन्तर की टीस, तड़पन, मिल-ा की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। निम्नांकित उदाहरण देखिये—

साईं बिन दरद करेजे होय।
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदिया, कासे कहूं दुःख होय।
आधी रतियाँ पिछले पहरवा, साईं बिना तरस रही सोय।
कहत कबीर सुनो भाई प्यारे, साईं मिले सुख होय॥

भक्ति भावना—कबीर के भाव पक्ष में भक्ति भावमयी उक्तियों का भी महत्व है। उनकी भक्ति में प्रेम और समर्पण का गहरा रंग है। उसमें मधु-और तन्मयता है। उदाहरण के लिए निम्नांकित पद को देखिये, जिसमें ने भक्तिमार्ग को ही प्रत्यक्ष प्रकट कर दिया है—

भक्ति का मारग झीना रे।
नाहिं अचाय नहिं चाहना, चरनन लो लीना रे।
साधन के रस धार में, रहे निस दिन झीना रे।
राम में स्रुत ऐसे बसे, जैसे जल मीना रे।
साँई सेवन में देत सिर, कुछ बिलम न कीना रे।
कहैं कबीर मत भक्ति का, परगट कर दीना रे॥

ज्ञानानुभूति—कबीर काव्य में ज्ञानानुभूति के सरस चित्र देखने को मिलते ज्ञान की आंधी आने पर भ्रम की टाटी स्वतः ही उड़ जाती है। मोह-माया और ा का बलींडा टूट जाता है तथा कुबुद्धि जनित सभी अवरोध समाप्त हो जाते जिस प्रकार सूर्योदय होते पर अन्धकार नहीं रहता, वैसे ही ज्ञान रूपी सूर्य के होने पर मोह-माया जनित अन्धकार स्वतः ही छंट जाता है—

सन्तों भाई आई ज्ञान की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उडांगी, माया रहै न बांधी रे॥
दुचिते की दोउ थूनीं गिरानी, मोह बलींड़ा टूटा।
त्रिस्ना छानि परि घर ऊपर, कुबुद्धि का भांडा फूटा॥

संक्षेप में कबीर काव्य में भाव पक्ष का विस्तृत और व्यापक चित्रण हुआ उनके काव्य में व्यक्त भाव या विचार आज भी हमारा पथ आलोकित करने क्षमता रखते हैं। यही कारण है कि चार-सौ वर्ष बीत जाने के बाद भी कबीर व्य का वही महत्व है, जो कबीर के युग में था।

कला पक्ष—कला पक्ष के अन्तर्गत भाषा, शैली, अलंकार प्रतीक और ं का विवेचन किया जाता है। इन सभी उपकरणों से मिलकर कला पक्ष का र्माण होता है।

1. भाषा शैली—कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी कहा जाता है। उ
व्रज, अवधी, राजस्थानी, पूर्वी हिन्दी, अरबी, फारसी आदि सभी भाषाओं
आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है। एक घुमक्कड़ और सन्त कवि के लि
यह स्वाभाविक भी था। वे जनता के कवि थे, उनका सम्बन्ध किसी एक क्षेत्र
स्थान विशेष से नहीं था। सन्त-समागम में पूरे देश की भाषाएं किसी न कि
रूप में व्यवहार में आती होंगी। यही कारण है कि कबीर की भाषा में अ
भाषाओं के शब्द स्वाभाविक रूप से स्थान पा सके हैं। भाषा पर कबीर
असाधारण अधिकार था। वे भाषा के तानाशाह थे और अपनी मर्जी के मुताबि
वे जैसा चाहते उसका वैसा प्रयोग करते थे। तद्भव शब्दों का प्रयोग ही कबीर
भाषा में अपेक्षाकृत अधिक हुआ है। उनकी भाषा पर कुछ आलोचक अपरिष्कृ
या खिचड़ी होने का आरोप लगाते हैं, यह उचित नहीं है। वस्तुतः कबीर की भा
किसी भी समर्थ और महाकवि की भाषा का मुकाबला कर सकती है। इसलि
उन्हें भाषा का तानाशाह कहना अनुचित नहीं है।

2. अलंकार योजना–अलंकार काव्य के शोभाकारक धर्म है। स्वाभाविक रू
से प्रयुक्त अलंकारों से काव्य की शोभा में चार चांद लग जाते हैं। कबीर का संपू
काव्य ही सहज की अभिव्यक्ति है। उनके काव्य में तीनों ही प्रकार के अलंकार
शब्दालकार, अर्थालंकार और उभयालंकार का सुन्दर और प्रभावशाली स्वरू
देखने को मिलता है, यद्यपि अधिकता सादृश्यमूलक अथवा अर्थालंकारों की ही है

सांगरूपक—कबीर का प्रिय अलंकार है। उनके काव्य में सांगरूपक
अनेक सुन्दर उदाहरण यत्र-तत्र देखने को मिलते हैं। यथा—

(i) झीनी झीनी बीनी चदरिया।
काहै कै ताना काहे कै भरनी कौन तार से बीनी चदरिया।

(ii) संतो भाई आइ ग्यान की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ांणी, माया रहै न बांधी रे।
दुचिते की दोइ थूनीं गिरानी, मोह बलीड़ा टूटा।
तिना छानि परि घर ऊपरी, कुबुद्धि का भांडा फूटा॥

(iii) गुरु धोबी सिष कापड़ा, साबुन सिरजन हार।
सुरति सिला पर धोइये, निकसे ज्योति अपार॥

निम्नलिखित दोहे में **यमक** का प्रयोग कितना स्वाभाविक और सुन्दर है
देखिये—

उठा बगूला प्रेम का, तिनका उड़ा अकास।
तिनका तिनके से मिला, तिनका तिनके पास॥

अन्योक्ति और पुनरुक्ति प्रकाश का उदाहरण देखिये—

कबीरा सीप समुद्र की, रटै पियास-पियास ।
और बूँद को ना गहै, स्वाति बूँद की आस ॥

उपमा अलंकार—कथनी मीठी खांड सी, करनी विष की लाय ।
कथनी तजै करनी करै विष से अमृत होय ॥

रूपक अलंकार—ज्ञान-दीप परकास करि, भीतर भवन जराय ।
तहां सुमिर सतनाम को, सहज समाधि लगाय ॥

दृष्टान्त अलंकार-पंडित बाद बदै सो झूठा ।
राम के कहे जगत गति पावै, खांड कहे मुख मीठा ॥
पावक कहे पांव जो दाहै, जल कहे तृखा बुझाई ।
भोजन कहे भूख जो भाजै, तो दुनियां तरि जाई ॥

इस प्रकार कबीर काव्य से असंख्य उदाहरण उद्धृत किये जा सकते हैं। : कबीर ने अलंकारों का प्रयोग जान-बूझकर नहीं किया । वे तो उनकी वाणी वेग में स्वतः ही इस प्रकार बिखर गये हैं जिस प्रकार सागर-तरंगों की थिर-से रत्न राशि बिखर जाती है । इसीलिए कबीर की अलंकार योजना उनकी व्यंजना को सर्वत्र सबल, सुस्पष्ट और प्रभावोत्पादक बनाने में सफल है ।

3. छन्द योजना—कबीर ने दोहा छंद का प्रयोग अधिकांशतः किया है। छंद के प्रयोग में वे इतने सफल हुए हैं कि जो बात, गागर में सागर भरने की, री के विषय में कही जाती है, वही यदि कबीर के विषय में कही जाये तो त न होगा । कबीर का एक-एक दोहा अपने में भाव-सागर को समाहित हुए है । यथा—

जो वे सो कहै नहि; कहै सो देखि नाहि ।
सुनै सो समझावे नहीं, रसना दृग श्रुति काहि ॥

दोहा छंद के अतिरिक्त कबीर ने अपने पदों में गौड़ी, रामकली, आसावरी, भैरव बिलावल, ललित, बसन्त, कल्याण, सारंग, मलार, धनाश्री आदि रागों योग को सफलतापूर्वक किया है ।

4. प्रतीक योजना—कबीर का काव्य प्रतीकों का अक्षय कोष है । उसमें दे प्रकार के प्रतीकों यथा-भाव प्रतीक, सांकेतिक प्रतीक, पारिभाषिक प्रतीक, मूलक प्रतीक और रूपकात्मक प्रतीकों का सुन्दर व सुष्ठु प्रयास हुआ है । काव्य के एक भाव प्रतीक का उदाहरण देखिये—

'साईं बिन दरद करेजे होय।'

इसमें साईं का प्रयोग प्रिय के लिए किया गया है। परमात्मा तत्व ज्योति को दीपक का रूप देते हुए कबीर ने कहा—

'घर-घर दीपक बरै, लखै नहि अन्ध है।'

संख्यात्मक प्रतीकों में एक कुआ, पांच पनिहारी, पांच कुसंगी, पांच च चौसठ दीवा, चन्दा, आठ कमल, पांच तत्व और तीन चादर आदि आते हैं।

सांकेतिक प्रतीकों में ब्रह्मरन्ध्र, गगन मण्डल, सरिता, पनिहारिन अ औंधा कुआ ऐसे ही प्रतीक है। कबीर की प्रतीक योजना का एक उदाहरण देखि

झीनी-झीनी बीनी चदरिया।

काहे के ताना काहे कै भरनी कौन तार से बीनी चदरिया।

इ गला पिंगला ताना भरनी सुषमन तार से बीनी चदरिया।

आठ कमल दल चरखा डोलै, पाँच तत्त गुन तीन चदरिया॥

निष्कर्ष—संक्षेप में कहा जा सकता है कि कबीर काव्य में भाव और क पक्ष का समुचित प्रसार दृष्टिगोचर होता है। उनकी भाषा अटपटी लग सकती परन्तु उनके भाव अपने पाठकों को रस विभोर करने और अपना प्रभाव छो में सक्षम है। हमारे विचार से किसी कवि की सबसे बड़ी सफलता इसी में भले ही कबीर, तुलसी और सूर की समता न कर सकें परन्तु उनका अनुभूति अ अभिव्यक्ति पक्ष इसी में सफल है कि वे पाठकों पर अपना प्रभाव छोड़ने में स रहे हैं।

2. मलिक मुहम्मद जायसी

प्रश्न 3. पद्मावत के 'प्रेम खण्ड' के आधार पर प्रेम के स्वरूप को स कीजिए।

अथवा

'जायसी की प्रेम साधना' पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।

उत्तर—जायसी हिन्दी की 'प्रेम काव्य धारा' या सूफी काव्य धारा प्रतिनिधि कवि थे। सूफीमत की साधना वास्तव में प्रेम की ही साधना है। ई से प्रेम करना और उसकी सत्ता में अपनी सत्ता को विलीन कर देना सूफी स का चरम लक्ष्य है। सूफियों के अनुसार साधक को प्रेम की जो अनुभूति होती वह वर्णनातीत है। जन साधारण के समक्ष जब सूफी अपने को प्रकट करता है उसे लौकिक प्रतीकों, रूपकों या कथाओं का आश्रय लेना पड़ता है। अन्तमु साधना को लौकिक अभिव्यक्ति देते समय प्रेम, मिलन, विरह, उन्माद, मूर्छा अ की सामान्य शब्दावली को ग्रहण करना उनके लिए अनिवार्य हो जाता है। सन्त लौकिक प्रेम (इश्क मजाजी) को अलौकिक प्रेम (इश्क हकीकी) तक प

...माध्यम मानते हैं। सूफी साधना के अनुसार लौकिक प्रेम जब उच्च धरातल ... पहुंच जाता है, वह ईश्वरीय प्रेम का रूप धारण कर लेता है। भारतीय सूफी ... साधना भी विचारों की इसी रसधारा में पगी है।

'पद्मावत' जायसी की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसमें सूफी प्रेम साधना का ...स्तृत विवेचन हुआ है। वस्तुतः इसी केन्द्र पर पद्मावत की सम्पूर्ण कथा स्थिर ...। 'प्रेम खण्ड' में नायक रत्नसेन के हृदय में पद्मावती के प्रति प्रेम के उदय का ...र्णन है। यह प्रेम इतना दृढ़ है कि नायक अपना सारा सुख, सारा वैभव ...था सुविधाएँ छोड़कर योगी बन जाता है। वह जब तक उसे प्राप्त नहीं कर ...ता, उसे चैन नहीं मिलता। उसके मार्ग में न जाने कितनी बाधाएँ आती हैं किन्तु ...ह अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होता। इन विपत्तियों से ही उसकी प्रेम साधना ...में निखार आता है और वासना का परिमार्जन होता है। इसीलिए सूफी साधक ...प्रेम के मार्ग को अत्यन्त दुर्गम, जटिल तथा कंटकाकीर्ण बतलाते हैं। इस मार्ग में ...सफलता उसी को मिलती है जो अपने प्राण हथेली पर लिए घूमते हैं और हर प्रकार का कष्ट झेलने को तत्पर रहते हैं। हीरामन तोता रत्नसेन को समझाता है—

प्रेम सुनत मन भूलु न राजा।
कठिन पेम सिर देई तो छाजा॥
प्रेम फांद जो परा न छूटा।
जीउ दीन्ह बहु फांद न टूटा॥

हीरामन जब रत्नसेन से पद्मावती के सौन्दर्य का वर्णन करता है तो उसे मूर्छा आ जाती है। जायसी कहते हैं कि प्रेम का घाव बड़ा गहरा होता है, इसे वही जानता है जिस पर इसका प्रभाव होता है—

सुनतहि राजा गा मुरछाई। मानौं लहरि सूरज कै आई॥
प्रेम घाव दुख जान न कोई। जेहि लागै जानै तै सोई॥
परा जो पेम समुद्र अपारा। लहरहि-लहर होई बिसँभरा॥

प्रेम का सागर बड़ा गहरा व गम्भीर होता है। उसमें पड़कर प्रेमी लहरें लेता रहता है। वह विरह का अनुभव करता है और हृदय प्रति क्षण हिलोरें लेता रहता है। प्रेम की पीड़ा को भोगता हुआ व्यक्ति क्षण भर में पीला और क्षण भर में सफेद हो जाता है—

खिनहि पीत, खिन होय मुख सेता। खिनहि चेत, खिन होय अचेता॥

प्रेम की स्थिति मरण पीड़ा से भी दारुण होती है। प्रेम में पड़कर मनुष्य न तो जीवित ही रहता है और न पूरी तरह से मर ही जाता है—

कठिन मरन तें प्रेम बेवस्था। ना जिउ जियै न दसवँ अवस्था॥

सुख की चाह रखने वाला इस पथ का पथिक नहीं बनता। जो म
छोड़ता है वही योगी, यति, तपस्वी या सन्यासी इस मार्ग का अनुसरण कर
योग और भोग में स्वभावतः विरोध है। जैसे बिना दूध को मथे मक्खन
मिलता उसी प्रकार केवल योग ले लेने से ही साधना पूरी नहीं हो जाती
का सौदा करने वाले साधक ही इस पथ के अनुयायी होते हैं--

पेम पहार कठिन विधि बदा। सो पै चढ़ै जो सिर सौं चढ़ा॥

प्रेम में एक बार मन लग जाने पर साधक फिर मुड़कर देखना भी नहीं करता। दिव्य प्रेम पाकर जीवात्मा इस भौतिक संसार में रहने को नहीं होती। उसे इस लोक मे सर्वत्र अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देने लग उसकी दृष्टि माया से फिर कर एक बार जब परमात्मा से लग जाती है त फिर कर भी उस ओर नहीं देखता।

प्रेम का भाव अदृष्ट होता है, पर उसकी स्थिति आकाश से भी और व्यापक होती है। प्रेम का ध्रुव तारा ध्रुव से ऊँचा होता है सर्वस्व तथा बलिदान से ही उसे पाया जा सकता है--

ध्रुव से ऊँच पेम ध्रुव ऊआ। सिर देइ पाँव देइ सो छुआ॥

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि सूफी साधना में प्रेम को अ ऊँचा एवं गौरवशाली स्थान प्रदान किया गया है। जायसी की प्रेम साधना रूप से सूफी साधना पर अवलम्बित है। जहाँ गुरु की कृपा से साधक इस आ मार्ग का पथिक बनता है और अन्त में चरम तत्व में अपने को लय कर मह प्राप्त करता है।

प्रश्न 4. "हिन्दी के कवियों मे यदि कही रमणीय और अद्वैती रह है तो जायसी में जिनकी भावुकता उच्च कोटि की है।" इस कथन की वि करते हुए जायसी के रहस्यवाद पर प्रकाश डालिये।

अथवा

टिप्पणी लिखिये--'जायसी का रहस्यवाद'।

अथवा

"जायसी एक उच्च कोटि के रहस्यवादी कवि है।" इस कथन की स कीजिये।

उत्तर--'प्रेम की पीर' के जिस मूल तत्व को लेकर सूफी प्रेम मार्गी धारा का आरम्भ हुआ था, मलिक मुहम्मद जायसी इस धारा के प्रमुख एव निधि कवि हैं। इस्लाम में 'सूफी' शब्द 'रहस्यवादी' का पर्यायवाची है। उनकी रचनाओं में रहस्यवाद की सहज, सरस अभिव्यक्ति पाई जाती है। उ का पद्मावत रहस्यवादी काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। उसमें रत्नसेन

ावती के माध्यम से रहस्यवाद की सृष्टि की गई है। जायसी भारतीय अद्वैत विशिष्टा द्वैतवाद की भावनाओं से प्रभावित थे। उनके काव्य में रत्नसेन मा और पद्मावती परमात्मा के प्रतीक है। अतः इनके लौकिक प्रेम पर भी ौकिक प्रेम की स्पष्ट छाप है। परिणामतः रहस्यात्मकता इनके काव्य में स्वतः आ गई है।

रहस्यवाद का अर्थ और स्वरूप—'रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्निहित ृत्ति का प्रकाशन है जिसम वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शान्त और श्छल सम्बन्ध जोड़ना चाहती है और यह सम्बन्ध यहाँ तक बढ़ जाता है कि नों में कुछ भी अन्तर नहीं रह जाता।' **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार**— चिन्तन के क्षेत्र में जो द्वैतवाद है, भावना या कल्पना के क्षेत्र मे वही रहस्यवाद ।" **महादेवी वर्मा** ने अपनी सीमा को असीम तत्व में विलीन कर देने को ही हस्यवाद माना है। इन सभी परिभाषाओं पर विचार करने से यही निष्कर्ष नकलता है कि आत्मा और परमात्मा के रहस्यपूर्ण सम्बन्धों की अभिव्यक्ति का ाम ही रहस्यवाद है।

जायसी के रहस्यवाद पर विभिन्न प्रभाव—

(i) जायसी पर सर्वात्मवाद के दार्शनिक सिद्धान्त का प्रभाव था। उन्होंने ृष्टि के प्रत्येक पदार्थ पर परम सत्ता की छाया देखी।

(ii) जायसी ने जीव और ब्रह्म में कोई भेद नहीं माना। उनके रहस्यवाद र भारतीय अद्वैतवाद की भावना का प्रभाव है। अद्वैतवाद के अनुसार आत्मा और परमात्मा दोनों एक ही है।

(iii) उनके रहस्यवाद पर मुसलमानी एकेश्वरवाद का प्रभाव था।

जायसी का रहस्यवाद—जायसी का रहस्यवाद भाव मूलक है। उसमें आत्मा-परमात्मा के मिलन को पति-पत्नी के मिलन के रूप में माना गया है। सूफी कवि होने के कारण जायसी ने अपने काव्य में 'प्रेम की पीर' को विशेष महत्व दिया है। 'पद्मावत' उनका श्रेष्ठ प्रबन्ध काव्य है। इसके माध्यम से जायसी ने सूफी 'रहस्यवादी' सिद्धान्तों की सुन्दर विवेचना की है। पद्मावत में जो रहस्यवादी तत्व मिलते हैं, वे निम्नलिखित हैं—

(i) **ब्रह्म की सर्वव्यापकता**—अद्वैतवाद और सर्वात्मवाद के सिद्धान्तों से प्रभावित होने के कारण जायसी ने ब्रह्म को सर्वव्यापक माना है। उनकी दृष्टि सारा विश्व ही ब्रह्म का स्वरूप है, सृष्टि पर सर्वत्र उसी की छाया व्याप्त है—

परगट गुपुत सकल महँ, पूरि रहा सो नाँव।
जहँ देखो तहँ ओही, दूसर नहीं जहँ जाव॥

उस एक ज्योति से ही सभी ज्योतियों की उत्पत्ति हुई है—

जेहि दिन दसन जोति निरमई।
बहुतै जोति जोति ओहि भई॥

रवि, शशि, नक्षत्र, रत्न पदार्थ, मानिक, मोती आदि सभी उसी ए से प्रकाशित होते है। उस ब्रह्म की दीप्ति सर्वत्र व्याप्त है।

(ii) ब्रह्म और जीव की एकता—कबीर की भाँति जायसी ने भी स्थान व्यक्ति के हृदय को ही बतलाया है। जायसी हृदय रूपी तालाब रूपी ब्रह्म की सत्ता मानते हैं, लेकिन उसकी प्राप्ति प्रेम के अथाह जल में ड नहीं हो सकती। यथा—

अहुठ हाथ तन सरवर, हिया कँवल तेहि माँह।
नैनहिं जानहु नीयरे, कर पहुँचत औगाह॥

(iii) गुरु की महत्ता—जायसी के रहस्यवाद में गुरु की महत्ता भ स्पष्ट है। हीरामन तोता गुरु है जो विरह की चिनगारी को राजा रत्नसेन में प्रज्वलित करता है। गुरु द्वारा प्रेरित मार्ग का अनुसरण ही एक सच्चे का कर्त्तव्य है। जो शिष्य इस मार्ग से च्युत हो जाता है उसे अभीष्ट मि होती—

गुरु विरह चिनगी जो मेला।
जो सुलगाई लेइ सो चेला॥

'पद्मावत' में कहीं-कहीं पद्मावती के भी गुरु होने का उल्लेख है जहाँ पर पद्मावती गुरु है वहाँ परमात्मा और गुरु को एक कर दिया गया से एकाकार का एक प्रसंग निम्न है—

जब लग गुरु हौं अहा न चीन्हा। कोटि अन्तरपट बीचहिं दीन्हा
जब चीन्हा तब और न कोई। तन मन जिउ जोबन सब सोई

(iv) प्रेम की पीर—जायसी प्रेम-पीर के साधक कवि थे। प्रेम कारण ही उनका रहस्यवाद अधिक रमणीय और भावनामय हो गया है। और पद्मावती के मिलन सुख में प्रकृति का उल्लास और वियोग में वि दिखाकर जायसी ने आत्मा और परमात्मा की एकता को ही अभिव्यक्ति रानी पद्मावती के वियोग दुःख से न केवल चेतन जीव ही दुःखी है वर प्रकृति उसके विरह दुःख में डूबी हुई है। उसके रक्त आँसूओं से सारा हुआ दृष्टिगोचर होता है—

कही रोइ पद्मावती बाता। नैनन्ह रकत दीख जग राता

(v) साधना मार्ग की कठिनाईयां—जायसी के रहस्यवाद में साधक में आने वाली कठिनाइयों का वर्णन भी मिलता है। ... रत्नसेन को पद्मावती को पाने के लिए अनेक कठिनाइयां उठानी पड़ती है। जायसी ने

अहकार को साधना मार्ग की बाधाओं के रूप में चित्रित किया है उस पर भोगी को कोई स्थान नहीं है। जिसमें अपने सिर को न्यौछावर करने ामर्थ्य है, वही साधना पथ में सफल हो सकता है। यथा—

ओहि पथ जाइ जो होय उदासी। जोगी, जती, तपा, संन्यासी ॥
भोग किए जौं पावत भोगू। तजि सो भोग कोइ करत न जोगू ॥
तुम राजा चाहहु सुख पावा। भोगहि भोग करत नहिं भावा ॥
साधन्ह सिद्धि न पाइय, जौ लगि सधै न तप्प।
सो पै जानै बापुरा, करै सो सीख कल्लप ॥

(vi) **साधनात्मक रहस्यवाद**—जायसी ने कहीं-कहीं साधनात्मक रहस्यवाद हठयौगिक सन्दर्भों में अपने रहस्यवाद को प्रस्तुत किया है। जायसी ने हठयोग शुष्क प्रक्रियाओं, कंथा पहनने, इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाडियों का भी न किया है। पद्मावत के नायक रत्नसेन की प्रेम साधना में इसी हठयोगिक स्यवाद को देखा जा सकता है। जायसी के साधनात्मक रहस्यवाद को अभि-क्ति में भावना का सुन्दर समन्वय है। इसीलिये उनका साधनात्मक रहस्यवाद ीर की अपेक्षा रमणीय और प्रभावशाली है। शरीर के नवद्वारों के पश्चात् म् द्वार का उल्लेख भी जायसी ने किया है। कवि ने दशम् द्वार का उल्लेख करते लिखा है—

दसव दुआर गुपुत एक नाकी। अगम चढ़ाव बार सुठि बाँकी ॥
भेदी कोई जाइ ओहि घाटी। जौ ये भेद चढ़ै ओहि चाँटी ॥
दसंव द्वार तार के लेखा। उलटि दिष्टि जो लाव सो देखा ॥

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि जायसी च कोटि के रहस्यवादी सूफी कवि थे। उनके पद्मावत में भावनात्मक एवं साध-त्मक दोनों ही प्रकार के रहस्यवाद देखे जा सकते हैं। डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना उचित ही लिखा है कि जायसी के रहस्यवाद में भावुकता का प्राधान्य है; सर-ा की अतिशयता है, मादकता की प्रचुरता है एवं रागात्मिकता की बहुलता है। व ने रहस्यवाद की विविध स्थितियों का सांगोपांग निरुपण करके साधक और ध्य के मिलन की आनन्दमयी स्थिति का चित्र बड़ी सजीवता से अंकित किया जिसमें लौकिक पति-पत्नी के प्रथम समागम की रसानुभूति को आत्मा-परमात्मा मिलन की दिव्य अनुभूति तक पहुँचा दिया है। सम्पूर्ण काव्य में मिलन उत्कण्ठा र विरह की विह्वलता को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उसमें रमणी-ा और भावुकता के साथ-साथ साधनात्मकता भी उपलब्ध है।

प्रश्न 5. "भाव और कला सभी दृष्टियों से जायसी भक्तिकाल की स
साधना करने वाले कवियों की पंक्ति में प्रमुख स्थान रखते हैं। उक्त कथ
समीक्षा कीजिये।

अथवा

मलिक मुहम्मद जायसी की काव्यगत विशेषताओं को समझाइये।

(राज. विश्व. वि. 1

अथवा

जायसी के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—काव्य सौन्दर्य से तात्पर्य काव्य के भावात्मक और कलात्मक स
से होता है। किसी भी कवि के कवित्व का मूल्यांकन इन्हीं काव्य सौन्द
बिन्दुओं के आधार पर किया जाता है। जायसी भक्तिकाल की प्रेमाश्रयी
धारा के प्रमुख और प्रतिनिधि कवि हैं। उन्होंने इस धारा को सर्वाधिक व्याप
बनाया। मानवीय तत्वों का सहज समावेश भी हमें सर्वाधिक इन्हीं की कृति
देखने को मिलता है। भाव और कला सभी दृष्टियों से जायसी भक्तिकाल
समन्वय साधना करने वाले कवियों की पंक्ति में प्रमुख स्थान रखते हैं। आकृ
कुरुप होते हुए भी जायसी का मन अत्यधिक सरस और सौन्दर्य प्रेमी था
हृदय के अत्यधिक उदार और अनेक शास्त्रों तथा विद्याओं के ज्ञाता थे।
सभी प्रचलित मतों के अच्छे सिद्धांतों को इन्होंने अपनाया। किसी भी प्रक
जातीय, धार्मिक या साम्प्रदायिक संकीर्णता इनके जीवन में नहीं थी। सभी
के प्रभावों के दर्शन हमें इनके काव्य में स्पष्ट रूप से होते है। पद्मावत, अ
वट, आखिरी कलाम और चित्ररेखा इनकी विशिष्ट कृतियां हैं। इनमें से
त्यिक दृष्टि से पद्मावत का महत्व सर्वमान्य है।

जायसी काव्य का भावात्मक सौन्दर्य—जायसी प्रेम-पीर के गाय
उनका पद्मावत विशुद्ध रूप से एक प्रेम काव्य है। इसमें कवि ने राजा र
और रानी पद्मावती की लौकिक प्रेम कहानी के माध्यम से सूफी सिद्धा
अनुरुप अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति की है। यह शृंगार रस प्रधान काव
इसमें शृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का अत्यन्त सजीव वर्णन हुआ
फिर भी संयोग की अपेक्षा वियोग पक्ष अधिक प्रभावी और मार्मिक है। इस
नहीं प्रेम-विरह की पीड़ा प्रकृति और पक्षियों तक को द्रवित कर देती है।
पद्मावती के साथ सहानुभूति प्रकट करने को तैयार हो जाते हैं। सौन्दर्य
में भी कवि अत्यधिक सफल हुआ है। जायसी के भाव सौन्दर्य का मूल्यांकन
कित बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता है—

रस निरूपण—पद्मावत एक प्रेम प्रधान काव्य है । इसका प्रमुख रस के अतिरिक्त वीर, शान्त, करुण, अद्भुत और भयानक आदि रसों की भी पद्मावत में हुई है । शृंगार के संयोग चित्रों की मार्मिकता पद्मावती मिलन प्रसंग में तथा विरह की सजीवता नागमती और पद्मावती की व्याकुलता में देखी जा सकती है । संकलित काव्य में पद्मावती-गोरा-बादल खण्ड में हमें वियोग शृंगार की सरस अभिव्यक्ति देखने को मिलती है । प्रिय बन्दीगृह से मुक्त कराने के लिए रानी पद्मावती योगिनी बनने तथा स्वयं बन्दी बात गोरा बादल को कहती है, जिससे उन दोनों वीर भाइयों का हृदय त हो जाता है । यथा—

पिय जेहि बाँद जोगिनी होइ धावौं । हौं बंदि लेउँ, पियहिं मुकरावौं ॥

सूरज गहन गरांसा, कँवल न बैठे पार ।
महूँ पंथ तेहि गवनब, कंत गये जेहि बार ॥

गोरा और बादल जब पान का बीड़ा खा लेते हैं तो प्रिय मुक्ति की आशा मावती को हार्दिक प्रसन्नता होती है । उसका हृदय-कमल खिल जाता है । का अन्धकार नष्ट होकर आशा की प्रातःकालीन किरणें उसके हृदय को स से भर देती हैं । यथा—

सुनतहि सूर कँवल हिय जागा । केसरि बरन फूल हिय लागा ॥
जनु निसि महँ दिन दीन्ह देखाई । भा उदोत, मसि गई बिलाई ॥

इस प्रकार जायसी के काव्य में रस निरूपण मार्मिकता के साथ हुआ है ।

प्रकृति चित्रण—पद्मावत के भाव पक्ष में प्रकृति चित्रण की महत्त्वपूर्ण हुई है । पद्मावत में प्रकृति वर्णन कहीं अलंकारिक रूप में, कहीं आध्या- रूप में, कहीं संवेदनात्मक रूप में, कहीं उद्दीपन रूप में, कहीं प्रतीकात्मक और कहीं षट्ऋतु वर्णन या बारह मासे के रूप में देखा जा सकता है। के संवेदनात्मक रूप की एक झांकी निम्नांकित पंक्तियों में देखी जा सकती

तेहि दुख भये परास निपाते । लोहु बूड़ि उठे परभाते ॥
राते बिम्ब भये तेहि लोहू । पखर पाक फाटि हिय गोहू ॥

जायसी ने प्रकृति का प्रतीकात्मक रूप में भी सरस चित्रण किया है । प्रकृति ीकात्मक रूप का एक उदाहरण देखिये—

कहा मानसर चाह सो पाई । पारस रूप यहाँ लगि आई ।
भा निरमल तिन्ह पायन्ह परसे । पावा रूप-रूप के दरसे ॥

इस प्रकार पद्मावत में प्रकृति चित्रण के नाना सरस चित्र देखने को हैं। नायक-नायिका के संयोग या वियोग का वर्णन करते समय ज प्रकृति को उद्दीपन रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार प्रकृति सौन्दर्य की पद्मावत एक मनोरम काव्य है।

प्रेम और सौन्दर्य निरुपण—जायसी के काव्य का प्रमुख विषय प्रे सौन्दर्य है। जायसी का प्रेम वर्णन सूफी सिद्धान्तों पर आधारित है। सू के अनुसार ईश्वर परम सौन्दर्यमय है। साधक का अन्तिम लक्ष्य इसी सौन्द उपलब्धि है। प्रेम का स्वरूप अत्यन्त पावन और व्यापक है। प्रेम का ध्रुव के ध्रुव तारे से भी ऊँचा है। जिस हृदय में प्रेम प्रकट होता है, वह धन्य मार्ग पर कदम बढ़ाना हर किसी के बस की बात नहीं है। जो अपने प्राणों छावर करने का साहस रखता है, वह वीर ही इस पथ का अनुयायी होने है। यथा—

> ज्ञान दिस्टि सौं जाइ पहुंचा। पमे अदिस्ट गगन ते ऊँचा।।
> धूब ते ऊँच पेम धुव ऊआ। सिर देइ पाँव देइ सो छुआ।।

जायसी का प्रेम और सौन्दर्य निरुपण अद्वितीय है। इस दृष्टि से का कोई कवि जायसी की समता नहीं कर सकता। संक्षेप में कहा जा सकता जायसी का भाव सौन्दर्य रस निरुपण, प्रकृति चित्रण और प्रेम तथा सौन्द पण की दृष्टि से अत्यन्त मनोरम, सरस और सुन्दर है।

जायसी काव्य का कलात्मक सौन्दर्य—भाव यदि काव्य का अनुभूति तो कला उसका अभिव्यक्ति पक्ष है। अपनी सहानुभूतियों को भावुक कवि छन्द, अलंकार और प्रतीक योजना के द्वारा प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है त्मक पक्ष की भाँति ही जायसी का कलात्मक पक्ष भी अत्यन्त सुन्दर है। हम त्मक पक्ष के विभिन्न बिन्दुओं के आधार पर इसका विवेचन करेंगे।

भाषा-शैली—पद्मावत काव्य की भाषा लोक प्रचलित अवधी है। प्रयोग के आधार पर अनेक विद्वान जायसी को तुलसीदास जी से भी अधिक कवि मानते हैं। अवधी भाषा की सरसता और मधुरता जायसी के काव्य व्यंजित हुई है। यों तो जायसी की भाषा में सभी गुणों का समावेश है, पर माधुर्य और प्रसाद गुण को विशेष महत्त्व दिया है। माधुर्य गुण से सम्बन्धि उदाहरण देखिये—

> सखिन्ह बुझाई दगध अपारा। गइ गोरा बादल के बारा।।
> चरन कँवल भुइँ जनम न धरे। जात तहाँ लगि छाला परे।।

जायसी की भाषा में यदा-कदा ओज गुण की अभिव्यक्ति भी देखने है। एक उदाहरण देखिये—

फिरि आगे गारे जब हाँका । खेलों आजु करौरन साका ॥
हों खेलो धोलगिरि गौरा । टरों न टारा लाग न मोरा ॥

जायसी की भाषा भावानुगामिनी है । उसमें शृंगार, वीर, करुण, हास्य, भत्स आदि विविध भावों को व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है । भाषा में कता और बिम्ब विधान की सामर्थ्य है । नख शिख वर्णन और युद्ध वर्णन की भाषा सम्बन्धी इस विशेषता को देखा जा सकता है । जायसी की भाषा वरों और लोकोक्तियों का भी सुन्दर प्रयोग हुआ है—

का भा जोग कथानि के पथे । निकसी घिउ न बिना दधि मथे ॥

× × × ×

"गोरा बादल बीरा लीन्हा । जस हनुवंत अंगद वर कीन्हा ॥"

× × × ×

प्रेम भाव दुख जान न कोई । जेहि लागै जानै तै सोई ॥

भाषा में मुहावरों के प्रयोग से जायसी की भाषा सरस, सजल और काव्या- बन गई है । भावुकता और प्रेषणीयता का गुण उसमें सर्वत्र विद्यमान है ।

शैली सौन्दर्य—पद्मावत में अनेक काव्य-शैलियों जैसे—प्रश्नोत्तर, प्रतीका- चित्रात्मक, वर्णनात्मक, भावात्मक आदि का प्रयोग बहुतायत से देखने को ा है परन्तु इन सब में मसनवी शैली ही प्रमुख है । शैली सौन्दर्य की दृष्टि द्मावत' पर्याप्त सम्पन्न है ।

अलंकार योजना—अलंकार काव्य के शोभाकारक धर्म है । इनके स्वाभाविक से भावों की अभिव्यक्ति में एक विशेष प्रभाव और चमत्कार उत्पन्न हो जाता जायसी रससिद्ध कवि थे । उनके काव्य में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, स्वभा- , अन्योक्ति, समासोक्ति, रूपकातिशयोक्ति, संदेह, विभावना, असंगति आदि ारों का प्रयोग सुन्दर ढंग से हुआ है । जायसी की अलंकार योजना को समझने ए कुछ उदाहरण देख लेना उचित ही रहेगा ।

उत्प्रेक्षा—जायसी ने उत्प्रेक्षा अलंकार का सर्वाधिक प्रयोग किया है । रूप वर्णन में तो उन्होंने इसकी झड़ी ही लगा दी है । यथा—

(i) कंचन रेख कसौटी कसी । जनु घन महँ दामिनी परगसी ॥
(ii) सुनतहि राजा गा मुरछाई । मानौ लहरि सुरुजि कै आई ॥
(iii) जब भा चेत उठा बैरागा । बाउर जानों सोई उठि जागा ॥

रूपक—(i) परा सो पेम समुद्र अपारा । लहरहिं लहर होई बिसँभरा ॥

(ii) नैन खंजन दुई केलि करेहीं । कुच नारंग मधुकर रस ले

दृष्टान्त— का भा जोग कथनि के कथे ।
निकले घिउ न बिना दधि मथे ।

अतिशयोक्ति—उन बानन अस को न मारा । बंधि रहा सगरौ संसा
गगन नखत नहिं जाहिं गनै । हैं सब बान ओहि के ह

व्यतिरेक— का सरवरि तेहि देऊँ मयंकू ।
चाँद कलंकी वह निकलंकी ।।

विभावना—जीहु नाइ पै जिय गुसाँई । कर नाहीं पै करे सवाई ।।

इस प्रकार जायसी की अलंकार योजना सहज, स्वाभाविक और सुन्द

छन्द प्रयोग एवं प्रतीक योजना—'पद्मावत' में जायसी ने दो ही छन् अपनाया है—दोहा और चौपाई। छन्द प्रयोग की दृष्टि से जायसी परम्प पालन करने वाले कवि हैं। पदमावत में उन्होंने आठ चौपाइयों की अर्द्धावलि बाद दोहा छन्द का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं यह प्रयोग सात चौपाइयों की लियों के बाद भी देखने को मिलता है। शास्त्रीय दृष्टि से यह दोषपूर्ण है, प स्थल पद्मावत में कम ही देखने को मिलते हैं।

जायसी ने रहस्यवाद के निरूपण में पारिभाषिक शब्दावली और प्र योजना भी सुन्दर प्रयोग किया है। पद्मावत स्वयं में एक प्रतीक काव्य है। चित्तोड़–शरीर, रत्नसेन–मन, पद्मिनी–बुद्धि, नागमति–गौरख धन्धा, सूआ- राघव चेतन–शैतान और अलाउद्दीन माया के प्रतीक हैं। इस दृष्टि से ज काव्य में प्रतीकों की अपनी ही गरिमा हैं। उनमें हृदय को छूने की क्षमता भाव-प्रेषणीयता है।

निष्कर्ष—संक्षेप मे कहा जा सकता है कि जायसी काव्य में भावपक्ष कला का निरूपण अत्यन्त सहज, सुन्दर, रमणीय तथा प्रभावोत्पादक है। प्रेम का वर्णन करने मे कवि जायसी अपना कोई उपमान नहीं रखते। उनका प्र चित्रण हिन्दी साहित्य की एक उपलब्धि है। वियोग वर्णन की दृष्टि से उनके वर्णित नागमती वियोग वर्णन अद्वितीय है। भाषा, छन्द, अलंकार और प्र योजना की दृष्टि से भी जायसी का काव्य विधान उच्च कोटि का है। यही क है कि तुलसी और सूर के बाद हिन्दी साहित्य में जायसी को अत्यन्त आदर के स्मरण किया जाता है। उनका काव्य आचार्य शुक्ल की 'त्रिवेणी' की भागीरथ

3. गोस्वामी तुलसीदास

प्रश्न 6. राम भक्ति काव्य के श्रेष्ठ कवि तुलसीदास क्यों है? कारण स उत्तर दीजिये।

(राज. वि. 19

अथवा

"तुलसीदास भारतीय जनता के प्रतिनिधि कवि हैं। इनकी रचनाओं में य संस्कृति का सच्चा स्वरूप पाया जाता है।" इस कथन को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—तुलसी एक ऐसे महान् सृष्ठा और जीवन द्रष्टा कवि हैं, जिन्होंने गीन भारत की सम्पूर्ण चेतना को काव्य की मार्मिक वाणी में अभिव्यक्ति । वे हिन्दी काव्य-गगन के सबसे दीप्तीमान् नक्षत्र हैं। उनका 'रामचरित ' एक सर्वांगपूर्ण और सर्वश्रेष्ठ कृति है। विश्व साहित्य में उसका स्थान ाय है। मानस का चार शताब्दी वर्ष का उत्सव इसका प्रमाण है। अब तक में ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं हुआ जिसका जन्म शताब्दी उत्सव मनाया गया हो जिसे चार सौ वर्ष बाद भी लोग अपने युग की ही कृति मानकर मान देते इसका कारण है कि मानस में जीवन के प्रत्येक अंग और कर्त्तव्य का विवे- है। वह 'नाना पुराण निगमागम सम्मत' होने के कारण करोड़ों भारतीयों एक मात्र धर्म ग्रन्थ है। तुलसी का काव्य अध्यात्म, ज्ञान, दर्शन, भक्ति, ति और लोक व्यवहार का अनूठा संगम है। उनके काव्य में सम्पूर्ण भारतीय ति ने अभिव्यक्ति प्राप्त की है। संक्षेप में कहें तो तुलसी का काव्य सर्वांग- है, उसके बाहर कुछ भी नहीं है।

आदर्श भक्त—तुलसी राम के अनन्य भक्त थे। उनका सम्पूर्ण जीवन राम- था। उनका काव्य भी राममय है। भक्ति के क्षेत्र में वे जितने महान् थे उतने कविता के क्षेत्र में भी महान् थे। एक भक्त होने के कारण काव्य रचना में का आदर्श लोक-कल्याण रहा। उन्होंने अपने सुख, यश या धन प्राप्ति के लिए य रचना नहीं की। उनका ध्यान समाज की ओर था। इसलिये राम के पवित्र त्र को जनता-जनारधन के सामने रखकर उन्होंने समाज को एक आदर्श अनुकरणीय मार्ग बतलाया। उनके अनुसार यह सारा विश्व ही राम- है—

"सियाराममय सब जग जानी।
करहुँ प्रणाम जोर जुग पाणी॥"

महान् समन्वयवादी कवि—तुलसी ने अपने आस-पास के समाज को सूक्ष्म से देखा था। उनके समय के समाज की स्थिति बहुत खराब थी। हिन्दू जनता जित होकर निराश हो चुकी थी। शैव और वैष्णवों के झगड़ों ने उनकी एकता नष्ट कर दिया था। वर्णाश्रम धर्म का लोप हो गया था। नारी का समाज में ान न था। चारों ओर भोग विलासमय, सुरा-सुन्दरी से युक्त, अहंकार से पूर्ण न था। समाज में अनेक मत थे। उनमें समन्वय की आवश्यकता थी। उनका ा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ्य

और वैराग्य का समन्वय, ब्राह्मण और चाण्डाल का समन्वय, भक्ति और ज्ञान समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, और तत्त्व का समन्वय। उनका सम्पूर्ण काव्य आदि से अन्त तक समन्वय का है। इसीलिये तो सभी विद्वानों ने एक मत से यह स्वीकार किया है कि ग बुद्ध के बाद तुलसी ही भारत के सबसे बड़े लोकनायक हुए हैं। कुछ उदाह देखिये—

(i) 'ग्यानहि भगतिहि नहीं कछु भेदा।
उभय हरहिं भव संभय खेदा॥'

(ii) कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल कोऊ मानै।
तुलसीदास परिहरि तीनो भ्रम, सो आपन पहचानै॥

सामाजिक मर्यादा के पोषक—तुलसी का काव्य मानवता का पोषक रामचरित मानस के द्वारा उन्होंने भारतीय जनता को एक नया चिन्तन दि नये समाज का ढांचा दिया, राम राज्य की राजनैतिक रूपरेखा दी, छोटे बड़े की मर्यादा रखने से होने वाले सुख और शान्ति के रहस्य को जनता के सा रखा। उनके काव्य ने सारे देश का चिन्तन किया।

उनका 'रामचरितमानस' हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति का संस्करण है। हिन्दू धर्म का सच्चा स्वरूप क्या है? यह आपको देखना हो तुलसी के मानस का परायण कीजिये। भारतीय संस्कृति के अनुसार माता-पि भाई आदि पारिवारिक और राजा, प्रजा, गुरु, ब्राह्मण, शूद्र आदि सामाजि सम्बन्धों की व्यवस्था को जानना हो तो मानस में अवगाहन कीजिये। जीवन उपस्थित होने वाले जटिल प्रश्नों का निराकरण कैसे करें? हिन्दू धर्म के अनुस वर्णाश्रम का वास्तविक स्वरूप क्या है? ज्ञान भक्ति और धर्म को क्या विशेषत हैं? आदि अनेक प्रश्नों के उत्तर आपको तुलसी के एक ही ग्रन्थ 'रामच मानस' में सहज ही मिल जायेंगे, फिर मानस का भारत के घर-घर में इत सम्मान हो तो इसमें आश्चर्य ही क्यों हो?

खण्डन-मण्डन की प्रकृति से दूर—तुलसी में खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति थी। वर्णाश्रम धर्म को मानते हुए वे उपासना के क्षेत्र में जाति-भेद को समझते थे। उन्होंने अपने काव्य में ज्ञान-भक्ति दोनों का समन्वय किया। सूर भाँति उन्होंने कहीं पर भी ज्ञान का खण्डन नहीं किया, हाँ भक्ति पर अवश्य अधिक बल दिया। यथा—

'तुलसीदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तो भजु राम, काम सब पूरन करै, कृपानिधि तेरो॥''

तुलसी जीवन को नष्ट करने वाली प्रवृत्तियों के साथ खूब लडे

संसार में व्याप्त माया, काम, क्रोध के विनाशकारी प्रभाव की निन्दा की
ास्त्र सम्मत जीवन बिताने का परामर्श दिया। अपने मानस में उन्होंने कलि
का वर्णन कर उसमें व्याप्त बुराइयों से दूर रहने का संकेत किया।

आदर्श एवं अनुकरणीय चरित्र—तुलसी का मानस पारिवारिक जीवन की
विराट् झाँकी है। उन्होने बताया कि पारिवारिक जीवन में जरा सी विकृति
पर सारे का सारा घर कलह, दुःख और अशान्ति का अखाड़ा बन जाता है।
ा म व्याप्त मर्यादाएँ नष्ट हो जाती हैं। कैकयी का क्रोध, बाली और सुग्रीव
विभीषण का रावण के प्रति विद्रोह इसके प्रमाण है। उन्होंने शक्ति, शील
सौन्दर्य के भण्डार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के लोक-रक्षक रूप की कल्पना
भरत और लक्ष्मण जैसे आज्ञाकारी, सचरित्र भाइयों की भी कल्पना की
सीता जैसी सात्विक सहचरी की कल्पना भी उन्होंने नहीं छोड़ी। रावण के
हो साथ मंदोदरी जैसी भारतीय नारी का चित्र भी उपस्थित किया।
ान जैसे लोक-सेवक भक्त को भी वे भूल नहीं सके। उन्होंने मानस में जितने
त्रों का चित्रण किया है, उतने चरित्र एक साथ हिन्दी के किसी भी ग्रन्थ में
ाई नहीं पड़ते। उनके सभी पात्र भारतीय मर्यादा से अनुप्राणित होकर
ते हैं।

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहना उचित ही है कि
सी भारतीय जनता के प्रतिनिधि कवि हैं। हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति
प्रत्येक अंग का शुद्ध स्वरूप उनकी रचनाओं में खिल उठा है। विस्तार, विषय,
व और अभिव्यक्ति सभी दृष्टियों से तुलसी का हिन्दी साहित्य में सर्वोच्च स्थान
। वस्तुतः तुलसी महान् हैं। उनका काव्य आदर्श जीवन की प्रेरणा है। वे
न्वय की विराट् भावना के गायक हैं। हम सम्पादक श्री हजारीलाल शर्मा के
मत से सहमत हैं कि—"तुलसीदास अमर हैं। उनका काव्य अमर है। वे हिन्दी
हित्याकाश के जगमगाते हुए ध्रुव नक्षत्र हैं। वे समूचे हिन्दी साहित्य के सर्व-
ष्ठ कलाकार है।"

"कविता करके तुलसी न लसे,
कविता लसी या तुलसी की कला।"

(अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध')

प्रश्न 7. तुलसी की भक्ति भावना पर एक निबन्ध लिखिये।

अथवा

विनय पत्रिका के आधार पर तुलसी की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—तुलसीदास भक्त कवि हैं। उनके आराध्य शक्ति, शील सौन्दर्य से
समन्वित मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हैं। राम को उन्होंने विष्णु का अवतार मान-

[illegible] की लीलाओं का वर्णन किया है। वे राम-भक्ति शा
प्रतिनिधि कवि हैं। उनकी भक्ति स्वामी सेवक भाव की है। राम को
स्वामी और स्वयं को उनका दास मानते हैं।

सगुण भक्ति—तुलसी सगुण एवं साकार भगवान् के उपासक हैं। नि
और निराकार भगवान् का यत्र-तत्र उल्लेख करते हुए भी वे उसकी भक्ति
को से दूर रहना चाहते हैं। अपने राम को हृदय में पाने की अपेक्षा वे जगती के
आंगन में देखना पसन्द करते हैं। तत्कालीन 'अलख' सम्प्रदाय के एक साधु के
उनका कथन द्रष्टव्य है—

"हम लखि, लखहि हमार, लखि, हम हमार के बीच।
तुलसी अलखहि का लखै, राम-नामु जपु नीच॥"

इससे तुलसी का पक्ष स्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाता है कि वे भक्ति मार्ग
इस सिद्धान्त के पूर्ण समर्थक हैं कि 'भगवान को बाहर जगत में देखना चाहि
मन के भीतर देखना भक्ति मार्ग का सिद्धान्त न होकर योग मार्ग का है।

यद्यपि तुलसी सगुण और निर्गुण तथा भक्ति एवं ज्ञान में कुछ भी भेद
मानते किन्तु श्रेष्ठता वे सगुण और भक्ति को ही प्रदान करते हैं। उदाह
स्वरूप निम्नलिखित पंक्तियां देखिये।

'सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान, बुध वेदा।
अगुन, अरूप, अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥"

× × ×

ज्ञानहिं भक्तिहिं नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव सम्भव खेदा॥
ज्ञान को पंथ कृपान की धारा। परत खगेस लगत नहीं बारा॥

इस प्रकार तुलसी को हम राम का परम भक्त पाते हैं। राम उनके इष्ट
हैं। राम के चरणों में उनका अटल अनुराग है। वे सारे संसार को सियाराम
मानते हैं। उदाहरण अवलोकनीय है—

"सियाराममय सब जग जानी। करौं प्रणाम जोरि जुग पानी॥"

दास्य भाव की भक्ति—यों तो तुलसी ने भगवान को पाने के लिए नव
भक्ति का उल्लेख किया है, पर उनको दास्य भाव की भक्ति ही प्रिय है। राम
वे अपना स्वामी मानते हैं और स्वयं को उनका सेवक। जिस प्रकार एक सेव
अपने स्वामी के भरोसे जीवन की सारी चिन्ताओं का त्याग कर देता है, उ
प्रकार तुलसी ने भी निश्चिन्तता धारण कर ली है। इस प्रकार की भक्ति
विनम्रता भक्त का एक विशिष्ट और आवश्यक गुण है। तुलसी में सर्वत्र यह गु
पूर्ण रूपेण विद्यमान है। तुलसी अपने आराध्य राम को सर्व शक्तिमान, सर्वगु
सम्पन्न मानते हैं और स्वयं को परम पातकी। विनय-पत्रिका की अग्रलिखि
पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं।

'राम ते बड़ो है कौन, मोते कौन छोटो।
राम ते खरो है कौन, मोते कौन खोटो ॥'
"तू दयालु, दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज हारी ॥"

अतः यह स्पष्ट है कि तुलसी की भक्ति दास्य भाव की थी।

समन्वयात्मक भक्ति— डॉ. **हजारी प्रसाद द्विवेदी** के मतानुसार तुलसी अपने के सर्वश्रेष्ठ समन्वयकारी साहित्यकार थे। तुलसी का जीवन ही समन्वय प्रतीक है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्होंने समन्वय का सफल प्रयोग किया फिर भला! भक्ति का क्षेत्र ही समन्वय के बिना कैसे रह सकता था। उन्होंने ज्ञान और भक्ति में, कर्म और भक्ति में, अध्यात्म पक्ष और लोक पक्ष में सदाचार और भक्ति में समन्वय स्थापित किया था। उनके राम शक्ति और सौन्दर्य के भण्डार होने के साथ-साथ अत्यन्त शीलवान भी हैं। इस प्रकार तुलसी शील को भक्ति का आलम्बन बनाकर सदाचार और भक्ति को अन्योन्याश्रित दिया।

लोक कल्याण की भावना पर आधारित भक्ति—तुलसी की भक्ति में लोक कल्याण की भावना भी पूरी तरह समाई हुई है। केवल व्यक्ति कल्याण से ही तुलसी को सन्तोष नहीं। वे तो व्यष्टि और समष्टि दोनों का ही मंगल चाहने वाले भक्त कवि हैं। भक्त में दूसरों का दुःख अनुभव करने का गुण होता है। पर हित उसका धर्म और पर पीड़ा ही अधर्म है। जैसा कि तुलसी ने लिखा है—

परहित सरिस धर्म नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहीं अधमाई ॥

तुलसी के राम अपने सीधे सच्चे भक्त के लिए परम उदार और पूर्ण भक्तवत्सल हैं। उन्होंने लिखा है—

"ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं ॥"

अनन्य भक्ति—तुलसी राम के अनन्य भक्त हैं। उनकी भक्ति में अनन्यता का महत्व सर्वोपरि है। 'विनय-पत्रिका' में तुलसी ने अनेक देवी-देवताओं की स्तुति की है, पर केवल एक इच्छा से कि मैं जन्म-जन्मान्तर तक राम की भक्ति में लीन रहूँ। राम के प्रति उनका अनुराग चातक वत है। यथा—

एक भरोसो, एक बल, एक आस-विस्वास।
एक राम-घनश्याम हित, चातक तुलसीदास ॥

तुलसी संसार के सब नाते-रिश्ते राम को आधार मानकर ही स्वीकारते हैं। उन्होंने लिखा है—

"नाते सबै राम के मनियत सुहृद, सुसेव्य जहाँ लौं।"

राम विरोधियों से वे किंचित भी सम्बन्ध नहीं रखना चाहते। व्यक्तियों को उन्होंने अत्यधिक प्रिय होने पर भी करोड़ों शत्रुओं के समान सम कर त्याग देने का उपदेश दिया है। उदाहरण प्रस्तुत है।

"जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिये ताहि कोटि वैरी सम, जद्यपि परम सनेही।।"

निष्काम भक्ति—भारतीय भक्ति मार्ग का एक प्रमुख पक्ष है—भक्ति निष्काम होना। सच्ची भक्ति में लेन-देन की भावना नहीं होती। तुलसी भी र से कुछ नहीं चाहते, केवल उनकी भक्ति ही तुलसी के लिए पर्याप्त है। यदि कु इच्छा भी है तो केवल भक्ति की ही। उदाहरण के लिए निम्नांकित पंक्ति देखिये—

"अर्थ न, काम न, काम हित, गति न, चहौ निर्वान।
जन्म-जन्म सिय राम पद, यह वरदान, न आन।।"

'रामचरितमानस' में भी तुलसी ने वाल्मीकि जी से इसी इच्छा को प्रक करवाया है—

'सब करि माँगहि एकु फलु, राम चरन रति होउ।
तिन्ह के मन-मन्दिर बसहु, सिय-रघुनन्दन दोउ।।'
'जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरन्तर तासु मन, सो राउर निज गेहु।।'

निष्कर्ष—संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि तुलसी भक्त पहले हैं, कवि बाद में। उनकी भक्ति सगुण और साकार ईश्वर के प्रति है, जो दास्य भाव क है, समन्वयात्मक है, लोक कल्याण कारिणी है, सरलता, अनन्यता तथा निष्कामत से परिपूर्ण है।

प्रश्न 8. 'तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है।' आचा हजारी प्रसाद द्विवेदी के इस मत की समीक्षा कीजिये।

अथवा

"तुलसीदास हिन्दी के समन्वयकारी प्रतिनिधि कवि हैं।" स्प कीजिये।

उत्तर—डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में "तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ्य और वैराग्य का समन्वय, कथा और तत्व-ज्ञान का समन्वय, पाण्डित्य और अपाण्डित्य का समन्वय–रामचरितमानस शुरु से आखिर तक समन्वय का काव्य है और दर्शन, बुद्धि और तर्क का अद्भुत सामंजस्य है। इसीलिए उनको विरोधी तत्वों में समन्वय स्थापित करने में सफलता मिली।"

तुलसी के युग में साम्प्रदायिक दुराग्रहों ने जन-मानस को दिग्भ्रमित कर [दिय]ा था। संन्यास तो जीवन के संत्रासों से पलायन का एक विकल्प मात्र रह गया [था]। इस स्थिति ने तुलसी को उद्वेलित किया और हिन्दी साहित्य गगन में द्वादश [सूर्य]ों का तेज लेकर चमकने वाले गोस्वामी तुलसीदास अपूर्व समन्वय शक्ति लेकर [अव]तरित हुए। उन्हें लोक और शास्त्र दोनों का व्यापक ज्ञान था। उनके काव्यों में [जह]ां लोक विधियों के सूक्ष्म अध्ययन का प्रमाण मिलता है, वहीं शास्त्र के गम्भीर [चि]न्तन का भी। लोक और शास्त्र के इस व्यापक ज्ञान ने उन्हें अभूतपूर्व सफलता [प्र]दान की। संक्षेप में तुलसी के समन्वयवादी विचार इस प्रकार हैं—

(i) **निर्गुण-सगुण का समन्वय**—तुलसी के युग में निर्गुण और सगुण को [ले]कर विवाद था। दोनों सम्प्रदाय अपनी-अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने में लगे हुए [थ]े। तुलसी ने इस विवाद को व्यर्थ बतलाया। वे बराबर इन दोनों में अभेद [स्]थापित करने की चेष्टा करते रहे। एक ओर वे श्रीराम को 'निजानन्द निरुपाधि [अ]नूपा' और चिदानन्दमय कहते हैं तो दूसरी ओर भक्तों के लिए उनके अवतारी होने का उल्लेख भी करते हैं। यथा—

"चिदानन्दमय देहु तुम्हारा। विगत विकार जान अधिकारी।
नर तनु धरेहु संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा॥"

उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था—

अगुनहिं सगुनहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा।
जो गुन रहित सगुन सोइ वैसे। जल हिम बिलग उपल नहीं जैसे॥

(ii) **भक्ति और ज्ञान का समन्वय**—तुलसीदास जी राम के अनन्य भक्त थे किन्तु वे वेद-शास्त्र द्वारा प्रतिपादित विचारों से भेद नहीं रखते थे। अतः भक्त होते हुए भी उन्होंने ज्ञान को निन्दा नहीं की। तुलसी द्वारा निरूपति भक्ति की सबसे बड़ी विशेषता यहा है कि उसमें ज्ञान की महत्ता भी स्वीकृत की गई है। इसीलिए उन्होंने 'ज्ञानहिं भगतिहिं नहीं कछु भेदा' कहकर दोनों के ऐक्य को प्रकट किया है।

(iii) **शैव-वैष्णव समन्वय**—भारतीय विचारधारा के अनुसार त्रिदेव की कल्पना बड़ी महत्वपूर्ण मानी गई है। इसके अनुसार ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीन प्रमुख देव है। जिनमें ब्रह्मा सृष्टि के उत्पादक, विष्णु पालक और शिव संहारक हैं। इसी आधार पर विष्णु को अपना सर्वस्व मानने वाले भक्त वैष्णव कहे जाते है। कालान्तर में वैष्णव एवं शैव मतों में विष्णु और शिव को ही अलग-अलग सृष्टि का उत्पादक, पालक और संहारक कहकर सर्व शक्तिमान माना जाने लगा और इन दोनों मतों में भारी विद्वेष फैल गया।

तुलसी ने 'रामचरितमानस' ही शिव के मुँह से कहलाकर उन्हें राम
उपासक सिद्ध किया। साथ ही उन्होंने शिव के मुख से स्पष्ट घोषणा कराई कि

'सोई मम इष्ट देव रघुबीरा,
सेवत जाहि सदा मुनि धीरा।'

इसी प्रकार राम के मुख से उनके शिव भक्त होने का उल्लेख करना वे नहीं भूले--

'शिव द्रोही मम दास कहावा। सो नर मोहि सपनेहु नहीं भावा॥''

साथ ही 'हरि हर पद रति मति न कुतरकी' कहकर तुलसी ने राम और शिव में अभेदता एवं अभिन्नता भी स्थापित की।

(iv) **वैष्णव एवं शक्ति का समन्वय**–शक्ति के उपासक शाक्त कहलाते हैं। तुलसी ने शैव और वैष्णवों की भांति शाक्तों एवं वैष्णवों के संघर्ष एवं वैमनस्य को भी दूर किया। रामचरित मानस में उन्होंने सीता को ब्रह्म की शक्ति बताक उन्होंने वैष्णवों और शाक्तों के विरोध को शान्त किया। यथा—

'श्रुति सेवक पालक राम तुम्ह, जगदीश माया जानकी।
जो सृजति जगु, पालति, हरति, रूख पाइ कृपानिधान की॥'

(v) **नर नारायण का समन्वय**–तुलसी के पूर्व राम का महत्व दशरथ पु के रूप में ही था। उन्हें कोई भी परात्पर ब्रह्म, अज एवं अविनाशी नहीं मानत था। इसीलिए कबीर ने दशरथ पुत्र राम को ब्रह्म से अलग कहा था--

दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना। परन्तु तुलस ने 'भये प्रकट कृपाला, दीन दयाला, कौशल्या हितकारी' कहकर उन्हीं ब्रह्म क दशरथ सुत के रूप में अवतरित दिखाया है।

(vi) **द्विज शूद्र समन्वय**–तुलसीदास के समय में जाति-पाँति एवं छुआछ का भेदभाव बढ़ा-चढ़ा था। उच्च वर्ग के व्यक्ति नीच वर्ग से घृणा करते थे उनसे व्यवहार रखना भी बुरा समझते थे। तुलसी ने मानस में ब्राह्मण कुलावत गुरु वशिष्ट को शूद्र कुल में उत्पन्न निषादराज से भेंट करते हुए दिखाकर ब्राह्म शूद्र में समन्वय स्थापित किया है। क्षत्रिय कुलोद्भव राम तुच्छ वानर, भालु विभीषण राक्षस तक का प्रेमालिंगन करते हैं। इस तरह उन्होंने उच्च एवं निम्न वर्गों में भी समन्वय की प्रेरणा दी।

(vii) **लोक और शास्त्र का समन्वय**–तुलसी के मानस में जहाँ एक ओ 'नाना पुराण निगमागम का सार संचित है, वहीं दूसरी ओर लोक पक्ष का विस्तृ स्वरूप भी उनके काव्य में पाया जाता है। उन्होंने सामाजिक आदर्शों एवं मर्यादाओं को शास्त्र सम्मत बतलाकर उनकी महत्ता को बढ़ाया। अपने चरित्र-नायकों द्वार लौकिक आदर्शों एवं मर्यादाओं को अपनाकर समाज के समक्ष आदर्श रखे। इस

ाने पर श्रीराम ने पार्थिव पूजा की और सीताजी ने गंगा की स्तुति कर मनोरथ पूरे करने की प्रार्थना की। देखिये--

तब मज्जन करि रघुकुल नाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा।।
सिय सुरसरिहि कहेउ कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउबि मोरी।।

(viii) **पारिवारिक क्षेत्र में समन्वय**—तुलसी ने पारिवारिक क्षेत्र के अन्त- पिता और पुत्र में, पति-पत्नी में, सास और पुत्र बधू में, भाई-भाई में, स्वामी- में तथा पत्नी-सपत्नी में भी समन्वय स्थापित किया। तुलसी के राम जितने भक्त हैं, उतने ही माताओं के भी भक्त हैं और माता-पिता भी राम के उतने ही हैं। ऐसे ही जितना आदर हुए अपनी सासों का करती है, उतना ही स्नेह सासों से भी प्राप्त होता है। साथ ही जितना स्नेह और प्रेम राम अपने यों से करते हैं उतना ही स्नेह और प्रेम उन्हें सेवकों से प्राप्त होता है। मे लौटते हुए मंत्री सुमन्त की जो स्थिति थी, वह इसी स्नेह के कारण थी।

"राम लखन सिय पद सिरु नाई। फिरेउ बनिक जिमि मूर गँवाई।।"

इस प्रकार तुलसी ने पारिवारिक जीवन में समन्वय स्थापित करते हुए एक दर्श परिवार की प्रतिष्ठा की।

(ix) **दार्शनिक समन्वय**—विभिन्न विद्वान् अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार सी को द्वैतवादी, अद्वैतवादी तथा विशिष्टा द्वैतवादी समझते हैं। इसका रण है कि तुलसी के काव्य में इन सभी दर्शनों का सार या विचार निहित है। नय पत्रिका के निम्नांकित पद में तुलसी ने दर्शन के उक्त तीनों मतों का उल्लेख रके उनमें समन्वय स्थापित किया है—

"कोऊ कह सत्य, झूठ कह कोउ, जुगल प्रबल कोउ मानें।
तुलसीदास परिहरै तीनों भ्रम, सो आपन पहिचानै।"

(x) **रामावत सम्प्रदाय एवं पुष्टि मार्ग में समन्वय**—तुलसी रामावत सम्प्र- य में दीक्षित थे। यह सम्प्रदाय राम को परब्रह्म मानकर उनके पाँच रूपों–पर, यूह, विभव, अन्तर्यामी और अर्चावतार के रूप में उनकी पूजा अर्चना करता है। लसी ने इन्हीं के अनुकूल श्रीराम के पावन चरित्र को प्रस्तुत किया है। पुष्टि ार्ग में ब्रह्म की कृपा या अनुग्रह को ही सर्वोपरि माना जाता है। बिना प्रभु कृपा पूजा-अर्चना से भी कुछ नहीं होता। तुलसी ने मानस में राम कृपा की महत्ता ी स्थापित कर उक्त दोनों सम्प्रदायों के विचारों में समन्वय स्थापित किया है। ानस में बाल्मीकि जी श्रीराम से कहते हैं—

सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई।।
तुम्हरिहि कृपा तुम्हहि रघुनन्दन। जानहिं भगत-भगत उर चन्दन।।

(xi) **साहित्यिक समन्वय**—तुलसी ने अपने काव्य में भाषा, छन्द, और कथा का सुन्दर समन्वय स्थापित किया। भाषा के क्षेत्र में उन्होंने अवधी और संस्कृत तीनों भाषाओं का समन्वय किया। मानस की रचना अ तथा शेष ग्रन्थों की रचना ब्रज भाषा में की। 'मानस' और 'विनय-पत्रि स्त्रोतों में संस्कृत गर्भित हिन्दी का प्रयोग करके संस्कृत और हिन्दी का समन्वय किया। उन्होने मात्रिक और वर्णिक दोनों ही प्रकार के छन्दों में रचना कर छन्द सम्बन्धी समन्वय स्थापित किया। विनय पत्रिका और मा उन्होंने समास शैली तथा सरल-सुबोध शैली, कथा शैली, तथा स्त्रोत शैली, णिक एवं ऐतिहासिक शैली आदि में भी समन्वय स्थापित किया। तुलसी ने वि ग्रन्थों से राम कथा को लेकर ऐसे कथा सम्बन्धी सुन्दर समन्वय को स्थापित है, जिससे निगमागम सम्मत होकर भी 'रामचरित मानस' सर्वथा अद्भुत, किक एवं मौलिक दिखाई पड़ता है।

निष्कर्ष—संक्षेप में कहा जा सकता है कि तुलसी उच्चकोटि के समन्वय कवि थे। इसीलिए वे एक कवि, महान् लोकनायक, सफल समाज सुधारक, भा संस्कृति के श्रेष्ठ प्रचारक एवं समाज में उन्नत आदर्श के संस्थापक कहलाते डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उचित ही कहा है—

"लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके क्योंकि भार जनता में परस्पर विरोधी नाना संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार नि और विचार पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्धदेव समन्वयकारी थे। गीता में सम की चेष्टा है और तुलसीदास भी समन्वयकारी थे।"

प्रश्न 9. "तुलसी के काव्य में भाव पक्ष और कला पक्ष अत्यन्त प्रौढ़ उक्त कथन की समीक्षा कीजिये।

अथवा

तुलसी के भाव पक्ष को उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिये।

अथवा

'तुलसी की काव्यकला' पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।

अथवा

'तुलसी रस सिद्ध कवि थे' उक्त कथन की विवेचना कीजिये।

उत्तर—तुलसीदास जी हिन्दी के उच्च कोटि के कवि हैं। सभी दृष्टिय उनकी कविता साहित्य में शीर्ष स्थान प्राप्त करने की अधिकारिणी है। उ कला केवल भारत में ही नहीं, अपितु विश्व में सम्मान्य है। वे भारत के अ कलाकार हैं। उनके साहित्य में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का अनुपम समन्वय मि है। उनका 'रामचरित मानस' स्वान्तः सुखाय होते हुए भी सुखाय है। वह

...ता सदृश्य जन मंगलकारी है। मानस में तुलसी ने कविता सम्बन्धी अपने ...ारों को निम्नांकित रूप में व्यक्त किया है।

'कीरति भनित भूति भल सोई। सुरसरि सम सब कर हित होई॥

तुलसी की कविता इस कसौटी पर खरी उतरती है। काव्य कला के ...न्ध में उन्होंने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहा था--

"कवि न होउँ नहिं वचन-प्रवीन्। सकल कला सब विद्या हीनू॥"
"कवित्त विवेक एक नहिं मोरे। सत्य कहहुँ लिखि कागज कोरे॥"

तुलसी की काव्य कला—काव्य के दो पक्ष होते हैं—भाव पक्ष और कला ...। कुछ कवियों का भाव पक्ष सुन्दर होता है तो कुछ कवियों का कला पक्ष। ...त कम कवि ऐसे होते हैं जिनका काव्य भाव पक्ष और कला प्रक्ष दोनों दृष्टि से ...रपुष्ट और समुन्नत हो। तुलसी एक ऐसे ही आदर्श महाकवि हैं जिनका भाव ... भी उत्कृष्ट है और कला पक्ष भी। अब हम तुलसी की काव्य कला की दोनों दृष्टियों से समीक्षा करें।

तुलसी काव्य का भाव सौन्दर्य—तुलसी का काव्य भाव प्रधान है। उनकी ...वानुभूति की यह विशेषता है कि वह काव्य मर्मज्ञों तथा सर्व साधारण को ...मान रूप से आनन्दित करती है। उनके भावों को समझने के लिए कला मर्मज्ञ ...ना आवश्यक नहीं।

(i) **मानव प्रकृति का सफल चित्रण**—तुलसी का काव्य स्वान्तः सुखाय ...ते हुए भी समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। यही कारण है कि तुलसीकृत ...ामचरित मानस' का अध्ययन हिन्दी के समस्त ग्रन्थों से अधिक हुआ है और हो ...हा है। एक ओर उसमें सर्वसाधारण को भाव मग्न होते हुए देखा जाता है तो ...सरी ओर वह सुविज्ञ जनों के लिए गम्भीर अध्ययन की सामग्री प्रस्तुत करता ...। तुलसी के पात्र शिव और अशिव दोनों वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। राम ...शव' के आदर्श रूप हैं तो रावण 'अशिव' का। दोनों विरोधी पात्र अपनी ...म्पूर्णता को लिए है। तुलसीदास जी ने बाह्य प्रकृति चित्रण की अपेक्षा मानवीय ...न्तः प्रकृति का चित्रण अधिक सफलता और स्वाभाविकता के साथ किया है। ...न्होंने अपने आदर्श और समन्वय सभी प्रकार के चरित्र-चित्रण में पात्रों की मनो- ...त्तियों का सूक्ष्म चित्रण किया है। उनके पात्र माता-पिता, पति-पत्नी, पुत्र, बन्धु ...वक आदि का आदर्श स्वरूप प्रकट करते हैं।

(ii) **मार्मिक स्थलों की पहचान**—वही कवि प्रतिभाशाली है जो अपने ...र्य विषय के मार्मिक स्थलों को भली-भाँति पहचान लेता है और उनका यथा- ...य निरूपण करता है। मानस में अनेक मार्मिक स्थल हैं और उनका पूर्ण विवेचन

पूरी तल्लीनता से तुलसी ने किया है। उनकी रचनाओं में मानसिक संघर्ष अन्तर्द्वन्द्व के अच्छे उदाहरण मिलते हैं। दैवी और आसुरी मनोवृत्तियों के में दैवी मनोवृत्ति की विजय होती है। धर्म और अधर्म के संघर्ष में धर्म की होती है। राम कथा के तुलसी प्रकाण्ड पण्डित है। राम कथा के मार्मिक स्थल मर्मस्पर्शी वर्णन पाठक को भावोदधि में आकण्ठ मग्न कर देता है। आ रामचन्द्र शुक्ल ने उचित ही कहा है—

"मानव प्रकृति के जितने अधिक रूपों के साथ गोस्वामी जी के हृद रागात्मक सामंजस्य हम देखते हैं उतना अधिक हिन्दी भाषा के किसी और के हृदय का नहीं।

(iii) **रस निरुपण**—रस निरुपण की दृष्टि से तुलसी का काव्य रस अनुपम भण्डार है। उनके काव्य में नव रसों की सरस और मधुर अभिव्यि है। रसराज श्रृंगार का वर्णन भी अत्यन्त संयत और मर्यादित है। उसमें क कामुकता अथवा अश्लीलता के दर्शन नहीं होते। मानस का 'फुलवारी इसका अनूठा उदाहरण है। एक उदाहरण देखिये—

"करत बतकही अनुज सन, मनप्रिय रूप लुभान।
मुख सरोज मकरन्द छवि, करई मधुप इव पान॥"
"देखन मिस मृग विहग तरु, फिरइ बहोरि-बहोरि।
निरखि-निरखि रघुवीर छवि, बाढ़इ प्रीति न थोरी॥"

दूल्हा दुलहिन के वेष में राम-सीता का यह श्रृंगार युक्त रूप देखिये—
"दूल्हा श्री रघुनाथ बने, दुलही सिय श्रृंगार मन्दिर माही।
गावत गीत सबै मिलि सुन्दरि, वेद जुवा जुरी विप्र पढ़ाही।
राम को रूप निहारति जानकी, कंकन के नग को परछाही।
यातें सब सुधि भूल गई, कर टेकि रही पल टारत नाहीं॥"

वियोग श्रृंगार का वर्णन भी अच्छा हुआ है। राम पूछते हैं—

"हे खग हे मृग मधुकर श्रेणी;
तुम देखी सीता मृग नयनी।"

'लंका दहन' वर्णन मे भयानक और वीभत्स रस का अच्छा चित्रण है। 'भयानक रस' का एक उदाहरण देखिये—

"लागि-लागि आगि, भागि-भागि चले जहां तहा,
धीय को न माय, बाप पूत न संभारहि।
छूटे वार वसन उघारे धूम धुन्ध अन्ध,
कहे बारे बूढ़े वारि वारि वारहि॥

हय हिनहिनात, भागे जात घहरात राज,
भारी भीर ठेलि पेलि रौंदि खौंदि डारही।
नाम लै चिलात, बिललात अकुलात अति,
तात-तात तौंसियत, झौंसियत झारही ।।"

धनुष यज्ञ के अवसर पर 'रौद्र रस' का सुन्दर वर्णन हुआ है--

"रघुबंसिन्ह महं जहं कोउ होइ। तिहि समाज अस कहय न कोई ।।
कही जनक अस अनुचित वाणी। विद्यमान रघुकुल मणि जानी ।।"

'हास्य रस' की एक व्यंजना देखिये--

"विन्ध्य के वासी उदासी तपोव्रत धारी महा बिनु नारि दुखारे।
गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनी भे मुनि वृन्द सुखारे।
ह्वै हैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद-मंजुल कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायक जू करुणा करि कानन को पगु धारे ।।"

हास्य की ऐसी अनूठी व्यंजना अन्यत्र दुर्लभ है। स्त्रियों के अभाव में दुःखी मुनिगण सभी शिलाओं के चन्द्रमुखी बन जाने पर एक-एक के स्थान पर अनेक चन्द्रमुखियों को पाने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे। ऐसी हास्य युक्त कल्पना तुलसी जैसे कुशल कलाकार को ही सूझ सकती थी।

लक्ष्मण-शक्ति का प्रसंग 'करुण रस' का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है--

"मेरो सब पुरसारथ थाको।
विपति बटावन हार बन्धु बिनु करहुँ भरोसो काको ।।"

गीतावली में 'वात्सल्य रस' के अनेक सरस मनोहारी चित्र हैं। एक चित्र का अवलोकन कीजिये--

कबहुँ ससि माँगत आरि करैं, कबहुँ प्रतिबिम्ब निहारि डरैं।
कबहुँ करताल बजाइ कै नाचत, मातु सबै मन मोद भरैं।
कबहुँ रिसिआइ कहैं हठि कै, पुनि लेत सोइ जेहि लागि अरैं।
अवधेस के बालक चारि सदा, तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं ।।"

तुलसी के काव्य में मुख्यतः शान्त रस ही है। विनय-पत्रिका के सभी पदों में 'शान्त-रस' की धारा प्रवाहित हुई है। केवल एक उदाहरण ही अवसरोचित होगा—

"सुन मन मूढ़ ! सिखावन मेरो।
हरिपद विमुख लह्यो न काहु सुख, सठ यह समुझ सबेरो।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तुलसी के काव्य में सभी रसों का सम्यक् अवतरण हुआ है। रस-निरुपण की दृष्टि से तुलसी रस-सिद्ध कवि हैं।

तुलसी के कला पक्ष का सौन्दर्य—भाव पक्ष की भाँति तुलसी का पक्ष भी प्रबल एवं पुष्ट है। तुलसी के काव्य में इन दोनों का मणि-कांचन मिलता है। तुलसी कबीर की भाँति मसि-कागज से अछूते नहीं थे। काशी-मे उन्होंने वेद-पुराण, आगम-निगम आदि का गम्भीर अध्ययन किया था। की भाँति उन्हें भाषा में कविता करने म भी लज्जा का अनुभव नहीं होता उनका दृष्टिकोण था—

"का भाषा का संस्कृत, भाव चाहिए सांच।
काम जू आवे कामरी, का लै करे कमाच॥"

(i) **काव्य गुण**—तुलसी के काव्य में माधुर्य' प्रसाद और ओज गुणों का समावेश हुआ है। माधुर्य गुण का एक उदाहरण देखिये—

"कंकन, किंकनि, नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन राम हृदय गुनि।

ओज गुण के उदाहरण वीर और रौद्र रसों के वर्णनों में देखे जा सक जन-जन की वाणी से मुखरित होने वाली चौपाइयाँ तुलसी काव्य के प्रसाद की परिचायक हैं।

(ii) **अलंकार**—तुलसी काव्य में अलकारों का स्वाभाविक और प्रयोग हुआ है। शब्दालंकारों के प्रयोग ने तुलसी की भाषा का सौन्दर्य निखा तो अर्थालंकारों के प्रयोग ने भाव सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिये हैं। वास्त शब्दालकारों और अर्थालंकारों दोनों के प्रयोग ने तुलसी की भाव गंगा म कालिन्दी के सुन्दर संगम का सुहावना दृश्य उपस्थित कर दिया है। कुछ अलंकारों के उदाहरण दृष्टव्य हैं—

(1) **उपमा**–(i) अरविन्द सों आनन, रूप मरन्द, आनन्दित भृंग पियै।
(ii) 'पीपर पात सरिस मन डोला।'

(2) **रूपक**–(i) आरज सुत पद कमल बिनु बादि जहाँ लगि नात
(ii) जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं न सिन्धु अपारा।
(iii) अवधेस के बालक चारि सदा, 'तुलसी' मन मन्दि बिहरैं।"

(3) **उत्प्रेक्षा**—(i) "सुनि सुमंत्र सिय सीतलि बानी।
भयउ बिकल जनु फनि मनि हानि॥"
(ii) चित्रकूट जनु अचल अहेरी।
चुकइ न घात मुठ भेरी॥"

(iii) लखन जानकी सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि वेष जनु रति रितुराज समेत॥

(4) **दृष्टान्त**—(i) राम लखन सिय पद सिरु नाई।
फिरेउ बनिक जिमि मूर गवांई॥

(ii) हरि पद विमुख लह्यो न काहु सुख, सठ यह समुझि सबेरो।
बिधुरे ससि रवि मम नैननि ते पावत दुख बहुतेरो॥

(5) **क्रम अलंकार**—"सत्रु मित्र मध्यस्थ तीनि ये, मन कीन्हें बरिआई।
त्यागन गहन उपेच्छनीय, अहि हाटक तृन की नाई॥"

(6) **व्यतिरेक**—"सिय मुख सरद कमल जिमि किमि कहि जाई।
निसि मलिन वह, निसि दिन यह विगसाई॥"

(7) **असंगति**—'हृदय घावु मेरे, पीर रघुवीरे!'

(8) **उल्लेख**—"जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।"

(9) **यमक**—'हे विधि! मिले कथन विधि वाला।'

(10) **विभावना**–'शून्य भीति पर चित्र रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे।'

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि तुलसी के काव्य में अलंकारों का सरस मनोरम प्रयोग हुआ है।

(iii) **छन्द विधान**—छन्द विधान की दृष्टि से देखे तो तुलसी ने मात्रिक वर्णिक दोनों ही प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। दोहा, चौपाई, सोरठा, छप्पय आदि तुलसी के प्रमुख मात्रिक छन्द हैं तो मतगयन्द, कवित्त, जा, मालिनी आदि वर्णिक छन्द। गीतावली और विनय पत्रिका में विविध रागनियों की सरस रचना की है। प्रबन्ध काव्य के लिए तुलसी ने दोहा-चौपाई उपयुक्त माना है तो नीति के लिए दोहा शैली को। इस प्रकार तुलसी ने अपने र्ती तथा समकालीन सूफी कवियों की शैलियों में काव्य रचना की है।

(iv) **भाषा**—तुलसी के कला पक्ष को समुन्नत बनाने में भाषा पक्ष का कुछ हाथ रहा है। तत्कालीन काव्य प्रचलित भाषाओं पर तुलसी का पूर्णा- र था। उन्होंने ब्रज और अवधी दोनों में समान रूप से उच्च कोटि की रच- का निर्माण किया है। उनकी भाषा परिष्कृत और परिमार्जित है। जायसी ठ अवधी भाषा को उन्होंने संस्कृत मिश्रित करके साहित्यिक रूप प्रदान किया तुलसी की अवधी में संस्कृत की कोमल कान्त पदावली के समावेश से अपूर्व गुण का समावेश हो गया है।

तुलसी का काव्य विन्यास और शब्द चयन निर्दोष एवं प्रसंगानुकूल है। भाषा में तद्भव शब्द भी है तो अरबी-फारसी के जन-प्रचलित शब्द भी। क्तियों के प्रयोग ने तो उनकी भाषा को और भी अधिक सजीव बना दिया

है। तुलसी की अनेक चौपाइयाँ स्वयंमेव लोकोक्तियाँ बन गई हैं। कुछ उदाहर निम्नानुसार है—

(i) भई गति साँप छछुन्दर केरी।
(ii) प्राण जाहि पर वचन न जाई।
(iii) कोउ नृप होय हमें का हानि।
(iv) होई है सोइ जो राम रचि राखा।
(v) कठिन करम गति कछु न बसाई।
(vi) भयउ विकल जनु फनि मनि हानी।
(vii) फिरेउ बनिक जिमिक मूर गँवाई।
(viii) का वर्षा जब कृषि सुखाने।

निष्कर्ष—उक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि तुलसी क काव्य कला उच्च कोटि की ही नहीं अपितु अद्वितीय है। काव्य के दोनों पक्ष भा पक्ष और कला पक्ष प्रबल एवं पुष्ट है, रस परिपाक, छन्द और अलकार योजन भाषा सौन्दर्य सभी दृष्टि से तुलसी की काव्य कला अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँच हुई है। उनके सम्बन्ध में श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की यह उि शत-प्रतिशत सत्य एव चरितार्थ है कि—

"कविता करके तुलसी न लसे,
कविता लसी या तुलसी की कला।"

4. रहीम

प्रश्न 10. "रहीम हिन्दी के नीतिकार कवियों में सबसे अधिक लोकप्रि और अग्रणी हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिये।

उत्तर—नीति काव्य का स्वरूप—'नीति' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की 'णीय् धातु से हुई मानी जाती है। 'णीय्' का शाब्दिक अर्थ है आगे ले जाना या प्रगति मानव स्वभावतः ही प्रगति का इच्छुक रहता है। अतः नीति के लिए उसका बड़ महत्व है। प्रगति का आधार ही नीति है। नीति के अभाव में प्रगति की कल्पन भी कठिन है।

'शुक्रनीति सार' नामक ग्रन्थ में नीति की महत्ता बतलाते हुए कहा गय है—

"जिस प्रकार भोजन के बिना प्राणियों की देहस्थिति नहीं होती उस प्रकार नीति के बिना लोक की व्यवहार स्थिति नहीं होती।" यही कारण है कि विश्व में प्रायः सभी महान् कवियों के काव्य में नीति के स्वर मुखरित हुए हैं प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ ने तो प्रत्येक महान् कवि को नीति का शिक्षक मान हुए लिखा है—

"Every great Poet is a teacher. I wish to be either con-
ed as a teacher or as nothing at all."

राष्ट्रकवि **मैथिलीशरण गुप्त** ने काव्य में नीति का महत्व बताते हुए कहा

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिये।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिये॥"

पाश्चात्य **समीक्षक रस्किन** भी नीति युक्त कला के पक्षधर थे। एक स्थान
न्होंने लिखा है—

"कलाएँ मानव के लिए उपदेशात्मक होनी चाहिये क्योंकि उपदेश ही
चरम लक्ष्य होता है।"

नीति काव्य के आवश्यक गुण—नीति काव्य में निम्नलिखित आवश्यक
पाये जाते हैं—

1. उसमें किसी नीति या उपदेश का वर्णन रहता है।

2. कथन में विशिष्टता होती है। अर्थात् नीति या उपदेश इस चमत्कार
ढंग से वर्णित किया जावे कि मन पर उसका प्रभाव पड़ सके।

3. भाषा सरल, स्वाभाविक एवं प्रवाहपूर्ण हो।

4. कथन में स्पष्टता तथा प्रभावोत्पादकता लाने के लिए अनूठे दृष्टान्त या
हरणों का प्रयोग हो।

रहीम के काव्य में उक्त चारों विशेषताएँ पाई जाती हैं।

हिन्दी में नीति काव्य—संस्कृत साहित्य में नीति, अन्योक्ति तथा सुभाषितों
अनेक ग्रन्थ हैं। हिन्दी में भी इनकी सुदीर्घ परम्परा रही है। चन्द्रवरदायी,
नक, कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, केशव, बिहारी, भारतेन्दु, प्रसाद, पन्त,
लीशरण गुप्त आदि ऐसे अनेक कवि हुए हैं जिनके काव्यों में नीति काव्य के
र उदाहरण यत्र-तत्र देखने को मिलते हैं। इनके अतिरिक्त तुलसी, वृन्द,
त, बिहारी, मतिराम, भूपति, चन्दन, राम, विक्रम, हरिऔध, करुण, वीर
ई आदि ग्रन्थों; उपदेश शतक, नीति शतक, अन्योक्ति शतक आदि शतक ग्रन्थों,
धर और हितवृन्दावनदास की कुण्डलियों आदि में नीति सम्बन्धी सुन्दर कथन
सूक्तियाँ देखने को मिलती है।

रहीम का नीति काव्य—रहीम के नीति काव्य में नीति काव्य सम्बन्धी सभी
षताएँ पाई जाती है। रहीम के नीति काव्य की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(i) **लोक-जीवन और व्यवहार का व्यापक अनुभव**—रहीम ने जीवन के
उतार-चढ़ावों का अनुभव किया था। वे चार वर्ष की आयु में ही पिता के
अकबर के राज्य से निर्वासित हुए तथा अल्पायु में ही उन्हें पिता की मृत्यु का

असह्य दुःख सहना पड़ा था। अपनी प्रखर प्रतिभा से उन्होंने पुनः अकबर का जीतकर उसके नवरत्नों में महत्वपूर्ण स्थान पाया। वे सेनापति, युद्ध नायक अनेक प्रान्तों के सूबेदार रहे। अकबर ने इनके पराक्रम, प्रतिभा से प्रसन्न होकर बार इन्हें अपार धनराशि भेंट की। पारिवारिक दृष्टि से ये युवावस्था में वि सुखी रहे। महाबानू जैसी सुन्दर और सुशील पत्नी के साथ इनके छः पुत्र और पुत्रियाँ इनके पारिवारिक सुख और वैभव के प्रतीक थे। जीवन के अन्तिम दि में इन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। चार-चार पुत्रों की मृत्यु त दोनों पुत्रियों का असमय ही विधवा हो जाना पारिवारिक दुःख की चरम सी थी। राजद्रोह का गम्भीर आरोप लगाकर अकबर के बाद जहाँगीर ने इनसे सा जागीरें छीन ली। जीवन की इन वास्तविकताओं को उन्होंने निकट से देखा ए भोगा था। दरबार या राजकार्य से सम्बन्धित होने के कारण इनका सम्पर्क व्य पक था। जीवन की गहरी संवेदना और विशाल अनुभव उनके पास था। अ उनके नीति कथन लोगों को अधिक प्रभावित कर सके और इसीलिए उनके दो में मानव जीवन के विविध पक्षों का सुन्दर उद्घाटन हुआ है।

अपने जीवन के अन्तिम दिनों का उल्लेख रहीम ने अपने निम्न दोहों किया है—

(i) "जो रहीम दर-दर फिरै, माँगि मधुकरि खाहि।
यारो यारी छोड़ दो, अब रहीम वे नाहि॥"

(ii) "खरच बढ़्यो उद्यम घट्यो, नृपति निठुर मन कीन।
कहु 'रहीम' कैसे जिए, थोरे जल की मीन॥"

(iii) "आदर घटै नरेस ढिग, बसे रहै कछु नाहि।
जो 'रहीम' कोटिन मिलै, धिक जीवन जग माहि॥"

(ii) **कथन की मार्मिकता और विशिष्टता**—रहीम ने अपने अनुभवों क ऐसे मार्मिक ढग से दोहों म रखा है कि पाठक और श्रोता उससे अभिभूत ह जाते हैं। प्रायः यह देखने में आता है कि जब मनुष्य विपत्ति में होता है तो उसके सम्बन्धी भी मुँह फेर लेते हैं और ऐसे बुरे दिनों में जिन्हें सहायता दी वे भी कष्ट देने वाले हो जाते हैं। रहीम ने जीवन के इस सहज सत्य को कितने सुन्दर ढंग से कहा है—

"जिहि अंचल दीपक दुर्यौ, हन्यों सो ताही गात।
रहिमन असमय के परे, मित्र शत्रु ह्वै जात॥"

धन ही मनुष्य को मान देता है, विपत्ति में सहायक होता है। यदि पास धन नहीं है तो अपने भी कष्ट देने लगते हैं। रहीम ने नीति की इस बात को ऐ ढंग से कहा है कि उसमें एक विशेष चारुता और मार्मिकता आ जाती है। यथा-

"जब लगि बित न आपुने, तब लगि मित्र न कोय।
रहिमन अम्बुज अ[illegible] बिनु, रवि ताकर रिपु होय॥"

सच ही है कि पैसे के बिना कौन किसका मान देता है। कमल जब पानी [illegible] हो जाता है तो उसका हित चिन्तक सूर्य भी उसे दग्ध करने लगता है। जग का व्यवहार और भक्ति दोनों कार्य एक साथ सम्भव नहीं क्योंकि जग [illegible] बिना असत्य के चलता नहीं और दूसरी ओर परमात्मा की प्राप्ति झूठ [illegible] की नहीं जा सकती। सत्यासत्य के इस झमेले में जीवन एक कठिनाई बन- [illegible] जाता है—

"अब रहीम मुसकिल पड़ी, गाढ़े दोउ काम।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिले न राम॥"

प्राय कहा जाता है कि गुरुजनों की सभी आज्ञाओं को सिरोधार्य करना [illegible]ये, पर रहीम गुरुजनों की अनुचित बात मानने का विरोध करते हैं और [illegible]त देते हुए लिखते हैं—

"अनुचित वचन न मानिए, जदपि गुरायसु गाढ़ि।
है 'रहीम' रघुनाथ ते, सुजस भरत को बाढ़ि॥"

रहीम के प्रायः सभी दोहे कथन की इसी मार्मिकता और विशिष्टता के [illegible]ण लोक में अत्यन्त प्रिय और साहित्य की अनुपम निधि बन सके हैं।

(iii) **भाषा की सहजता और सरलता**—रहीम के दोहों की भाषा सर्वत्र, [illegible], सुबोध और स्वाभाविक है। उनके दोहों में बिहारी की तरह शब्दों की तोड़- [illegible]ड़ और भाषा का कृत्रिम रूप देखने को नहीं मिलता और न ही वह केशव के [illegible]न दुरुह है। भाषा की सरलता और सादगी के कारण ही रहीम के दोहे अन- [illegible] और निरक्षर व्यक्तियों की जबान पर भी चढ़ गये। रहीम की लोकप्रियता का [illegible] बहुत बड़ा कारण उनकी भाषा का अकृत्रिम और सरल होना भी है।

(iv) **दृष्टान्तों की मौलिकता**—'सतसई सप्तक' की भूमिका में डॉ. श्याम [illegible]रदास ने नीति काव्य के लिए अनूठे दृष्टान्त का नियोजन होना भी आवश्यक [illegible]ा है। कुछ दोहों को छोड़कर सर्वत्र रहीम ने ऐसे सुन्दर और सार्थक दृष्टान्तों [illegible] उपमाओं का विधान किया है कि देखते ही बनता है। दृष्टान्तों और उपमाओं [illegible]चयन में उनकी मौलिक सूझ-बूझ की दाद देनी पड़ती है। मनुष्य को सोच- [illegible]झकर ही बात करनी चाहिये और व्यवहार करना चाहिये क्योंकि किसी कारण- [illegible] यदि बात बिगड़ जाती है तो फिर उसका बनना सम्भव नहीं हो पाता। जैसे कि [illegible] एक बार भी दूध फट गया तो फिर लाख कोशिश करने पर भी उसे मथ कर [illegible]खन नहीं निकाला जा सकता। रहीम ने इस कथन की पुष्टि में सचमुच बड़े [illegible] और सार्थक दृष्टान्त की आयोजना की है—

'बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥"

अनेक दृष्टान्त प्रयोग के और भी कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं--

(i) 'जो 'रहीम' ओछो बढ़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादे से फरजी भयो, टेढ़ो-टेढो जाय॥'

(ii) 'धन थोरो, इज्जत बड़ी, कहि रहीम का बात।
जैसे कुल की कुल वधू, चिथड़न माहि समात॥'

(iii) 'आप न काहू काम के, डार, पात फल फूल।
औरत को रोकत फिरैं, रहिमन पेड़ बबूल॥

(iv) 'थोथे बादल क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भये, करैं पाछिली बात॥'

(v) 'जे रहीम विधि बड़ किए, को कहि दूषन काढ़ि।
चद्र दूबरो कूबरो, तऊ नखत ते बाढ़ि॥'

निष्कर्ष--उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि रहीम दोहे हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। अपने विशिष्ट गुणों के कारण उनके दो हिन्दी नीति काव्य की सबसे सुन्दर देन माने जा सकते हैं। यही कारण है कि रहीम हिन्दी के नीतिकार कवियों में सबसे अधिक लोकप्रिय और अग्रणी हैं।

प्रश्न 11. "रहीम जी का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न है। कवि ज्ञान, भक्ति, नीति और शृंगार का समन्वित स्वरूप अपने काव्यों में प्रस्तुत कर अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है।" समीक्षा कीजिये।

अथवा

"रहीम के छोटे-छोटे दोहों में जीवन की अमूल्य अनुभूतियों के साथ काव्य सौन्दर्य भी विद्यमान है। इस कथन को स्पष्ट कीजिये।

अथवा

रहीम के काव्य सौन्दर्य को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।

उत्तर--रहीम सम्राट अकबर के प्रसिद्ध सेनापति, नवरत्नों में से एक प्रमुख रत्न, विद्वान् और सहृदय कवि थे। उनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था सम्राट अकबर के अभिभावक बैराम खाँ इनके पिता थे। ये अरबी, फारसी और तुर्की भाषाओं के विद्वान् तो थे ही, संस्कृत एवं हिन्दी भाषाओं के भी अच्छे ज्ञाता थे। गोस्वामी तुलसीदास पर इन्हें विशेष श्रद्धा थी। अपने अन्तिम निर्वासन के दिनों में ये कुछ दिन चित्रकूट में उनके साथ रहे भी थे। रहीम को पौराणिक साहित्य का गहरा ज्ञान था जिसका प्रभाव हमें उनके साहित्य में सर्वत्र

होता है। उनकी काव्य शैली सम्पूर्णतः मुक्तक ही है। स्वयं कुशल कवि
तिरिक्त वे कवियों के आश्रय दाता भी थे।

काव्य रचनाएं—रहीम द्वारा रचित अनेक ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है। उनके महत्वपूर्ण ग्रन्थ निम्नलिखित है—(1) रहीम दोहावली, (2) बरवै भेद (3) मदनाष्टक (4) रास पंचाध्यायी (5) शृंगार सोरठ (6) नगर और (7) बाबर के आत्म-चरित्र का तुर्की भाषा से फारसी भाषा में।

काव्यगत विशेषताएं—रहीम के काव्य में स्वानुभूतियाँ सर्वत्र मुखर है। काव्य के क्षेत्र में तो उनका स्थान सर्वोपरि है। उनके काव्यों में व्यावहारिक भक्ति, शृंगार और प्रेमभाव के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। संक्षेप में काव्यगत विशेषताएं निम्नलिखित हैं—

(1) **नीति**—रहीम का अधिकांश काव्य नीति परक है। उनके नीति सम्बन्धी में जीवन का निचोड़ है। उनकी नीति सम्बन्धी बड़ी से बड़ी बात को दोहे जैसे छन्द में कहने म सिद्धहस्थता प्राप्त था। उनका काव्य नीति का महासागर कहा कता है। उन्होंने लोक व्यवहार, मधुर भाषण का महत्व, धन का महत्व, का महत्व, शील और सदाचार का महत्व, आत्म संयम का महत्व, संगति भाव, मित्र की पहचान, दुष्टों व सज्जनों का स्वाभाव चित्रण, पतिवर्ता का , विपत्ति और परिमन, मूर्ख निन्दा, कपटपूर्ण आचरण की पहचान, सच्चा आदि पर अनेक नीति परक दोहों की रचना की है। मित्रता का एक उदा- देखिये—

> टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सो बार।
> रहिमन फिर-फिर पोइये, टूटा मुक्ताहार॥

(2) **ज्ञान**—मुसलमान होते हुए भी रहीम हिन्दू संस्कृति मे भलि-भाँति परि- थे। अपने अनेक दोहों में उन्होंने हिन्दुओं की पौराणिक कथाओं और सामा- रीतियों का मनोहारी उल्लेख किया है। इनकी नीति परक उक्तियों पर न के कवियों का प्रभाव देखने को मिलता है। पौराणिक आख्यानों के एक उदाहरण देखिये—

> (i) 'जो बड़ेन को लघु कहैं, नहिं रहीम घटि जाहिं।
> गिरिधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं॥'
> (ii) अनुचित वचन न मानिये, जदपि गुरायसु गाढ़ि।
> है रहीम रघुनाथ ते, सुजस भरत को बाढ़ि॥

(3) **भक्ति**—रहीम मुसलमान थे, पर उनके हृदय में कृष्ण के प्रति अगाध भाव था। कृष्ण भक्ति से सम्बन्धित इनके अनेक दोहे, कवित्त और सवैये हैं।

जिनमें उनके सरस भक्त हृदय के समर्पण भाव के स्पष्ट दर्शन होते हैं। कृष्ण उनका अनन्य विश्वास निम्नांकित दोहे में स्पष्ट होता है—

'रहिमन कोउ का करै, ज्वारी चोर लबार ।
जो पत राखनहार है, माखन चाखन हार ॥'

रहीम की भक्ति एकनिष्ठा से पूर्ण और समर्पण भाव की थी। यथा—

'जदपि बसत है सजनी, लाखन लोग ।
हरि बिन कित यह चित को, सुख संजोग ॥'

रहीम ने अपने कुछ दोहों में श्रीराम, शिव, विष्णु, गंगा, लक्ष्मी आ देवताओं का भी उल्लेख किया है। यथा—

'अच्युत चरण तरंगिनी, शिव सिर मालती माल ।
हरि न बनाओ सुरसरि, कीजे इन्दव भाल ॥'

वे हरि होने की बजाय शिव बनकर गंगा को सिरोधार्य करने में अप गौरव मानते हैं। इससे उनकी भक्ति सम्बन्धी विचारों का ज्ञान होता है।

(4) शृंगार—दरबारों में रहने के कारण रहीम के काव्य पर शृंगार व्यापक प्रभाव है, पर तुलसी की भांति उसमें कहीं भी अश्लीलता नहीं है। रही के शृंगार चित्रण में भी एक शालीनता और मधुरता है। मोहन गान का उल्ले करते हुए उनकी नायिका कहती है—

'अति अद्भुत छबि-सागर, मोहन गात ।
देखत ही सखि बूड़त, दृग-जलजात ॥'

श्रीकृष्ण के नेत्र सौन्दर्य सम्बन्धी एक अन्य कथन देखिये—

"अन्तरगत हिय बेधत, छेदत प्राण ।
विष सम परम सबन ते, लोचन बाण ॥"

लोचन रूपी बाणों का सौन्दर्य विष सम मारक है। अन्तर्गत हिय औ प्राण सब बिंध जाते हैं। कितना मनोहारी शृंगार वर्णन है।

(5) प्रेम—रहीम के प्रेम में एकनिष्ठता, अनन्यता और प्रिय के प्रति ह आस्था का भाव पाया जाता है। सच्चा प्रेम सदा समान रहता है। उसमें लोक व्यवहार के समान घटत-बढ़त नहीं चलती। वह ऐसा अग्नि पथ है, जिस पर ह कोई नहीं चल सकता। प्रेम मार्ग के पथिक को बलिदान, त्याग व समर्पण के भाव से सम्पन्न रहना चाहिये। प्रतिदान की कामना व्यर्थ है—

'यह न रहीम सराहिये, लेन-देन की प्रीति ।
प्रानन बाजी राखिये, हार होय की जीति ॥'

प्रीतम की बाँह सुलभ होने पर रहीम के लिए बैकुण्ठ का सुख और कल्प-वृक्ष की सुखद छाया भी त्याज्य है। देखिये—

'कहा करौं बैकुण्ठ लै, कल्पवृक्ष की छाँह।
रहिमन ढाक सुहावनौं, जो गल प्रीतम-बाँह ॥'

(6) स्वानुभूतियां—रहीम के काव्य में स्वानुभूतियाँ सर्वत्र मुखर हैं। जीवन जगत का उन्हें व्यापक अनुभव था। जीवन के सुख-दुख के मीठे-खट्टे फल न्होंने भली प्रकार चखा था। उनका जीवन विविध अनुभवों का आगार था। ी उपमाओं और दृष्टान्तों में भी मौलिकता और स्वानुभव की गहरी छाप है। न के अन्तिम दिनों में जब जहाँगीर इनसे रूष्ट था तो इन्हें बड़ी कठिनाई में वन यापन करना पडा था। खर्च बढ़ा हुआ था, आय कम थी और जीवन र हो गया था। यथा—

"खरच बढ्यो उधम घट्यो, नृपति निठुर मन कीन।
कहु रहीम कैसे जिए, थोरे जल की मीन ।।

एक अन्य उदाहरण देखिये—

"कैसे निबहै निबल जन, करि सबलन सौं बैर।
रहिमन बसि सागर विषै, करत मगर सौं बैर।"

संक्षेप में रहीम का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न है। उनके काव्य में ं ज्ञान, प्रेम, भक्ति, नीति, शृंगार, स्वानुभूतियों का समन्वित स्वरूप देखने को लता है। यही कारण है कि रहीम का हिन्दी के कवियों में सम्मानित स्थान है।

कला सौन्दर्य—रहीम का कला पक्ष भी उनके भाव पक्ष के समान ही प्राढ़ वं प्राजल है। कला पक्ष की स्वाभाविकता ने उनकी काव्य शोभा को द्विगुणित र दिया है। उन्होंने ब्रज व अवधी दोनों भाषाओं का समान रूप से प्रयोग किया । उनकी कविता में न केवल हिन्दी की प्रचलित लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है, रन् उनके अनेक दोहे लोकोक्तियों के रूप में व्यवहृत होने लगे हैं। जन मानस पर नका प्रभाव देखते ही बनता है।

सरलता, सरसता व सुबोधता उनकी भाषा के विशिष्ट गुण है। रहीम ाव्य के लोकप्रिय होने का एक प्रमुख कारण उनकी भाषा की सुबोधता ही है। हीम की काव्य शैली सम्पूर्णतः मुक्तक है।

रहीम ने अनेक प्रकार के छन्दों से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी है। ाठ्य-पुस्तक में रहीम के दोहे और बरवै छन्दों में लिखित काव्य को संकलित किया या है।

रहीम के काव्य में अलंकारों का स्वाभाविक और संतुलित प्रयोग हुआ है, जो उनके अभिव्यक्ति पक्ष की एक अन्य विशेषता है। नीति कवि होने के कारण उनके काव्य में 'दृष्टान्त' अलंकार की भरमार है, पर अन्य अनेक अलंकारों का भी उसमें समुचित प्रयोग हुआ है। इस दृष्टि से कुछ उदाहरणों का उल्लेख करना अनुचित न होगा। यथा—

(1) **उपमा**--'थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भये, करैं पाछिली बात ॥'

(2) **रूपक**—रहिमन नैन-तुरंग चढ़ि, चलिबो पावक माहिं।
प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नाहिं ॥

(3) **यमक**—रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुस, चून ॥

(4) **श्लेष**--जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो करै, बढ़े अंधेरों होय ॥

(5) **अन्योक्ति**--रहिमन अब वे बिरछ कहँ, जिनकी छांह गम्भीर
बागन बिच-बिच देखिवत, सेहुड़ कुंज करीर

(6) **व्यतिरेक**--अन्तर दाव लगि रहै, धुँवा न प्रगटै सोय।
कै जिय जाने आपनो, जा सिर बीती होय ॥

(7) **दृष्टान्त**--जो विषया संतन तजी, मूढ़ ताहि लपटात।
ज्यों नर डारत वमन कर, स्वान स्वाद सों खात ॥

निष्कर्ष—संक्षेप मे कहा जा सकता है कि रहीम का कला पक्ष भी भाव पक्ष की भाँति प्रौढ़ और परिष्कृत है। उनके काव्य में सर्वत्र मौलिकता जीवन की स्वानुभूतियाँ हैं जो अपनी सरसता से पाठक को बरबस मुग्ध कर है। उनके व्यक्तित्व से अकबरी दरबार गौरवान्वित हुआ और इनकी काव्य प्रति हिन्दी काव्य लाभान्वित हुआ। इनका सारा कृतित्व हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति समन्वित स्वरूप है। अतः यदि यह कहा जाय कि हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति समन्वित रूप का नाम ही कविवर रहीम है तो अनुचित न होगा।

5. मीराँ बाई

प्रश्न 12. मीरा की प्रेम व्यंजना पर निबन्ध लिखिये।

अथवा

"प्रेम की पीर और विरह वेदना की अमर गायिका मीराँ का कृष्ण भ शाखा के साधकों और कवियों मे महत्वपूर्ण स्थान है।" उक्त कथन की स हरण विवेचना कीजिये।

उत्तर—कृष्ण प्रेम दीवानी मीराँ का सगुणोपासक कृष्ण भक्त कविय महत्वपूर्ण स्थान है। मीराँ की कविता का प्रमुख स्वर प्रेम ही है। अतः प्रेम पीर, विरह-वेदना, आत्म निवेदन और आत्म समर्पण सभी कुछ इसी के अन्त आ जाता है। उसके प्रेम की कसक आज भी उनके विरह गीतों के बोलों में कस कसक कर सहृदयों व संगीतकारों की हृदय-धड़कनें बन देती है। वास्तव में की पीर और विरह की अनवरत धड़कन का नाम ही मीराँ है।

प्रेम का स्वरूप—प्रेम आत्मा का सौन्दर्य है और उसी के आधार पर
ा उज्जवल रूप जीवन और समाज को प्रेरणा देता रहा है। प्रेम की कोई
सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन है, फिर भी विषय को स्पष्ट करने की दृष्टि
म की परिभाषा देने का प्रयत्न किया जाता रहा है। नारद भक्ति सूत्र में
ा है—

"गुणरहितं कामनारहितं प्रतिक्षण वर्द्धमान अविच्छिन्नि सूक्ष्मतर अनुभव-
म्। अर्थात् "प्रेम का रूप गुणों से रहित है, कामनाओं से रहित है, प्रतिक्षण
ने वाला है, एक रस है, अत्यन्त सूक्ष्म है और केवल अनुभवगम्य है।" प्रेम
यह चिन्तन धारा इस विश्व में अनेक रूपों में विकसित हुई है। प्रेम की भावना
नव और मानवेत्तर जगत में भी परिव्याप्त है। प्रेम के अभाव में जीवन का
थ ही नहीं रह जाता। कबीर ने लिखा है कि "जा घट प्रेम न सचरे सो घट
न मसान।"

प्रेम करते समय प्रेमी अपने प्रिय से किसी भी प्रकार के प्रतिफल की
ाशा नहीं करता। प्रेम में अपने को उत्सर्ग कर देना ही प्रेमी की कामना होती
। प्रसाद ने 'लहर' में लिखा है—"मानस रे वह मिलता है कब, उसको तो देते
ी है सब।

आसूँ के कन-कन से गिनकर, यह विश्व लिए है ऋण उधार।।
तू क्यूँ फिर उठता है पुकार-मुझको न मिला रे कभी प्यार।"

प्रेम और मानव जीवन का घनिष्ट सम्बन्ध है। डॉ. राधाकृष्णन् ने भी
कहा है—'प्रेम ही मानव जीवन का परम फल है।

साहित्य में प्रेम का चित्रण—साहित्य मानव जीवन की व्याख्या है।
मानव जीवन के विविध रूपों का चित्रण साहित्य में होता है साहित्य में प्रेम के
प्रमुख दो पक्षों का चित्रण किया जाता है—संयोग पक्ष व वियोग पक्ष। संयोग में
जितना आन्नद प्राप्त होता है, वियोग में उससे कहीं गुना वेदना, तड़पन, व्याकु-
लता और दर्द का अनुभव होता है। प्रकृति के वे सारे उपादान जो संयोग के
समय आनन्द में सहायक होते हैं, वियोग में विरह को उद्दीप्त कर नायक नायिका
की वेदना को तीव्र कर देते हैं। विरह की अग्नि में जलकर प्रेम उज्जवल और
पावन रूप में हो जाता है।

मीरां की प्रेम भावना—मीराँ के पदों में प्रेम की संयोग और वियोग
दोनों ही अवस्थाओं के सरस चित्र मिलते हैं। उनके पदों में उनके हृदय की अनु-
भूनियाँ सजीव हो उठी हैं। डॉ. उदय नारायण तिवाड़ी ने उचित ही लिखा है—

'मीराँ कृष्ण प्रेम की वह अलौकिक मंदाकिनी है, जिसकी प्रतिभा
सामान्य मानव भावों के गँदले नालों से उमड़ती हुई किसी शक्तिमान भाविता
कुन्दलिता सरिता में पाना नितान्त असम्भव है।"

मीराँ का संयोग वर्णन– मीरा बचपन से ही गिरधर के प्रेम में रं थी। यह प्रेम केवल इस जन्म का ही नहीं वरन् पूर्व संस्कारों का है। मीर पदों में प्रियतम कृष्ण का स्मरण करते हुए उन्हें बार-बार अपने पुरातन प्र स्मरण दिलाती है। यथा–

(i) मीरां कुँ प्रभु दरसण दीज्यो, पूरब जन्म को कोल।
(ii) मीराँ हरि रे हाथ बिकाणी, जणम-जणम री दासी।
(iii) पूर्व जन्म की प्रीति पुरानी, सो क्यूँ छोड़ी जाय।

इस प्रकार मीराँ अपने प्रेम को जन्म-जन्मतारों के बन्धनों से बांधे हु कल्पना की तीव्रता के कारण मीराँ अपने मानस में प्रिय के विविध रूप खिल उठती। कृष्ण के संकेत, मुस्कान और आभूषण मीराँ को बहुत सुन्दर लग कृष्ण की माधुरी मूरत को लेकर मीराँ ने अनेक पद लिखे हैं––

(i) हमसे प्रणाम बांके बिहारी को ।।
मोर मुकुट माथे तिलक विराजै, कुंडल अलकाकारी को।
अधर मधुर पर बंशी बजावै, रीझ रिझावै राधाप्यारी को
यह छवि देख मगन भई मीरां, मोहन गिरधारी को।
(ii) बसो मोरे नैनन में नंदलाल।
मोहनि मूरति सांवरी सूरति, नैणा बने बिसाल।
अधर, सुधारस मुरली राजति, उर बैजंती माल।
छुद्रघंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीराँ प्रभु संतन सुखदाई. भक्त बछल गोपाल।

मीराँ कृष्ण को अपना पति मानती थी और उसी भावना से उनकी सना भी करती थी। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था––

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई।

मीराँ अपने गिरधर नागर से इतना प्रेम करती है कि उनको असुविध बचाने के लिए अपनी पलकें तक नही गिराती। 'इन नैनन म मेरा साहिब ब डरती पलक न नाऊँरी।' मीराँ के प्रेम मे समर्थन की भावना है। उनकी भावना अनेक पदों में व्यक्त हुई है। यथा––

(i) मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार-बार बलि जाऊँरी।
(ii) मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, देस्यूँ प्राण चकोर।

मीराँ अपने प्रियतम कृष्ण का नाम निरन्तर स्मरण करती रहती है। विषय में उसे परिजनों के नाराज होने तक का भय नहीं है। उसने साँवलिया वर के रूप में पा लिया है। तो वह राजा के रूठने का क्या भय मानती यदि उ उसका प्रिय रुठ जाय तो वह क्या करती––

राजा रुठै नगरी राखै, हरि रुठवाँ कहँ जाणा ।

मीरां मानसिक रूप से कृष्ण के साथ परिणय सूत्र में बँधी थी । अतएव उनके काव्य में ऐसी अनुभूतियों का उल्लेख मिलता है—

बरसां री बदरिया सावन की, सावन री मन भावन री ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, खेला मंगल गावण री ।

मीरां का संयोग पक्ष एक मानसिक व्यापार है । उसका प्रिय उसके हृदय में ही रहता है । फिर भला वह पत्र लिखे, भी तो किसको ? अपने साँवलिया के रंग में रंगकर, तन्मय होकर, सुध-बुध खोकर मीरां नाचा-गाया करती थी । उसके शरीर का रोम-रोम प्रिय के मिलन सुख से ओत-प्रोत था—

मीराँ कहै प्रभु हरि अविनासी, तन मन ताहि पटै रे ।

मीरां का वियोग पक्ष—विरह साहित्यकार की निधि है । विरह की अग्नि में तपकर ही साहित्यकार की लेखनी पवित्र बनती है । भवभूति ने विरह भावना को प्राधान्य देते हुए "करूण एको रसः" कहकर इसका समर्थन किया है । कवि विरह के क्षणों में जो संजोता है, वही काव्य रूप में प्रकट करता है । मीरां विरह की भोक्ता थी । तो उसे व्यक्त करने वाली कवयित्री भी उसका विरह स्वयं का था । काव्य सृजन की भावना को लेकर वह नहीं लिखा गया था । यही कारण है कि मीराँ के काव्य में विरह वेदना सजीव व साकार हो गयी है । वह अपने प्रिय को निरन्तर अपने समक्ष देखते रहने की अभिलाषा करती है—

(i) प्रिया म्हारे नैणा आगा रहज्यो जी ।
नैणाँ आगाँ रहज्यो म्हाणे भूल री ना जाज्यो जी ।

(ii) बसो मेरे नैनन में नँदलाल ।

(iii) नैनन बनज बसाऊँगी, जो मैं साहिब पाऊँ ।

मीरां के काव्य में विरह के चारों ही भेद-पूर्वराग, मान, प्रवास व करुणा का चित्रण मिलता है । वैसे मीराँ के काव्य में चौथी अवस्था कम ही देखने को मिलती है, क्योंकि उसके प्रिय अविनासी है, अतः मृत्यु का प्रश्न ही नहीं उठता । मीराँ के वियोग वर्णन में व्यापकता है, गहराई है, पीड़ा है और हृदय को छू लेने की भावना है । इसलिए मीराँ के विरह वर्णन को हिन्दी साहित्य की अमूल निधि माना जाता है । मीराँ के विरह वर्णन में वेदना, तड़पन और व्याकुलता के दर्शन होते हैं । महादेवी वर्मा के शब्दों में—

"मीराँ के हृदय में बैठी हुई नारी और विरहिणी के लिए भावातिरेक सहज प्राप्य था, उसके बाह्य राजा-रानीपन और आन्तरिक साधना में संयम के लिए पर्याप्त अवकाश था । इसके अतिरिक्त वेदना की अनुभूति थी । अतः उसका

'हेंली मैं तो प्रेम दीवानी, मेरो दर्द न जाने कोई।' सुनकर यदि हमारे हृदय तार-तार उसी ध्वनि को दोहराने लगता है, रोम-रोम उसकी वेदना का स्पर्श लेता है, तो कोई आश्चर्य नहीं।"

प्रेम-पथ का बढ़ना हर एक के लिए सम्भव नहीं, प्रेम का मार्ग काँटों भरा है। जहाँ प्रेमी को प्रतिक्षण वेदना, आह मिलती है। जो जीवन की सम कामनाएँ त्यागकर प्रेम करे वही प्रेम के मार्ग पर आगे बढ़ने का अधिकारी सकता है। प्रेम मार्ग की बाधाओं का वर्णन करते हुए मीराँ ने लिखा है—

जे हूँ ऐसा जानती रे वाला, प्रीत कियां दुःख होय।
नगर ढिंढोरा फेरती रे, प्रीत न करियो कोय॥

मीराँ अपने प्रियतम से प्रार्थना करती है कि वह निरन्तर उसके पास रहे, व चेरी बनकर प्रिय की सेवा करना चाहती है—

(i) जोगी मत जा, मत जा, मत जा, पाँइ परु मैं तेरी चेरी हो।
(ii) मैं तो दासी थारां जन्म-जन्म की, थे साहब सुगणा।

मीराँ आत्मा में दर्द, तड़पन व व्याकुलता लिए हुए प्रिय की प्रतीक्षा करत है। यह दर्द जिसे होता है वही समझ सकता है। यथा—

हेरी म्हा दरदे दिवाणी म्हांरा दर्द जाणयाँ कोई।
घायल की गति घायल जाणयाँ, हिवणो अगण संजोय।

प्रकृति की छटा मीराँ को प्रिय का स्मरण दिला देती है। उसे पपीहे क स्वर अप्रिय लगता है। वह सोचती है कि मेरे और प्रिय के बीच में अन्य कौन सी वस्तु है। वह पपीहे को डाँटती हुई कहती है—

चोंच कटाँऊ पपइया रे, उपरि कालर लूण।
पिव मेरा मैं पीव की रे, तू पिव कहै स कूण।

मीराँ को प्रिय के वियोग में कुछ भी अच्छा नहीं लगता। होली का त्यौहार विरहणी के लिए अत्यन्त कष्टदायी होता है। मीराँ ने अपनी इस अन्तर पीड़ा का वर्णन कई पदों में किया है। एक पद देखिए—

होली प्रिया बिन लागी री खारी।
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी॥
सूनी विरहन पिव बिन डोलें, तज गया पीव पियारी।
विरहा दुख भारी॥

प्रिय के अभाव में उसे अपना जीवन भारी प्रतीत होने लगता है। वह बोर हो जाती है। जल की मछली के समान वह तड़पने लगती है। अपनी तड़प का उल्लेख मीराँ ने अपने पदों में किया है। एक उदाहरण देखिए—

मैं हरि बिनि क्यूँ जिवूँरी माई।
प्रिय कारण बौरी भइ, ज्यूँ काठहि घुन खाई।

निष्कर्ष—अतः स्पष्ट है कि मीराँ की प्रेम साधना में एक कसक है। जो ठक को आत्मविभोर करने की क्षमता रखती है। डॉ. श्रीकृष्ण लाल मीराँ के रह को हिन्दी साहित्य की सर्वोत्कृष्ट निधि मानते हैं। यथा—

"हिन्दी के कतिपय समालोचकों ने जायसी के विरह वर्णन को हिन्दी ाव्य में सर्वोत्कृष्ट ठहराया है, परन्तु जायसी का विरह निवेदन मीराँ के इन म्भीर पदों के सामने केवल उद्यात्मक और अतिशयोक्तिपूर्ण उक्तियां ही जान पड़ती । दादू का विरह वर्णन अवश्य उत्कृष्ट बन पड़ा है। परन्तु जो व्यापकता और म्भीरता मीराँ के पदों में है उसका लेश भी दादू के दोहों और पदों में नहीं मलता है।"

प्रश्न 13. मीराँ के काव्य की विशेषताओं का सोदाहरण परिचय ीजिये।

अथवा

मीराँ की काव्य कला पर एक समीक्षात्मक निबन्ध लिखिए।

उत्तर—प्रस्तावना :—विश्वनाथ ने 'रस' को काव्य की आत्मा कहा है। ब्द और अर्थ काव्य के शरीर हैं। आत्मा और शरीर दोनों को मिलाने से पूर्ण ाव्य हमारे समक्ष आता है। काव्य की आत्मा को हम भाव पक्ष और काव्य के रीर को हम कला पक्ष कह सकते हैं। भाव पक्ष दोनों के समन्वय से ही काव्य ा निर्माण होता है।

मीरां के काव्य की विशेषताएं—मीराँ के काव्य की विशेषताओं का अध्ययन रने के लिए हमें उसके भाव पक्ष और कला पक्ष को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत रना होगा। यद्यपि मीराँ के पदों में भाव पक्ष को प्रधानता रही है तथापि सके कला पक्ष में भी सौन्दर्य की कमी नहीं रही है। मीराँ के काव्य में भाव पक्ष ौर कला पक्ष दोनों ही समान है। काव्य के दोनों ही पक्ष सम होने के कारण ह एक सफल कवयित्री रही है।

(1) भाव पक्ष—काव्य का सबसे महत्वपूर्ण अंग भाव पक्ष है। भाव पक्ष रस का विशेष महत्व है। मीराँ काव्य का प्रमुख स्वर भगवान कृष्ण का प्रेम । वह तो कृष्ण प्रेम की साकार प्रतिमा है। उसके प्रेम की पीर, विरह-वेदना, ात्म-निवेदन और आत्म-समर्पण सभी कुछ अपने सांवरिया के लिए है। वह भु से अपनी ओर निहारने का निवेदन करती है और अपेक्षा करती है कि वे उसे निहारें और जब ऐसा नहीं होता है तो वह उन्हें कठोर हृदय होने का पालम्भ भी दे देती है। यथा—

"तनक हरि चितवोजी मेरी ओर ।
हम चितवत तुम चितवत नाहीं, दिल के बड़े कठोर ॥"

मीराँ का अधिकांश समय साधु संग, कृष्ण नाम की चर्चा, भजन कीर्तन में व्यतीत होता था। वह अपने पैरों में घुँघरू बाँधकर प्रियतम को रि के लिए उन्मुक्त भाव से नाचती गाती थी। एक प्रकार से उसने स्पष्ट घोषणा दी थी कि—

"मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई ।
जाके सिर मोर-मुकुट मेरो पति सोई ॥"

परिवार वालों को मीराँ का यह पागलपन खला। उन्होंने उसे प्रकार के कष्ट दिए, मारने का प्रयास किया, पर प्रेम दिवानी मीराँ के लिए अटल विश्वास, भक्ति और प्रेम के कारण काँटे फूल बन गए, विष अम परिणित हो गया। मीराँ ने इसका उल्लेख अनेक पदों में किया है। यथा --

"मैं गोविन्द गुण गाणा ।
राजा रूठै नगरी राखै, हरि रूठया कहँ जाणा ।
राणैं भेज्या जहर पियाला, इमिरत कर पी जाणा ॥
डबिला में भेज्या जु भुजंग, सालिगराम करि जाणा ॥
मीराँ तो अब प्रेम दिवाणी, सांवलिया वर पाणा ॥

मीराँ के काव्य में संयोग और वियोग का मनोहारी चित्रण हुआ है। उ वियोग प्रेम काल्पनिक न होकर जीवन की अनुभूति है। उनकी वेदना की अ नुभूति का पुट नारीत्व का संयोग पाकर सजीव हो उठा। काव्य में प्रयुक्त की समस्त दशाओं का प्रयोग मीराँ के काव्य में हमें देखने को मिलता है।

शृंगार रस के साथ-साथ मीराँ के पदों में शान्त रस का भी प्रयोग है। इस लौकिक जीवन की नश्वरता के सम्बन्ध में मीराँ ने अपने अनेक प चर्चा की है। वे इस जीवन की अनित्यता के साथ-साथ ईश्वर स्मरण की ओ संकेत करती हैं। लीला पदों में अद्भुत रस की भी झलक मिलती है।

उनकी माधुर्य-भावना अनेक स्थानों पर सूर और तुलसी से भी आगे हुई दिखाई देने लगती है। मीराँ तो स्वयं ही गोपी और राधा के रूप में कृ साथ मान-मनुहार और प्रेम-विरह भरी लीलाएँ करती हुई दिखाई देती हैं। के स्वर में निर्झर का अनवरत कल निषाद है, पल्लवों का स्वर शिंजन है अ सरिताओं का स्वाभाविक सर-सर गति। इन्हीं सब बातों में उसके काव्य का स सौष्ठव एवं वैभव निहित है।

कल्पना और सौन्दर्य की भावना—मीराँ के काव्य मे कल्पना और सौन्द सुन्दर समन्वय हुआ है। उनकी समस्त भावनाओं का केन्द्र बिन्दु भगवान कृष्ण

ल्पना का सहारा लेकर उनके रूप, रंग और सौन्दर्य की चर्चा करती है। काव्य प्रिय के अथाह सौन्दर्य का सागर है—

(i) "मोर मुकुट माथे तिलक-विराजै, कुण्डल अलकाकारी को।
अधर मधुर पर वंशी विराजै, रीझ रिझावै राधा प्यारी को॥"

(ii) "मोहनी मूरती साँवरी सूरति, नैणा बने विसाल।
अधर सुधारस मुरली राजति, उर बैजंती माल॥"

वह कल्पना के द्वारा मानस-लोक में प्रियतम से मिलती है। कल्पना की लता और सौन्दर्य की अनन्त राशि के पीछे उनके पूर्व जन्म के संस्कार और की सुव्यवस्थित आधार भूमि है।

मीराँ के पदों में भाव पक्ष की प्रधानता है। उनके जीवन और व्यक्तित्व झलक सारे काव्य में दिखाई देती है। संक्षेप में मीराँ के पदों में भावों की ता, रस की मावकता, कल्पना की कोमलता, सौन्दर्य की स्निग्धता और बुद्धि की रपक्वता सभी एक साथ है। उनके भाव पक्ष ने एक सबल भूमि पर अपना र्माण किया है और काव्य की कसौटी पर वह पूर्ण रूप से खरा उतरता है।

2. **कला पक्ष**--भाषा, शैली, छन्द, अलंकार आदि की गणना काव्य के अभि- क्ति पक्ष में की जाती है। मीराँ का अभिव्यक्ति पक्ष भी उनके भाव पक्ष के समान सुन्दर और प्रभावशाली है।

भाषा शैली—मीराँ की भाषा मुख्यतः राजस्थानी है। वह व्यावहारिक है। तः उसमें ब्रज, गुजराती, खड़ी बोली, अवधी आदि अनेक भाषाओं का सरस मिश्रण मिलता है। माधुर्य और प्रसाद दोनों गुणों से विभूषित होकर वह प्रवाह- ी हो गई है। मुहावरे और कहावतों का समुचित प्रयोग मीराँ काव्य की एक य विशेषता है। उनकी भाषा सरल होते हुए भी रसमय, भावानुकूल और मधुर ।

मीराँ के पद गेय हैं। उनकी काव्य शैली, गीति शैली है। गीति शैली का कृष्ट रूप हमें उनके काव्य में दिखाई देता है। साहित्यिकता का आधिक्य न रहते ए भी अनुभूतियों की तीव्रता एवं निजीपन के कारण मीराँ का गीति-मुक्तक काव्य रकाल के लिए सहृदयों की अमर धरोहर बन गया है।

अलंकार-विधान—अलंकार काव्य के शोभा कारक धर्म है। इस दृष्टि से व्य में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। मीराँ कवयित्री नहीं थी। उन्हें काव्य के लंकार विधान का ज्ञान नहीं था, पर उनके पद्य हृदय की गहन अनुभूति से मण्डित ने के कारण आलंकारिक हो गये हैं। मीराँ के काव्य में प्रयुक्त अलंकार स्वाभा-

विक रूप से आये हैं, अतः वे भावोत्कर्ष में सहयोगी है। कुछ उदाहरण देख सकते हैं। यथा—

रूपक अलंकार—(i) अंसुवन जल सींच-सींच प्रेम बेलि बोई।
(ii) यों संसार चहर की बाजी, साम पड़या उठ जासी

उपमा अलंकार—पानी जो पीली पड़ी रे लोग कह्या पिड़वाय।
ज्यूँ चातक घडकू रहे, मछली ज्यूँ पाणी हो।
मीराँ व्याकुल विरहणी, सुध-बुध बिसराणी हो।

उत्प्रेक्षा अलंकार—कुण्डल की अलक-फलक कपोलन पर छाई।
मानो मीन सरवर तजि, मकर मिलन आई॥

उदाहरण अलंकार–कणक कटोरा इम्रित भर्‌या, पवितां कूण नट्या री।
मीराँ के प्रभु हरि अवनासी, तण मण स्याम पियारी॥

विभावना अलंकार—बिन करताल पखावज बाजै, अणहद की झंकार रे।
बिन सुर राग छतीसूं गावै, रोम-रोम रंगमार रे॥

अर्थान्तर न्यास—हेरी मैं तो दर्द दीवाणी, मेरो दर्द न जाणै कोय।
घायल की गति घायल जाणै, कि जण लाई होय॥

छन्द योजना—मीराँ ने अधिकांशतः प्रचलित छन्दों का ही प्रयोग किया है। उनके पदों में सार छन्द, विष्णु पद, दोहा सवैया, तारक और कुण्डल छन्द प्रमुख हैं। मीराँ पदावली के सम्पादक श्री परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार—"मीराँ ने कम से कम 15 प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। छन्दों में रूप परिवर्तन और संगीतात्मकता के कारण कहीं-कहीं पर दोष आ गया है। कहीं पर लय के लिए री, रे आदि का भी प्रयोग किया है। जिससे मात्राओं के क्रम में बाधा आ जाती है।"

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि मीराँ के काव्य में भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों ही समान है। काव्य क दोनों ही पक्ष सम होने के कारण वह एक सफल कवयित्री है। उनके काव्य में जहाँ भाव पक्ष की प्रबलता है, वहीं कला पक्ष का सौन्दर्य अनुभूति की अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध होता है। दोनों के समन्वय एवं सन्तुलन के कारण मीराँ काव्य का सौन्दर्य अपने उज्ज्वल रूप में हमारे समक्ष आता है।

प्रश्न 14. गीति काव्य के लक्षमण बताते हुए मीराँ के गीति काव्य की विवेचना कीजिये।

अथवा

"मीराँ के पदों की गीति भावना भक्तिकाल के काव्य में बेजोड़ है।" उक्त के प्रकाश में मीराँ के गीत काव्य की विशेषताएँ बताइये।

उत्तर— प्रस्तावना— मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है। वह अपने हृदय के को किसी न किसी रूप में व्यक्त करना चाहता है। मानव हृदय की अनुभू- को वाणी के माध्यम से सहज अभिव्यक्ति मिल जाती है। प्रकृति के अनन्त र्य का गान मानव ने देखा और सुना है। उसी मधुरता की लय में मानव से भी गान का स्वर फूट पड़ा होगा। मानव हृदय की भावनाएँ जब अपनी म सीमा पर पहुंच जाती हैं तो गीतों का प्रादुर्भाव होता है। गीत की उत्पत्ति वषय में कुछ भी वाद-विवाद हो पर एक तथ्य से सभी सहमत हैं कि गीतों में ना की तीव्रता होती है। मीराँ के पद इस दृष्टि से भक्तिकाल के काव्य में ड़ हैं।

गीति काव्य की परिभाषा—गीतिकाव्य की एक सर्वमान्य परिभाषा देना ठन है, फिर भी विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के अध्ययन से हमें उसके रूप का बोध हो सकता है। कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नानुसार हैं—

(i) **महादेवी वर्मा**—"सुख-दुख की भावावेशमयी अवस्था, विशेषकर गिने- ी शब्दों में स्वर साधना के प्रयुक्त चित्रण कर देना ही गीति है।"

(ii) **बाबू श्याम सुन्दर दास**—"गीतिकाव्य में कवि अपनी अन्तरात्मा में ेश करता है और बाह्य जगत को अपने अन्तःकरण में ले जाकर उसे अपने भावों रंजित करता है। आत्माभिव्यंजना सम्बन्धी कविता गीतिकाव्य में ही छोटे- टे गेय पदों में मधुर भावानापन्न, आत्म निवेदन से युक्त स्वाभाविक भी जान पड़ती । उसमें शब्द की साधना के साथ-साथ स्वर संगीत की भी साधना होती है। वना सुकोमल होती है और एक-एक पद में पूर्ण होकर समाप्त हो जाती है। वि उसमें अपने अन्तर्तम को स्पष्टतया दृष्टव्य कर देता है। वह अपने अनुभवों र भावनाओं से प्रेरित होकर उनकी भावनात्मक अभिव्यक्ति कर देता है।"

(iii) **रस्किन**—'गीति काव्य कवि की निजी भावनाओं का प्रकाश होता सहज शुद्ध भाव, स्वच्छन्द कल्पना तर्कवाद और न्याय मूलकता से युक्त विचार, ही गीति काव्य की वास्तविक विशेषताएँ हैं।'

(iv) **हिन्दी साहित्य कोश**—'कवि की वैयक्तिक भावधारा और अनुभूति उनके अनुरूप लयात्मक अभिव्यक्ति देने के विधान को गीति काव्य कहते हैं। ति काव्य में मानवीय वृत्तियाँ अपनी सहज स्थिति में अभिव्यक्त होती हैं, अतः में आन्तरिक सौन्दर्य-गठन अन्तर्वेग की तरलता रहती है।"

गीति काव्य के तत्व—उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन और विश्लेषण से ति काव्य के अग्रलिखित तत्व उजागर होते हैं—

(i) सहज ग्रात्माभिव्यक्ति
(ii) संगीतात्मकता
(iii) ग्रनुभूति की पूर्णता
(iv) संक्षिप्तता
(v) भाषा की सरसता।

ग्रब हम उक्त तत्वों के ग्राधार पर मीराँ के गीति काव्य की विवेचना करेंगे।

मीरां की गीति भावना—मीराँ के पद गीति काव्य की कसोटी पर पूरे खरे उतरते हैं। ग्रपने कथन की सत्यता सिद्ध करने के लिए हम मीराँ के काव्य में निहित गीति तत्व की विशेषताग्रों का उद्‌घाटन करेंगे।

1. सहज ग्रात्माभिव्यक्ति—मीराँ की वेदना में व्यक्तिगत ग्रनुभूति की तीव्रता है, जो पाठक के हृदय को स्पर्श कर लेती है। उनकी वेदना प्रियतम के विरह की वेदना है, जिसमें तीव्रता की प्रधानता है। मीराँ ने ग्रपने जीवन में प्रेम के सुमन केवल कृष्ण की स्मृति, ग्राराधना ग्रौर उपासना के लिए संजोये थे। वे जीवन ग्रौर गगन से संघर्ष करने के लिए कटिबद्ध दृष्टिगोचर होती हैं। उन्होंने जो कुछ भी सोचा उसे उसी रूप में व्यक्त कर दिया। मीराँ के जीवन के दो हृदय सामने ग्राते हैं—एक जब वह प्रिय मिलन के रंगों में घुली हुई मदहोश-सी होती हैं ग्रौर दूसरा जब विरह की ज्वाला में जलती हुई-सी कोई दीपशिखा दृष्टिगोचर होती है। मीराँ कहती हैं—

(i) माई री म्हा लियो गोविन्दो मोल।
(ii) हरि विण क्यूँ जिवा री माय।
(iii) दरस बिन दूखाँ म्हारा नैण।

मीराँ के पदों में मीराँ की ग्रात्मा का स्वर है। वह स्वर ग्रपनी सहज ग्रभिव्यक्ति के कारण शाश्वत हृदयस्पर्शी ग्रौर सौन्दर्य-मुक्त बन गया है।

2. संगीतात्मकता—संगीत गीतिकाल का सबसे महत्वपूर्ण ग्रंग है। गीति के बोल संगीत का स्वर पाकर मुखरित हो उठते हैं। संगीत के द्वारा प्रकृति पर विजय पाई जा सकती है, बुझे हुए चिरागों को ग्रनायास प्रज्ज्वलित किया जा सकता है संगीत में पत्थर को भी पिघला देने की शक्ति है। वही संगीत जब काव्य का सहयोगी बन जाता है तो उसके लिए कुछ भी ग्रसम्भव नही रहता। मीराँ के काव्य में हमें ग्रान्तरिक ग्रौर वाक्य संगीत दोनों के ही स्वर मिलते हैं। उनकी संगीत योजना सुन्दर है। उनके ग्रनेक पदों में राग-रागनियों का सुन्दर प्रयोग हुग्रा है। एक उदाहरण देखिये—

ाग मल्हार—झुक आइ बदरिया सावन की, सावन की मन भावन की।
सावन में उमड़्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की॥

3. **अनुभूति की पूर्णता**—मानव अनुभूतिशील प्राणी है। वह निरन्तर कुछ नुभूति करता रहता है। उसकी कुछ अनुभूतियाँ धुँधले चित्रों के रूप में और कुछ सबल, वेगमय और घनीभूत होती हैं। मानव हृदय की घनीभूत याँ ही गीति काव्य को जन्म देती हैं। मीराँ के गीति-साहित्य में घनीभूत याँ अपने सहज रूप में प्रकट हुई हैं। उनके प्रत्येक पद में अनुभूति की तीव्र और परिपूर्णता दृष्टिगोचर होती है। एक उदाहरण देखिये—

"माई री म्हाँ लियाँ गोविन्दो मोल।
थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड़ड़े लियाँ बजन्ता ढोल॥
थे कहया मुँहाघो, म्हाँ कह्याँ सस्तो, लिया री तराजा तोल।
तण वारां म्हां जीवण वारां, वारां अमोलक मोल।
मीराँ कूँ प्रभू दरसण दीज्यौं, पूरब जनम को कोल॥

4. **संक्षिप्तता**—अनुभूति की पूर्णता के साथ ही साथ संक्षिप्तता भी गीति के लिए अनिवार्य है। मीराँ के पदों में भावों का ऐक्य है। संक्षिप्तता उनके ी विशेषता है। एक ही पद में वह अपनी वेदना को, अनुभूति को पूर्णता के यक्त करने में सक्षम है। डॉ. सावित्री सिन्हा ने लिखा है—उनके जीवन में भाव है और एक ही रस। मधुर भावना जन्य उल्लास तथा विषाद की भावनाएँ ही उनके जीवन में व्याप्त हैं" मीराँ के पदों में अनुभूति की , पूर्णता और संक्षिप्तता गीति काव्य के अनुकूल है।

5. **सरस भाषा**—भाषा के माध्यम से ही भावों को सुन्दरतम रूप से प्रस्तुत जा सकता है। उनकी भाषा अपनी मधुरता के लिए प्रसिद्ध हैं। डॉ. सावित्री के शब्दों में—"उनकी कविता का सौन्दर्य उस स्वच्छन्द ग्राम बाला के निखरे न्दर्य के समान है, जिसके जीवन में न कोई ग्रन्थियाँ है न आडम्बर। कोमल की प्रतिमूर्ति बाला की जिस प्रकार अंजित सौन्दर्य-प्रसाधनों से मुक्त नारी ता नहीं की जा सकती, उसी प्रकार मीराँ की कोमल कान्त पदावली की ास्त्र में निपुण कवियों की पदावली से तुलना करना समीचीन नहीं "

उन्होंने अधिकांशतः राजस्थानी और गुजराती का प्रयोग किया है। कोमल दावली और सहज अभिव्यक्ति ने काव्य माधुर्य को प्रवाहित किया है उनकी ैली गीति काव्य के पूर्णतः अनुकूल है।

निष्कर्ष—संक्षेप में डॉ. राजकुमार वर्मा के शब्दों में कहा जा सकता है काव्य के अनुसार मीराँ कविता का आदर्श है। मीराँ ने न तो रीति शास्त्र

की गवेषणा की और न अलंकार शास्त्र की। उनके हृदय में निर्झर की भाँति आये और अनुकूल स्थान पाकर प्रकट हो गए। भाव, अनुभाव, सचारी भ बादलों में उनकी कविता–चन्द्रिका नहीं छिपी, वरन् निरभ्र हृदयाकाश से उठी। हृदय की भावना की मन्दाकिनी की भाँति कलकल करती हुई आई मीराँ के कंठस्थ सरस्वती की संगीत धारा में मिल गई। यह भावना संगी मार बनी और उसी में मीराँ के हृदय की अनुभूति मिली। मीराँ की वेद गीति काव्य में अपने को व्यक्त किया है जो सीधे हृदय को प्रभावित करती मीराँ के पदों मे सहज आत्माभिव्यक्ति, संगीतात्मकता, अनुभूति की पूर्णता, ष्तता और सरल भाषा का सुन्दर समन्वय हुआ है। उनकी गीति-भावना भ काल के काव्य में बेजोड़ है।

प्रश्न 15. मीराँ की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिये।

अथवा

मीराँ की प्रेमाभक्ति पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।

उत्तर—प्रस्तावना—ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम एवं श्रद्धा का नाम ही भ है। भक्ति परम प्रेम रूपा है। भक्ति को पाकर मनुष्य सिद्ध हो जाता है, अ हो जाता है और तृप्त होता है। उसमें यह भावना आरम्भ से ही है। भार प्राचीनतम ग्रन्थ वेद हैं। वेदों में भी हमें भक्ति के अनेक महत्त्वपूर्ण तत्त्व मि हैं। भक्ति मार्ग का प्रमुख सम्प्रदाय भागवत है। मध्यकाल में आकर अन्य अ सम्प्रदाय हुए। भक्ति युग की भक्ति धारा मे चार चिन्तन धाराएँ स्पष्ट रू परिलक्षित होती है जिनमें मीराँ सगुणोपासक, कृष्ण भक्त कवियों में प्रेम की प्रतिनिधि गायक के रूप में प्रसिद्ध है। उनकी भक्ति माधुर्य भाव की है। अपने प्रियतम के विषय में लोक-लाज छोड़कर स्पष्ट कहती हैं—

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई॥

मीरा के पदों में निर्गुण भक्ति—मीराँ के कुछ पदों में निर्गुण ब्र संकेत मिलते हैं। वे अपने प्रिय को अविनाशी बताती हुई कहती है—

"अविनासी सूँ बालमा हे, जिनसूँ सांची प्रीति।"

अपने इस अविनाशी ब्रह्म से झिरमिट खेलना और उसी के रंग में र मीराँ को प्रिय लगता है। वह त्रिकुटी महल में बने झरोखे से झांकी लगाने, स गगन में सुरत जमाकर सुन्न की सेज बिछाने और गगन मण्डल में सेज के होने भी उल्लेख करती है। मीराँ के काव्य में किसी निष्ठुर जोगी का भी वर्णन जिससे प्रेम होने के कारण मीराँ को दुख हुआ। यथा—

(i) "जोगिया से प्रीत कियां दुख होय ।"

(ii) "जोगिया री प्रीतड़ी है दुखड़ा रो मूल ॥"

मीराँ के काव्य में सन्तों की शब्दावली मिलने के कारण ही कभी कभी ग के निर्गुण निराकार होने का भ्रम होता है, पर वस्तुतः इसे मीराँ पर सन्तनधारा का प्रभाव कहा जा सकता है। उनके निर्गुण पर सदैव सगुण दिखाई देती है। उनमें साम्प्रदायिक दृष्टिकोण कहीं पर भी दिखाई नहीं उनका तो केवल एक ही उद्देश्य था, अपने प्रिय कृष्ण को आराधना।

मीरां की सगुण भक्ति—मीराँ के पदों में सगुण भक्ति की प्रधानता है। अपने प्रिय की मोहनी मूर्ति और सांवरी सूरत पर मुग्ध हो गई थी। वह सूरत उसके हृदय में अड़ी-गढ़ी थी। उसने प्रिय को अपने आँसुओं का जल भरे बाजार में ढोल बजा बजा-कर तराजू से तौलकर लिया था। ... के सगुण होने में किसको सन्देह होगा ? वे अपने प्रिय को रिझाने के लिए घुँघरू बाँधकर नृत्य करती हैं और कभी अपने को उनकी सेवा में पूरी र्पित हुआ वर्णन करती है।

मीराँ की सगुण भक्ति में नवधा भक्ति का भी महत्वपूर्ण स्थान है। नवधा सम्बन्धित मीराँ के अनेक पद हैं। श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, ास्य, साख्य और आत्म निवेदन हो उसकी भक्ति के प्रमुख सोपान है। ण की वन्दना तो करती रहती है—

"म्हारो प्रणाम बाँके बिहारी जी।" साथ ही उन्हें अपना चाकर रख लेने निवेदन करती है—

"म्हाणे चाकर राखो जी, गिरधारी लाला चाकर राखो जी।"

साख्य भाव का इससे अच्छा और क्या उदाहरण होगा कि वे दिन-रात साथ खेलती रहती है—

"रेण दिना वाके संग खेलू, ज्यूँ-त्यूँ वाहि रिझाऊँ।"

ीराँ ने सम्पूर्ण भाव से प्रिय को आत्म-समर्पण कर दिया है। अब तो रावे सोई पहिरू, जो देइ सोइ खाँऊ" और 'जहाँ बैठावे तितही बैठूँ, वेचे जाऊ" की चरम सीमा आ गई है। इस प्रकार मीराँ की भक्ति मे नवधा सभी सोपान पाये जाते हैं।

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मीराँ की भक्ति में ईश्वर के ़ाों की चर्चा मिलती है, पर मीराँ का लक्ष्य तो मोहिनी मूरती, सांवरी न गिरधारी को पाना था। उसी के लिए उसने अपने युग और परिजनों ़िया। मीराँ की मनःस्थिति के अनुरूप ही कृष्ण का मधुर रूप ही उनकी

मानस लहरियों में नृत्य करता रहा। अपने प्रिय के रूप लावण्य पर मुग्ध ह
मीराँ अपने आपको भूल जाती थी और तब मैं और तू का अन्तर समाप्त हो ज
था। मीराँ की भक्ति प्रेम की पीर से पूरित और हृदय की वास्तविक अनुभू
से अनुरंजित थी। उनकी भक्ति में माधुर्य भाव की सहज अभिव्यक्ति होती है

प्रश्न 16. "ढोला-मारू रा दूहा" एक सरस लोक गाथा है'—इस
की सत्यता प्रमाणित कीजिये।

अथवा

'ढोला-मारू रा दूहा' को लोकगीत कहा जा सकता है, तर्क पूर्ण एवं स
हरण उत्तर दीजिये।

उत्तर—"ढोला-मारू रा दूहा' राजस्थान का एक अति प्रसिद्ध प्रणया
नक लोक काव्य है, जिसमें ढोला और मारवणी के प्रेम का वर्णन हुआ है। यह
कहानी भी बड़ी विशिष्ट है, जो व्यक्ति परक होकर भी अपने व्यापक परिवे
निर्वैयक्तिक हो गई है। इसमें वर्णित प्रेम लोक-जीवन से असंपृक्त व अन्तःपु
प्रकोष्ठ में आबद्ध वह एकान्तिक प्रेम नहीं हैं, जिसमें किसी असूर्यम्पश्या का
प्रवाह केवल उसका आंचल छोर या अधिक से अधिक, उसका आंग न जोल
वहीं निरशेष हो जाता है। प्रत्युत यह तो लोकभूमि पर अवतरित प्रेम की उद
कालिन्दी है, जिसमें एक प्रेम वियोगिनी का रुदन, राजवधू का रुदन न रह
राजस्थान की चिर-विरहिणी आत्मा का ही रुदन बन शत-सहस्र भाव लहरिय
फूट पड़ा है। इस दृष्टि से यदि इस काव्य को राजस्थान के भावोच्छ्वमित अ
की आत्म-कथा कहें तो अत्युक्ति न होगी क्योंकि इसका हर छन्द राजस्थानी
जीवन का जीवन्त प्रतिबिम्ब है, एवं इसका हर स्वर राजस्थान के प्राणों की
प्रतिध्वनि है। संक्षेप में, व्यष्टि की वीणा पर मुखरित यह राजस्थान का
प्रेमोद्गीथ है।"[1]

ढोला-मारू की कथा राजस्थान में इतनी लोकप्रिय हुई कि यह
समता आप है। इसकी प्रशंसा में निम्नांकित दोहा अति प्रचलित है—

> सोरठियो दूहो भलो, भलि मरवण री बात।
> जोबरण छइ छरण भली, तारां छाई रात॥

यह कृति दोहाबद्ध प्रेमपरक लोकगाथा है। यह लोक काव्य की है।
विधा है। प्रत्येक जाति के इतिहास में लोकगाथाएं विशेष महत्व रखती हैं
दृष्टि से ढोला-मारू का महत्व भी असंदिग्ध है।

ढोला-मारू का काव्य रूप—काव्य रूप की दृष्टि से ढोला-मारू एक
दोहापद काव्य है। ढोला-मारू के सम्पादक श्री रामसिंह, पारीक और स्वामी

...लोक गीत कहा है और लोक गीत के सभी तत्व यथा कलात्मक साहित्य का ...त, मौखिक परम्परा, काव्य निर्माता के व्यक्तित्व का अभाव, कथा तत्व की ...त्ति, ध्रुवक का प्रयोग, गान, नृत्य और अभिनय सम्बन्धी सभी विशेषताओं का ... इसमें उल्लिखित किया है। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय इसे एक लोकगाथा मानते ... श्री सूर्यकरण पारीक ने इसके लिए लोकगाथा शब्द का प्रयोग किया है। ...कृष्ण बिहारी सहल ने 'ढोला-मारू एक विवेचन' नामक ग्रन्थ में लिखा है— ...ला-मारू रा दूहा' के सम्पादकों ने इसे एक लोक-गीत कहा है किन्तु लेखक की ...मति में इस काव्य को बैलेड का नाम नहीं दिया जा सकता। सम्पादकों द्वारा ... गये विवेचन से ऐसा लगता है कि उन्होंने पाश्चात्य विद्वानों द्वारा निरूपित ...लेड' के लक्षणों को ढोला-मारू रा दूहा पर घटित करने का प्रयास किया है, ...पि ऐसा करने में वे बहुतांश में सफल नहीं हुए है।" ढोला-मारू का दूहा गीत ...या भी नहीं है। डॉ. श्याम मनोहर पाण्डेय ने इसे दाम्पत्य परक प्रेमाख्यान वर्ग ... सम्मिलित किया है। लोक-साहित्य के विद्वान् डॉ. सत्येन्द्र, ढोला-मारू काव्य के ...मीक्षक डॉ. शम्भु सिंह मनोहर, डॉ. कृष्ण बिहारी सहल और भारतीय साहित्य ...ी असीम अनुरागिनी शुभ श्री डॉ. शालोति बोदविल (पेरिस) ने ढोला-मारू काव्य ...ी लोक-गाथा काव्य की संज्ञा दी है। हम उपर्युक्त विद्वानों के मत से सहमत होते ...ए लोक-गाथा काव्य की विशेषताओं के आधार पर ढोला-मारु की समाक्षा करेंगे।

लोक-गाथा काव्य की विशेषताएं—लोक-गाथा काव्य की परिभाषा अनेक ...द्वानों ने दी है। पाश्चात्य विद्वानों ने इस सम्बन्ध में बड़ी सूक्ष्मता और गम्भीरता ... विचार किया है। इनमें प्रो. क्रिट्ज, राबर्ट गेन्स, डां. चाइल्ड, गूमर और सिज- ...क आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। राबर्ट-गेन्स ने अपनी पुस्तक 'दी इंगलिश ...लेड' में लोक-गाथा काव्य की निम्नाँकित विशेषताओं का उल्लेख किया है—

(i) अज्ञात रचयिता
(ii) प्रामाणिक मूल पाठ का अभाव
(iii) संगीत का सहयोग
(iv) स्थानीयता
(v) मौखिक परम्परा
(vi) अलंकृत शैली का अभाव
(vii) रचयिता के व्यक्तित्व का अभाव
(viii) उपदेशात्मक प्रवृति का अभाव
(ix) टेक पदों की पुनरावृत्ति
(x) लम्बा कथानक
(xi) संदिग्ध ऐतिहासिकता

उक्त विशेषताओं में से अलंकृत शैली का अभाव, उपदेशात्मक प्रवृ
अभाव आदि तत्वों का ढोला-मारू काव्य में अभाव है। कुछ विद्वान उत्तर
रचयिता को भी अज्ञात नहीं मानते। विद्वानों के मतानुसार कल्लोल कवि
लाभ, हरराज, लूणकरण रिवड़िया में से कोई एक अन्यथा अन्य कोई एक
रचयिता है।

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक-गाथा में केवल पांच तत्वों की च
हैं। ये तत्व है—समुदायवाद, व्यक्तिवाद, जातिवाद, चारणवाद, व्यक्ति
व्यक्तिवाद। इन सबको मिलाकर डॉ. उपाध्याय ने एक समन्वयवादी सिद्ध
स्थापना की है।

ढोला-मारू सरस लोकगाथा या लोकगीत— ढोला-मारू में लोकग
लोकगीत काव्य के प्रायः सभी तत्व पाये जाते हैं। एक-दो तत्वों के न होने
अनेक प्रमुख तत्वों की उपस्थिति के कारण इसे राजस्थानी जन-जीवन का
गीतात्मक लोकगाथा काव्य कहना समीचीन ही है। इस दृष्टि से लोकगाथा के
की संक्षिप्त विवेचना निम्नानुसार की जा सकती है–

1 अज्ञात रचयिता— ढोला-मारू काव्य का रचयिता यदि कोई
अज्ञात व्यक्ति नहीं है तो वह सर्व सम्मति से मान्य व्यक्तित्व भी नहीं है।
रचनाकार की विद्वानों ने विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर सम्भावना मात्र व
वह कल्लोल कवि, कुशल लाभ, हरराज, लूणकरण रिवड़िया में से कोई
सकता है। इस दृष्टि से प्रोफेसर शंभु सिंह मनोहर का कथन अधिक उपयुक्त
वे उसका रचयिता किसी एक ही व्यक्ति को मानते हैं और उस व्यक्ति के
जीवन वृत्त को अज्ञात बताया है। उन्होंने लिखा है–"बहुत सम्भव है ढोल
रा दूहा का रचयिता मूलतः कोई ढाढी रहा हो।"* 'ढोला-मारू रा दूहा'
अनेक स्थलों पर ढाढियों का कुछ आवश्यकता से अधिक प्रशंसात्मक वर्णन पा

2. प्रामाणिक मूल पाठ का अभाव— जहाँ तक प्रामाणिक मूल
अभाव का प्रश्न है, वह केवल लोक गाथाओं के लिए ही लागू नहीं होता,
काव्यों के अन्य रूपों के लिए भी लागू होता है। ढोला-मारू का मूल पाठ उत
से संदिग्ध नहीं है, जैसे पाबू तथा निहालदे सुलतान के पवाड़ों का। लोक
मौखिक परम्परा से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानान्तरित होती रहती है
उसमें गाने वालों की व्यक्तिगत प्रतिभा व रुचि भी उसमें जुड़ती रहती है।
मारू भी एक ऐसा काव्य है जो मौखिक परम्परा से राजस्थानवासियों की
पर नृत्य करता हुआ वर्तमान काल तक पहुँचा है।

3. गेयता या संगीतात्मकता— लोक काव्य सरस, मधुर और गेय है
उनकी यह क्षमता ही उन्हें जनमानस के हृदय पटल पर स्थायी बनाती है।

ाथाओं में गेयता, मधुरता, सरसता और संगीतमकता होती है। 'ढोला-मारू
' भी इसका अपवाद नहीं है ।

4. स्थानीयता—स्थानीयता की दृष्टि से ढोला-मारू राजस्थान का जातीय
व्य है । उसमे राजस्थानी जन-जीवन की भावनाओं, रीति नीतियों, तीज-
ों, ऋतुओं, पशु-पक्षियों, नदी-नालों, ताल-तलैयों, फसलों आदि का सुन्दर
हुआ है । सम्पादक त्रय के शब्दों में 'राजस्थानी भाव-भावनाएँ इसकी
में ओत-प्रोत है ।"

5. काव्यात्मक-सौन्दर्य—जहां तक काव्यात्मकता का प्रश्न है, यह काव्य
से अच्छे साहित्यिक काव्य से समता कर सकता है । ढोला-मारू रा दूहा में
ात्मकता का जरा भी अभाव नहीं है । इसकी शैली विविधतामयी, रोचक एवं
त है । इसमें उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, स्वाभावोक्ति, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति
अलंकारों का स्वाभाविक रूप से समावेश हुआ है । इस दृष्टि से एक उदा-
पर्याप्त होगा । यथा—

> सुहिणा, तोहि मराविसू, हियइ दिराऊँ छेक ।
> जद सोंउ तद दोइ जणा, जद जांगू तद हेक ।।

ाह ! क्या सुन्दर उक्ति है—"अरे सपने ! तुझे मैं मराऊंगी, तेरे हृदय
राऊंगी । जब सोई होती हूँ तब तो हम दो होते हैं और जब जागती
ही रह जाती हूँ ।" स्वप्न को लक्ष्य करके मारवणी ने जो उद्गार
िया है, मार्मिक, भावुकता की दृष्टि से वे अनोखे है और अत्यन्त विरल
प्न के हृदय में छेद करवाने की बात में जो सूक्ष्म भावुकता है, वह लोक-
ों का स्तर सामान्यतः नहीं मिलती, क्योंकि लोकगाथाओं का स्तर सामान्य
का स्तर होता है । काव्यात्मक सौन्दर्य की दृष्टि से 'ढोला मारु रा दूहा'
ाथाओं में सर्वश्रेष्ठ है ।

6. रचयिता के व्यक्तित्व का अभाव—ढोला-मारु रा दूहा अपनी विशि-
ें अनुपम है । यद्यपि यह व्यक्तिपरक है किन्तु परिवेश की व्यापकता के
श यह निर्वैयक्तिक ही अधिक है । इसको इसके रचयिता के व्यक्तित्व का
श्चित ज्ञान नहीं होता । उसकी व्यक्तिकता राजस्थान के जन-जीवन की
कता में अन्तर्निहित हो गई प्रतीत होती है ।

7. उपदेशात्मक प्रवृत्ति—ढोला मारु रा दूहा लोक कथा के इस लक्षण
ाद है । जिस प्रकार उपदेश और नीति परक दोहे वृन्द और रहीम आदि
ने लिखे हैं, वैसे अनेक दोहे इस काव्य में भी उपलब्ध हैं । एक-दो उदाहरण

ससनेही समदां परहू, बसत हिया मंजार।
कु समेही घर आँगणइ, जाँण समंदा पार ।।
गाहा गीत विनोद रस, सगुणा दहि नियंति।
कछू निद्रा कइ कलह करि, मूरिख दीह गमति ।।

इसी प्रकार देशाटन को प्रशस्य ठहराती हुई निम्नलिखित गाथ
प्रसंग में उल्लेख्य है—

दीसइ विवह चरीय, जाणिज्जइ समण दुज्जण सहावो।
अपपाणंच कलिज्जइ, हडिज्जइ तेण पुहवीए ।।

अर्थात् विदेशों में भ्रमण करने से अनेक प्रकार के चरित्र दिखा सज्जनों और दुर्जनों के स्वभाव मालूम होते हैं और मनुष्य अपने आपको जाता है इसलिये पृथ्वी पर भ्रमण करना चाहिए।

(8) **टेक पदों की पुनरावृत्ति**—टेक पदों की पुनरावृति बैलेड की तम विशेषता है। ढोला-मारू दूहा में आवृति के अनेक प्रकार दृष्टिगोचर आवृति का एक प्रकार वह है, जिससे छन्द का पहला चरण अनेक दो रूप में आया है। उदाहरणार्थ—

ढाढ़ी एक सदेसडउ, प्रीतम कहिया जाय।
ढाढ़ी जे प्रीतम मिलइ, यूं कहि दाखवियाह।
ढाढ़ी जे साहिब मिलइ, यूं दाखविया जाइ।
पंथी एक संदेसडउ लग ढोलहि पेह च्याइ।
आड़ा डूंगर, बन घणा, खरा पियारा मित्त।
आड़ा डूंगर, भुइं घणी, सज्जण रहइ विदेस।
आड़ा डूंगर भुइं घणी, तियां मिलीजइ एम।

उक्त उदाहरणों में न केवल दोहे के पहले चरण की आवृति हु दूसरे चरण में भी अनेक स्थानों पर बहुत से शब्दों की आंशिक तथा भा आवृति हुई है। इस प्रकार की आवृति का उद्देश्य विषय की ओर ध्या करना था। वैसे हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि ढोला-मारू रा दूहा आवृति नहीं हुई है। अतः इसे 'बैलेड' नाम से अभिहित नहीं किया जा

(9) **लम्बा कथानक**—लोक गाथाओं अथवा पवाड़ों में लम्बे क परम्परा रही है, परन्तु ढोला-मारु की कथा पर ध्यान देने से ज्ञात उसका कथानक लम्बा नहीं है। डॉ. मोती लाल मेनारिया के शब्दों में का दूहा की कहानी बहुत सीधी सादी और सुलझी हुई है। कवि ने इसे से कहा है और काव्य कल्पना का रंग इसमें इस तरह भरा है कि सारी कहानी जगमगा उठती है।"

(10) संदग्धि ऐतिहासिकता—ढोला-मारु रा दूहा की ऐतिहासिकता संदिग्ध ऐतिहासिक तत्व की संदिग्धता लौकिक काव्य की अपनी निजी विशेषता है। दृष्टि से 'ढोला-मारु रा दूहा' एक लौकिक काव्य है।

उपसंहार—राबर्ट ग्रेव्स द्वारा लोकगाथा काव्य की बताई गई विशेषताओं कसौटी पर कसने पर 'ढोला-मारु रा दूहा' कहीं अधिक ऊपर और श्रेष्ठ कृति उसमें बौद्धिकता, कल्पनाशीलता, शब्दों के सार्थक प्रयोग, कथा सूत्र की एकता, कारिता, कविसिद्ध उपमानों का प्रयोग, सरसता, रोचकता का जरा भी अभाव है। तथापि इसमें उपमानों की भी कोई कमी नहीं हैं। जिनका राजस्थानी -जीवन से सीधा सम्बन्ध है। डॉ. सत्येन्द्र ने इस काव्य को इन्हीं विशेषताओं के धार पर उसे हिन्दी क्षेत्र का एक प्रसिद्ध लोक महाकाव्य कहा है। डॉ. दशरथ र्मा और श्री कृष्ण बिहारी सहल ने इसे विकसिनशील लौकिक खण्ड काव्य की ा दी है। डॉ. शम्भुसिंह मनोहर इसे मुक्त प्रबन्ध काव्य कहते हैं। वस्तुतः ला-मारु के काव्य में लोकगाथा, लोकगीत और लोक साहित्य की सभी विशेष-ओं का समावेश होने के साथ-साथ उसमें साहित्यिकता और काव्यात्मकता का अभाव नहीं है। अतः इसे राजस्थान के जन-जीवन की व्यापकता से अभि-क्ति करने वाला लोकगीत या लोकगाथा काव्य स्वीकार करना उचित ही होगा।

प्रश्न 13. 'ढोला-मारु रा दूहा' का काव्य सौन्दर्य विषय पर एक निबन्ध लिखिये।

अथवा

'ढोला-मारु रा दूहा' काव्य की साहित्यिक विशेषताओं का उद्घाटन जिये।

उत्तर—'ढोला-मारु रा दूहा' राजस्थान का एक अत्यन्त प्रसिद्ध, लोकप्रिय र सर्वश्रेष्ठ लोक कथा काव्य है। इसमें लोक कथाओं के सभी लक्षण न्यूनाधिक में विद्यमान हैं। साथ ही साहित्यिक दृष्टि से भी इसमें कल्पनाशीलता, बौद्धि-ता, कलात्मकता, सरसता, रोचकता का भी अभाव नहीं है। इसका हर स्वर जस्थान के प्राणों की अभिव्यक्ति है। इसमें राजस्थान के लोक जीवन और परम्-ाओं की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है। यह व्यक्ति की वीणा पर मुखरित राजस्थान अमर प्रेम काव्य है।

ढोला मारु का काव्य सौन्दर्य-किसी कृति के काव्य सौन्दर्य का मूल्यांकन भाव और कला पक्ष इन दो वर्गों में विभक्त करके करने की परम्परा रही है। वस्तुतः व अनुभूति और कला अभिव्यक्ति पक्ष है। इन दोनों पर सम्यक विचार से ही

किसी कृति का यथार्थ मूल्यांकन सम्भव है। ढोला-मारु रा दूहा मूलतः एक प्रधान काव्य है। अतः हम भाव पक्ष की विवेचना ही पहले करेंगे।

भाव पक्ष—ढोला-मारु रा दूहा के भाव पक्ष का अन्वेक्षण करते समय उन्हीं प्रबल भावों की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करना है। जिनकी स्फूर्ति अभिव्यक्ति के कारण इस काव्य के दोहे काल-समुद्र की उत्ताल तरंगों पर रहे हैं और भविष्य में भी तैरते रहेंगे।

(i) **शृंगार प्रधान प्रेम काव्य**—ढोला मारु रा दूहा शृंगार प्रधान र है, जिसके श्रवण तथा पाठन से राजस्थानी जनता अनेक शताब्दियों से प्रेम सौन्दर्य के रस महोदधि में स्नान करती रही है। प्रेम ही इस काव्य का मुख्य विषय है। यह घटना प्रधान काव्य न होकर चरित्र या भाव प्रधान काव्य अतः इसमें घटना विकास या वर्णन की ओर कवि का उतना ध्यान नहीं है। जि नायक और नायिका (ढोला और मारवणी) के चरित्र चित्रण की ओर। दूसरे में ढोला-मारु का समस्त कथानक नायक-नायिका के प्रेमोत्कर्ष की व्यंजना क माध्यम है। इसका मुख्य विषय नायक-नायिका का प्रेम है जिसकी व्यंजना के वांछित घटना क्रम की कुछ इतिहास और अधिकांश कल्पना के आधार संयोजना कर ली गई है।

आचार्यों ने शृंगार के दो भेद किये हैं-(1) संयोग शृंगार और (2) वि लम्भ शृंगार। संयोग की अपेक्षा वियोग में मानव हृदय को प्रभावित करने अधिक शक्ति होती है। ढोला-मारु में भी सयोग की अपेक्षा वियोग शृंगार की प्र नता है। मारवणी का यौवनागम तथा स्वप्नदर्शन विरह की पृष्ठभूमि प्रस्तुत क है। मारवणी जब स्वप्न में ढोला को देखती है तो जागृतावस्था में निःश्वास छो लगती है। क्रौंचा को हाथों पर उठाये मारवणी प्रेम में लुब्ध हुई ऊँची चढ चिन्तित अवस्था में प्रिय का मार्ग देखती है। वह बादल को देखती है तो उसे का स्मरण हो आता है और उसके नेत्रों से जल बरसने लगता है। वह ब को सम्बोधित कर कुछ लज्जाशील बनने का निवेदन कर कहने लगती है–

> बिज्जलियाँ नीलाज्जियां, जलहर तू ही लज्ज।
> सूनी सेज, विदेस प्रिय, मधुरइ-मधुरइ गज्जि॥

स्वप्न दर्शन के बाद मारवणी के जिस प्रेम का चित्रण हुआ है, उसमें स्व चिन्ता, स्मृति, विषाद आदि संचारियाँ तथा निःश्वास, आंसू, दिन गिनना, कौ को हाथों पर उठाना, ऊँची चढकर मार्ग देखना आदि अनुभावों का अच्छा चि हुआ है।

मारवणी ने ढाढियों के हाथ जो संदेशा भेजा, उसको पढ़कर ऐसा ल है मानों उसने अपना हृदय निकालकर रख दिया हो। इन सोरठों में मारव

द्‌गार व्यक्त हुए है वे किसी भी विरहिणी पर घटित किये जा सकते हैं। द्‌योद्‌गारों में जो एक उद्‌गार प्रमुख रूप से प्रकट हुआ है, वह है यौवन बीता हा है, इसलिये तुम्हें इस अवसर को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। संदेश क मर्मस्पर्शी उक्ति देखिये—

पंथी एक संदेसड़उ लग ढोलहि पैहच्याय।
जोवन जाइय प्राहुणउ, बेगइरऊ घर आय॥

वणी द्वारा भिजवाये गये इस संदेशे मे प्रेम के जिस स्वरूप का चित्रण हुआ है, में यौवन रस के उपभोग का अनेकशः उल्लेख हुआ है।

काव्य के मध्य भाग में ढोला की मारवणी के प्रति मिलना कुलता से लेकर के पास पूगल पहुँचने तथा अन्त भाग में ढोला और मारवणी के मिलन का सुखद नि है। इस दृष्टि से यह एक सुखान्त काव्य है जिससे विरह मिलन की भूमिका कर आया है। भारतीय रचनादर्श के यह सवर्था अनुरुप ही है।

(2) **मर्मस्पर्शी स्थल**—वैसे तो ढोला-मारु की सम्पूर्ण प्रेम गाथा ही मय है, तथापि इसमें विशेष रूप से निम्नलिखित स्थल उल्लेखनीय हैं—

(i) स्वप्न दर्शन के अनन्तर मारवणी के हृदय में उत्पन्न विरह वेदना तथा सके फलस्वरूप चातक, सारस एवं कुरझों को सम्बोधित कर कही गई विरहो- क्तयां! इनमें से एक उदाहरण देखिये—

कुँझा, द्यउ नइ पँखड़ी, थाकउ विनउ वहेसि।
सायर लंघी प्री मिलिउ, प्री मिल पाछी देसि॥

कितनी सुन्दर उक्ति है कि प्रिय से मिलकर आकर मैं तुम्हारी पाखों को लौटा दूंगी।

(ii) ढोला को प्रेषित मारवणी का सदेश। संदेश देते हुए विलाप करती ारवणी के हृदय की कसमसाहट को कवि ने कितने मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रित किया है—

पंथी एक संदेसड़ा घण विललंती देइ।
पग सूं काठई लीहटी, उर आँसुआ भरेइ॥

(iii) मारवणी का संदेश सुनकर ढोला की उससे मिलने हेतु प्रेम-जन्म ाकुलता।

(iv) ढोला को रोकने के लिए मालवणी के कातर अनुरोध एवं दाम्पत्य ेम गर्भित सरस व भावपूर्ण संवाद।

(v) मालवणी का विरह वर्णन।

(vi) ढोला व मारवणी के मिलन तथा प्रेमियों के संयोग सुख का वर्णन।

(vii) मालवणी व मारवणी के परिहास भरे संवाद।

उपर्युक्त प्रसंगों में से प्रत्येक का अत्यन्त सरस एवं हृदयस्पर्शी चित्रण काव्य में हुआ है।

(3) **प्रकृति चित्रण**–प्रकृति चित्रण की दृष्टि से ढोला मारु राजस्थान लोक जीवन, स्थानीय प्रकृति एवं प्रान्तिक विशेषताओं का एक जीवन्त प्रतीक इसमें सभी ऋतुओं ग्रीष्म, वर्षा, शिशिर का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। वर्षा में हरे-भरे पर्वतों पर मयूर का उल्लसित होकर नृत्य करना और बाजरे के के बीच-बीच में फैली हुई बरसाती बेलों में लगे फूलों की सुन्दरता का अनुभव राजस्थानीवासी ही कर सकता है। एक दृश्य देखिये–

बाजरियाँ हरयालियाँ, बीच-बीच बेला फूल।

इसी प्रकार मरु-प्रदेश राजस्थान में उत्पन्न होने या पाये जाने वाले वृ पौधों, फसलों या वनस्पतियों में करीर, मूँग, बबूल, आक, जाल, फोग आदि वर्णन करना भी कवि नहीं भूला है। राजस्थान में ऊँट का विशेष महत्व अतः इस काव्य में करहा (ऊँट) वर्णन से सम्बन्धित अनेक दूहों का होना स भाविक ही है। इस प्रकार प्रकृति चित्रण की दृष्टि से कवि ने इसमें राजस्थानी जीवन, धरातलीय सौन्दर्य, पशु, पक्षी आदि का विशद एवं व्यापक उल्लेख कि है। अतः प्रकृति चित्रण की दृष्टि से एक सफल काव्य है।

'ढोला-मारु रा दूहा' का कलात्मक सौन्दर्य—'ढोला-मारु रा दूहा' कलात्मक पक्ष उसके भावात्मक पक्ष के समान ही सुन्दर, सशक्त और प्रभावश है। इसमें इन दोनों का इतना सुन्दर समन्वय हुआ है कि दोनों को एक-दूसरे विच्छिन्न कर देख सकना कदाचित संभव नहीं है। यहाँ कला भावों में खो ग और भाव कला में ढल गये हैं। कलात्मक पक्ष के अन्तर्गत यहाँ हम भाषा, अ कार योजना, छन्द प्रयोग और प्रतीक विधान का उल्लेख करेंगे।

(1) **भाषा**—ढोला मारु रा दोहा एक लोक गाथा काव्य है। सैकड़ों व से जन-सामान्य की वाणी पर थिरकते-थिरकते तथा मौखिक परम्परा के का इसकी भाषा में परिवर्तन होता रहा है। वैसे इसकी भाषा मध्यकालीन राजस्थ है। इसमें गुजराती, सिन्धी, पंजाबी आदि के प्रयोग भी स्थान-स्थान पर पाये ज है। राजस्थानी में भी कहीं मारवाड़ी रूप है तो कहीं ढूँढारी, कहीं जैसलमेरी तो कहीं मालवी। इसमें खड़ी बोली और ब्रज के रूप भी एकाध जगह पर प जाते हैं। देशज शब्दों का भी इसमें बहुतायत से प्रयोग हुआ है। लोकभाषा रचित होने के कारण इसमें देशज शब्दों का प्राचुर्य स्वाभाविक ही है।

(2) **छन्द योजना**—कविता और छन्द के बीच बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध कविता हमारे प्राणों का संगीत है, छन्द हृत्कम्पन, कविता का स्वाभाव ही

मान होता है । जिस प्रकार नदी के तट अपने बन्धन से धारा की गति को
त रखते हैं वैसे ही छन्द भी कविता को सजीव बनाते हैं । ढोला-मारु में
: तीन प्रकार के छन्दों का प्रयोग हुआ है—दूहा, गाता और चन्द्रायण ।

(A) दूहा—दूहा तो हिन्दी दोहों जैसा ही होता है । गाता–'गाथा' का ही
। संस्कृत में इस छन्द का नाम आर्या है । चन्द्रायण मात्रिक सम छन्द है ।
एक चरण में इक्कीस मात्राएँ होती है । ढोला मारु में यह छन्द केवल दो
आया है । इसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

राजा, परजा, गुणियजण, कविजण पंडित पात ।
सगला मन ऊछव हुमड़, बुठ्ठै बरसात ॥

(3) अलंकार-योजना—काव्य के शोभाकारक धर्मों को अलंकार कहते हैं ।
कारों के स्वाभाविक प्रयोग से काव्य चमत्कृत हो उठता है । ढोला-मारु में
ने भी अलंकारों का प्रयोग हुआ है वे स्वाभाविक और भावों के सहयोगी बन-
आये प्रतीत होते हैं । इस काव्य की अलंकार योजना के उपमान सहज और
लक हैं । अधिकतर उपमान लोक जीवन से ही लिए गये हैं । अलंकार सौन्दर्य
दृष्टि से कुछ उदाहरणों का अवलोकन करना उचित ही होगा । यथा—

) रूपक अलंकार— ढोला-मारु में रूपक अलंकार का बहुतायत से प्रयोग हुआ है । मारवणी संदेश के अधिकांश दोहे इस अलंकार की छटा से शोभित हैं । यथा—

(i) आँख्या सीप विकासियाँ, स्वाति ज बरसऊ आई ।
(ii) जोवण कमल विकासियउ, भ्रमर न बरसइ आई ।
(iii) जोवण जायइ प्राहुणउ, बेगइरऊ घर आय ।

) उपमा अलंकार— (i) मारु सी देखी नहीं ।
(ii) गति गंगा, मती सरसवती, सीता सील सुभाइ ।
महिला सरहर-मारुई, अवर न दूजी काय ॥
(iii) बाबहियउ नइ विरहणी, दुहुवां एक सहाव ।
जब ही बरसइ घण घणउ, तबह कहइ प्रीयाव ॥

) उत्प्रेक्षा अलंकार—(i) मंदिर बोली मारुवी, जांणि भणक्की वीण ।
(ii) ढोला एही मारुई, जांणिक कयागैर-कंब ।

) संदेह अलंकार— सखि बदलाओ किणि जई, प्री मिलियउ एकन्त ॥
मुलकत ढोलउ चमकियउ, बीजल लिखी कदंत ॥

) भ्रान्तिमान— बाबहिया तरपंखिया, तइ किऊ दीन्ही लोर ।
मई जाणयउ प्रिय आवियउ, समहर चद चकोर ॥

(vi) **उदाहरण अलंकार**— आड़ा डूंगर भुइ घणी, तिणां मिल्जिइ
मनिहु खिणाहि न मेल्हियइ, लकवी दिशियर

(vii) **व्यतिरेक अलंकार**— ऊनमि आई बद्दली, ढोलउ आयउ चित्त
थो बरसइ रितु आपणी, इनण हमारे नित्त।

(viii) **अतिशयोक्ति** — रति ज रुनी निसहभरी, सुणि महाजन खो
हाथाली छाला पड़या, चीर निचोइ-निचो

(ix) **विरोधाभास**— ससनेही समदां परइ, बसन हिया मंझार।
कुसनेही घर आँगणइ, जाँण समदाँ पार॥

(x) **स्वाभावोक्ति** — पंथी एक संदेसड़ा, घण विललती देह।
पग सूं काढ़ई लीहटी, उर आँसुआ भरेइ॥

इस प्रकार ढोला-मारु काव्य की अलंकार योजना अत्यन्त स्वाभ
मौलिक और प्रभावशाली है।

(4) **प्रतीक योजना**—प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य वस्तु के लिए
जाता है जो किसी अदृश्य विषय का प्रतिविधान उसके साथ अपने साहचर्य
कारण करती है। ढोला-मारु में कहीं-कहीं भाव व्यजना के लिए प्रतीकों
सुन्दर योजना की गई है। विशेषतः मारवणी संदेश के अन्तर्गत विविध
प्रतीकों के माध्यम से नायिका ने अपनी विरह-व्यथा की मार्मिक व्यंजना की
उदाहरणतः निम्न दूहों में प्रतीकों द्वारा ही मन की बात की कितनी सहज भा
अभिव्यक्ति हुई है—

(i) सा धण बलि कुइला भई भसम ढंढोलिसि आई।
(ii) पंजर नहि छइ प्राणियउ, थां दिस झल रहियाइ।
(iii) जोवण जायइ प्राहुणउ, बेगइरऊ घर आवै॥
(iv) जोबन खीर समुद्र हुई, रतन का काढ़इ आइ॥

उपसंहार—इस प्रकार हम देखते हैं कि गांव और भाषा दोनों ही दृ
से यह प्रेम काव्य सर्वथा अप्रतिम और अद्वितीय है। इसमें प्रयुक्त भाषा भाव
वर्तनी है एवं कला पक्ष तथा भाव पक्ष दोनों मिलकर एक रूप हो गये हैं। भा
एवं अभिव्यक्ति का यह मणि-कांचन संयोग ही इस प्रेम काव्य की विशिष्टता
महाकवि मिल्टन ने उत्कृष्ट काव्य का लक्षण निरूपण करते हुए लिखा है—

'Poetry should be simple, sensuous and Passionate".

उपर्युक्त तीनों ही गुण ढोला-मारु रा दूहा में विद्यमान हैं।

प्रश्न 18. पठित काव्य के आधार पर 'मारवणी-संदेश' की विशेष
का उल्लेख कीजिये।

उत्तर---प्रस्तावना-विश्व के सभी साहित्यकारों ने प्रेम नाम की मनोवृत्ति ...जिस उल्लास, उमंग, उत्साह तथा तल्लीनता से वर्णन किया है, सम्भवत; उस ...ा से किसी अन्य मनोवृत्ति का नहीं। इससे प्रेम के आकर्षण और उसके ...व पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। प्रेम की एक बड़ी बिशेषता यह है कि यह ...चर प्रकृति को अपनी परिधि में समेट लेता है। इस प्रकार प्रेम किसी भी ...र काव्य का अभिन्न अंग होता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार जिसके ...ा शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता ...वही काव्य है।

'ढोला-मारु रा दूहा' भी मूलतः एक प्रेम काव्य है। इसमें मानवीय रागा...क प्रवृति का बड़ा सहज और स्वाभाविक चित्रण हुआ है जो मार्मिक होने के ...थ प्रभावशाली भी है। इस काव्य की कथा का प्रारम्भ स्वप्न में अपने प्रिय के ...र्शन के बाद उसकी स्मृति संताप से होता है। विरह संताप से व्याकुल मारवणी ...ह निःश्वासें भरने लगी एवं शून्यमनस्कभाव से अपलक देखती हुई प्रियतम की ...तीक्षा में आकुल एक-एक दिन गिनने लगी। उधर काम ने यौवन के अग्निकुण्ड ...आहुतियाँ देनी शुरु की। विरहिणी की वेदना का अब कहाँ अन्त था ? अब वह ...भी पपीहे से, कभी मेघों से, कभी कुरझों से और कभी पवन से अपने प्रिय के ...ास सन्देश ले जाने की विनय करने लगी, परन्तु यह अनुरोध भी व्यर्थ हो गया। ...धर राजा-रानी को अपनी पुत्री की व्यथा की जानकारी हुई। उन्होंने ढ़ाढ़ियों ...ो अविलम्ब ढोला के देश नटवर जाने की आज्ञा दी। मारवणी को भी अपने ...न को बात कहने का अवसर मिला। उसने ढाढियों के साथ प्रिय ढोला को अपने ...देश कहलवाया। मारवणी का यह सन्देश उसके हृदय की घनीभूत व्यथा है, जो ...ाजस्थान के समूचे शृंगार साहित्य में अद्वितीय है।

मारवणी के संदेश की विशेषताएं—निम्नलिखित हैं—

(i) संचारियों और अनुभावों का सुन्दर चित्रण--मारवणी ने ढ़ाढ़ियों के ...ाथ जो संदेश भेजा उसको पढ़कर ऐसा लगता है, मानो संदेश के बहाने उसने ...पना हृदय निकालकर ही रख दिया हो। इसमें मारवणी के हृदय में उठने वाले ...ावों या विरह जन्य मनोविकारों चिन्ता, आशंका, उद्वेग, भय, पश्चाताप आदि ...ा बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है। इसमें प्रेमी हृदय की अन्तर्दशाएँ अपनी ...शेष विविधता और सूक्ष्मता से चित्रित हुई हैं।

(ii) प्रियागमन का कातर अनुनय--नायिका मारवणी अपनी वियोग ...शा का कारुणिक चित्रण कर प्रियतम को लौट आने का कातर अनुनय करती ...। सम्भवतः उसकी इस दीन दशा का वर्णन सुन उसके प्रिय लौट आवें। यथा-

(i) ढाढी एक संदेसड़उ, प्रीतम कहिया जाइ।
सा धण बलि कुइला थई, भसम ढँढोलिसि ग्राइ।
(ii) जोवन जायइ प्राहुणउ, बेगइरऊ घर ग्राय।

(iii) **उत्कृट मिलन कामना**—मारवणी के हृदय में प्रिय मिलन उत्कृट कामना है। वह देखती है कि उसके ग्रंग-प्रत्यंग में यौवन छा गया पर उसका उपभोग करने वाला उसका प्रिय नहीं है। प्रिय के ग्रभाव में यौवन क्या सार्थकता ? मारवणी द्वारा भिजवाये गये संदेशे में प्रेम के जिस स्वरूप चित्रण हुग्रा है, उसमें यौवन-रस का भोग करने का उल्लेख ग्रनेक दोहों में ग्र प्रकार से हुग्रा है। कुछ उदाहरण देखिये--

(i) जोवण ग्राँवउ फलि रह्यउ, साख न खाग्रउ ग्राइ।
(ii) जोवण छत्र उपाडियउ, राज न बरसउ काइ।।
(iii) जोवण चाँपउ मउरियउ कली न चुट्टइ ग्राइ।
(iv) कण पाकउ करसण हुवउ भोग लियउ घरि ग्राइ।

(iv) **समर्पण ग्रौर उत्सर्ग**—मारवणी के काम में भी समर्पण ग्रौर ग्रात दान की भावना है। प्रेमी ग्रपनी ग्रमूल्य वस्तु प्रिय को देकर ही सन्तुष्ट होता है मारवणी भी इसी समर्पण की भावना से प्रेरित होकर ग्रपने यौवनागम स्मरण दिला कर प्रियतम का ग्राह्वान करती है। ग्रतः यहां काम भी उदात्त गया है।

(v) **ग्रसह्यता**--कहीं-कहीं मारवणी के संदेश में यौवन-वेग की ग्रसहनत का भी सुन्दर चित्रण हुग्रा है, जो स्वाभाविक है। यथा—

(i) जोबण फट्टि तलावडी, पालि न बाँधउ काँइ।
(ii) जोबण बंधन तोडस्यइ, बंधन घातउ ग्राय।
(iii) सावज संकल तोडस्यइ, वैसासणइ न जाइ।

(vi) **काम का सहज वर्णन**—प्रोफेसर शंभुसिंह मनोहर के शब्दों में-लोक काव्यों की यह विशेषता है कि उसमें काम (Sex) को जीवन के एक सहज सत्य रूप में स्वीकार किया गया है। उसे भक्ति या ग्राध्यात्मिकता का बाना पहनाक प्रकट नहीं किया गया है। विरह तरंगों से उद्वेलित यौवन सिन्धु को भला प्रियत के ग्रतिरिक्त ग्रौर कौन पाल बाँध सकता है ?

(vii) **कवि परम्परा का निर्वाह**—विरह दशा के ग्रन्तर्गत नायिका अनुभावों का चित्रण करने की प्रायः कवि परम्परा रही है। शोकाकुल, नमितमुख मारवणी का एक ऐसा ही चित्र देखिये--

पंथी हाथ संदेसड़उ, धण विललंती देह।
पगसूँ काढइ लीहटी, उर ग्राँसुग्रा भरेह।

(viii) **आदर्श रूप**—मारवणी के संदेश में उसकी मनोदशा की अती व
र्शी व्यंजना हुई है। साथ ही प्रेम निर्वाह के लिए वह प्रिय के समक्ष आदर्श
क निम्न दृष्टान्त रखती है--

जिम सालूरां सरवैरां, जिम धरणी अर मेत।
चपावरणी बालहा, इम पालीजइ नेत ॥

मारवणी का प्रेम भारतीय नारी के शील और विनय का आदर्श है।

(ix) **अभिव्यक्ति सौन्दर्य**—मारवणी संदेश का भाव पक्ष जितना मर्मस्पर्शी,
ा और वेदनाजन्य है, उसका कला पक्ष भी उतना ही सहज, स्वाभाविक,
र एवं प्रभावशाली है। इसमें उपमा व रूपक अलंकारों की मानो झड़ी ही लग
है। ये उपमान मौलिक और राजस्थानी जन-जीवन की विशेषताओं का उल्लेख
न वाले हैं। भाषा सहज और भावानुगामिनी है। प्रतीक योजना भी प्रभाव-
ी है।

निष्कर्ष—इस प्रकार मारवणी संदेश ढोला-मारु काव्य का एक सुन्दर प्रसंग
इसमें मारवणी की अन्तर-व्यथा की हृदय-स्पर्शी व्यंजना है, भावों की तीव्रता
प्रेम की गम्भीरता है। इसका कला पक्ष भी सुन्दर, प्रभावशाली और
वानुगामी है।

-----

2. कथा विसर्जन (नाटक)

(लेखक : लक्ष्मी नारायण लाल)

प्रश्न 19. रंगमंच की दृष्टि से 'कथा-विसर्जन' नाटक की सोदाह
समीक्षा कीजिए।

अथवा

'कथा-विसर्जन' नाटक की अभिनेयता पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—'कथा विसर्जन' डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल का एक नवीनतम न
है जो अपनी अभिनेयता तथा मंच प्रस्तुतीकरण के लिए प्रसिद्ध है। प्रस्तुत न
की रचना लेखक ने भारतीय नाट्य परम्परा से नाटक को जोड़ने तथा सांस्कृ
सन्दर्भों से जुड़ने की दृष्टि से की है। लेखक ने भूमिका में यह स्पष्ट करने
प्रयास किया है कि जयशंकर प्रसाद के नाटकों से लेकर आज तक के अधि
नाटक साहित्यिक अधिक है और मंचीय कम। लेखक ने 'अन्धा कुआ' बलराम
तीर्थ यात्रा, 'पक्ष प्रश्न' व 'कथा विसर्जन' नाटकों की रचना करके शिल्प, द
नुभूति, नाट्य चिन्तन और नाट्य विद्या को एक नई दिशा प्रदान की है।

डॉ. लाल मौलिक नाट्य रचना के साथ-साथ ही रंगमंच प्रदर्शन
निर्देशन से सम्बद्ध रहे हैं। उन्होंने इस दृष्टि से रंगमंच अनुसन्धान के क्षेत्र में
महत्वपूर्ण ग्रन्थ—'रंगमंच और नाटक की भूमिका' 'पारसी हिन्दी रंगमंच'
'हिन्दी रंगमंच और नाटक' की रचना की है। उनकी 'कथा विसर्जन' अभिने
की दृष्टि से पूर्णतः सफल है। इसका अनेक बार सफलतापूर्वक मंचीय प्रदर्शन
इस बात का प्रमाण है।

अभिनेयता की दृष्टि से विचारणीय बिन्दु—नाटक की अभिनेय सफल
कोई सामान्य कार्य नहीं है क्योंकि "नाटक के रंगमंच की दुनिया अप्रत्यक्ष
है, यह प्रत्यक्ष तो सबसे ज्यादा है, पर नाटक का यह प्रत्यक्षीकरण अभिनेय
निर्देशक, रंगशिल्पी की मध्यस्थता से मंच पर दर्शक के सामने होता है।

ट विद्या ही नहीं, सब विद्याओं से ज्यादा यह दूसरों (दूसरी कलाओं मनुष्य, कार, अनुभव, सृजन से) संयुक्त है।''

अभिनेयता की दृष्टि से समीक्षा करने पर निम्न बिन्दुओं पर विचार करना क्षित होता है—

(1) नाटक का आकार, (2) नाटक की कथा वस्तु, (3) पात्रों के कार्य-पार, (4) अंक विधान, (5) दृश्य विधान, (6) कथोपकथन, (7) मंच संकेत निर्देश, (8) मानव प्रकृति के विविध रूप, (9) कौतूहल व जिज्ञासा, 0) हास्य व मनोरंजन, (11) संकलन-त्रय, और (12) गीत एवं संगीत।

अब हम क्रमशः उक्त सम्बन्ध बिन्दुओं को ध्यान में रखकर कथा विसर्जन रंगमंचीय सफलता पर विचार करेंगे।

1. नाटक का आकार—किसी भी नाटक की कथा वस्तु का आकार इतना ना चाहिये कि वह दो-ढाई घण्टे में पूर्ण हो जाय। आज के दर्शकों के पास अति स्तता के कारण समय का अभाव रहता है। 'कथा विसर्जन' इस दृष्टि से एक ादर्श नाटक है और उसका मंचन दो-ढाई घण्टे में पूर्ण किया जा सकता है। इसमें स्तावना व 4 अंक हैं। अंकों का विभाजन 9 दृश्यों में किया गया है। दृश्यों का थान एक ही होने के कारण बार-बार मंच व्यवस्था में लगने वाले समय की बचत ोती है। अतः लघु आकार के कारण इसका अभिनय सरलतापूर्वक किया जा कता है।

2. नाटक की कथावस्तु—नाटक की कथावस्तु का रोचक एवं कौतूहल-द्धक होना आवश्यक है। जटिलता उसका प्रमुख दोष है। 'कथा विसर्जन' की था-वस्तु सरल-सीधी और स्पष्ट है। उसमें कोई उलझाव-सुलझाव या वक्रता हीं है। प्रासंगिक कथाओं का भी अभाव है जिससे दर्शक इससे सरलतापूर्वक ादात्म्य स्थापित कर सकता है।

3. पात्रों के कार्य-व्यापार—प्रस्तुत नाटक में पात्रों की संख्या सीमित है। तः उनका निर्वाह करना सरल है। इसमें कुल छः मुख्य पात्र हैं जिनमें से पांच एक ी परिवार के सदस्य है। पति-पत्नि, दो बच्चे आशा और शोनू तथा गृहस्वामी की ां। छठा पात्र प्रकाशचन्द्र का बोस सेठी साहब है। गौण पात्रों में गोपी, नाथू, ट और नटी है। लेखक ने इनके क्रिया-व्यापार के द्वारा इनके चरित्र का मार्मिक द्घाटन किया है।

4. अंक विधान—प्रस्तुत नाटक में चार अंक हैं और 9 दृश्य है जिनमें था का विकास क्रमशः होता रहता है। घटनाओं के माध्यम से पात्रों का चरित्र पष्ट होता रहता है। दृश्य परिवर्तन में कोई असुविधा नहीं होती क्योंकि सम्पूर्ण टनाएं एक ही स्थान पर घटित होती हैं।

5. कथोपकथन—कथोपकथन नाटक का प्राण होता है। छोटे-छोटे क कथन नाटक की कथावस्तु को गति देते हैं और पात्रों के चरित्र को स्पष्ट हैं। 'कथा-विसर्जन' में स्वगत कथन बहुत ही कम हैं। इसके संवाद छोटे-छोटे म पात्रानुकूल और उपयुक्त है। जिससे दर्शक उन्हें सरलता से समझ लेता है। उदाहरण देखिये—

प्रकाश—अब मैं निरपेक्ष नहीं हूँ।

नीलम—यह खतरनाक है।

प्रकाश—माँ मेरा भय लेकर चली गई। इस नौकरी ने मेरा सत्या किया, पर माँ के आशीर्वाद से मैं इतना नहीं गिरा कि माँ के विश्वास को अ तरक्की के लिए बाजार में बेच दूँ।

6. भाषा—'कथा-विसर्जन' की भाषा शिक्षित वर्ग की बोलचाल की आ भाषा है। उसमें अंग्रेजी, उर्दू के शब्दों का प्रयोग निस्संकोच किया गया है। ये शब्द व्यावहारिक, बोलचाल के और सामान्य हैं जिन्हें सामान्य पढ़ा-लि व्यक्ति भी सरलता से समझ सकता है। भाषा में मुहावरे व कहावतों का प्रय किया गया है। कुछ कथन उक्ति के समान प्रतीत होते हैं—'धर्म का अर्थ है 'सर्वजीवन के साथ एकाएक होना।' 'सेवा तो अहंकार का विसर्जन है।' 'तरक के लिए धर्म नहीं शक्ति चाहिये।' इस तरह के वाक्यों से नाटक की प्रेषणीयता वृद्धि हुई है। नाटककार ने बड़े कौशल से प्रयुक्त कठिन शब्दों का अर्थ भी स्प कर दिया है—उर्दू के शेर में 'दर्दे पुरकंत तथा चौथे अंक के प्रथम दृश्य में ऋग के प्रयुक्त मंत्रों का अर्थ वहीं समझा दिया गया है। अतः भाषा की दृष्टि से प्रस्त नाटक अभिनेयात्मक है।

7. मंच संकेत व निर्देश—नाटक के सफल अभिनेय के लिए मंच सज्ज संकेत व पात्रों के कामिक, वाचिक, आहार्य व सात्विक अभिनेय के निर्देश अपेक्षि होते हैं। प्रस्तुत नाटक से इन दोनों ही बातों का सफलतापूर्वक निर्देश कि गया है जिनसे रंगमंच की दृष्टि से यह एक आदर्श नाटक कहा जा सकता है।

8. मानव-प्रकृति के विविध रूप—जीवन अनेक प्रकार की विविधताओं पूर्ण है और जीवन की प्रभावी अभिव्यक्ति करना ही नाटक का उद्देश्य। इ दृष्टि से विविध प्रवृत्ति वाले मनुष्यों के व्यवहार-प्रदर्शन से नाटक में स्वाभाविकत व रोचकता बनी रहती है। प्रस्तुत नाटक में भी मानव-प्रकृति की विविधता व्यापक चित्रण हुआ है। नाटक की प्रमुख पात्र माँ सरल सीधी, सेवा भावी कर्त्तव्यनिष्ठा, हंसमुख, आस्तिक, वात्सल्यमयी, धर्मपरायण व सन्तोषी है तो उस पुत्रवधू नीलम असन्तोषी, जिद्दी, स्वार्थी, दिखावट पसन्द, नास्तिक, भविष्य स्वप्न देखने वाली, तर्कशील माडर्न नारी है। प्रकाश चन्द्र न्यूट्रल पात्र है पर नाट

न में उनके चरित्र में भी परिवर्तन होता है। आशा व शोनू का व्यवहार भी है। सेठी साहब आधुनिक बोस और स्वार्थी धार्मिक के उदाहरण हैं। इस इस नाटक में मानव प्रकृति की विचित्रता का प्रभावशाली चित्रण किया है।

9. **कौतूहल व जिज्ञासा**—नाटक का आरम्भ जिज्ञासावर्द्धक और कौतू-से पूर्ण होना चाहिये। नाटक के अन्त तक इन दोनों विशेषताओं का बना ा आवश्यक है। इससे दर्शक शान्तिपूर्वक नाटक को देखते हैं और किसी र का व्यवधान नहीं होता। 'कथा-विसर्जन' में आरम्भ से अन्त तक कौतूहल जिज्ञासा विद्यमान है। अतः यह एक सफल मचीय नाटक है।

10. **हास्य व मनोरंजन**—जीवन में केवल गम्भीरता, संघर्ष और समस्याएं नहीं है, वरन उसमें हास्य व मनोरंजन के क्षण भी हैं। कुशल नाटककार ा-वस्तु के साथ-साथ इनका अपेक्षित समन्वय भी कर देता है। उससे दर्शकों के में ऊब पैदा नहीं होती और वे प्रसन्नचित्त नाटक को देखते रहते हैं। डॉ. ल ने नाटक में रोचकता बनाये रखने के अनेक हास्य व मनोरंजन के स्थलों का न किया है। शोनू व आशा की तुकबन्दी में शक्कर, चक्कर व टक्कर से हास्य उत्पत्ति होती है। इसी प्रकार प्रथम अंक के दूसरे दृश्य में माँ के कथन—"जूडो-ाटे खो-खो खेलना, पो-पो पोला।" तथा अन्य अवसरों पर भी लेखक ने हास्य सुन्दर अवतारणा की है।

11. **संकलन-त्रय**—संकलन-त्रय का आशय स्थान, काल व पात्रों के संकलन है। यदि नाटक की घटनाएं एक ही स्थान की, एक ही काल की और सीमित ों से सम्बन्धित होती है तो नाटक म प्रभावान्विति आ जाती है। कथा-विस-' में सभी दृश्यों का स्थान एक है—प्रकाशचन्द्र का घर, काल में भी विशेष अन्तर ीं है। सारी घटनाएं प्रकाशचन्द्र की तरक्की को लेकर है और पात्र भी उन नाओं से सम्बन्धित हैं। अतः इसका सफलतापूर्वक अभिनय किया जा सकता है।

12. **गीत व संगीत**—नाटकों में गीत व संगीत के यथा स्थान प्रयोग से उनमें सता और प्रभावोत्पादकता उत्पन्न होती है। प्रस्तुत नाटक में भी कई स्थलों गीतों का उपयोग किया जाता है साथ ही पृष्ठभूमि में संगीत की स्वर-लहरी भी दिखाया गया है। ये गीत प्रेरक, कथा-वस्तु से सम्बद्ध और उसे गति देने ते हैं।

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा खित 'कथा-विसर्जन' रंगमंच और अभिनेयता की दृष्टि से एक सफल क है। इस नाटक का अनेक बार सफलतापूर्वक रंगमंच पर प्रदर्शन भी किया चुका है। डॉ. लाल रंगमंच और निर्देशन से गहरे रूप में सम्बन्ध है। उन्होंने

इस नाटक में अपनी प्रतिभा व कौशल का भरपूर प्रदर्शन किया है। नाटक भूमिका के अनुसार–"शिल्प, दृश्यानुभूति, नाट्य चिन्तन और नाट्य कथा दृष्टियों से यह लघु नाटक लाल की सर्वोच्च कृति है ।"

प्रश्न 20. 'कथा-विसर्जन' नाटक का प्रमुख पात्र कौन है ? उसकी चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये ।

अथवा

'कथा-विसर्जन' नाटक का मूल पात्र माँ है या नीलम ? कारण बताते उत्तर दीजिये ।

अथवा

'कथा-विसर्जन' नाटक को अपनी परम्परा से इसलिए जोड़ सका कि नाटक की मूल-पात्र 'माँ' अपनी जड़ों से जुड़ी थी। उनमें आत्म-उन्मूलित होने किसी प्रकार का अनाथ भाव नहीं था।"

उक्त कथन के आधार पर 'माँ' की चरित्रगत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये ।

उत्तर—'कथा-विसर्जन' नाटक में पश्चिम की आधुनिकता व भारतीयता का संघर्ष चित्रित है। आधुनिकता के रंग में रंगी प्रकाशचन्द्र की पत्नी नीलम तरक्की, भविष्य चिन्ता, व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति व भौतिक ऐश्वर्य के समक्ष धर्म, श्रद्धा-विश्वास को बिल्कुल ही भूला बैठी है। उसके समक्ष धार्मिक मान्यताओं, पूजा-पाठ, ठाकुर जी की मूर्ति, पति के चरण-स्पर्श, नौकरों के प्रति आत्मीयता पूर्ण व्यवहार और बच्चों से लाड़-प्यार का कोई मूल्य नहीं है। इसके विपरीत दूसरा पात्र है–प्रकाश चन्द्र की माँ–जो भारतीयता से पूरी तरह जुड़ी हैं और दीन बनकर झुकी नहीं। उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा, धर्म परायणता, सेवा भाव, मधुर व्यवहार, समानता की भावना, परिवारिक आदर्श, नारी धर्म सभी कुछ अनुकरणीय है। इन दोनों पात्रों के संघर्ष से ही नाटक की कथावस्तु का विकास होता है। फिर भी इसकी प्रमुख पात्र 'माँ' ही है, इसके निम्नलिखित कारण है––

1. **नाटक की कथावस्तु**––नाटक की कथावस्तु में माँ को प्रमुखता दी है। नाटक के आरम्भ से पूर्व प्रस्तावना म नट और नटी सर्वप्रथम 'माँ' की ही ध्यानाकर्षण करते हैं। नाटक के प्रथम अंक मे भी मां की ही प्रधानता है यह प्रधानता सभी अंकों मे बराबर बनी रहती है। वस्तु के मध्य में लेखक बुलबुल से सम्बन्धित शेर लिखकर यह स्पष्ट कर दिया है कि जो बुलबुल 'शाखे से गिरी, तड़फी और तड़पकर मर गई––वह और कोई पात्र ना होकर केवल ही है–केवल माँ ही है। इस प्रकार नाटक कथावस्तु में 'माँ' को प्रधानता दी है।

2. **दर्शकों की सहानुभूति**—नाटक का प्रमुख-पात्र दर्शकों की सहानुभूति को ...धिक ग्रहण कर पाता है। प्रस्तुत नाटक में भी दर्शकों की सहानुभूति नीलम ...क्षा माँ के प्रति अधिक जागृत होती है। नीलम का स्वार्थ, बच्चों को मारना-...ा, सेठी साहब की अनावश्यक व सीमा से बढ़कर खुशामद आदि प्रवृत्तियाँ ...दर्शकों की नजरों मे गिरा देती हैं और माँ का सद्व्यवहार, सदाचार, धर्म व ...त आचरण दर्शकों को मोहित कर लेता है।

3. **लेखक का उद्देश्य**—'कथा-विसर्जन' नाटक की रचना के पीछे डॉ. लाल ...उद्देश्य नाटक को भारतीय नाट्य परम्परा और सांस्कृतिक सूत्रों से जोड़ना ... इस उद्देश्य की पूर्ति में नाटक का केवल एक ही पात्र समर्थ है और वह ...—माँ। इसलिये माँ ही इस नाटक की प्रमुख पात्र है।

4. **लेखक का मत**—डॉ. लाल ने स्वयं इस नाटक की भूमिका में यह स्पष्ट ...या है कि इस नाटक का मूल पात्र माँ है। उनके शब्द इस प्रकार हैं—

"कथा विसर्जन में अपने मूल से जुड़ाव की स्मृति का सारा श्रेय इस नाटक ... माँ को है। उन्होंने ही गुरु बनकर दिखलाया। मैंने कुछ नहीं देखा, क्योंकि ...खने वाला समष्टि के साथ एकात्मक हो चुका था।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इस नाटक की मूल पात्र माँ ही है न कि ...लम।

...माँ की चरित्रगत विशेषताएं—'कथा-विसर्जन' नाटक की प्रमुख पात्र माँ ... चरित्रगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **धार्मिक और पवित्र विचारों से युक्त**—माँ जी के चरित्र में धार्मिकता ...र पवित्रता का समन्वय है। वे धर्म, कर्म, पूजा, पाठ और पवित्र संस्कारों को ...हत्व ...ी है। नाटक के आरम्भ में नट-नटी उनका परिचय इन शब्दों में देते ...—

"सारा जीवन माँ के लिए पूजा था
सब उनका था कुछ भी नहीं दूजा था॥"

अपने इन्हीं गुणों के कारण माँ का आस-पड़ौस, रस्ते-मुहल्ले में काफी ...म्मान होता है। उनकी इस चारित्रिक विशेषता को निम्नलिखित उदाहरण में ...खा जा सकता है—

"मेरा स्नान मेरी वाणी है। मेरा मन्दिर मेरा आचरण है। मेरी दुर्गा ...रा चरित्र है। मेरा सत्संग मेरा घर-परिवार, आस-पडौस है।"

2. **सांस्कृतिक बोध की प्रतिमा**—माँ की सांस्कृतिक बोध की सजीव प्रतिमा ...। वे भारतीय संस्कृति से पूरी तरह जुड़ी हैं। उनकी मान्यता है कि प्रत्येक

परिवार अपनी परम्परा से जुड़े और अपनी संस्कृति के दायरे में ही रहे। वे
हैं—"बाहर केवल चीजें...... सामान...... पदार्थ है । बाहर कोई सुख
है। सुख का स्रोत यदि बाहर है—दूसरों का दिया हुआ—बताया हुआ—व
हो ही नहीं सकता। सुख तो अपना ही है। अपना कमाया हुआ। अपने अ
पाया हुआ—अपने से, अपने घर परिवार से, अपनी जड़ से—अपने स्रोत से।
जी का सांस्कृतिक पक्ष बड़ा पुष्ट और प्रबल है। सम्पूर्ण नाटक में माँ जी की
चरित्रगत विशेषता को देखा जा सकता है।

3. **कर्मनिष्ठा**—माँ जी की कर्म के प्रति अत्यधिक निष्ठा है। इस दृ
वे गीता के कर्मयोग की जीवन्त उदाहरण है। परिश्रम ही उनका कर्म है
प्रत्येक कर्म को आनन्द भावना से सम्पन्न करती हैं। वे प्रकाश से कहती है—
काम का आनन्द लेना, यही भगवान है।" इसी कर्म भावना से प्रेरित होक
वृद्धावस्था में भी कभी निठल्ली नहीं रहती। प्रकाश अपनी पत्नी नीलम से क
है—"तुमने माँ को कभी देखा है। माँ कभी बेकार नहीं बैठी। इस उम्र म
सिलाई, बुनाई, घर की सफाई, बच्चों की सेवा, रसोई, पकवान कितना कुछ
शौक-उत्साह से माँ करती है।

4. **संयम, सादगी और त्याग**—माँ का जीवन और सम्पूर्ण व्यक्तित्व स
सादगी और त्याग से परिपूर्ण है। वे अपने चोट लग जाने पर भी बहू को कुछ
कहती। उसमें उसका कुछ दोष नहीं मानती। उनका जीवन बनावट व दिख
से दूर तथा सादा है। वे नीलम से पूछती हैं "बहुरानी! बुरा नहीं मान
ड्राइंगरूम की ये मूर्तियाँ, ये चित्र, ये चीजें किसलिए हैं।" जब नीलम उन्हें बत
है कि वे सजावट और दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए हैं तो वे उन्हें सादगी
महत्व समझाती है। सेठी साहब के आने के समय नीलम उन्हें खादी सिल्क
साड़ी पहनने को देती है, पर वे उसे बदलती नहीं। वे कहती हैं कि "मेरे
यही (खद्दर की मामूली साड़ी) ठीक है।"

माँ जी की मृत्यु के बाद नीलम जो उनका कुल सामान गिनती है—
साड़ियाँ, दो ब्लाउज, दो पेटीकोट, रामायण, इतना चावल, इतना बताशा।"
भी उनकी सादगी, त्याग और संयम की भावना का बोध होता है।

5. **निर्भीकमना और स्पष्टवादिनी**—माँ जी के चरित्र की उपर्युक्त वि
ताओं के अतिरिक्त उनके चरित्र में पर्याप्त दृढ़ता और निर्भीकता है। वे जो
बात कहती है उसे भली प्रकार समझाकर और निर्भीकता से कहती है। फिर
वह नीलम हो या प्रकाशचन्द्र या प्रकाशचन्द्र का बास सेठी साहब हो। वे
करते समय पूरी दृढ़ता से काम लेती है। उनके कथन के दो उदाहरण देखिये

(i) "मेरे भगवान सजावट की वस्तु नहीं है। सावधान बहू ! अगर ऐसी ...ती फिर हुई तो मैं अपने प्रभु के लिए प्राण दे दूँगी।"

(ii) "तो क्या मैं चुप हो जाऊँगी ? नहीं, मैं टोकती रहूँगी जो गलत है, ... गलत कहती रहूँगी। मैं माडर्न नहीं हूँ, मनुष्य हूँ। जो मैं हूँ अपनी हूँ, तुम ... मेरे हो। मैं तुम सबकी हूँ।"

6. **तर्कशीलता**—माँ जी के चरित्र की एक अन्य विशेषता उनकी तार्किक ...ता है। उनके तर्क अवसर और प्रसंग के अनुकूल होते हैं। बच्चों को समझाने के ...ए, नीलम की आँखें खोलने के लिए और सेठी साहब को यथार्थ स्थिति से परि-...त कराने के लिए वे तर्कों का सहारा लेती है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

(i) "जब से लिखा हुआ सब मान लिया गया, तभी से बहुरानी मनुष्य ...ा अपना कुछ भी नहीं रहा। सब दूसरों का।"

(ii) समझ रही हो बहू ! इतनी अंग्रेजी तो जानती ही हूँ। इस अंग्रेजी ... क्या गजब ढाया है—इसका भी ज्ञान है ईश्वर कृपा से।"

(iii) "सत्य को सबूत की जरूरत नहीं होती है।"

(iv) "मशीन और पशु की कोई हद नहीं है।"

7. **अनुकरणीय आदर्श और चरित्र**—माँ जी के चरित्र की उक्त और ...नेकानेक अन्य विशेषताओं के कारण उनका चरित्र अनुकरणीय प्रतीत होता है। ...नके आदर्श जीवनोपयोगी और रचनात्मक हैं। बच्चे उनके इसी व्यक्तित्व का ...नुकरण करते हुए दिखाये गये हैं। प्रकाश ने भी मां जी के बताये हुए मार्ग पर ...लकर ही यह स्थिति प्राप्त की थी। स्वयं नाटककार ने भूमिका के अन्त में मां के ...यक्तित्व की इस विशेषता को स्वीकार किया है—उन्होंने ही गुरु बनकर दिख-...या। मैंने कुछ नहीं देखा।"

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'माँ' जी इस नाटक की प्रमुख ... केन्द्रीय पात्र है। उनके चरित्र में जो विशेषताएं है वे अनुकरणीय आदर्शों से ...ड़ी है। नाटक के सारे पात्र और घटनाएं उन्हीं के चारों ओर घूमती सी प्रतीत ...ती है। वे ही इस नाटक की प्रमुख पात्र और भारतीय संस्कृति की सजीव ...तिमा हैं।

प्रश्न 21. 'कथा-विसर्जन' नाटक की विषय-वस्तु की सम सामयिकता पर ...ाश डालिये।

अथवा

आधुनिक युग में 'कथा-विसर्जन' जैसे नाटकों की क्या उपयोगिता है? सतर्क समझाइये।

उत्तर—साहित्यकार सामाजिक प्राणी है। वह जिस समाज में रहता है उसकी उपेक्षा नहीं कर पाता। जाने अनजाने वह समसामयिकता से जुड़ जाता है और अपने युग की समस्याओं को कहीं न कहीं छू जाता है, उनका हल खोजने का प्रयास करने लगता है। फिर 'कथा विसर्जन' तो इस युग की कथा है। लेखक ने वर्तमान समाज को भारतीय परम्परा और उसके सांस्कृतिक बोध से जोड़ना ही इस नाटक का उद्देश्य कहा है। नाटक की प्रस्तावना में नट-नटी इसे एक आँखों देखी घटना कहते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि नाटक की कथा काल्पनिक नहीं है। इसकी समसामयिकता की सिद्धि इसी से हो जाती है कि यह कथा आज भारत के प्रत्येक परिवार की कथा है क्योंकि यूरोपीय संस्कृति ने हमें अपनी जड़ों से उखाड़ कर, घर से बेघर कर दिया है। आज हम कहीं के न रहे—न घर के न घाट के। समस्त सांस्कृतिक संदर्भ टूट गये। नाट्यकर्म में भी कुछ ऐसा ही टूटन और अलगाव का समावेश हुआ। पश्चिम का प्रभाव हम पर कुछ ऐसा हावी हुआ कि हम अपनी बात चाहकर भी कह ना पाये। जीवन में तरक्की व स्वार्थों की पूर्ति को प्रथम स्थान मिला। भौतिकता व वैज्ञानिक आविष्कारों की चकाचौंध में हम न केवल ईश्वर को वरन् अपने आपको भी भूल गये। नाटककार को इस स्थिति से मार्मिक पीड़ा हुई और उसने इस नाटक के द्वारा प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा से जुड़ने का प्रयास किया। इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए नाटक में एक ओर माँ जी के चरित्र का विधान किया गया और दूसरी ओर नीलम जैसी आधुनिका की अवतारणा भी की गई। नाटककार ने नीलम को आधुनिकता का प्रतिमान बनाया और उसी के सहारे समसामयिक सन्दर्भों को प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत नाटक में समसामयिक सन्दर्भ निम्नलिखित हैं—

1. **पारिवारिक जीवन में अलगाव**—भौतिकता की चकाचौंध और आधुनिक भाव बोध के विकास ने हमारे पारिवारिक जीवन में अलगाव की स्थिति उत्पन्न कर दी। संयुक्त परिवार टूटने लगे। परिवार केवल पति-पत्नी और बच्चों तक सीमित हो गये। वृद्ध माता-पिता का साथ रखना भी भारी प्रतीत होने लगा। नीलम दिल्ली ट्रान्सफर के बाद अपनी सास को हरिद्वार या देहरादून भेजने का विचार रखती है। पति-पत्नी और बच्चों के जीवन में भी एकरसता नहीं रही। सभी एक-दूसरे से टूटे-टूटे व उखड़े से रहने लगे। बच्चे, माँ जी, प्रकाश, नीलम सभी इसी अलगाव के अभिशाप को झेलते हुए दिखाई देते हैं। यथा—शोनू—मम्मी तुम्हारे पास वक्त नहीं है कि तुम से बात कर सकें। पापा को अपने दफ्तर से फुर्सत नहीं। तो क्या हम दादी से बात न करें। तुम दादी इतना घबराती क्यों हो?

एक अन्य अवसर पर शोनू प्रकाश चन्द्र से कहता है—चुप रहना ही बेहतर है, डैडी ! आप लोग बडे समझदार हैं जो चुप रहते हैं।

नाटक में इस प्रकार के और भी अनेक उदाहरण हैं जो पारिवारिक अल... को चित्रित करते है। यह पारिवारिक अलगाव पाश्चात्य सभ्यता और ...निक बोध की ही देन है।

2. पति-पत्नी के सम्बन्धों के बीच अलगाव व दरार–प्राचीन भारतीय ...त्य जीवन एक आदर्श था, पर आज उसमें सर्वत्र तनाव, अलगाव और बेगाना... ही दिखाई देता है। आत्मीयता, प्रेम, त्याग और समर्पण का भाव तो उसमें ... नहीं। यदि कुछ है तो वह स्वार्थ, पद और पैसा है। पति-पत्नी आज इसी ...और पद के लिए ही तो भाग रहे हैं। नीलम को बाहर घूमने से फुर्सत नहीं ...प्रकाश चन्द्र अपने दफ्तर की फाइलों में ही कैद है। यदि कभी वे इस कैद से ...ल भी पाते हैं तो उनमें आत्मीयता और रागात्मकता का अभाव रहता है। ...जी इस अलगाव को अनुभव कर प्रकाश से कहती है—'पूरे नौ दिन के बाद ...रादून से आये हो। आते ही दफ्तर भागने की तैयारी। पत्नी की तबियत खराब ... जाकर उसके पास बैठो। तुम्हारे लिए इतनी चिन्ता करती है; तुम्हें भी नीलम ... कोई ध्यान है ?" और—

"मेरे भरोसे पत्नी को छोड़ना·······नौकरों के भरोसे माँ को छोड़ना······· कौन-सा जीवन है ?"

दाम्पत्य और पारिवारिक जीवन के अलगाव को प्रदर्शित करने वाले ...हरणों की 'कथा-विसर्जन' में कमी नहीं है। यह एक ऐसा कटु सत्य है जो ... रोज जीना और देखना पड़ता है।

3. रिक्तता और अकेलापन––आधुनिक परिवेश की यह भी एक विशेषता ...क आज व्यक्ति भरे-पूरे परिवार, समाज और भीड़ में रहकर भी अपने आपको ...ना महसूस करता है। उसे एक अधूरेपन और रिक्तता का अहसास होता है। ...श के आत्म-चिन्तन से यह भाव कुछ इस तरह स्पष्ट होता है––"अजीब स्त्री ... सबकी चिन्ता अपने ऊपर। चाहती है, सब इसी के अनुसार हों। मेरी माँ ने ... नहीं बनाया, यह कहती है––मैं बनाऊँगी अपने बच्चों को आधुनिक, कर्मठ, ...वाकांक्षी पर अजीब खेल है–दोनों बच्चे माँ से आकृष्ट हैं। नीलम को यह ...न नहीं। जब देखो तब वही तीनों। तीनों की दोस्ती। हम दो अकेले।"

4. सामाजिक अलगाव––समाज में प्रतिष्ठा के लिए बड़े-बड़े अफसर ...ल लाइन में रहते हैं। आदमी ख्यालों में खोया रहता है और बीबियां या तो ...र घर से बाहर रहती है या जब घर में रहती है तो दिन में भी कमरा

बन्द कर सोती रहती हैं। उनका आस-पड़ोस में आने-जाने या मिल बैठक करने की इच्छा ही नहीं होती। हर समय एक ही धुन रहती है–मार्डन बनने मार्डन बनने और सन्तान को मार्डन बनाने के चक्कर में वे सब कुछ भूल-गी है। नीलम आशा को थप्पड़ मारकर उसे कहती है—"बेवकूफ! तेरा यह मुँह तोड़ कर रख दूँगी। भक्तिन नहीं बनना है। आधुनिक लड़की होना है कान खोलकर सुन ले तुझे मार्डन बनना है, मिडीवियल नहीं। भूत में भविष्य में रहना है।"

5. **आधुनिक शिक्षा**—शिक्षा व्यावहारिक कम और सैद्धान्तिक अधिक गई है। बच्चों को अधिक से अधिक ज्ञान देने की लालसा में पाठ्यक्रम को बढ़ाया जा रहा है। पाठ्य-पुस्तकों का बोझ आज कुली के बोझ से कम होता। बच्चों को नैतिकता और चरित्र निर्माण की शिक्षा नहीं दी जाती। वे झूठ बोलना और बुरी आदतें जल्दी सीख जाते हैं। उनकी नजर में बड़े बूढ़ों का कोई मान नहीं। शोनू अपनी जिन्दगी को बेमतलब मानता है और करा अभ्यास अपनी दादी पर ही करने लगता है। उन्हें दूसरों की भावनाओं का अह नहीं होता–शोनू दादी से कहता है कि तुम्हें जल्दी मरना है। जिन्हें जल्दी होता है, वे ही पूजा पाठ करते हैं। बच्चों का ध्यान फैशन, जासूसी, अ हिंसा और फिल्मी पत्रिकाओं की ओर अधिक है। वे टी वी. देखना और म्यूजिक सुनना पसन्द करते है। दोस्त, टी-पार्टी, घूमना-फिरना हा आधु बालकों के शौक हो गये हैं। वे धर्म और नैतिकता को व्यर्थ की सी वस्तु म हैं। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा उन्हें पाश्चात्य रंग में रंग कर शिक्षा के प्रति ऊब पैदा कर रही है।

6. **नौकरी और आयु**—नौकरी की सुविधा एक निश्चित आयु तक होती है। माता-पिता बच्चों के भविष्य का विचारकर आरम्भ से ही उनकी कम लिखवाने लगे हैं जिससे वे अधिक अवस्था तक नौकरी कर सकें। नी अपनी होशियारी बघारते हुए मां जी से कहती है—"शोनू की उम्र सोलह स हालांकि मैंने उसकी उम्र रजिस्टर में दो साल कम लिखा रखी है। आशा की चौदह साल। उसकी भी उम्र मैंने ढाई साल कम कर रखी है।" यह सब इस कि जिससे बच्चों को नौकरी सुविधापूर्वक मिल जावे और वे अधिक समय वेतन उठाते हैं।

7. **धर्म-कर्म और पूजा पाठ**—आधुनिक सभ्यता में धार्मिकता को स्थान नहीं। इन्हें व्यर्थ का दकियानूसी या बुड्ढों के काम की वस्तु समझा है, जो खाली बैठे अपने अकेलेपन को भर सकें। नीलम कहती है—यह धर्म गीता, रामायण, पिछड़ेपन, यहां तक कि देहातीपन का सबूत है। माफ की तरक्की के लिए धर्म नहीं, शक्ति चाहिये।"

8. **सिफारिश और तरक्की**—वर्तमान युग में सिफारिश से ही सब काम हो । बिना सिफारिश के न तो नौकरी मिलती है और न तरक्की ही । तभी ाम प्रकाश के बास सेठी साहब को बार-बार आमंत्रित करके अपने पति की के लिए जोर डालती है । यह स्थिति सम-सामयिक परिवेश की विशे- ।

9. **विदेशी वस्तुओं का क्रेज**—माडर्न तथा कथित शिक्षित व्यक्तियों में वस्तुओं के प्रति एक क्रेज पाया जाता है । उन्हें स्वदेशी से नफरत होती अपने घर को विदेशी वस्तुओं का संग्रहालय बनाना चाहते हैं । मित्रों के उनकी चर्चा का विषय कोई न कोई विदेशी वस्तु होती है । जिसके पास ी विदेशी वस्तुएँ होती हैं—वही बड़ा माना जाता है । नीलम अपने पति ा चन्द्र से कहती है—

"घर दिल्ली में ही बनायेंगे । दिल्ली की नौकरी कोई आसान चीज नहीं ुल चार महीने हिन्दुस्तान में, आठ महीने विदेश में, हिन्दुस्तानी माल । विदेशी माल खरीदना ।"

10. **बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार**—बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार भी इसी आधुनिक का परिणाम है । व्यक्ति अपनी तरक्की तथा पद के लिए कुछ भी कर पाने ैयार रहता है । नैतिकता या अनैतिकता का प्रश्न वहां नहीं होता । प्रकाश अपनी पत्नी नीलम से कहता है—"सेठी साहब के लिए देहरादून में पच्चीस र की जमीन का सौदा मुझे तीन लाख में करना पड़ा था—झूठी फाइलें र ।"

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि 'कथा ्जन' में नाटक का संदेश भले ही सांस्कृतिक हो किन्तु उसमें ऐसे अनेक संकेत नाटक को समसामयिक प्रमाणित करते हैं । हमारे समाज में सदैव विदेशी ति और सभ्यता को अपनाने की चाह शिक्षित वर्ग में रही है—अपने की व संस्कृति व सभ्यता के प्रति उनका उपेक्षा का भाव रहा है । इसी का ाम—संयुक्त परिवारों का टूटना व व्यक्तिवादी परिवारों का विकास है । -व्यक्ति, परिवार व समाज सभी स्तरों पर हमें अलगाव दृष्टिगोचर होता ह भावना इसी सामयिक बोध और आधुनिकता से उत्पन्न है ।

प्रश्न 22. "काव्यत्व उनकी प्रमुख उपलब्धि है, जो नाटक को सही अर्थों ्क सिद्ध करती है ।" डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के उक्त कथन के संदर्भ में विसर्जन' के काव्यत्व की समीक्षा कीजिये ।

अथवा

'कथा-विसर्जन' नाटक में गीत और संगीत के महत्व पर प्रकाश डालिये

उत्तर—नाटक में सरसता, रोचकता, स्वाभाविकता और प्रभावोत्पाद लाने के विचार से गीत और संगीत का प्रयोग किया जाता है। गीत और सं का जीवन से निकट का सम्बन्ध है। श्रम की कोख से संगीत जन्म लेता है जो दिल प्यार करता है, वह भी कुछ गाना गुनगुनाना चाहता है। श्रम प्यार मानव जीवन की अनिवार्यता हैं। इसलिए नाटकों में इनको समुचित स्थ दिया जाता है। लेकिन गाने और रोने का भी एक समय होता है। असमय गाना और रोना दोनों अस्वाभाविक हैं और रसात्मकता में बाधक हैं। यदि नाटक में कथावस्तु की स्वाभाविकता के लिए गाना आवश्यक हो तभी उन प्रयोग करना चाहिये।

कथा विसर्जन में गीत-संगीत—डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल आधुनिक युग सफल नाटककार हैं। उन्हें मंच व्यवस्था और अभिनेयता का बड़ा अच्छा ज्ञान उनके नाटकों में प्रयुक्त गीत प्रसंगानुकूल, नाटक की कथा वस्तु को गति देने व और पात्रों की मनोस्थिति को उजागर करने वाले होते हैं। कथा विसर्जन इसका अपवाद नहीं है। इस नाटक में लेखक ने 11 गीतों का 12 बार सफ प्रयोग किया है। नाटक के तीसरे अंक के दूसरे दृश्य में कोई गीत नहीं है। दूसरे अंक के तीसरे दृश्य में आया हुआ उर्दू का शेर चतुर्थ अंक के प्रथम दृश्य भी दोहराया गया है। वैसे किसी गीत की पुनरावृत्ति दोष है पर नाटककार उसका इस कौशल से निर्वाह किया है कि यह दोष भी गुण प्रतीत होता है। क विसर्जन के गीत कुछ पद में, कुछ चौपाइयों में, एक संस्कृत के श्लोक के रूप और एक उर्दू का शेर है। इस प्रकार की विविधता भारतीय संस्कृति को अभि व्यक्त करती है और उसे प्राचीन भारतीय संस्कृति से जोड़ने की भूमिका का निर्वाह करती है।

प्रस्तावना का गीत—'कथा-विसर्जन' में प्रथम गीत का उपयोग प्रस्ताव अंश के अन्तिम भाग में हुआ है। इस गीत के माध्यम से लेखक ने कथा की पृ भूमि तैयार की है और कथा के प्रमुख पात्र 'माँ' से उनका परिचय कराया है गीत का अन्तिम भाग—'हो गई शाम नहीं आए री कन्हैया' इस नाटक के अ पर प्रकाश डालता है। इस प्रकार इस गीत की उपयोगिता व सार्थकता निर्वि है। इसके साथ ही दर्शकों का ध्यान अन्यत्र से हटकर नाटक की कथावस्तु केन्द्रित हो जाता है।

प्रथम अंक के गीत—प्रथम अंक में कुल तीन गीत हैं। प्रथम दृश्य में दो दूसरे दृश्य में एक गीत। प्रथम दृश्य में प्रथम गीत नट नटी उस समय गाते हैं

...स महापुरुषों की मूर्तियों को सजावट और दूसरों पर प्रभाव डालने की वस्तुएँ ...ती है। माँ नीलम को समझाना चाहती है फिर भी उसके धार्मिक मन में ...को इस भावना के कारण खिन्नता का आ जाना स्वाभाविक ही था। नट-नटी की इसी भावना का परिचय 'कुन्दन वन क्यों छोड़ा रे माधव, कुन्दन वन'' ...कर देते हैं। यह गीत आधुनिक समसामयिक स्थिति पर प्रकाश डालता है। ...का मौन रह जाना इसी भावना का द्योतक है।

प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में दूसरा गीत माँ उस समय गाती है जब प्रकाश ...कर नीलम को सेठी साहब के चाय पर आने की सूचना देता है। तरक्की की ...र्यवाही के प्रयास के साथ ही कथा आरम्भ होती है। कथारम्भ पर कल की ...मना नाटकीय परम्परा की दृष्टि से आवश्यक थी। अतः माँ का यह गीत उस ...वश्यकता की पूर्ति के लिए अपेक्षित होने के साथ-साथ माँ की निष्काम की ...वना की सफल अभिव्यंजना भी करता है।—

बार-बार वर माँगऊँ, हरषि देहु श्री रंग।
पद सरोज अनपायनी, भगति सदा सत्संग॥

नाटक का चौथा गीत प्रथम अंक के दूसरे दृश्य की समाप्ति पर नट-नटी ...ते हैं—"रे मन धीरे चालो मैं हारी।" इस गीत में लेखक ने ईश्वर की विचित्र ...ला की ओर संकेत करते हुए नीलम की त्वरा पर व्यंग्य किया है।

द्वितीय अंक के गीत—नाटक के द्वितीय अंक में तीन दृश्य हैं। प्रत्येक दृश्य ... एक-एक गीत की आयोजना लेखक ने बड़े कौशल से की है। इस दृश्य में माँ ...स समय मंत्र-पाठ करती है जब नीलम सेठी साहब की चाय पार्टी की तैयारी में ...कुर जी की मूर्ति को टेबल की सजावट के लिए ले आती है। यह गीत नाटक में ...वी संकेत का कार्य करता है और उस संकेत की सार्थकता को यह मंत्र—

'आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजा चैर न जानामि, त्व गतिः परमेश्वरम्॥

सचमुच परमेश्वर की गति को समझना बड़ा कठिन है।

दूसरे दृश्य की समाप्ति पर नाटककार ने जो गीत रखा है वह पारिवारिक ...र्ष और अन्तर्गत को पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालने के साथ-साथ समसामयिक धर्म ...वना पर भी तीखा व्यंग्य करता है। इस गीत में नट-नटी गाते हैं—

"पाप को पूजा से जोड दिया।
बाहर के, लोभ में घर को छोड़ दिया।"

तीसरे दृश्य में गीत के रूप में उर्दू के एक शेर को रखा गया है। इस शेर ... माँ शीनू को सुनाती है—

"किसी ने बुलबुल से पूछा, दर्दे फुरकत का इलाज।
शाखे गुल से गिरी, तड़पी, तड़प कर मर गई ॥"

यह शेर भावी घटना की सूचना की दृष्टि से बड़ा ही सार्थक है। नाटककार माँ की कथा को विसर्जन की ओर ले जाने की सूचना पहले ही दे देता है फिर तो वास्तविक बुलबुल 'माँ' के इसी दृश्य के अन्त में चोट लग जाती है—बुलबुल शाखे गुल से गिर पड़ती है पर अभी उसका तड़पना व मरना शेष है।

तृतीय अंक के गीत—तीसरे अंक के प्रथम दृश्य के मध्य में नाटककार ने रामचरित मानस की चौपाइयों को गीत के रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें आज की अति आधुनिकता से भरे जीवन में जो असन्तोष, नास्तिकता, अध्यात्म अभाव और श्रद्धाहीनता है का वर्णन किया गया है। इसी समय नीलम का परेशान होना उसकी सामयिकता को सिद्ध करता है। देखिये—

"बिनु संतोष न काम नसाई।
काम अछत सुख सपनेहु नाहीं॥
राम भजन बिनु मिटहिं न कामा।
थल विहीन तरु कबहू कि जामा॥"

चतुर्थ अंक के गीत—चतुर्थ अंक के दोनों दृश्यों में एक-एक गीत की सफल आयोजना हुई है। चौथे अंक के प्रथम दृश्य में प्रयुक्त गीत उर्दू के शेर की पुनरावृत्ति है। इस पुनरुक्ति से कथा अधिक प्रभावपूर्ण बन सकी है। शाखे गुल से गिरकर बुलबुल तड़पी और अन्त में तड़पकर मर गई। इसके साथ ही माँ की कथा का विसर्जन होता है और कथा अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है।

नाटक के अन्तिम दृश्य में दो गीत है। प्रथम गीत आशा व शोनू गाते हैं। माँ के जीवन मूल्यों व सांस्कृतिक सूत्रों की परम्परा को सनातन बनाये रखने की दृष्टि से रामचरित मानस की चौपाइयों का प्रयोग सार्थक है। अन्त में नट-नटी का गायन है जो भारतीय नाट्य परंम्परा से जुड़ने के साथ-साथ 'भरत वाक्य' का कार्य भी सम्पादित करता है।

प्रस्तावना के आरम्भ में नट-नटी ने सामाजिकों से आशीर्वाद प्राप्ति की कामना की थी। सामाजिकों ने शान्ति से बैठकर अभिनय देखा। अत नट-नटी का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे दर्शकों की कल्याण कामना करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त करें। यही कार्य नाटक का यह अन्तिम गीत करता है। यथा—

"जो जन जहाँ से आयहू, कथा सुनी मन लाय।
अपने-अपने भवन को, हरषि जादु सुख पाय॥"

इस प्रकार यह गीत नाटक को सुखात्मक बनाने में योग देता है।

निष्कर्ष—इस संक्षिप्त विवेचन से स्पष्ट है कि नाटककार ने 'कथा नाटक में 11 गीतों की सफल आयोजना की है। ये गीत कथा के विकास क, प्रसंग और परिस्थिति के अनुकूल है। गीतों में विविधता व रोचकता क ने भारतीय संस्कृति की आधारभूत विशेषता 'विविधता में एकता' को ों में भी बनाये रखा है। यह उसके नाट्य कौशल का अनुपम विशेषता है।

प्रश्न 23. नाटक के तत्वों के आधार पर 'कथा-विसर्जन' नाटक की समीक्षा ।

अथवा

नाट्य कला की दृष्टि से 'कथा-विसर्जन का परीक्षण कीजिये ।

उत्तर–भारतीय काव्य परम्परा में काव्य के दो रूप स्वीकार किये गये हैं–ार दृश्य। श्रव्य के पुनः दो भेद किये गये हैं—गद्य और पद्य। इस प्रकार पद्य साहित्य का समावेश श्रव्य में हो जाता है। नाटक दृश्य काव्य के त आता है। वह पढ़ने की नहीं वरन् देखने की वस्तु है। पात्र उसका अभि-गमच पर करते है। नाटक को रूपक भी कहा जाता है जिसका अर्थ अवस्था रूप की अनुवृत्ति माना जाता है। इस प्रकार अवस्था और रूप की अनुवृत्ति भिनय के माध्यम से मंच पर प्रस्तुत करना ही नाटक कहलाता है। नाटक को काव्य विधाओं में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है—'काव्येषु नाटकं रम्यम्' र भरत ने उसकी महत्ता का संकेत किया है। उसे पचम वेद कहकर भी षित किया जाता है।

भारत का नाट्य साहित्य अत्यन्त प्राचीन है। भरत मुनि इसके आदि र्य है। उन्होंने नाटक के मुख्य तीन तत्व बतलाये हैं—"वस्तुनेता रसस्तेषां :" अर्थात् वस्तु, नेता और रस। दृश्य काव्य होने के कारण एक अन्य तत्व यना का समावेश इसमें स्वतः ही हो जाता है। इस प्रकार भारतीय नाट्य रा के अनुसार नाटक के चार तत्व कहे जा सकते हैं—

1. वस्तु 2. नेता 3. रस और 4. अभिनय।

पाश्चात्य आचार्य साहित्य की अन्य विधाओं की भांति नाटक के छः तत्व रते हैं—

(1) कथावस्तु, (2) पात्र या चरित्र, (3) संवाद या कथोपकथन, (4) ल और वातावरण, (5) भाषा शैली तथा (6) उद्देश्य।

भारतीय आचार्यों द्वारा वर्णित उपर्युक्त चारों तत्वों का समावेश इन छः में हो जाता है। अतः हम इन्हीं को आधार मानकर 'कथा-विसर्जन' की क समीक्षा करेंगे।

(1) कथावस्तु–कथावस्तु नाटक का आकार है। बिना आकृति के का बोध सम्भव नहीं है। 'कथा-विसर्जन' की कथा वस्तु आधुनिक संदर्भों से तरह जुड़ी है। आज हम आधुनिकता का अर्थ पश्चिम के अन्धानुकरण से लेने इस अनुकरण मे हम इतने आगे बढ़ गये हैं कि अपने वास्तविक स्वरूप को भुला बैठे हैं। इस प्रकार अपने आपको भूलकर, अपनी परम्परा और संस्कृति भूलकर हम घर से बेघर हो गये हैं।" आदमी बेघर तभी होता है जब वह संस्कृति से उखाड़ा जाता है।" आधुनिकता ने इसी स्थल पर हमें उखाड़ा है डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने इसमें भारतीय संस्कृति के लुप्त होते जा रहे रूप प्रस्तुत करते हुए आरोपित आधुनिकता पर प्रहार किया है।

'कथा-विसर्जन' के लेखक के मन में कथा तत्व के प्रति विशेष अनुराग वे लिखते हैं—"संस्कृति को समाज से जोड़े रखने में मुख्य थी 'कथा'। नृ संगीत, नाटक, मूर्ति, स्थापत्य कला, लोगों का मिलन-जुलन, कर्म, दुःख-सुख स बीच में वही कथा-सूत्र था। हमारे नाटक का मूल था कथा। कथा में ही नाटक वस्तु। वस्तु में पात्र। पात्र उसी वस्तु को धारण करने वाला। पात्र से ही अ नेता दर्शक को रस पिलाता था और दर्शक एकात्म हो पीते थे।" प्रस्तुत नाटक कथा शब्द का अर्थ संस्कृति से लिया गया है। आज हमारी संस्कृति का विस हो रहा है। उसे पुनः प्राचीन परम्परा और संदर्भ से जोड़ने की आवश्यकता है परम्परा से जुड़ने के प्रयास को कथा ही कथा-विसर्जन की मुख्य कथावस्तु है।

यह वस्तुतः एक ही परिवार की कथा है। लखनऊ शहर के अफसर के की कथा। जो अपनी तरक्की के लिए प्रयत्नशील है। उसकी आधुनिका प नीलम खुशामद और दिखावे के माध्यम से अपने पति की तरक्की में योग देने प्रयास करती है। प्रकाश चन्द्र की माँ भारतीय परम्परा और संस्कृति से जुड़ी है उन्हें दिखावा पसन्द नहीं। अतः उन दोनों के वैचारिक मतभेद और व्यवहार भिन्नता से कथा आगे बढ़ती है। पश्चिम के अन्धानुकरण ने हमारी आत्मा हनन कर दिया है। अतः माँ की कथा का विसर्जन होता है और आशा तथा शो के माध्यम से लेखक कथा को पुनः उसी परम्परा से जोड़ देता है। प्रकाश च सम्पूर्ण नाटक में न्यूट्रल दिखाई पड़ता है, पर माँ की मृत्यु के बाद वह भी इ परम्परा से जुड़ जाता है।

इस सम्पूर्ण कथा वस्तु में एक ही कथा है। इसमें प्रासंगिक अथवा गौ कथाओं का अभाव है। इस कथा का विस्तार चार अंकों में हुआ है। प्रत्येक अ में दृश्यों का विधान आवश्यकतानुसार किया गया है। आरम्भ में प्रस्तावना है कथा को प्राचीन संदर्भों से आरम्भ करके उसे नवीन संदर्भों से जोड़ती है। नाट के अन्त में नट-नटी के गीत द्वारा 'भरत वाक्य' का वाचन कराया गया है।

'कथा विसर्जन' की यह सम्पूर्ण वस्तु सुगठित और प्रवाहपूर्ण है। उसमें ...न और जिज्ञासा तत्व आरम्भ से अन्त तक बने रहते हैं। कथा में तार-...ा है। उसका आरम्भ, मध्य और अन्त स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। लेखक ने ...न त्रय की एकता का ध्यान रखा है। संक्षेप में 'कथा-विसर्जन' की वस्तु में ...तता, मौलिकता, स्वाभाविकता, तारतम्यता और सरसता के गुण विद्यमान ...वस्तु की दृष्टि से वह एक सफल और सशक्त नाटक है।

2. **पात्र या चरित्र चित्रण**—पात्र या चरित्रों से ही वस्तु का विकास होता ... वे ही नाटक की वस्तु को अपने अभिनय के द्वारा सजीव बनाते हैं। इनकी ...मतता होने पर पात्रों के चरित्र का प्रभावशाली ढंग से चित्रित करना सहज ... जाता है। कथा विसर्जन में पात्रों की संख्या अपेक्षाकृत काफी कम है। इसमें ... परिवार की कथा है जिसमें गृह स्वामी प्रकाश चन्द्र, उसकी पत्नी नीलम, माँ ...र उसके दो बच्चे आशा और शोनू—पांच पात्र एक ही परिवार के हैं। इसके ...तिरिक्त प्रकाश के बॉस सेठी साहब हैं। उपर्युक्त छः पात्रों के अतिरिक्त गोपी ...र नाथू नौकर एवं नट-नटी हैं।

इस नाटक की वस्तु के केन्द्र में माँ है। वे इसकी प्रमुख पात्र हैं। नाटक के ...य सभी पात्र उनके चरित्र से प्रभावित हैं। वे भारतीय संस्कृति की साक्षात् ...तिमा है। वे दर्शकों और पाठकों पर भी गहरा प्रभाव डालते हैं। उनकी सारी ...हानुभूति और आत्मीयता अन्त तक माँ से जुड़ी रहती है। डॉ. लाल ने नाटक ...ी भूमिका में माँ के महत्व को स्वीकार करते हुए लिखा है—'कथा-विसर्जन' ...टक को अपनी परम्परा से इसलिए जोड़ सका कि इस नाटक की मूल पात्र ...माँ मानो जड़ों से जुड़ी थी। उनमें आत्मा उन्मूलित होने का किसी प्रकार का ...नाथ भाव नहीं था।" ईश्वर में आस्था, कर्मगत नियमितता, मर्यादा पालन, ...सांस्कृतिक निष्ठा, समानता, सादगी, संयम, सेवा भावना और क्षमाशीलता माँ की ...चरित्रगत विशेषताएँ हैं।

'प्रकाश' नाटक का पुरुष पात्र है। वह शिक्षित और आधुनिक है। माँ की ...द्शिक्षा से उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। उसकी योग्यतानुसार उसे ऊँचा ...द भी मिलता है। उसकी पत्नी नीलम आधुनिका है। वह पाश्चात्य के अन्धा-...करण को ही आधुनिकता समझ बैठी है। इस परिस्थिति में वह चुप रहता है। ...नुकूल रहकर ही वह घर में शान्ति बनाये रख सकता है। उसे भी तरक्की का ...लोभ है जिसके कारण वह अपनी आत्मा का हनन भी कर सकता है, पर माँ की ...मृत्यु के बाद उसमें परिवर्तन होता है और वह अपने वास्तविक रूप में दिखाई देता ...। उसका चरित्र सम्पूर्ण नाटक में एक दब्बू पति, आज्ञाकारी पुत्र और ...शील ... का है जो अपनी विशेषताओं के कारण हमें आकर्षित करता है।

नीलम, प्रकाश चन्द्र की पत्नी आधुनिका भारतीय नारी का प्रतिमान है। वह शिक्षित है और धर्म, पूजा, कर्मकाण्ड आदि को दकियानूसी और वृद्धों के काम की चीज बताती है। वह स्वभाव से जिद्दी, स्वाभिमानी और महत्वाकांक्षी है।

सेठी साहब प्रकाश के बॉस है। उनके लिए धर्म-कर्म, आध्यात्म की चर्चा लोगों को प्रभावित करने की वस्तु है। वे एक रिश्वतखोर कुशल अधिकारी, बुद्धिवादी, समझदार और स्वार्थी व्यक्ति है। शोभू और आशा के चरित्रों को लेखक ने सोद्देश्य रखा है। वे नाटक की वस्तु को दादी की परम्परा में जोड़ते हैं। इस प्रकार कथा-विसर्जन का पुनः आवाहन करते हैं।

इस प्रकार नाटककार ने इसकी वस्तु में अपेक्षित और आवश्यक पात्रों को ही लिया है और उनका चरित्र चित्रण प्रभावशाली ढंग से किया है। इस नाटक की प्रधान पात्र निश्चित रूप से माँ है जो धीरोदात्त गुणों से सम्पन्न है और दर्शकों तथा कथा को भारतीय सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ने में सक्षम है।

3. कथोपकथन या संवाद—कथोपकथन या संवाद नाटक के प्राण हैं। नाटक को रंगमंचीयता से जोड़ने में संवादों की सफल योजना अत्यन्त सहायक होती है। कथा-विसर्जन के संवाद, संवाद की प्रायः सभी विशेषताओं से युक्त, संक्षिप्त, रोचक, सरल, कथा को गति प्रदान करने वाले, चरित्र उद्घाटक और सोद्देश्य है। एक उदाहरण देखिये—

सेठी—मां जी को प्रणाम ! आपका बेटा बहुत बड़ा अफसर बनकर दिल्ली जाने को है। बधाई ! बधाई !

मां—सब ईश्वर की कृपा है।

सेठी—सब ईश्वर है तो आप क्या है ?

मां—वही ईश्वर हूँ।

इस प्रकार 'कथा-विसर्जन' के संवाद, संवाद के सभी गुणों से सम्पन्न और प्रभावशाली हैं।

देश काल और वातावरण—नाटक की कथा वस्तु प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं से जुड़ी होकर भी आधुनिक सदर्भो से जुडी है। इसकी कथा आज भारत के किसी भी शिक्षित परिवार की कथा हो सकती है। वरन् यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि इसकी कथा आज के सभी भारतीय परिवारों की कथा है। आधुनिक बोध और तथा कथित सभ्य बनने की धुन में हम अपने से, अपनी परम्पराओं से और अपनी संस्कृति से भाग रहे हैं। इस प्रकार हम घर से बेघर होते जा रहे हैं। नाटक की घटनाएँ, भाषा, शैली, पात्र और स्थान सभी इस आधुनिक परिवेश के साक्षी हैं। नाटककार इन पात्रों को भारतीय संस्कृति से

ने का उपक्रम करता है। अपने इस उद्देश्य पूर्ति के लिए वह माँ को माध्यम ाता है, पर पश्चिम के अत्यधिक मोह में पड़ी अपनी वधू नीलम को वह ीय परिवेश से नहीं जोड़ पाती, जिससे उसके हृदय को ठेस लगती है और की कथा का विसर्जन होता है। माँ की मृत्यु के बाद ही प्रकाश अपनी न्यूट्रल केंचुली छोड़कर बच्चों के साथ-साथ माँ की परम्परा से जुड़ जाता है। नीलम ाली रह जाती है।

नाटककार ने देशकाल और वातावरण की भूमिका बनाते हुए प्रस्तावना कहा है—

"लखनऊ शहर।
बड़े अफसर की एक माँजी थी।"

नाटक का सम्पूर्ण वातावरण और घटनाएँ इस बड़े अफसर की तरक्की लिए किये जाने वाले प्रयासों की घटनाओं और सदर्भों से जुड़ा है। जो स्वा-ाविक और प्रभावशाली है।

5. भाषा-शैली – कथा-विसर्जन की भाषा, पात्र, प्रसग और परिस्थिति के नुकूल है। उसमें कहीं भी बनावट जटिलता या क्लिष्टता नहीं है। वह शिक्षित र्ग के ग्राम बोल-चाल की सरल भाषा है। इसमें अंग्रेजी व उर्दू के सरल शब्दों ा प्रयोग बहुतायत से हुआ है। भाषा में मुहावरे व कहावतों का समुचित प्रयोग षणीयता को बढ़ाने और प्रभाव उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध हुआ है। नाटक ी भाषा में कई स्थलों पर सूत्रात्मकता का गुण है जिससे वह सुक्तियों के समान र्थ गाम्भीर्यपूर्ण और प्रभावशाली बन गई है। इस दृष्टि से कुछ उदाहरण ष्टव्य हैं—

(i) 'मैं मॉडर्न नहीं, मनुष्य हूँ।'
(ii) जब से लिखा हुआ सच मान लिया गया, तभी से मनुष्य का अपना कुछ नहीं रहा।'
(iii) मेरा स्नान मेरी वाणी है। मेरा मन्दिर मेरा आचरण है। मेरी दुर्गा मेरा चरित्र है। मेरा सत्संग मेरा घर-परिवार, आस-पड़ोस है।
(iv) बाहर केवल चीजें ......सामान ......पदार्थ हैं.........। बाहर कोई सुख नहीं है।
(v) दुःखी होना स्वाभाविक है। सुखी होना प्रयत्न है।
(vi) हर काम का आनन्द लेना, यही भगवान है।
(vii) संवाद वहां नहीं हो सकता जहां घमण्ड है।
(viii) माफ कीजिये, तरक्की के लिए धर्म नहीं शक्ति चाहिये।
(ix) सेवा तो अहंकार का विसर्जन है।

(४) धर्म का अर्थ है सर्वजीवन के साथ एकाकार होना।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कथा-विसर्जन की भाषा व्यावहारिक और दैनिक बोलचाल की विशिष्टता से युक्त है। उसकी शैली व्यंजनात्मक, अभिधात्मक, प्रतिकात्मक, प्रश्नात्मक, काव्यात्मक और प्रभावशाली है। गीत और संगीत के प्रसंगानुकल उपयोग ने भाषा को और भी सरस बना दिया है। इसमें प्रेषणीयता, सरलता और संदर्भ सापेक्षता के गुण विद्यमान हैं।

6. उद्देश्य—'कथा-विसर्जन' नाटक के उद्देश्य भारतीय नाट्य परम्परा व भारतीय सांस्कृतिक सूत्रों से हमें फिर से जोड़ना है। हमारी सांस्कृतिक धरोहर, आध्यात्म भावना, नाट्य परम्पराओं का जो विघटन एक सुनिश्चित योजनानुसार पश्चिमी विचारधारा ने किया है—उसी विघटन के प्रति हमें सचेत करना तथा भारतीय परम्परा और संस्कृति को अपनाने की प्रेरणा देना ही इस नाटक का प्रमुख उद्देश्य है। डॉ. लाल ने नाटक की भूमिका में अपने नाटकों का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लिखा है—

"मैंने नाटकों की रचना निरुद्देश्य नहीं की है। प्राचीन इतिहास हमारी शक्ति और दुर्बलता का दर्पण है। मैंने बार-बार यह दर्पण अपने देशवासियों के समक्ष रखा है, ताकि हम अपने देश के अतीत को देखकर व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन से उन दुर्बलताओं को दूर कर सकें, जिन्होंने हमें पराधीनता के पाश में बाँधा।"

लेखक ने 'कथा-विसर्जन' में अपनी परम्परा और मूल से जुड़ने की प्रेरणा देना ही अपना प्रमुख उद्देश्य रखा है और उसमें वह पूर्णतः सफल भी हुआ है।

निष्कर्ष—संक्षेप में कहा जा सकता है कि नाटक के तत्वों के आधार पर समीक्षा करने पर 'कथा-विसर्जन' एक सफल और प्रभावशाली नाटक सिद्ध होता है। कथा-विसर्जन डॉ. लाल का नवीनतम नाटक है और उन्होंने इसमें अपनी नाट्य प्रतिभा और अनुभव का कुशलतापूर्वक उपयोग किया है। यह हर दृष्टि से सशक्त और प्रभावशाली है।

2. एकांकी रत्नाकर

(सम्पादक डॉ. श्रीधरसिंह)

प्रश्न 24. एकांकी की परिभाषा देते हुए उसके प्रमुख तत्वों का उल्लेख कीजिये।

उत्तर—एकांकी का शाब्दिक अर्थ है—'एक अंक वाला।' हिन्दी साहित्य में एकांकी का प्रयोग नाटक के उस रूप के लिए किया जाता है, जिसमें केवल एक

। सामान्यतः एकाधिक अंकों वाले नाटक को अनेकांकी न कहकर नाटक जाता है। साहित्य शास्त्रियों की एकांकी विषयक परिभाषाएँ आधुनिक में अपूर्ण हैं। आधुनिक एकांकी नाटक एक स्वतन्त्र विधा और एक विकसित माध्यम है। वस्तुतः एकांकी न तो नाटक का संक्षिप्त रूप है और न ही एक वाला नाटक, अपितु यह कहानी के समान। जो उपन्यास से सर्वथा भिन्न जाती है। एक स्वतन्त्र विधा है।

विद्वानों ने एकांकी को अनेक प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया हम यहाँ कुछ प्रमुख परिभाषाओं पर विचार कर एकांकी के स्वरूप को स्पष्ट का प्रयास करेंगे।

एकांकी की परिभाषाएं—हिन्दी एकांकी के जनक **'डॉ. राम कुमार वर्मा'** कांकी की परिभाषा इस प्रकार दी है—

"एकांकी नाटक में एक ही घटना होती है और यह घटना नाटकीय कौशल कौतूहल का संचय करती हुई चरम सीमा (Climax) तक पहुँचती है। में कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता। विस्तार के अभाव में वह घटना कली की ति खिलकर, पुष्प की भांति विकसित हो उठती है। उसमें लता के समान फैलते उच्छृंखलता नहीं है।"

श्री उपेन्द्रनाथ अश्क ने प्रतिनिधि एकांकी की भूमिका में एकांकी को परि- षित करते हुए कहा है।

"बड़े नाटक की तुलना में एकांकी जीवन के एक अंश का पृथक् और च्छिन्न चित्र उपस्थित करता है, जीवन की झांकी मात्र देता है। विभिन्नता के ले एकीकरण, विशृंखलता के बदले एकाग्रता, पूर्णता के बदले अपूर्णता, फैलाव बदले सीमित, विस्तार के बदले संक्षिप्तता इसके गुण हैं।"

उक्त दोनों भारतीय विद्वानों की भांति पाश्चात्य समीक्षकों ने भी एकांकी को भाषित किया है। श्री परसीवियड़ वाइल्ड ने एकांकी की परिभाषा देते हुए हा है—

एकांकी कुछ मिनटों से लेकर पूरे एक घंटे तक नाटककार की इच्छानुसार ाया जा सकता है। उसके एक या अनेक दृश्य हो सकते हैं, किन्तु उसका झुकाव ट की ओर विशेष रूप से रहता है। यह उसी समय तक चलना चाहिए, जब दर्शक बिना उकताये देखते रहे। उसमें लम्बे-लम्बे वर्णनों की बाहुलता नहीं , जिनका मनोवैज्ञानिक महत्व बड़े नाटकों में रहता है।"

एकांकी की विशेषताएं—एकांकी की उपर्युक्त परिभाषाओं पर विचार ने के बाद उसकी विशेषताओं का वर्णन सहज में ही किया जा सकता है।

पुस्तक के सम्पादक डॉ. श्रीधर सिंह ने एकांकी की निम्नलिखित विशेषताओं उल्लेख किया है--

1. एकांकी आकार-प्रकार की दृष्टि से संक्षिप्त होता है। एकां मानव-जीवन की एक घटना पूर्ण प्रभाव के साथ व्यक्त होती है।

2. एकांकी सुनिश्चित संकलित लक्ष्य की ओर तीव्र गति से बढ़ता उसमें आकस्मिकता और तन्मयता विद्यमान रहती है।

3. एकांकी एक अंक (जिसमें अनेक दृश्य हो सकते हैं) तक सी रहता है।

4. एकांकी में पात्रों की संख्या मर्यादित होती है। एकांकी एक पात्रीय हो सकता है।

5. एकांकी में संकलन-त्रय का निर्वाह सर्वथा अपेक्षित है।

6. एकांकी का अन्त आकस्मिकता और चरम सीमा (Climax) होता है।

7. एकांकी का उद्देश्य रंजन नहीं है अपितु उसमें मानव जीवन के वि पक्षों का संवेदनात्मक संप्रेषण संकल्प होता है।

समग्रत: कहा जा सकता है कि एकाँकी विशिष्ट जीवन सत्य की ... अभिव्यक्ति करने वाली संक्षिप्त रचना है। इसमें जीवन का एक पक्ष ... साथ व्यंजित होता है।

एकांकी के तत्व--जिन आधारभूत उपादानों से एकांकी का स्वरूप नि होता है। वे उसके तत्व कहलाते हैं। डॉ. श्रीधर सिंह ने एकांकी के प्रमुख व ... मिलाकर कुल छः तत्वों का उल्लेख किया है, जो निम्नांकित हैं--

(i) कथावस्तु

(ii) चरित्र चित्रण

(iii) रचना-शिल्प संवाद एवं भाषा शैली

(iv) संकलन-त्रय

(v) रंग-निर्देश और अभिनेयता

(vi) उद्देश्य।

1. कथावस्तु--कथावस्तु एकांकी का प्रमुख तत्व है। यह वह तत्व जिसके सहारे एकांकी का निर्माण होता है। इसे एकांकी की रीढ़ भी कहा ज तो अनुचित न होगा। एकांकी की कथावस्तु पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजि राजनीतिक, आंचलिक किसी भी प्रकार की हो सकती है। पर उसका संक्षि होना आवश्यक है। कौतूहल और स्वाभाविकता एवं ...त्मकता ...था व...

वश्यक गुण है। एकांकी की कथा वस्तु को त्वरा के साथ चलकर चरम पर पहुँचना चाहिए। उसमें प्रासंगिक कथाओं का अभाव होना चाहिए। में एक ही कथा होती है और उसी पर एकांकीकार का सम्पूर्ण ध्यान होता है।

चरित्र विधान—एकांकी में कथानक की घटनाओं को घटित करने वाले यताओं को पात्र या चरित्र कहा जाता है। इन्हें मुख्य रूप से मुख्य पात्र सहायक पात्र दो श्रेणियों में बाँटा जाता है। एकांकी में खलनायक हो भी है और नहीं भी। एकांकीकार वेशभूषा, वार्तालाप और पात्रों के कार्य-ार द्वारा उनका चरित्र चित्रण करता है। चरित्र चित्रण का आधार मनो-षण पद्धति होनी चाहिए। चरित्रों की संख्या सीमित और मर्यादित होनी ए। उससे एकांकी की कथावस्तु को गति मिलनी चाहिए। एकांकी जीवन का त्रण है। अतः उसके पात्रों में जीवन की विविधता और प्रकृतिजन्य भिन्नता ी को रोचक बनाने में सहयोगी होती है।

रचना-शिल्प संवाद एवं भाषा शैली—एकांकी में रचना शिल्प का ष महत्व है। हम लघु नाटक को एकांकी नहीं कह सकते। वह कहानी की सर्वथा एक स्वतन्त्र विधा है।

संवाद अथवा कथोपकथन एकांकी के प्राण कहलाते हैं। एकांकी की कथा-संवादों के माध्यम से ही विकसित होती है। पात्रों का चरित्र भी उन्हीं ाध्यम से स्पष्ट होते हैं। एकांकी के संवाद संक्षिप्त, स्वाभाविक, पात्रानुकूल, ानुकूल और पाठकों व दर्शकों पर प्रभाव डालने वाले होने चाहिए। स्वगत या तो होने ही नहीं चाहिए अथवा मर्यादित होने चाहिए।

एकांकी की भाषा सहज, सरल, सरस, सुबोध और संकेतात्मक होनी ए। उसमे चमत्कार आग्रह नहीं होना चाहिए। भाषा की मार्मिकता एवं नात्मकता उसके प्रभाव को बढ़ाने में सहायक होती है। शैली नाटकीय त्वरा-लाक्षणिक और संकेतात्मक होनी चाहिए।

संकलन-त्रय—स्थान, समय व कार्य की एकता को संकलन-त्रय कहा जाता इसके सम्यक् निर्वाह से एकांकी प्रभावी बनता है और उसमें कलात्मकता एवं वशीलता की वृद्धि होती है। कुछ एकांकीकार संकलन-त्रय को आवश्यक नहीं ा। उनकी मान्यता है कि एकांकी की प्रकृति और उसके रचना कौशल पर रित है। वह कथा के विभिन्न कोणों को एक दृश्य में मिलाये और समय, तथा कार्य की दूरियों को एक कर दें। **डॉ. श्रीधर सिंह** के अनुसार —एकांकी कलन-त्रय का निर्वाह कथावस्तु को प्रभावशाली बनाता है। इससे एकांकी में ता एवं मचीय सुविधा आ जाती है। यही कारण है कि संकलन त्रय का वर्तमान में सभी एकांकीकार स्वीकार कर रहे हैं।

रंग निर्देश व अभिनेयता—रंग निर्देश के माध्यम से एकांकी निर्देशक अभिनेयताओं को आवश्यक संकेत देता है इससे एकांकी का मंच पर अभिनय सरल हो जाता है। इनसे एकांकी में वातावरण निर्माण, भावाभिव्यज अभिनयात्मकता आती है।

अभिनेयता एकांकी का प्राण तत्व है। इसका थोड़ा-सा भी अभाव को निर्जीव बना देता है। इस दृष्टि से निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखा चाहिए—

1. रंग निर्देश, पाठकों की कल्पना उद्दीपन करने में सहायक हों।
2. पात्रों की संख्या कम हों।
3. कथोपकथन संक्षिप्त और सार्थक हों।
4. कथानक में अन्तःसंघर्ष को पर्याप्त स्थान प्राप्त हों।

उद्देश्य—मानव का हर कार्य उद्देश्यनिष्ट होता है। एकांकी भी अपवाद नहीं है। एकांकीकार सामाजिक व्यवस्था, सुधार चाहता है। एकां उद्देश्य इसी उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होता है।

निष्कर्ष—संक्षेप में एकांकी एक स्वतन्त्र नाट्य विधा है। इसका रंगमंच में है। इसके प्रमुख छः तत्व हैं। इन छः का उचित समावेश होने एकांकी सफल कहा जाता है।

प्रश्न 25. 'दीपदान' एकांकी के आधार पर धाय माँ पन्ना के चरि सोदाहरण उदघाटन कीजिये।

अथवा

'दीपदान' एकांकी में इतिहास प्रसिद्ध पन्ना धाय के त्यागमय च माध्यम से डॉ. रामकुमार वर्मा ने उत्कृष्ट राष्ट्र प्रेम और बलिदान का प्रस्तुत किया है।" उक्त कथन की विवेचना कीजिये।

उत्तर—'दीपदान' डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित एक ऐति एकांकी है। इस एकांकी की प्रमुख पात्र धाय माँ पन्ना है। एकांकी की कथा वस्तु उसी केन्द्र के चारों ओर घटित होती दिखाई देती है। दर्शक और उसके अद्भुत त्याग, बलिदान, देशभक्ति, स्वामी-भक्ति, वात्सल्य, दूरदर्शिता ममता को देखकर चकित और श्रद्धावनत हो जाते हैं। वह अपने स्वामी पुत्र उदयसिंह को रक्षार्थ अपने पुत्र चन्दन को कर्त्तव्य की बलिवेदी पर समर्पि देती है। उसका यह बलिदान गौतम बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण से भी अधिक है। अपनी आँखों के सामने अपने आँखों के तारे अबोध चन्दन को वह भाव दान निर्माता चित्तौड़ राज्य के उत्तराधिकारी कुँवर उदयसिंह के लिए

रा में प्रवाहित करके एक आदर्श की स्थापना करती है। उसका चरित्र त्याग, लिदान और देश भक्ति का पावन तीर्थराज है। उसके चरित्र में अनेक विशेषताएँ जिन्हें निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत समझा जा सकता है।

1. **अद्भुत त्याग और बलिदान**--धाय माँ पन्ना का चरित्र त्याग व बलिदान का पर्याय है। उसने अपने पुत्र को अपनी आँखों के सामने बनवीर के हाथों हँसते-हँसते मरने दिया। लेकिन अपने कर्त्तव्य को कलंकित नहीं होने दिया। एक माँ अपने पुत्र को नर राक्षस के हाथों में सौंप देती है और प्रकट में उफ तक नहीं करती। यह उसके अद्भुत त्याग और बलिदान भावना का ही परिचायक है। वह सोना से कहती है–"तोड़ो ये नूपुर! यहाँ का त्योहार आत्म बलिदान है। यहां का गीत मातृभूमि की वन्दना का गीत है।" पन्ना ने मातृभूमि की वन्दना में अपने आँखों के तारे को त्याग दिया, उसका बलिदान कर दिया।

2 **उत्कृष्ट राष्ट्र प्रेम**–पन्ना में राष्ट्र प्रेम की बलवती भावना है। वह मातृभूमि की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने को तत्पर रहती है। उसे चित्तौड़ की गौरवमयी संस्कृति पर गर्व है। वह कुंवर उदयसिंह से कहती है:– "चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता! कुंवर, जैसे लता में फूल खिलते हैं, वैसे ही यहाँ वीरों के हाथ में तलवार खिलती है। वह सोना को समझाती हुई कहती है–"चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहां आग की लपटें नाचती है। सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं। उसका यह राष्ट्र प्रेम महान् है। वह अपने पुत्र को इसी राष्ट्र प्रेम की बलिदेवी पर समर्पित कर दीपदान करती है।

3. **स्वामिभक्ति**--पन्ना के चरित्र में स्वामिभक्ति का आदर्श रूप देखने को मिलता है। महाराणा सांगा की मृत्यु के बाद वह कुँवर की रक्षा का संकल्प करती है। वह कुंवर उदयसिंह की संरक्षिका है। बनवीर के कुचक्र को देखकर उसका हृदय भावी का विचार कर सिहर उठता है। वह सोना से कहती है–"सोना! मुझे किसी से ईर्ष्या नहीं, मैं जैसी हूं अच्छी हूँ। राजसेवा में जीवन जा रहा है। यही मेरे भाग्य की बात है।" वह सोना को कुँवर उदयसिंह को दीपोत्सव में नहीं भेजने का कारण बताती हुई कहती है!—"महाराणा सांगा के वंश का एक वही तो दीपक है।" वह कीरत बारी से कहती है!—"आज तुम जैसे एक छोटे आदमी ने चित्तौड़ के मुकुट को संभाला है। एक तिनके ने राजसिंहासन को सहारा दिया है, तुम धन्य हो।" सामली से बनवीर के आने का समाचार सुनकर वह भगवान से प्रार्थना करती हुई कहती है—"मुझे बल दो कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ।" इस प्रकार पन्ना की स्वामिभक्ति उत्कृष्ट है।

4. **साहसी व संकल्पी**--पन्ना का चरित्र साहस व संकल्प का जीवित

प्रमाण है। वह बनवीर को महाराजा बनवीर न कहकर, केवल बनवीर कहती है वह स्वामीभक्ति के आवेश में बनवीर को क्रूर, नराधर्म व नाहरकी कहते उस पर कटार से आक्रमण करने का साहस रखती है। वह सोना को यह जा हुए भी कि वह बनवारी की कृपा पात्री है, डाँट देती है। ये सब उदाहरण प के साहसिकता के प्रमाण है।

पन्ना सकल्पशील है। सावली से कुँवर के प्राणों के संकट में होने की ब सुनकर वह मन ही मन कुँवर की रक्षा का संकल्प करती है और माँ भवानी प्रार्थना करती है कि उसे बल दे, जिससे वह राजपूतनी की मर्यादा को निभा स और चित्तौड़ की सच्ची नारी प्रमाणित हो सके।

5. **वात्सल्य की मूर्ति**--पन्ना एक स्नेहमयी धाय और ममतापूर्ण माँ है वह वात्सल्य व स्नेह का सजीव रूप है। अपने पुत्र के अँगूठे में चोट लगने प रक्त को बहता देखकर उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह व्याकुल हो उठत है। चन्दन के पूछने पर वह कहती है, कि तुम्हारे अँगूठे की धारा ब और मेरी आँखों से एक बूँद पानी भी नहीं निकले। वह जानती है कि चित्तौ में चारों ओर जहरीले सर्प घूम रहे हैं और किसी भी समय कुँवर को इस सक है। उसका वात्सल्य उसकी रक्षा के लिए सतर्क हो जाता है। वह रूठे कुँवर क मनाती है और चन्दन को सुलाने के लिए लोरी गाती है। ये सब बातें पन्न के वात्सल्य और प्रेम भरे हृदय का उद्घाटन करती हैं।

6. **दूरदर्शिता**--पन्ना दूरदर्शी और बुद्धिमती भी थी। वह कुँवर के प्राण को संकट में देखकर उसे दीपदान उत्सव में नहीं भेजती। वह सामली से कुँव के प्राणों के संकट का समाचार जानकर वह उसे सुरक्षित महल के बाहर भिजव देती है। यह उसकी दूरदर्शिता का ही प्रमाण है। वह क्रूर बनवीर के पाप-पूर्ण इरादे को जानकर भी बड़ी बुद्धिमानी व धैर्य से उसके समक्ष एक प्रस्ताव रखत है—"महाराज बनवीर! तुम राज्य करो, चित्तौड़ पर, मेवाड़ पर, सारे राजपूता पर राज्य करो, पर कुँवर उदयसिंह को छोड़ दो। मैं उसे लेकर सन्यासनि ह जाऊँगी। तीर्थ में वास करूँगी। तुम्हारा मुकुट तुम्हारे माथे पर रहे, पर मेर कुँवर भी मेरी गोद में रहे। बनवीर! महाराणा बनवीर, मुझे यह भिक्षा दो

उपर्युक्त उदाहरण से पन्ना की बुद्धिमत्ता व उसकी दूरदर्शिता का बो होता है।

निष्कर्ष--उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि पन्ना एक ममतामयी मा दूरदर्शी, साहसी, संकल्पशील, स्वामिभक्त, देशभक्त व बलिदान की प्रतिमूर्ति थी उसका चरित्र आदर्श और अनुकरणीय है। आज जब हम अनेक प्रतिक्रियावादी आतंकवादी और अलगाववादी शक्तियों से जूझ रहे हैं। ऐसे में पन्ना का चरि

देश के प्रति अनुराग, त्याग, बलिदान और अन्याय विरोध के भाव उत्पन्न ता है। पन्ना का चरित्र भारतीय इतिहास का एक उज्ज्वल पृष्ठ है। जो निर-पठनीय है और अनुकरणीय है।

प्रश्न 26. "रंगमंच की दृष्टि से 'दस हजार' एक सफल एकांकी है।" इस न की सोदाहरण व्याख्या कीजिये।

अथवा

रंग निर्देशन और संकलन-त्रय के सम्यक् निर्वाह ने 'दस हजार' एकांकी को ल बनाया है। इस कथन की समीक्षा कीजिये।

उत्तर--'श्री उदयशंकर भट्ट' द्वारा रचित 'दस हजार' शीर्षक एकांकी माजिक, मनोवैज्ञानिक व्यंग्य कथा पर आधारित एक सफल एकांकी है। इसमें क ओर धनिक वर्ग की अर्थ प्रधान मानसिकता का चित्रण हुआ है, जिसमें निजी म्बन्धों का कोई महत्व नहीं है, दूसरी ओर कानूनी व्यवस्थाओं के खोखलेपन, ती अराजकता पर भी तीखा व्यंग्य किया है। इस एकांकी की कथावस्तु संक्षिप्त । इसमें स्थान, पात्र, समय और घटना का संकलन सम्यक् रूप से किया जा कता है। लेखक ने रंगमंच और अभिनय सकेत भी दिये है। जिससे इस एकांकी ो मंच पर प्रदर्शित करने में कोई कठिनाई नहीं आती।

रंगमच पर एकांकी की सफलता की जाँच करने हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं र विचार करना अपेक्षित है।

1. **कथा का आकार**--एकांकी की सफलता का प्रथम बिन्दु उसके आकार ा लघु होना है। एकांकी में केवल एक ही घटना होती है। जो द्रुत गति से रम सीमा की ओर अग्रसर होती है। 'दस हजार' एकांकी में एक ही घटना, एक ी कथा है। सेठ विसाखाराम के पुत्र सुन्दर को पठान उठाकर ले जाते है और ड़के को लौटाने के लिए वे 'दस हजार' रुपये की मांग करते हैं। कंजूस और दखोर पिता सेठ विसाखाराम को अपने पुत्र के जीवन की चिन्ता न होकर सूद ौर व्यापार की चिन्ता है मुनीम सुन्दर की माँ के अनुरोध पर दस हजार रुपये ले ाकर सुन्दर को छुड़वा कर लाता है। यही इस एकांकी की कथा है। इसमें सहा-क कथाओं का अभाव है। इसे सरलता से एक घण्टे से कम समय में भी अभि-ात किया जा सकता है। एकांकीकार ने कथा को रोचक बनाने का भरसक यास किया है। अतः कथावस्तु की दृष्टि से इसकी सफलता असंदिग्ध है।

2. **पात्र व चरित्र**--एकांकी में अधिक पात्रों के चरित्र को समझने में कठि-ई होती है। 'दस हजार' एकांकी में केवल पाँच पात्र है। कंजूस और सूदखोर ता विशाखाराम, उनका पुत्र सुन्दरलाल, उनकी बेटी राजी, उनकी पत्नी और नका मुनीम। ये केवल पाँच पात्र है। सेठ की कृपणता और आर्थिक मानसिकता

दर्शकों को प्रभावित करती है और उनकी सहानुभूति उसके प्रति जागृत न हो पाती। दर्शकों की सहानुभूति उनकी पत्नी व पुत्री की विवश, लाचार व करुण स्थिति के प्रति जागृत होती है। अन्त में वे अपने उद्देश्य में सफल होती है सुन्दरलाल छूटकर घर आता है और माँ व पुत्र का मिलन होता है। पात्रों की संख्या सीमित होने के कारण रंगमच पर इसका अभिनय सरलता से किया जा सकता है।

3. **कथोपकथन**--कथोपकथन दृश्य काव्य के प्राण होते हैं। वे कथा को गति देते हैं और पात्रों के चरित्र को स्पष्ट करते हैं। 'दस हजार' एकांकी के कथोपकथन संवाद की सभी विशिष्टताओं से युक्त है। उनकी भाषा पात्रानुकूल और सामान्य बोलचाल की है। वे संक्षिप्त है और पात्रों के चरित्र उद्घाटित करने वाले है। संवाद की इन्हीं विशेषताओं के कारण यह एकांकी रंगमच की दृष्टि से सफल है।

4. **रंग-निर्देशन**--प्रस्तुत एकांकी में श्री उदयशंकर भट्ट ने एकांकी के निर्देशक और पात्रों के लिए उनकी वेशभूषा, आकृति, अभिनय आदि के विषय में अपेक्षित रंगमंच और अभिनय सकेत दिये है। इससे एकांकी को प्रभावपूर्ण ढंग से रंगमच पर प्रस्तुत कर पाना सहज हो गया है।

5. **संकलन-त्रय**–प्रस्तुत एकांकी में केवल एक ही दृश्य है, सेठ विसाखाराम के घर का। उसकी कथावस्तु का समय अधिक विस्तृत नहीं है। केवल एक या दो दिन उसके पात्र गतिशील है। इसमें संकलन-त्रय, स्थान, समय व पात्र की एकता का सम्यक निर्वाह हुआ है। इस दृष्टि से इसमें सम्प्रेषणीयता और प्रभाव निवति उत्पन्न हो गयी है।

निष्कर्ष--उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि 'दस हजार' एक सफल एकांकी है! श्री उदयशंकर भट्ट ने इसे रंगमच को ध्यान में रख-कर ही तैयार किया है। नाटककार ने इसकी कथावस्तु को संक्षिप्त रखा है। पात्रों की संख्या मर्यादित है। संवाद छोटे-छोटे, गतिशील, पात्रानुकूल और वस्तु को गति देने वाले है। लेखक ने सकलन-त्रय का सम्यक् निर्वाह किया है। अभिनय की दृष्टि से रंगमंच और अभिनय संकेत भी दिये है। जो नाटक को मंच पर सफलतापूर्वक अभिनय करने में सहयोगी रहे हैं। अतः रंगमंच की दृष्टि से इस एकांकी की सफलता असंदिग्ध है।

प्रश्न 27. श्री भुवनेश्वर कृत 'ऊसर' एकांकी के कथानक को स्पष्ट करते हुए उसके शीर्षक के औचित्य एवं उद्देश्य को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—श्री भुवनेश्वर प्रसाद प्रतिभा सम्पन्न एकांकीकार हैं। इनके एकांकी

य सभ्यता से प्रभावित भारत के शिक्षित मध्यम वर्ग की विविध स्थितियों
मस्याओं से सम्बन्धित हैं। 'ऊसर' भी इसका अपवाद नहीं है। इसमें मध्य-
तथा कथित शिक्षित परिवारों के खोखलेपन, प्रसगहीनता और दिखावे की
ा पर तीखा प्रहार किया गया है। संक्षेप में इसका कथानक इस प्रकार

संक्षिप्त कथानक—ऊसर एकांकी हमारे उच्च मध्य वर्ग के समाज से सम्ब-
है। इसमें दिसम्बर मास की एक शाम का उल्लेख है। एकांकी के आरम्भ
र के बरामदे में बैठे हुए एक युवक का वर्णन है जो बाहर पोर्च में खड़ी
ा कार को टकटकी लगाकर देख रहा है। यह और कोई नहीं इस घर के
ों का ट्यूटर है। उसी समय एक आठ वर्ष का बालक कुर्सी को बरामदे में
हुए कुत्ते को जगाकर उठा लेता है। वह कुत्ते से कहता है कि तुम्हें कोई नहीं
ा, तुम यहाँ अकेले पड़े हो। हम तुम तो भाई-भाई है। कुत्ता लड़के की टांगों
चिपककर खेलने लगता है।

इसी समय दियासलाई से दाँत कुरेदते हुए गृहस्वामी मि. सिबल आते हैं।
लड़के को कुत्ते के साथ खेलता हुआ देखकर उसे डाँटते हैं और कहते हैं कि
तर मेहमान आए हैं और तुम कुत्ते के साथ शरारत कर रहे हो। इसी समय
क भी धीरे से अन्दर आ जाता है। युवक गृहस्वामी से उनकी पत्नी के स्वास्थ्य
विषय में प्रश्न करता है। गृहस्वामी अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के विषय में बताते-
ाते उसके स्वभाव की आलोचना करने लगते हैं। वे कहते हैं—"क्या अच्छी
? जरा-सी पार्टी पर आप देखिये हफ्ते भर स्ट्रेण्ड हार्ट से पड़ी रहेंगी। अब
न लोगों को घूम-घूम कर मकान और बाग दिखाया जा रहा है। फिर हम लोगों
ी" शामत आ जायेगी।

युवक कहता है कि वह सुबह से गृहस्वामी को कुछ कहने का इच्छुक था,
र उनकी व्यस्तता देखकर कह नहीं सका। कल आप दौरे पर चले जायेंगे मुझे
ापके यहाँ पढ़ाते हुए दो महीने हो गये। गृहस्वामी उन्हें रुपये देने की मजबूरी
ताने हुए उस पर अहसान जताते हुए कहते है कि 'मैंने सिर्फ आपकी इमदाद की
रज से यह इन्तजाम किया था।' वे ट्यूटर से पूछते हैं कि तुम साईकिल से कहाँ
ये थे। युवक कहता है कि वे गये ही नहीं। इससे वातावरण में चुप्पी छा जाती
। जिसे तोड़ते हुए गृहस्वामी कहते हैं—मेरी जिन्दगी का एटीटयूड बिलकुल
ुक्तलिक है। जिन्दगी सोशलिज्म के लटकों और फारमूलों से नहीं बाँधी जा
कती। यदि ऐसा होता तो वह आज तक कब की खत्म हो जाती। फिर वे आने
ाली जेनरेशन के विषय में ट्यूटर से कहते हैं—'आने वाली जेनरेशन, चाहे वह
बलियों की हो या गधों की, हमसे अच्छी होगी।' जेनरेशन आती नहीं—वरन्

जमीन की आतें उन्हें बजाय हजम करने के कै कर देती है। इसी समय भी कुछ आवाजें सुनाई देती है और गृहस्वामी के संकेत से युवक उठकर बाहर चला जाता है।

ट्यूटर के बाहर जाते ही गृहस्वामिनी उनके साथ एक मोटी रमणी, लड़कियां और एक युवक वहां आते हैं। युवक गृहस्वामी का पुत्र है। मोटी रमणी कहती है कि हमने पार्थ में आपका डिनोमाइट भी देखा। इस पर सब हंस पड़ते हैं। गृह स्वामी कहता है कि दुनियाँ के सब गोले-बारूद एक आदमी की मर्जी से, चाहे वह हजारों मील दूर बैठा हो, फट सकते हैं। इसी बीच गृहस्वामिनी सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हुई कहती है–'ये योग वोग बहुत जानते थे, अब सब बेचारे भूल गये।' युवक कहता है–'पापा का यह ख्याल चाहे मजाक हो, पर हिटलर और मुसोलिनी के लिए हमें ऐसी ताकत पैदा करनी होगी।' गृहस्वामी कहता है–जब हजरत आदमी की औलाद बहुत उछल-कूद मचायेगी तो यह ताकत काम में लाई जाएगी। बेचारा गांधी क्या कहता है……इस पर युवक बीच में ही बोलता है–गांधी तो सठिया गया है।' मोटी रमणी–मैं तो कुछ नहीं जानती, लेकिन हां, अभी विक्टोरिया–सी कोई मलका हो जाय तो फिर ठीक हो जाय। दुनिया पर यह तबाही विक्टोरिया के मरने के बाद आई। इस पर गृहस्वामी इन बातों को यहीं समाप्त कर एक किस्सा सुनाने लगते हैं।

गृह स्वामी ने कहा–मैं जब लखनऊ शहर में रहता था, उस समय एक बार हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा हो गया। हम दोनों धर्मावलम्बी एक-दूसरे से डरे हुए थे। इसी समय डरे हुए मुसलमान अपने सामान और परिवार को लेकर वहां से चले गये। उसी तरह यूरोप में सब एक-दूसरे से डरते हैं। समय बिताने के लिए गृह-स्वामी लड़कियों को गाने के लिए कहता है। बीच में किस्सा सुनाने, ब्रिज खेलने व कॉफी पिलाने की बातें होती है, पर खाने का समय समीप होने से ये कोई नहीं चाहता।

इसी समय गृहस्वामिनी युवक से ट्यूटर के विषय में कहती है कि वह बवाले जान हो रहा है। अतः उससे बात कर लेना। उसका ख्याल है कि वह इण्टेलेक्चुअल ऐक्सपेरीमेन्ट कर रहा है। तब गृहस्वामी कहता है कि आज आम आदमी भी यही कर रहा है कि वे किताबों के अधकचरे ज्ञान से बगावत करना चाहते हैं पर कर नहीं पाते हैं। इसी बीच रानी विक्टोरिया, यथाराजा तथा प्रजा ताश खेलने का प्रस्ताव होता है। मोटी रमणी उन्हें एक नया खेल बताती है कि हम में से कोई आदमी एक-एक करके शब्द बोले और उसे सुनकर हमारे मन में जो विचार आयें, उन्हें कागज पर लिखें, फिर सबके कागज पढ़े जाए। खेल शुरू होता है। कमरा, बिजली, पेरम्बुलेटर, सेक्स, आदि शब्द बोले जाते हैं–सब लिखते

...मन में सारे कागज पड़े जाते हैं। उन पर विचार और हंसी-मजाक होते... भोजन का समय हो जाने पर सभी भीतर उठकर चले जाते हैं। ... अपनी डिक्शनरी, जिसे वह नहीं भूल गया था लेने आता है। ...ी और गृहस्वामी के पुत्र की बात होती है। गृहस्वामी कि... ...यूटर से पूछता है कि आपकी पापा से क्या बात हुई ? ट्यूटर बताता है ...ो कहा कि आने वाली जेनरेशन चाहे बिल्लियों की हो या साँपों की, पर ...से अच्छी होगी। युवक इससे चौंककर भीतर चला जाता है और मंच पर सिर्फ ...र रह जाता है। जो कुर्सी पर बैठकर एक अधजली सिगरेट निकालकर सुल-...ा है।

इस सम्पूर्ण कथानक में उतार-चढ़ाव और घटना क्रम का अभाव है। लेखक ...ध्यान मध्यवर्गीय परिवार के पात्रों के मानसिक खोखलेपन को व्यक्त करने में ...ना है। उनकी बातों में कोई तारतम्य और सार नहीं। वे उनकी तरह ही ...खली, उखडी-उखड़ी और निरर्थक-सी है। व्यंग्य की मार तीखी है। इसमें एक ...ो मध्यवर्गीय परिवार की बात की गई है जो राजनीति, शासन जीवन ...ृति और भावी जेनरेशन के विषय में तो बात करते हैं पर एक ट्यूटर का शोषण ...रने में संकोच नहीं करते। ट्यूटर का संकोच, उसकी दीनता और निर्धनता समाज ... उसके प्रति उपेक्षा के वातावरण को प्रस्तुत करती है। एकांकी का कथानक ...क्षिप्त, सांकेतिक, व्यंग्यपूर्ण और शिथिल है। उसमें ये विशेषताएं आरम्भ से ...न्त तक देखने को मिलती है।

शीर्षक का औचित्य—प्रस्तुत एकांकी में आरम्भ से अन्त तक पाश्चात्य ...भ्यता से प्रभावित मध्यवर्गीय परिवार की निरर्थक, अप्रासंगिक और सारहीन ...तों का सिलसिला देखने को मिलता है। पाश्चात्य जीवन की नकल करते-करते ...नके पास अपना कुछ भी शेष नहीं है। उनका जीवन ऊसर-बंजर सा है। जहां ...चार की धरती पर कुछ भी विशेष नहीं है। भीतर केवल दिखावा, खोखलापन ...ौर प्रसंगहीनता है। इस प्रकार इसका शीर्षक प्रतिकात्मक है। जिस प्रकार ऊसर ...मि से उर्वरता की अपेक्षा नहीं की जा सकती, वैसे ही मध्यवर्गीय शिक्षित व्यक्ति ...ो पाश्चात्य सभ्यता की नकल करते-करते मानसिक धरातल पर पूर्णतया बंजर ... गये है। उनके पास अपना कुछ भी नहीं है। अतः इसका शीर्षक भाव-प्रधान ...ौर प्रतीकात्मक होने के कारण सार्थक, सांकेतिक, उचित और पूर्णतया उप-...क है।

उद्देश्य—भुवनेश्वर के समस्त एकांकियों पर पाश्चात्य प्रभाव हावी रहा ...। ऊसर भी इसका अपवाद नहीं है। इसका वातावरण पाश्चात्य है। यदि पात्रों

के नाम बदल दिये जावें तो यह एकांकी पाश्चात्य जीवन का चित्र प्रस्तुत करने में सक्षम हो जायेगा। एकांकी में जो नकलीपन, पात्रों की सदर्भहीन बातें, खोखली गम्भीरता, प्रसगहीनता, दिखावा और ताश, ब्रिज तथा शब्दों का खेल है–वह सब पाश्चात्य प्रभाव का ही परिणाम है। एकांकीकार ने पाश्चात्य रंग में रंगे भारतीयों पर पाश्चात्य के इस प्रभाव को बताते हुए मानसिक स्तर पर उनके खोखलेपन और नकल की प्रवृत्ति पर तीखा व्यंग्य किया और व्यंजनात्मक रूप से हमें पाश्चात्य प्रभाव के इस जुए को उतार फेंकने की प्रेरणा भी दी है। यही एकांकीकार को इस्ट भी और यही 'ऊसर' एकांकी का उद्देश्य भी है।

निष्कर्ष––सक्षेप में कह सकते है कि श्री भुनेश्वर का 'ऊसर' एकांकी एक सफल रचना है। इसका कथानक संक्षिप्त, शिथिल सांकेतिक और व्यंग्यपूर्ण है। इसका शीर्षक संक्षिप्त, उपयुक्त और प्रतीकात्मक है। इसका उद्देश्य पाश्चात्य प्रभाव से बचने और भारतीयता की ओर लौटने का संदेश देना है। कथानक, शीर्षक और उद्देश्य की दृष्टि से यह श्री भुनेश्वर का एक विशिष्ट एकांकी है।

प्रश्न 28. "बलहीन एकांकी में एक ओर वर्तमान साहित्य के खोखले मूल्यों और सवेदनहीन स्थितियों पर व्यंग्य है तो दूसरी ओर दाम्पत्य सम्बन्धों की टूटन का अहसास कराया गया है। नारी चेतना और नारी स्वातन्त्र्य से जुड़े प्रश्नों पर भी विचार किया गया है।" उक्त कथन के परिप्रेक्ष्य में 'बलहीन' एकांकी की समीक्षा कीजिये।

उत्तर––'बलहीन' श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र का सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया एकांकी है। इसमें लेखक ने वर्तमान साहित्य के कृत्रिम और खोखले मूल्यों का चित्रण किया है। साहित्यकार कल्पना विहारी होकर वास्तविक जीवन से किनारा कर लेते हैं। उनका जीवन सवेदनहीन हो जाता है। यहां तक कि वे सहज मानवीय सम्बन्धों को भी नकारने लगते हैं। इससे पारिवारिक जीवन में दरार पड़ जाती है। पति-पत्नी का रिश्ता केवल दिखाने की बात होती है। इस एकांकी में कवि देवकुमार ऐसा ही पात्र है। उसकी पत्नी रजनी नारी स्वातन्त्र्य भावना का अलख जगाती है। वह अपने पति की कविताओं की प्रशंसिका होकर भी अपनी उपेक्षा सहन नहीं कर पाती। इन्हीं स्थितियों का चित्रण प्रभावशाली ढंग से 'बलहीन' एकांकी में किया गया है।

साहित्य के खोखले मूल्यों पर व्यंग्य––प्रस्तुत एकांकी जिस युग में लिखा गया था, उस समय छायावादी चेतना पूरी तरह विकसित हो चुकी थी। साहित्यकार कल्पना विहारी होकर कविता-कामिनी के साथ अभिसार किया करते थे और जीवन की वास्तविकता की अपेक्षा करते थे। एकांकी का प्रमुख पात्र देवकुमार एक ख्याति प्राप्त कवि है। वह भी कल्पना लोक के झूठे, आत्मिक और

प्रेम के स्वप्न देखता है। उसका यह रोग उन्माद की सीमा तक पहुँच गया परिणामतः वह अस्वस्थ होकर चारपाई पकड़ लेता है। लेखक ने उसके से मूल्यहीन और खोखले साहित्य पर व्यंग्य करते हुए निम्न कथन है।

शिवनाथ सरला से कहता है—"और अब मैं यह भी जान गया हूं कि बीमारी क्या है। हिन्दी के नये लेखक और कवि अपनी नई पुस्तकों में अपनी रियों को इतना अधिक भर रहे हैं कि कोई भी उन्हें पढ़कर बीमार पड़ा। इन उपन्यास और नाटकों में देवकुमार जी ने लाल पैंसिल से चिन्ह बनाये तों के इन संग्रह गीतों में भी वैसे ही अनुमोदन चिन्ह बने हैं।" और—"जो- बातें···· दर्शन के पर्दे में लपेटकर······जिनका लिखना आत्म-हत्या है, और भी। बोतल की शराब इस शराब से बहुत अच्छी है। उसका नशा घड़ी भर है और यह नशा चढ़ा फिर उतरने का नाम नहीं लेता।"

आज का कवि जो लिख रहा है उसमें कोई कथा नहीं होती ! न राम की रावण की। इस संसार के किसी जीवित पुरुष या स्त्री का आकार उसमें नहीं ा। कविता का सम्बन्ध ब्रह्म से नहीं वरन् मनुष्य जीवन से है। कल्पना विहारी व सारे सामाजिक बन्धनों को छोड़कर अम्बर में त्रिशंकु बना रहे है। वह जीवन की चाई, वास्तविकता और उसके सुख-दुख से भाग रहा है। ऐसा साहित्य मानव ाज का कोई हित चिन्तन नहीं कर पाता। उसके होने की बजाय उसका न ना ही हमारे लिए अधिक हितकारी है।

संवेदनहीन स्थितियों का निरूपण—कल्पना विलासी कवि के जीवन की दनाएं भी काल्पनिक और कृत्रिम बन जाती है। ऐसे लोग आकाश में उड़ते हैं र धरती की धूल से उनको भेंट भी नहीं होती। वे इस सत्य को भी भूल जाते कि उनका शरीर इसी धूल से बना है और उसके साथ उनका कोई निकट का बन्ध भी है। देवकुमार अपनी पत्नी रजनी की उपेक्षा करते हैं। उससे आंखें राते है। उनका साहस अपनी पत्नी के पास बैठने तक को नहीं होता। वे न तो की भावनाओं को समझते हैं और न समझने का प्रयास ही करते हैं। रजनी नी माँ से अपना दुःख बताते हुए कहती है—"उदासीन रहने के लिए भी कुछ चाहिए। यहां कुछ नहीं है। मुझे देखकर ऐसे कातर हो जाते हैं, जैसे—मुझसे रहने के लिए भीख मांग रहे हों।' रजनी इस संवेदनहीन स्थिति को निर्भीकता क देवकुमार को बताते हुए कहती है—'तुम्हारा प्रेम कल्पना का है। जीना और ना भी तुम्हारा कल्पना का है। कविता में तुम अपने मन की रंगिनी भरते हो। न विकारों को दबा कर तुम्हें पुरुष बनना चाहिए उन्हीं को कुरेदकर तुम समाज गले मढ़ रहे हो। तुम्हारी कला का पतन हो रहा है।" उपर्युक्त उदाहरण

साहित्य के खोखले मूल्यों पर प्रहार करते हुए जीवन की संवेदनाहीन स्थितियों
व्यंग्य करते हैं।

दाम्पत्य सम्बन्धों में टूटन का अंकन—संवेदनहीन स्थिति दाम्पत्य जी
में दरार और टूटन उत्पन्न कर देती है। पत्नी-पति की कला की प्रशंसिका हो
भी अपनी उपेक्षा कभी सहन नहीं कर पाती। उसकी सारी कामना पति का प्
पाने के लिए होती है और जब उसे प्यार उपलब्ध नहीं होता तो वह उस पु
से दूर होती चली जाती है जिससे दाम्पत्य जीवन में दरार पड़ जाती है। रज
देवकुमार से कहती है–मुझे कवि नहीं पुरुष चाहिए जो मुझ पर शासन करे।
तो दया की भीख मांगते हो। तुम्हारी कविता मिथ्या का व्यापार है। तुम पु
नहीं हो। तुम्हारी कविता मृत्यु की पूजा है। तुम कायर हो......!" मैं तुम्हें
छोड़ूंगी। तुम्हारी कविता में आग लगाकर तुम्हें पुरुष बनाऊंगी।" जब देवकुम
उसे छोड़कर चले जाने की बात कहता है तो रजनी उससे धिक्कारती हुई परो
जीवी कहती है। इस प्रकार इस एकांकी में दाम्पत्य सम्बन्धों के टूटन का अं
अनेक स्थितियों में दर्शाया गया है।

नारी चेतना और नारी स्वातन्त्र्य—नारी और पुरुष के सम्बन्ध शारीरि
ही नहीं होते वे मानसिक और बौद्धिक स्तर पर भी होते हैं। जब पुरुष नारी
उपेक्षा करने लगे तो प्रेम का अंकुर मुरझा जाता है। संवेदनहीन स्थितियां औ
दाम्पत्य जीवन में टूटन से नारी चेतना का उदय हुआ और नारी अपनी स्वतन्त्रत
के लिए आन्दोलन के मार्ग पर आ गई। प्रस्तुत एकांकी में रजनी में नारी स्व
तन्त्रता की प्रतिनिधि है। वह अपने पति को पुरुष मानने से भी इन्कार कर देत
है। वह कहती है—"हाँ-हाँ! तुम शरीर से पुरुष होकर भी मन से स्त्री हो
तुम्हारी कविता में पुरुषत्व का अभाव है। तुम्हारी आंखों में स्त्री के आंसू मैं दे
चुकी हूँ। तुम्हारे कण्ठ में स्त्री की वाणी गूंजती है, तुम्हारे प्रेम में स्त्री क
संकोच है। तुम अपने अंगों को स्त्री की तरह छिपाते हो। हम दोनों स्त्री है
समझे।"

देवकुमार—तब तुमने स्त्री से विवाह किया है।

रजनी—संसार, में धोखा बहुत होता है। 'देवकुमार' किसने रख दिय
तुम्हारा नाम 'देवकुमारी' रखा होता तो मैं भ्रम में नहीं पड़ती।

उपर्युक्त कथन रजनी के पुरुषोचित साहस और नारी समानता तथा स्व
तन्त्रता की भावना को उजागर करते है। इनमें नारी का तेज, उसका स्वतन्
व्यक्तित्व, जागृति और लौकिक मानवीय सम्बन्धों के प्रति एक स्पष्ट चेतना देखने
को मिलती है।

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि बलहीन एकांकी में आधुनिक ...की मूल्यहीन तथा खोखली अभिव्यक्ति पर तीखा व्यंग्य किया गया है। ...ा विलासी कवि जीवन की सच्चाई से भागकर संवेदनहीन हो गया है। ...यकारों के पारिवारिक जीवन में तनाव और दाम्पत्य सम्बन्धों में टूटन तथा ...भावना और नारी स्वतन्त्रता से जुड़े प्रश्नों को भी इस एकांकी में प्रभाव-... ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 29. श्री उपेन्द्रनाथ अश्क कृत 'जोंक' एकांकी के कथानक को स्पष्ट ... हुए उसकी मूल संवेदना पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—श्री उपेन्द्रनाथ अश्क हिन्दी एकांकी के प्रतिभा सम्पन्न कलाकार ... प्रेमचन्द जी की भांति वे भी उर्दू से हिन्दी में आये और अपनी सर्वतोमुखी ...भा के कारण हिन्दी की विभूति बन गये। भारतीय सामाजिक जीवन को ...ोंने बड़े निकट से देखा और अनुभव किया है। सामाजिक विकृतियों को देखने ...उनकी दृष्टि जितनी तेज है उतनी ही उनकी लेखनी व्यंग्यात्मक चित्रण में निपुण ... **डॉ. श्रीधरसिंह** ने उनकी एकांकी कला की विशेषताएं बताते हुए उचित ही ...ा है—'निरुपित समस्या का स्पष्ट विवेचन, चरित्र का मनोवैज्ञानिक चित्रण, ...माजिक जीवन की बहुआयामी अभिव्यक्ति, प्रगतिशील दृष्टिकोण और सशक्त ...ल्प विधान उनके एकांकी नाटकों की उल्लेखनीय विशेषताएं हैं।''

'जोंक' का कथानक—'जोंक' प्रहसन शैली में लिखित एक सामाजिक ...कांकी है। इसमें जोंक की प्रकृति से मेहमान बनवारी और उससे पीछा छुड़ाने ... तत्पर मेजबान भोलानाथ के प्रयासों का हास्य-व्यंग्यमय चित्रण है। कथानक ... आरम्भ भोलानाथ और उसके मित्र आनन्द की बातचीत से होता है। भोला-...थ अपने मित्र से अनचाहे मेहमान से पीछा छुड़ाने में मदद की याचना करता है। ...सके पास पर्याप्त स्थान, चारपाई और बिस्तर की कमी है। ऐसे में अनचाहे ...हमान आकर उन्हें संकट में डाल देता है। उससे मेजबान की कोई विशेष जान-...पहचान भी नहीं है। वह उसके भाई परसराम का एक दोस्त है। उसका हम ...तनी है। उसने मास्टर रहमत के प्रसिद्ध नाटक 'खून का बदला खून' और दर्दे ...गर में अभिनय किया था, ऐसा वह कहता है। वह बात बनाने और सम्बन्ध ...ाने में बड़ा कुशल है। उसने मेजबान की पत्नी से अपनी बहन का सम्बन्ध ...काल लिया है। इसी बीच कमला भी वहां आ जाती है और वह अनचाहे मेह-...न के व्यवहार तथा अपने पति के भोलेपन की आलोचना करने लगती है।

आनन्द और भोलानाथ मिलकर उस अतिथि को भगाने की योजना बनाते ... पर सफल नहीं हो पाते। उनकी योजना यह थी कि भोलानाथ भूख न होने ..., कमला अस्वस्थ होने का तथा आनन्द उपवास का बहाना बनायें। इससे घर

में भोजन न बनने पर वह चला जायेगा। पर बनवारी काफी चतुर था। बाहर से हाथ में लौकियाँ लिए हुए आता है और कमला को कराहती दे कहता है कि लौकी की खीर इस बीमारी में बहुत फायदा करती है और मैं प भी अच्छी हूँ। खीर बनाने के साथ-साथ मैं अपने लिए दो रोटियाँ भी सेक लूँ आप भी खायें, मजा न आये तो नाम नहीं। इतना कहकर वह रसोईघर में जाता है और वहाँ मसाले न देखकर उनके विषय में पूछता है। कमला कह कि वे समाप्त हो गये तब बनवारी घी, मसाला, चीनी, दूध लेने के लिए लेकर बाजार चला जाता है।

इस योजना को विफल होता देखकर भोलानाथ, कमला और आनन्द नवीन योजनाएँ बनाते हैं। आनन्द कहता है कि मित्र तुम भाभी को लेकर पड़ोसी के यहां चले जाओ। बनवारी के आने पर मैं कह दूँगा कि भाभी तबीयत खराब होने से भाई साहब उन्हें मैके छोड़ने गये हैं। भोलाराम को योजना अच्छी लगती है, पर उसे उसकी सफलता में कुछ सन्देह भी होता है आनन्द कहता है कि आपके जाते ही मैं यहाँ ताला लगाकर खिसक जाऊँ कमला को बर्तनों की चिन्ता होती है। वह कहती है कि हमारे जाने के बाद उ कहना कि वे तो चले गये, अब मैं भी जा रहा हूँ और घास मण्डी तक नि जाना। योजना को कार्यान्वित किया जाता है। बनवारी आता है—आनन्द ज चाहता है, पर बनवारी उसे लौकी की खीर का प्रलोभन देकर रोक लेता है। बीच भोलानाथ भी आ जाता है और पूछने पर कहता है कि गाड़ी निकल गई दूसरी गाड़ी से जाना है। अतः कमला को वेटिंग रूम में बैठा आया हूँ। ख खाकर बनवारी पान खाने के लिए बाजार जाता है। इस अवसर का लाभ उ कर दोनों मित्र एक नई योजना बनाते हैं।

भोलानाथ आनन्द से कहता है कि कमरे में ताला लगाकर चलते हैं, बनवारी ताला देखकर वापिस चला जायेगा। आनन्द कहता है कि उसे तीन प्रिन्सीपल से मिलने जाना है। अतः मैं यहीं भीतर रह जाता हूँ तुम एक कमरे भीतर से बन्द करके दूसरे में ताला लगाकर चले जाओ। बर्तन, तिपाई व अन्दर रख दो। उसका हैण्ड बैग भी बाहर फिंका दो। बनवारी आकर जब पर ताला देखता है तो दूसरे कमरे के दरवाजे को रोकती हुई चारपाई बिछा लेट जाता है। कुछ ही देर में उसे नींद आ जाती है और वह खर्राटे लगाता है।

लगभग तीन बजे नींद खोलकर आनन्द बाहर जाना चाहता है। दरवा बन्द होने के कारण वह रोशनदान से निकलकर बाहर जाना चाहता है।

य बनवारी चोर-चोर दौड़ियो-भागियो का शोर मचा देता है। लोगों की भीड़ इकट्ठी हो जाती है। बनवारी कहता है कि देखिये ये आजकल के बेकार जैंटलमैन दिन दहाड़े मेरे मित्र भोलानाथ के घर डाका डाल रहा है। पंजाबी सज्जन आगे बढ़कर आनन्द का पाव पकड़कर घसीटता है जिससे आनन्द नीचे गिर जाता है। पंजाबी उसके मुँह पर दो-चार थप्पड़ जमा देता है। आनन्द अपनी सफाई देना चाहता है पर लोग नहीं मानते। इसी बीच बनवारी पुलिस को फोन करने की बात कहकर वहाँ से चला जाता है। भोलानाथ आता है और वह लोगों को समझाकर आनन्द की जान छुड़ाता है। भोलानाथ उससे इस मुसीबत का कारण पूछता है और आनन्द अब तो जो हुआ था, उसे सविस्तार बयान कर देता है।

इसी समय बनवारी भी वहाँ आ जाता है। भोलानाथ उससे आनन्द के प्रति किये गये दुर्व्यवहार का कारण पूछता है। बनवारी सफाई में प्रश्न करता है। भोलानाथ कहता है कि इस मामले को यहीं समाप्त करें। पत्नी की तबियत खराब है, मैं उसे गुरुदासपुर ले जाऊँगा। बनवारी प्रश्न करता है कि आपका ससुराल तो नवां शहर है फिर उसे गुरुदासपुर क्यों ले जा रहे हैं? भोलानाथ कहता है कि वहाँ कमला के बडे भाई रहते हैं। वे म्यूनिसिपल कमेटी में हैड क्लर्क हैं। यह सुनकर बनवारी खुश होता है और कहता है कि मुझे भी वहां काम है। ठहरिये मैं भी अपना बैग उठाकर चलता हूं।

बनवारी बढ़कर बैग उठाता है और भोलानाथ तथा आनन्द उसे आश्चर्य-पूर्ण मुद्रा में देखते रह जाते हैं। इस प्रकार यह एकांकी अपने शीर्षक 'जोंक' को सार्थक करता हुआ समाप्त होता है।

जोंक की मूल संवेदना—जोंक एकांकी के कथानक को जानकर इसकी मूल भावना जो व्यंग्य पर आधारित है, स्पष्ट हो जाती है। इसमें समाज की एक ज्वलंत समस्या अनचाहे मेहमान से पीछा छुड़ाने का सजीव चित्रण है। मेहमान जो जोंक की तरह चिपक गया है और एक बार आने के बाद जाने का नाम नहीं लेता। आज के महंगाई के युग में व्यक्ति का अपना खर्चा चलाना ही मुश्किल होता है ऐसे में अपरिचित, अनात्मीय और अनचाहे मेहमान का गुंजारा कैसे हो सकता है? भोलानाथ और आनन्द उससे पीछा छुड़ाने का उपाय करते हैं पर उनके कोई भी उपाय कारगर सिद्ध नहीं होते। आश्चर्य तो यह है कि एकांकी के अन्त में जब भोलानाथ अपनी पत्नी के साथ गुरदासपुर जाने की बात कहता है तो बनवारी भी वहां अपना एक काम होने का बहाना बनाकर साथ जाना चाहता है। इस प्रकार इस एकांकी की मूल संवेदना मंहगाई के इस युग में अनचाहे मेहमान के निर्वाह से जुड़ी हुई है।

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'जोंक' भी उपेन्द्रनाथ अश्क की

सामाजिक समस्या प्रधान एक सशक्त एकांकी है। इसके व्यंग्य चुटीले और ती हैं। प्रहसन शैली में लिखा होने के कारण यह हास्य-व्यंग्य और विनोद से पू है। लेखक ने बनवारी जैसे अनचाहे मेहमान से सतर्क रहने के साथ-साथ पाठ को आत्मा-लोचन की प्रेरणा भी दी है।

प्रश्न 30. "यह मेरी जन्म भूमि है" एकांकी में मिस होम्स एक अमर पा के रूप में चित्रित हुई है।" इस कथन की सम्यक विवेचना कीजिये।

अथवा

मिस होम्स की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—'यह मेरी जन्म भूमि है' एकांकी श्री हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा रचित एक ऐतिहासिक एकांकी है। इस एकांकी की सभी घटनाएँ काल्पनिक होकर भी सत्य है। देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में ऐसे पात्रों की कोई कमी नहीं थी जो मातृभूमि की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व त्याग कर देती है। मिस होम्स भी एक ऐसा ही पात्र है। उसका जन्मभूमि प्रेमी, देश प्रेम, त्याग, बलिदान, संवेदनशीलता, स्वतन्त्र्य प्रियता, कर्त्तव्यनिष्ठा एक अनुकरणीय आदर्श है। वह न केवल स्वयं अपना बलिदान देने को तत्पर होती है, वरन् अपने साथ-साथ मनोहर और वली मुहम्मद को भी देश प्रेम की उत्कृष्ट भावना से भरकर उन्हें स्वतन्त्रता के लिए बलिदान देने को तैयार करती है। अपने चरित्र की इन्हीं विशेषताओं के कारण वह इस एकांकी की प्रधान पात्र है। लेखक का उद्देश्य भी उसे ही प्रधान पात्र बनाने का रहा है, इसलिए उसने उसके कहे हुए शब्दों मे से चयन करके इस एकांकी का शीर्षक—'यह मेरी जन्म भूमि है' रखा है।

चारित्रिक विशेषताएं—'यह मेरी जन्म भूमि है' एकांकी के कथानक के आधार पर उसकी निम्नलिखित विशेषताएँ बताई जा सकती है—

(1) **देश प्रेम**—मिस होम्स एक अंग्रेज अफसर की पुत्री है। उसका जन्म भारत में हुआ है। भारत ही उसकी जन्मभूमि है, उसका वतन, देश और सर्वस्व है। उसका देश प्रेम किसी भी भारतीय से कम नहीं है। वह सोये हुए भारतीयों को जगाने का काम करती है और मनोहर तथा वली मुहम्मद को बलिदान के लिए प्रेरित करती है। वह मनोहर से कहती है—"मैं अंग्रेज के घर पैदा हुई हूँ. क्या इसीलिए हिन्दुस्तानी नही हूँ, अरे भाई, जो जिस देश मे रहता है, वह उसी राष्ट्र का अंग है और फिर मनोहर भाई, अंग्रेज होकर भी क्या मुझे हिन्दुस्तानियों के खयालातों की इज्जत नही करनी चाहिए ?"

(2) **स्वतन्त्रता-प्रिय**—मिस होम्स को देश की स्वतन्त्रता का विचार है। वह प्रत्येक व्यक्ति के आजादी र अधिकार को मानती है। वह अपने पिता से कहती है कि हिन्दुस्तानी लोग अपना हक चाहते हैं। वे आजादी मांगते है।"

अंग्रेजी राज्य के जूए को भारत के कन्धे पर से उतार फेंकना चाहती है। उसके विचार से इन्सानियत का सबसे ऊँचा ख्याल इन्सान की सबसे पहली ख्वाहिश और सबसे प्यारी चीज है–आजादी।

(3) त्याग और बलिदान––मिस होम्स में त्याग और बलिदान की भावना कूट-कूट कर भरी है। वह अपने हिन्दुस्तानी भाइयों को दुःखी देखकर स्वयं भी अपने सुखों का त्याग कर देती है और कार से कॉलेज नहीं जाती। उसमें साहस और बलिदान भावना अत्यन्त ही उच्च कोटि की है। वह लाठी और गोली के भय से अपने कर्त्तव्य से नहीं डिगती। वह अंग्रेज कलक्टर से स्पष्ट शब्दों में कहती है कि जिस तरह बाबर, अहमदशाह अब्दाली, चंगेज खां, नादिरशाह वगैरह को हिन्दुस्तान पर हमला करते समय यहां के मुसलमानों का मुकाबला सहन करना पड़ा था, उसी तरह आपको भी मिस होम्स की बगावत का सामना करना पड़ेगा। इतना ही नहीं, वह अपने पिता कर्नल होम्स को मशीनगन का मुँह खोलकर स्वयं को उसका पहला निशाना बनाने की बात कहकर अपने देश प्रेम, त्याग व बलिदान का आदर्श प्रस्तुत करती है।

(4) सहृदय एवं संवेदनशील––मिस होम्स सच्चे अर्थों में एक मानवी है। उसका कोमल हृदय अत्यन्त संवेदनशील है। वह दुःखी और अभावग्रस्त लोगों को देखकर व्यथित हो उठती है। वह भीषण गर्मी में भी कार से कॉलेज नहीं जाती क्योंकि उसे अपने वैभव का प्रदर्शन करने में शर्म आती है। वह अपने पिता से जो कहती है, वे उसे एक सहृदय, संवेदनशील मानवी कहने के लिए पर्याप्त है। वह कहती है––"इस कड़ी गर्मी में कितने ही लोग सड़कों पर मिट्टी कूटते नजर आते हैं। कितने ही लोग ऐसे मिलते हैं जिनके बदन पर कपड़े नहीं हैं, सिर पर टोप तो क्या टोपी भी नहीं है कितने ही ऐसे भिखारी बच्चे मिलते हैं जो एक पैसे के लिए एक-एक फर्लांग तांगों के पीछे दौड़ते चले जाते हैं। पापा, ऐसे लोगों के बीच मैं मोटर में बैठकर कैसे जाऊँ ?"

5. अन्याय और अत्याचार की विरोधी––मिस होम्स एक अंग्रेज की पुत्री होकर भी अंग्रेजी शासन की आलोचना करती है क्योंकि वह अन्याय, अत्याचार और शोषण की कुत्सित भावनाओं पर आधारित है। वह अपने पिता से कहती है कि "हमने उनकी जिन्दगी छीन ली है। उन्हें डरपोक और नामर्द बना दिया है। अमन और कानून की हिफाजत के नाम पर, तहजीब और तालीम के बहाने उनकी नसों में मौत का पानी भर दिया है। हमने धीरे-धीरे जहर देकर मौत के घाट पर पहुँचाया है।" और––"हमनें इस देश के धन्धे छीन लिए, तालीम ने लोगों को धन्धे करने की आदत छुड़ा दी, वे नौकरियों के लिए दर-दर घूमने लगे, अब हम

उन्हें भी चाहे जैसे नाच नचाते है। मुगलों ने इस देश को सिर्फ फतह किया था, मारा नहीं था, हमने इसे फतह नहीं किया, वरन् मार डाला।"

6. इतिहास-बोध--मिस होम्स इतिहास की छात्रा है। वह भारत में मुसलमानों और अंग्रेजों के शासन के अन्तर को भली प्रकार समझती है। मुगलों ने इस देश को केवल फतह किया था, मारा नहीं था, जबकि अंग्रेजों ने इसे मार दिया। भारतीयों से उनके रोजगार छीन लिए और उन्हें दाने-दाने के लिए मोहताज कर दिया। उसे अंग्रेज इतिहास और अंग्रेज जाति की स्वतन्त्रता प्रियता का भी बोध है। वह जानती है कि अंग्रेजी कौम ने आजादी के लिए अपने बादशाह का सर कलम करने को भी बुरा नहीं माना। इस प्रकार इसे इतिहास का अच्छा ज्ञान है और इसी आधार पर वह अंग्रेजों के अन्याय व अत्याचार के विरोध में खड़ी होती है।

निष्कर्ष--मिस होम्स की उपर्युक्त चारित्रिक विशेषताओं के प्रकाश में कहा जा सकता है कि वह एक आदर्श और अनुकरणीय पात्र है। आज हमारे देश में जबकि विघटनकारी और अलगाववादी ताकतें देश में तोड़-फोड़ और आतंक का वातावरण बनाने में संलग्न है, मिस होम्स जैसे समर्पित चरित्रों की बहुत अधिक आवश्यकता है। श्री हरिकृष्ण प्रेमी ने अपने इस एकांकी में एक अंग्रेज युवती के जिस त्याग, बलिदान, देश प्रेम, राष्ट्र प्रेम, मातृभूमि प्रेम, अन्याय-विरोध की तत्परता, संवेदनशील और सहृदयता का चित्रण किया है, वह एक अद्भूत अनुकरणीय आदर्श है। अपने इन्हीं गुणों के कारण मिस होम्स भारतीय साहित्य की एक अमर पात्र के रूप में सदैव स्मरण की जाती रहेगी।

प्रश्न 31. 'मैं भी मानव हूँ' एकांकी का प्रमुख पात्र कौन है? उसका चरित्र चित्रण कीजिये।

अथवा

'मैं भी मानव हूँ' एकांकी की कथावस्तु के प्रकाश में अशोक की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये।

उत्तर—श्री विष्णु प्रभाकर की कृति 'मैं भी मानव हूँ' एक चरित्र प्रधान एकांकी है। इस नाटक के सभी पात्र अत्यन्त सजीव, ओजस्वी और बोल-चाल में निपुण है। इसमें कुल पांच पुरुष पात्र हैं—सम्राट अशोक, कलिंग कुमार, महामात्य राधागुप्त, महेन्द्र और भिक्षु उपगुप्त जिनमें सम्राट अशोक निस्सन्देह इस एकांकी का प्रमुख पात्र हैं। कलिंग युद्ध के व्यापक विनाश को देखकर उसका हृदय दहल जाता है। उसकी आत्मा कांप उठती है। ऐसे में कलिंग कुमार की ओजस्वी और निर्भीक वाणी सम्राट के हृदय को पूरी तरह झकझोर देती है। वह आत्म-चिन्तन

ो प्रेरित होता है । संघमित्रा और भिक्षु उपगुप्त उसे करुणा और मानवता की ओर ले जाने में सहायक होते हैं और वह युद्धों को सदैव के लिए त्याग देता है । प्रस्तुत एकांकी में अशोक का हृदय परिवर्तन मनोवैज्ञानिक आधार पर किया है । पुरुष पात्रों में कलिंग कुमार को छोड़कर किसी अन्य पात्र का व्यक्तित्व उसकी समता नहीं कर पाता, पर अधिकारी कथा का नायक और फल का भोक्ता होने के कारण वही इस एकांकी का नायक और प्रमुख पात्र है ।

सम्राट अशोक का चरित्र-चित्रण--सम्राट अशोक के चरित्र के दो रूप इतिहास की अमिट रेखाएँ बन गये हैं । एक रूप में वह हमारे समक्ष अपने चण्डाशोक नाम को सार्थक करता हुआ प्रचण्ड शक्ति, क्रूर कर्मी, अहंकारी, रक्त पिपासु, महत्वाकांक्षी और साम्राज्य विस्तारवादी व्यक्ति के रूप में आता है और दूसरे रूप में अत्यन्त करुण, सहृदय मानव, संवेदनशील, धर्मपरायण और त्याग, सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति दृष्टिगोचर होता है । उसके व्यक्तित्व में परिवर्तन का प्रमुख कारण कलिंग का युद्ध है । कलिंग युद्ध के महाविनाश को देखकर उसकी आत्मा कांप उठती है। कलिंग कुमार का निर्भीक व्यक्तित्व और स्पष्टवादिता उसे अपने कर्म पर विचार को प्रेरित करते हैं । उसकी निर्मल बुद्धि, विशाल हृदयता और वाणी के ओज का प्रभाव उस पर पड़ता है और उसके व्यक्तित्व का ऐतिहासिक परिवर्तन होता है । श्री विष्णु प्रभाकर ने इतिहास प्रसिद्ध अशोक महान् को इस एकांकी का नायक बनाया है और उसके हृदय परिवर्तन का प्रभावशाली चित्रण करना ही इस एकांकी का उद्देश्य रहा है। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं--

(1) **चिन्तन और उद्विग्न**--सम्राट अशोक एक चक्रवर्ती समाट थे । उनके पास धन, वैभव और शक्ति की कोई कमी नहीं थी, फिर भी इस एकांकी के आरम्भ में वे अपने युद्ध शिविर में चिन्तित से दिखाई देते हैं । जरा-सी आहट पर वे चौंक पड़ते है । उन्हें बार-बार ऐसा आभास होता है जैसे कोई आया है । वे स्वगत कथन करते हुए कहते हैं-"कौन ? कोई नहीं, यहां तो कोई नहीं । शायद यह मेरी पग ध्वनि ही थी । मैं समझा कोई सैनिक है ।" वह संघमित्रा से युद्ध के समाचार जानकर उद्विग्न हो उठता है और पूछता है—"संघमित्रा ! युद्ध में इतने आदमी मरते क्यों हैं ? युद्ध होते क्यों है ?" वह उपगुप्त से बातचीत करते हुए भी उद्विग्न सा हो उठता है। सारे एकांकी में अशोक पर चिन्ता और उद्विग्नता के भाव छाये रहते हैं ।

(2) **वीर और तलवार का धनी**--सम्राट अशोक अत्यन्त वीर और तलवार के धनी है । वे तलवार को ही शौर्य का प्रतीक समझते हैं । यद्यपि इस

एकांकी में उनके शौर्य को प्रकट करने वाले स्थल अधिक नहीं है किन्तु जितने भी हैं उनसे उनकी वीरता पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

(3) **महत्वाकांक्षी**—सम्राट अशोक के चरित्र की तीसरी विशेषता उनका महत्वाकांक्षी होना है। बचपन से ही उनकी महत्वाकांक्षा भारत सम्राट बनने की थी। इसी से प्रेरित होकर वे मगध के सिंहासन के लिए अपने भाई की हत्या करते हैं और फिर इसी खूनी तलवार से समस्त उत्तर भारत को रक्त रंजित करते हुए वे दक्षिण की ओर बढ़कर कलिंग पर आक्रमण करते हैं। कलिंग की विजय उनकी महत्वाकांक्षा का ही एक अंग थी, परन्तु उनकी यह कामना पूरी नहीं हो पाई। वे जीत कर भी हार गये। भिक्षु उपगुप्त का कथन—किसी को पराजित करने की भावना ही सबसे बड़ी दुर्बलता है उनके मन को भीतर तक छू जाता है और वे युद्धों का सदैव के लिए त्याग कर देते हैं।

(4) **आत्म-चिंतक**—सम्राट अशोक आत्म-चिंतक भी हैं। वे प्रत्येक घटना और प्रत्येक व्यक्ति से हुई बातचीत पर एकान्त में विचार करते हैं। युद्ध की समाप्ति पर वे सोचते हैं—इस युद्ध में एक लाख आदमी तो मरे ही होंगे। युद्ध में आदमी मरा ही करते हैं। इस युद्ध में अधिक मरे हैं। कलिंग का दर्प जो चूर्ण करना था। चूर हो गया। ठीक हुआ। ठीक हुआ न ? हाँ, ठीक हुआ।" आत्म-चिन्तक स्वभाव के कारण ही वे संघमित्रा और कलिंग कुमार से बातचीत के बाद अशोक को अपनी अवीरमय शक्ति सम्पन्नता में भी कहीं निर्बलता के चिह्न नजर आने लगते हैं। वे स्वयं विचार करते हुए कहते हैं—

"मैं एक बन्दी का सिर नहीं झुका सका, एक बन्दी का। मैं जिसके इंगित पर लक्ष लक्ष सिर पैरों को चूमते हैं, जिसकी भृकुटी पर काल कांप उठता है, जिसकी क्रोध ज्वाला में विश्व भस्म हो जाता है, वह एक सिर नहीं झुका सका। क्या मैं सचमुच इतना निर्बल हूँ ?"

(5) **स्वतन्त्रचेता**—अशोक अपने निर्णय स्वयं लेता है। इसमें वह किसी के परामर्श को कोई महत्व नहीं देता। जब राधागुप्त उससे कहता है कि देवी संघमित्रा कुमार की प्रशंसक है और उन्होंने कहा है कि कुमार के साथ वही व्यवहार किया जाय जो कि एक वीर पुरुष के साथ किया जाता है। महामात्य का उक्त कथन सुनकर अशोक ने जो उत्तर दिया वह उसके स्वतन्त्रचेता होने की विशेषता को उजागर करता है। वह कहता है—"महामात्य ! हमें देवि संघमित्रा के परामर्श की आवश्यकता नहीं है। हम जानते हैं कि कब क्या करना होगा। कुमार हमारा शत्रु है, और संघमित्रा जानती है कि शत्रु के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। तुम बन्दी को उपस्थित करो, हम उसकी बात सुनेंगे।"

इसी प्रकार जब वह कलिंग कुमार की मृत्यु के आदेश को वापस लेना चाहता है तब महामात्य राधागुप्त उसे शासन की मर्यादा कहकर रोकना चाहता है। उस समय अशोक कहता है—"इस मर्यादा का अर्थ क्या है ? क्या इसका यही अर्थ है कि हम अपने ही आदेश के बन्दी हो ? नहीं, मैं इस आदेश को स्वीकार नहीं करता।"

(6) **मिथ्या अहंकारी**–अशोक के चरित्र में एक दुर्बलता भी है। उसे अपने बल, पराक्रम और शक्ति का मिथ्या अहंकार है। उत्तरी भारत को रक्त रंजित करने के बाद उसका अहंकार और भी बढ़ जाता है। वह अपने को अजय समझने लगता है। अपना विरोध उसे सहन नहीं होता। वह किसी का परामर्श अपने इसी अहंकारी व्यक्तित्व के कारण स्वीकार नहीं करता। जब कलिंग कुमार उससे कहता है कि खोपडी को ठुकराने के लिए तो अनेक गीदड श्मशान में घूमा करते हैं, लेकिन वह वीर पुरुषों का मार्ग नहीं है तो उसके अहंकार को ठेस लगती है और वह कहता है-"कैसे विचित्र हैं कलिंग के लोग ! कितने असभ्य पर कितने साहसी ! जैसे-जैसे मृत्यु पास आती है वैसे-वैसे मन और दृढ़ होता है। भय को जैसे ये लोग पहचानते ही नहीं। (हँसता है) लेकिन अशोक को किसने जीता है ? अशोक के क्रोध से कौन बचा है ? कौन नहीं जानता अशोक के बल पराक्रम को ?"

(7) **गतिशील व्यक्तित्व**—लेकिन अशोक के इस अहंकारी स्वभाव में परिवर्तन होता है। वह समझ जाता है कि शौर्य तलवार में नहीं, हृदय की उदारता और विशालता में रहता है। उसें युद्धों से नफरत होती है और वह उनका सदैव के लिए त्याग कर देता है। वह स्वीकार कर लेता है कि जब तक व्यक्ति अपने लिए जीता है तब तक वह बन्दी ही रहता है। वह शस्त्र बल के स्थान पर हृदय के बल पर मानव पर शासन करने का संकल्प लेता है। इस प्रकार इस एकांकी में उसके गतिशील चरित्र का मार्मिक अंकन किया गया है।

(8 **करुणायुक्त मानवीय चरित्र**—अशोक के परिवर्तित व्यक्तित्व में हमें करुणा और मानवता के दर्शन होते हैं। संघमित्रा, कलिंग कुमार और भिक्षु उपगुप्त उसके व्यक्तित्व परिवर्तन में सहयोगी बनते हैं। उसकी अहंकार भरी रात का अवसान होता है और मानवता का एक नया सूर्य उदय होता है। जिसमें सबके लिए करुणा और प्यार है। एकांकी के अन्त में वह भिक्षु उपगुप्त से जो कथन कहता है वह उसकी करुणायुक्त मानवता का सजीव प्रमाण है। वह कहता है—

"रह-रह कर कलिंग कुमार की बातें मुझे याद आ रही है। रह-रहकर रण भूमि का चित्र मेरे नयनों में उभर आता है, चीत्कार का संगीत मेरे कानों में

गूँज उठता है। मैं अब गीदड़ बनकर श्मशान में खोपड़ी नहीं ठुकराना चाहता। मैं भी मानव बनकर मानव को जीतना चाहता हूँ। कलिंग कुमार को बताना चाहता हूँ कि 'मैं भी मानव हूँ।'

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'मैं भी मानव हूँ' एकांकी का प्रमुख पात्र अशोक गतिशील है। उसके चरित्र का स्वाभाविक विकास होता है। वह क्रूरता से सदाशयता, कठोरता से कोमलता, हिंसा से अहिंसा, अमानवता से मानवता और सम्राट से एक सामान्य मानव की ओर अग्रसर होता है। उसने अपने गतिशील चरित्र से यह स्पष्ट कर दिया है कि वह एक क्रूर शासक ही नहीं वरन् करुण मानव भी है। उसके हृदय में भी करुणा और मानवता का स्रोत प्रवाहित होता है। उसके चरित्र की ये विशेषताएँ पाठक के हृदय को बाँध लेती है।

प्रश्न 32. श्री लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'बसन्त ऋतु का नाटक' की एकांकी कला की दृष्टि से समीक्षा कीजिये।

उत्तर—'बसन्त ऋतु का नाटक' श्री लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा रचित एक नवीन टेकनीक से लिखा एकांकी है। इसमें एक युवक और युवती के प्रेम विवाह को वर्णित किया गया है। विवाह से सम्बन्धित वर्तमान समस्याओं को उठाकर लेखक ने दहेज प्रथा पर तीखा व्यंग्य किया है। डॉ. लाल हिन्दी रंगमंच से भली प्रकार जुडे हैं। अभिनेयता उनकी एकांकियों का प्राण होती है। रंगमंच संकेत और अभिनय संकेत इस एकांकी को सबल बनाने में योग देते हैं। एकांकी के तत्वों पर समीक्षा करने पर यह पूर्णतः सफल है।

(1) **कथावस्तु**—प्रस्तुत एकांकी की कथावस्तु सामाजिक है। लेखक ने मध्यवर्गीय परिवारों की विडम्बनापूर्ण स्थितियों पर अच्छा प्रकाश डाला है। परम्परागत विवाह से हटकर विवाह की एक अन्य पद्धति भी है और वह है, प्रेम विवाह। लडकी के विवाह से पूर्व पिता घर को किस प्रकार से देखता-परखता है। उसका इसमें कलात्मक चित्रण है। इसमें एक आदमी अपनी आँखों देखी सत्य घटना को सुनाता है। युवक धर्मेन्द्र युवती बासन्ती से प्रेम करता है। दोनों विवाह करना चाहते हैं, लेकिन लड़की के पिता जो कि एक जज है, अपने से छोटी हैसियत वाले के साथ बेटी के विवाह के लिए सहमत नहीं होते। अवसर मिलने पर वे धर्मेन्द्र को अवारा, गुण्डा, बदमाश कहकर धमकाते रहते है। उन्हें धर्मेन्द्र का घर पर आना-जाना भी पसन्द नहीं है, क्योंकि वह छोटी नौकरी पर है। समय बीतता है और धर्मेन्द्र डिप्टी कलेक्टर बन जाता है। जज साहब जो कि बासन्ती का हाथ पीला नहीं कर पाये थे, वे अपने मित्र और धर्मेन्द्र के पिता से पार्क में मिलकर विवाह की योजना बनाते हैं। योजना सफल होती है और उन दोनों का विवाह हो जाता है।

एकांकी के अन्त में लेखक धर्मेन्द्र के पिता से यह भी कहता है कि मेरे लाड़ले बेटे ने विवाह के लिए ना-ना करके कैसा नाटक रचा ? यदि वह नाटक नहीं करता तो मेरे बेटे और बासन्ती की शादी न हो पाती। यदि होती तो ब्याह में एक पैसा भी नहीं मिलता, क्योंकि यह प्रेम विवाह था। अन्त में वह सभी दर्शकों को खुशी-खुशी अपने घर जाने की बात कहकर विदा देता है।

(ii) **पात्र और चरित्र चित्रण**--इस एकांकी के पात्रों में नाम का अभाव है। लेखक ने वह आदमी, युवक के पिता, युवती के पिता और युवक कहकर परिचय देता है। एकांकी के अन्त में पात्रों का परिचय मिलता है। युवक धमेन्द्र है। उसके पिता श्री दीन बन्धु शुक्ला है। जज साहब यशोधानन्द वाजपेयी है और युवती बासन्ती है। युवक में आज के शिक्षित युवक के से सभी गुण है वह इतना चतुर है कि प्रेम विवाह करने के साथ ही साथ कंजूस ससुर से दस हजार रु. व एक नयी कार दहेज में ले लेता है। वह स्पष्ट वक्ता है। लेकिन उसकी यह स्पष्ट-वादिता व शादी से इन्कार करना आदि दहेज लेने के लिए है। युवक के पिता यथार्थ व सजीव पात्र है। है जी ! उनका तकिया कलाम है। इस प्रकार इस एकांकी के पात्र हमारे आस-पास के है। उनकी संख्या सीमित हैं। एकाँकीकार ने उनके नाम को महत्व न देकर एकाँकी के क्षेत्र में एक नया प्रयोग किया है।

3. **रचना शिल्प संवाद एवं भाषा शैली**--डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल कुशल रंग शिल्पी है। उन्होंने इस एकाँकी को एक नवीन तकनीक देने की कोशिश की है। सम्पूर्ण एकाँकी की घटनाएं एक ही स्थल पर घटित होती है और इसमें नाम को महत्व न देकर व्यक्ति को महत्व दिया है।

प्रस्तुत एकाँकी के कथोपकथन सरल, संक्षिप्त, पात्रानुकूल, भाषानुकूल व कथावस्तु को गति देते हैं। एकाँकी की चरम सीमा पर वे एक संवाद को उदाहरण रुप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

युवक—मुझे यह शादी मंजूर नहीं।

युवती के पिता--आखिर क्यों ?

युवक--मैं कोई सौदा नहीं हूँ, जो इस तरह कहीं खरीदा व बेचा जाऊँ।

युवक के पिता—धमेन्द्र तुझे क्या होश हवास नहीं ?

युवक—खूब होश है मुझे ! जहां व्यक्ति का मूल्य नहीं, उसकी भावनाओं की इज्जत नहीं, वहां इस शादी का कोई मूल्य नहीं।

युवती के पिता—ऐसा मत कहो बेटा। मैं तुमसे हाथ जोड़ता हूँ।

प्रस्तुत एकांकी की भाषा सरल, सुबोध और प्रवाहपूर्ण है। उसमें शिक्षित वर्ग की खिचड़ी भाषा का प्रयोग किया गया है। शैली नवीन है। पर प्राचीन

परम्परा से जुड़ी हुई है। उसमें हास्य व व्यंग्य का समन्वय भी है और भावना तथा विचारों को उत्तेजित करने की प्रेरणा भी।

4. संकलन-त्रय—संकलन-त्रय का आशय स्थान, समय एवं कार्य की एकता है। इस एकांकी का स्थान इलाहाबाद का मशहूर अल्फ्रेड पार्क है। समय संध्या का है और कार्य की परिणति उसी स्थल पर होती है। इस प्रकार इस एकांकी में सकलन-त्रय का समुचित निर्वाह हुआ है। इससे एकांकी की कलात्मकता एवं प्रभावशीलता में वृद्धि हुई है। इससे एकांकी की कथा-वस्तु में एकाग्रता और कसावट का समावेश हुआ है।

5. रंग निर्देश व अभिनेयता—प्रस्तुत एकांकी की सबसे बड़ी विशेषता उसकी रंगमंचीय सफलता है। इसमें जो रंग निर्देश, रंग संकेत, पात्रों की वेशभूषा और कार्य व्यापार के संकेत दिये गये है। वे अभिनय को दिशा निर्देश देकर सरल बनाते है। इस नाटक को इन्हीं रंगमंचीय संकेतों के कारण मंच पर प्रस्तुत करना सहज हो गया है। संकलन-त्रय की एकता ने इसकी प्रभावशीलता में वृद्धि की है।

6. उद्देश्य—प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी और तथा-कथित शिक्षित वर्ग के आडम्बर से पूर्ण जीवन एवं खोखले व्यवहार पर तीखा प्रहार करना है। नाटककार आज की जीवन समस्याओं जैसे दहेज, प्रेम विवाह आदि के माध्यम से वर्तमान समाज में उभरते हुए पीढ़ियों का सघर्ष व उसके स्वरुप को भी चित्रित करता है। लड़की के पिता की बेचारगी और परम्पराबद्ध संकीर्ण सोच को भी दर्शाना एकांकीकार का उद्देश्य रहा है।

निष्कर्ष--उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि बसन्त ऋतु का नाटक डॉ. लाल की एक नवीनतम कृति है। जिसने विवाह, दहेज, प्रेम विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं को लेखक ने अपने व्यंग्य का माध्यम बनाया है। पात्रों की दृष्टि से इसमें नया प्रयोग है। लेखक ने नामों को महत्व न देकर व्यक्तियों को महत्व दिया है। संकलन-त्रय की एकता, कथावस्तु की संक्षिप्तता, पात्रों की अल्पता, संवादों की लघुता, रंगमंच संकेतों की व्यावहारिकता ने इस एकांकी को अभिनेयता की दृष्टि से पूर्ण सफल बनाया है। एकांकी कला की कसौटी पर कसने से यह कंचन के समान खरा उतरता है।

छन्द और अलंकार

प्रश्न 33. छन्द की परिभाषा दीजिये और उसके अंगों का विवेचन ...।

उत्तर—छन्द शब्द की व्युत्पत्ति 'छद्' धातु से हुई है। 'छद्' का अर्थ ...ादित करना, प्रसन्न करना अथवा बांधना है। छन्द में भी मात्रा, गति, ...आदि को इस प्रकार बांधकर रखा जाता है कि हृदय प्रसन्न हो जाता है।

श्रव्य काव्य के मुख्य रूप से दो भेद हैं—गद्य और पद्य (कविता)। गद्य में ...रण के नियमों के अलावा अन्य कोई नियम नहीं होता परन्तु कविता की ...ा के लिए अक्षर, मात्रा, यति, गति और लय इत्यादि के विशेष नियम होते ... कहना चाहिये कि उन विशेष नियमों से बंधकर जो पद्य रचना होती हैं, उसे ... कहते हैं।

'छन्द प्रभाकर' में छन्द की परिभाषा इस प्रकार दी गई है—

"मत, वरण, गति, यति, नियम, अन्तहि समता बंद।
जा पद रचना में मिलें, भानु भनत सुइ छन्द॥"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि—

'जो रचना नियत मात्रा या वर्ण, गति, यति, विराम और चरण सम्बन्धी ...मों के अनुसार होती हैं, उसे छन्द कहते हैं।'

काव्य में छन्दों का महत्व—काव्य में छन्दों का वही महत्व है जो कि मानव ...वन में प्रेम का होता है। जिस प्रकार जीवन प्रेम का उदय या आगमन होने ... वह अधिक सरस और मधुर लगने लगता है वैसे ही काव्य में छन्दों के प्रयोग ...जीवता और मधुरता आ जाती है। कविता संगीतमय और कर्णप्रिय हो जाती ... भावों के बिखराव में एक सूत्रता आती है और वे अधिक आकर्षक और प्रभाव-...ी हो जाते है। ऐसी रचना को स्मरण करना सरल होता है और उनकी ...ति चिरकाल तक बनी रहती है।

आजकल की नई कविता में प्रायः छन्दों की उपेक्षा की जाती है। नया ... काव्य के लिए छन्द को आवश्यक नहीं मानता, फिर भी उसके काव्य में गति, ... और लय का पूरा ध्यान रखा जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ... काव्य के अनिवार्य नहीं तो आवश्यक अंग अवश्य हैं। अभिव्यक्ति को सुन्द-...ता का रूप देते हैं।

छन्द के अंग—छन्द की परिभाषा और काव्य में उनके महत्व को जान... के बाद छन्द के अंगों से परिचित होना भी आवश्यक है। छन्द की भाषा में ... मात्रा, वर्ण, गति, यति, लय, विराम आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है, वे ...

छन्द के अंग हैं। इनका ज्ञान छन्द को समझने में सहयोगी रहता है। प्रमुख अंगों का विवेचन इस प्रकार है—

1. **मात्रा**—छन्द के उच्चारण में जो समय लगता है, उसे मात्रा क अर्थात् उच्चारण काल का नाम ही मात्रा है।

मात्रा के दो प्रकार होते हैं—(i) लघु (ह्रस्व) और (ii) गुरु (दीर्घ) करते समय लघु की एक मात्रा तथा गुरु की दो मात्राएँ मानी जाती हैं शास्त्र में लघु मात्रा का चिह्न एक खड़ी पाई (।) और गुरु मात्रा का निशा वक्र रेखा (S) माना जाता है। मात्रा की गणना करते समय अ, इ, उ, चार स्वर तथा इन स्वरों के मेल से बने व्यंजन जैसे–क, कि, कु, कृ, ह अतः इनकी मात्रा लघु होती है।

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ स्वर और इनकी मात्रा से बनने वाले जैसे का, की, कू, के को, कौ दीर्घ हैं। अतः इनकी मात्रा गुरु होती है।

2. **वर्ण**—वर्ण भी दो प्रकार के होते हैं। लघु (ह्रस्व) और गुरु (द मात्राएँ गिनते समय लघु की एक व गुरु की दो मात्राएँ गिनी जाती है। वर्ण चाहें लघु होयें या गुरु। एक ही गिना जाता है। जैसे—

। । । S । । S । । S । S

'दिवस का अवसान समीप था' यदि हम इसकी मात्राएँ गिने तो 16 हैं परन्तु वर्ण 12 ही हैं। इससे स्पष्ट है कि वर्ण चाहे लघु हो अथवा गुरु ए गिना जाता है।

3. **गण**—तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं। लघु-गुरु मात्रा अनुसार गण आठ प्रकार के होते हैं–यगण (। S S), मगण (S S S), तगण (S रगण (S । S), जगण (। S ।), भगण (S । ।), नगण (। । ।) और सगण (।

4. **गति**—छन्द में एक विशेष प्रकार का प्रवाह अथवा बहाव हो जिससे काव्य को पढ़ते समय परम आनन्द प्राप्त होता है। इसी प्रवाह या को छन्द शास्त्र में लय या गति कहते हैं। गति छन्द का प्राण है। इसके ट होने पर गति भंग दोष माना जाता है।

5. **यति** (विराम)—छन्द को पढ़ते समय चरण के अन्त में अथवा कहीं बीच में भी आवश्यकतानुसार रुकना या ठहरना पड़ता है। इसी रुकने रुने अथवा विश्राम को यति या विश्राम कहते हैं। यथास्थान, यति का ध्य रखने से यति भंग दोष आ जाता है।

6. **चरण**—छन्द में प्रायः चार चरण होते हैं। इन्हें पद या पाद भी हैं। कुछ छन्द ऐसे भी है, जिनमें होते तो चार ही चरण है, किन्तु उन्हें पंक्तियों में लिखा जाता है। जैसे—दोहा, सोरठा, बरवै आदि। ऐसे छन्

पंक्ति को दल कहते हैं। कवित्त आठ पंक्तियों में लिखा जाता है, परन्तु उसमें चार चरण होते हैं। किसी-किसी छन्द में जैसे छप्पय, कुंडलिया में छः चरण होते हैं। पर ऐसे छन्द वास्तव में दो-दो छन्दों को मिलाकर बनाये जाते हैं।

निष्कर्ष—काव्य रचना में छन्दों का महत्वपूर्ण स्थान है। नियत मात्रा या गति, यति, विराम और चरण सम्बन्धित नियमों से बनी रचना ही छन्द होती है। इसके अंगों को जानकर छन्द को समझना सरल हो जाता है।

प्रश्न 34. छन्द के प्रमुख प्रकारों का सोदाहरण विवेचन कीजिये।

उत्तर—छन्द कविता का अनिवार्य अंग है। इसके मुख्य रूप से दो भेद हैं। (i) मात्रिक छन्द और (ii) वर्णिक छन्द।

(i) **मात्रिक छन्द**—जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है कि इस छन्द में मात्रा का ध्यान दिया जाता है। मात्रिक छन्द के चरणों का गठन मात्राओं की संख्या पर निर्भर करता है। उसमें वर्णों के गणों का कोई महत्त्व नहीं होता।

(ii) **वर्णिक छन्द**—जिन छन्दों की रचना वर्णों की गणना के आधार पर की जाती है। उन्हें वर्णिक छन्द कहते हैं। वर्णिक छन्द में वर्णों की संख्या एवं लघु गुरु का क्रम नियत होता है।

मात्रिक व वर्णिक छन्दों के भेद—

मात्रिक व वर्णिक छन्दों में प्रत्येक के तीन-तीन भेद होते हैं—(i) सम (ii) अर्द्ध सम और (iii) विसम।

सम—जिन छन्दों के चारों छन्दों में समान मात्राएं या वर्ण होते हैं, उसे सम छन्द कहते हैं। जैसे—सम मात्रिक छन्द और सम वर्णिक छन्द।

अर्द्ध सम—जिस छन्द के पहले और तीसरे और दूसरे तथा चौथे चरणों में गणना की दृष्टि से मात्राएं या वर्ण बराबर हों, उसे अर्द्ध सम छन्द कहते हैं। अर्थात् जहाँ मात्राओं की अर्द्ध समानता होते हैं, उसे मात्रिक अर्द्ध सम छन्द और जहाँ वर्णों की अर्द्ध सम समानता होती है उसे वर्णिक अर्द्ध सम छन्द कहते हैं।

विषम छन्द—जिस छन्द के चरण एक-दूसरे से मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या एवं क्रम के अनुसार असमान हो, उसे विषम छन्द कहते हैं।

प्रश्न 35 निम्नलिखित छन्दों की परिभाषा देते हुए उपयुक्त उदाहरण दीजिये—

(i) दोहा (ii) चौपाई (iii) हरिगीतिका (iv) गीतिका (v) रोला (vi) उल्लाला (vii) मालिनी (viii) छप्पय (ix) द्रुतविलम्बित (x) बसन्ततिलका (xi) शिखरणी (xii) सवैया (मनका) और (xiii) कुण्डलियाँ।

उत्तर—(i) **दोहा**—यह मात्रिक अर्द्ध सम छन्द है। इसके पहले और तीसरे (विषम) चरणों में 13-13 मात्राएं तथा दूसरे तथा चौथे सम चरणों में

11–11 मात्राएँ होती है और अन्त में तुक मिलती है। इस छन्द में कुल कर 48 मात्राएँ होती है। इसके पहले और तीसरे चरण के आदि में (। ऽ ।) नहीं होना चाहिए। जैसे—

। ।। ।ऽ ऽ ।। ।ऽ ऽ ।। ।ऽ ऽऽ

जु कुछ किया सो तुम किया, मैं कछु किया नाहि। (13+11 मा

कहो कही जो मैं किया, तुम ही थे मुझ माहि॥

(ii) **चौपाई**—यह मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण मात्राएँ होती हैं और चरण के अन्त में प्रायः दो लघु या दो गुरु होते हैं। पहले और दूसरे तथा तीसरे और चौथे चरण में तुक मिलती है। जैसे—

ऽ।। ऽ। ।ऽ।। ऽऽ

केवट राम रजायसु पावा। (16 मात्राएँ)

पानि कठवता भर लेइ आवा॥

अति आनन्द उमगि अनुरागा।

चरण सरोज पखारन लागा॥

(iii) **हरि गीतिका**—यह मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण मात्राएँ होती हैं तथा 16–12 पर यति होती है। अन्त में लघु-गुरु का क्रम है और चरणान्त में पहले की दूसरे से तथा तीसरे की चौथे चरण से तुक है। उदाहरणार्थ—

ऽ ऽ। ऽ।। ।ऽऽ ऽ ऽ। ।।ऽ ऽ ।ऽ

क्या लाभ है उन डिग्रियों को, कण्ठ करने से भला। = 28 मा

रटते हुए जिनको हमारा, बैठ जाता है गला॥

हा! स्वेद बनकर व्यर्थ ही, बहता हमारा रक्त है।

सन्-सवतों के फेर में, बरबाद होता वक्त है॥

(iv) **गीतिका**—यह मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण मात्राएँ होती है तथा 14–12 मात्राओं पर यति होती है। अन्त में लघु-गु क्रम होता है और तुक मिलती है यथा—

ऽ ।ऽ ऽऽ। ऽऽ ऽ। ।।ऽ ऽ।ऽ

हे प्रभो! आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिये। = 26 मात्रा

शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिये॥

लीजिये हमको शरण में, हम सदाचारी बने।

ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बने॥

(v) **रोला**—यह मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण मे 24 मा होती हैं तथा 11 और 13 पर यति होती है। इसके चरणान्त मे पहले की से व तीसरे की चौथे से तुक मिलती है। यथा—

S I I   S S   S I   S I S   S   S I I   S
राघव बोले देख, जानकी के आनन्द को। 11+13=24
स्वर्गंगा का कमल, मिला कैसे कानन को॥ मात्राएँ
नील मधुप को देख, वहीं उस कंज कली ने।
स्वयं समागम किया कहा यह जनक लली ने॥

(vi) उल्लाला—यह मात्रिक अर्द्ध सम छन्द है। इस छन्द के पहले और (विषम) चरणों में 15-15 मात्राएँ होती हैं और दूसरे तथा चौथे (सम) में 13-13 मात्राएँ होती है। सम चरणों के अन्त में तुक मिलती है। भी दोहे और सोरठे की भाँति दो पंक्तियों में लिखा जाता है। यथा—

I I   S S S S   S I   I I   I I S   S S   S I S
हम खेले-कूदे हर्ष युत, जिसकी प्यारी गोद में। 15+13
हे मातृभूमि तुमको निरख मग्न क्यों न हों मोद में॥ =28 मात्राएँ

(vii) मालिनी—यह वर्णिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में दो न (I I I, I I I), एक म गण (S S S) और दो यगण (I S S, I S S) होते है। मिलाकर इस छन्द में 15 वर्ण होते हैं और 8वें वर्ण पर यति होती है।

स्मरण सूत्र—न न म य य लगा के. मलिनी मंजु गाओ।

चरण   न   न   म   य   य = 15 वर्ण
I I I   I I I   S S S   I S S   I S S

प्रिय पति वह मेरा, प्राण प्यारा कहाँ है?
दुख जल निधि में डूबी, का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका आज, लौं जी सकी हूँ।
वह हृदय हमारा, नयन तारा कहाँ है?"

(viii) छप्पय—यह विषम मात्रिक छन्द है। इसमें छः चरण होते हैं, चार रोला के (11-13 की यति से 24 मात्राएँ) तथा अन्तिम दो चरण उल्लाला के (15-13 को यति से 28 मात्राएँ) होते हैं।

रोला के पद चार रख, उल्लाला पद दोय।
कहते कविगण है सदा, होता छप्पय सोय॥

अर्थात् रोला+उल्लाला=छप्पय।

उदाहरण—

जिसकी रज में लोट, लोट कर बड़े हुए हैं।
घुटनों के बल सरक, सरक कर खड़े हुए हैं॥
परम हँस सम बाल्यकाल में सब सुख पाये।
जिसके कारण धूल भरे, हीरे कहलाये॥ } रोला

हम खेले-कूदे हर्ष युत, जिसकी प्यारी गोद में ।।
हे मातृभूमि, तुमको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में ।। } उ

(ix) द्रुतविलम्बित—यह वर्णिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक च
न, म, भ और र गण के क्रम से 12 वर्ण होते हैं।

न	भ	भ	र	
।।।	S।।	S।।	S।S	= 12 वर्ण

दिवस का अवसान समीप था।
गगन था कुछ लोहित हो चला ।।
तरुशिखा पर थी अब राजती।
कमलिनी कुल वल्लभ की विभा ।।

(x) बसन्त तिलका—यह वर्णिक समछन्द है। इसके प्रत्येक चरण
(SS।), भ (S।।), ज (।S।), ज (।S।) तथा अन्त में दो गुरु (SS) के य
14 वर्ण होते हैं। यथा—

त	भ	ज	ज		
SS।	S।।	।S।	।S।	+SS	= 14 वर्ण

यों ही प्रबोध करते पुरवासियों का।
नाना कथा परम शान्तिकरी सुनाते ।।
आये ब्रजाधिप निकेतन पास ऊधो।
पूरा प्रसार करती करुणा जहाँ थी ।।

(xi) शिखरणी–यह वर्णिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमश
य गण, एक म गण, एक न गण, एक स गण, एक भ गण तथा लघु एवं गुरु
से 17 वर्ण होते हैं। यथा—

य	म	न	स	भ		
।SS	SSS	।।।	।।S	S।।	+।S	= 17 वर्ण

अनूठी आभा से सरस सुषमा से सुरस से।
बना जो देती थी बहुगुणमयी भू-विपिन को ।।
निराले फूलों की विविध दल वाली अनुपमा।
जड़ी-बूटी नाना बहुफलवती थी विलसती ।।

(xii) सवैया (मनका)—सवैया के प्रत्येक चरण में 22 से 26 वर्ण
हैं। इसके अनेक भेद हैं, जैसे–मदिरा, चकोर, मत्तगयन्द, मानिनी, भुजंग, ल
दुर्मिल, अमार, मोतियादाम, किरोट आदि। इनका सबसे प्रसिद्ध भेद मत्त

मनका सवैया का नाम, लक्षण और उदाहरण कहीं देखने को नहीं मिला। ता है कि पाठ्यक्रम में दिया गया सवैया छापे की गलती से कुछ का कुछ या हो। यहाँ हम मत्तगयन्द का उदाहरण दे रहे हैं।

मत्तगयन्द—यह वर्णिक समछन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 23 वर्ण होते में सात भ गण (ऽ।।) और चरण के अन्त में दो गुरु होते हैं। चारों के अन्त में तुक मिलती है। इसे मालती अथवा इन्द्रव भी कहते हैं। यह रीतिकाल के कवियों को बहुत ही प्रिय रहा है। यथा—

> या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
> आठहु सिद्धि नवो निधि को सुख, नन्द की गाय चराय बिसारो ॥
> आंखिन सों रसखान कबौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
> कोटिक हौं कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौं ॥

(xiii) **कुण्डलियां**—यह विषम मात्रिक छन्द है। इसमें छः चरण होते हैं। पहले दो चरण दोहे के और अन्तिम चार चरण रोला के होते हैं। इसके क चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। इसकी विशेषता यह है कि जिस शब्द से आरम्भ होता है, उसी शब्द से उसका अन्त भी होता है। साथ ही दोहे का तम चरण रोला के आदि में ज्यों का त्यों रखा जाता है। यथा—

> साईं अवसर के पड़े, को न सहे दुख द्वन्द्व।
> जाय बिकाने डोम घर, वै राजा हरिचन्द ॥ } दोहा
> वै राजा हरिचन्द, करैं मरघट रखवारी।
> धरे तपस्वी भेष, फिरे अर्जुन बलधारी ॥
> कह गिरधर कवि राय, तपै वह भीम रसोई।
> को न करै घाटि काम, परे अवसर के साईं ॥ } रोला

स्पष्टीकरण—दोहा + रोला = कुण्डलियां।

प्रथम चरण का आरम्भ और अन्तिम चरण का अन्त एक जैसा।

दूसरे चरण का अन्त और तीसरे चरण का आरम्भ एक जैसा।

प्रश्न 36. अलकार से आप क्या समझते हैं? कविता में उसका क्या न है? उसके कितने भेद होते हैं? वर्णन कीजिये।

उत्तर—मनुष्य सौन्दर्य प्रिय प्राणी है। वह अपनी प्रत्येक वस्तु को सुन्दर सुन्दरतम देखना चाहता है। यहां तक कि जो भी वस्तु उसके सम्पर्क में आती उसे वह सुन्दर बनाने का प्रयास करता है। शरीर का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए आभूषण धारण करता है और भाषा की शोभा बढ़ाने के लिए अलंकार का योग करता है। अलकार काव्य के शोभाकारक धर्म हैं। काव्य के कमनीय लवर को सुन्दर बनाने के लिए ही काव्य में उनका प्रयोग किया जाता है।

अलंकार का अर्थ और परिभाषा—अलकार शब्द दो शब्दों से मि बना है—अलम् और कार। अलम् का अर्थ है भूषण, गहना और कार का है—करने वाला। अर्थात् जो साधन काव्य के शरीर को सजाए, भूषित अलंकृत करे उसे अलंकार कहते हैं।

विभिन्न विद्वानों ने अलंकार की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। जि तात्पर्य इतना ही है कि काव्य के शरीर को सजाने के लिए जो आभूषण काम लाये जाते हैं, उन्हें अलंकार कहते हैं,

आचार्य दण्डी ने अपने 'काव्यादर्श' में लिखा है—

"काव्यशोभाकरान् धर्मालंकारान् प्रचक्षते।"

अर्थात् काव्य के शोभाकारक धर्मों को ही अलंकार कहते हैं। शब्द अर्थ काव्य के शरीर है। अतः शब्द और अर्थ के सौन्दर्य की विभूति को बढ़ाने धर्म ही अलंकार है।"

काव्य में अलंकारों का महत्त्व (स्थान)—काव्य में अलंकारों का वही स्थ है जो एक स्त्री के लिए आभूषणों का होता है। जिस प्रकार एक स्वस्थ सुन्दर युवती आभूषणों से और भी सुन्दर लगती है उसी प्रकार कविता भी अ कारों की सहायता से खिल उठता है। उसमें एक विशेष रमणीयता और चमत् उत्पन्न हो जाता है, परन्तु जैसे आवश्यकता से अधिक आभूषण पहिनने से न का स्वाभाविक सौन्दर्य ढक जाता है, उसी प्रकार काव्य में आवश्यकता से अ अलंकारों का प्रयोग करने से उसका सहज सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। सन्देह नहीं कि अलंकार काव्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं; परन्तु यह विशि उसी समय तक है जबकि अलंकार स्वाभाविक हों और आवश्यकतानुसार ही उन काव्य में प्रयोग किया गया हो।

काव्य में अलंकारों के महत्त्व को लेकर विद्वानों की प्रायः भि मान्यताएँ रही हैं। अलंकारवादी आचार्य अलंकार को काव्य का प्राण मानते उनके विचार में अलंकारों से रहित काव्य विधवा स्त्री के समान है। 'अग्निपुरा में कहा गया है कि जो विद्वान् काव्य को अलंकारों से रहित मानते हैं वे अग्नि उष्णता से रहित क्यों नहीं मानते। भाव यह है कि यदि अग्नि के लिए उष्ण अनिवार्य धर्म है तो काव्य के लिए अलंकार भी अनिवार्य है। 'रामचन्द्रिका' रचनाकार महाकवि केशव ने लिखा था—'भूषण बिन न विराजहिं, कवि वनीता मित्त।'

विद्वानों का दूसरा वर्ग काव्य में अलंकारों का प्रयोग सीमित मात्रा करने का पक्षधर है। उनका मानना है कि जिस काव्य में स्वाभाविक सौन्दर्य उसे अलंकारों की क्या आवश्यकता है—'भूषण भार सँभारिहै क्यों

...कुमार ।' यदि आभूषणों से रहित नारी को नारी कहा जा सकता है तो कविता ... अलंकारों से रहित हो सकती है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अलंकार काव्य के शोभाकारक धर्म है । ...तः काव्य में उनका प्रयोग उसी सीमा तक होना चाहिये, जहाँ तक वे उसकी ...न्दरता में वृद्धि करते हों। उनका प्रयोग भावानुकूल और स्वाभाविक हो । संक्षेप ... वे काव्य के लिए आवश्यक तो है, पर अनिवार्य नहीं ।

अलंकारों के भेद—मुख्य रूप से अलंकारों के दो भेद हैं—

(1) शब्दालंकार और (2) अर्थालंकार ।

1. शब्दालंकार—शब्दालंकार वे है जो शब्दों द्वारा ही काव्य की शोभा बढ़ाते है । अर्थात् जहाँ शब्दों में चमत्कार पाया जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है ।

उपर्युक्त से तात्पर्य है कि जहां शब्द विशेष के स्थान पर दूसरे शब्द के प्रयोग के कारण चमत्कार नष्ट हो जाए किन्तु उसी शब्द के रहने पर चमत्कार बना रहे । अर्थात् जहाँ केवल शब्दों में ही अनूठापन हो और प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर उनके पर्यायवाची शब्दों के रखने पर वह अनूठापन अथवा चमत्कार जाता रहे । यथा—

तरनि-तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाये ।'

यहां यदि तरनि-तनुजा शब्द के स्थान पर उसका पर्यायवाची शब्द सूर्य-दुहिता या यमुना रख दिया जाय तो इसका अर्थ तो वही रहेगा परन्तु आलंकारिक सौन्दर्य लुप्त हो जायगा ।

2. अर्थालंकार—काव्य में जहां शब्दों के अर्थ द्वारा ही चमत्कार उत्पन्न होता है और उनके पर्यायवाची शब्द रखने पर भी अर्थ की रमणीयता नष्ट नहीं होती, वहां अर्थालंकार होता है । जैसे—

'चरन-सरोज पखारन लागा ।'

अब यहां यदि सरोज के स्थान पर उसके पर्याय कमल, अरविन्द, सरसिज पद्म आदि में से कोई एक रख दिया जाय तो उसमें निहित रूपक अलंकार ज्यों का त्यों ही बना रहता है । अर्थालंकार में सौन्दर्य शब्द में होकर उसके अर्थ में होता है । अतः समानार्थी शब्द के रखने पर भी अलंकार नष्ट नहीं होता ।

प्रश्न 37. निम्नांकित अलंकारों की सोदाहरण परिभाषा दीजिये—

(1) अनुप्रास, (2) श्लेष, (3) यमक, (4) उपमा, (5) रूपक, (6) उत्प्रेक्षा, (7) दीपक, (8) विभावना, (9) विरोधाभास, (10) व्यतिरेक, (11) सन्देह, (12) भ्रान्तिमान, (13) अपन्हुति, (14) प्रतीप, (15) दृष्टान्त, (16) निदर्शना, (17) मानवीकरण, (18) विशेषण विपर्यय ।

उत्तर—(1) अनुप्रास—जहां रस के अनुकूल वर्णों अथवा शब्दों की आवृत्ति एक से अधिक बार हो, वहां अनुप्रास अलंकार होता है। अनुप्रास का शाब्दिक अर्थ ही बार-बार रखना है। इस अलंकार में एक या एक से अधिक वर्णों अथवा शब्दों का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है जिससे कि कविता में एक विशेष प्रकार का चमत्कार उत्पन्न हो जाय। यथा—

(i) तरनि-तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।

(ii) घन-घन वै घरती रा जाया।

(iii) पहरे पर पार्थ प्रवर होंगे।

(2) श्लेष—जहां किसी शब्द का एक ही बार प्रयोग होने पर उसके दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हों, वहां श्लेष अलकार होता है। श्लेष का अर्थ है—चिपका हुआ। अर्थात् जहां एक ही शब्द में एक से अधिक अर्थ चिपके हुए होते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। यथा—

जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत के सोइ।
बारे उजियारो करै, बढ़े अंधेरो होय।।

यहां पर बारे और बढ़े शब्दों का प्रयोग एक बार हुआ है परन्तु उनके दो-दो अर्थ हैं। बारे (बचपन में, जलाने पर), बढ़े (बड़ा होने पर, बुझने पर) अत: यहां श्लेष अलंकार है।

अन्य उदाहरण—(i) पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुष चून।
(ii) सुवरण को ढूँढत फिरै, कवि कामी अरु चोर।।

(3) यमक—जहां किसी शब्द या शब्दांश का बार-बार, भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग होता है, वहां यमक अलकार होता है। यथा—

कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वह खाये बौरात जग, इहि पाये बौराय।।

यहां पर पहले 'कनक' का अर्थ धतूरा और दूसरे 'कनक' का अर्थ सोना है। एक ही शब्द का दो बार दो भिन्न अर्थों में प्रयोग के कारण यहां यमक अलंकार है।

अन्य उदाहरण—(i) सूर-सूर तुलसी शशि उडगन केशवदास।
(ii) तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती है।।

(4) उपमा—उपमा का अर्थ है—तुलना। जब किसी वस्तु का वर्णन करके उससे अधिक प्रसिद्ध किसी वस्तु से उसकी तुलना की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। यह तुलना विशेष गुण, रूप, रंग, क्रिया या स्वभाव की होती है। जैसे—

सीताजी का मुख कमल के समान सुन्दर है।

इसमें सीताजी के मुख की तुलना कमल से की गई है। अतः यहां उपमालंकार है।

उपमा के अंग–उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं—

(1) उपमेय (2) उपमान (3) वाचक और (4) साधारण धर्म।

1. **उपमेय**–जिसकी तुलना किसी प्रसिद्ध वस्तु से की जाय। जैसे–उपर्युक्त उदाहरण मे सीताजी का मुख उपमेय है।

2. **उपमान**-वह प्रसिद्ध वस्तु जिससे तुलना की जाय। जैसे—उपर्युक्त उदाहरण मे कमल।

3. **वाचक**—वे शब्द जो समानता को बतायें। जैसे–समान, सो, से, सी, इव, तुल, लौं, सदृश, ज्यों, जैसे, इमि, सरिस, जिमि आदि।

4. **साधारण धर्म**–वह गुण अथवा विशेषता जो उपमेय और उपमान में समान रूप से पाई जाती है। जैसे उपर्युक्त उदाहरण में सुन्दर।

अन्य उदाहरण—(i) राम में सुत ऐसे बसे, जैसे जल मीना रे।
(ii) बाबहियउ नइ विरहणी, दुहुवाँ एक सहाव।
जब ही बरसइ घण घणउ, तबह कहइ प्रीआव ॥

5 **रूपक**–रूपक शब्द का अर्थ है–रूप धारण करना। जब उपमेय उपमान का रूप धारण कर लेता है और दोनों अभेद हो जाते हैं, वहां रूपक अलंकार होता है। यथा–

सीताजी का मुख कमल है।

यहां पर मुख उपमेय पर कमल उपमान का अभेद रूप से आरोप किया गया है। अतः रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण—(i) ज्ञान-दीप परकास करि, भीतर भवन जराय।
तहाँ सुमिर सतनाम को, सहज समाधि लगाय ॥
(ii) अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोई।

6 **उत्प्रेक्षा**–जहां उपमेय में उपमान की सम्भावना या कल्पना की जाय, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उत्प्रेक्षा में उपमेय, उपमान के समान नहीं होता, फिर भी यह मान लिया जाता है कि वह उपमान के समान ही है। यथा–

सीताजी का मुख मानो कमल है।

अन्य उदाहरण—(i) सुनि सुमंत्रु सिय शीतल बानी।
भयउ विकल जनु फनि मनि हानी ॥

(ii) जनु नेनिहार न नेहि जिउ, हरहिं नरमहिं ताहि।
एसनै बाल आव मुख, करै तराहि-तराहि॥

(7) **दीपक**—जहाँ प्रस्तुत (उपमेय) और अप्रस्तुत (उपमान) का एक ही धर्म कथन हो, वहाँ दीपक अलंकार होता है। यथा—

देखे ते मन ना भरै, तन की मिटै न भूख।
बिन चाखे रस ना मिलै, आम, कामिनी ऊख॥

यहाँ कामिनी, आम और ऊख का—बिन चाखे रस ना मिले एक ही धर्म कथन होने से दीपक अलकार है।

(8) **विभावना**—जहाँ कारण के अभाव में कार्य के होने का वर्णन हो, वहाँ विभावना अलंकार होता है। यथा—

साखि इन नैनन ते धन हारे।
बिनु ही रितु बरसत निसि-वासर सदा मलिन दोउ तारे॥

यहाँ कारण बिनु ही ऋतु के निसि-वासर बरसने का कार्य कथन होने से विभावना अलंकार है।

(9) **विरोधाभास**—जहाँ वास्तव में विरोध न होने पर भी विरोध का आभास होता हो, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है। यथा—

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यों-ज्यों बूड़ै श्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जवल होय॥

(10) **व्यतिरेक**—जहाँ उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ बताया जाय, वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है। यथा—

चन्द्र नहीं कर सकता क्षण भी, प्रिया वदन की समता।
चन्द्र प्रकाशित होता निशि में, यह दिन-रात विकसता॥
चन्द्र कलंकी जग में विश्रुत, विरहिणी को दुखकारी।
निःकलंक मम प्रिया वदन, मृदु बोलनि में सुखकारी॥

यहाँ उपमान (चन्द्रमा) से उपमेय (मुख) के उत्कर्ष का कथन होने से व्यतिरेक अलंकार है।

(11) **सन्देह**—जहाँ रूप-रंग आदि की सादृश्यता के कारण एक वस्तु में अनेक वस्तुओं के होने का संशय बना रहे, पर निश्चय एक का भी न हो, वहाँ सन्देह अलंकार होता है। यथा—

'यह पण्डित है या मूर्ख।'

यहाँ पण्डित और मूर्ख दो विरोधी विषय हैं। निश्चय न होने से दोनों में बराबर बल है। यह और वह का संशय बना हुआ है। अतः यहाँ सन्देह अलंकार है।

...र उदाहरण—(i) नारी बीच सारी है, कि सारी बीच नारी है।
कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही की सारी है॥
(ii) कि तुम तीन देव मह कोउ। नर-नारायण कि तुम दोऊ॥

(12) भ्रान्तिमान-रूप, रंग, कर्म आदि की समानता के कारण जहाँ उपमेय ...पमान का भ्रम हो जाय, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है। इसमें सादृश्य के ...ण जो वस्तु नहीं है, उसका निश्चय हो जाता है और इस निश्चय के कारण एक चीज को दूसरी चीज समझ लेते हैं। यथा—

समुझि तुम्हीं घनश्याम हरि, नाच उठे वन मोर।

यहाँ मोरों को श्रीकृष्ण के श्याम रंग के कारण बादलों का भ्रम हो गया, फलतः वे उन्हें बादल समझकर नाच उठे।

अन्य उदाहरण—नाक का मोती अधर की कान्ति से,
बीज दाडिम का समझकर भ्रान्ति से।
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है अन्य शुक यह कौन है?

(13) अपन्हुति—अपन्हुति का अर्थ है—छिपाना। उसमें किसी सत्य बात ...ो छिपाकर असत्य बात की स्थापना की जाती है। यथा—

'वह मनुष्य नहीं देवता है।'

इसमें मनुष्य सत्य को छिपाकर देवता का आरोप किया गया है।

(14) प्रतीप—प्रतीप का अर्थ है—विपरीत। इसमें या तो उपमान को ...पमेय बनाया जाता है या उसका उपमेय के द्वारा निरादर कराया जाता है।

यथा— निज रूप का तू व्यर्थ हो, अभिमान करती मानिनी।
लक्ष्मी, उमादिक विश्व में, तुझसी बहुत अनुरागिनी॥

अन्य उदाहरण—(i) सिय मुख समता पाव किमि, चन्द्र बापुरो रंक।
(ii) मुख से सदन होता प्रकाशित, काम क्या है चन्द्रमा का।

(15) दृष्टान्त—जहाँ उपमेय, उपमान और साधारण धर्म का बिम्ब-प्रति...बिम्ब भाव प्रदर्शित किया जाय, तथा वाचक शब्द का उल्लेख न हो, वहाँ दृष्टान्त ...लंकार होता है। यथा—

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी-आवत जात तें, सिल पर परत निसान॥

अन्य उदाहरण—मनुष जन्म दुर्लभ अहै, होय न दूजी बार।
पक्का फल जो गिर परा, बहुरी न लागै डार।

(16) निदर्शना—जहाँ उपमेय और उपमान वाक्यों के अर्थ में भेद ...ाते

हुए भी दोनों का एक-दूसरे में इस प्रकार आरोप किया जाय कि वे एक मे पड़े, वहाँ निदर्शना अलंकार होता है। यथा—

कहाँ अल्प मेरि मति, कहाँ काव्य मत गूढ़।
सिन्धु तरग लघु नाव सों, चाहत हो मति मूढ़॥

(17) **मानवीकरण**—जड़ वस्तुओं, प्रकृति के दृश्यों तथा मानव अनुभूति को एक व्यक्तित्व प्रदान करना मानवीकरण है। अर्थात् जहाँ मानवी भावों और क्रिया-कलापों का आरोप प्रकृति पर किया जाय, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। यह छायावादी काव्य शैली का प्रिय अलंकार है। यथा—

बीती विभावरी जाग री,
अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा घट ऊषा नागरी।

अन्य उदाहरण–दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही
यह संध्या सुन्दरी परी-सी
धीरे - धीरे - धीरे।

(18) **विशेषण-विपर्यय**—शैली में चमत्कार उत्पन्न करने के लिए विशेषण का स्थानान्तरित प्रयोग विशेषण विपर्यय अलंकार है। जो विशेषण जिस विशेष्य के साथ जुड़ना चाहिए उसका अन्य पद के साथ प्रयोग करके यह चमत्कार उत्पन्न किया जाता है। विशेषण विपर्यय के प्रयोग में शब्द की लक्षणा शक्ति सदैव प्रयुक्त होती है यथा—

"अभिलाषाओं की करवट,
फिर सुप्त व्यथा का जगना
सुख का सपना बन जाना
गीली पलकों का लगना।"

हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न 38. हिन्दी साहित्य के इतिहास का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसके काल विभाजन पर प्रकाश डालिये।

उत्तर–हिन्दी भाषा का उद्भव आज से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व अपभ्रंश से हुआ था। इसकी अनेक उपभाषाएं भी है जिन्होंने इसके साहित्य भण्डार में निरन्तर वृद्धि की है। इन उपभाषाओं में ब्रज, अवधी, राजस्थानी, गुजराती, खड़ी बोली और मैथिली प्रमुख हैं। इन सभी भाषाओं के साहित्य को हिन्दी का साहित्य माना जाता है। जैसे—सूरदास, नन्ददास, कृष्णदास, परमानन्द दास आदि

...ाषा में साहित्य लिखा; तुलसी और अन्य रामभक्त कवियों तथा जायसी, ..., कुतुबन आदि सूफी कवियों ने अवधी में, मीरां, चन्द्र बरदायी, सूर्यमल ...ण आदि ने राजस्थानी में और विद्यापति ने मैथिली भाषा में साहित्य रचना ... फिर भी ये सब कवि हिन्दी के कवि माने जाते हैं और इनकी रचनाओं को ... साहित्य में सम्माननीय स्थान दिया जाता है।

पिछले एक हजार वर्षों से हिन्दी का निरन्तर विकास होता रहा है। ... सितम्बर, 1949 वह ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दिवस है जब हिन्दी को ...ट्रभाषा और देवनागरी को राष्ट्रलिपि स्वीकृत किया गया। आज हिन्दी करोड़ों ...रतीयों का कण्ठहार है। वह भारत की संस्कृति की वाहक और उसकी संर-...का है। विश्व की 2796 भाषाओं में इसे ही वैज्ञानिक भाषा के रूप में मान्यता ...ली है। हिन्दी आज देश की सीमाओं को पार कर अन्तर्राष्ट्रीय जनमानस के ...दय को आह्लादित कर रही है। इसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने का गौरव ...प्त हो चुका है। इसके तीन-तीन विश्व सम्मेलन की सफलतापूर्वक आयोजित ...ये जा चुके हैं। हिन्दी का वर्तमान सुखद और सुन्दर है तथा इसका भविष्य ...ज्जवल है।

हिन्दी की पावनता और महत्ता का उल्लेख मारीशस के कवि ने इन शब्दों ... किया है—

"हिन्दी है देवों की वाणी,
परम पुरातन सुखद सुहानी।
हिन्दी उतनी ही पावन है
जितना मां गंगा का पानी।"

हिन्दी साहित्य के इतिहास की परम्परा—हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन ...ा प्रथम प्रयास करने का श्रेय फ्रेंच विद्वान **गार्सा द तासी** को है, जिन्होंने फ्रेंच ...ाषा में 'इस्त्वार द लॉ लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी' नामक ग्रन्थ का प्रथम भाग ...839 में लिखा। इस परम्परा को आगे बढ़ाया **शिवसिंह सेंगर** ने जिनका साहि-...त्य इतिहास 1883 में 'शिवसिंह सरोज' नाम से प्रकाशित हुआ। 1888 में अंग्रेज ...विद्वान् **जार्ज ग्रियर्सन**, 1913 में मिश्र बन्धुओं तथा 1929 में आचार्य रामचन्द्र ...शुक्ल द्वारा लिखित इतिहास ग्रन्थ प्रकाशित हुए। आचार्य शुक्ल से पूर्व के इति-...हास लेखकों ने अपने ग्रन्थ में हिन्दी कवियों की रचनाओं का संकलन मात्र किया ...था, परन्तु उसे व्यवस्थित करके उसका काल विभाजन नहीं किया था।

काल विभाजन—हिन्दी साहित्य को व्यवस्थित करके उसे इतिहास का ...स्वरूप देने का श्रेय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को है। उन्होंने ही पहली बार इसका

काल विभाजन भी किया। आचार्य शुक्ल द्वारा किया हुआ काल विभाजन निम्न नुसार है—

1. आदिकाल (वीरगाथा काल) सम्वत् 1050 से 1375 वि.
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) सम्वत् 1375 से 1700 वि.
3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) सम्वत् 1700 से 1900 वि.
4. आधुनिक काल (गद्यकाल) सम्वत् 1900 से अब तक।

आचार्य शुक्ल द्वारा किया गया यह विभाजन हिन्दी साहित्य की एक ऐ लक्ष्मण रेखा है जिसे पार करने का साहस परवर्ती किसी भी साहित्यकार ने न किया है। हां कालों के नाम अथवा उसमें निवेचित कुछ रचनाओं में हेर-फेर अतिरिक्त अन्य कोई परिवर्तन नहीं हो सका है।

आचार्य शुक्ल के बाद बाबू गुलाबराय ने–'हिन्दी साहित्य का सुबोध इति हास', आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने–'हिन्दी साहित्य की भूमिका', डॉ. रा कुमार वर्मा ने 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' डॉ. धीरेन्द्र वर्मा 'हिन्दी साहित्य', डॉ. नगेन्द्र ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', डॉ. गणपति चन गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' और अनेकानेक अन्य विद्वानों साहित्य के इतिहास ग्रन्थ लिखे हैं। उपर्युक्त सभी विद्वानों को न्यूनाधिक रूप आचार्य शुक्ल द्वारा किया गया काल विभाजन स्वीकार है। वस्तुतः यही प्रमाणि काल विभाजन भी है।

प्रश्न 39. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के प्रमुख ग्रन्थों का संक्षिप्त परि चय दीजिये।

उत्तर–हिन्दी साहित्य का आदिकाल अपनी रचनाओं, रचनाओं की प्राम णिकता, काल विभाजन और नामकरण के सम्बन्ध में विवादास्पद हो रहा है। य हिन्दी साहित्य का आदिकाल था, अतः इसके सम्बन्ध में इस तरह के प्रश्न उठना स्वाभाविक ही था। अनेक विद्वान इस काल में सिद्धों जैनाचार्यों, नाथों औ चारण कवियों द्वारा सृजित साहित्य को सम्मिलित करते हैं। आचार्य शुक्ल सिद्धों, नाथों और जैनाचार्यों के साहित्य को धार्मिक साहित्य बताकर उसे साहि त्य के इतिहास में सम्मिलित नहीं किया था। यद्यपि इस धार्मिक साहित्य में अनेक रचनाएं साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय हैं, पर हमें आचार्य शुक्ल का मत ही अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

आचार्य शुक्ल ने आदिकाल को 'वीरगाथा काल' नाम दिया था और निम्नांकित रचनाओं को नामकरण का आधार माना था—

1. खुमान रासो (दलपति विजय)

2. बीसलदेव रासो (नरपति नाल्ह)
3. पृथ्वीराज रासो (चन्द वरदाई)
4. जयचन्द प्रकाश (भट्ट केदार)
5. जय मयंक जस चन्द्रिका (मधुकर कवि)
6. परमाल रासो (जगनिक)
7. खुसरो की पहेलियां (अमीर खुसरो)
8. विद्यापति की पदावली (विद्यापति)
9. विजयपाल रासो (नल्ल सिंह भट्ट)
10. हमीर रासो (शाङ्र्गधर)
11. कीर्तिलता (विद्यापति)
12. कीर्ति पताका (विद्यापति)।

इनमें से अन्तिम चार रचनाएं अपभ्रंश भाषा की है तथा चौथी और पांचवें क्रमांक की रचनाएं उपलब्ध ही नहीं है। आचार्य शुक्ल के बाद इस काल की कुछ अन्य रचनाएं जैसे–अब्दुर्रहमान कृत 'संदेश रासक' आदि प्रकाश में आई हैं। हम यहां इस काल की सभी रचनाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

आदिकालीन कवि और उनकी रचनाएं––निम्नलिखित हैं—

(1) **दलपति विजय और उनका खुमान रासो**—रासो काव्यों में सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ खुमान रासो है। इसका रचयिता दलपति विजय नामक कवि माना जाता है। इसमें चित्तौड़ के दूसरे खुमान (870–900) के युद्धों का सजीव वर्णन है। उपलब्ध प्रतियों में महाराणा प्रताप तक का विवरण मिल जाता है। अतः यह कहना कठिन है कि दलपति विजय इसके मूल ग्रन्थ का लेखक था अथवा बाद के अंश का। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इसे अठारवीं सदी की रचना मानते हैं। इस ग्रन्थ में विविध छन्दों में वीर तथा शृंगार रस का सरस एवं सजीव चित्रण है।

(2) **नरपति नाल्ह और उनका बीसलदेव रासो**— इस काव्य की रचना 1212 वि. में हुई थी। इसका रचियता नरपति नाल्ह अपने आश्रयदाता बीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) का समकालीन था। आचार्य शुक्ल ने इसे एक वीर रस प्रधान काव्य माना था, पर वस्तुतः यह एक शुद्ध शृंगारिक रचना है। इसमें राजा भोज की पुत्री राजमती का बीसलदेव से विवाह का वर्णन है। प्रथम मिलन यामिनी में ही राजा को नवविवाहिता रानी के चरित्र पर सन्देह हो गया और

वह उसे छोड़कर उड़ीसा चला गया। बारह वर्ष की इस वियोग अवधि में क
राजमती के वियोग का मार्मिक चित्रण किया है। राजा का संदेह दूर होता
वह अपने राज्य अजमेर लौटता है और उसका रानी से मिलन होता है।

(3) जगनिक और उनका परमाल रासो (आल्हा खण्ड)—इस ग्रन्थ मूलकर्त्ता जगनिक है जो महोबे के चन्देल राजा परमाल के दरबार में रहता इस ग्रन्थ में बनाफर वंश के दो वीर भाइयों आल्हा और ऊदल की 52 लड़ और अनेक विवाहों का उल्लेख हैं। यद्यपि इसमें बहुत सी भौगोलिक अशुद्धिय तथापि यह साधारण पाठकों के लिए बड़ी उत्साहपूर्ण कृति है। इसकी उत्तर भ में बहुत अधिक लोकप्रियता है। वर्षा ऋतु में मेघ गर्जना के बीच में ग्रामवासी भी आल्हा गाते और झूमते देखे जाते हैं। यह ग्रन्थ अपने मूल रूप में कैसा कहना कठिन है। इसे सर्वप्रथम चार्ल्स इलियट ने 1865 ई. में भाटों की सहा से लेख बद्ध किया था। इसका वर्तमान रूप प्राचीन गीतों के आधार पर तै किया हुआ है। इसमें वीर रस का प्रवाह फड़कता हुआ है।

(4) चन्द बरदाई और उनका पृथ्वीराज रासो—इस ग्रन्थ को हिन्द प्रथम महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त है। इस ग्रन्थ में शृंगार आधारित वीर कल्पना की उड़ान और उक्तियों की चमत्कारिता का अच्छा परिचय मिलता इस ग्रन्थ में 69 समय (अध्याय) और 16306 छन्द बताये जाते हैं। वर्तमा इसके चार संस्करण उपलब्ध है। इसके लघुत्तर रूप में केवल 1300 छन्द है

पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता को लेकर हिन्दी साहित्य में अनेक प्र की चर्चाएं होती रही है। इस ग्रन्थ में उल्लिखित अनेक घटनाएं और काल इतिहास से मेल नहीं खाते। अतः विद्वान इसे एक अप्रमाणिक रचना मानते इस दृष्टि से डॉ. नामवर सिंह का विचार अधिक व्यावहारिक है उनका कह कि हमें किसी ग्रन्थ का मूल्यांकन उसकी साहित्यिक विशेषताओं के आधा करना चाहिये न कि इतिहास के आधार पर। रासो के लघूत्तर रूप के प्राप्त के बाद उसके सम्बन्ध में उठाई गई अनेक शकाओं का अब निवारण हो गय इस ग्रन्थ में दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान के वीरतापूर्ण साहसिक कार्यों, आखेट, प्रेम, विवाह आदि का सरस चित्रण हुआ है।

5. भट्ट केदार कृत जयचन्द प्रकाश—यह ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नह इसका कुछ अंश 'राठोड़ां री ख्यात' शीर्षक ग्रन्थ में संकलित मिलता है। जाता है कि यह केदार पृथ्वीराज के मौसेरे भाई जयचन्द का दरबारी कवि इसमें जयचन्द की वीरता का बखान किया गया है।

6. मधु कवि कृत जयमयंक जस चन्द्रिका—इस ग्रन्थ का उल्ले 'राठोड़ां री ख्यात' में मिलता है। यह ग्रन्थ भी हमें प्राप्त नहीं है। इसम

के वीरतापूर्ण कार्यों का उल्लेख किया गया है, ऐसा हम 'राठौड़ां री ख्यात' में संकलित अंश के आधार पर कह सकते हैं।

7. अमीर खुसरो और उनकी पहेलियां—अमीर खुसरो का वास्तविक नाम अब्दुल हसन था। ये अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत और ब्रजभाषा के विद्वान् थे। इन्होंने कविता की 99 पुस्तकें लिखी थी। वर्तमान में इनके 20–22 ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इनके काव्य में प्रारम्भिक हिन्दी के शुद्ध रूप के दर्शन होते हैं जो आज की हिन्दी से बहुत मिलती-जुलती है। इसलिए अनेक विद्वान् इन्हें हिन्दी का प्रथम कवि मानते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई पहेलियाँ, मुकरियाँ तथा दोहे बहुत प्रसिद्ध है।

8 विद्यापति और उनके ग्रन्थ--विद्यापति द्वारा लिखी हुई तीन रचनाओं का उल्लेख आचार्य शुक्ल ने किया है--विद्यापति पदावली, कीर्तिलता और कीर्तिपताका। इसमें अन्तिम दो रचनाएँ अपभ्रंश भाषा में हैं तथा पदावली में राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं का शृंगारिक वर्णन है। यह एक शृंगार प्रधान भक्ति विषयक रचना है जो रीतिकाल की काव्य प्रवृत्ति के अधिक निकट है।

9. अब्दुर्रहमान और उनका संदेश रासक—इस ग्रन्थ का रचना काल 11वीं सदी माना जाता है। इसमें एक काल्पनिक प्रेम कथा का वर्णन है। कालीदास के 'मेघदूत' के समान इसमें भी विरह की सूक्ष्मतम धड़कने सुनी जा सकती है। इसमें तीन प्रकरण और 223 छन्द हैं। इसमें विजय नगर की एक प्रोषित पतिका नायिका के वियोग का मार्मिक और प्रभावशाली चित्रण है।

निष्कर्ष---उपर्युक्त वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वीरगाथा काल में केवल वीर रसात्मक काव्य ही नहीं लिखे गये, वरन् प्रेम, भक्ति, हास्य और जनजीवन का उल्लेख करने वाले अन्य काव्य भी लिखे गये हैं। प्रवृत्ति की विविधता के कारण आचार्य द्विवेदी ने इसे आदि काल नाम देना उचित माना है। हम भी उनके इस मत के समर्थक हैं।

प्रश्न 40. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के नामकरण पर प्रकाश डालिये।

अथवा

आदिकाल के नामकरण से सम्बन्धित विभिन्न विद्वानों के विचारों को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर---हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में इसका आदिकाल सर्वाधिक विवादास्पद रहा है। इसमें विवाद के अनेक आधार है। कभी इस काल की प्रारम्भिक सीमा रेखा के विषय में विवाद उठता है, कभी रचनाओं के विषय में और कभी रचनाओं की प्रामाणिकता के विषय में। इस काल का उपयुक्त नाम क्या हो,

यह भी विद्वानों के विवाद का विषय रहा है। नामकरण के सम्बन्ध में विविध विद्वानों के विचार यहाँ उद्धृत है।

1. **मिश्र बन्धु–आदिकाल**––आचार्य शुक्ल से पूर्व 1913 में मिश्र बन्धुओं ने 'मिश्रबन्धु विनोद' के नाम से साहित्य का इतिहास लिखा था। उन्होंने इस काल का नाम 'आदिकाल' रखा था। उन्होंने इस नामकरण का कोई ठोस आधार नहीं बताया।

2. **आचार्य शुक्ल–वीर गाथा काल**––आचार्य शुक्ल ने कतिपय ठोस आधारों के सहारे इस काल को वीरगाथा कहा है। उनके अनुसार इस काल मे प्रबन्ध परम्परा रासो के नाम से पायी जाती है, जिसे लक्ष्य करके इस काल को हमने वीरगाथा काल नाम दिया है।

3. **राहुल जी–सिद्ध सामन्त काल**––राहुल जी ने इस काल का नाम 'सिद्ध-सामन्त काल' सुझाया है। इस नाम से इस युग की समग्र साहित्यिक प्रवृत्तियों का बोध नहीं होता। अतः यह नाम अनुपयुक्त है।

4. **डॉ. रामकुमार वर्मा–सन्धिकाल व चारण काल**––डॉ. रामकुमार वर्मा ने इस काल को दो भागों में विभाजित करके उन्हें सन्धि-काल और चारण-काल नाम दिये थे। स्वयं डॉ. वर्मा ने इस काल में एक भी प्रामाणिक चारण कृति का उल्लेख नहीं किया है। यह नाम भी उपयुक्त नहीं है।

5. **आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी–बीज वपन काल**––यह नाम भी स्वीकार्य नहीं, क्योंकि इस युग का सर्जक प्रबुद्ध, आत्मचेतस् और सजग था।

6. **डॉ कमल कुलश्रेष्ठ–अंधकार काल**––इस नाम का भी कोई औचित्य नहीं है।

7. **श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी–अपभ्रंश काल**––इस नाम से काल विशेष की किसी भी प्रवृत्ति का बोध नहीं होता। अतः यह नाम भी ग्राह्य नहीं है।

8. **डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी–आदि काल**––नाम बुरा नहीं मानते।

निष्कर्ष––उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी के प्रारम्भिक काल के नामकरण के सम्बन्ध में विद्वान् एक मत नहीं है। उन्होंने अपने-अपने विचार से इसके अनेक नाम सुझाये हैं। हो सकता है कि भविष्य में कुछ और नाम भी सामने आये लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता हमें इसका आदि काल नाम ही अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

प्रश्न 41. हिन्दी साहित्य के आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिये।

अथवा

वीर गाथा काल (आदि काल) के साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइये।

उत्तर--आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का काल विभाजन करते इस काल को वीर गाथा काल नाम दिया है। लेकिन इसका यह आशय कदापि नहीं है कि इस काल में दूसरी काव्य प्रवृत्तियाँ थी ही नहीं। चूँकि 'वीर गाथा काल' नाम युग विशेष की सभी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व नहीं करता, इसीलिये विद्वानों ने इसका 'आदि काल' नाम अधिक उपयुक्त माना है। यह हिन्दी का प्रारम्भ काल है। इस युग में अपभ्रंश भाषा से हिन्दी भाषा का विकास हो रहा था। अतः इस काल के काव्यों में हमें उसका प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। विद्वानों ने इस काल का समय सम्वत् 1050 से 1375 वि. स्वीकार किया है। इस काल के काव्य में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं--

1. युद्धों का सजीव वर्णन--आदिकालीन काव्यों के अधिकांश रचयिता चारण कवि थे। वे केवल कलम पकड़ना ही नहीं जानते थे वरन् तलवार के भी धनी थे। वे स्वयं युद्ध में जाते थे और अपना पराक्रम दिखाते थे। यही कारण है कि इस काल की रचनाओं में युद्ध के सजीव चित्र मिलते हैं। उनसे तलवारों की झंकार और वीरों की उत्साह भरी वाणी के स्वर आज भी सुनाई पड़ते हैं। युद्ध कौशल और युद्ध-दृश्यों के चित्रण में ये काव्य इतने सम्पूर्ण हैं कि इस क्षेत्र में इतनी समता करने वाले अन्य काव्य दिखाई ही नहीं देते।

2. वीर और शृंगार रस का समन्वय--इस काल के युद्धों का कारण प्रायः स्त्री थी। स्त्री की पायल की झंकार के साथ-साथ वीरों की तलवारें भी झंकार करती थी। नारी के रूप के लोभ में उसे प्राप्त करके भोगने की चाह इस काल के काव्य में उपलब्ध है। फलतः नारी सौन्दर्य का नख-शिख चित्रण, विलास व वासना के अनेक चित्र इन कवियों ने मांसल दृष्टि से प्रस्तुत किये हैं। वीर और शृंगार जैसे विरोधी रसों को इन काव्यों में सम्मिलित कर इस काल के कवियों ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। इस काल के साहित्य में शृंगार पोषित वीर रस का उत्कर्ष देखने को मिलता है।

3. संकुचित राष्ट्रीयता--इस काल में राष्ट्र शब्द का अर्थ अत्यन्त संकुचित था। कवि अपने आश्रयदाता के अधीन भू-भाग को ही राष्ट्र मानता था। इस काल के अधिकांश कवि चारण थे और वे राज्याश्रय में रहते थे। उन्होंने अपने आश्रयदाता की वीरता का अतिरंजित वर्णन किया है। उनकी दृष्टि में उनका आश्रयदाता सूर्य के समान प्रतापी और महान् वीर था। ऐसा करके उन्होंने ऐतिहासिक सत्य की भी उपेक्षा कर दी है। जिस जयचन्द को इतिहास देशद्रोही कहता है उसी की प्रशंसा में भट्ट, केदार और मधुकर कवि ने जमीन-आसमान एक कर दिया है।

4. इतिहास विरुद्ध रचनाएँ--आश्रयदाता की अत्यधिक प्रशंसा करने में

इस युग के कवियों ने इतिहास की उपेक्षा की है। इन काव्यों में वर्णित घटनाएँ इतिहास से मेल नहीं खाती और वे इतिहास की कसौटी पर अप्रमाणिक सिद्ध होती हैं। पृथ्वीराज रासो जैसे काव्य की प्रमाणिकता पर प्रश्न चिह्न लगे होने का यही कारण है।

5. जन-जीवन की अभिव्यक्ति का अभाव—इस युग के कवि राज्याश्रित थे। उनकी काव्य रचना का उद्देश्य 'स्वामिन : सुखाय' था। उन्हें जनहित और जन-जीवन से कोई सरोकार न था। इसीलिए इस युग के साहित्य में तत्कालीन समाज की वस्तु-स्थिति के चित्रण का अभाव है।

6. रासो काव्य—इस युग के अधिकांश काव्यों के साथ 'रासो' शब्द जुड़ा है जो 'काव्य' का वाचक है। कुछ लोग रासो का सम्बन्ध 'रहस्य' या रसायन से जोड़ते हैं, परन्तु यह उचित नहीं। 'बीसलदेव रासो' और 'संदेश रासक' जैसे श्रृंगारी काव्यों के साथ भी 'रासो' या 'रासक' शब्द का प्रयोग उसे 'काव्य' का पर्यायवाची ही सिद्ध करता है।

7. प्रकृति-चित्रण—इस काल के कवियों के पास प्रकृति चित्रण के अनेक अवसर सुलभ थे। उन्होंने उसका लाभ भी उठाया। उनके अधिकांश वर्णन प्रकृति के आलम्बन या उद्दीपन रूप से सम्बन्धित है, स्वतन्त्र रूप से प्रकृति चित्रण का अभाव खटकता है। कहीं-कहीं प्रकृति वर्णन बहुत विस्तृत है, इतिवृत्तात्मकता के कारण ऐसे स्थलों पर नीरसता आ गई है।

8. काव्य-रूप–इस काल के काव्य में विविधता और व्यापकता का अभाव है। गद्य की कोई रचना उपलब्ध नहीं होती। काव्य में प्रबन्ध और मुक्तक दोनों ही कल्पनाएँ देखने को मिलती हैं। 'पृथ्वाराज रासो' को हिन्दी का प्रथम महा-काव्य होने का गौरव प्राप्त है। अमीर खुसरो की पहेलियाँ मुक्तक काव्य का उदा-हरण हैं। बीसलदेव रासो और संदेश रासक इस युग के सुन्दर खण्ड काव्य हैं।

9. काव्य भाषा—इस काल की काव्य भाषा मुख्यत: डिंगल है। डिंगल तत्कालीन राजस्थानी का ही नाम है। इसमें अरबी-फारसी के शब्दों के साथ-साथ अपभ्रंश भाषा के शब्द भी पाये जाते है। वस्तुत: हिन्दी साहित्य के इस प्रथम काल में भाषा का कोई रूप स्थिर नहीं हो पाया था और उसमें अनेक भाषाओं के शब्द देखने को मिल जाते हैं।

10. छन्द-अलंकार—इस काल के काव्यों में छन्दों का वैविध्य देखने को मिलता है। दोहा, सोरठा, तोटक, रोला, तोमर, गाथा, गाहा, आर्या, उल्लाला, कुण्डलियां आदि अनेक छन्द इस काल में प्रयुक्त हुए हैं। अलंकारों की दृष्टि से भी विविधता और व्यापकता है। प्राय: सादृश्य मूलक अर्थालंकारों का प्रयोग ही अधिक पाया जाता है।

निष्कर्ष—संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के आदि काल में ...प्रकार की काव्य प्रवृत्तियाँ देखने को मिल जाती हैं। युद्ध सम्बन्धी वर्णनों में ...काल बेजोड़ है। इसमें वीर और श्रृंगार रस का समन्वय देखने को मिलता ...युद्ध के जो सजीव वर्णन इस युग के काव्य में पाये जाते हैं वे वास्तविक, सार्थक, ...भाविक और प्रभावोत्पादक हैं।

प्रश्न 42. भक्तिकालीन साहित्य की सामान्य विशेषताओं का वर्णन ...जिये।

उत्तर—सम्वत् 1375 से 1700 तक का काल हिन्दी साहित्य में भक्ति ...ल के नाम से जाना जाता है। इस काल में चार प्रकार की मुख्य काव्य प्रवृ-...याँ रहीं। विपुल साहित्य लिखा गया। काव्य शैलियों की व्यापकता, अभिव्यक्ति ... मौलिकता, साहित्यिक उत्कृष्टता के कारण यह काल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण ...ा कहलाता है। भक्तिकाल में भक्ति की चार शाखाएँ या काव्य की चार प्रवृत्तियाँ ...वश्य थीं, पर उनमें कुछ समान भावनाएँ थीं, जिनके कारण ये सब एक सम्मि-...लत नाम से पुकारी जा सकती हैं। सन्त और भक्त दोनों ही प्रकार के कवियों ने ...राज्याश्रय की परवाह न की उन्होंने स्वान्तः सुखाय लिखा। कबीर ने मुसलमान ...शासकों के धर्म की पर्याप्त भर्त्सना की। जायसी ने शाहे भक्त की स्तुति अवश्य की ...किन्तु मसनवी परम्परा के पालनार्थ ही। अष्टछाप के कवियों ने 'सन्तन कहा ...सीकरी सो काम' कहकर राज्याश्रय को ठुकराया। सभी ने अपने हृदय की प्रेरणा ...से लिखा, किसी को खुश करने के लिए नहीं। कबीर को भी हिन्दू-मुसलमानों से ...द्वेष नहीं था। उनका बाह्याडम्बर से विरोध था। तुलसी तो 'सियाराम मय सब जग जानी' के मानने वाले थे। उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त निम्नांकित बातें निर्गुण और सगुण कवियों में समान थी—

1. नाम की महत्ता—सभी कवियों ने नाम को महत्त्व दिया। महात्मा कबीर नाम को सभी रसायनों में उत्तम समझते थे—'सभी रसायन हम करी नहीं नाम सम कोय'। सूफियों और कृष्ण भक्तों में कीर्तन की प्रधानता रही। सूर ने गाया—'भरोसो राम को भारी।'

तुलसी ने भी राम के नाम को राम से बड़ा माना। नाम में निर्गुण, सगुण दोनों का समन्वय हो जाता है। देखिये—

> अगुन-सगुन दुई ब्रह्म स्वरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।
> मेरे मत बड़नाम दुहूँते। किये जेहि जग निज बस निज बूते॥

2. गुरु की महत्ता—भक्तिकालीन सभी कवियों ने गुरु के महत्त्व को एक स्वर में स्वीकार किया। कबीर ने गुरु को भगवान् से प्रथम पूज्यनीय कहा है—

गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागों पाय।
बलिहारी गुरु आपनें, जिन गोविन्द दियो मिलाय॥

जायसी ने 'गुरु सूवा जिहिं पंथ दिखावा' कहकर गुरु की वन्दना की। तुलसी ने मानस के आरम्भ में 'बन्दौ गुरु पद पद्म परागा' और सूर ने 'बल्लभ नख चन्द्र छटा बिन सब जग माहिं अंधेरों' कहकर गुरु की महत्ता का उल्लेख किया है।

3. **भक्ति भावना का प्राधान्य**--चारों सम्प्रदायों में भक्ति का मान है। कबीर ने भक्ति को प्रमुखता दी--'हरि भक्ति जाने बिना बूड़ि मूआ संसार।' प्रेममार्गियों का प्रेम भक्ति का रूप है और भक्त तो भक्त हैं ही। सूरदास ने भक्ति विरोधी ज्ञान का खण्डन किया है--'भक्ति विरोधी ज्ञान तिहारो'। तुलसी ज्ञान और भक्ति में कोई भेद नहीं मानते--'ज्ञानहिं नहीं कछु भेदा, उभय हरहिं भव सम्भव खेदा।' तुलसी ने भक्ति को चिन्तामणि और ज्ञान को दीपक कहा है, जो माया की हवा से बुझ जाता है।

4. **निजी अनुभव पर विशेष बल**--सभी भक्त कवि शास्त्रों के ज्ञान की अपेक्षा निजी अनुभव पर अधिक बल देते हैं। उन्होंने साभिमान कहा था--'तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखन देखी।' तुलसी ने 'वाक्य ज्ञान' को हेय समझा। उन्होंने कहा--'वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुण भव पार न पावे कोई।' सूर की गोपियाँ भी प्रेम के अनुभवों को प्रधानता देती है।

5. **जाति भेद का अस्वीकर**—भक्तों में जातिगत भेदभाव का विचार नहीं था। कबीर ने कहा था—'ज़ाति-पांति पूछे न कोई, हरि को भजै सो हरि का होई। तुलसी सारे विश्व को 'सियाराममय' मानते थे। उनके मन में कोई भेदभाव नहीं था। उनके राम कोल, किरात, भील, वानर और असुरों तक को अपने हृदय से लगाते है। कृष्ण भक्त और सूफी कवियों में भी जातिगत विद्वेष देखने को नहीं मिलता।

6. **अहंकार का त्याग**—अहकार का त्याग भक्ति की अनिवार्य शर्त है। अहंकारी भक्त हो ही नहीं सकता—'प्रेम गली अति सांकरी, तामें दो न समाय।' अहंकार और भक्ति दोनों का एक साथ रहना कठिन है।

7. **साधु संगति की महत्ता**—सभी भक्त कवियों ने सत्संगति को महत्व दिया है। 'कबिरा संगत साधु की हरै और की व्याधि' कहकर; सूर ने 'तजौ रे मन हरि विमुखन को संग' कहकर इसका उल्लेख किया है। तुलसी का मानस तो सत्संगति की महिमा से भरा हुआ है।

निष्कर्ष--संक्षेप में भक्त कवियों की भक्ति पद्धति में अन्तर होते हुए भी उनके काव्य में कुछ समानता, विशेषताएं थी। नाम की महत्ता, गुरु की महत्ता,

गति का महत्ता, भक्ति की प्रधानता, जाति भेद का अस्वीकार, अहंकार का ... आदि भक्त कवियों की सामान्य विशेषताएं हैं, जिनका उल्लेख उनके काव्य में ... को मिलता है।

प्रश्न 43 ज्ञानाश्रयी शाखा (सन्त काव्य) के प्रमुख कवियों का परिचय ... हुए इस शाखा की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि सन्त कवि कहलाते हैं। इन कवियों ने ... के निर्गुण रूप को प्रधानता दी तथा समाज में व्याप्त बाह्याडम्बरों, अन्ध-विश्वासों और अन्ध परम्पराओं पर प्रहार कर समाज सुधार का महान् कार्य किया। इनका काव्य जाति-गत विद्वेष से परे और हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों के समन्वय का मार्ग बना। इस धारा के प्रमुख एवं प्रतिनिधि कवि कबीर थे।

सन्त कवि—सन्त काव्य में शताधिक कवि हुए। इन सभी कवियों के काव्य में अद्भुत समानता है, जिसका उल्लेख हम नीचे करेंगे। कबीर सन्तों में प्रमुख थे। कबीर के अतिरिक्त रैदास, गुरुनानक, कबीर के शिष्य धर्मदास, दादूदाल, सुन्दरदास, मलूक दास, अक्षर अनन्य, रज्जब जी, गरीब दास, निश्चल दास, जगजीवन दास, दूलन दास, यारी साहब, बुल्ला साहब, सहजो बाई, तुलसी साहब, पलटू दास आदि अनेक कवियों ने अपनी मधुर वाणी से हिन्दी साहित्य के भण्डार की श्री वृद्धि की है।

सामान्य विशेषताएं—सभी सन्तों के काव्य में समान मान्यताएं और समान प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। ये निम्नलिखित हैं—

1. **निर्गुण ईश्वर में विश्वास**—सन्तों का ईश्वर के निराकार रूप में विश्वास था। उनका ईश्वर राम होकर भी अवतार या दशरथ पुत्र नहीं था। वह एक अद्भुत अनुपम तत्त्व है। जो तिल में तेल, चकमक में आग और पुष्प में सुवास की तरह इस जग में सर्वत्र व्याप्त है। मन की एकाग्रता और पवित्र भक्ति से उस ब्रह्म को प्राप्त किया जा सकता है। वह निराकार इस सृष्टि के सभी कार्यों का कर्त्ता, सर्व सामर्थ्यवान और एक है। वह इस सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है—'लाली मेरे लाल की जित देखों तित लाल।'

2. **नाम स्मरण को महत्व**—सभी सन्त भगवान के नाम स्मरण को अत्यधिक महत्व देते हैं। स्मरण ही उनकी भक्ति का सार है और स्मरण के द्वारा ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। कबीर ने कहा है—'सभी रसायन हम करी, नहीं नाम सम कोय। रंचक घट में संचरै सब तन कंचन होय।'

3. **गुरु की महत्ता**—सन्त कवि गुरु को ईश्वर के समान महत्व देते थे। उनकी भक्ति साधना का केन्द्र गुरु ही था। वह उस कुम्हकार के समान था जो शिष्य रूपी पात्र के दोषों का निवारण कर उसे पूर्णता देता था। भक्ति में उसका

निर्देश कर साक्षात्कार की मंजिल पर पहुँचाता था। जो राम रसायन का प्याला स्वयं पीता था और अपने शिष्य को पिलाता था। कबीर ने कहा था--

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, का के लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दियो मिलाय ॥

4. आडम्बर विरोध--सन्त कवि रूढ़िवाद और मिथ्याडम्बर के विरोधी थे। उन्होंने भक्ति के मार्ग में सिर मुंडाकर संयासी बनने, भगवा पहिनने, माला फेरने, टीका तिलक लगाने, तीर्थयात्रा करने, अजान देने, बलि देने आदि की निन्दा की है और मन की पवित्रता से नाम स्मरण को महत्व दिया है। 'मन चंगा तो कटौती में गंगा' के आदर्श की पालना उनके जीवन और काव्य दोनों में देखने को मिलती है।

5. जाति-पांति का विरोध--सन्त कवि जाति-पांति, वर्ग और वर्ण भेद के विरोधी थे। वे मानव धर्म के अनुयायी थे। समानता उनका आदर्श था। भेदभाव को दूर करने में इनका स्वर बड़ा तीखा था। कबीर ने कहा था--"जाति-पांति पूछै न कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।" सन्त कवि भक्तिगत श्रेष्ठता के विरोधी थे। इसलिए उन्होंने मुल्ला-मोलवियों और ब्राह्मणों की जातिगत श्रेष्टता की मान्यता पर तीव्र प्रहार किया था। कबीर ने इन्हें फटकारते हुए कहा था--

जो तू बामन बामनी जाया, आन बाट ह्वै क्यों नहीं आया।
जो तू तुरक तुरकिनी जाया, भीतर खतना क्यों न कराया ॥

6. नारी के प्रति उपेक्षा का भाव--हिंदी साहित्य का भक्तिकाल सामाजिक दृष्टि से विलासिता का युग था। समाज में बहु-विवाह की पद्धति प्रचलित थी। नारी केवल भोग की वस्तु मानी जाती थी। अतः सन्तों ने नारी की स्थिति सुधार हेतु विरोधी मार्ग को अपनाया था। उनके काव्य में नारी की तीव्र निन्दा देखने को मिलती है। कबीर ने कहा था--

शादी तो हम भी करी, किन्हा नहीं विचार।
जब जानि तब परिहारि, नारी बड़ा विकार ॥

सन्तों के विचार से नारी साधना मार्ग की बाधा थी। उसके होते हुए भक्ति मुक्ति और ज्ञान क्षेत्र में प्रवेश करना असम्भव था--

नारी न सावै तीनूं सुख, जा नर पासै होय।
भक्ति, मुक्ति, निज ज्ञान में, पैठि सकै न कोय ॥

7. समाज सुधार की भावना--सन्तों की साधना में वैयक्तिक एकांगिता के स्थान पर सामाजिक हित की भावना अधिक थी। वे समाज की बुराइयों को निकालकर उसे शुद्ध करना चाहते थे। वे नवयुग के प्रथम सुधारक थे। उन्होंने जाति पाँति के बन्धन, छूआछूत, पाखण्ड, आडम्बर, अन्ध-विश्वास, अनाचार आदि

ों को दूर करने का प्रयास किया। वे हिन्दू और मुसलमानों का एक ही देखते थे और उन्हें समान समझते थे। उन्होंने सदाचार, मधुर व्यवहार, की पवित्रता, सन्तोष, लोभ-त्याग, अहंकार-त्याग, करुणा, दया, क्षमा आदि भावों को अपनाने पर जोर दिया। वे शील को सर्वाधिक महत्व देते थे। ने कहा था–'शीलवन्त सबसे बड़ा, सर्वगुणन की खान।

8. **अभिव्यक्ति पक्ष (भाषा-शैली) की समानता**––अधिकांश सन्त कवि क्षित थे। उन्होंने मसि कागद को छुआ भी नहीं था। फलतः उनके काव्य के व्यक्ति पक्ष में अनेक दोष पाये जाते हैं। उनकी भाषा में अनेक भाषाओं का ण है। भ्रमणकारी सन्तों की वाणी में भाषागत समन्वय का पाया जाना ाविक भी था। अतः साहित्य समीक्षकों ने उनकी भाषा को सधुक्कड़ी नाम म्बोधित किया है।

छन्द की दृष्टि से सन्तों ने साखी, दोहा, चौपाई, पद्य शैली को अपनाया। ों की सहानुभूतियां मार्मिक है। उनके काव्य में अलंकारों का स्वाभाविक रूप प्रयोग हुआ है। उनकी उपमाओं और उक्तियों में मौलिकता और सजीवता वस्तुतः इन कवियों ने अपने काव्य में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का अनुष्ठान या था।

निष्कर्ष––सन्तों ने अपनी काव्य साधना के द्वारा सामाजिक समन्वय और ाज सुधार का काम किया। हिन्दी के साहित्य भण्डार की भी वृद्धि में उनका ा अद्भुत और अनुपम है। उनके काव्य में अनेक समान विशेषताएं मिलती हैं, नका वर्णन हमने ऊपर किया है।

प्रश्न 44. प्रेमाश्रयी (सूफी) कवियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी व्यगत सामान्य विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

उत्तर–निर्गुण काव्य धारा के अन्तर्गत प्रेम की पीर को अपने काव्य का षय बनाने वाले कवि सूफी कवि कहलाते हैं। भारत में सूफी काव्य परम्परा आरम्भ होने से पूर्व सूफी मत का प्रचलन हो चुका था। सूफी कवि पीर (गुरु) अधिक महत्व देते थे। वे ईश्वर और जीव का सम्बन्ध भय का नहीं वरन् प्रेम मानते थे। उनका झुकाव सर्वेश्वरवाद की ओर था। वे संगीत के प्रेमी थे। सभी विशेषताओं के कारण वे कट्टर मुसलमानों की अपेक्षा हिन्दू धर्म के धिक निकट थे। उनमें धार्मिक संकीर्णता नहीं थी। उन्होंने अपने काव्यों की ा हिन्दू परिवारों में प्रचलित लोक कथाओं को बनाया और सांसारिक प्रेम के ध्यम से ईश्वरीय प्रेम को प्राप्त करने का प्रयास किया। सभी सूफी कवि सलमान थे और उन्होंने अवधी भाषा में, दोहा-चौपाई शैली में अपने प्रबन्ध काव्य े हैं। सूफी कवियों में मलिक मुहम्मद जायसी प्रमुख हैं।

प्रमुख सूफी कवि और उनके काव्य—सूफी काव्य परम्परा का प्रथम ग्र 'चन्दायन' माना जाता है जिसकी रचना सन् 1379 में मुल्ला दाऊद ने की थ इस परम्परा का दूसरा काव्य कुतुबन कृत 'मृगावती' (रचना काल 1512), जायसी का पद्मावत (1540) को परम्परा का तीसरा और प्रतिनिधि काव्य मंझन की मधुमालती (1545) चौथा ग्रन्थ है। 'माधवनल कामद कन्दल (1584), उसमान कृत चित्रावली (1613), पुहकर कवि कृत 'रस र (1618), शेख नबी की 'ज्ञानदीप' (1619), जान कवि कृत रत्नावली म मंजरी, कनकावती, कँवलावती आदि 29 प्रेमाख्यान इस परम्परा की प्रसि रचनाएँ हैं।

सामान्य विशेषताएं—सूफी कवि प्रेम के उपासक थे। प्रेम का अत्य पवित्र रूप इनके काव्यों में मिलता है। इस काव्य परम्परा की निम्नलिखि सामान्य विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती है।

1. मसनवी काव्य शैली—इस परम्परा के सभी काव्य प्रबन्ध काव्य है औ वे मसनवी शैली में लिखे गये हैं। इनमे ईश्वर वन्दना, पैगम्बर की स्तुति, शा बल की प्रशंसा, कथा का सर्गों में विभाजित न होना, पूरे काव्य मे एक ही छन का प्रयोग आदि विशेषताएँ पाई जाती है।

2. हिन्दू परिवारों में प्रचलित कथाओं का ग्रहण—सूफी कवियों ने अप मत का प्रचार करने के लिए हिन्दू परिवारों मे प्रचलित प्रेम कथाओं को अप काव्य की विषय सामग्री बनाया। उनकी सभी कथाएँ भारतीय इतिहास, पुरा अथवा लोक कथाओं से विकसित की गई है।

3. प्रबन्ध कल्पना—सूफियों ने लौकिक प्रेम कहानियों को आधार ब करके उनमें प्रेम तत्व का निरूपण किया है। उन्होंने प्रबन्ध की क्रमबद्धता क बनाये रखने के लिए कथा में आवश्यक परिवर्तन भी किये हैं। प्रेम मार्ग की कठि नाइयों के निरूपण में प्रायः सभी कवियों ने काव्य रूढ़ियों का पालन किया है इस दृष्टि से उनमे मौलिकता का अभाव है। ये सभी काव्य प्रबन्ध काव्य हैं।

4. हिन्दू जीवन का चित्रण—सूफी कवियों मे धार्मिक कट्टरता नहीं थी उन्होंने भारतीय परिवारों मे प्रचलित प्रेम कथाओं को अपने काव्य का आधा बनाया था। फलतः इनके काव्य में लोक जीवन में व्याप्त विश्वासों, अन्ध-विश्वासो त्योहार, तीर्थ, व्रत, महापुरुषों के नाम तथा जलकट आदि की व्यापक भाक है। इनमें हिन्दू जीवन और हिन्दू संस्कृति के चोखे सम्मत सरस चित्र है।

5. प्रेम का व्यापक चित्रण—सूफी कवि प्रेम की पीर के गायक थे। इन काव्यों में निरूपित प्रेम भावना उच्च कोटि की और व्यापक है। प्रेम दोनों ही पक्षों संयोग और वियोग को इन काव्य में समुचित स्थान मिला है, प

...योग पक्ष को प्रधानता दी है। वियोग की अग्नि में तपकर ही प्रेम कंचन के ...मान शुद्ध हो पाता है। संयोग पक्ष में अश्लीलता और माँसल सौन्दर्य का ...र्णन है।

6. समन्वयात्मकता–निर्गुण सन्तों ने खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति से हिन्दू, ...सममानों तथा समाज के विविध घटकों में तनाव भर दिया था। सूफी कवियों ने ...ण्डन का पथ न अपनाकर सृजन का मार्ग अपनाया। उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों की ...ात्विक एकता का प्रचार किया जिससे हिन्दू-मुसलमानों के बीच द्वेष भाव कम ...हुआ और वे एक-दूसरे के अधिक निकट आ गये।

7. नारी को महत्वपूर्ण स्थान–सूफी काव्यों में नारी उस नूर की तरह है, जिसके बिना यह संसार सूना है। नारी उनको प्रेम साधना का परम साध्य है। वह लौकिक भोज की वस्तु नहीं, परम् सिद्धि है। परमात्मा का स्वरूप है और ब्रह्मानन्द की प्राप्ति में सहायक है। इन काव्यों में नारी के स्वकीय रूप को ही ग्रहण किया गया है, जो भारतीय मान्यताओं के अनुरूप है।

8 श्रृंगार रस प्रधान काव्य–ये सभी काव्य श्रृंगार रस प्रधान हैं। इनमें पूर्वराग, गुण श्रवण, चित्र या स्वप्न दर्शन अथवा प्रत्यक्ष दर्शन से प्रेम सूत्र जुड़ता है फिर नायक नायिका को प्राप्त करने के लिए जमीन-आसमान एक कर देते हैं। नायिकाएँ आलम्बन बनती हैं, सखा-सखी, वन, नदी, ऋतु एवं अन्य उपकरण उद्दीपन का काम करते हैं। रसराज श्रृंगार के दोनों ही रूपों का इसमें व्यापक चित्रण है। प्रसंगानुसार वीर, भयानक, वीभत्स और शान्त रस के दर्शन भी होते हैं। नागमती का विरह वर्णन अद्वितीय है।

9. प्रतीक पद्धति–सूफी काव्यों में प्रतीक पद्धति और रहस्यात्मकता मिलती है। कुछ तो सम्पूर्ण पद्मावत काव्य को ही प्रतीक काव्य मानते हैं। 'तन चितउर मन राउर कीन्हा' से यह बात सिद्ध भी होती है।

10. भाषा शैली–सभी प्रेम काव्यों की भाषा प्रायः अवधी है। उसमान और नसीर पर भोजपुरी का प्रभाव है। अवधी भाषा का प्रचलित रूप ही इन काव्यों में देखने को मिलता है। इसमें मुहावरे व लोकोक्तियों का सुन्दर प्रयोग मिलता है।

सभी कवियों ने दोहा-चौपाई और सोरठा छन्दों को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक हुआ है तथा उसमें सादृश्य मूलक अलंकारों की अधिकता है।

निष्कर्ष–सूफी काव्य, कवि और उनकी उपर्युक्त विशेषताओं के विवेचन से स्पष्ट है कि निर्गुण भक्ति धारा के अन्तर्गत सूफी कवियों का योगदान महत्त्वपूर्ण

था। इनके काव्यों में वर्णित प्रेम भावना उच्च कोटि की है। ये कवि प्रेम
अमर काव्य थे।

प्रश्न 45. राम भक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवियों का परिचय दी
और इस काव्य धारा की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

उत्तर–सगुण भक्ति काव्यधारा के अन्तर्गत राम भक्ति और कृष्ण भक्ति
विकास हुआ। श्री रामानुजाचार्य भक्ति के आदि आचार्य थे। मध्यकाल में मह
रामानन्द ने लोगों को राम भक्ति की प्रेरणा दी। उन्होंने विष्णु के अनेक अ
तारों में से राम को लोक-कल्याण की भावना के अधिक निकट पाया और उ
की भक्ति पर बल दिया। तुलसीदास इस परम्परा के प्रतिनिधि और प्र
कवि हैं।

राम भक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवि—इस काव्य धारा के प्रतिनि
कवि तुलसी है। तुलसीदास से पूर्व का राम साहित्य प्रायः अप्रकाशित है। ना
दास की 'भक्तमाल' में अनेक भक्त कवियों के नाम है, पर उनमें से एक ने भी
के अवतारी रूप की आराधना नहीं की। तुलसी से पूर्व विष्णुदास का नाम आ
है, जिन्होंने 'भरत मिलाप' और 'अंगद पैज' की रचना की थी। तुलसी के अ
रिक्त नाभादास, प्राणचन्द चौहान, महाराज विश्वनाथ सिंह और रघुराज सिंह
नाम भी रामभक्त कवियों में सम्मिलित किये जाते हैं, पर तुलसी की सर्वोत्कृष्ट
असंदिग्ध है।

डॉ. रामकुमार वर्मा के शब्दों में कहा जा सकता है कि–'हिन्दी राम भ
काव्य धारा में अनेक कवि हुए हैं किन्तु राम-भक्ति धारा का साहित्यिक म
अकेले तुलसीदास के कारण है। धारा के अन्य कवियों और तुलसीदास में
अन्तर तारागण और चन्द्रमा का ही नहीं है, तारागण और सूर्य का है। तु
की अपूर्व आभा के सामने वे साहित्याकाश में होते हुए भी चमक न सके। इसी
इस धारा का अध्ययन मुख्यतः तुलसीदास में ही केन्द्रित करना होगा।'

राम भक्ति साहित्य की विशेषताएं—निम्नलिखित है–

1. लोक मंगल की कामना—राम भक्ति काव्य की सबसे
विशेषता लोक मंगल की कामना है। यह काव्य लोक रंजन को महत्व न
लोक कल्याण और लोक रक्षा को महत्व देता है। राम एक आदर्श लोक न
हैं। वे शक्ति, शील, सौन्दर्य के आगार हैं। वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। सामा
मर्यादाओं की स्थापना के लिए ही उन्होंने अवतार लिया है। वे असुरों का
और भक्तों की रक्षा करते है। उनके पात्र आदर्श पुत्र, भाई, पिता, पति-प
सेवक, मित्र और राजा के आदर्श सामने में सजोये है।

2. **समन्वय की भावना**-राम काव्य समन्वय की विराट कल्पना और उदार दृष्टिकोण से सम्पन्न है। उसकी भक्ति भावना संकुचित नहीं है। उसमें राम के साथ-साथ गणेश, शिव, कृष्ण, गंगा आदि की उपासना और स्तुतियां हैं। तुलसी के काव्य में निर्गुण-सगुण, शैव-वैष्णव, ज्ञान-भक्ति और कर्म में अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने भाषा और काव्य शैलियों में भी समन्वय का प्रयास किया था।

3. **साकार ब्रह्म की उपासना**—राम ब्रह्म के स्वरूप है। वे पृथ्वी का भार दूर करने तथा भक्तों की रक्षा के लिए अवतार लेते हैं। वे शील, शक्ति, सौन्दर्य और मर्यादा से सम्पन्न है। वे अपनी शक्ति से दुष्टों का नाश और शील से लोक मंगल का संचार करने वाले हैं। वे पतित-पावन, करुणामय और अत्यन्त उदार हैं। वे लोक की रक्षा के लिए ही अवतार लेते हैं। वे ब्रह्म होकर भी भक्तों के वश में और साकार हैं।

4. **भक्ति-भावना**—राम भक्ति का स्वरूप आदर्श है। वे सेवक-सेव्य भाव से ही अपने इस्ट देव की आराधना करते हैं। 'सेवक-सेव्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगारि।' वे भक्ति को श्रेष्ठ मानते हुए भी कर्म और ज्ञान की उपेक्षा नहीं करते। उनमें अद्भुत उदारता, दीनता, एकनिष्ठता और विश्वास है।

5. **आदर्श-पात्र**—राम काव्य के पात्र कथावस्तु के अनुसार अपने चरित्र का पूर्ण रूप से निर्वाह करते हैं। राम आदि से अन्त तक अपने शील को धारण किये रहते हैं। लक्ष्मण के चरित्र में क्रोध का जो रूप धनुष भंग के समय दिखाई देता है, वह अन्य अवसरों पर भी बना रहता है। इसी प्रकार भरत, रावण, दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा, आदि पात्र भी एक निश्चित आदर्श की पूर्ति में अपनी भूमिका निभाते हैं। राम स्वयं आदर्श पुत्र के आदर्श हैं, भरत भाई के, दशरथ पिता के तो कौशल्या माता का आदर्श है। हनुमान निष्ठावान् सेवक हैं तो सुग्रीव सच्चे मित्र। ये सभी पात्र जीवन की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

6. **रस-चित्रण**—राम भक्ति काव्य का प्रधान रस शान्त है। मर्यादा की भावना पर बल होने के कारण शान्त रस का महत्व इस काव्य में बढ़ गया है। इसी मर्यादावाद के कारण शृंगार के संयोग और वियोग चित्रण का अवसर होते हुए भी परिपाक न हो सका। शत्रुओं के संहार के समय वीर रस, भक्तों का उद्धार करने में शान्त रस और युद्ध वर्णन में भयानक व रौद्र रसों का समुचित वर्णन हुआ है। नारद मोह में हास्य रस का पुट है तथा लक्ष्मण के शक्ति लगने पर करुण रस का प्रवाह है। वस्तुतः राम काव्य में एक ही रस है—राम रस।

7. स्वान्तः सुखाय काव्य रचना—भक्तों को राज्याश्रय की परवाह
उन्होंने अपनी लेखनी को किसी लौकिक पुरुष की प्रशंसा के पंक में नहीं
उन्होंने अपने आराध्य देव की उपासना करते हुए स्वान्तः सुखाय काव्य रच
है। उनकी काव्य रचना का उद्देश्य यश, धन, लाभ की भावना न होकर
सुखाय ही है।

8. अभिव्यक्ति पक्ष—राम भक्त कवियों का ध्येय अपने इष्टदेव का
गान तथा लीला वर्णन था। वे कविता को अभिव्यक्ति का साधन मात्र मान
उसको साध्य कभी नहीं बनाया फिर भी उनके काव्य में कलात्मकता का
नहीं है। राम काव्य में प्रबन्ध व मुक्तक दोनों ही प्रकार की अभिव्यक्ति का
चित अवसर था और उन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग करते हुए इस अवस
पूर्ण लाभ उठाया। राम काव्य में अपने युग में प्रचलित लगभग सभी काव्य-
का उपयोग हुआ है।

राम काव्य की भाषा सामान्यतः अवधी है। तुलसी ने अवधी और
दोनों भाषाओं को समान रूप से अपनाया है। छन्दों की दृष्टि से व्यापकत
अलंकारों की दृष्टि से इसमें सम्पन्नता है। अलंकारों का प्रयोग स्वाभावि
से ही हुआ है।

निष्कर्ष—इस संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट है कि रामभक्त कवि
दृष्टिकोण व्यापक और विशाल था। वे सहृदय कवि, दीन भक्त, लोक मंग
उपासक और स्वान्तः सुखाय काव्य रचना करने वाले थे। उनके काव्य में स
की विराट चेष्टा और अभिव्यक्ति के सुन्दरतम रूप के दर्शन होते हैं।

———

मुद्रक : शर्मा प्रिन्टर्स, जयपुर–302004



प्रसिद्ध एलाइड चार्ली चैक प्वाइंट के पास एक सीमा रक्षक बर्लिन दीवार पर लिखे लेख को पढ़ते हुए।